

बुद्धकालीन भारतका भौगोलिक परिचय

बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय

बुद्धकाल में भारतवर्ष तीन मण्डलों, पाँच प्रदेशों और सोलह महाजनपदों में विभक्त था। महामण्डल, मध्यमण्डल और अन्तर्मण्डल—ये तीन मण्डल थे। जो क्रमशः ९००, ६००, ३०० योजन विस्तृत थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष (= जम्बूद्वीप) का क्षेत्रफल १०,००० योजन था। मध्यम देश, उत्तरापथ, अपरान्तर, दक्षिणापथ और प्राच्य—ये पाँच प्रदेश थे। हम यहाँ इनका संक्षेप में वर्णन करेंगे, जिससे बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय प्राप्त हो सके।

§ १ मध्यम देश

भगवान् बुद्ध ने मध्यम देश में ही विचरण करके बुद्धधर्म का उपदेश किया था। तथागत पद-चारिका करते हुए पश्चिम में मथुरा^१ और कुरु के शुत्लकोट्टित^२ नगर से आगे नहीं बढ़े थे। पूरव में कजगला निगम के मुखेलु वन^३ और पूर्व-दक्षिण की सल्लवती नदी^४ के तीरे को नहीं पार किया था। दक्षिण में सुसुमारगिरि^५ आदि विन्व्याचल के आसपास वाले निगमों तक ही गये थे। उत्तर में हिमालय की तलहटी के सापुग^६ निगम और उसीरध्वज^७ पर्वत से ऊपर जाते हुए नहीं दिखाई दिये थे। विनय पिटक में मध्यम देश की सीमा इस प्रकार बतलाई गई है—“पूर्व दिशा में कजगला निगम । पूर्व दक्षिण दिशा में सल्लवती नदी । दक्षिण दिशा में सेतकणिक^८ निगम । पश्चिम दिशा में यूण^९ नामक ब्राह्मणों का ग्राम”। उत्तर दिशा में उसीरध्वज पर्वत ।^{१०}”

मध्यम देश ३०० योजन लम्बा और २५० योजन चौड़ा था। इसका परिमण्डल ९०० योजन था। यह जम्बूद्वीप (= भारतवर्ष) का एक बृहद् भाग था। तत्कालीन सोलह जनपदों में से ये ६४ जनपद इसी में थे—काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जी, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पञ्चाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्वक और अवन्ति। शेष दो जनपद गन्धार और कम्बोज उत्तरापथ में पड़ते थे।

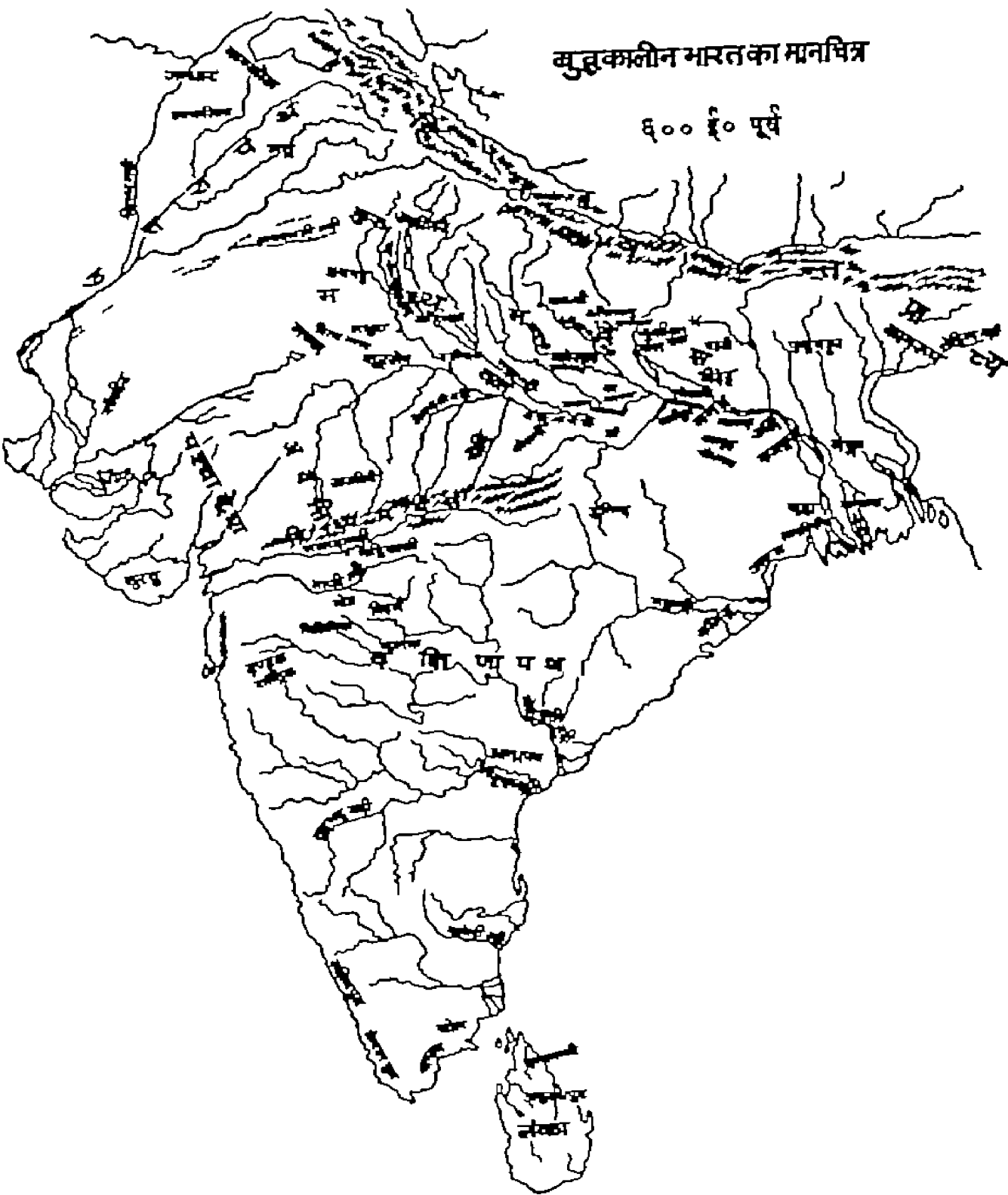
§ काशी

काशी जनपद की राजधानी वाराणसी (बनारस) थी। बुद्धकाल से पूर्व समस्त समय पर

- १ अगुत्तर निकाय ५ २ १०। इस सूत्र में मथुरा नगर के पाँच दोष दिखाये गये हैं।
- २ मज्झिम निकाय २ ३ ३२। दिल्ली के आसपास कोई तत्कालीन प्रसिद्ध नगर।
- ३ मज्झिम निकाय ३ ५ १७। ककजोल, सथाल परगना, बिहार।
- ४ वर्तमान सिलई नदी, हजारी बाग और बीरभूमि।
- ५ चुनार, जिला मिर्जापुर।
- ६ अगुत्तर निकाय ४ ४ ५ ४।
- ७ हरिद्वार के पास कोई पर्वत।
- ८ हजारीबाग जिले में कोई स्थान।
- ९ आधुनिक यानेदवर।
१०. विनय पिटक ५ ३ २।

मुद्रकालीन भारत का मानचित्र

६०० ई० पूर्व



बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय

बुद्धकाल में भारतवर्ष तीन मण्डलों, पाँच प्रदेशों और सोलह महाजनपदों में विभक्त था। महामण्डल, मध्यमण्डल और अन्तर्मण्डल—ये तीन मण्डल थे। जो क्रमशः ९००, ६००, ३०० योजन विस्तृत थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष (= जम्बूद्वीप) का क्षेत्रफल १०,००० योजन था। मध्यम देश, उत्तरापथ, अपरान्तक, दक्षिणापथ और प्राच्य—ये पाँच प्रदेश थे। हम यहाँ इनका संक्षेप में वर्णन करेंगे, जिससे बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय प्राप्त हो सके।

§ १. मध्यम देश

भगवान् बुद्ध ने मध्यम देश में ही विचरण करके बुद्धधर्म का उपदेश किया था। तथागत पट्टचारिका करते हुए पश्चिम में मथुरा^१ और कुरु के थुल्लकोट्टित^२ नगर से आगे नहीं बढ़े थे। पूर्य में कजगला निगम के मुखेल वन^३ और पूर्व-दक्षिण की सल्लवती नदी^४ के तीर को नहीं पार किया था। दक्षिण में सुसुमारगिरि^५ आदि विन्व्याचल के आसपास वाले निगमों तक ही गये थे। उत्तर में हिमालय की तरुहटी के सापुग^६ निगम और उसीरध्वज^७ पर्वत से ऊपर जाते हुए नहीं दिखाई दिये थे। विनय पिटक में मध्यम देश की सीमा इस प्रकार बतलाई गई है—“पूर्व दिशा में कजगला निगम । पूर्व दक्षिण दिशा में सल्लवती नदी । दक्षिण दिशा में सेतकणिक^८ निगम । पश्चिम दिशा में यून^९ नामक ब्राह्मणों का ग्राम । उत्तर दिशा में उसीरध्वज पर्वत ।”^{१०}

मध्यम देश ३०० योजन लम्बा और २५० योजन चौड़ा था। इसका परिमण्डल ९०० योजन था। यह जम्बूद्वीप (= भारतवर्ष) का एक बृहद् भाग था। तत्कालीन सोलह जनपदों में से ये १४ जनपद इसी में थे—काशी, कोशल, अग, मगध, वज्जी, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पञ्चाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्वक और अवन्ति। शेष दो जनपद गन्धार और कम्बोज उत्तरापथ में पड़ते थे।

§ काशी

काशी जनपद की राजधानी वाराणसी (बनारस) थी। बुद्धकाल से पूर्व समय समय पर

- १ अगुत्तर निकाय ५ २ १०। इस सूत्र में मथुरा नगर के पाँच दोष दिखाये गये हैं।
- २ मज्झिम निकाय २ ३ ३२। दिल्ली के आसपास कोई तत्कालीन प्रसिद्ध नगर।
३. मज्झिम निकाय ३ ५ १७। ककजोल, सथाल परगना, मिहार।
- ४ वर्तमान सिलई नदी, हजारी बाग और वीरभूमि।
- ५ चुनार, जिला मिर्जापुर।
- ६ अगुत्तर निकाय ४ ४ ५ ४।
- ७ हरिद्वार के पास कोई पर्वत।
- ८ हजारीबाग जिले में कोई स्थान।
९. आधुनिक थानेश्वर।
- १० विनय पिटक ५ ३ २।

सुल्तान सुदसैन महारज्य पुनरवती मांझिनी और रम्पनगर इसके नाम थे। इस नगर का विस्तार १२ पोजन था। मगवान् बुद्ध से पूर्व काशी राजनीतिक क्षेत्र में लक्ष्मिणाकी जनपद था। काशी और कोसल के राजाओं में प्रायः युद्ध हुआ करते थे जिसमें काशी का राज्य विजयी होता था। उस समय सम्पूर्ण उत्तर भारत में काशी जनपद सब से बड़साही था। किन्तु, बुद्धकाक में उसकी राजनीतिक शक्ति खीन हो गई थी। इसका कुछ भाग कोसल प्रदेश और कुछ भाग मगध प्रदेश के अधीन था। उनमें भी प्रायः काशी के हिस्से ही युद्ध हुआ करते थे। अन्त में काशी कोसल प्रदेश प्रसन्नचित्त के अधिकार से विकल्पर मगध प्रदेश अन्तर्गत के अधीन हो गया था।

वाराणसी के पास कृपिपतन धृगदास (सारनाथ) में मगवान् बुद्ध ने धर्मचक्र प्रवर्तन करके इसके महात्त्व को बड़ा दिया। कृपिपतन युगदास बौद्ध धर्म का एक महावीर है।

वाराणसी सिन्धु व्यावसाय विद्या आदि का बहुत बड़ा केन्द्र था। इसका व्यावसायिक सम्बन्ध आबस्ती लखनौ, राबगृह आदि नगरों से था। काशी का अन्त और काशी के रंग-बिरंगे वस्त्र बहुत प्रसिद्ध थे।

५ कोसल

कोसल की राजधानिर्षी आबस्ती और साकेत नगर थे। अयोध्या सरयू नदी के किनारे स्थित एक कस्बा था किन्तु बुद्धकाक में इसकी प्रसिद्धि ब थी। कहा जाता है कि आबस्ती नामक कृपि के नाम पर ही आबस्ती नगर का नाम पड़ा था किन्तु पपत्रसूत्रों के अनुसार सप कुछ होये के कारण (= सर्व-प्रसिद्ध) इसका नाम आबस्ती पड़ा था।

आबस्ती नगर बड़ा समृद्धिशाही एवं सुन्दर था। इस नगर की आबादी साठ करोड़ थी। मगवान् बुद्ध ने यहाँ २५ वर्षवास किया था और अधिकांश उपदेश यहीं पर किया था। अनामपिण्डिक यहाँ का बहुत बड़ा श्रेष्ठ था और मृगारमाता विद्याका बड़ी भद्राबान् उपासिका थी। पञ्चनारा कुम्भ गीतमी अन्त ब्रह्मा देवत और कोसल प्रदेश की बहिन सुसबा इसी नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

प्राचीन कोसल राज्य दो भागों में विभक्त था। सरयू नदी दोनों भागों के मध्य स्थित थी। उत्तरी भाग को उत्तर-कोसल और दक्षिणी भाग को दक्षिण-कोसल कहा जाता था।

कोसल जनपद में अनेक प्रसिद्ध शिवस और ग्राम थे। कोसल का प्रसिद्ध व्याधर्म पौन्यसाहि उन्हा नगर में रहता था जिसे प्रसन्नचित्त ने उसे प्रदान किया था। कोसल जनपद के साका अमरविन्द और वेवागपुर ग्रामों में साकर मगवान् बुद्ध ब बहुत से श्रेष्ठों को दीक्षित किया था। बाबरी कोसल का प्रसिद्ध अजापक था जो दक्षिणपथ में आकर गाहापरी नदी के किनारे अपना आश्रम बनाया था।

इस ऊपर कह भाये हैं कि कोसल और मगध में वाराणसी के कृपि प्रायः युद्ध हुआ करता था किन्तु बाद में दोनों में सन्धि हो गई थी। सन्धि के पश्चात् कोसल प्रदेश प्रसन्नचित्त ब अरबी पुरी बजिरा का विवाह मगध प्रदेश अजात शत्रु से कर दिया था। कोसल की उत्तरी सीमा पर स्थित कपिल-बस्तु के साक्य प्रसन्नचित्त के अधीन थे और ब कोसल प्रदेश प्रसन्नचित्त से बड़ी श्रेष्ठ रखते थे।

लखनऊ नगरकाय छोरमबस्तु और पञ्चसवन—ये कोसल जनपद के प्रसिद्ध ग्राम थे जहाँ पर मगवान् समय-समय पर गये थे और उपदेश दिए थे।

६ अज

अज जनपद की राजधानी अम्बा नगरी थी का अम्बा और मगध के संमम पर यसी थी। अम्बा मिथिला स १ पोजन दूर थी। अज जनपद वर्तमान भागलपुर और मुंगेर जिलों के साथ उत्तर में कोसी नदी तक फैला हुआ था। कभी यह मगध जनपद के अन्तर्गत था और सम्भवतः समुद्र के किनारे तक विस्तृत था। अज की प्राचीन राजधानी के अन्तर्गत सम्रति भागलपुरके निकट अम्बा नगर

और चम्पापुर—इन दो गाँवों में विद्यमान हैं। महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार चम्पा बुद्धकाल में भारत के छ. बड़े नगरों में से थी। चम्पा से सुवर्ण-भूमि (लोअर बर्मा) के लिये व्यापारी नदी और समुद्र-मार्ग से जाते थे। अंग जनपद में ८०,००० गाँव थे। आपण अग का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। महागोविन्द सुत्त से प्रगट है कि अग भारत के सात बड़े राजनीतिक भागों में से एक था। भगवान् बुद्ध से पूर्व अंग एक शक्तिशाली राज्य था। जातक से ज्ञात होता है कि किसी समय मगध भी अग नरेश के अधीन था। बुद्धकाल में अग ने अपने राजनीतिक महत्व को खो दिया और एक युद्ध के पश्चात् अंग मगध नरेश सेनिय बिम्बिसार के अधीन हो गया। चम्पा की रानी गगगरा द्वारा गगगरा-पुष्करिणी खोदवाई गई थी। भगवान् बुद्ध भिक्षुसंघ के साथ वहाँ गये थे और उसके किनारे वास किया था। अग जनपद का एक दूसरा नगर अश्वपुर था, जहाँ के बहुत से कुलपुत्र भगवान् के पास आकर भिक्षु हो गये थे।

§ मगध

मगध जनपद वर्तमान गया और पटना जिलों के अन्तर्गत फैला हुआ था। इसकी राजधानी गिरिब्रज अथवा राजगृह थी, जो पहाड़ियों से घिरी हुई थी। इन पहाड़ियों के नाम थे—ऋषिगिरि, वेपुल्ल, वेभार, पाण्डव और गृद्धकूट। इस नगर से होकर तपोदा नदी बहती थी। सेनानी निगम भी मगध का ही एक रमणीय वन-प्रदेश था। एकनाला, नालकग्राम, खाणुमत, और अन्वकविन्द इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे। वज्जी और मगध जनपदों के बीच गंगा नदी सीमा थी। उस पर दोनों राज्यों का समान अधिकार था। अग और मगध में समय-समय पर युद्ध हुआ करता था। एक बार वाराणसी के राजा ने मगध और अंग दोनों को अपने अधीन कर लिया था। बुद्धकाल में अग मगध के अधीन था। मगध और कोशल में भी प्रायः युद्ध हुआ करता था। पीछे अजातशत्रु ने लिच्छवियों की सहायता से कोशल पर विजय पाई थी। मगध का जीवक कौमारभृत्य भारत-प्रसिद्ध वैद्य था। उसकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी। राजगृह में वेल्लवन कलन्दक निवाप प्रसिद्ध बुद्ध विहार था। राजगृह में ही प्रथम सर्गीति हुई थी। राजगृह के पास ही नालन्दा एक छोटा ग्राम था। मगध का एक सुप्रसिद्ध किला था, जिसकी मरम्मत वर्षकार ने करायी थी। बाद में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र नगर हुआ था। अशोक-काल में उसकी दैनिक आय ३००,००० कार्यापण थी।

§ वज्जी

वज्जी जनपद की राजधानी वैशाली थी, जो इस समय बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ गाँव में मानी जाती है। वज्जी जनपद में लिच्छवियों का गणतन्त्र शासन था। यहाँ से खोदाई में प्राप्त लेखों से वैशाली नगर प्रमाणित हो चुका है। इस नगर की जनसंख्या की वृद्धि से नगर-प्राकार को तीन बार विशाल करने के ही कारण इसका वैशाली नाम पड़ा था। वैशाली समृद्धिशाली नगरी थी। उसमें ७७०७ प्रासाद, ७७०७ कूटागार (कोठे), ७७०७ उद्यान-गृह (आराम) और ७७०७ पुष्करिणियाँ थीं। वहाँ ७७०७ राजा, ७७०७ युवराज, ७७०७ सेनापति और इतने ही भण्डागारिक थे। नगर के बीच में एक सस्थागार (ससट-भवन) था। नगर में उदयन, गौतमक, सप्ताम्रक, बहुपुत्रक, और सारदद चैत्य थे। भगवान् बुद्ध ने वैशाली के लिच्छवियों की उपमा तावतिस लोक के देवों से की थी। वैशाली की प्रसिद्ध गणिका अम्बपाली ने बुद्ध को भोजन दान दिया था। विमला, सिंहा, वासिष्ठी, अम्बपाली और रोहिणी वैशाली की प्रसिद्ध भिक्षुणियाँ थीं। वर्तमान स्थविर, अजनवनिय, वज्जीपुत्त, सुयाम, पियञ्जह, वसभ, वल्लिय और सव्वकामी यहाँ के प्रसिद्ध भिक्षु थे। सिंह सेनापति, महानाम, दुसुंख, सुनक्खत्त आर उग्र गृहपति वैशाली के प्रसिद्ध गृहस्थ थे। वैशाली के पास महावन में कूटागारशाला नामक विहार था। वहाँ पर सर्वप्रथम महाप्रजापति गौतमी के साथ अनेक शाक्य महिलायें भिक्षुणी हुईं

थी। बैसाखी में ही दूसरी संघर्ष हुई थी। बैसाखी गणतंत्र को कुछ-परिनिर्वाण के तीन वर्ष बाद ही फूट डालकर मगध-मरेण्ड अक्षयवस्तु ने हथकिया था।

५ मल्ल

मल्ल जनपद जनपद था। यह दो भागों में विभक्त था। कुशीनारा भीर पावा इसकी दो राजधानियाँ थीं। अनुपिया अजयगढ़, उदयककप्य बलिहरण बलसण्ड भोगनगर और भाद्रग्राम इसके प्रसिद्ध नगर थे। देवरिया जिसे का कुशीनगर ही कुशीनारा थी भीर कबिलकनगर-सद्विर्षोप पावा। कुशीनारा राजधानी के महावसेप कुशीनगर के निकट अनुकणवा ग्राम में विद्यमान है। कुशीनारा का प्राचीन नाम कुशावती था। यह नगर बड़ा संपन्न एवं उन्नतस्थिति का। योधिसत्य वहाँ का नगर पुरुवर्ती राजा होकर उत्पन्न हुए थे। पूर्व काल में यह १२ योजन लम्बा भीर ७ योजन चौड़ा था। महापरिनिर्वाण मुक्त से राजगृह से कुशीनारा तक आने का मार्ग विदित होता है। भगवान् बुद्ध ने अन्तिम समय में इसी मार्ग से पावा की थी—राजगृह अम्बकट्टिका नाळम्बा पाटलिग्राम कोटिग्राम पाटिका नद्याकी अजयग्राम इस्तिग्राम (वर्तमान हाबीबाद), भाद्रग्राम (मगध) अम्बग्राम भोगनगर और पावा। पावा में बुद्ध के नर बुद्ध ने अन्तिम मोक्ष प्रदान किया था। पावा और कुशीनारा के मध्य तीन नदियाँ थीं जिनमें ककुत्था (घाघी) और हिरण्यवती के नाम ग्रन्थों में मिलते हैं। हिरण्यवती के पश्चिमी तट पर ही कुशीनारा थी मगर वहाँ साक्ष्य उपलब्ध में बुद्ध का परिनिर्वाण हुआ था। पावा के बुद्ध कम्मरपुत्र अम्बमुमम पाटिक सुपाहु बलिहरण और उचित प्रसिद्ध व्यक्ति थे। कुशीनारा की महा विभूतियाँ भी हथकिया स्पष्टि अमुष्मान् सिंह नद्यात्त स्वविर बन्धुक्रमण्ड पीर्यकारायण रोत्रमण्ड बन्नपाणि मरु और वीरयना मरुका। बुद्ध-परिनिर्वाण के बाद पावा और कुशीनारा में धातु-रूप बने थे।

६ वेदि

वेदि जनपद यमुना के पास बुद्ध जनपद के निकट था। यह वर्तमान बुद्धकण्ड के किने हुए विस्तृत था। इसकी राजधानी सोलिबती नगर था। इसके दूसरे प्रमुख नगर सहजाति और भिपुरी थे। वेदम जालक से ज्ञात होता है कि कश्यप भीर वेदि के बीच बहुत लुटेरे रहते थे। जेतुत्तर नगर से वेदि राह ३ योजन दूर था। सहजाति में महाबुद्ध ने उपदेश दिया था। यह बौद्ध धर्म का एक बड़ा केन्द्र था। अमुष्मान् अनुसुत्त ने वेदि राह के प्राचीनवज्र सूत्रदास में रहते हुए अर्हत्व प्राप्त किया था। सहजातिक भी वेदि जनपद का एक प्रसिद्ध ग्राम था जहाँ भगवान् बुद्ध गये थे।

७ वत्स

वत्स जनपद भारत के उत्तर के जनपदों में से एक था। इसकी राजधानी कपिलवती थी। इस समय उसके महावसेप अजयगढ़ से ३ मील पश्चिम यमुना नदी के किनारे कंसम नामक ग्राम में स्थित है। सुंसुमारगिरि का मगध राज्य वत्स जनपद में ही पड़ता था। कपिलवती बुद्धकालीन बड़ी बगरी थी। बलिहरण के वेदा बगरी से कपिलवती की बाधा की थी। कपिलवती में योषिताराम पुत्रकुमाराम और पावारिकराम तीन प्रसिद्ध विहार थे जिन्हें क्रमशः वहाँ के प्रसिद्ध सेठ बोधित कुण्ड और पावारिक वेदवासे थे। भगवान् बुद्ध ने इन विहारों में निवास किया था और भिक्षु संघ को उपदेश दिया था। यहाँ पर संघ में फूट भी पड़ा हुआ था जो पीछे सान्त हो गई थी। बुद्धकाल में राजा उदयन वहाँ राज्य करता था उसकी मायावती श्यामावती और बामुखदपा तीन राजधानियाँ थीं जिनमें श्यामावती परम बुद्ध-अच्छ उपासिका थी।

८ कुण्ड

प्राचीन साहित्य में दो बुद्ध जनपदों का वर्णन मिलता है—उत्तर कुण्ड और दक्षिण कुण्ड

ऋग्वेद में वर्णित कुरु सम्भवत उत्तर कुरु ही है। पालि साहित्य में वर्णित कुरु जनपद ८००० योजन विस्तृत था। कुरु जनपद के राजाओं को कौरव्य कहा जाता था। कम्मासदम्म कुरु जनपद का एक प्रसिद्ध नगर था, जहाँ बुद्ध ने महासत्तिपट्टान और महानिदान जैसे महत्वपूर्ण एवं गम्भीर सूत्रों का उपदेश किया था। इस जनपद का दूसरा प्रमुख नगर शुल्लकोट्टित था। राष्ट्रपाल स्थविर इन्हीं नगर से प्रव्रजित हुए प्रसिद्ध भिक्षु थे।

कुरु जनपद के उत्तर सरस्वती तथा दक्षिण दृश्यवती नदियाँ बहती थीं। वर्तमान सोनपत, अमिन, कर्नाल और पानीपत के जिले कुरु जनपद में ही पड़ते हैं। महासुतसोम जातक के अनुसार कुरु जनपद ३०० योजन विस्तृत था। इसकी राजधानी इन्द्रपट्टन (इन्द्रप्रस्थ) नगर था, जो सात योजन में फैला हुआ था।

§ पञ्चाल

पञ्चाल जनपद भागीरथी नदी से दो भागों में विभक्त था—उत्तर पञ्चाल और दक्षिण पञ्चाल। उत्तर पञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्र नगर था, जहाँ दुर्मुख नामक राजा राज्य करता था। वर्तमान समय में वरेली जिले का रामनगर ही अहिच्छत्र माना जाता है। दक्षिण पञ्चाल की राजधानी काम्पित्य नगर था, जो फरुक्खाबाद जिले के काम्पिल के स्थान पर स्थित था। समय-समय पर राजाओं की इच्छा के अनुसार काम्पित्य नगर में भी उत्तर पञ्चाल की राजधानी रहा करती थी। पञ्चाल-नरेश की भगिनी का पुत्र विशाख श्रावन्ती जाकर भगवान् के पास दीक्षित हुआ और छ अभिज्ञाओं को प्राप्त किया था। पञ्चाल जनपद में वर्तमान बदायूँ, फरुक्खाबाद, और उत्तर प्रदेश के समीपवर्ती जिले पड़ते हैं।

§ मत्स्य

मत्स्य जनपद वर्तमान जयपुर राज्य में पड़ता था। इसके अन्तर्गत पूरा अलवर राज्य और भरतपुर का कुछ भाग भी पड़ता है। मत्स्य जनपद की राजधानी विराट नगर था। नादिका के गिञ्जिकावसथ में विहार करते हुए भगवान् बुद्ध ने मत्स्य जनपद का वर्णन किया था। यह इन्द्रप्रस्थ के दक्षिण-पश्चिम और सूरसेन के दक्षिण स्थित था।

§ शूरसेन

शूरसेन जनपद की राजधानी मथुरा नगरी (मथुरा) थी, जो कौशाम्बी की भौति यमुना के किनारे बसी थी। यहाँ पर भगवान् बुद्ध गये थे और मथुरा के विहार में वास किया था। मथुरा प्रदेश में महाकात्यायन ने धूम-धूम कर बुद्ध धर्म का प्रचार किया था। उस समय शूरसेन का राजा अवन्तिपुत्र था। वर्तमान मथुरा से ५ मील दक्षिण पश्चिम स्थित महोली नामक स्थान प्राचीन मथुरा नगरी मानी जाती है। दक्षिण भारत में भी प्राचीन काल में मथुरा नामक एक नगर था, जिसे दक्षिण मथुरा कहा जाता था। वह पाण्ड्य राज्य की राजधानी था। उसके नष्टावशेष इस समय मद्रास प्रान्त में वैगी नदी के किनारे विद्यमान हैं।

§ अश्वक

अश्वक जनपद की राजधानी पोतन नगर था। अश्वक-नरेश महाकात्यायन द्वारा प्रव्रजित हो गया था। जातक से ज्ञात होता है कि दन्तपुर नरेश कालिंग और अश्वक नरेश में पहलें सघर्ष हुआ करता था, किन्तु पीछे दोनों का मैत्री सम्बन्ध हो गया था। पोतन कभी काशी राज्य में भी गिना जाता था। यह अश्वक गोदावरी के किनारे तक विस्तृत था। बावरी गोदावरी के किनारे अश्वक जनपद में ही

आश्रय बना कर रहता था। वर्तमान वैद्यक शिक्षा ही भद्रक जलपद् माना जाता है। पर। नरेस का एक शिकारखेस भी प्राप्त हो चुका है। महाशिविन्द सुत्र के अनुसार यह नाम निर्मित हुआ था।

४ अश्वत्थि

अश्वत्थि जलपद् की राजधानी उज्जैनी नगरी थी जो अश्वत्थयामी द्वारा बसायी गई। जलपद् में वर्तमान साक्य विमार और मध्यभारत के निकटवर्ती प्रदेश पड़ते थे। अश्वत्थि के नामों में विनय था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैनी में ही थीर इक्षिणी भाग की राजधानी में। महाशिविन्द सुत्र के अनुसार अश्वत्थि की राजधानी साहिष्मती थी, जहाँ का राजा से कुरवर और सुहस्रवजुर अश्वत्थि जलपद् के प्रसिद्ध नगर थे।

अश्वत्थि जलपद् बीहड़भूमि का महात्वापूत केन्द्र था। जयसकुमार इक्षिदासी इक्षिण, कर्म और महात्वापामन अश्वत्थि जलपद् की महाशिविभूतिर्वा थी। महात्वापामन उज्जैनी-मद्योत के पुत्रोदित पुत्र थे। अश्वत्थय्योत को महात्वापामन ने ही बीहड़ बनाया था। मि अश्वत्थि के वेसुवाम के रहने वाले थे।

शैशास्त्री और अश्वत्थि के राजदरारों में वैवाहिक सम्बन्ध था। अश्वत्थय्योत तथा रई कई बार जुड़ हुए। अश्वत्थि में अश्वत्थय्योत ने अपनी पुत्री वासवदत्ता का विवाह अश्वत्थ से का और दोनों मिल हो गये थे। अश्वत्थ ने मगध के साथ भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर का विपक्ष शैशास्त्री दोनों ओर से सुरक्षित की।

अश्वत्थि की राजधानी उज्जैनी से अतीत का एक शिकारखेस निकल चुका है।

५ नगर, ग्राम और कस्बे

अपर गया—अश्वत्थि उज्जैनी से गया गये थे और गया से अपर-गया जहाँ उन्हें सुहस्रवजुर न निर्मित किया था।

अश्वत्थय्योत—राजपूत के पुत्र अश्वत्थय्य नामक एक ब्राह्मण ग्राम का।

अश्वत्थय्यिन्दु—मगध के अश्वत्थय्यिन्दु नाम में अश्वत्थि रहे थे जहाँ अश्वत्थि अका वर्तन करके स्तुति की थी।

अश्वत्थय्या—जहाँ अश्वत्थि गये थे और बास किया था। पाकि साहित्य के अनुसार यह भी वहीं के किनारे स्थित था। फिर भी वर्तमान अश्वत्थि नगर ही माना जाता है। दुर्गका में यह भी अश्वत्थि नगर था।

अश्वत्थपुर—यह एक नगर था जो अश्वत्थि वहीं के किनारे बना था।

आश्वत्थी—आश्वत्थी में अश्वत्थय्य नामक प्रसिद्ध शैल्य था जहाँ कुछ नै वास किया था। व नाम समय में अश्वत्थि प्रसिद्ध के उजाव शिखे के अश्वत्थ (पर देवक) को अश्वत्थी माना जाता है।

अश्वत्थि—यह अश्वत्थि जलपद् का एक प्रमुख विभाग (कस्बा) था। वहीं पर सिद्धार्थ को वि प्रसन्न होने के बाद एक सप्ताह निवास किया था और वहीं अनुसूय, मरिच किम्बिक तथा देवद भाषण और अश्वत्थि प्रसन्न हुए थे। अश्वत्थय्य भी वहीं प्रसन्न हुए थे। वर्तमान समय में अश्वत्थि शिखे में राजा के वास मगध मदी के किनारे का नैवाहर ही अश्वत्थि नगर माना जाता है शिखे अश्वत्थि का अश्वत्थि कहते हैं।

अश्वत्थपुर—राजा शैल्य के अश्वत्थि ने इक्षिणपुर अश्वत्थि सिद्धपुर, उत्तर पश्याक और अश्वत्थि नगरों को बनाया था। इक्षिणपुर ही पीछे इक्षिणपुर हो गया था और इस समय इसका अश्वत्थि नगर

जले की मयान तहसील में विद्यमान हैं। सिंहपुर हुणसाग के समय में तक्षशिला से ११७ मील दूर स्थित था। अन्य नगरों का कुछ पता नहीं।

अल्लकप्प—वैशाली के लिच्छवियों, मिथिला के विदेहों, कपिलवस्तु के शाक्यों, रामग्राम के कोलियों, सुंसुमारगिरि के भर्गों और पिप्पलिवन के मौर्यों की भाँति अल्लकप्प के बुलियों का भी अपना स्वतन्त्र राज्य था, किन्तु बहुत शक्तिशाली न था। यह १० योजन विस्तृत था। इसका सम्बन्ध वेठदीप के राजवंश से था। श्री बौल का कथन है कि वेठदीप का द्रोण ब्राह्मण शाहाबाद जिले में मसार से वैशाली जानेवाले मार्ग में रहता था। अतः अल्लकप्प वेठदीप से बहुत दूर न रहा होगा। अल्लकप्प के बुलियों को बुद्धधातु का एक अंश मिला था, जिसपर उन्होंने स्तूप बनवाया था।

भद्विय—अङ्ग जनपद के भद्विय नगर में महोपासिका विशाखा का जन्म हुआ था।

बेलुवग्राम—यह वैशाली में था।

मण्डग्राम—यह वज्जी जनपद में स्थित था।

धर्मपाल ग्राम—यह काशी जनपद का एक ग्राम था।

एकशाला—यह कोशल जनपद में एक ब्राह्मण ग्राम था।

एकनाला—यह मगध के दक्षिणागिरि प्रदेश में एक ब्राह्मण ग्राम था, जहाँ भगवान् ने वास किया था।

परकच्छ—यह दसण राज्य का एक नगर था।

ऋषिपतन—यह ऋषिपतन मृगदाय वर्तमान सारनाथ है, जहाँ भगवान् ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।

गया—गया में भगवान् बुद्ध ने सूचिलोम यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिया था। प्राचीन गया वर्तमान साहवगज माना जाता है। यहाँ से ६ मील दक्षिण बुद्धगया स्थित है। गयातीर्थ बुद्धकाल में स्नानतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध था और यहाँ बहुत से जटिल रहा करते थे।

हस्तिग्राम—यह वज्जी जनपद का एक ग्राम था। भगवान् बुद्ध वैशाली से कुशीनगर जाते हुए हस्तिग्राम से होकर गुजरे थे। वर्तमान समय में यह विहार प्रान्त के हथुवा से ८ मील पश्चिम शिवपुर कोठी के पास अवस्थित है। आजकल उसके नष्टावशेष को हाथीखाल कहा जाता है। हस्तिग्राम का उगगत गृहपति संघसेवकों में सबसे बड़कर था, जिसे बुद्ध ने अग्र की उपाधि दी थी।

हलिहवसन—यह कोलिय जनपद का एक ग्राम था। यहाँ भगवान् बुद्ध गये थे। कोलिय जनपद की राजधानी रामग्राम थी और यह जनपद शाक्य जनपद के पूर्व तथा मल्ल जनपद के पश्चिम दोनों के मध्य स्थित था।

हिमवन्त प्रदेश—कोशल, शाक्य, कोलिय, मल्ल और वज्जी जनपदों के उत्तर में फैली पहाड़ी ही हिमवन्त प्रदेश कहलाती है। इसमें नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के सभी दक्षिणी प्रदेश सम्मिलित हैं।

इच्छानङ्गल—कोशल जनपद में यह एक ब्राह्मण ग्राम था। भगवान् ने इच्छानङ्गल वनसण्ड में वास किया था।

जन्तुग्राम—चालिका प्रदेश के चालिका पर्वत के पास जन्तुग्राम था। भगवान् के चालिका पर्वत पर विहार करते समय मेघिय स्थविर जन्तुग्राम में भिक्षाटन करने गये थे और उसके बाद किमिकाला नदी के तीर जाकर विहार किया था।

कलवालगामक—यह मगध में एक ग्राम था। यहीं पर मौद्गल्यायन स्थविर को अर्हत्व की प्राप्ति हुई थी।

आक्रम बना कर रहता था। वर्तमान पैठम जिन्हा ही अत्यन्त जनपद माना जाता है। वहाँ से कार्तिकेय नरेश का एक शिकारखेज भी प्राप्त हो चुका है। महागोविन्द सुक्त के अनुसार यह महागोविन्द द्वारा निर्मित हुआ था।

§ अवन्ति

अवन्ति जनपद की राजधानी उज्जैनी नगरी थी जो अशुतगाम्भी द्वारा बसायी गई थी। अवन्ति जनपद में वर्तमान मालव विहार और मध्यभारत के निकटवर्ती प्रदेश पड़ते थे। अवन्ति जनपद दो भागों में विभक्त था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैनी में थी और दक्षिणी भाग की राजधानी साहिष्मती में। महागोविन्द सुक्त के अनुसार अवन्ति की राजधानी साहिष्मती की वहाँ का राजा वैश्वभू था। कुरुरपर और सुदर्शनपुर अवन्ति जनपद के प्रसिद्ध नगर थे।

अवन्ति जनपद बौद्धधर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था। अमयकुमार इतिहासी इक्षिद्वच सोमकुटि कल्प और महाकल्पामय अवन्ति जनपद की महाविमूर्तिर्षी थीं। महाकल्पामय उज्जैनी-भरेश चण्डप्रघोत के पुरोहित हुए थे। चण्डप्रघोत का महाकल्पामय ने ही बाण्ड बनाया था। मिथु इक्षिद्वच अवन्ति के वेणुग्राम के रहने पाठे थे।

कौशाम्बी और अवन्ति के राजघरानों में वैवाहिक सम्बन्ध था। चण्डप्रघोत तथा उदयन में कई बार युद्ध हुए। अन्त में चण्डप्रघोत ने अपनी पुत्री वासवदत्ता का विवाह उदयन से कर दिया था और दोनों सिद्ध हो गये थे। उदयन ने मगध के साथ भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया था जिससे कौशाम्बी दोनों ओर से सुरक्षित थी।

अवन्ति की राजधानी उज्जैनी से मछोक का एक शिकारखेज मिल चुका है।

§ नगर, ग्राम और कस्बे

अपर गणा—अपवान् उज्जैन से गया गये थे और गया से अपर-गणा वहाँ उन्हें नागराज सुदर्शन ने विमन्त्रित किया था।

अम्बसक्य—राजगृह के वृत्र अम्बसक्य नामक एक माह्यन ग्राम था।

अन्धकथिम्ब—मगध के अन्धकथिम्ब ग्राम में मगधान् रहे थे वहाँ सहस्रपति प्रज्ञा न उम्का दर्शन करके स्तुति की थी।

अयोध्या—यहाँ मगधान् गये थे और वास किया था। पांडि साहित्य के अनुसार यह गंगा नदी के किनारे स्थित था। फिर भी वर्तमान अयोध्या नगर ही मान्य जाता है। दुर्धक्य में यह बहुत छोटा नगर था।

अन्धपुर—यह एक नगर था जो टेकबाह नदी के किनारे बसा था।

आउषी—आउषी में अगाक्य नामक प्रसिद्ध वैद्य था वहाँ युद्ध में वास किया था। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बरक (या बेरक) की आउषी माना जाता है।

अनूपिया—यह मल्ल जनपद का एक प्रमुख विभाग (कस्बा) था। वहाँ पर सिद्धार्थ कुमार ने प्रकृत होम के बाद एक ब्रह्मह विवास किया था और वहाँ अशुक्ल, भरिष किम्बिष्ठ भृगु देवदत्त अश्वत्थ और उपाधि प्रमथित हुए थे। इन्धमल्ल भी वहाँ प्रकृत हुए थे। वर्तमान समय में देवरिया जिले में बाढ़ा के पास मल्ल नदी के किनारे का कैंडहर ही अनूपिया नगर माना जाता है जिसे आजकल 'बादर्य' कहते हैं।

अस्तपुर—राजा वेदि के कदवीं में इस्तिपुर अश्वपुर सिद्धपुर उत्तर पञ्जाब और दरपुर नगरों को बसाया था। इस्तिपुर ही पीछे इन्धिकपुर हो गया था और इस समय इसके मध्यप्रदेश में

जिले की मवान तहसील में विद्यमान हैं। सिंहपुर हुएनसाग के समय में तक्षशिला से ११७ मील पूरव स्थित था। अन्य नगरों का कुछ पता नहीं।

अल्लकप्प—वैशाली के लिच्छवियों, मिथिला के विदेहों, कपिलवस्तु के शाक्यों, रामग्राम के कोलियों, सुसुमारगिरि के भर्गों और पिप्पलिवन के मौर्यों की भाँति अल्लकप्प के बुलियों का भी अपना स्वतन्त्र राज्य था, किन्तु बहुत शक्तिशाली न था। यह १० योजन विस्तृत था। इसका सम्बन्ध वेठदीप के राजवंश से था। श्री बौल का कथन है कि वेठदीप का द्रोण ब्राह्मण शाहाबाद जिले में मसार से वैशाली जानेवाले मार्ग में रहता था। अतः अल्लकप्प वेठदीप से बहुत दूर न रहा होगा। अल्लकप्प के बुलियों को बुद्धधातु का एक अंश मिला था, जिसपर उन्होंने स्तूप बनवाया था।

भद्विय—भङ्ग जनपद के भद्विय नगर में महोपासिका विशाखा का जन्म हुआ था।

बेलुवग्राम—यह वैशाली में था।

भण्डग्राम—यह वज्जी जनपद में स्थित था।

धर्मपाल ग्राम—यह काशी जनपद का एक ग्राम था।

एकशाला—यह कोशल जनपद में एक ब्राह्मण ग्राम था।

एकनाला—यह मगध के दक्षिणागिरि प्रदेश में एक ब्राह्मण ग्राम था, जहाँ भगवान् ने वास किया था।

एरकच्छ—यह दसण्ण राज्य का एक नगर था।

ऋषिपतन—यह ऋषिपतन मृगदाय वर्तमान सारनाथ है, जहाँ भगवान् ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।

गया—गया में भगवान् बुद्ध ने सूचिलोम यक्ष के ग्रहनों का उत्तर दिया था। प्राचीन गया वर्तमान साहयगज माना जाता है। यहाँ से ६ मील दक्षिण बुद्धगया स्थित है। गयातीर्थ बुद्धकाल में स्नानतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध था और यहाँ बहुत से जटिल रहा करते थे।

हस्तिग्राम—यह वज्जी जनपद का एक ग्राम था। भगवान् बुद्ध वैशाली से कुशीनगर जाते हुए हस्तिग्राम से होकर गुजरे थे। वर्तमान समय में यह विहार प्रान्त के हथुवा से ८ मील पश्चिम शिवपुर कोठी के पास अवस्थित है। आजकल उसके नष्टावशेष को हाथीखाल कहा जाता है। हस्तिग्राम का उगगत गृहपति सघसेवकों में सबसे बढ़कर था, जिसे बुद्ध ने अग्र की उपाधि दी थी।

हलिहवसन—यह कोलिय जनपद का एक ग्राम था। यहाँ भगवान् बुद्ध गये थे। कोलिय जनपद की राजधानी रामग्राम थी और यह जनपद शाक्य जनपद के पूर्व तथा मल्ल जनपद के पश्चिम दोनों के मध्य स्थित था।

हिमवन्त प्रदेश—कोशल, शाक्य, कोलिय, मल्ल और वज्जी जनपदों के उत्तर में फैली पहाड़ी ही हिमवन्त प्रदेश कहलाती है। इसमें नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के सभी दक्षिणी प्रदेश सम्मिलित हैं।

इच्छानङ्गल—कोशल जनपद में यह एक ब्राह्मण ग्राम था। भगवान् ने इच्छानङ्गल वनसण्ड में वास किया था।

जन्तुग्राम—चालिका प्रदेश के चालिका पर्वत के पास जन्तुग्राम था। भगवान् के चालिका पर्वत पर विहार करते समय मेघिय स्थविर जन्तुग्राम में भिक्षाटन करने गये थे और उसके बाद किमिकाला नदी के तीरे जाकर विहार किया था।

कलघालगामक—यह मगध में एक ग्राम था। यहीं पर मौद्गल्यायन स्थविर को अर्हत्व की प्राप्ति हुई थी।

कजंगल—यह मध्यम देश की पूर्वी सीमा पर स्थित एक ग्राम था। यहाँ के वेसुवन और सुवेसुवन में तबागत ने बिहार किया था। मिथिला प्रदेश के अनुसार यह एक माध्यम ग्राम था और इसी ग्राम में बागसेन का जन्म हुआ था। वर्तमान समय में बिहार प्रान्त के संबलपुरगना में कंकड़ो क नामक स्थान को ही कजंगल माना जाता है।

कोटिग्राम—यह बज्जी जनपद में एक ग्राम था। मगधान् पाटलि-ग्राम से यहाँ आये थे यहाँ से नादिका गये थे और नादिका से बिसाफी।

कुण्डिय—यह कोसिय जनपद में एक ग्राम था। कुण्डिय के कुण्डियानवन में भगवान् ने बिहार किया था और सुप्यवासा को स्वरित-पूर्वक पुत्र जन्मे का आशीर्वाद दिया था।

कपिलवस्तु—यह शाक्य जनपद की राजधानी थी। यिद्वार्द पाण्डव का जन्म कपिलवस्तु के ही शाक्य राजवंश में हुआ था। शाक्य जनपद में चातुसा सामघाम उलुम्भ सक्कर शीफवती और कोमकुस्त प्रसिद्ध ग्राम पूर्व बगर थे। इसे कोसकवरोश विह्वलन से आक्रमण करके नष्ट कर दिया था। वर्तमान समयमें इसके नद्यावक्षेप नेपाल की तराई में बस्ती जिसे के मुहरतगाइ स्थान से १२ मील उत्तर तीक्ष्णवा बाजार के पास तिर्हीराकोट नाम से विद्यमान है।

केशपुत्र—यह कोसक जनपद के अन्तर्गत एक छोटा-सा स्वतन्त्र राज्य था। यहाँ के कालाम मरु शाक्य मीर और क्षिप्रवी राज्यों की मूर्ति गणतन्त्र प्रजाधी सं प्राप्त करते थे।

केसावती—यह केमवरोस के राज्य की राजधानी थी।

मिथिला—मिथिल विदेह की राजधानी थी। बुद्धकाक में यह बज्जी जनपद के अन्तर्गत थी। बज्जी जनपद की बसाफी और विदेहों की मिथिल—यह प्रसिद्ध नगरिणी थीं। प्राचीनकाल में मिथिल नगरी छाल बोडन विस्तृत थी और विदेह राष्ट्र ३ योजन। जम्पा और मिथिला में ३ योजन की दूरी थी। विदेह राज्य में १५ ग्राम १९ मण्डारगृह और १९ वर्तकिर्णों थीं—ऐसा आठक-काल से प्राप्त होता है। मिथिला एक व्यापारिक केन्द्र था। आबस्ती और बाराभसी से व्यापारी यहाँ आते थे। वर्तमान तिरहुत (सीर भुक्ति) ही विदेह माना जाता है। मिथिला के प्राचीन अक्षयप बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर और दरमंगा जिलों के उत्तर में नेपाल की सीमा पर अक्षयपुर नामक कस्थ में पाये जाते हैं।

मन्वसग्राम—यह मगध में एक ग्राम था।

नालन्दा—यह मगध में राजगृह से १ योजन की दूरी पर स्थित था। यहाँ के पाचारिक-अठक-वन में भगवान् ने बिहार किया था। वर्तमान समय में यह पटना जिले के राजगृह से ७ मील उत्तर पश्चिम में अवस्थित है। इसके विज्ञानक अण्डहर वर्तनीच हैं। यह छठीं और सातवीं सताब्दी ईस्वी में प्रथम बौद्ध-विद्या-केन्द्र था।

नासक—यह राजगृह के पास मगध में एक ग्राम था। इसी ग्राम में सारिपुत्र का जन्म हुआ था और यहाँ उनका परिनिर्वाण भी। वर्तमान समय में राजगृह के पास का नासक ग्राम ही प्राचीन नासक माना जाता है।

नादिका—यह बज्जी जनपद का एक ग्राम था। पाटलिग्राम से गंगा पार कर कोटिग्राम और पादिका में भगवान् गये थे और यहाँ से बिसाफी।

पिप्पलियन—यह मीरों की राजधानी थी। यहाँ के मीरों ने भगवान् बुद्ध की विद्या सं प्राप्त भंगार (कोसक) पर स्तूप बनवाया था। वर्तमान समय में इसके नद्यावक्षेप जिल्ल गोरखपुर के कुमुन्दी स्थान से ११ मील दक्षिण उपनीकी नामक स्थान में प्राप्त हुए हैं।

रामग्राम—अक्षिय जनपद के दो प्रसिद्ध पगर थे रामग्राम और वेवद्द। भगवान् के परि निर्वाण के बाद रामग्राम के अक्षियों ने उनकी अस्थि पर स्तूप बनवाया था। श्री ९ सी एक

कारछापल ने वर्तमान रामपुर-देवरिया को रामग्राम प्रमाणित किया है जो कि मरघा ताल के किनारे बस्ती जिले में स्थित है, किन्तु महावंश (३१, २५) के वर्णन से ज्ञात है कि रामग्राम अचिरवती (राप्ती) नदी के किनारे था और बाद के समय वहाँ का चैत्य टूट गया था। सम्भवत गोरखपुर के पास का रामगाँव तथा रामगढ़ ही रामग्राम है।

सामगाम—यह शाक्य जनपद का एक ग्राम था। यहीं पर भगवान् ने सामगाम सुत्त का उपदेश दिया था।

सापुग—यह कोलिय जनपद का एक निगम था।

शोभावती—यह शोभ-नरेश की राजधानी थी।

सेतव्य—यह कोशल जनपद में एक नगर था। इसके पास ही उक्कट्टा थी और वहाँ से सेतव्य तक एक सड़क जाती थी।

संकस्स—भगवान् ने श्रावस्ती में यमक प्रातिहार्य कर, तुषित-भवन में वर्षावास करके महा-प्रवारणा के दिन संकस्स नगर में स्वर्ग से भूमि पर पदार्पण किया था। संकस्स वर्तमान समय में सकिसा-वसन्तपुर के नाम से कालिन्दी नदी के उत्तरी तट पर विद्यमान है। यह एटा जिले के फतेहगढ़ से २३ मील पश्चिम और कनौज से ४५ मील उत्तर-पश्चिम स्थित है।

सालिन्द्य—यह राजगृह के पूरब एक ब्राह्मण ग्राम था।

सुंसुमागिरि नगर—यह मग्न राज्य की राजधानी था। बुद्धकाल में उदयन का पुत्र बोधि-राजकुमार यहाँ राज्य करता था। जो बुद्ध का परम श्रद्धालु भक्त था। किन्तु, मग्न राज्य पूर्णरूपेण प्रजातन्त्र राज्य था, क्योंकि गणतन्त्र राज्यों में इसकी भी गणना की जाती थी। मग्न आजकल के मिर्जापुर जिले का गंगा से दक्षिणी भाग और कुछ आस-पास का प्रदेश है, इसकी सीमा गंगा-टोंस-कर्मनाशा नदियाँ एव विन्ध्याचल पर्वत का कुछ भाग रही होगी। सुंसुमारगिरि नगर मिर्जापुर जिले का वर्तमान जुनार कस्बा माना जाता है।

सेनापति ग्राम—यह उरुवेला के पास एक ग्राम था।

शूण—यह एक ब्राह्मण ग्राम था और मध्यम देश की पश्चिमी सीमा पर स्थित था। आधुनिक पानेश्वर ही शूण माना जाता है।

उक्काचेल—यह वज्जी जनपद में गंगा नदी के किनारे स्थित एक ग्राम था। उक्काचेल बिहार प्रान्त के वर्तमान सोनपुर या हाजीपुर के आसपास कहीं रहा होगा।

उपतिस्सग्रास—यह राजगृह के निकट एक ग्राम था।

उग्रनगर—उग्रनगर का सेठ उग्र श्रावस्ती में व्यापार के कार्य से आया था। इस नगर के सम्बन्ध में अन्य कोई जानकारी प्राप्त नहीं है।

उसीरध्वज—यह मध्यमदेश की उत्तरी सीमा पर स्थित एक पर्वत था, जो सम्भवत कनखल के उत्तर पड़ता था।

वेरञ्जा नगर—भगवान् श्रावस्ती से वेरञ्जा गये थे। यह नगर कन्नौज से संकस्स, सोरेय्य होते हुए मथुरा जाने के मार्ग में पड़ता था। वेरञ्जा सोरेय्य और मथुरा के मध्य कहीं स्थित था।

वेत्रवती—यह नगर वेत्रवती नदी के किनारे बसा था। वर्तमान वेतवा नदी ही वेत्रवती मानी जाती है।

वेणुवग्राम—यह कौशाम्बी के पास एक छोटा ग्राम था। वर्तमान समय में इलाहाबाद से ३० मील पश्चिम कोसम से थोड़ी दूर उत्तर-पूर्व स्थित वेनपुरवा को ही वेणुवग्राम माना जाता है।

५ नदी और अक्षांश

मुद्गालक में सम्प्रति दस में जो नदी अक्षांश और पुष्करिणी भी उक्त संक्षिप्त परिचय इस प्रकार व्यवसाय चाहिये—

मन्चिरवती—इसे वर्तमान समय में राप्ती कहते हैं। यह भारत की पाँच महानदियों में एक थी। इसी के किनारे कोसल की राजधानी भावस्ती बसी थी।

अमोमा—इसी नदी के किनारे सिद्धार्थ कुमार ने प्रमथ्या ग्रहण की थी। श्री कर्मिषम ने गोरखपुर जिले की अमोमा नदी को अमोमा माना है और श्री कारकपक ने बस्ती जिले की कुइया नदी को। किन्तु इन पंक्तियों के लेखक की दृष्टि में बेरिया जिले की महान नदी ही अमोमा नदी है। (देखो कुशीनगर का इतिहास, प्रथम प्रकरण पृष्ठ ५८)।

पाहुका—मुद्गालक में यह एक पवित्र नदी मानी जाती थी। वर्तमान समय में इसे धुमेक नाम से पुकारते हैं। यह राप्ती की सहायक नदी है।

पाहुमती—वर्तमान समय में इस नामकी कहते हैं जो बेपाक से होती हुई बिहार प्रान्त में जाती है। इसी के किनारे प्यडमोह नगर बसा है।

अम्पा—यह मगध और अंग जनपदों की सीमा पर बहती थी।

उहन्त—यह हिमाचल में स्थित एक सरोवर था।

गंगा—यह भारत की महिम्न नदी है। इसी के किनारे इतिहास प्रयाग और बाराणसी स्थित हैं।

गमारा पुष्करिणी—अंग जनपद में अम्पा नगर के पास थी। इसे रानी अम्परा ने खोदवाया था।

हिरण्यवती—कुशीनारा और मरुओं का सायबन उपज्जन हिरण्यवती नदी के किनारे स्थित थे। बेरिया जिले का सातरा गाँव ही हिरण्यवती नदी है। यह कुम्भकुआ स्थान के पास अनुष्मा नदी में मिलती है। इसी को हिरवा की नारी और कुम्भही नारा भी कहते हैं जो 'कुशीनारा' का अपभ्रंश है।

कोसिकी—यह गंगा की एक सहायक नदी है। वर्तमान समय में इसे कुसी नदी कहते हैं।

ककुत्था—यह नदी पावा और कुशीनारा के बीच स्थित थी। वर्तमान प्राचीन नदी ही ककुत्था मानी जाती है। (देखो कुशीनगर का इतिहास पृष्ठ ३)।

कहमदह—इस नदी के किनारे महाकात्यायन ने कुछ दिनों तक बिहार किया था।

क्रिमिकाळा—यह नदी बाकिा में थी। मेकिय स्थिर ने अस्तुमान में विधायक कर इस नदी के किनारे बिहार किया था।

मंगल पुष्करिणी—इसी के किनारे बड़े हुए तथागत को राहुल के परिवर्तन का समाचार मिला था।

मही—यह भारत की पाँच नदी नदियों में से एक थी। नदी अक्षक को ही नहीं कहते हैं।

गयाकाट—यह हिमाचल में एक सरोवर था।

रोहिणी—यह साक्य भार कोसिब जनपद की सीमा पर बहती थी। वर्तमान समय में भी इस राहिनी ही कहते हैं। यह गोरखपुर के पास राप्ती में मिलती है।

सपिनी—यह नदी राजगृह के पास बहती थी। वर्तमान पञ्जाब नदी ही अम्पवता सपिनी नदी है।

सुतनु—इस नदी के किनारे अनुष्मान् अनुसुह ने बिहार किया था।

निरञ्जना—यह नदी उदयेक प्रदेश में बहती थी। इसी के किनारे बुद्धन्या स्थित है। इस समय इसे विद्यान्या नदी कहते हैं। विद्यान्या और मोहना नदियों मिलकर ही अम्पा नदी कही जाती है। विद्यान्या नदी इजरीनाम जिले के सिमेरिया नामक स्थान के पास से निकलती है।

सुन्दरिका—यह कोशल जनपद की एक नदी थी ।

सुमागधा—यह राजगृह के पास एक पुष्करिणी थी ।

सरयू—इस समय इसे सरयू कहते हैं । यह भारत की पाँच बड़ी नदियों में से एक थी । यह हिमालय से निकल कर बिहार प्रान्त में गंगा से मिलती है । इसी के किनारे अयोध्या नगरी बसी है ।

सरस्वती—गंगा की भाँति यह एक पवित्र नदी है, जो शिवालिक पर्वत से निकल कर अम्बाला के आदि-बद्री में मैदान में उतरती है ।

वेत्रवती—इसी नदी के किनारे वेत्रवती नगर था । इस समय इसे वेतवा नदी कहते हैं और इसी के किनारे भेलसा (प्राचीन विदिशा) नगर बसा हुआ है ।

वैतरणी—इसे यम की नदी कहते हैं । इसमें नारकीय प्राणी दुःख भोगते हैं । (देखो, संयुक्त निकाय, पृष्ठ २२) ।

यमुना—यह भारत की पाँच बड़ी नदियों में से एक थी । वर्तमान समय में भी इसे यमुना ही कहते हैं ।

पर्वत और गुहा

चित्रकूट—इसका वर्णन अपदान में मिलता है । यह हिमालय से काफी दूर था । वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड के काम्पतनाथ गिरि को ही चित्रकूट माना जाता है । चित्रकूट स्टेशन से ४ मील दूर स्थित है ।

चौरपपात—यह राजगृह के पास एक पर्वत था ।

गन्धमादन—यह हिमालय पर्वत के कैलाश का एक भाग है ।

गयाशीर्ष—यह पर्वत गया में था । यहीं से सिद्धार्थ गौतम उरुत्रेला में गये थे और यहीं पर बुद्ध ने जटिलों को उपदेश दिया था ।

गृद्धकूट—यह राजगृह का एक पर्वत था । इसका शिखर गृद्ध की भाँति था, इसीलिये इसे गृद्धकूट कहा जाता था । यहाँ पर भगवान् ने बहुत दिनों तक विहार किया और उपदेश दिया था ।

हिमवन्त—हिमालय को ही हिमवन्त कहते हैं ।

इन्द्रशाल गुहा—राजगृह के पास अम्बसण्ड नामक ब्राह्मण ग्राम से थोड़ी दूर पर वैदिक पर्वत में इन्द्रशाल गुहा थी ।

इन्द्रकूट—यह भी राजगृह के पास था ।

ऋषिगिरि—राजगृह का एक पर्वत ।

कुररधर—यह अवन्ति जनपद में था । महाकात्यायन ने कुररधर पर्वत पर विहार किया था ।

कालशिला—यह राजगृह में थी ।

पाचीनवंश—यह राजगृह के वैपुल्य पर्वत का पौराणिक नाम है ।

पिष्फलि गुहा—यह राजगृह में थी ।

सत्तपणी गुहा—प्रथम सगीति राजगृह की सत्तपणी गुहा में ही हुई थी ।

सिनेरु—यह चारों महाद्वीपों के मध्य स्थित सर्वोच्च पर्वत है । मेरु और सुमेरु भी इसे ही कहते हैं ।

श्वेत पर्वत—यह हिमालय में स्थित है । कैलाश को ही श्वेत पर्वत कहते हैं । (देखो, संयुक्त निकाय, पृष्ठ ६१) ।

सुसुमारगिरि—यह भर्ग प्रदेश में था । सुनार के आसपास की पहाड़ियाँ ही सुसुमार गिरि हैं ।

सप्यसोणिकक पम्मार—राजगृह में ।

वेपुल्ल—राजगृह में ।

वेमार—राजगृह में ।

६ घाटिका भीर धन

भास्यधन—भास के बने पास को भास्यधन कहते हैं । तीन भास्यधन प्रसिद्ध हैं । एक राजगृह में बीचक का भास्यधन था । दूसरा कञ्जुवा बरी के किनारे पास भीर कुशीमारा के पीछे, भीर तीसरा कम्मन्दा में सोदेव माहाय का भास्यधन था ।

मन्वपाठियन—यह बैसाखी में था ।

मन्वाटक वन—यह बन्नी बनपद में था । भन्नाटक बन के मण्डिकर बनसण्ड में बहुत से मिथुनों के बिहार करते समय चित्त गृहपति से उनके पास आकर चर्म-बर्षा की थी ।

मनूपिय-मन्वधन—यह मन्वराह में मन्पिवा में था ।

मन्धवन—यह सन्केठ में था । मन्धवन मृगदाय में भगवान् ने बिहार किया था ।

मन्धवन—यह धावस्ती के पास था ।

इच्छामल्ल वन-सण्ड—यह कोरक बनपद में इच्छामल्ल माहाय धन के पास था ।

जेतवन—यह धावस्ती के पास था । वर्तमान महद ही जेतवन है । जोदाई से पिक्कलेय बादि प्राप्त हो चुके हैं ।

जातियधन—यह मरिय राज्य में था ।

कप्पासिय धन-सण्ड—तीस मन्ववर्षियों से इसी बन-सण्ड में कुछ का दर्शन किया था ।

कम्मन्कमिवाप—यह राजगृह में था । विहहरिणों को भयम दान देने के कारण ही कम्मन्क-विवाप कहा जाता था ।

कम्मिधन—कम्मिधन में ही किम्मिसार ने मन्वधन को ग्रहण किया था ।

कुम्बिनी धन—यहीं पर सिद्धार्थ गौतम का कम्म हुआ था । वर्तमान् कम्मिबर्द्ध ही प्राचीन कुम्बिनी है । यह गोरखपुर किले के नौतनवा स्टेशन से १० मील पश्चिम नेपाल राज्य में स्थित है ।

महावन—यह कपिकवस्तु से लेकर हिमाचल के किनारे-किनारे बघाखी तक भीर वहाँ से पशुवस्तु तक विस्तृत महावन था ।

मन्वकुक्षि मृगदाय—यह राजगृह में था ।

मोर विवाप—यह राजगृह की सुमागधा पुष्करिणी के किनारे स्थित था ।

मगधन—यह बन्नी बनपद में हस्तिधन के पास था ।

पावारिकरवधन—यह कम्मन्दा में था ।

मंसफलावन—भय प्रवेश के सुसुमारियिरी में मंसफलावन मृगदाय था ।

सिसपावन—यह कोरक बनपद में सेतल नगर के पास उत्तर दिशा में था । श्रीसाम्नी भीर बघाखी में भी सिसपावन थे । सीसम के बन को ही सिसपावन कहते हैं ।

हीतधन—यह राजगृह में था ।

उपयस्तम शाखधन—यह मन्वराह में हिरण्यवती बरी के तट कुशीमारा के पास उत्तर धोर था ।

वेपुल्लधन—यह राजगृह में था ।

७ वैश्य भीर बिहार

इदम्बक में जो मण्डिक वैश्य भीर बिहार थे, उनमें से बैसाखी में कायाक वैश्य राजाकक वैश्य,

सूची हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिन्हें विज्ञान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी काम उठाते रहते हैं। प्रथम सूचियों के साथ २ खरीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्राचीन प्रयोगों की प्रतिलिपियाँ एवं परिचय लिखे जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं भी इन मसालों में प्रमुख संस्कृत में मिलते हैं। एसे खरीब २००० पंक्तियाँ अब हमने समझ कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा समन है इस रूप हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह लोक पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिन उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी, हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर लोच करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर लोच करने का प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में दयावशक सहयोग देंगे।

प्रथम सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र मंडारों की सूची दी गई है मैं उन मंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः भी नाथूजालजी वज्र, अनूपचंदजी श्रीमान, पं० मंगरामजी ग्यायतीर्थ, श्रीरामजी गोभा, समीरामजी ध्यावदा, फूलचंदजी रावधर, एवं प्रो० सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र मंडारों की सूचियाँ बनाने तथा समय समय पर वहाँ के प्रयोगों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनके साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम भी डा० वासुदेव शरणजी अमवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय काणपुर के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके प्रथम सूची की मूद्रिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनके प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस भाग के विद्वान् मसाले भी डा० कस्तूरचंदजी अक्षीवाल एवं उनके सहयोगी भी पं० अनूपचंदजी ग्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न शास्त्र मंडारों का इकट्ठा कराना एवं परिचय से इस भाग को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् भी पं० जैन मुन्नामजी ग्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूँ कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में प्रथम प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प वल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर बठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पडताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य विना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद्र चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचियां मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रख हो गई थी। हात होता है अलांतर में यह संख्या १०४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २० (पंथ संख्या १४०२) में नगरों की बसापत का संवत्सार ख्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अफ़्कर पातसाह भागसो बसायो संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगबाद बसायो संवत् १२४५ बिमल मंत्री स्वर हुषो बिमल बसाई।

विकास की उन पिछली शक्तियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुमान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को दखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, समग्र, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, अममाल, प्ररनोत्तरी, मत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, बर्णन, मुभापित, भौषई, शुभमालिका, निमाणी, सफ़ी, ध्याइलो, बघाभा, भिन्ती, पत्री, भारती, बोल, चरचा, बिचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, कब, कल्पय, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, भमल, बौडासिया, भौमासिया, बारासा, बटोई, बेलि, हिंडोलखा, चूनी, सग्मय, बारासही, भक्ति, बभन्या, पञ्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, सामाधिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुबावली, खवन, संघो धन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकसित और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमू ल सामग्री इन मंडारों में सुलभ है।

राजस्थान में कुछ शास्त्र मंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें सभित प्र वों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। इय की बात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्ता इस भारी दायित्व के प्रति जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहु व्यव की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपन देश में पूना का मंडारकर इन्स्टीट्यूट, संजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का प्रथम मंडार हस्तलिखित प्रयोगों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महापीर अतिराय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने भय तक अपने माधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अयत्न करने योग्य है। ११ वीं शती से १५ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी सभित निधि का कुंभर जैसा समुद्र कोप ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन मंडारों का अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके सभय में ज्ञान भीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको दखते हुये हम मस्या के महत्वपूर्ण कार्य का अथापक स्वागत किया जाना चाहिये।

प्रस्ताविका

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासते यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एव समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनों पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भंडारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि में नागौर एवं जयपुर के भंडार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहां से ग्रंथों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बांट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

- ३ एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक प्रथम वाले शास्त्र संसार
- ४ पांचसौ प्रथमों से कम वाले शास्त्र संसार

इन शास्त्र-संसारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु अर्थ, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी प्रथम मिलते हैं। प्रत्येक-मानव की-रुचि के विषय, क्या कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी-संख्यामें उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी प्रथमों का-समूह मिलता है। कुछ संसारों में अनेक विद्वानों द्वारा लिखे हुए अथर्व-ग्रन्थ भी समर्पित किये हुए मिलते हैं। ये शास्त्र-संसार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध-संस्थान हैं। केवल संसारों में साहित्य की इतनी-अमूल्य-सम्पत्ति होती-हुये भी कुछ-वर्षों-पूर्व तक ये विद्वानों के-घरों-के-बाहर रहे। अब कुछ-समय-बदला-है और संसारों के-व्यवस्थापक-प्रभों के-दिग्दर्शन में-उतनी-आना-प्यती-नहीं-करते-हैं। यह-परिवर्तन-वास्तव में-खोज-में-खीन-विद्वानों के-लिये-हृष्य-है। आज-के-२०-वर्ष-पूर्व-तक-राजस्थान-के-१०-प्रतिशत-संसारों-को-न-तो-किसी-अन-विद्वान-ने-देखा-और-न-किसी-अन-तर-विद्वान-ने-इन-संसारों-का-महत्व-को-मानने-का-प्रयास-ही-किया। अब-गव १०, १५-वर्षों-से-इधर-कुछ-विद्वानों-का-ध्यान-आकाश-हुआ-है-और-सर्व-प्रथम-हमने-राजस्थान-के-५५-के-करीब-संसारों-को-देखा-है-और-शेष-संसारों-को-देखने-की-योजना-बनाई-जा-चुकी-है।

ये-प्रथम-संसार-प्राचीन-युग-में-पुस्तकालयों-का-काम-भी-देते-थे। इनमें-बैठ-कर-स्वाम्याय-प्रेमी-शास्त्रों-का-अभ्ययन-किया-करते-थे। उस-समय-इन-प्रथमों-की-सूचियां-भी-उपलब्ध-हुआ-करती-थी-तथा-ये-प्रथम-संसारों-के-पुस्तकों-के-बीच-में-रक्कर-सूत-अथवा-सिल्क-के-फीतों-से-बांध-जाते-थे। फिर-उन्होंने-कपड़े-के-पेड़ों-में-बांध-बिना-आसा-था। इस-प्रकार-प्रथमों-के-वैज्ञानिक-रीति-से-रख-माने-के-कारण-इन-संसारों-में-११-वीं-शताब्दी-तक-के-लिखे-हुये-प्रथम-पाये-जाते-हैं।

जैसा-कि-पहिले-कहा-जा-चुका-है, कि-ये-प्रथम-संसार-नगर-करवे-पूर्व-गांवों-तक-में-पाये-जाते-हैं-इस-लिये-राजस्थान-में-उनकी-वास्तविक-संख्या-कितनी-है-इसका-पता-लगाना-कठिन-है। फिर-भी-यहां-अनुमानत-बड़े-बड़े-२००-संसार-होंगे-जिनमें-११, २-लाख-से-अधिक-हस्तलिखित-प्रथमों-का-संग्रह-है।

जयपुर-प्रारम्भ-से-ही-अन-संस्कृति-एवं-साहित्य-का-केन्द्र-रहा-है। यहाँ-१५०-से-भी-अधिक-जिन-मंदिर-एवं-चैत्यालय-हैं। इस-नगर-की-स्थापना-संभव-१५५४-में-महाराजा-सवाई-अपसिंहजी-द्वारा-की-गई-थी-तथा-किसी-समय-आमेर-के-महाराज-जयपुर-को-राजधानी-जनाया-गया-था। महाराजा-ने-इसे-साहित्य-एवं-कला-का-भी-केन्द्र-बनाया-तथा-एक-राजकीय-पोथीखाने-की-स्थापना-की-जिसमें-भारत-के-विभिन्न-स्थानों-से-लाये-गये-सैकड़ों-महत्वपूर्ण-हस्तलिखित-प्रथम-संघीत-किये-हुये-हैं। यहाँ-के-महाराजा-प्रवापसिंहजी-भी-विद्वान्-थे। उन्होंने-कितने-ही-ग्रन्थ-लिखे-थे। इनका-लिखा-हुआ-एक-अथर्व-संगीतस्यार-जयपुर-के-बड़े-मन्दिर-के-शास्त्र-संसार-में-संघीत-है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) शुमान्नीराम (१८, १९ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वीं शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छाबडा (१९ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१९ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१९ वीं शताब्दी) तन्दलाल छाबडा (१९ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१९ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१९ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१९ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१९ वीं शताब्दी) जैतराम (१९ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१९ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१९ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रंथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रंथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रंथों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भण्डारों के ग्रंथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भण्डार यहां के प्रमुख शास्त्र भण्डार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा घ भण्डार प्रमुख हैं। ग्रंथ सूची में आये हुये इन भण्डारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भण्डार)

यह भण्डार दि० जैन पाटोदी के मन्दिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ मे 'आदिनाथ चैत्यालय' भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भण्डार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक चेमेन्द्रकीर्ति, सुरेन्द्रकीर्ति, सुखेन्द्रकीर्ति एवं नरेन्द्रकीर्ति का क्रमशः संवत् १८१५,

१८२२, १८६३, तथा १८७६ में यही पट्टामिके' हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहाँ का शास्त्र भंडार मट्टारकों की बल देल में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहाँ शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये भावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ भी होती रहती थी। मट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होन लगा तथा जब वे साहित्य की ओर अपेक्षा दिखलाने लगे तो यहाँ के भंडार की व्यवस्था भावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के परचात यह पता चलता है कि भावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखाई और उन्होंने भंडार को कभी अवरथा में सुरक्षित रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। मत्तार स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र की एक एक ताबपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ अल्पवृत्तीय एवं अर्द्धवृत्तीय के चित्र एवं यन्त्र, मन्त्र आदि का वस्तुस्थानीय संग्रह है।

भंडार में महाकवि पुण्यवन्त कृत वसुधर चरित (परोपर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत् १४०७ में बन्धुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहाँ १५ बी, १६ बी, १७ बी एवं १८ बी शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतिषों में गोमटसार जीवबंध, तत्त्वार्थ सूत्र (सं० १४५८) इन्द्रसुप्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३५), व्यासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्म संग्रह भावकाचार (संवत् १५४०) भावकाचार (गुणमूढणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विद्यानन्दि कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द्र (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (अशाकवि सं १५५२) ऐमिणाह चरित (लक्ष्मण देव सं १६३६) नागसुमार चरित्र (मस्त्रियेण कवि सं १५६४) वरांग चरित्र (बख्तमान देव सं १५६४) नवकार भावकाचार (सं० १६१२) आदि सौहार्दों ग्रंथों की वस्तुस्थानीय प्रतिषियाँ हैं। ये प्रतिषियाँ सम्पादन कार्य में बहुत कामप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, धर्म्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी



पंडित करि बखान अल्पमति नहि वषामे जो हे प्रथम अत्र
परसभा मारै मा ही वां चे वहुत हिला कया महे से से ना ही
सब गिरथ की वेनि न आवे तो इ ह जनी बंधर तनी
अवसि मे ब करनी सुभाषा अपी ही ने भी र ह मने सी सु नी
चु र सु म नी त से हि दो ल ति उ र धा रो सि ड वे ल जी सु ध
रजा ति ह म उ ह त को री सा ग वा ड हे वा स श्री म क म म
नि ध रे रो सु सु सु वि ध सी लो क ध रे मे सु सु म ने री
ति न ने आ ग र क र क ही कु नि दो ल ति के म न में व सी
सी स क त ते भा ध की नी इ हे के धा हे नी र सी गा से क हे
अ र ह से सु र भु आ व ल सु मा म प्र ति धि दो इ न ग र

वारि प दा सु क ल नु सु भ भा सा ती नै पर स र ह प्र थ
सु भ पू र ण ह वो श्री जि न ध म प्र भा र्थ स क ल भ व च प्र त
इ वो न दो वि रे धो ज र्ज त मा ही जो ल ग च र दि जो क रा ति
धौ न व्य नि के हि ये मे न व र स व र ण ने ते न रा ग धा इ ते श्री नी
वी ध र स्वा मि च रि त्र स पू र ण सु भ भ व सु क ल्या ण म स्तु अ



है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्राय सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमे कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मल्लकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमेंसे कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में प्रतकथा कोष (सकलकीर्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद्र का मुनिसुव्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद्र की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत शोमिणाह चरित, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रत्न कविकृत जिनदत्त चौपई (सं १३५४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का मुवनकीर्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्वन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र मंडार इसी मन्थर में वावा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस मंडार को उन्ही के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फरूदन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुए आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान मानकर यहीं पर शास्त्र समग्रालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र मंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के परचात समग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं वावाजी द्वारा लिखे हुए हैं तथा कुछ भाषाओं द्वारा उन्हें प्रदान किये हुए हैं। वे एक सैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत बर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुबाद किया था जो सभी इस मंडार में समग्रहीत हैं।

यह शास्त्र मंडार पूर्णतः व्यवस्थित है। तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन पन्ने कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी मंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र मंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की माया टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहाँ ग्रंथों की प्रतियाँ मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धांत विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहाँ अधिक संग्रह है।

मंडार में आप्तमीमासासंस्कृति (आ० विद्यानन्दि) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस मंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगड में मुस्तान गया सुदीन के समय में लिखी गई थी। तत्त्वार्यसूत्र की स्वर्यमयी प्रति दर्रांनीय है। इसी तरह यहाँ गोमटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियाँ हैं। ऐसी अच्छी प्रतियाँ कहाचित् ही दूसरे मंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि यह देखते ही बनती है। पद्मासाल चौबरी के द्वारा लिखी हुई बालराम कृत बापरांग पूजा की प्रति भी (सं० १८५६) दर्रांनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पद्मासालजी संपी का अधिकांश साहित्य यहाँ संग्रहीत है। इसी तरह मंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहाँ सभी रचनायें मिलती हैं। जसनेल नीय ग्रंथ महत्त्वपूर्ण ग्रंथों में अल्लू कवि का प्राकृतदम्बकोप, बिनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, बादिपद्म सूरि का पवनदूत काव्य, शानाणव पर भयविलास की संस्कृत टीका, गोमट सार पर सक्लभूषण एवं धमचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में दवीसिंह छाबडा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) छत्तपति जैसवाल की मन-
मोदन पंचविंशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा
संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छाबडा
के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोवनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोवनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार
में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन
एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई
थी। पंडितजी जोवनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि
ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य
पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, अयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा
साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है।
भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों
की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक
प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे
प्राचीन प्रति पद्मनन्दपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय
ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक ज्ञेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन
उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की
थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार
में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रुक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ
हैं। यहां बिहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह
का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बौली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर'
के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। समग्र [सामान्य] है तथा प्रतिदिन स्वाम्नाय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। बालूरामजी साह यहाँ उत्सही सम्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुए ग्रंथों में पंच अक्षरम् ब्राह्मण कृत ज्ञानार्णव भाषा (सं १८००) सुराज्यचन्द्र कृत त्रिकोणसार भाषा (स० १८८४) शैलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं १८८३ एवं धीतर ठोलिया कृत होलिका चरित (स १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

५ शास्त्र भंडार दि जैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर (बं मंडार)

'बं' मंडार चौहरी वाजार मोतीसिंह भोयियों के रास्त में स्थित नये मन्दिर में समर्पित है। यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार में १५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें बीरनन्द कृत चन्द्रप्रभ चरित के प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ माघ शुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र समग्र की दृष्टि से मंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हरतलिखित ग्रंथों में गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (स० १६०६,) ब्रह्मजिनवास कृत हरिवंश पुराण (स० १६४१,) दीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोचसेन कृत दशरूपणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की पञ्चदशक शतक की टीका मन् १५७६ के ही अगहन मास की तिथि हुई है। ब्रह्मजिनवास कृत अठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसविक्रमास उल्लेखनीय प्रतियों में हैं। भंडार में अयिमदस मंत्र, अयिमदस पूजा, निर्वाणकाण्ड, अष्टाभिषेक जयमाल की म्यर्णाहरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बाहर सुन्दर बेल मृत्तों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक बार एक पत्र पर आ गई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६ शास्त्र भंडार दि जैन मन्दिर संधीजी जयपुर (क मंडार)

संधीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विराल मन्दिर है। यह चौहरी मोरीखाना में महाधीर पाक के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण वीरान भू धारामजी संधी द्वारा कराया गया था। वे महाराज जयसिंहाजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चबूती में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। यह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तलिखित ग्रंथों का समग्र है। सभी ग्रंथ अगल पर लिखे हुए हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ पणोकारकाव्य है जो संवत् १६६५ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अब भी ग्रंथों की प्रति

लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों में भर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द्र कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार में संवत् १५३० की किराताजुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार में महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णवालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश वत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंद्रजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंद्रजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आम्राप के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषत पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचंद्रजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके

समयअखीन विद्वानों में से नवसुराम, गुमानीराम, जयचन्द झावड़ा, डाखराम । मन्नासाहल लिम्बूका, स्वरूपचन्द बिलासा के नाम उल्लेखनीय हैं और समभवत इन्हीं विद्वानों के सहयोग से ये ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे । प्रतिभासांतचतुर्दशीत्रतोद्यापन सं १८७७, गोमटसार सं १८८६, पञ्चतन्त्र सं १८८७, चंद्र बूढामणि सं १८९१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्हाने मंडार में बिराजमान की थी ।

मंडार में अधिकांश संग्रह १९ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं । इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पूर्वचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	हे का सं १५५३	संस्कृत
५० अन्नदेव	लक्ष्मिबिधानकथा	सं १६०७	"
अमरकीर्ति	पटकर्मोपदेशरत्नमाला	सं १६०२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वाथसिद्धि	सं १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	शरोधर चरित्र	सं १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनभिवन्द	नेमिनाथ पुराण	सं १६४६	संस्कृत
ओभराज	प्रवचनसार भाषा	सं १७३०	हिन्दी

अज्ञात कृतियों में तेजपाल अविद्वत समक्षिणणाह चरित्र (अपभ्रंश) तथा हरचन्द गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (१० कां १६१८) के नाम विशेषत उल्लेखनीय हैं ।

८ दि० जैन मन्दिर गोधों का वयपुर (छ मंडार)

गोधों का मन्दिर भी वालों का रास्ता, नागारियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात् ही यहाँ शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ यहाँ सांग्रनेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे । वर्तमान में यहाँ एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं । मंडार में पुराण, चरित्र, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १९ वीं शताब्दी तक के किये हुए हैं । शास्त्र मंडार में प्रवचनकोश की सवत् १९८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । यहाँ हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य मंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं ।

चिन्तामणिअमपाल	ठण्डुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	"	"	" "
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पद्म कवि	"	" "

नेमीश्वर चौनामा	सुनि मिठनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	"	"	" "
नेमीश्वर रास	सुनि रतनवीति	"	" "
नेमीश्वर हिडोलना	"	"	" "
द्वयसंग्रह भाष्य	हेमराज	"	२० वीं १७१२
चतुर्दशीकथा	टालराम	"	१७६४

उक्त रचनाओं के प्रतिनिधि जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनके वृन्-राज, डीहल्ल, कनकवीति, प्रभाचन्द्र सुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। संवत् १६२६ में रचित दूंगरविधी होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० में रचित हरचंद्र गगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रंथों में ज्ञानस्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उक्तका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचरित कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुग्धमंडन सं० १६८३, नारस्वत दीपिका सं० १६४७, नामनाला (वनंजय) सं० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) सं० १६५३, सत्यसार नाटक (दत्तारजीदत्त) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात् ही यहा शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय से ही अपने यहा शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अविकारा ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उनके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभकाव्य पंजिका सं० १५६४, प० देवीचन्द्र कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत सत्यसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्माभूत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (भू भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर दसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानां का द्रोश चा० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहा अ शास्त्र मठार भी कोई बड़ी वरा में नही है। बहुत से प्रथम जीण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहाँ २०५ प्रथम वर्ष ५६ गुटके हैं। शास्त्र मठार को देखते हुये यहाँ गुटकों का अच्छा समझ है। इनमें विरभमूषण की नमीरवर की सहरी, पुण्यरत्न की नमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाइ (२ का १७५६) स्योजी राम सोनगयी की अग्निचिह्न भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिद्र, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहित हैं साह सोहट कृत पटलेश्यावेखि एवं असुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र मठार दि० जैन मन्दिर पार्ष्वनाथ जयपुर (ज मठार)

दि० जैन मन्दिर पार्ष्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह ल्वासजी का रास्ता जो० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण सवत् १८०५ में मोनी गात्र वासु किसी भाषक ने कराया था इसलिय यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ एक शास्त्र मठार है जिसमें ५४० प्रथम वर्ष १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा क प्रथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य मठार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४५ की लिखी हुई है। यद्यपि मठार में प्रथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण प्रथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहाँ अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञान प्रथों में अपभ्रंश भाषा का विश्वरामिह कृत अचितनाथ पुराण, कवि वामोदर कृत योमिणाह चरिय, गुणनन्दि कृत नीरनन्दि के चन्द्रप्रमद्वयकी पचिह्न, (संस्कृत) महापठित अगमाथ कृत नेमिनरन्त्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मानन्दि कृत वर्तमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत दुराणमार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (दि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहाँ प्रथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहित है। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र सं	प्रथ नाम	प्रकाशक नाम	ले अक्ष	भाषा
१५३५	पटपाहुड़	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्तमानकाव्य	पद्मानन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्याह्वावर्मजरी]	मरिचपेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अचितनाथपुराण	विश्वरामिह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	योमिणाहचरिय	वामोदर	१५८२	"
२३२३	परिषरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११५५	सागरभर्मन्वित	आशापर	१५८५	

सूची की क्र. सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथ कार नाम	ले काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिपेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
२५७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२०२६	क्षत्रचूडामणि	वादीभरसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में कपडे पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपडे पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छावनों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छंदसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवद्धन कृत पान्डव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाहिका रासो तथा बंसीदास कृत रोहिणीविधिवथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

प्रथम सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये प्रथमों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के प्रथमों के अध्ययन से पता चलता है कि वे आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर प्रथम लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं था जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहाँ उन्होंने धार्मिक एवं आत्म साहित्य लिख कर मंत्रारों को मरा है वहाँ दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोरा आदि लिख कर अपनी विद्वान्ता की छाप लगाई है। आसकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूत्रों से सूत्र विषय का विस्तारण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूत्रमय चर्चा शायद ही अन्य ग्रंथों में मिल सक। पूजा साहित्य लिखने में भी वे किसी से पीछे नहीं रहें। उन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर आसकों को इनको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाग्रंथों की संख्याओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। प्रथम सूची के इसी भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थ चरों एवं राजाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं ग्रंथ प्रथम मिलते हैं। प्रथम सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के प्रथम आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में बखन करने में जैन आचार्यों ने अपने पांडित्य का प्रदर्शन किया है। इन मंत्रारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथाएँ रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन मंत्रारों में अच्छा साहित्य संग्रहित है। गुटकों में आयुर्वेद के मुसलों का अच्छा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के मुसल्ले दिये हुये हैं जिन पर खोज करने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस बार हमने फागु, रासो एवं बेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन किया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन मंत्रारों में संग्रहित हैं। अकेले ब्रह्म विनवास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन मंत्रारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो प्रथम मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद पत्र बनाने की दृष्टि से संग्रहित किये हुये इन मंत्रारों में जैन विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोप, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु उन पर विस्तृत टीकाएँ भी लिखी हैं। प्रथम सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही ग्रंथों का उल्लेख आया है। मंत्रारों में ऐतिहासिक रचनाएँ भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें महारथ पद्मबलि, महारथों के छन्द, गीत, चोमासा बखन, बंशोत्पत्ति बखन देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की बसावट का बखन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने बृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकाये भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशरितलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष विठाय जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सर्व प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, विहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कवीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

१ देखिये कासलीवालजी द्वारा लिखे हुये Jain Granth Bhandars in Rajasthan का चतुर्थ परिशिष्ट।

स्वयं प्रयकारों द्वारा लिखे हुये प्रथों की मूल प्रतियाँ

जैन विद्याम प्रबंध रचना के अतिरिक्त स्वयं प्रथों की प्रतिलिपियाँ भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये प्रथों की पाण्डुलिपियाँ राष्ट्र की बरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति हैं। ऐसी पाण्डु लिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन बरपुर के इन मंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र सं	प्रथकार	प्रथ नाम	लिपि संवत्
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुषाथ सिद्धमुपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरगुह्यावकाशार भाषा	सद्यमुक्त कासकीवाल	१६२०
६७	गोम्मटसार जीवकीर्ति भाषा	पं ठोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	नाममाता	प० भारामल	१६४३
३६५०	पंचमंगलपाठ	सुरासलचन्द काखा	१८४४
५४३३	श्रीसरसा	जोधराज गोदीन	१७५७
५३८०	मिथ्यात्व खंडन	बस्तराम साह	१८३५
५७२८	गुटक	टंकचंद	—
५६५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्त्वसार	बाबुराम	—
६०४४	जीयाजीस ठाणा	ब्रह्मरायमल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र मंडारों में हस्तलिखित प्रथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संरक्षण की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संक्षेपन किये हुए कमी कमी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। प्रथ सूची में आये हुये बारह मंडारों में ८३० गुटक हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके ५ मंडार में हैं। अधिकतर गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक मंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अक्षय्य पाठों का समग्र होना है। ऐसे गुटकों का अ, ज, अ एवं ट मंडार में अच्छा संरक्षण है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदरा चौपई ५ मंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदश, शुभचन्द, जीहल, ठकुरसी, पम्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संरक्षण के लो ये एकमात्र स्रोत है। अधिकतर हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संरक्षित किया हुआ जाता है। एक एक गुटक में कमी कमी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पद्यावलियाँ, धन्य, गीत, बंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसावट आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही सम्हाल कर रखें जिसमें वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा दे दी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर उन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो उन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही उन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप ग्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहित कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, फोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, हूंगरपुर, प्रतापगढ़, वांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं है तो कहीं बिना पुष्टों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा यह संग्रहालय अजमेर के वर्तनीय स्थानों में से गिना जायेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आबेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूरा सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है अजमेर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निरिच्छत योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वोत्तम सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्ररास्ति एवं लेखक प्ररास्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख यथाचार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मासूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट एवं समी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन ग्रंथों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहित हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं वादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ ग्रंथकारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४३ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अल्प सूचियों से समी तरह की अधिक जानकारी देने का पूरा प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, उनके रचनाकाल, माया आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पृष्ठ संख्या ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा अपार उद्योग अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी वक्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी वज, समीरमलजी छाबड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं० परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा वासुदेवशरणजी सा अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मस काव्य

भावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं मद्भारक गुणधर्म इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे सोहट के पुत्र सावजदास से पठनाथ सिका या। स्वर्ण म धर्म ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

पदे श्रीकृष्ण वाचार्ये तत्पदं श्रीसहस्रकीर्ति तत्पदं श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेव तत्पदं श्रीगुरु-
रत्नकीर्ति तत्पदं श्रीशुण्डधर्मदेवमद्भिरचित्तमहाप्रबंध कर्मधार्ये सोहट सुत पंडित श्री सावजदास
पठनाथ ॥ काव्य की एक प्रति अ संभार में है। प्रति अज्ञात है तथा इसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

२ आध्यात्मिकं गाथा

इस रचना का दूस्त नाम पद पद काव्य है। यह मद्भारक कश्मीरधर्म की रचना है जो समस्त मद्भारक सफ़लकीर्ति की परम्परा में श्रुते थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है तथा अक्षरकोटि की है। इसमें संसार की नरकरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

बिरला आर्षति पुणो बिरला सेवति अप्पणो सामि, बिरला ससहाधरया परदम्ब परम्मुहा बिरला।
ते बिरला अग्नि अस्ति बिक्रिपि परदम्बु य इच्छति, ते बिरला ससहाध करहि रुह गियम्मणि पिच्छहि ॥
बिरला सेवहि सामि गिच्छु गिय देह बसंतक, बिरला आणहि अप्पु हुदं चैय्या गुणवतठ।
मणु पचणु हुदइ सहिपि सरण्य कुलु चप्पु भियत, बिरणु प्पम परंपह गिस्सुणि पुंइ गाइ मंयिण छप्पक कियव ॥

इसकी एक प्रति अ संभार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिधर्म के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रमाचन्द्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रमा-
चन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रमाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनन्द जिनके द्वारा विरचित 'बद्ध'
मान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रमाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया
है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलासंघे वरभारतीये गण्डे बलात्कारगणोक्ति रम्ये।
श्रीकृष्णव्यासमुनीन्द्रवंशे आर्षे प्रमाचन्द्रमहाकृतीन्द्र ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्भर्चितेन तेन प्रभाचन्दमुनीश्वरेण ।
अनुग्रहार्थं रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धै रचनिगद्यते च ।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं । एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है । हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था । ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे । विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी । इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की । इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है । पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं । संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है ।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छाबड़ा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान् थे । ये जिनदास के पुत्र थे । संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दोबद्ध रचना की थी । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है । कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था ।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है । पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, ताराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है । कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान ।

गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान ॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांणी, जगत मांदि प्रगट सुखदान्ती ।

या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांदि अभिलाषी ॥

श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा ।

देवीस्यंघ नाम सब भाषै, कवित मांदि चिंता मनि राखै ॥

गीता छंद

भी सिद्धांत उपदेशमात्रा रत्नगुन संज्ञित करी ।
सब सुखवि कंठा करु, भूपित सुमनसोमित भिधि करी ॥
बिम सूर्य के प्रद्यस सेती तम धितान विज्ञात है ।
इति पदै परमात्म सुवांती विदत रुचि अपवदात है ॥

दोहा

सुखविधान नरपरपती, अस्वर्षष अर्धतस ।
कीरति बंस प्रवीन मति, राजत कृतम वंश ॥१६४॥
जाके राज सुपैन सौं, बिनां इति अरु भीति ।
रभ्यो प्र व सिद्धांत सुम, यह उपगार सुनीति ॥१६५॥
सख्यसौ अरु छपनबै, सवत् किन्नराज ।
भादव बुधि एअदसी, शनिबिन सुविधि समाज ॥१६६॥
प्र य कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंझार ।
जै समसै पाको अरुष ते पावै भवपार ॥१६७॥

चौबोला

सावन यदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह प्रथ ।
भादव यदि पकाइरि तक छौं परमपुत्र्य को पंथ ॥
एक महिना आठ दिन मैं कियो समाप्त आनि ।
पदै गुनै प्रकटै चित्तमनि बोध सदा सुख दानि ॥१६८॥

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमात्रा भाष्य ॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सख्यभूषण द्वारा विरचित है । टीका के प्रारम्भ में कृषिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है—

“अथ गोम्मटसार प्रथ गायत्र्यं टीका करण्यटक माया में है उसके अनुसार सख्यभूषण ने संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है ।

टीका का नाम मन्वप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है—

मुनि सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रजिनेश्वरं ।

टीकां गुम्मतसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मतसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है । 'मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है । इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये । टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है ।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्यातो च मनोहरे ।

दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुहाअंतरनिवासि प्रवादिमदांधसिधुरसिंहायमानसिंहनंदि मुनींद्राभिर्नंदित गंगवंशललामराज सर्वह्याद्यनेकगुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लदेव महावल्लभ—महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकांतश्रीमच्चामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुर्योगप्रश्नानुरूपरूपं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मतसारनामधेय- [पंचसंग्रहशास्त्र प्रारभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोम्मतसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूचकं कथयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्द्धमानांतान् वृषभादि जिनेश्वरान् ।

धर्ममार्गोपदेशत्वात् सर्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥

श्रीचन्द्रादिप्रभांतं च नत्वा स्याद्वाददेशकं ।

श्रीमद्गुम्मतसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥

श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्त्तति सुन्दरे ।

चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥

विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे ।

दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥

कर्तिके चारिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने ।
 शुभे च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥
 श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंदाभाये सप्तदश्याम् ।
 प्रजापत्ये च गन्धर्वा गच्छे सारस्वताभिधे ॥ ६ ॥
 श्रीमच्छुक्राक्षय्ये च सुरेभ्यश्च मयत् ।
 पद्माभिर्नदि दिव्याभ्यो महारक्षविचक्षण ॥ ७ ॥
 तत्पद्मभोजमाचरन् चंद्राक्षरश्च शुभादिभिः ।
 तत्पद्मभोजमाचरन् चंद्राक्षरश्च शुभादिभिः ॥ ८ ॥
 तत्पद्मभोजमाचरन् चंद्राक्षरश्च शुभादिभिः ॥ ९ ॥
 पद्माचारतौ नित्यं प्रमाचरन्तौ जितेन्द्रिय ॥ १० ॥
 तद्दिशिभ्यो धर्मचन्द्ररश्मिं तत्कामांशुभि चंद्रमा ।
 तद्दिशाभ्ये भवत मन्वास्ते ब्रह्मर्षे पवाक्यं ॥ ११ ॥
 पुरे नागपुर रभ्ये राज्ञो महाबलानके ।
 पद्मभीगोत्रके ध्रुवे संयत्सवाक्ताम्यमभूपयो ॥ १२ ॥
 दामादिभिर्गुणैर्बुधः कृष्णनामविचक्षण ।
 तस्य भार्या भवत् शस्ता ह्यगामी चामिधानिध ॥ १३ ॥
 तयो पुत्रः समाख्यात पर्वताभ्यो विचारक ।
 राभ्यमाभ्यो जनै सेभ्य संपन्नात्पुरंधर ॥ १४ ॥
 तस्य भार्यास्ति सत्स्रष्ट्वी पर्वतप्रीति नामिका ।
 शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विता ॥ १५ ॥
 प्रथमो जिनवासाभ्यो शृङ्गोत्तुरधर ।
 तस्य भार्या भवत्स्रष्ट्वी चोष्णदेयविचक्षण ॥ १६ ॥
 दामादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी ।
 प्रथमायास्तु पुत्रः स्वर्ग तेजपात्तो गुणाधिको ॥ १७ ॥
 द्वितीयो देवदेवाभ्यो शुक्रमकः प्रसन्नधी ।
 पतिव्रता गुणैर्बुधः भार्यादेवास्तिरीति च ॥ १८ ॥
 पितृसंतो गुणैर्बुधो होलानामात्वीयक ।
 होलादेया च तद्भार्या होलप्री द्वितीया ॥ १९ ॥
 क्षिप्रानि दत्त त्रिदिव्यै सुमन्विता ।
 सिद्धाम्भरात्प्रमिदं दि गुम्भट ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्महानये ।

हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुनि भद्रसेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अन्तर दातार, बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप मणकार । पणघट पांगी भरण कौं, लार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चंदन विनु मलयागरी, दिन दिन सूक्त जात । ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अगनि मांकि जरिवौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान । शील खंबिवौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चंदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य संख्या १८८ है । रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये । भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल^१ मेनारिया ने इसका रचना काल सं १६७५ माना है । इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी^२ कथा भी मिलता है । अभी तक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भंडार हूंगरपुर में प्राप्त हुई है ।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था । रचना मे

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १६१

२. राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ चारुच के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छंद में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुचराराज्ञ भी है।

कन्यायाकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्वनाथ^१ रासो (सं० १६६७) पाषनी^२, जीराबसि पारवनाथ स्तवन (स०) नथप्रद स्तवन (सं०) सीर्यफर बिनती^३ (सं० १७२३) आदी रसर^४ बभाषा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

६ चौरासी जातित्रयमाला

जस जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ़ विद्वान् थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होनी हैं। जयपुर के इन संस्कारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातित्रयमाला का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातित्रयमाला में माझा की बोझी के अक्षर में सम्मिश्रित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोस्तेक किया है। माझा की बोझी बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बड़ी हस्तक्षेप रही थी। इस सम्माल में सबसे पहिले गोलखार अस्त में अतुर्थ जैन भाषक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। जस जिनदास ने अथमाकु के अक्षर में अपना नामोस्तेक निम्न प्रकार किया है।

ते सम्भित बंतह बहु गुण्य जुचहं, माळ सुणो तहमे यक्ष्मनि ।

जस जिनदास मासै विबुध मकसै, पढई गुण्ये जे यम्म धनि ॥४३॥

इसी चौरासी जाति त्रयमाला समाप्त ।

इति त्रयमाला के आगे चौरासी जाति की दूसरी त्रयमाला है जिसमें २५ पद्य हैं और यह सर्वमुद्रण किती अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

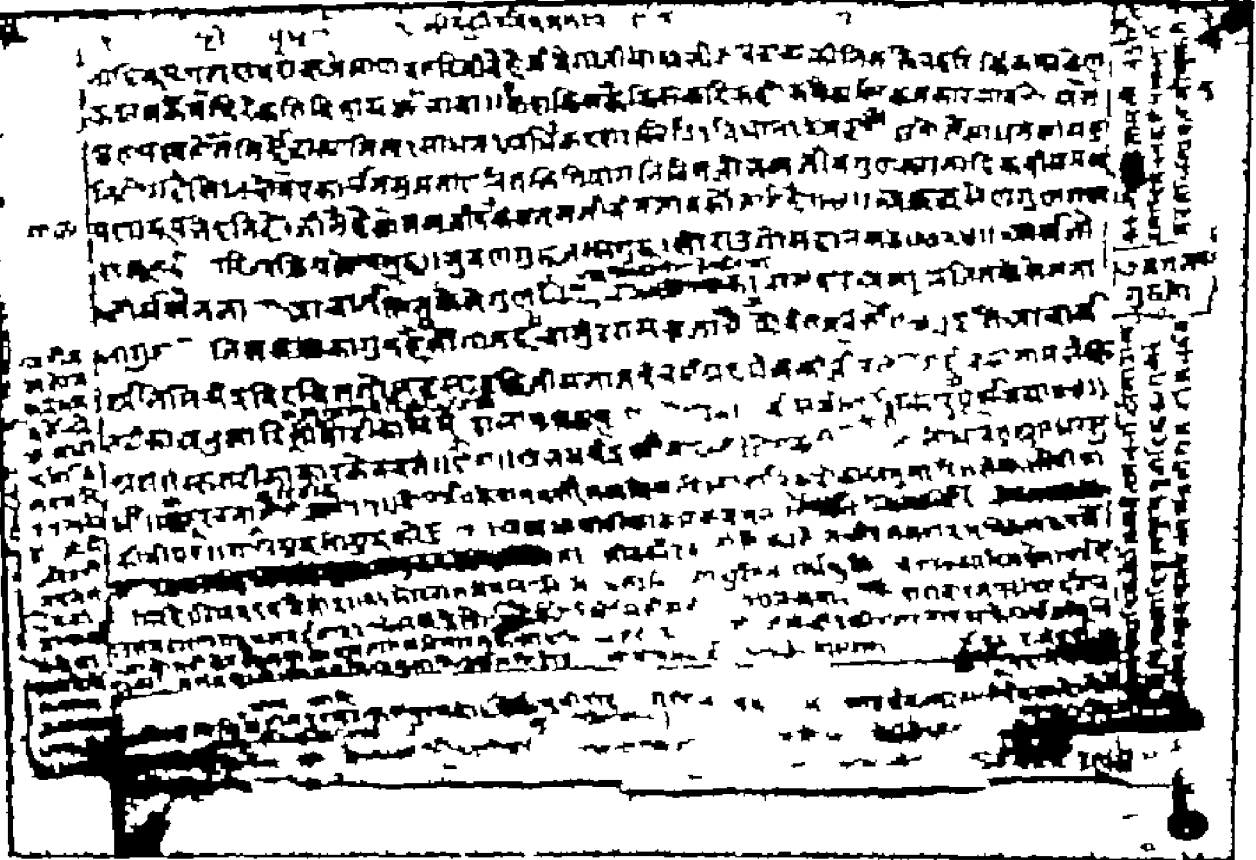
जिनदत्त चौपई हिन्दी का आधिकारिक अध्य है जिसको एह कवि ने सन् १३५४ (सम् १२६७) मारवा सुभी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

१	राजस्थान जैन अस्त संस्कारों की व व सूची	भाग २	पृष्ठ ७४
२	"	"	पृष्ठ १६
३	"	भाग ३	पृष्ठ १४१
४	"	"	पृष्ठ १६२

किं हि जिणुं सुसां सुकलाकं सप्रतीतवणे वज्र
 अहं हि अहं प्रापुणे कस्तणे पुत्र इविवुलजणे
 पायपसां ज्ञाचकदेभिः सज्जसं सवसं मन्त्रं इह
 जोमणलखुं सरीरहविडं तामुगाजजं सुवणसमा
 नस्यरस्यरप्रापुणेमाणां सखडसुकलापुणुलं
 नाप्राहि सवसं अमिजसीयले कसवकाहे तासुनि
 रणतिज्वणजं इदिपइ अपिपसाणं जोगणातरं
 २४ हाथजोडिणिणवरपयपडजवीयरायसामिपन
 पिधखा जहोइकुके इत्तणे अधु जिणदत्तस्य उ
 वउपइवधु २५ जइसेवालकी उत्रमजतिनाइस
 डलउतपानि पंचउलीया इतिकउप्रतु कवइरकु
 डिणदत्तचरिनु २६ माताया इममज्जजो देवलि
 धउजेहिमतके गु उतरिमातदवरके उधराइ धमनु
 दिजइलियामा २७ उधु उगतममानपाइ जइह
 उपातिअकुराणाश मउवउगणु जसउउरुणु हाहा
 माइअुजिणसंयुगाय सवते इलेखउवणु जाइदु
 इपचंसुसुदिसोस्वातिमवइ इइलेखउवणु कवइर
 कुमणवइसरसुता २८ उवणु वीरुवणु इहिदि
 उाजवदी पुमांशविपुडि उाहिण नरहयताइणनणी
 वरुडकालुतहि उसुधुणु २९ सवसं यतनउजहि
 जउमगहदसुतहिकाहियइणपमरिधरणाअना
 मदित्रुडी इगुचइकटियोगत ३० अणुधणु उउ
 तण्णावकहासाधु इवफल उवसादीयकरइरीडुम
 उवउलेसुपरुहइमानुम काइसुगोसुणुदेस
 उणुसाउसप्राय उरपयनचपजाहि कलायधह
 ताणुमदि ३१ उवतकायापहियइनु इइअ
 डिण



रत्न कवि द्वारा संवत् १३५४ मे रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्र —
 पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार मे सम्रहीत है ।
 (इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की पृष्ठ संख्या ३० पर देखिये)



१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एवं लिखित
 गाम्भार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र ।
 यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटली के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।
 (मूली क्र. सं. १७ प. सं. ४०३)



संवत् तेरहसे खडवणो, भादव सुदिपंचमगुरु दिण्ये ।

स्वाति नखत्त बंदु तुलहती, कवइ रल्लु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे । उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था ।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति ।

पंचउलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्लु जिणदत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है । ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिणयत्तचरिड (सं १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है ।

मह जोयड जिनदत्तपुराण, लाखू विरयड अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्थनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । इसमें कुल पद्य ५५४ हैं । रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है । वैसे भाषा सरल एवं सरस है । अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है । काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है ।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था । जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था । जिनदत्त व्यापार के लिये सिवल आदि द्वीपों में गया था । उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं । इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है ।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है । इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी । कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे । पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौ जान । पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसदम ग्यारमों, डर दसमों कर लेखि । इनको उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

बरण सग्यो जा बंस में, सोह दिन बित बारि । बा दिन छत्ती बडी, जु पक्ष बीते छमबिचारि ॥४०॥
 छगन किले से गिरह ओ, जा पर बैठो आय । ता पर के मूख सुफ़ल का बीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्थीव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्थीव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । स्वाम्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी भाषा प्रत्येक शास्त्र मंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं । इसकी एक टीका विद्यानन्दि के शिष्य ब्रह्मसागर द्वारा लिखी गई थी । ज्ञानार्थीव की एक अन्य संस्कृत टीका कल्पुर के ज्ञ मंडार में उपलब्ध हुई है । टीकाकार है पं नयबिज्ञास । उन्होंने इस टीका को मुग़ल सम्राट अकबर अलाहुरीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिपिदास क भवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी । इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्थीवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं नयबिज्ञासेन साह पासा कल्पुत्र साह टोडर कल्पुत्र साह रिपिदासेन स्वभवणार्थं रचिते जितदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशमासना प्रकरण द्वितीय ।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

राजस्वत् साहि अन्नासदीनपुरत् प्राप्त प्रतिशोधय ।
 भीसात् मुगलवंशप्रारब्-शशि-विरबोपकरोषत् ।
 नाम्ना कृप्य इति प्रसिद्धिरभवत् सदात्रयमोज्जते ।
 तन्मन्त्रीरवर टोडरो गुणयुत सर्वाधिकारधित ॥६॥
 श्रीमत् टोडरसाह पुत्र निपुण सरानधितामणि ।
 श्रीमत् श्रीरिपिदास धर्मनिपुण मातोभतिरभिमिया ।
 तेनाहं समवाधि निपुणो म्यायायस्तीलाह्वय ।
 मोतु पृथिमता परं सुविषया ज्ञानार्थीवस्य सुदृ ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे । इनके पिता का नाम साह पासा था । स्वयं मंत्री टोडरमल भी कृषि थे और इनका एक भजन "धय तेरो मुख बैखु जिर्नबा" जैन मंडारों में किस्तने ही गुटको में मिलता है ।

नयबिज्ञास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है । पं नयबिज्ञास का विशेष परिचय अभी लोका का विषय है ।

१३ शेमियाह परिय—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत शेमियाह परिय अथवा हा भाषा का एक सुन्दर ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में पांच अध्याय हैं जिनमें भगवान् नेमिनाथ क जीवन का वर्णन है । महाकवि ने इसे संवत् १२८० में समाप्त किया था जैसा निम्न दुमई दुम्द (एक प्रकर का दोहा) में दिया हुआ है—

चारहसयाइं सत्तसियाइं, विक्कमरायहो कालहं । पमारहं पट्ट समुद्धरगु, गारवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे । इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी । ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है । इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है । कुल पद्यों की संख्या १४५ है । इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनैः शनैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है ।

इसकी एक प्रति ज भंडार में उपलब्ध हुई है । प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं । प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है ।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं । प्रारम्भ में ग्रंथकर्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्वं सर्वगुणाकरं । वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥

जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहुर्जिनेश्वरा । जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है । ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्तिसहचैः शुभेंदुमुनितेरितैः । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान् हैं । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे । इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनाये मिली हैं । यह रचना ज भंडार में संग्रहीत है । यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है । अभी क भंडार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ़ प्रान्त के मेडगांव के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम मोतीलाल था । ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे । इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १९३२ में समाप्त किया था ।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे । इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं । ये रचनायें-चौबीस-तीर्थकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं । तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है ।

मोक्ष की राह बनावत थे। अरु कर्म पहाड करै चक्रपूर,
विरवसुतस्व के ज्ञायक है ताही, लक्ष्मि के हेतु नमौं परिपूर।
सम्पद्वर्तन परित ज्ञान करे, यहि मारग मोक्ष के सूरा,
तत्त्व को अर्थ करो सरधान सो सम्पद्वर्तन मजहूर। ॥१॥

अबि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं—

दिल्लो अक्षीगढ जानियो मेहुगाम सुभाम। मोतीलाल सुपुत्र है धोनेलाल सुनाम ॥१॥
जैसपाल कुल खाति है भोगी भीसा आन। वरा इप्याक महान में लयो अम्म भू आन ॥२॥
अरु नगर सुभाय कै सैनी संगति पाय। उदयराज भाई लखो सितरचन्द गुण अय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणाग्य सोय। केवल भक्ति सुभर्म की बसी सुद्वय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिष्ठा सिद्धि। भाई सु भवि जन सोभियो होय अगत प्रसिद्धि ॥५॥
संगल भी अर्हत है सिद्ध साध अपसार। तिन नुति मन्तव काय यह मेटो विभन विचार ॥६॥
छंद वंश भी सूत्र के किये सु बुधि अनुसार। मूलमंत्र कू देखिके भी जिन हिरदै वारि ॥७॥
अरमास की अष्टमी पहलो पङ्क निहार। अठसटि अन्त सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण।

संवत् १६४६ चैत्र कृष्ण १३ पुष्ये।

१६ दर्शनसार भाषा

नयमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नयमल विलास थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिरबौन) आकर रहने लगे थे। उक्त विद्वान के अतिरिक्त १९ वीं शताब्दी में दूसरे नयमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी। दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का जिला हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं अवि ने निम्न प्रकार किया है।

धीस अधिक उगणीस सै शाठ, आवण प्रथम अोधि शनिवार।

कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नयमल लिखी सुचार ॥५६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था। नयमल ने इसी का पद्यानुपाद किया है।

नयमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकार भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरपदभाषाभाषा भाषा (संवत् १६२०), पाठरा

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अप्राह्निकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं ।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं । इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था । इन्हीं विद्वानों में से प० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है । ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी । गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है । इसका एक उदाहरण देखिये.—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूखो वा तूषो । सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूँवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटकि देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै ।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है । रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं ।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान् थे । भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे ।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है ।

१९ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है । कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है । इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान् ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान् हैं । इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है ।

भवकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुपर्निद सदपुज्जं । नेमिशसिं गुरुवीरं पणमीय तियशुद्धभोवमहरणं ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है । यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं । ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति त्रिषुधसैद्धांतिचक्रकृत्याचार्यश्रीनमिचन्द्रस्य त्रियशिव्यज्जज्ञिनवासधिरचित धर्मपंच-
विरातिका नाम शास्त्रसम्पाप्तम् ।

२० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् जगद् विवेकास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध
हुई है । एचन्य छोट्टी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थकरों की स्तुति एवं अम्य शस्त्राका
महापुरुषों का नमोस्तेद किया गया है । एचन्यो स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है । एचन्य का आदि
धर्म भाग निर्मल प्रकार है—

श्री सफ़ल जिनेरवर वैभ, हू तस पाय करू सेव ।
हैवे निजामणि च्छु सार, जिम सपक तरे ससार ॥ १ ॥
हो सपक सुयो धिन्वेणियि, ससार अधिर तू आणि ।
इहां रखा नहि कोई धीर, हैवे मन दृष्ट करो निख धीर ॥ २ ॥
ग्या आदिस्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।
ग्या अदित जिनेरवर चग, जिने कियो कम नो मंग ॥ ३ ॥
ग्या सैमव मंत्र हर स्वामी, ते जिनेवर मुक्ति दि गामी ।
ग्या अभिनन्दन भोनंभ, जिने मोडयो मंडनो फंड ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति वातार, जिने रण्य मुमी जित्यो मार ।
ग्या पद्यप्रम अरिवास, ते मुक्ति तया निवास ॥ ५ ॥
ग्या सुपारर्व जिने जगीसार, असु पास न रहियो मार ।
ग्या चंद्रप्रम जगीबंध, जिने त्रिमुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सफ़ल सुख मंडार ।
जे सपक सुयो ए चंग, ते सौख्य पाये अमंग ॥ ७ ॥
श्री 'सकलकीर्ति' गुरु प्याठ, मुनि मुपनकीर्ति सुखेगण ।
त्रिधु जिन्वेणियि भयोत्तर, ए निजामणि मपतार ॥ ८ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है । य महारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा टोडारयसिंह
(जयपुर) के रहने वाले थे । अब तक इनकी रवेताम्बर पराजय (केवल मुक्ति निराकरण), सुख निवान,
अनुविशति संधान स्वोपद्र टिका एवं शिव साधन नम के चार प्रथम उपलब्ध हुये थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारयसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रतमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य तिम्न प्रकार है —

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात् ।
पूर्वानेकभर्वाजितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात् ॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो . . . ।
शाश्वत् छ्रीजगदीशनिर्भलहृदि प्रायः सदा वर्ततात् ॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति जे भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति न भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में न से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अणुसंणियसुहदं घूघलि सिवदास पुत्तेण
सगगगवाल छीजा सुपसाएण लब्भए गूणं अरविद दिक्खा अट्टमसंधी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल, १४ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान् थे तथा बख्शहट्टक ग्राम के रहने वाले थे । उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था । पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं । रचना सरस भाषा में निबद्ध है ।

१५ विंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है । रचना का वृत्त नाम माखन छंद विश्वास भी है । माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे । रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमाखिका सखचारी, माखती, बिल्ल, कछुआ समानिका, मुर्जगप्रयत्त, मंमुभापिणी, सारगिका, तरगिन्न, भ्रमरावधि, माखिनी आदि कितने ही छन्दों के वर्णन दिये हुये हैं ।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था । इसकी एक अपूर्ण प्रति 'अ' मन्डार के समूह में है । इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है ।

२६ पुण्यालवकथा कोश

टैकचम् १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं । अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं । जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मवहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८०८) सुदृष्टि सरंगिणी (सं० १८३८) सोसहकारण पूजा, म्यसनराज वयन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अम्यात्म वाण्डलबी, आदि । इनके पद भी मिलते हैं जो अम्यात्म रस से ओतभाव हैं ।

टैकचंद के पितामह का नाम दीपचंद पर्व पिता का नाम रामकृष्ण था । दीपचंद स्वयं भी अप्पड़े विद्वान् थे । कवि लखहेलभाक्त जैन थे । ये मूसत जयपुर निवासी थे जिनके फिर साहिपुरा में जाकर रहने लगे थे । पुण्यालवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अमी जयपुर के 'क' मन्डार में प्राप्त हुई है । कवि ने इस रचना में जो अपनापरिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

दीपचम् साधर्मि भए, ते जिनधर्म विषै रत वण ।
 तिन सं पुरस वणु सगपाय, कम जोग्य नही धर्म सुहाय ॥ ३२ ॥
 दीपचम् तन तैं तन भयो, ताको नाम हसी हरि दीयो ।
 रामकृष्ण तैं जो तन भाय, हनीचंद ता नाम धराय ॥ ३३ ॥
 सो किरि धर्म उदै तैं आय, साहिपुरै धिति कीनी आय ।
 तहां भी बहुत काल यिन ज्ञान, कोया मोद उदै तैं आयि ॥

×

×

×

साहिपुरा सुभथान मे, भलो सहारो पाय ।
 धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥
 नृप उमेद ता पुर विपै, करै राज बलवान ।
 तिन अपने मुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥
 ताके राज सुराज मै ईतिभीति नहीं जान ।
 अवलू पुर मे सुखथकी तिण्ठे हरप जु आनि ॥
 करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि ।
 ग्रंथ करन कछु वीचि में, आकुल उपजी नांहि ॥ ५३ ॥
 साहि नगर साह्यै भयो, पायो सुभ अवकास ।
 पूरण ग्रंथ सुख तै कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यवास ॥ ५४ ॥

चौपई एवं दोहा छन्दों मे लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है । इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है । कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जांनि, उपरि बीस दोय फिरि आनि ।
 फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

प्रारम्भ मे कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उमे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्त्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की । जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की । टेकचंद ने संभवत इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी । कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है.—

साधर्मी धनराम जु भए, संस्कृत परवीन जु थए ।
 तौ यह ग्रंथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल बखान ॥
 जिन धुनि तो विन अन्नर होय, गणधर समझै और न कोय ।
 तो प्राकृत मै करै बखान, तब सब ही सुंनि है गुणखानि ॥ ३ ॥
 तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई ।
 फेरि अल्प बुध हान की होय, सकल कीर्त्ति आदिक जोय ॥
 तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए ॥

२७ बारहभात्रना

पं० रङ्गू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं । इनकी प्राय सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश—ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भाषना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में २६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है—

कथन कथायी ज्ञान की, कथन सुनन की नाहि । आपन्ही मैं पाइए, जब देखै पद मांदि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं—

ससार रूप कोई वस्तु नांही, भेदभाव अज्ञान । ज्ञान दृष्टि परि देखिय, सब ही सिद्ध समान ॥

× × × × × × ×

वर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय । धरम जु ज्ञानत वस्तु है, जो पहचानै कोय ॥

× × × × × × ×

करन करायन ग्यान नहिं, यदि अर्थ मजानत और । ग्यान दिष्टि बिन ऊपरै मोहा तपी हु कोर ॥

रचना में रघू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल प्रथम समाप्ति पर “इति श्री रघू कृत बारह भाषना संपूण” लिखा हुआ है जिससे इसको रघू कृत लिखा गया है।

२८ मुषनकीर्ति गीत

मुषनकीर्ति महारक सफ़सकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के परन्तु में ही महारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र मंडारों में महारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बृषराज एवं भ० शुभचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बृषराज न महारक मुषनकीर्ति की कथना एवं उनकी बहुमुखता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे मुषन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बृषराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे इनके द्वारा रची हुई अथक पांच और रचनाएँ मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविच्छन्न रूप से सूची के पृष्ठ ६६६-६६७ पर दिया हुआ है।

२९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा प्र० आशापर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रख्यात विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अमरावती की लेकिन अब इसकी २ प्रतियाँ जयपुर के अ. मंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशापर न इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य बिनयचन्द्र के लिये

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्त्तिः पूतकीर्त्तिः स तस्माद् । अजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरैकचन्द्रः ॥

जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः । शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डारे में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपालस्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० बनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नहीं रखते थे तथा एक घण्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशती' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत् १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई षट सत पन वरसहि । प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत सर सरसहि ॥

उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी । पूर्वाषांड नछत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥
वर वृद्धि जोग मिछत इहग्रंथ समापित करिलियो । अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह । तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौ धरि मन नेह ॥
नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त । जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि बात कौं । उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के ॥

दोष देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै । कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारण रीति नहीं स्वारस्य की प्रीति आके । जय तब यवन प्रसन्नसत प्यार के ॥
 हिल को छदार निरबाहै जो पै वे करार । मति को सुठार गुन्धीसरै न पार के ॥२१३॥
 अंतरंग वाहिज मधुर बैसी किसमिस । बनकरचन को कुमेरमानि घर है ॥
 गुन के बघाय कू जैसे चन्द सागर कू । दुल तम चूरिये कू दिन दुपहर है ॥
 करस के सारिने कू हक बहू बिषना है । मंत्र के सिलायब कू मानों सुरगुर है ॥
 ऐसे सार मित्र सौ न कीजिये जुदाई कभी । धन मन तन सब बारि देना पर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोहन पञ्चरात्री दिग्धी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है ।

३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह प्रथ है जिसमें कवि चासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का सङ्ग्रह है । चासी के पिता का नाम महाशक्तिह था । कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारगमल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी । ये भारगमल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने बर्तनकथा, शीघ्रकथा, वानकथा आदि कथायें लिखी हैं । कवि ने इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख प्रथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है —

कर्म रियु सो तो चारों गति में पक्षीव फिरपौ, ताही के प्रसाद सेती चासी न्याम पायौ है ।
 भारगमल मित्र जो महाशक्तिह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती प्रथ ये बनायौ है ॥
 य मैं भूल बूक जो हो सुधि सो सुधार लीजो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाष ये कनायौ है ।
 बिगनिम सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फगुण्य सुधि चौब मान निजगुण्य गायौ है ॥

कवि ने प्रथ के प्रारम्भ में बर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

मित्र विलास महासुखदैन, बरतु बस्तु स्वभाविक ऐन ।
 प्रगट देखिये लोफ संस्कार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥
 शुभ अशुभ मन की प्रापति होय, सग कुर्संग तयो फल सोष ।
 पुग्गल बस्तु की निरणाय ठीक, इस कू करती है तदकीक ॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को सुभाबने वाली है । प्रथ प्रकाशन योग्य है ।

चासी कवि के पद भी मिलते हैं ।

३२ रागमाला—श्यामभिभ

राग रागिनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है । इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखां के संरक्षणता में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे को चित धरी ॥

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपग ज्यौ चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ भान ॥
कवि वरनै छवि खान की, सौ वरनी नहीं जाय।
कासमखांन सुजान की अंग रही छवि छांय ॥

रागमाला में भैरौराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्मुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संवत् सौरहसे वरष, उपर बीते दोइ।
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ ॥

सोरठा

पोथी रची लाहौर, श्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरमुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रंथ श्याममिश्र कृत संपूरण।

३३ रुक्मिणीकृष्णजी को रासो

यह तिरपदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणी के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सद्वृत्त के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौम्य बर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध पर्यन्त, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वखन किया गया है।

रासो में वृषा, कबूरा, त्रोटक, नाराच आदि छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की माया रासस्वामी है।

नाराच आदिछंद

आर्याद मरीप सोहती, त्रिभङ्गरूप माहती ।
 कर्ण कर्णत नेवरी, सुचल चरण घुघरी ॥
 मन्त्र मन्त्रै मन्त्रक मन्त्र, भवण ईस सोमदी ।
 रतन हीर जडत आम, हीर ही अनोपती ॥
 मल्लमल्लै छ बंद सुर, सीतै पूर सोहप ।
 वासिदै बेपि रूखै जेम, सिरह मणिज मोहप ॥
 सोचन मै रसहार, खडित कठ मै रसै ।
 भवष भोति खडित मोति, नखिस बसाहुसै ॥

३४ जगन्नाथचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी माया खोजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कबरपाल तथा गुरु का नाम १० जगन्नाथजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी माया संवत् १८७४ में समाप्त की थी। जगन्नाथचन्द्रिका ज्योतिष का सस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। माया टीका में ५२१ पद्य हैं। इसकी एक प्रति ऋ भंडार में सुरक्षित है।

इसके लिखे हुये हिन्दी पद्य एवं कवित्त भी मिलते हैं—

३५ जगन्नाथ विधान चौपई

जगन्नाथ विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें जगन्नाथविधान व्रत से सम्बन्धित कथा की गई है। यह व्रत चैत्र एवं माघ मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीय एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करन से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि मीपम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि संगाणेर (अजपुर) के रहन वाले थे। ये कबडोसवास जैन थे तथा गोपा इमका गोत्र था। संगाणेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का सर्व प्रचार था। उन्होंने इसे संवत् १६१० (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जबै उतरौ ।
 उजल पाखि तेरसि तिथि जाण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥६६॥
 बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति ।
 यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥६७॥
 सांगानेरी वसै सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खड नाम ।
 जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥
 जैनधर्म की महिमां वणी, संतिक पूजा होई तिहघणी ।
 श्रावक लोक वसै सुजाण, सांफ संवारा सुणै पुराण ॥६९॥
 आठ विधि पूजा जिगेश्वर करै, रागदोष नहीं मन में धरै ।
 दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥७०॥
 कडा वंश चौपई जांणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण ।
 जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥७१॥
 इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण ।

३६ वद्ध मानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिब्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विपहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विपहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरण के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विपहरन लिख्यते—

बोहरा—भी गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरनु चितलाप ।
पेत्रपास बुलहरन कौ, सुमति सुयुधि पताय ॥

चौपई

भी अिनर्चव सुवाच वलानि, रथ्यौ सोभाग्य ते यह इरप मुनिधान ।
इन सील दीनी भीव दया धानि, संतोप भैद्य छइ तिरइमनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है अिनकी संख्या ३७ से भी अधिक है । कथाकार ५० वामो
वर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं । दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे । ऐसा भाव्य पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का
पूर्व नाम वामोवर था इसलिये ओ कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं इनमें वामोवर ऋत
लिख दिया है तथा साधु बनने के परंपरात् ओ कथायें लिखी इनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया । वामोवर
का अस्तित्व प्रथम, पण्ड, पद्मवरा, द्वावरा, चतुर्वरा, एवं एकधिराति कथाओं की समाप्ति पर आया है ।

कथा कोश संस्कृत पद्य में है तथा मापा, माप एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर
की हैं । इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है । इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति प्रथ संख्या २५४३ पर
वेलें । इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं ।

३९ व्रतकथाकोश

महाराज सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान् थे । उन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत
ग्रंथ लिखे हैं अिनमें आदिपुराण, धर्मकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्तमान पुराण
आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । अपने अजरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई महाराज परम्परा को
जन्म दिया जिसमें ३० अिनवास, सुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र जैसे उच्चकोटि के विद्वान् हुये ।

व्रतकथा कोश अभी उनकी रचनाओं में से एक रचना है । इसमें अधिकतर कथायें लक्ष्मी के
द्वारा विरचित हैं । कुछ कथायें अन्न पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं । कथायें संस्कृत पद्य
में हैं । ३० सकलकीर्ति ने सुगन्धवरासी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है —

असमगुण ससुभान, स्वर्ग मोक्षाय हेतु ।
प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान् ॥

त्रिभुवनपतिभव्वैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।

जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) वाद में लिखे गये हैं । प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है ।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी मे ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है । इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्त्ति के आश्रित थे । ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे । एक वार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी वन गये । इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं । जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं ।

‘समोसरण’ एक स्तोत्र के रूप मे रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था । इसमे भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है । इन्होंने इसमे अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे ।

स रहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष ।

गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिद्ध ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है । सोनागिर पहिले दतिया स्टेट मे था अब वह मध्यप्रदेश मे है । कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था । रचना मे क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूनौ को,

हाट हू वजार नाना भांति जुरि आए हैं ।

भावधर वंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,

पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है ॥

गोठै जैड नारे पुनि दान दैह नाना विधि,

सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है ।

कीदिये सहाइ पाइ आप हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाप हैं ॥

दोहा

नेठ सुदी चौदस मली, जा दिन रची बन्यइ ।
संभत् अष्टादस इकिसठ, संवत् जेठ गिनाइ ॥
पंडे सुनै सो माव भर, ओरे देइ सुनाइ ।
ममवक्षित फल कौ ब्रिये, सो पूजन पद कौ पाइ ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का वादराह असा-
छरीन के साथ मगधा, महिमासाह का भागकर रणमन्वीर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना,
वादराह असाछरीन का हम्मीर को महिमासाह को छोड़ने के लिये बार २ समझना एवं अन्त में अजा
छरीन एवं हम्मीर का अर्थात् मुख का वर्णन किया गया है । कवि की बर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है ।

रासो कम और कहाँ लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । उसने केवल
अपना नामोस्तेक किया है यह निम्न प्रकार है ।

मिले रावपति साही पीर ज्यौ नीर समाही ।
ज्यौ पारिस कौ परसि बजर कंचन होय धाई ॥
असावीन हमीर से दुआ न हीस्यौ होबसे ।
कवि महेश धम वचरै पै समासहै तसु पुरबसै ॥

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक ग्रं., सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१	४३८१ अनंतव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुराचद्र	स०	अ	१६३०
२	४३६२ अनंतचतुर्दशीपूजा	शातिदास	स०	ख	×
३	२८६५ अभिधान रत्नाकर	धर्मचद्रगरिा	स०	अ	×
४	४३६१ अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५	५६६ अमृतधर्मरसकान्य	गुराचद्र	स०	अ	१६ वी शताब्दी
६	४४०१ अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	स०	अ	१८५१
७	२५३५ आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचद्र	स०	ट	×
८	६१६ आराधनासारवृत्ति	प० आशाधर	स०	ख	१३ वी शताब्दी
९.	४४३५ ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	स०	ख	×
१०.	४४८० कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्ति	स०	अ	×
११.	२५४३ कथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	स०	अ	×
१२.	५४५६ कथासंग्रह	ललितकीर्ति	स०	अ	×
१३.	४४४६ कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	स०	छ	×
१४.	३८२८ कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	अ	×
१५	३८२७ कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	प० आशाधर	स०	अ	१३ वी ”
१६	४४६७ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	प्रभाचद्र	स०	अ	१५ वी ”
१७	२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	स०	अ	१६ वी ”
१८.	४४७३ कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	अ	×
१९	२०२३ कुमारसंभवटीका	कनकसागर	स०	अ	×
२०.	४४८४ गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति	स०	ख	×
२१.	२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	स०	ड	×
२२	३८३६ गीतवीतराग	अभिनव चारुकीर्ति	स०	अ	×
२३.	११७ गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	स०	क	×
२४.	११८ गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५.	६१ गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	स०	क	×
२६.	५४३६ चंदनपण्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	स०	अ	×
२७	२०४८ चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुरानंदि	स०	अ	×

क्रमसंक्र	प्र सं क्र	ग्रंथ का नाम	प्रथकार	मापा	ग्रंथसंज्ञार	रचना काक्ष
२८	४११२	चारित्र्यशुद्धिबिधान	मुमतिब्रह्म	सं	ब	×
२९	४११४	ज्ञानपंचविंशतिकाप्रतोषापन	म सुरेन्द्रकीर्ति	स	ब	×
३	४१२१	शमोच्चरपैत्तीसीप्रतबिधान	कनककीर्ति	सं	क	×
३१	२१३	तत्त्ववर्णन	सुभचंद्र	स	ब	×
३२	१४४६	प्रेपनक्रियोषापन	देवैन्द्रकीर्ति	सं	घ	×
३३	४७ ३	दशस्रक्षणाप्रतपूजा	बिनयचंद्रसुरि	सं	क	×
३४	४७ ६	दशस्रक्षणाप्रतपूजा	मस्तिमूषस	सं	ख	×
३५	४७ २	दशस्रक्षणाप्रतपूजा	मुमतिब्रह्म	स	क	×
३६	४७२१	द्वादशप्रतोषापनपूजा	देवैन्द्रकीर्ति	स०	घ	१७७२
३७	४७२४	द्वादशप्रतोषापनपूजा	पद्यनदि	सं	घ	×
३८	४७२३	" " "	बबलकीर्ति	स	ब	×
३९	७७२	धर्मप्रनोद्यर	विमलकीर्ति	सं	ख	×
४	२१३२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	स	ट	×
४१	४८१	निजस्मृति	×	सं	ट	×
४२	४८१९	मेदिनाबपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	सं	घ	×
४३	४८२३	पंचकस्याणकपूजा	"	सं	क	×
४४	१९७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकनकीर्ति	स	घ	×
४५	१४२८	मशस्त्रि	दामोदर	सं	घ	×
४६	१९१८	पुराणसार	धीचंद्रमुनि	सं	घ	१७७
४७	१४४	भाषनाचौत्तीसी	म पद्यनदि	सं	घ	×
४८	४ ३३	मूपास्रक्षसुर्विरासिटीका	भाषाचर	सं	घ	१३ बी लतामी
४९	४ ३३	मूपास्रक्षसुर्विरासिटीका	बिनयचंद्र	स	घ	१३ बी "
५	१ ३७	मांगीतु गीगिरिमंडलपूजा	विद्यसुवर्ण	स	क	१७२६
५१	२१८१	मुनिसुप्रतद्य	प्रभाचंद्र	सं	हि घ	×
५२	९७९	मूलाचारटीका	बसुनेदि	मा	सं घ	×
५३	२१२३	प्रोवरचरित्रटिप्पख	ब्रह्मचंद्र	सं	ख	×
५४	२६८३	रत्नत्रयविधि	भाषाचर	सं	घ	×
५५	२९३३	रूपमञ्जरीनाममासा	दपचंद्र	सं	घ	१९४४
५६	२९३	बद्धमानकाम्य	मुमिपधर्मादि	सं	ख	१३ बी "

क्रमांक अं सू. क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५ वाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	स०	अ	१७२६
५८	५४४७ वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनदि	स०	अ	×
५९.	५२२५ शरदुत्सवदीपिका	सिंहनदि	स०	अ	×
६०.	५८२६ शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	स०	ख	×
६१.	४१०७ शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
६२.	५१६६ पणवतिचेत्रपालपूजा	विश्वमेत	स०	अ	×
६३.	५४६ पण्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	स०	घ	×
६४.	१८२३ सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	सं०	अ	×
६५.	५४६७ सरस्वतीस्तुति	प्राशाधर	सं०	अ	१३ वी
६६.	४६४६ सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचद्	सं०	ड	×
६७	२७३१ सिंहासनद्वारिचिकी	क्षेमकरमुनि	स०	ख	×
६८.	३८१८ कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ड	×
६९	३६३१ धर्मचन्द्रप्रवन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
७०.	१००५ यत्याचार	आ० वमुनिदि	प्रा०	अ	×
७१.	१८३६ अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	अ	१५०५
७२.	६४५४ कल्याणकविधि	विनयचद	अप०	अ	×
७३.	५४४ चूनढी	"	"	अ	×
७४	२६८८ जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकीर्ति	अप०	अ	×
७५	५४३६ जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अप०	अ	१७ वी
७६	२०६७ रोमिणाहचरित्र	सक्यरादेव	अप०	अ	×
७७.	२०६८ रोमिणाहचरित्र	दामोदर	अप०	अ	१२८७
७८.	५६०२ त्रिशतजिनचउवीसी	महारासिंह	अप०	अ	×
७९.	५४३६ दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
८०	२६८८ दुधारसविधानकथा	विनयचद	अप०	अ	×
८१.	४६८६ नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	अ	×
८२.	२६८८ निर्मरपंचमीविधानकथा	विनयचद	अप०	अ	×
८३.	२१७६ पासचरित्र	तेजपाल	अप०	ट	×
८४.	५४३६ रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
८५	२६८३ रोहिणीचरित	देवतदि	अप०	अ	१५ वी

क्रमांक	पं. सू. क्र.	पं. का. नाम	प्रयत्नकार	भाषा	प्रथमभार	रचने का काल
५६	२४१७	सम्भवविद्युत्पाहपरिच	विश्वनाथ	प्र.	ब	×
५७	२४२४	सम्यक्त्वकौमुदी	महेश्वर	प्र.	प्र.	×
५८	२६५८	सुखसपत्तिविधानकथा	विमलकीर्ति	प्र.	प्र.	×
५९	२४१९	सुगन्धपद्मनीकथा	"	प्र.	प्र.	×
६०	२४२१	अज्ञानारास	धर्मभूषण	हि.	पं.	×
६१	४१४७	अज्ञाननिधिपूजा	ज्ञानभूषण	हि.	प	×
६२	२५	अठारहनातेकीकथा	शुद्धिनामचक्र	हि.	प	×
६३	१	अनन्तकेन्द्राप्य	धर्मचन्द्र	हि.	प	×
६४	४१५१	अनन्तव्रतवास	ब. विनयास	हि.	प	१२ बी
६५	४२१५	अर्द्धनक्षत्रीयक्रियागीत	विमलकीर्ति	हि.	प	१९=१
६६	२७६७	आदित्यवारकथा	रावमल्ल	हि.	प	×
६७	२४२३	आदित्यवारकथा	बाबिचन्द्र	हि.	प	×
६८	२४२२	आदित्यवारकथासम्भवसरन	×	हि.	पं.	१९१७
६९	५७१	आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि.	प	१७४१
७०	२९१३	आदिनाथस्तवन	पद्म	हि.	प	१९ बी
७१	२४५७	आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हि.	प	×
७२	३८६४	आरवीरसंग्रह	ब. विनयास	हि.	प	१५ बी सतीम्बी
७३	३४	अपदेशाक्षरीसौ	विनयवर्ष	हि.	प	×
७४	४४२५	अपिर्मंडलपूजा	भा. कुण्डलधि	हि.	प	×
७५	२४४	अठारहव्रतवरीशौच	×	हि.	प	१७४७
७६	१	अविष	मनोरमास	हि.	प	१८ बी सतीम्बी
७७	१	अविष	मनोरमास	हि.	पं.	१७ बी सतीम्बी
७८	२४९७	अविषचूषणवैशि	मुनिवत्सलचक्र	हि.	प	१७ बी सतीम्बी
७९	२६	अविषस्तम	हरिचरणदास	हि.	प	×
८०	३८६४	अविषाक्षर	चन्द्रकीर्ति	हि.	प	१९ बी सतीम्बी
८१	२४५७	अविषाक्षरिणीवैशि	सुधीराज	हि.	प	२६६७
८२	२२२७	अविषाक्षरिणीसंग्रह	पद्ममनोहर	हि.	प	१८६
८३	२९१३	गीत	पद्म	हि.	पं.	१६ बी सतीम्बी
८४	३८६४	गुरुद्वय	सुदाम	हि.	प	१६ बी सतीम्बी

क्रमांक ग्रं सू क्र	ग्रंथ का नाम	प्रथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५	५६३२ चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि०	प० छ	१७६५
११६	५४१७ चतुर्विंशतिछापय	गुणकीर्ति	हि०	प० अ	१७७७
११७.	४५२६ चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि०	प० क	१८८०
११८.	४५३५ चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	सुगनचंद	हि०	प० च	१६२६
११९	२५६२ चन्द्रकुमारकीर्त्तिका	प्रतापसिंह	हि०	प० ज	१८४१
१२०.	२५६४ चन्द्रमलयगिरीकथा	चत्तर	हि०	प० अ	१७०१
१२१.	२५६३ चन्द्रमलयगिरीकथा	भद्रसेन	हि०	प० अ	×
१२२	१८७६ चन्द्रममपुराण	होरालाल	हि०	प० क	१६१३
१२३	१५७ चर्चासागर	चम्पालाल	हि०	ग० अ	×
१२४.	१५४ चर्चासार	प० शिवजीलाल	हि०	ग० क	×
१२५	२०५८ चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्ति	हि०	प० अ	१६६२
१२६	५६१५ चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१२७	५६१५ चेतनगीत	मुनिमिहिरदि	हि०	प० छ	१७ वी शताब्दी
१२८.	५४०१ जिनचौबीसी भवान्तरास	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प० अ	×
१२९	५५०२ जिनदत्तचौपई	रत्नकवि	हि०	प० अ	१३५४
१३०.	५४१४ ज्योतिषसार	कृपाराम	हि०	प० अ	१७६२
१३१	६०६१ ज्ञानवाचनी	मतिशेखर	हि०	प० ट	१५७४
१३२	५८२६ टंढाणागीत	बृचराज	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१३३.	३६६ तत्त्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्ति	हि०	ग० ड	१८ वी "
१३४.	३६८ तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि०	ग० छ	१८ वी "
१३५.	३७४ तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि०	ग० अ	१७ वी "
१३६.	३७८ तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिखरचंद	हि०	प० क	१६ वी "
१३७.	४६२७ तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटली	हि०	प० क	१८६४
१३८.	६००६ तीसचौबीसीचौपई	इयाम	हि०	प० अ	१७४६
१३९.	५८८९ तेईसबोलविवरण	×	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१४०.	१७३६ दर्शनसारभाषा	नथमल	हि०	प० क	१६२०
१४१.	१७४० दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि०	ग० क	१६२३
१४२.	४२४५ देवकीकीर्त्तिका	सूणकरकासलीवाल	हि०	प० अ	×
१४३.	४६८ द्रव्यसंग्रहभाषा	दाबा दुलीचंद	हि०	ग० क	१६६६

क्रमांक	प्र. सू. क्र.	प्रब. का नाम	प्रयत्कार	मापा	प्रथमद्वार	रचना काल
१४४	१५५१	द्रुम्यसप्तमहाभाषा	हेमराज	हि ग	ख	१७११
१४५	१४ २	नगरो की बसापतका विवरण	×	हि म	घ	×
१४६	२६ ७	नागर्मता	×	हि प	घ	१७६१
१४७	४२४६	नागमीसङ्गमय	विनयचंद	हि प	घ	×
१४८	५११	निबामयि	प्र विनयम	हि प	क	१५ की सततम्बी
१४९	१४४६	नमिजिनदम्पादस्रो	सेतसी	हि प	म	१७ बी "
१५	२१३८	नमीखीकाचरित्र	प्रमल्ल	हि प	घ	१८ ४
१५१	१११२	नमिखीकोर्मगल	विस्वसूचण	हि प	घ	१९६८
१५२	१८६४	नमिनाचर्चंद	सुमचंद	हि व	घ	१९ की "
१५३	४२१४	नेमिपञ्चमतिगीष	हीराजद	हि० प	म	×
१५४	२९१४	नेमिरामुखव्याहस्रो	धोपीकृष्ण	हि प	घ	१८६१
१५५	१४२६	नेमिरामुखविवाद	ब ज्ञानसागर	हि प	घ	१७ की "
१५६	१६१३	नेमीरधरकाचौमास्य	मुनिविहर्गदि	हि प	ख	१७ की "
१५७	१७२६	नेमिश्वरकाईडोखना	मुनिरत्नकीर्ति	हि प	ख	×
१५८	४८२६	नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्ति	हि प	ख	×
१५९	१६३	पंचकल्याणकपाठ	हरचंद	हि प	ख	१८२१
१६	२१७१	पांडवचरित्र	नामचर्चन	हि प	ट	१७६८
१६१	४२३७	पद्	शुपितिवलास	हि प	घ	×
१६२	१४३६	परमात्मप्रकाशटीका	बालचंद	हि	क	१८३६
१६३	१७३	प्रजुभरास	कृष्णरास	हि प	ख	×
१६४	११६४	पार्ष्वनामचरित्र	विस्वसूचण	हि	घ	१७ की "
१६५	४२६	पार्ष्वनामचौपई	प लालो	हि प	ट	१७१४
१६६	१७६४	पास्वछन्द	ब लखराम	हि प	म	१६ की "
१६७	१२७७	पिंगलछन्दरास	माजगर्भवि	हि प	घ	१ १३
१६८	२६२१	पुण्यास्यक्याकोश	टीकचंद	हि प	क	१६२८
१६९	१२३	बंभठदपसताचौपई	श्रीबाल	हि प	ट	१७८१
१७	१८३६	विहारीसतसईटीका	सुम्भुराज	हि प	ख	×
१७१	१९ ७	विहारीसतसईटीका	हरचरणदास	हि प	घ	१८३४
१७२	१४६७	मुबनकीर्तिगीत	सुचराम	हि व	म	१९ की "

क्रमांक	प्र. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
७३.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रगविनयगणि	हि० प०	प्र	१७१४
१७४.	३४८६	मनमोदनपंचशती	धनपति	हि० प०	क	१६१६
१७५.	६०४६	मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६.	३८६४	महावीरछंद	शुभचंद	हि० प०	प्र	१६ वी
१७७.	२६३८	मानतुंगमानव्रतचौपई	मोहनविजय	हि० प०	छ	×
१७८.	३१८५	मानविनोद	भानसिंह	हि० प०	ख	×
१७९.	३४६१	मित्रविलास	पासी	हि० प०	क	१७८६
१८०.	१६४८	मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ज	१८८५
१८१.	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२.	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१६३२
१८३.	५११३	रत्नावलिब्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	हि० प०	प्र	१६ वी
१८४.	५५०१	रघुव्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	प्र	१७ वी
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६.	३४६४	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	भ	×
१८७.	५३६८	राजसभारंजन	गंगादास	हि० प०	प्र	×
१८८.	६०५५	रुक्मणिकृष्णजीकोराम	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९.	२६८६	रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी
१९०.	६०६७	रोहिणीविधिकथा	वंसीदास	हि० प०	ट	१६६५
१९१.	५६६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजी रामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२.	६०८६	लब्धिविधानचौपई	भोषमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३.	५६५१	लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४.	६१०५	वसतपूजा	प्रजयराज	हि० प०	ट	१८ वी
१९५.	५५१६	वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	हि० प०	प्र	×
१९६.	२३५६	विक्रमचरित्र	प्रभयसोम	हि० प०	प्र	१७२४
१९७.	३८६४	विजयकीर्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	प्र	१६ वी.
१९८.	३२१३	विषहरनविधि	सतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१
१९९.	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	प्र	×
२००.	३७०४	षट्लेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	भ	१७३०
२०१.	५४०२	शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	प्र	×

क्रमांक	प्रे सू क्र	ग्रंथे का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभण्डार	रचना काल
२२	१४१०	शीखपिस	कुणन्धीति	हि० प०	म	१७११
२३	१५४१	शीखपिस	प रामसारादेवसूरि	हि० प०	म	१९ बी
२०४	१५६६	शीखपिस	विजयदेवसूरि	हि० प०	म	१५ बी
२०५	२७०१	शेखिकेचौपई	इ भावेर	हि० प०	म	१५२५
२०६	१४३२	शेखिकेचरित्र	विजयकीर्ति	हि० प०	म	१८२
२७	१३६२	समोसैरय्य	ब पुताल	हि० प०	म	१९६५
२८	१३२६	स्यामैबन्दीसी	मरदास	हि० प०	म	×
२९	२४६८	सागरिदत्तचरित्रे	हीरकवि	हि० प०	म	१७२४
३१	१२१६	सामोयिकुपाठमोषी	विजोकरव	हि० प०	म	×
३११	१७६	हम्मिरगसो	महेसकवि	हि० प०	म	×
३१२	१६६४	हरिबंशपुराण	×	हि० प०	म	१९७९
३१३	२७४२	होसिकेच चौपई	इंवरकवि	हि० प०	म	१९२६

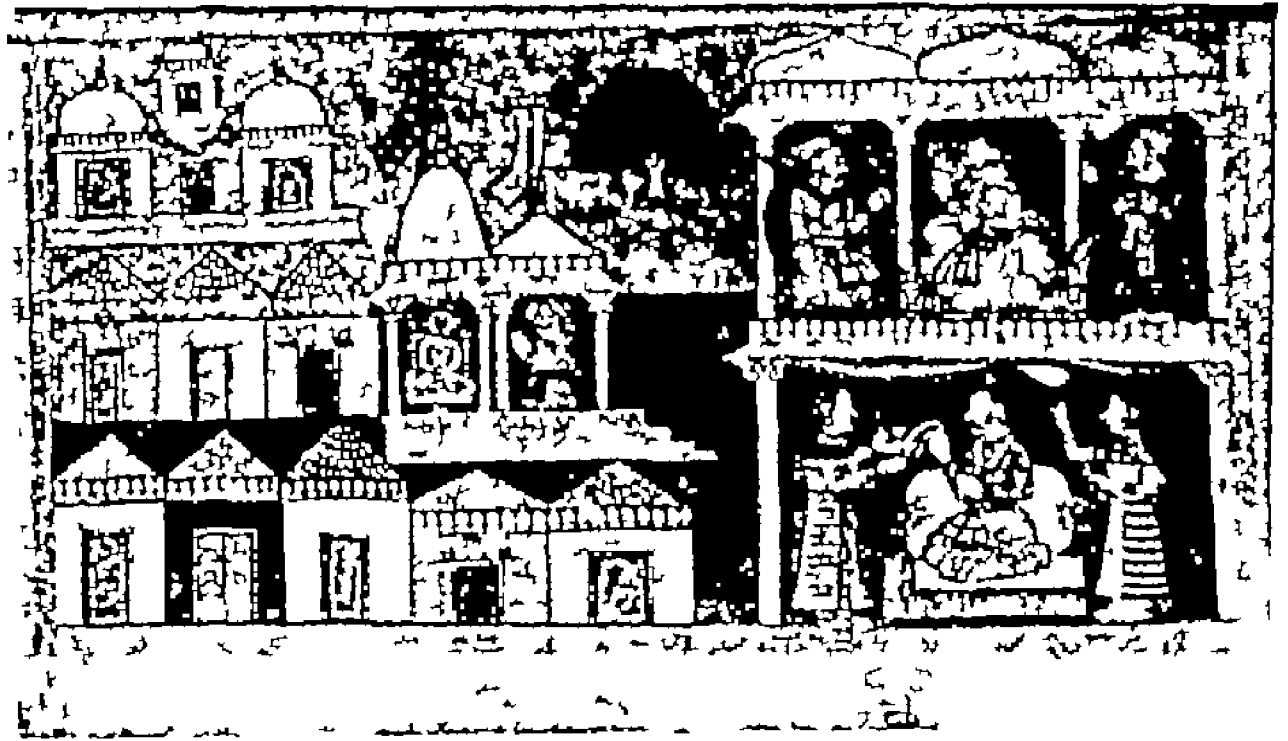


भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है ।
राजा यशोधर दु स्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है ।
रानी हाहाकार करती है ।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]



अिन पैत्यालय एबं राममहल का एक दृश्य
(मंस सूची क्र सं २२६४ बरतन सख्या ११४)

ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

राजस्थान के जैन शास्त्र भरदारों

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अर्थदीपिका—जिनभद्रगणि । पत्र स० ५७ मे ६८ तक । आकार १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-प्राकृत ।
विषय-जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सख्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।
विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।
२. अधप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ३०३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भा० राजस्थानी
(दू ढारी गद्य) विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १९१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।
विशेष—उभास्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है ।
३. प्रति सं० २ । पत्र स० ११० । ले० काल × । वे० स० ४८ । प्राप्ति स्थान म् भण्डार ।
४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२७ । ले० काल स० १९३५ आसोज बुदी ६ । वे० स० १८९६ । प्राप्ति
स्थान ट भण्डार ।
विशेष—प्रति मुन्दर एव आकर्षक है ।
५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ४९ । आ० ९×६ इंच । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—
आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।
विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुरुस्थानों का भी अच्छा विवेचन
किया गया है । अन्त में व्रतो एव प्रतिभाषो का भी वर्णन दिया हुआ है ।
६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ७ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—आठ
कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।
७. अर्हत्प्रवचन । पत्र स० २ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भा० सन्स्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८१ है। पांच श्लोक है।

८. आह्लास्यचनव्याख्या... पत्र सं ११। या १ > ४ इव। या मन्त्र १२ कर्म X।
से० कर्म X। पूर्ण। वे सं १७११। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

विशेष—एक वा दुसरा नाम चतुर्विंश सूत्र भी है।

९. आचारंगसूत्र... पत्र सं २३। या १ > ४ इव। या प्राण्य। विषय—प्राण्य।
१ कर्म X। वे कर्म सं १८२। पूर्ण। वे सं १६६। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

विशेष—एक वा नहीं है। हिन्दी में एका टीका की हुई है।

१०. आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक... पत्र सं २। या १ > ४ इव। या प्राण्य।
विषय—प्राण्य। २० कर्म X। वे सं २०। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

११. आभयत्रिमयी—नमिष्यद्राजाय। पत्र सं ३१। या ११ > ३ इव। या प्राण्य।
विषय—मिद्वान्। १ कर्म X। वे कर्म सं १८६० ईमान सुदी ८। पूर्ण। वे सं १८२। प्राप्ति स्थान ४
मन्त्र।

१२. प्रति सं० १। पत्र सं १३। वे कर्म X। वे सं १८६। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

१३. प्रति सं० ३। पत्र सं २१। वे कर्म X। वे सं १६३। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

१४. आभयत्रिमयी... पत्र सं ६। या १२ > ३ इव। या हिन्दी। विषय—मिद्वान्।
२ कर्म X। वे कर्म X। वे सं २१३। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

१५. आभयवदन... पत्र सं १४। या ११ > ३ इव। या हिन्दी। विषय—मिद्वान्।
१ कर्म X। वे कर्म X। पूर्ण। वे सं १६। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

विशेष—यदि जीर्ण जीर्ण है।

१६. प्रति सं० १। पत्र सं १२। वे कर्म X। वे सं १६६। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

१७. उक्कीमठागुणचर्चा—मिद्वसेन मूरि। पत्र सं ४। या ११ > ३ इव। या प्राण्य।
विषय—मिद्वान्। १ कर्म X। वे कर्म X। पूर्ण। वे सं १७१३। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

विशेष—एक वा दुसरा नाम चतुर्विंशानिश्चान प्रकरण भी है।

१८. उक्ताध्ययन... पत्र सं २३। या ११ > ३ इव। या प्राण्य। विषय—
प्राण्य। १ कर्म X। वे कर्म X। पूर्ण। वे सं १६। प्राप्ति स्थान ४ मन्त्र।

विशेष—हिन्दी टीका टीका की है।

१६ उत्तराध्ययनभाषाटीका

पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी ।

विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयाल दया करू, आसा पूरण काज ।

चउवीमे जिगवर नमुं, चउवीमे गणधार ॥ १ ॥

वरम ग्यान दाता मुगुह, अहनिस घ्यान धरेस ।

वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेम ॥ २ ॥

उत्तराध्ययन चउदमड, मित्र छए अधिकार ।

अलप अकल गुण छड घणा, कहू बात मति अनुसार ॥ ३ ॥

चतुर चाह कर साभलो, ते अधिकार अनुप ।

निश विकथा परिहरी, सुण ज्यो मालस मूढ ॥ ४ ॥

आगे माकेत नगरी का वर्णन है । कई ढाले दी हुई है ।

२०. उदयसत्ताबंधप्रकृति वर्णन

। पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भा० संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मग्रन्थमत्तरी

। पत्र सं० २८ । आ० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १२२ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य

। पत्र सं० १२ । आ० १० इंच × ४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १६८१ मगसिर मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पाठे डालू के पठनार्थ नागपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत मे सक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रगति—सवत् १६८१ वरषे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णांकुता पाठे डालू

पठनार्थ लिखित मुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२५ प्रति स० ४। पत्र सं १२। के कास सं १७६०। प्रपूर्व। के सं ११६३। अ नम्बर।

विषय—सद्वारण जगन्नीति के विषय कृष्णावन न प्रतिनिधि करवाई थी।

० प्रति स० ५। पत्र सं १४। के कास सं १८२ फाल्गुन बुदी ७। के सं १२। क नम्बर।

विषय—इसकी प्रतिनिधि विद्यालम्बि के विषय प्रभैराम मधुनकर ने कृष्णस के सिधे की थी। प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है।

२७ प्रति स० ६। पत्र सं ७७। के कास सं १९७१ भाद्रपद बुदी २। के सं २६। अ नम्बर।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है। मालपुरा में श्री पार्श्वनाथ जीवालय में प्रतिनिधि हुई तथा सं १९८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संदीपन किया।

२८ प्रति स० ७। पत्र सं ११। के कास सं १८२३ ज्येष्ठ बुदी १८। के सं ३५। अ नम्बर।

२९ प्रति स० ८। पत्र सं १३। के कास सं १८१६ ज्येष्ठ बुदी ६। के सं ६१। अ नम्बर।

३० प्रति स० ९। पत्र सं ११। के कास सं १९१। अ नम्बर।

विषय—संस्कृत में संकलन दिया हुआ है।

३१ प्रति स० १०। पत्र सं ११। के कास सं २८१। अ नम्बर।

विषय—१२१ भाषाओं में है।

३२. प्रति स० ११। पत्र सं २२। के कास सं १७६३ वैशाख बुदी ११। के सं ११२। अ नम्बर।

विषय—सम्भाषणी में पत्र का माहमा में पत्र बीजापुर के विषय मोहनबाल के फलार्थ प्रतिनिधि की थी।

३३ प्रति स० १२। पत्र सं १७। के कास सं १२३। अ नम्बर।

३४ प्रति स० १३। पत्र सं १७। के कास सं १९४४ कार्तिक बुदी १। के सं १२९। अ नम्बर।

३५ प्रति स० १४। पत्र सं १४। के कास सं १९२२। के सं २१२। अ नम्बर।

विषय—कृष्णावन में राव सुब्रह्मण्य न राव्य न प्रतिनिधि हुई थी।

३६. प्रति स० १५ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० ८०५ । अ भण्डार ।

३७ प्रति सं० १६ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २८० । अ भण्डार ।

३८ प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० स० ४०५ । अ भण्डार ।

३९. प्रति स० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० स० १३० । अ भण्डार ।

४०. प्रति स० १९ । पत्र स० ५ से १७ । ले० काल स० १७६० । अपूर्ण । वे० स० २००० । ट भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगरी मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य मे आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य प० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने सशोधन करके प्रतिलिपि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं है । प्रति मस्कृत टीका सहित है ।

४१ प्रति स० २० । पत्र स० १३ से ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १९८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । गुजराती टीका सहित है ।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२X५ इ च । भा० मस्कृत । विषय—मिद्धान्त । २० काल X । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी ।

४३. कर्मप्रकृति . . . । पत्र स० १० । आ० ८^१/_४ X ४^१/_४ इ च । भा० हिन्दी । २० काल > । पूर्ण । वे० स० ३६४ । अ भण्डार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र स० १६ । आ० ८^१/_४ X ४^१/_४ इ च । भा० हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे स० ३७ । अ भण्डार ।

४५. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १४ । आ० १२X५ इ च । भा० मस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता आ० नेमिचन्द्र हैं ।

४६. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे स० १२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७. कर्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि । पत्र सं० १२ । आ० ११X६ इ च । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । वे० स० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

१८ कल्पमिश्रणसमग्रह... पत्र सं १०। मा १ × ८ इ. च। आ प्रकृत। विषय-

वामम। र नाम >। मे नाम <। पूर्ण। वे सं १६६। अ मन्थार।

विषय—भी जिनसावर सूरि की यात्रा से प्रतिमिति हुई थी। पुज्यरती भाषा में टीका सहित है।

प्रतिम नाम—मूल—तेरां कसेरां तेरां समयरां... - सिलाम्ग पदि बुटा।

पद्य—तिराह कालह नर्जापहार कसह विणह समयह गर्मापहार कबी पहिली धममग आशंत
न महावीर विहू अलेकरे सहित ह जिहुंता ते मणी इमजि आणह नेहरिम गाम परियवतायह। इहा कबी मर
निससानी कू लर संजमाविस्वह। मनह जिमि बसासह ५७मावह मे वेसा न आणह। अपहण्यवास घंतमु हुन सजदियर
धनह उगवाम काम गिखि घंतमुहुं हर्त प्रममगा। पर कूपस्पनाउपयोग विकर। संहरण नाम मुभम आगिबउ बसी थी
याचाराग माहि कहिउछह। संहरण काल गिखि आछह। पर ए पाठ सगमह नही। ते मणी धाकीगन ही। तिमसनी
हु वि धावा पछी जायह। जिमी रात्रिह भमण भयवंत थी महावीर बजासंवा बाह्यणी सुकसम्वा सूती। बाई सूती
बाई बसती। बहु बाउबार स्फार्त जिस्या पूर्वह बर्गस्या तिस्या चउबहु महस्वन्न जिवाला अत्रिबाणी पर महरणमा
गमी लीया। इमउ स्वन्न देखि जायी। ये मणी कस्वाम्पु कारिया मिहपहुइम। धन कल्प ना करणहार। संवसीव।
न थी कत्रिबह बरि बाउड बीपह नर पहुता। हिबह जिवाला अत्रिबाणी जिणह पुकारह सुपिना देखिस्यह ते प्रतातर
जाबस्या। व थी कल्प सिदास्तनी बाबला ठणह अधिभरह। एवं मास्यसं बान छह। पीस पासह। ठप ता। भाबला
भाबई एवंविध धर्म कल्प करई ते भी देवपुठ कसउ प्रसाह देवनह अत्रिबारह विधि चैत्यस्य पुण्यमान थी पदार्थनाथ
ताणह प्रमादि पुनी परंवरामह मुचिहित बरुबुडामणि थी उचोहनसूरि थी बर्जमाल सूरि थी। थी जिनेस्वर सूरि।
आ धन्यदेव सूरि मुगप्रपात थी जिनसावरसूरि थीमज्जिन कुमलसूरि थी इकस्वर पातिसाहि प्रतिवाक्यं मुगप्रपात थी
मज्जिनसूरि लण्णे प्रमातर थी मज्जिनसिंह सूरि तण्डुं प्रभावर भद्रारण थी जिनसावर सूरिभी यात्रा प्रवर्तह। थीरम्पु।
संस्कृत में स्मोक् तथा प्राण में कई अनेक भाषाए की हैं।

१९ कल्पमूत्र (मिक्त्वु अयम्यस्यां) ... पत्र सं ११। मा १ × ४ इ. च। आ प्रकृत।

विषय-वामम। र नाम <। मे नाम >। वे सं १६६। पूर्ण। अ मन्थार।

विषय—हिन्दी टप्पा टीका सहित है।

२० कल्पमूत्र—मन्थार। पत्र सं १११। मा १ × ४ इ. च। आ प्रकृत। विषय-वामम।

र नाम। मे नाम <। पूर्ण। वे सं १६६। अ मन्थार।

विषय—रा तथा ३ रा पत्र नहीं है। भाषायों व नीचे हिन्दी में सर्व किया हुआ है।

२१ प्रतिम - पत्र सं १ मे १२। मे नाम <। पूर्ण। वे सं १६७३। अ मन्थार।

विषय—प्रति संस्कृत तथा मन्थारी भाषा सहित है। कते ३ टप्पा टीका भी दी हुई है। नीचे के कई
पत्र नहीं ?।

१ कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र म० ६ । आ० १४×४ $\frac{१}{२}$ इ च । भा० प्राकृत । विषय—प्रागम ।
२० का × । ले० का स० १५६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० म० १८४९ । ट भण्डार ।

५२. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ मे २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । गायाम्रो के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।

५३ कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय । पत्र स० २५ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—प्रागम । २० काल × । ले० काल म० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वे० म० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—लूणकारानर ग्राम मे ग्र य की रचना हुई थी । टीका का नाम वन्यलता है । सारक ग्राम मे प०
भाष्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५४ कल्पसूत्रवृत्ति । पत्र स० १२६ । आ० ११×६ $\frac{१}{२}$ इ च । भा० प्राकृत । विषय—
प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८१८ । ट भण्डार ।

५५ कल्पसूत्र । पत्र स० १० मे ४६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—
प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टिप्पण भी दिया हुआ है ।

५. क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र म० ६७ । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इ च । भा०
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल शक स० ११२५ वि० स० १२६० । ले० काल स० १८१६ वैशाख बुदी ११ ।
पूर्ण । वे० स ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्र य के मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य है ।

५७. प्रति सं० २ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १६५५ । वे० स० १२० । क भण्डार ।

५८ प्रति सं० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १८४७ आषाढ बुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५९ क्षपणासार—टीका । पत्र स० ६१ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इ च । भा० संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११८ । क भण्डार ।

६० क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र स० २७३ । आ० १३×८ इ च । भा० हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्ता आचार्य नेमिचन्द्र है । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महा प०
टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्यग्ज्ञान
चन्द्रिका है । इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ मे भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।

६१ गुणस्थानवर्षा - - - - - । पत्र सं ४१ । मा १२×२ इच । मा प्रसूत । विषय-
मिहान्त । र काम × । न काम × । पूरा । वै सं २३ । अ मन्थार ।

६२ प्रति स० २ । के काम × । वै सं २४ । अ मन्थार ।

६३ गुणस्थानकमारोहसूत्र—रत्नरोत्तर । पत्र सं २ । मा १×४ इच । मा संसूत ।
विषय—मिहान्त । र काम × । के काम × । पूर्ण । वै सं २३२ । अ मन्थार

६४ प्रति स० २ । पत्र सं २१ । के काम सं १०३२ प्रसात्र कुरी १४ । वै सं ३०२ । अ मन्थार ।

विषय—संस्कृत टीका सहित ।

६५ गुणस्थानवर्षा - - - - - । पत्र सं ३ । मा १×४ इच । मा हिन्दी । विषय-
मिहान्त । र काम × । के काम × । वै सं १३६ । प्रसूत । अ मन्थार ।

६६ प्रति स० २ । पत्र सं २५ २४ । वै सं २३० । अ मन्थार ।

६७ प्रति स० ३ । पत्र सं २७ २१ । प्रसूत । न काम × । वै सं १३६ अ मन्थार ।

६८ प्रति सं ४ । पत्र सं ७ । के काम सं १२६३ । वै सं २३६ । अ मन्थार ।

६९ प्रति स० ५ । पत्र सं १२ । के काम × । वै सं २३६ अ मन्थार ।

७० प्रति सं ६ । पत्र सं २६ । के काम २ । वै सं ३४२ । अ मन्थार ।

७१ गुणस्थानवर्षा—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं ३६ । मा ७×७ इच । मा हिन्दी । विषय—मिहान्त ।
र काम । न काम × । वै सं ११६ ।

७२ गुणस्थानवर्षा पत्र चाबीम ठाया वर्षा - - - - - । पत्र सं ८ । मा १२×२ इच । मा
संसूत । विषय—मिहान्त । र काम × । न काम × । प्रपूर्ण । वै सं २३१ । अ मन्थार ।

७३ गुणस्थानप्रकरण - - - - - । पत्र सं १ । मा ११×४ इच । मा संसूत । विषय—मिहान्त
र काम × । के काम × । पूर्ण । वै सं १३८ । अ मन्थार ।

७४ गुणस्थानमेव - - - - - । पत्र सं ३ । मा ११×२ इच । मा संसूत । विषय—मिहान्त ।
र काम । के काम × । प्रपूर्ण । वै सं १६३ । अ मन्थार ।

७५ गुणस्थानमागण्डा - - - - - । पत्र सं ४ । मा ७×४ इच । मा हिन्दी । विषय—मिहान्त
र काम × । के काम × । पूरा । वै सं २३७ । अ मन्थार ।

७६ गुणस्थानमागण्डारचना - - - - - । पत्र सं २८ । मा ११×४ इच । मा संसूत ।
विषय—मिहान्त । र काम × । न काम × । प्रपूर्ण । वै सं ७७ । अ मन्थार ।

७७ गुणस्थानवर्णन ' " " " पत्र स० २० आ० १०×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७८ । च भण्डार ।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है ।

७८ गुणस्थानवर्णन ' " " " पत्र स० १५ से ३१ । आ० १२×५ इंच । भा० हिन्दी ।
विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

७९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १७६३ । वे० स० ४६६ । व्य भण्डार ।

८० गोस्पटसार (जीवकाण्ड)—आ० नैमिचन्द्र । पत्र स० १३ । आ० १३×५ इंच । भा०—
प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १५५७ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ११८ ।
अ भण्डार ।

प्रवास्ति—सवत् १५५७ वर्षे आषाढ शुक्ल नवम्या श्रीमूलसधे नंधाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे
श्री कुदकु वाचार्यन्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्ता-
त्पिष्य मुनि श्री मडलाचार्य रत्नकीर्त्ति देवास्तत्पिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये सहलवालवंसे सा० देह्या भार्या
दन्ही तत्पुत्र सा० मोजा तद्भार्या अराभास्तत्पुत्रा सा० भावघो द्वितीय अमरघो तृतीय जाल्हा एते सास्त्रभिर्द लेखयित्वा
तस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचद्राय भक्त्या प्रदत्त ।

८१. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ११६४ । अ भण्डार ।

८२. प्रति स० ३ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७२६ । वे० स० १११ । अ भण्डार ।

८३. प्रति स० ४ । पत्र स० ५ से ४८ । ले० काल स० १६२४ । वैश्व सुदी २ । अपूर्ण । वे०
स० १२८ । क भण्डार ।

विशेष—हरिभद्र के पुत्र सुनपथी ने प्रतिलिपि की थी ।

८४ प्रति स० ५ । पत्र स० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३६ । क भण्डार ।

८५. प्रति स० ६ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १३६ । ख भण्डार ।

८६. प्रति स० ७ । पत्र स० ३७५ । ले० काल सं० १७३८ आषाढ सुदी ५ । वे० सं० १४ । घ
भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है । श्री वीरदास ने अकबराबाद में प्रतिलिपि की थी ।

८७. प्रति सं० ८ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६६ आषाढ सुदी ७ । वे० सं०
१३८ । क भण्डार ।

६८ प्रति स० ३। पत्र सं ७७। मे० काल ३। १८६६ वैश्व शुकी ३। वै सं० ७६। पत्र नम्बर।

६९ प्रति स० १०। पत्र सं १७२-२४१। मे० काल ×। पपूर्णा। वै सं ८। पत्र नम्बर।

६० प्रति स० ११। पत्र सं २। मे० काल ×। पपूर्णा। वै सं २४। पत्र नम्बर।

६१ गोमटसारटीका—मकलभूषण। पत्र सं १८३४। पत्र १२३×७ इंच। मा० संस्कृत।

विषय—सिद्धांश। २ काल सं १५७६ कार्तिक शुकी ११। मे० काल सं १६४१। पूर्णा। वै सं १४। पत्र नम्बर।

विषय—बाबा दुलीचन्द्र ने पम्पलाल चौधरी ने प्रतिनिधि कराई। प्रति २ बट्टमा में बंधी है।

६२ प्रति स० ३। पत्र सं १३१। मे० काल ×। वै सं १३७। पत्र नम्बर।

६३ गोमटसारटीका—बमचन्द्र पत्र सं ३३। पत्र १ × १५ इंच। मा० संस्कृत। विषय—

सिद्धांश। २ काल ×। मे० काल ×। पूर्णा। वै सं १३६। पत्र नम्बर।

विषय—पत्र १३१ पर प्राचार्य बर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का मान है। मानपुर नगर (गमौर)

में मध्यमवर्ग के शासनकाल में गालहा प्रति बरिदास पौत्र बने भालकों ने कट्टार बर्मचन्द्र का यह प्रति लिखकर प्रस्तुत की।

६४ गोमटसारकृति—कश्मिरी। पत्र सं १३२। पत्र १ × ४ इंच। मा० संस्कृत।

२ काल ×। मे० काल ×। पूर्णा। वै सं ३३१। पत्र नम्बर।

विषय—मूल भाषा सहित चौबदाष्ट एवं बर्मकाण्ड की टीका है। प्रति बर्मचन्द्र द्वारा उल्लिखित है।

५ गिरधर की पोथी है। ऐसा लिखा है।

६५ गोमटसारकृति—...। पत्र सं ३ से १३२। पत्र १ ३/४ × ४ इंच। मा० संस्कृत।

विषय—सिद्धांश। २ काल ×। मे० काल ×। पपूर्णा। वै सं १२३३। पत्र नम्बर।

६६ प्रति स० २। पत्र सं २६४। मे० काल ×। वै सं ८६। पत्र नम्बर।

६७ गोमटसार (जीवकाण्ड) भाषा—प टोडरमल। पत्र सं २२१ से ३६। पत्र ६ ३/४ × ६ इंच। मा० हिन्दी। विषय—सिद्धांश। २ काल ×। मे० काल ×। पपूर्णा। वै सं ४३। पत्र नम्बर।

विषय—पंडित टोडरमलजी के स्वर्ण के रूप का सिद्धांश का पत्र है। पत्र २ कटा हुआ है।

भाषा का नाम लक्ष्मणलक्ष्मणिका है। प्रवर्णन—सोम।

६८ प्रति स० १। पत्र सं ६७। मे० काल ×। पपूर्णा। वै सं १७६। पत्र नम्बर।

सिद्धान्त एवं चर्चा]

१९६. प्रति म० २ । पत्र म० ६७६ । ले० का० म० १६८८ भाद्रपदा सुदी १५ । वै० सं० १४१ । क. भण्डार ।

१००. प्रति सं० ३ । पत्र म० ११ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० १२६५ । अ. भण्डार ।

१०१ प्रति सं० ४ । पत्र म० ५७६ । ले० काल म० १८८५ माघ सुदी १५ । वै० सं० १८ । ग. भण्डार ।

विशेष—कालराम साहू तथा मन्नालाल कामलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०२ प्रति म० ४ । पत्र म० ३२८ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० १४६ । ड. भण्डार ।

विशेष—२७४ में प्रागे ५४ पत्रों पर गुणस्थान आदि पर यंत्र रचना है ।

१०३ प्रति म० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल X । वै० सं० १५० । ड. भण्डार ।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है ।

१०४. गोम्मटसार-भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० ११३ । प्रा० १५ X १० इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल म० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १६४२ भाद्रपदा सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १५१ । क. भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मिसार तथा क्षपणासार की टीका है । गणेशलाल मुद्दरलाल पांड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी ।

१०५ प्रति म० २ । पत्र म० १११० । ले० काल म० १८५७ सावण सुदी ५ । वै० सं० ५३८ । ख. भण्डार ।

१०६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७१ मे ७६५ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० १२६ । ज. भण्डार ।

१०७ प्रति म० ४ । पत्र म० ८१८ । ले० काल म० १८८७ वैशाख सुदी ३ । अपूर्णा । वै० सं० २२१८ । ट. भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रों पर बीच में कलापूरख गोलकार दिये हैं । बीच के कुछ पत्र मही हैं ।

१०८. गोम्मटसारपीठिका-भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० ६२ । प्रा० १५ X ७ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० २३२ । क. भण्डार ।

१०६. गोम्मतसारटीका (जीवकाण्ड)— " " । पत्र सं २६२ । पृ १३×८५ इंच । भा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काष्ठ × । ले काष्ठ × । अपूर्णा । के सं १२६ । अ मन्थार

विलेख—टीका का नाम उत्पत्तप्रदीपिका है ।

११० प्रति स० २ । पत्र सं १२ । ले काष्ठ × । अपूर्णा । के सं १३१ । अ मन्थार ।

१११ गोम्मतसारमट्टि—५० श्लोकमय । पत्र सं ५५ । पृ २२×७ इंच । भा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २ काष्ठ × । ले काष्ठ × । पूर्णा । के सं २ । अ मन्थार ।

११२. प्रति स० २ । पत्र सं ४५ सं २ । ले काष्ठ × । अपूर्णा । के सं २३६ । अ मन्थार ।

११३ गोम्मतसार (कर्मकाण्ड)—नमिषमुद्राचार्य । पत्र सं ११६ । पृ ११×७५ इंच । भा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २ काष्ठ × । ले काष्ठ सं १८८५ नैत मुदी ४ । पूर्णा । के सं ८१ । अ मन्थार ।

११४ प्रति स० २ । पत्र सं १४३ । ले काष्ठ । अपूर्णा । के सं ८ । अ मन्थार ।

११५ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । ले काष्ठ × । अपूर्णा । के सं ८३ । अ मन्थार ।

११६ प्रति स० ४ । पत्र सं १३ । ले काष्ठ सं १८४४ नैत मुदी १४ । अपूर्णा । के सं १८२ । अ मन्थार ।

विलेख—महाराज कुदीरकीर्ति के सिद्धान्त का अर्धसूत्र क सम्प्रदायार्थ शरीरिण अथवा य प्रतिनिधि भी पर्य ।

११७ गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) टीका—कमलानदि । पत्र सं १ । पृ ११×२५ इंच । भा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २ काष्ठ × । ले काष्ठ × । पूर्णा । (तुनीय प्रथिवार तक) । के सं १३३ । अ मन्थार ।

११८ गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) टीका—महाराज आनन्दपञ्च । पत्र सं २४ । पृ ११×७ इंच । भा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २ काष्ठ × । ले काष्ठ सं १६७७ नैत मुदी ३ । पूर्णा । के सं १३६ । अ मन्थार ।

विलेख—सुमतिकीर्ति की सहाय्य में टीका लिखी गयी थी ।

११९ प्रति स० ३ । पत्र सं ८३ । ले काष्ठ सं १९७३ कागुत्त मुदी ५ । के सं १३६ । अ मन्थार ।

१२० प्रति स० ३ । पत्र सं २१ । ले काष्ठ × । अपूर्णा । के सं ८४० । अ मन्थार ।

सिद्धान्त एव चर्चा]

१२१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० २५ । ख भण्डार ।

१२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७५ । वे० सं० ४६० । व्य भण्डार ।

१२३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० ६६४ । आ० १३×८ इ च । भा० हिन्दी गद्य (ढूढारी) । विषय—सिद्धान्त । २० काल १६ वीं शताब्दी । ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १३० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ड भण्डार ।

विशेष—सदृष्टि सहित है ।

१२५. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इ च । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० २०१७ । ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रश्न साह आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछया तिस ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देख के क्षयोपशम माफिक पत्री मे जबाब लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है ।

१२६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७१७ आसोज वृदी ११ । वे० सं० १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर मे कल्याण पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज १८ वीं शताब्दी के प्रथमराज के हिन्दी गद्य के अन्धे विद्वान हुये हैं । उन्होने १० से अधिक प्राकृत व मस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य मे रूपांतर किया है ।

१२७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका । पत्र सं० १६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×२ इ च । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० × । वे० सं० ६६ । ड भण्डार ।

१२९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है —

इति प्राय श्रीगुप्तसारमूलान्दीकान्च नि वाश्यक्रमेण एकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रसिद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिप्रथस्य टीका समाप्ता ।

१३० गौतमकुल्लक—गौतम स्वामो । पत्र सं २ । मा १ × ४ इव । मा० प्राकृत । विषय-
सिद्धान्त । ८ काल × । स काल × । पूर्ण । के सं १७९६ । ८ नम्बर ।

विशेष—प्रति कुमरती टीका सहित है २ पत्र है ।

१३१ गौतमकुल्लक— । पत्र सं १ । मा १ × ४ इव । मा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त ।
८ काल-× । स काल-× । पूर्ण । के सं १२४२ । ४ नम्बर ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१३२ चतुर्वेदासूत्र— । पत्र सं १ । मा० १ × ४ इव । मा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त ।
८ काल × । स काल × । पूर्ण । के सं २६१ । ४ नम्बर ।

१३३ चतुर्वेदासूत्र—विनयचन्द्र मुनि । पत्र सं ० २६ । मा १ × ४ इव । माया-संस्कृत ।
विषय-मत्तम । ८ काल × । स काल सं १६८२ पीप कुरी १३ । पूर्ण । के सं १८२ । ४ नम्बर ।

१३४ चतुर्वेदागबाह्यविचरण— । पत्र सं ३ । मा ११ × ६ इव । मा संस्कृत ।
विषय-ध्याय । ८ काल × । स काल × । अपूर्ण । के सं ५१४ । ४ नम्बर ।

विशेष—प्रत्येक संम का पर प्रमाण दिया हुआ है ।

१३५ चार्वाकासूत्र—ध्यानतराया । पत्र सं १ । मा ११ × ५ इव । माया-हिन्दी (पत्र) । विषय-
सिद्धान्त । ८ काल १८ की कताम्बी । स काल सं १६२६ प्रायाङ्क कुरी ६ । पूर्ण । के सं १४६ । ४ नम्बर ।

विशेष—हिन्दी पत्र टीका भी की है ।

१३६ प्रति सं ० २ । पत्र सं १६ । स काल सं १६३० कस्तुर कुरी १२ । के सं १५ ।
४ नम्बर ।

१३७ प्रति सं ० ३ । पत्र सं ३ । स काल > । के सं ४६ । अपूर्ण । ४ नम्बर ।

विशेष—रामा टीका सहित ।

१३८ प्रति सं ० ४ । पत्र सं २२ । स काल सं १६३१ संनसित कुरी २ । के सं १७१ ।
४ नम्बर ।

१३९ प्रति सं ० ५ । पत्र सं १८ । स काल-× । के सं १७२ । ४ नम्बर ।

१४० प्रति सं ० ६ । पत्र सं २४ । स काल सं १६३६ कालिक कुरी ८ । के सं १७३ ।
४ नम्बर ।

विशेष—नीले कागजों पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है।

१४१. प्रति सं० ७। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १९६८। वे० सं० २८३। क भण्डार।

विशेष—निम्न रचनायें श्रीर है।

१ अक्षर वावनी - चानतराय - हिन्दी

२ गुरु विनती - भूधरदास - "

३ बारह भावना - नवल - "

४ समाधि मरण - "

१४२. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५६३। ट भण्डार।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३ चर्चावर्णन—। पत्र सं० ८१ से ११४। आ० १०^३×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७०। ड भण्डार।

१४४. चर्चासंग्रह । पत्र सं० ३९। आ० १०^३×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७६। छ भण्डार।

१४५ चर्चासंग्रह । पत्र सं० ३। आ० १२×५^३ इञ्च। भाषा संस्कृत—हिन्दी। विषय सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०५१। अ भण्डार।

१४६ प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल X। वे० सं० ८९। ज भण्डार।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओं का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र सं० १३०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—
सिद्धान्त। २० काल सं० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० ३८६। अ भण्डार।

१४८ प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १९०८ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ४४३। अ
भण्डार।

१५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २६। अ भण्डार।

१५० प्रति सं० ४। पत्र सं० ९९। ले० काल सं० १९४१ वैशाख सुदी ५। वे० सं० ५०। ख भंडार।

१५१ प्रति सं० ५। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १९६४ चैत सुदी १५। वे० सं० १७४। ड भंडार।

१५२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४ से १६६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।

१२३ प्रति स० ७। पत्र सं ७८। से काल स १८८३ पीप सुरी १३। वै स ११७। छ मण्डार।

विशेष—जफ्तार दिवासी महारमा चंबालाम न मवाई जयपुर में प्रतिनिधी की थी।

१२४ चर्चासार—प० शिवजीदास। पत्र सं १३३। मा १ ३/४ इ. मा। भाषा हिन्दी। विषय—

सिद्धान्त। र काल—X। से० काल X। पूर्ण। वै सं १४०। छ मण्डार।

१२५ चर्चासार—। पत्र सं १६२। मा ०४४ १/४ इ. मा। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र

काल X। अपूर्ण। वै सं १४। छ मण्डार।

१२६ चर्चासागर—। पत्र सं ३६। मा १३×२५ इ. मा। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र

काल X। अपूर्ण। वै सं ७८६। छ मण्डार।

१२७ चर्चासागर—जपादास। पत्र सं ३८। मा १३×१३ इ. मा। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—

सिद्धान्त। र० काल सं १११। से काल सं ११३१। पूर्ण। वै सं ४३६। छ मण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के प्रथम में रखे हैं।

१२८ प्रति स० २। पत्र सं ४१। से का सं ११३८। वै सं १४७। छ मण्डार।

१२९ चौदहशुक्लान्तचर्चा—अनन्तदास। पत्र सं ४१। मा ११×२३ इ. मा। भा हिन्दी गद्य।

(राजस्थानी) विषय—सिद्धान्त। र काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं ३१२। छ मण्डार।

१३० प्रति स० २। पत्र सं १-४१। से का X। वै सं ०६। छ मण्डार।

१३१ चौदहमार्ग्या—। प सं १। मा १२×२३ इ. मा। भाषा—प्रकृत। विषय—सिद्धान्त।

र काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं २३६। छ मण्डार।

१३२ प्रति स० २। पत्र सं ११। से काल X। वै सं १८३३। छ मण्डार।

१३३ चौबीसठायाचर्चा—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं ६। मा ३ ३/४×४ इ. मा। भाषा—प्रकृत।

विषय—सिद्धान्त। र काल X। से काल स १८२ बीमल सुरी १। पूर्ण। वै सं १५७। छ मण्डार।

१३४ प्रति स० २। पत्र सं ६। से काल X। अपूर्ण। वै सं १३१। छ मण्डार।

१३५ प्रति स० ३। पत्र सं ७। से काल सं १८१७ पीप सुरी १२। वै सं १६। छ मण्डार।

विशेष—यं स्विरदास के शिष्य स्वयम्भ के पठनार्थ गरासगुा ग्राम में रत्न की प्रतिनीधि की।

१३६ प्रति सं० ४। पत्र सं ३१। से काल सं १९४६ कार्तिक सुदि ५। वै सं ५१। छ मण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।
१६७. प्रति स ५। पत्र स० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वै० स० ५२। ख भण्डार।

विशेष—श्रेष्ठी मानसिंहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८ प्रति स० ६। पत्र स० १ से ४३। ले० काल X। अपूर्ण। वै० स० ५३। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टट्टा टीका सहित है। १४३वीं गाथा मे ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९ प्रति स० ७। पत्र स० ५६। ले० काल X। वै० स० ५४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टट्टा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थमार टिप्पण' है। आनन्दगम के पठनाज्ञ टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति स० ८। पत्र स० २५। ले० का० स० १६४६ चैत बुदी २। वै० स० १५६। ड भण्डार।

१७१ प्रति स० ९। पत्र स० ७। ले० काल X। वै० स० १३५। छ भण्डार।

१७२ प्रति स० ०। पत्र स० ३२। ले० काल X। वै० स० १३५। छ भण्डार।

१७३ प्रति स० ११। पत्र स० ५३। ले० काल X। वै० स० १४५। छ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है।

१७४ प्रति स० १२। पत्र स० ७। ले० काल X। वै० स० २९१। ज भण्डार।

१७५. प्रति स० १३। पत्र स० २ से २५। ले० काल स० १६९५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वै० स० १५१५। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्ति —सवत् १६९५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये चौबीस ठागो ग्रन्थ सपूर्ण भवति।

१७६ प्रति स० १४। पत्र स० ३३। ले० काल स० १८१४ चैत बुदि ९। वै० स० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण तवम्या सोमवासरे हड्डवती देगे अराह्वयपुरे भट्टारक श्री मुरेन्द्रकीर्ति नेद विद्वद् छात्र सर्व मुखह्वयाव्यापनर्थ लिपिकृत स्वगयेना चन्द्र तारक स्धीयतामिद पुस्तक।

१७७ प्रति स० १५। पत्र स० ६६। ले० का० स० १८४० माघ बुदी १५। वै० स० १८१७। ट भण्डार।

विशेष—नैगवा नगर मे भट्टारक मुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८ प्रति स० १६। पत्र स० १२। ले० काल X। वै० स० १८८९। ट भण्डार।

विषय-१ पत्र तक चर्चायें हैं इनमें प्राये सिद्धा की बातें तथा फुटकर इसका है। चौबीस तीसहूँ के विप्लव प्रादि का वर्णन है।

१७६ चतुर्विंशति स्थानक-नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं ४ । प्रा ११×३ इञ्च । भा प्रसूत । विषय-सिद्धान्त । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १६५ । अ मन्डार ।

विषय-संस्कृत टीका भी है।

१८० चतुर्विंशति मुख्यस्थान पीठिका " " । पत्र सं १८ । प्रा १२×५ इञ्च । भा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २ कास × । से कास × । प्रपूर्व । के सं १६२५ । अ मन्डार ।

१८१ चौबीस ठाखा चर्चा " " । पत्र सं २ से २४ । प्रा १२×३ इञ्च । भा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २ कास × । से कास × । प्रपूर्व । के सं १६६४ । अ मन्डार ।

१८२ प्रति सं २ । पत्र सं ३२ से ५१ । प्रा ११६×२३ इञ्च । भा संस्कृत । से कास सं १८६१ पीप सुदी १ । के सं १६६६ । प्रपूर्व । अ मन्डार ।

विषय-रामकसेन बाह्यांगरामध्ये लिखित ।

१८३ प्रति सं ३ । पत्र सं ६३ । से कास × । के सं १६८ । अ मन्डार ।

१८४ चौबीस ठाखा चर्चा कृति " " । पत्र सं १२३ । प्रा ११२×५ इञ्च । भा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ३२८ । अ मन्डार ।

१८५ प्रति सं २ । पत्र सं ११ । से कास सं १८४१ जेट सुदी ३ । प्रपूर्व । के सं ७७७ । अ मन्डार ।

१८६ प्रति सं ३ । पत्र सं ३१ । से कास × । के सं १४२ । अ मन्डार ।

१८७ प्रति सं ७ । पत्र सं ३७ । से कास सं १८१ कालिक सुदी १ । जीर्ण-सीमा । के सं १४६ । अ मन्डार ।

विषय-ईस्वरराम क सिष्य तथा गोकाराम ने सुबर्णा टण्डक के पठनार्थ सिध मिरपाटी के द्वारा प्रतिनिधि करवायी गई । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१८८ चौबीस ठाखा चर्चा " " । पत्र सं ११ । प्रा ६ × ४ इञ्च । भा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २ कास । से कास । पूर्ण । के सं ४३ । अ मन्डार ।

विषय-वर्माति में कथ का नाम 'चौबीस ठाखा' प्रकरण भी लिया है ।

१८९ प्रति सं १ । पत्र सं ६ । से कास सं १८२६ । के सं १८४७ । अ मन्डार ।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र न० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० न० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति सं० ४ । पत्र न० ११ । ले० काल X । वे० न० २०३७ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति सं० ५ । पत्र न० ४० । ले० काल X । वे० न० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३. प्रति सं० ६ । पत्र न० ४८ । ले० काल X । वे० न० १६१ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० न० १६० । क भण्डार ।

१६५ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० न० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—वेनाराम की पुस्तक में प्रतिनीपि की गई ।

१६६ द्वियालीमठाणाचर्चा " । पत्र सं० १० । आ० ६३X४३ इ च । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल—X । ले० काल सं० १८२० आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० न० २६८ । ख भण्डार ।

१६७ जम्बूद्वीपफन । पत्र सं० ३२ । आ० १२३X६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० न० ११५ । अ भण्डार ।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन " " । पत्र सं० १८ । आ० ६X८ इ च । भाषा प्राकृत । २० काल X ।

ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोम्मटमार में नें लिया गया है ।

१६९ जीवाचारविचार " । पत्र सं० ५ । आ० ६X४३ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० न० ८३ । अ भण्डार ।

२०० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८२८ मगसिर बुदी १० । वे० न० २०५ ।

क भण्डार ।

२०१ जीवसमामटिपण । पत्र सं० १६ । आ० ११X५ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा । पत्र सं० २ । आ० ११X५ इ च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३ जीवाजीवविचार । पत्र सं० ६२ । आ० १२X५ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

२०४ जैन महाभारत भाषाण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—भाषा दुस्तीचन्द्र । पत्र सं २३ ।
मा १२५७ इअ । भाषा हिन्दी । विषय—वर्षा समाप्त । २ कास सं ११४९ । म कास X । पूर्ण ।
सं २८ । क मण्डार ।

२०५ प्रति सं ० । पत्र सं २१ । म कास X । सं २१७ । क मण्डार ।

२०६ ठाण्डासूत्र— । पत्र सं १ । मा १ १/२ X ४ इअ । भाषा संस्कृत । विषय—आगम ।
२ कास X । म कास । अपूर्ण । सं ११२ । अ मण्डार ।

२०७ तरुणकौस्तुभ—प० पद्मलाल सषी । पत्र सं ७२७ । मा १२५७ इअ । भाषा हिन्दी ।
विषय—मिश्रान्त । २ का X । सं कास सं ११४४ । पूर्ण । सं २७१ । क मण्डार ।

विषय—यह ग्रन्थ तन्वार्थराजबालिक की हिन्दी सघ टीका है । यह १ अध्यायों में विभक्त है । इस प्रति
में ४ अध्याय तक है ।

२०८ प्रति सं ० । पत्र सं ५६८ । म कास सं ११४५ । सं २७२ । क मण्डार ।

विषय—४वें अध्याय में १ व अध्याय तक की हिन्दी टीका है । तथा अध्याय अपूर्ण है ।

२०९ प्रति सं ३ । पत्र सं ४२८ । २ कास सं ११३४ । सं कास X । सं २४ । अ मण्डार
विषय—राजबालिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१० प्रति सं ४ । पत्र सं ४२८ से ७७६ । सं कास X । अपूर्ण । सं २४१ । अ मण्डार ।
विषय—तीसरा तथा चौथा अध्याय है । तीसरे अध्याय के २ पत्र घसस्य और हैं । ४७ अलग पत्रों में
सूचीपत्र है ।

२११ प्रति सं ५ । पत्र सं १७ से ४७ । सं कास X । सं २४२ । अ मण्डार ।

विषय—५ ६ ७ ८ ९ १० वें अध्याय की भाषा टीका है ।

२१२ तत्त्वदीपिका— । पत्र सं ३१ । मा ११ १/२ X ६ १/२ भाषा हिन्दी सघ । विषय—मिश्रान्त ।
२ कास X । सं कास X । पूर्ण । सं २१४ । अ मण्डार ।

२१३ तत्त्वसंग्रह— शुभचन्द्र । पत्र सं ४ । मा १ १/२ X ४ इअ । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धांत
२ कास X । सं कास X । पूर्ण । सं ७६ । अ मण्डार ।

विषय—आचार्य नमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

२१४ तत्त्वसार— देवसेन । पत्र सं ६ । मा ११ X ३ १/२ इअ । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धांत ।
२ कास X । सं कास सं १७११ पौष बुदी १ । पूर्ण । सं २२३ ।

विषय—यं बिहारीदास ने प्रतिमिति करवायी थी ।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।
विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र म० ४ । ले० काल X । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वमारभाषा-पन्तालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त । १० काल सं० १९३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २६७ । फ भण्डार ।

विशेष—देवसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८. प्रति म० २ । पत्र म० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण । पत्र म० ३६ । आ० १३६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । च भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र म० १८ । आ० १२६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २०

काल X । ले० काल X । वे० सं० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ ने श्री देवसेन कृत आलापपद्धति दी हुई है ।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-

सिद्धान्त । १० काल सं० १८७६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध । पत्र सं० ३६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण । पत्र सं० १० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का भेंट किया हुआ है ।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र सं० ४२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल X । ले० काल सं० १९५२ प्रथम वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का है । श्लोक सं० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र म० १२६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा संस्कृत ।

विषय-सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल सं० १९७३ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ७२ । व भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । ज० हरदेव के लिए ग्रंथ बनवाया था । समूही कँवर ने जोशी गगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १९३३ अषाढ बुदी १० । वे० सं० १३७ ।
घ भण्डार ।

२७ प्रति सं० । पत्र सं० ७२ । से काल × । प्रपूर्णा । के सं ३७ । अ मण्डार ।

विषय—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । से काल × । प्रपूर्णा । के सं ११३६ । ट मण्डार ।

विषय—अन्तिम पुष्पिका— इति तत्त्वार्थ एतदप्रमाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मबन्धु सिद्ध्य श्री प्रभावश्रेयस विरचिते ब्रह्मार्थे साधु हाशयेन देव भावना विहिते मोक्ष परार्थ कथन वचन सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

२९ तत्त्वार्थराजवार्तिक—महाकलकवेव । पत्र सं ३ । भा १६×७ इच्छ । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १ भाग × । से काल सं १८०८ । पूर्णा । के सं १७ । अ मण्डार ।

विषय—इस प्रति का प्रतिलिपि सं १२७८ वाली प्रति म जयपुर नगर में की गई थी ।

३० प्रति सं० । पत्र सं १२२८ । भा भाग सं १६४१ भाषा मुंबी ६ । के सं २३७ ।

अ मण्डार ।

विषय—यह ग्रन्थ २ खण्डों में है । प्रथम खण्ड में १ म ६ तथा दूसरे में ६ १ से १० ८ तक पत्र है । प्रति उत्तम है । मुद्र के नीचे हिन्दी धर्म भी दिया है ।

३१ प्रति सं० ३ । पत्र सं ६२ । से काल × । के सं ६४ । अ मण्डार ।

विषय—भूतमात्र ही है ।

३२ प्रति सं० ४ । पत्र सं १० । से काल सं १६७४ पीप मुंबी १३ । के सं २४४ ।

अ मण्डार ।

विषय—जयपुर में श्रीरीसाल भावना से प्रतिलिपि की ।

३३ प्रति सं ५ । पत्र सं १ । से काल × । प्रपूर्णा । के सं ६३६ । अ मण्डार ।

३४ प्रति सं० ६ । पत्र सं १७४ म २१ । से काल × । प्रपूर्णा । के सं १२७ । अ मण्डार ।

३५ तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा - । पत्र सं १०२ । भा १२×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी नया ।

विषय—सिद्धान्त । १ भाग × । से काल × । प्रपूर्णा । के सं २४५ । अ मण्डार ।

३६ तत्त्वार्थवृत्ति—प० आनन्देश । पत्र सं १७ । भा ११२×७ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । स्वनाकाल × । से काल सं १६५८ चैत बुदो ११ । पूर्णा । के सं २५२ । अ मण्डार ।

विषय—वृत्ति का नाम आनन्देश वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर बह उल्लेख टीका है । पं बोधदेव पुष्पनगर का निवासी है । यह नगर बनारास जिल में है ।

३७ प्रति सं । पत्र सं १४७ । से काल × । के सं ४० । अ मण्डार ।

३८ तत्त्वार्थसार—अमृतबन्धुभाषा । पत्र सं ५ । भा १४×४ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १ भाग × । से काल । पूर्णा । के सं २३८ । अ मण्डार ।

विषय—इस ग्रन्थ में ६१ पत्रांक है या ६ अध्यासों में विभक्त है । अन्त में ७ तत्त्वा का उल्लेख किया गया है ।

२३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० २३६ । क भण्डार ।

२४० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

२४२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान जानचन्द की है ।

२४३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १३२ । व्य भण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' में जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है ।

रचना १२ अध्यायों में विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके नाम में प्रकट होता है ।

२४५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

२४६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८६४ आसोज सुदी २ । वे० सं० २४१ । क

भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७ तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २८६ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थों की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूचां दी हुई है ।

२४८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २८७ । ले० काल × । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

२४९ तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वामि । पत्र सं० २९ । आ० ७×३ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१६६ (क) अ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र है जिन पर श्वेत (रजत) अक्षर है । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र
समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रशस्ति—सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ ।

२५० प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २२०० अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर वेलें हैं । प्रति दर्शनीय एव प्रदर्शनी में रखने
योग्य है । नवान प्रति है । सं० १६६६ में जीहरीलालजी नदलालजी धी वालो ने व्रतोद्यापन में प्रति लिखा कर चढ़ाई ।

२५१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २२०२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एव प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति स० ४ । पत्र सं ११ । से काल \times । के सं १५३५ । अ मण्डार ।

२५३ प्रति स० ५ । पत्र सं १० । से काल सं १५८८ । के सं २६१ । अ मण्डार ।

२५४ प्रति स० ६ । पत्र सं ३८ । से काल सं १८८१ । के सं ३३ । अ मण्डार ।

५५ प्रति स० ७ । पत्र सं १ । से काल \times । अपूर्ण । के सं ३४४ । अ मण्डार ।

२५६ प्रति स० ८ । पत्र सं १३ । से काल सं १८३७ । के सं ३६२ । अ मण्डार ।

विलेप—हिन्दी से अर्थ दिया हुआ है ।

२५७ प्रति स० ९ । पत्र सं ११ । से काल \times । के सं १७१ । अ मण्डार ।

२५८ प्रति सं १० । पत्र सं २३ । से काल \times । के सं १३ । अ मण्डार ।

विलेप—हिन्दी टप्पा टीका सहित है । एवं अमीरुद के अलवर के प्रतिनिधि की ।

२५९. प्रति स० ११ । पत्र सं १४ । से काल \times । के सं १३ । अ मण्डार ।

२६० प्रति स० १२ । पत्र सं २८ । से काल \times । अपूर्ण । के सं ७७३ अ मण्डार ।

विलेप—पत्र १७ के २० तक नहीं है ।

२६१ प्रति स० १३ । पत्र सं ६ से ३३ । से काल \times । अपूर्ण । के सं १०८ । अ मण्डार ।

२६२. प्रति स० १४ । पत्र सं ३१ । से काल सं १८६२ । के सं ४७ । अ मण्डार ।

विलेप—संस्कृत टीका सहित ।

२६३ प्रति स० १५ । पत्र सं २ । से काल \times । के सं ४८ । अ मण्डार ।

२६४ प्रति स० १६ । पत्र सं २३ । से काल सं १८२ बीजपुरी ३ । के सं ५११ ।

विलेप—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

६५ प्रति स० १७ । पत्र सं २४ । से काल \times । के सं २८ । अ मण्डार ।

२६६ प्रति सं १८ । पत्र सं ११ से २९ । से काल \times । अपूर्ण । के सं १२३४ । अ मण्डार ।

२६७ प्रति स० १९ । पत्र सं १९ से काल सं १८१८ । के सं १२४४ । अ मण्डार ।

२६८. प्रति स० २० । पत्र सं २४ । से काल \times । के सं १२७१ । अ मण्डार ।

२६९. प्रति स० २१ । पत्र सं ८ । से काल \times । के सं १३३१ । अ मण्डार ।

२७० प्रति स २२ । पत्र सं ३ । से काल \times । के सं २१६१ । अ मण्डार ।

२७१ प्रति स० २३ । पत्र सं १२ । से काल \times । के सं २१५१ । अ मण्डार ।

५७२. प्रति स० २४ । पत्र सं ३८ । से काल सं १९६६ कार्तिक मुदी १ । के सं २६ ।

अ मण्डार ।

विलेप—संस्कृत लिप्यस्य सहित है । अमीरुद विदाबत्ता के प्रतिनिधि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र म० १० । ले० काल स० १६ ' ... ' । वे० सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति सं० २६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है । शाहजहानाबाद वाले श्री बृलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदाम शीलतराम ने जैसिंहपुरा मे इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

२७६. प्रति सं० २८ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६३६ भाद्रवा सुदी ४ । वे० सं० २५८ ।

क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २९ । पत्र म० १० । ले० काल × । वे० सं० २५९ । क भण्डार ।

२७८ प्रति सं० ३० । पत्र म० ४५ । ले० काल स० १६४५ वैशाखसुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८० प्रति सं० ३२ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी प० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२ प्रति सं० ३४ पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३९ । ग भण्डार ।

२८३ प्रति सं० ३५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६६१ माघ बुदी ४ । वे० सं० ४० ।

ग भण्डार ।

२८४ प्रति सं० ३६ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति सं० ३७ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

२८६ प्रति सं० ३८ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३५ । घ भण्डार ।

२८७ प्रति सं० ३९ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० सं० २४७ । ङ भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र स० ८ से २२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २४८ । ङ भण्डार ।

२९०. प्रति सं० ४२ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० सं० २४९ । ङ भण्डार ।

२९१ प्रति सं० ४३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० सं० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२६२ प्रति सं० ४४ । पत्र सं० १२ । से० काल सं० १८५१ । वै सं० २२१ । क मण्डार ।

२६३ प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ११ । से० काल X । वै सं० २२२ । क मण्डार ।

विशेष—सूचों के अंगर हिन्दी में वर्ष बिया हुआ है ।

२६४ प्रति सं० ४६ । पत्र सं० १० । से० काल X । वै सं० २२३ । क मण्डार ।

२६५ प्रति सं० ४७ । पत्र सं० ११ । से० काल X । वै सं० २२४ । क मण्डार ।

२६६ प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । से० काल सं० १८२१ कालिक सुदी ४ । वै सं० २२५ । क मण्डार ।

२६७ प्रति सं० ४९ । पत्र सं० १० । से० काल X । वै सं० २२६ । क मण्डार ।

२६८ प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । से० काल X । वै सं० २२७ । क मण्डार ।

२६९ प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २२८ । क मण्डार ।

२७० प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ६ से १६ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २२९ । क मण्डार ।

२७१ प्रति सं० ५३ । पत्र सं० ६ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २३० । क मण्डार ।

२७२ प्रति सं० ५४ । पत्र सं० १२ । से० काल X । वै सं० २३१ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी वर्ष संहित है ।

२७३ प्रति सं० ५५ । पत्र सं० ११ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २३२ । क मण्डार ।

२७४ प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २३३ । क मण्डार ।

२७५ प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । से० काल X । वै सं० २३४ । क मण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम मन्वन्त ही है । हिन्दी वर्ष संहित है ।

२७६ प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । से० काल X । वै सं० २३५ । क मण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी वर्ष भी बिया हुआ है ।

२७७ प्रति सं० ५९ । पत्र सं० ६ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २३६ । क मण्डार ।

२७८ प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । से० काल सं० १८८२ कालिक सुदी १३ । जीर्ण । वै सं० २३७ । क मण्डार ।

विशेष—मुरलीधर कन्नडास ओम्बेकर नामे ने प्रतिमिति की ।

२७९ प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । से० काल सं० १८५२ ज्येष्ठ सुदी १ । वै सं० २३८ । क मण्डार ।

२८० प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । से० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वै सं० २३९ । क मण्डार ।

२८१ प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १६ । से० काल सं० १८१६ । वै सं० २४० । क मण्डार ।

विशेष—बानूनास तैठी ने प्रतिमिति करवायी ।

२८२ प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १६ । से० काल X । वै सं० २४१ । क मण्डार ।

२८३ प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २५ । से० का X । अपूर्ण । वै सं० २४२ । क मण्डार ।

२८४ प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । से० काल X । वै सं० २४३ । क मण्डार ।

२८५ प्रति सं० ६७ । पत्र सं० १२ । से० काल X । अपूर्ण । वै सं० २४४ । क मण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० १३८ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० ५७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार हैं । इससे आगे भक्तामर स्तोत्र है ।

३१९. प्रति सं० ७१ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं ३८ । ज भण्डार ।

३२१. प्रति सं० ७३ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १६२२ फागुन सुदी १५ । वे० स० ८८ । ज भण्डार ।

३२२. प्रति सं० ७४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । झ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० ३०५ । झ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । न भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२५. प्रति सं० ७७ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० स० २७३ । न भण्डार ।

विशेष—मण्डलानार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६. प्रति सं० ७८ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० स० ४४८ । न भण्डार ।

३२७. प्रति सं० ७९ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ३४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

३२८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १६१५ ट भण्डार ।

३२९. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० स० १६१६ । ट भण्डार ।

३३०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल विद्यावत्या ने गोरूलाल पाठ्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक लिखमोचन्द छात्रवा सजाची की है ।

३३१. प्रति सं० ८३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल स० १६३१ । वे० स० १६४२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल में जीवरणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३३२. प्रति सं० ८४ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६६ ।

विषय—बभ्रुर्ष घष्याय म है। इसके प्रागे बभ्रुकुण्डपूजा पार्श्वनाथपूजा क्षेत्रपालपूजा क्षेत्रपालस्तोत्र तथा विद्यामयिपूजा है।

३४३ तत्त्वार्थ सूत्र टीका भुतसागर। पत्र सं ३४६। पृ १२७२ इत्थ। भाषासंस्कृत। विषय—विद्यामय। ११ वाक्य ७। म वाक्य नं १०३३ प्र भाषण सुवी ७। के सं० १६। पूर्ण। क मण्डार।

विषय—भी भुतसागर मूरि १६ भी वतामरी के संस्कृत के अध्ये विद्यामय है। इन्होंने ३० से भी घोषक य वा भी रचना की विषयमें टीकाए तथा मूर्ति २ कथाए भी हैं। भी भुतसागर के पुत्र का नाम विद्यानेदि या जो अकारक पञ्चनेदि क प्रतिपद्य एवं देवैश्वर्यकीति के विषय है।

३४४ प्रति सं० २। पत्र सं ३१२। म वाक्य नं १०४८ सामन सुवी १४। अपूर्ण। के सं ०४२। क मण्डार।

विषय—३१२ में घाने के पत्र नहीं है।

३४५ प्रति सं० ३। पत्र सं ३२३। म वाक्य-७। के सं २६६। क मण्डार।

३४६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२३। म वाक्य-४। के सं ३३०। क मण्डार।

३४७ तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गण्धि। पत्र सं० २४८। पृ १३४४ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धसेन। ११ वाक्य ४। म वाक्य-४। अपूर्ण। के सं २२३। क मण्डार।

विषय—भीन घष्याय तक ही है। घाने पत्र नहीं है। तत्त्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८ तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—। पत्र सं २३। पृ ११४२ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—विद्यामय। ११ वाक्य-४। म वाक्य-सं० १६३३ चाणुण सुवी २। पूर्ण। के सं २८०। क मण्डार।

विषय—भाषापुरा में भी अक्षरकीति के अने पञ्चार्य मु वैसा ने प्रतिनिधि करवायी।

प्रवर्ति—संस्कृत १६३३ वय चाणुण घाने वृत्त्य पत्रे पंचमी तिथी रविवारे की भाषापुरा नयरे। म भी ४ भी भी भी बंशकीति विषय राग्ये क वममकीति विद्यापित संघमादे पठनीया नू मु वैसा केन विभिन्न।

३४९ प्रति सं० ५। पत्र सं ३२। म वाक्य नं १२३६ चाणुण सुवी १२। तीन घष्याय तक पूर्ण। के सं २२८। क मण्डार।

विषय—भाषा वष्य घर्षा ने प्रतिनिधि की थी। टीका विस्तृत है।

३५० प्रति सं० ३। पत्र सं ३२ म ३६३। म वाक्य-४। अपूर्ण। के सं २२६। क मण्डार।

विषय—टीका विस्तृत है।

३५१ प्रति सं० ४। पत्र सं ३३। म वाक्य नं १०८९। के सं १४२। क मण्डार।

३५२ प्रति सं० ५। पत्र सं २ म २२। म वाक्य-४। अपूर्ण। के सं ३२६। क मण्डार।

३५३ प्रति सं० ६। पत्र सं १६। म वाक्य-४। अपूर्ण। के सं १०९३। क मण्डार।

३५४ तत्त्वार्थसूत्र भाषा-सं० महासुय कामतीबाब। पत्र सं ३३३। पृ १२३४ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—विद्यामय। ११ वाक्य नं १६३ चाणुण सुवी १। म वाक्य-४। पूर्ण। के सं २४४। क मण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में मुन्दर टीका है ।

३५५. प्रति सं० २ । पत्र म० १५१ । ले० काल स० १९४३ श्रावण सुदी १५ । वे० स० २४६ ।
क भण्डार ।

३५६. प्रति स० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १९४० मंगसिर बुदी १३ । वे० स० २४७ ।
क भण्डार ।

३५७. प्रति स० ४ । पत्र म० ९६ । ले० काल स० १९१५ श्रावण सुदी ६ । वे० न० ६६ । अपूर्ण ।
ख भण्डार ।

३५८ प्रति स० ५ । पत्र स० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ९० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९ प्रति सं० ६ । पत्र स० २८३ । ले० काल म० १९३५ माह सुदी ८ । वे० स० ३३ । छ भण्डार

३६० प्रति सं० ७ । पत्र स० ९३ । ले० काल स० १९९६ । वे० स० २७० । छ भण्डार ।

३६१. प्रति स० ८ । पत्र स० १०२ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । छ भण्डार ।

३६२. प्रति स० ९ । पत्र स० १२८ । ले० काल सं० १९४० चैत्र बुदी ८ । वे० स० २७२ । छ भण्डार ।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति स० १० । पत्र स० ९७ । ले० काल सं० १९३६ । वे० स० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मागीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १९५५ । वे० स० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५. प्रति सं० १२ । पत्र स० ७१ । ले० काल १९१५ आषाढ सुदी ६ वे० स० ९१ । भू भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गगवाल ने पुस्तक चढाई ।

३६६ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० ११८ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी
(गद्य) । २० काल स० १८५९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५१ । क भण्डार ।

३६७. प्रति स० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल स० १८४६ । वे सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पाडे जयवत । पत्र म० ६६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८४६ । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है —

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पाडे जयवत कृत संपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के
बहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

विष्णु—बनुष धम्माम म है । डमर पाप कमिबुधपूजा पाण्डनाथपूजा क्षेत्रपालपूजा दीवपालस्तोत्र तथा विन्नामणिपूजा है ।

२३ तत्प्राथम्य मूत्र टीका सुतमागर । पत्र म० ३२६ । पृ १२७३ दृष्ट । प्रायश्चित्तसूत्र । विष्णु-
निष्काल । २ बाल < । मे० वाप मं १७३३ प्र धारणु सुनी ७ । वै० मं० १६ । पूर्ण । क मन्थार ।

विष्णु—थी धुनमागर मूरि १६ कीं जागली के मस्तुन के पधु विडल है । इहोके १८ से भी पधु
दवा भी दबना भी शिममें टीका तथा धानी २ बधाण भी है । थी धुनमागर के मुड का नाम विठानंदि था जो
अगरक पदार्थि क प्रसिद्ध एवं देवेन्द्रपीति क शिष्य है ।

३२४ प्रति मं० ७ । पत्र मं ३१४ । म वाप मं १७४६ पावन मुठी १४ । पूर्ण । के
मं ३४४ । क मन्थार ।

विष्णु—३१२ के पापे के पत्र मं ३१२ ।
३१४ प्रति मं० ३ । पत्र मं ३२३ । मे० बाल-> । वै० मं २६६ । क मन्थार ।
३४६ प्रति मं० ४ । पत्र मं ३२३ । मे० बाल-< । वै० मं ३३ । क मन्थार ।
३६० तत्प्राथम्य मूत्र हृति—मिष्टमेन गण्डि । पत्र मं० २४८ । पृ १७४६ दृष्ट । प्राय-
शुन । विष्णु-निष्काल । २ बाल< । म वाप-> । पूर्ण । वै० मं २२३ । क मन्थार ।

विष्णु—तीन धम्माम सब ही है । पापे सब मठी है । तत्प्राय कूष की शिक्तु टीका है ।
३६८ तत्प्राथम्य मूत्र हृति—----- । पत्र मं २३ । पृ ११२२ दृष्ट । प्राय-
निष्काल । ४ बाल-< । मे० वाप-मं० १६३३ जादुग मुठी २ । पूर्ण । वै० मं ३० । क मन्थार ।

विष्णु—बादगुल में थी बनबहोति के पापे वत्प्राय मु केना में प्रतिनिधि करवायी ।
प्रति २—मं० १६३३ वाद क गुल पापे बुज्जु गते बंधकी दिवी खिबारे थी मास्तगुल मन्थरे । प थी
३ थी थी थी मं० विष्णु शिष्य व क मन्थरीति मिश्रितमें प्रभाप कठकीया गु मु केना केम निनिर्ण ।

३४६ प्रति मं० ७ । पत्र म ३२ । मे० वाप मं १६४२ जादुग मुठी १२ । तीन धम्माम सब
पूर्ण । वै० मं १२६ । क मन्थार ।
विष्णु—ब्रह्मा कण्य पत्नी के प्रतिनिधि की थी । टीका विष्णु है ।

३४० प्रति मं० ३ । पत्र मं ३१ मे १६३ । मे० वाप-> । पूर्ण । वै० मं २२६ । क मन्थार ।
विष्णु—(विष्णु शिष्य है ।
३४१ प्रति मं० ४ । पत्र मं ३३ । मे० वाप मं १०८६ । वै० मं १७२ । क मन्थार ।
३४३ प्रति मं० ३ । पत्र मं ३ मे २० । मे० वाप-> । पूर्ण । वै० मं ३२६ । क मन्थार ।
३४३ प्रति मं० ६ । पत्र मं १६ । मे० वाप-> । पूर्ण । वै० मं १०९३ । क मन्थार ।

३४४ तत्प्राथम्य मूत्र प्राय-० महागुल कागकीवाल । पत्र मं० ३३३ । पृ १०३०२ दृष्ट ।
प्राय- (पत्र । विष्णु निष्काल । २ बाल मं १६१ जादुग मुठी २० । मे० वाप-> । पूर्ण । वै० मं २४३ ।
क मन्थार ।

सिद्धान्त एव चर्चा]

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में सुन्दर टीका है ।

३५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४३ श्रावण सुदी १५ । वे० सं० २४६ ।

क भण्डार ।

३५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १६४० मगसिर बुदी १३ । वे० सं० २४७ ।

क भण्डार ।

३५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ६६ । अपूर्ण ।

ख भण्डार ।

३५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८३ । ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ८ । वे० सं० ३३ । ङ भण्डार ।

३६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २७० । ङ भण्डार ।

३६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । ङ भण्डार ।

३६२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १६४० चैत्र बुदी ८ । वे० सं० २७२ । ङ भण्डार ।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मागीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे० सं० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७१ । ले० काल १६१५ आषाढ सुदी ६ वे० सं० ६१ । झ भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गगवाल ने पुस्तक चढवाई ।

३६६. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ११८ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । २० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । क भण्डार ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पाडे जयवत । पत्र सं० ६६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है .—

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पाडे जयवत कृत संपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के कहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कृष्णकीर्ति । पत्र सं १४३ । मा १२^३×३^३ इत्थ । माया हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । मपूर्णा । के सं २६६ । क मन्थार ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की ध्रुवसामग्री टीका के माकार पर हिन्दी टीका मिली नहीं है । १४३ में प्रागे पत्र नहीं है ।

३७० प्रति स० ० । पत्र सं १२ । ले काल × । के सं १३८ । क मन्थार ।

३७१ प्रति स० ३ । पत्र सं १६१ । ले काल सं १७८३ । पत्र सुधी ६ । के सं २७२ । क मन्थार ।

विशेष—तालाघोट निवासी ईश्वरनाथ प्रबभरा ने प्रतिसिपि की थी ।

३७२ प्रति स० ४ । पत्र सं १६२ । ले काल × । के सं ४४६ । क मन्थार ।

३७३ प्रति स० ५ । पत्र सं १३८ । ले काल सं १६११ । के सं १६३८ । क मन्थार ।

विशेष—बैद्य धर्मीचन्द्र कासा ने ईश्वरनाथ के सिद्धमात्राण जोड़ी से प्रतिसिपि करवायी ।

३७४ तत्त्वार्थसूत्र टीका—प० राजमङ्गल । पत्र सं ३ से ४८ । मा १२×३ इत्थ । माया—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । मपूर्णा । के सं २६१ । क मन्थार ।

३७५ तत्त्वार्थसूत्र भाष्य—मोटीसाहज जीसवाल । पत्र सं २१ । मा १३×३ इत्थ । माया हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र काल सं १६३२ घासोज सुधी ८ । ले काल सं १६३२ घासोज सुधी ३ । पूर्णा । के सं २४४ । क मन्थार ।

विशेष—मञ्जुराप्रसाद ने प्रतिसिपि की । मोटीसाहज के पिता का नाम मोटीसाहज था महु धर्मीचन्द्र जिला के महु ग्राम के रहने वाले थे । टीका हिन्दी पद्य में है जो व्यत्यन्त सरस है ।

३७६ प्रति स० २ । पत्र सं २ । ले काल × । के सं २६७ । क मन्थार ।

३७७ प्रति स० ३ । पत्र सं १७ । ले काल × । के सं २६८ । क मन्थार ।

३७८ तत्त्वार्थसूत्र भाष्य—शिलारचन्ध । पत्र सं २७ । मा १३×७ इत्थ । माया—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र काल सं १८६८ । ले काल सं १६३३ । पूर्णा । के सं २४८ । क मन्थार ।

३७९ तत्त्वार्थसूत्र भाष्य—..... । पत्र सं १४ । मा १२×७ इत्थ । माया—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । पूर्णा । के सं ४३६ ।

३८० प्रति स २ । पत्र सं २ से ४६ । ले काल सं १८३ बैसाल सुधी १३ । मपूर्णा । के सं ६७ । क मन्थार ।

३८१ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । ले काल × । के सं ६८ । क मन्थार ।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है ।

३८२ प्रति स० ४ । पत्र सं ३२ । ले काल सं १६४१ पद्मनाभ सुधी १४ । के सं ६६ । क मन्थार ।

३८३ प्रति स० ५ । पत्र सं ६६ । ले काल × । के सं ४१ । क मन्थार ।

३८४ प्रति स ६ । पत्र सं ४६८ से १३ । ले काल सं × । मपूर्णा । के सं २६८ । क मन्थार ।

३८५ प्रति सं० ७ । पत्र स० ८७ । २० काल- \times । ले० काल स० १६१७ । वे० स० ५७१ ।

च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५३ । ले० काल \times । वे० सं० ५७४ । च भण्डार ।

विशेष—प० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है ।

३८७. प्रति स० ६ । पत्र स० ३२ । ले० काल \times । वे० स० ५७५ । च भण्डार ।

३८८. प्रति स० १० । पत्र स० २३ । ले० काल \times । वे० स० १८५ । छ भण्डार ।

३८९ तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ३३ । आ० १० \times ६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० स० ८८६ ।

विशेष—१५वा तथा ३३ से आगे पत्र नहीं है ।

३९० तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ६० से १०८ । आ० ११ \times ४३ इञ्च । भाषा— \times ।

हिन्दी । २० काल \times । ले० काल सं० १७१६ । अपूर्ण । वे० स० २०८१ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७१६ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरंगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इद तत्त्वार्थ शास्त्र

सुज्ञानात्मक ग्रन्थ जन बोधाय विदुषा जयवता कृत साह जगन पठनार्थ बालाबोध वचनिका कृता । किमर्थ सूत्राणा ।

मूलसूत्र अतीव गभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अबबुध्यते । इद वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमा

पठति ज्ञानो=द्योत भविष्यति । लिखापित साह विहारीदास खाजानची सावडावासी आमेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई

साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद ।

३९१ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८६० । वे० स० ७० । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप में अर्थ दिया है ।

३९२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२ । २० काल \times । ले० काल स० १६०२ आमोज बुदी १० । वे० स० १६८ । म भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है । हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पाब्बा के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी ।

३९३. त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६६ । आ० ६३ \times ४४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल स० १८५० सावन सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ७४ । ख भण्डार ।

विशेष—लालचन्द्र टोभ्या ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३९४. प्रति स० २ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १६१६ । अपूर्ण । वे० स० १४६ । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की ।

३९५ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८७६ कार्तिक सुदी ४ । वे० स० २४ । व्य भण्डार ।

विशेष—भ० क्षेमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६ त्रिमगीसार टीका—विश्वेकनम्बि । पत्र सं ४८ । प्रा० १२×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । १ काल × । से काल सं १८२४ । पूर्ण । वै० सं० २८ । क मण्डार ।

विशेष—१ महाभारत ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

३१७ प्रति स० २ । पत्र सं १११ । से काल × । वै सं २८१ । क मण्डार ।

३१८ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ से ६५ । से काल × । अपूर्ण । वै सं २६३ । क मण्डार ।

३१९ दशवैकालिकसूत्र— । पत्र सं १८ । प्रा० १ ३/४×४ ३/४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रागम
१ काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं २२३१ । क मण्डार ।

४०० दशवैकालिकसूत्र टीका— । पत्र सं १ सं ४२ । प्रा० १ ३/४×४ ३/४ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—प्रागम । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं १ २ । क मण्डार ।

४०१ ब्रह्मसमग्र—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं ६ । प्रा० ११×४ ३/४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । १ काल × ।
से काल सं १६३३ माघ सुदी १ । पूर्ण । वै सं १८५ । क मण्डार ।

प्रसक्ति—संवत् १६३५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १ तिथी ।

४०२ प्रति स० ० । पत्र सं १२ । से काल × । वै सं २२२ । क मण्डार ।

४०३ प्रति स० ३ । पत्र सं ४ । से काल सं १८४७ माघ सुदी १३ । वै सं १३२ । क मण्डार ।

४०४ प्रति स० ४ । पत्र सं ६ से ११ । से काल × । अपूर्ण । वै सं १ २५ । क मण्डार ।

विशेष—दश्या टीका सहित ।

४०५ प्रति स० ५ । पत्र सं ६ । से काल × । वै सं २२२ । क मण्डार ।

४०६ प्रति स० ६ । पत्र सं ११ । से काल सं १८२ । वै सं ३१२ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी भर्ष सहित ।

४०७ प्रति स० ७ । पत्र सं १ । से काल सं १८१६ माघ सुदी ३ । वै सं ३१३ । क मण्डार ।

४०८ प्रति स० ८ । पत्र सं २ । से काल सं १८१५ माघ सुदी १ । वै सं ३१४ । क मण्डार ।

४०९ प्रति स० ९ । पत्र सं २ । से काल सं १८४४ माघ सुदी १ । वै सं ३१५ । क मण्डार ।

विषय—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१० प्रति स० १० । पत्र सं १३ । से काल सं १८१० ज्येष्ठ सुदी १२ । वै सं ३१६ । क मण्डार ।

४११ प्रति स० ११ । पत्र सं ६ । से काल × । वै सं ३१६ । क मण्डार ।

४१२ प्रति स० १२ । पत्र सं ७ । से काल × । वै सं ३११ । क मण्डार ।

विषय—पञ्चांगों के नीचे संस्कृत में ज्ञाना दी हुई है ।

४१३ प्रति स० १३ । पत्र सं ११ । से काल सं १७८६ ज्येष्ठ सुदी ८ । वै सं ८६ । क मण्डार ।

विषय—संस्कृत में पर्यायवाची पाठ दिये हुये हैं । टॉक में पार्ष्णनाथ श्रीरामचंद्र में वं कृष्णजी के विषय
शंकराचार्य के पठनार्थ प्रतिनिधि हुई ।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४० । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ में ८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२ । ख भण्डार ।

४१७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४३ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

४१८. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३१२ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३१३ । छ भण्डार ।

४२०. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ३१४ । छ भण्डार ।

४२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १६९ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ । द्वि० आषाढ सुदी २ । वे० सं० १२२ ।

छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है । प० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८२ । भाद्रपद बुदी ९ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है । ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टक्का टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । व्य भण्डार ।

४२८. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । व्य भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २७५ । व्य भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३७८ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ । वीष सुदी ३ । वे० सं० ४९४ । व्य भण्डार ।

विषय—प्रति टक्का टीका सहित है। सीमोर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के संभारवाणी पट्टे व भट्टारक अमृतकीर्ति तथा उनके पट्टे में न देवेइकीर्ति के ग्रामनाथ के शिष्य मनोहर ने प्रतिमिति की थी।

४३३ प्रति स० ३३। पत्र सं १५। सं० काल ×। के सं ४६५। अ नम्बर।

विषय—३ पत्र तक ग्रन्थ संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद अग्रमन्त्रितवस्तुम मस्तिषेणाचार्य कृप विद्या कृपा है।

४३४ प्रति स० ३४। पत्र सं ३। सं० काल सं १६२२। के सं १६४६। ट नम्बर।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४३५ प्रति स० ३५। पत्र सं० २ सं ९। सं० काल सं १७८४। अपूर्णा। के सं १८४३। ट नम्बर।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६ ब्रह्मसंग्रहवृत्ति—प्रभावम् । पत्र सं ११। या ११२×२३ इत्य। मापा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। सं० काल ×। सं० काल सं १८२२ मंसिद्धि बुद्धे ६। पूर्णा। के सं १९३। अ नम्बर।

विशेष—महात्मा ने अयपुर में प्रतिमिति की थी।

४३७ प्रति स० २। पत्र सं २३। सं० काल सं १६५६ पौष सुदी ३। के सं ३१७। क नम्बर।

४३८ प्रति स० ३। पत्र सं २ सं ३२। सं० काल सं १७९। अपूर्णा। के सं ३१७। क नम्बर।

विशेष—माचार्य कनकजी ने फागपुर में प्रतिमिति की थी।

४३९ प्रति स ४। पत्र सं २५। सं० काल सं १७१४ द्वि भाग बुद्धि ११। के सं १९८।

क नम्बर।

विशेष—यह प्रति जोधराज जी की टीका के पठनाथ कृपती मांभना जोधनेर नासों ने सांभार में लिखी।

४४० ब्रह्मसंग्रहवृत्ति—अष्टादशैव। पत्र सं १८। या ११२×२५ इत्य। मापा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। सं० काल ×। सं० काल सं १९३३ मासोज बुद्धि १। पूर्णा। के सं ६।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिमिति राजाधिराज अष्टादश विजयराज मानसिंह के शासनकाल में नासपुरा में श्री अक्षयचन्द्र चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—सूक्तविषये नवमदिने पुष्यमासे सोमवासरे सप्त १९१५ वर्षे मासोज बुद्धि १ बुध बिने राजाधिराज भगवंतवास विजयराज मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने मानसपुर वास्तव्ये श्री अक्षयचन्द्र चैत्यालये श्री सुक्तवे मंदास्नाये ब्रह्मसंग्रहवृत्तये सरस्वतीयक्ये श्रीद्रु वसु वाषायायिक्ये न पौषपक्षविदेवस्तत्पट्टे न श्री सुमचन्द्र वेवास्तारट्टे न श्री विमचन्द्र वेवास्तारट्टे न श्री प्रजाचन्द्र वेवास्तारिष्ये न श्री धर्मचन्द्र वेवास्तारिष्ये न श्री ललितकीर्तिवेवास्तारिष्ये न श्री अक्षकीर्ति वेवास्तारिष्ये उदितवासायक्ये नवममासगोत्रे सा नागिक द्वि पवारणा। सा नागिक भार्या नामक्ये तस्युत्र सा नामा तदभार्या ५। प्र अमितिरि। इ हरन्दे तस्युत्र क्मा तद्भार्या करण्ये। द्वि सा पदा न तस्य भार्या विविमदे तस्युत्र सा नारद तद्भार्या मारदे तस्युत्रार्थे प्र कीना द्वि नरारण्य वृ उवा तस्युत्र विरम ५ वसरण। प्र विना भार्या विविम व एतेषा सा क्मा इयं सास्य विष्वाप्ये माचार्य श्री सिधनेरट्टे चटापिठे।

४४१ प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १२४ । अ भण्डार ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ३२३ । क

भण्डार ।

४४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ९९ । ले० काल स० १८०० । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र स० १४९ । ले० काल सं० १७८४ अपाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ

भण्डार ।

४४५ द्रव्यसग्रहटीका । पत्र स० ५८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल × ।

ले० काल स० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० स० ५१० । व्य भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ मे लिखा है कि आ० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी मे भोजदेव के शासनकाल मे श्रीपाल मडलेश्वर के आश्रम नाम नगर मे मौमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-सग्रह की रचना की थी ।

४४६ प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य सग्रह टीका है ।

४४७ प्रति स० ३ । पत्र स० २९ । ले० काल स० १७७८ पौष सुदी ११ । वे० स० २९५ । व्य भण्डार ।

४४८ प्रति स० ४ । पत्र स० ९६ । ले० काल स० १६७० भाद्रवा सुदी ५ । वे० स० ८५ । ख भण्डार ।

विशेष—नागपुर निवासी खडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पत्य व्रतोद्या-

पन मे प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४९. प्रति स० ६९ । ले० का० स० १९०० चैत्र बुदी १३ । वे० स० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसग्रह भाषा । पत्र स० ११ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १७७१ सावण बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे निम्न प्रकार अर्थ दिवा हुआ है ।

गाथा—द्वव-सग्रहमिण मुणिराहा दोस-सचयचुवा सुदपुष्पा ।

सोधयतु तणुसुत्तधरेण रोमिचंद मुणिराण भणियं ज ॥

अर्थ— भो मुनि नाथ । भो पंडित कैसे हौ तुम्ह दोष सचय नुति दोषनि के जु सचय कहिये समूह तिनते

जु रहित हौ । मया नेमिचंद्र मुनिना भणित । यत् द्रव्य सग्रह इम प्रत्यक्षी भूता मे जु हौ नेमिचंद्र मुनि तिन जु कह्यो

यह द्रव्य सग्रह शास्त्र । ताहि सोधयतु । सौ धौ ह्व कि कि सौ हू । तनु सुत्त धरेण तनु कहिये योरो सौ सूत्र कहिये ।

सिद्धात ताको जु बारक ह्यौ । अल्प शास्त्र करि सयुक्त हौ जु नेमिचंद्र मुनि तेन कह्यो जु द्रव्य सग्रह शास्त्र ताको भो

पंडित सोधो ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित द्रव्य सग्रह बालबोध सपूर्णा ।

संवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावण मास कृष्णपक्षे तृयोदश्या १३ बुधवासरे लिप्यकृत विद्याधरेण

स्वात्मार्थे ।

४५१ प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० २९३ । अ भण्डार ।

४४० प्रति स० ३ । पत्र सं० २ स ११ । से० काल सं १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वै० सं ७०४ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४४२ प्रति स० ४ । पत्र सं ४८ । से० काल सं १८१४ मंगल बुदी ६ । वै० सं ३१३ । अ मण्डार
विशेष—वर्षाधी एमचन्द्र की टीका के आधार पर माया रचना की गई है ।

४४४ प्रति सं० ५ । पत्र सं २३ । से० काल सं १३५७ मासोत्र सुदी ८ । वै० सं० ८८ । अ मण्डार

४४५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ । से० काल X । वै० सं० ४४ । ग मण्डार ।

४४६ प्रति स० ७ । पत्र सं २७ । से० काल सं १७४३ भाद्रपद बुदी १३ । वै० सं १११ । अ मण्डार ।

प्रारम्भ—ब्रह्मलामुपकारात् रामचन्द्र एव सभायया । इत्यसंघहृत्वात्प्रत्य स्यात्स्वामेसो विलम्बते ॥१॥

४४७ द्रुम्यसंघ माया—वर्षाधीवर्षाधी । पत्र सं ११ । मा १३X४३ इत्थ । माया—गुजराली ।
विषय—छह इत्थों का वर्णन । र काल X । से० काल सं १८ माघ बुदि १३ । वै० सं २१/२९२
अ मण्डार ।

४४८ द्रुम्यसंघ माया—वर्षाधीवर्षाधी चौधरी । पत्र सं ११ । मा ११३X७३ इत्थ । माया—हिन्दी ।
विषय—छह इत्थों का वर्णन । र काल X । से० काल X । पूर्ण । वै० सं ४२ । अ मण्डार ।

४४९ द्रुम्यसंघ माया—अथर्वम् छात्रका । पत्र सं ३१ । मा ११३X२३ इत्थ । माया—हिन्दी
वर्ष । विषय—छह इत्थों का वर्णन । र० काल सं १८८३ सावन बुदि १४ । से० काल X । पूर्ण । वै० सं १ १२ ।
अ मण्डार ।

४५० प्रति स० २ । पत्र सं० ३१ । से० काल सं १८६३ सावन बुदी १४ । वै० सं ३२१ । अ मण्डार ।

४५१ प्रति स० ३ । पत्र सं २१ । से० काल X । वै० सं ३१८ । अ मण्डार ।

४५२ प्रति स० ४ । पत्र सं ४३ । से० काल सं १८६३ । वै० सं ११३८ । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के भागे इत्यसंघ पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४५३ द्रुम्यसंघ माया—अथर्वम् छात्रका । पत्र सं २ । मा १२X३ इत्थ । माया हिन्दी (वर्ष)
विषय—छह इत्थों का वर्णन । र काल X । से० काल X । पूर्ण । वै० सं ३२२ । अ मण्डार ।

४५४ प्रति स० २ । पत्र सं ७ । से० काल सं ११३६ । वै० सं ३१८ । अ मण्डार ।

४५५ प्रति स० ३ । पत्र सं ३ । से० काल सं ११३६ । वै० सं ३११ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी वच में भी अर्थ दिया हुआ है ।

४५६ प्रति स० ४ । पत्र सं २ । से० काल सं १८७१ वर्तिक बुदी १४ । वै० सं २११ । अ मण्डार ।

विशेष—व लक्ष्मण नामनीकाल में जयपुर में प्रतिनिधि की है ।

४६६ प्रति स० ५ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । झ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति स० ६ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २४० । झ भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—वावा दुलीचन्द । पत्र स० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
द्रव्यो का वर्णन । २० काल स० १६६६ आसोज बुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छावडा की हिन्दी टीका के अनुसार वावा दुलीचन्द ने इमकी दिल्ली में भाषा लिखी थी ।

४६९ द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र स० ६ में १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छह
द्रव्यो का लक्षण वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६०५ सावन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१३७ । ट भण्डार ।

४७०. वचन । पत्र स० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति स० २ । पत्र स० १ में १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र । पत्र स० ८ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २०
काल × । ले० काल स० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—स० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि प० नयसमुद्रगणि नामा देश ?
तम्मु शिष्ये वी गुणलाभ गणित्ति लिलेखि ।

४७४. नवतत्त्वगाथा । पत्र स० ३ । आ० ११ इञ्च × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—९ तत्त्वो
का वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १८१३ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—प० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १०५० । झ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७ नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र स० १४ । आ० ६ इञ्च × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
९ तत्त्वो का वर्णन । २० काल स० १७४७ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । राघवचन्द शक्तावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४७८ नवतस्ववर्षान्—। पत्र सं १। पा० ८३×४३ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—जीव
 प्रजीव भाषि ६ वर्षों का वर्षान्। २ काल १। से काल ४। पूर्ण। वे सं ६१। अ मण्डार।

विशेष—जीव प्रजीव पुष्य पाप तथा धामन तस्व का ही वर्णन है।

४७९ नवतस्व वचनिका—पद्माक्षर शौमरी। पत्र सं ११। पा १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी।
 विषय—६ वर्षों का वर्षान्। २ काल सं १६१४ भाषाएँ सुदी ११। से काल ४। पूर्ण। वे सं ३६४। अ
 मण्डार।

४८० नवतस्वविचार—। पत्र सं १ स २४। पा ६×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—६
 वर्षों का वर्षान्। २ काल ४। से काल ४। अपूर्ण। वे सं २३६। अ मण्डार।

४८१ निजस्मृति—अयतिशक। पत्र सं ५ स १३। पा १०×४३ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—
 सिद्धान्त। २ काल ४। से काल ४। अपूर्ण। वे सं २३१। अ मण्डार।

विशेष—अस्तिम पुष्पिका—

इत्यादिमिकाचार्यभीजयविलकरचित निजस्मृत्ये संघ—स्वामित्वाय्यं प्रकरणमतप्यतुर्षः। संपूर्णोऽयं ग्रन्थः।
 पन्थापन्थ ३६ प्रमासं। केतारंठरं श्री तपोमन्त्रीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सीताराम्य-
 विजयगणि तन्त्रिय मु विचरिजयेत। ५ कलात्मक रूपमन्थ श्री पुस्तक है।

४८२ नियमसार—आ० कुम्भकुम्भ। पत्र सं १। पा १३×४३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—
 मित्रात। २ काल ४। से काल ४। पूर्ण। वे सं ३३। अ मण्डार।

विशेष—अठि संस्कृत टीका लहित है।

४८३ नियमसार टीका—पद्मप्रभमन्थपारिदेव। पत्र सं० २२२। पा १२३×७ इञ्च। भाषा—
 मन्थन। विषय—सिद्धान्त। २ काल ४। से काल सं १०३८ भाषा सुदी १। पूर्ण। वे सं ३८। अ मण्डार।

४८४ प्रति स० ७। पत्र सं ८७। पा० काल सं १८६६। वे सं ३७१। अ मण्डार।

४८५ निरयावलीसूत्र—। पत्र सं १३ से १६। पा १४×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—
 धामन। २ काल ४। से० काल ४। अपूर्ण। वे सं १८६। अ मण्डार।

४८६ पद्मपरावर्तन—। पत्र सं ३। पा ११×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त।
 २ काल ४। से० काल ४। पूर्ण। वे सं १८३८। अ मण्डार।

विशेष—जीवों के इष्य क्षेत्र भाषि पद्मपरिवर्तना का वर्णन है।

४८७ प्रति स० २। पत्र सं ७। से काल ४। वे सं २१३। अ मण्डार।

४८८ पद्मसमह—आ नसिचन्द्र। पत्र सं २६ से २८। पा १२×४३ इञ्च। भाषा—प्राकृत
 मन्थन। विषय—सिद्धान्त। २ काल ४। से काल ४। अपूर्ण। वे सं ८। अ मण्डार।

४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३८ । अ
भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में रत्नरचिगरि ने प्रतिलिपि की थी । कही कही हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल X । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

४६१. पञ्चसमग्रवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२X६ इत्र । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४६२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २५० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०६ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४६३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५२ से ६१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति—रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट में सावु तागा के सह-
योग में की थी ।

४६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ में ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फाल्गुन सुदी २ । अपूर्ण । वे०
सं० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में पार्श्वनाथ मन्दिर में श्रीरंगशाह (श्रीरंगजेव) के शासनकाल में हाडा धर्मोत्पल राव
श्री भावसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १८६८ माघ बुदी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार

४६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२४ । ले० काल सं० १६५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । क भण्डार

४६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । ड भण्डार ।

विशेष—बीज के कुछ पत्र भी नहीं हैं ।

४६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । च भण्डार ।

४६९ पञ्चसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र सं० ११४ । आ० ११X५ इत्र । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १०७३ (शक) । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य में लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाथुराणामनषद्युतीना सधोऽभवद वृत्त विमूषितानाम् ।

हारो मीरानामिचतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्र ॥ १ ॥

माधवसेनगणीगणनीयः सुखतमोज्ज्वलि तत्र जमीय ।
 भूयश्चि सत्पवतीव चर्माकः भीमति सिधुपतावर्त्मकः ॥ २ ॥
 दिव्यस्तस्य महारममोप्रमितगतिमोक्षाधिपामधुरी ।
 रेतश्चाम्भमभेयवर्त्मसमितिप्रख्यापनापाहृत ॥
 भीरस्यैव विनेस्वरस्य गणभुवन्म्योपन्नरोचतो ।
 बुर्वास्मरदतिदारसुहृदिः श्रीवीतमोज्ज्वल ॥ ३ ॥
 यत्र सिद्धान्त विरोधिबद्ध ब्राह्म निराहृतस्तरैतवर्धे ।
 ब्रह्म ति लोका स्तु पकारिपमाथं निराहृतम फलं पवित्रं ॥ ४ ॥
 प्रमदवर्द केवममर्षनीयं यत्तस्विरं तिष्ठतिमुत्कर्षती ।
 तावद्वरायामिदमप्रघास्रं स्पेयाम्भुमं कर्मनिरासक्यरि ॥
 जिततत्त्वधिकेभ्योसो सहस्रे चक्रविशिष्टे ।
 समुत्तिकापुरे जातमिदं वास्तवं मनोरमं ॥ ५ ॥
 इत्यमितगतिवृत्ता र्हेस्मारतपलाब्धे ।

५०० प्रति स० २ । पत्र स २१५ । स काल स १७२६ मास बुधौ १ । वै स १८७ । अ मण्डार
 ५०१ प्रति स० ३ । पत्र स १८ । स काल स १७२४ । वै स २१९ । अ मण्डार ।
 विषय—भीरु प्रति है ।

५०२ पञ्चसप्तद्व टीका— । पत्र स ४२ । प्रा १२×२३ इञ्च । मापा—मंसुस्त । विषय—मिथ्यात ।
 २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै स १९९ । अ मण्डार ।

५०३ पञ्चास्तिकाय—कुन्डकुम्भाचार्ये । पत्र स ५३ । प्रा ९×५ इञ्च । मापा प्राहृत । विषय—
 मिथ्यात । २ काल × । से काल स १७ ३ । पूर्ण । वै स १ ३ । अ मण्डार ।

५०४ प्रति स० २ । पत्र स ४३ । से काल स १९४ । वै स ४ ४ । अ मण्डार ।

५०५ प्रति स० ३ । पत्र स १८ । से काल < । वै स ४ २ । अ मण्डार ।

५०६ प्रति स० ४ । पत्र स १३ । से काल स १८६९ । वै स ४ ३ । अ मण्डार ।

५०७ प्रति स० ५ । पत्र स ३२ । स काल > । वै स ३२ । अ मण्डार

विषय—त्रितीय स्वल्प तक है । कायायां पर टीका भी ही है ।

५०८ प्रति स० ६ । पत्र स १८ । से काल > । वै स १८७ । अ मण्डार ।

५०९ प्रति स० ७ । पत्र स ११ । स काल स १७२८ मासाव वरी ३ । वै स १९९ । अ मण्डार ।

विषय—संवाचनी न प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० स १९६ । ङ भण्डार ।

५११. पचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र म० १२४ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा सस्कृत
विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल म० १९३८ श्रावण बुदी १४ । पूर्णा । वे० म० ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र म० १०५ । ले० काल स० १४८७ वैशाख मुदी १० । वे० स० ४०२ ।
ङ भण्डार ।

५१३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७९ । ले० काल X । वे० स० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९० । ले० काल स० १९५६ । वे० स० २०३ । च भण्डार ।

५१५ प्रति सं० ५ । पत्र म० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्तिक बुदी १४ । वे० स० । व्य भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्त्रये सा फहरौ भार्या धमला तयो पुत्रवानु तस्य भार्या धनमिनि
ताम्या पुत्र मा होलु भार्या सुनखत तस्य दामाद मा हमराज तस्य भ्राता देवपति एवै पुस्तक पचास्तिकायात्रिर्ध लिखाया
कुलमूपरणस्य कर्मधार्यार्थ दत्त ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र सं० ६३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल म० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल X । पूर्णा । वे० म० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद मे वादगाह जहागीर के समय मे प्रतिलिपि हुई ।

५१७ पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० म० ४०६ । क भण्डार ।

५१८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल स० १९४७ । वे० स० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४९ । ले० काल X । वे० स० ४०३ । ङ भण्डार ।

५२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५० । ले० काल स० १९५४ । वे० स० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४४ । ले० काल स० १९३६ श्राषाढ मुदी ४ । वे० स० ६२१ । च भण्डार ।

५२२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३६ । २० काल X । वे० स० ६२२ च भण्डार ।

५२३ पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सं० ६११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८९२ । ले० काल X । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

५२४. पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र म० ६ । आ० १० इञ्च×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल स० १८८१ । ले० काल X । पूर्णा । वे० स० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५ बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र सं० ६ । आ० १२ इञ्च×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८८१ । ले० काल X । वे० सं० १९०५ । पूर्णा । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमु पाय, मुनिमुक्त हू सीस नवाय ।

सतगुरु सारद हिरदै धरू, बंध उदय सत्ता उचरू ॥ १ ॥

अग्निम—इंय १६ मया वनानी ७७ विभंतीयात् ते अग्नि ।

म० अगु० पुषा १५ मया ७७ पु० ६ म० वनानी ॥ १३ ॥

आग्निव इव मयसु सुव र्त्वि मवर पववर भाति मदी ।

पुम उताय इमी मे भाति सावव पुम मंत्वाय वभाति ॥ १४ ॥

वाय वाय मे वदित्य इमी मंत्वाय मे लिप्त म वता ।

मवर पवता भाति मया सावित्रोव पुम र्त्विता विदा ॥ १५ ॥

सावव मे विदुः इमी गाव आवा इती मदी ।

दीपाव दिवसु वदि र्त्विताव मवर वाता र्त्वि वनानी ॥ १६ ॥

मंवर पठराभी का वता मवर मंत्वाती इतर मया ।

वदन मुत्ता मव वाय ली० इय र्त्वि पुषि वर ताव ॥ १७ ॥

॥ इति श्री उरे इंय मया मन्वजा ॥

इमम आग श्रीबीम ठागा की यावाद् हे—

प्रारम्भ—इंय अय इव इव वर इती मम वव वाय ।

पुन्याग्नि र्त्वि उव्य की वचना इव वगाव ॥

अग्निम—इग्निः इत दुतायवात् वी इवया वनानी मया ।

पुम वव मा होय मा पुषिदम मेव पुषा

ग्नि मंत्वात्त इव्य की ताया मवर मया ।

उत्तायिरे इत इव मे गाव इत धीताय ॥

॥ इति तन्मूर्त्त ॥

५६ भाववतीसूत्र—पत्र मं २ । मा १६ ५ इत्य । मया—मन्वजा । विदम—वावम । र्त्वि ५ ।
५ वाय । पूर्ण । के मं २२ ७ । अ वगाव ।

५७ भावत्रिमयी—नेमिषमन्वजाय । पत्र मं २१ । मा १५ ५ इत्य । मया—मन्वजा । विदम—
विदम । र्त्वि ५ । मा ५ । पूर्ण । के मं २२६ । क वगाव ।

विदम—मवम वव दुवात् विदा मया हे ।

५८ प्रति म० २ । पत्र मं २८ । ते वाय मं १०१ माव मुदी ३ । वेन मं २६ । क वगाव ।

विदम—वें मववव मे उव्य की प्रविदिपि उवपु म की पी ।

५९ भाववतीसूत्र भाष्य—। पत्र मं १० । मा १ ५ इत्य । मया—मन्वजा । विदम—विदम ।
५ वाय । के वाय ५ । पूर्ण । के मं २६७ । क वगाव ।

६० मन्वजासूत्र—। पत्र मं ८ । मा १५ ६ इत्य । मया—मन्वजा । विदम—विदम ।
५ वाय । के वाय ५ । पूर्ण । के मं ६ ।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है ।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र सं० ३-५५ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४२ । ट भण्डार ।

५३०. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ मे १८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३३. रायपसेणी सूत्र—। पत्र सं० १५३ । आ० १०×४ $\frac{१}{४}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १० । वे० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है । सेममागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की । गाथाओं के ऊपर छाया दी हुई है ।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ में आगे पत्र नहीं है । संस्कृत टीका सहित है ।

५३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२२ । च भण्डार ।

५३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १६०० । ट भण्डार ।

५३७ लब्धिसार टीका—। पत्र सं० १५७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वे० सं० ६३८ । क भण्डार ।

५३८ लब्धिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० १८० । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ग भण्डार ।

५४०. लब्धिसार क्षणसासार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० १०० । आ० १५×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । ग भण्डार ।

५४१ लब्धिसार क्षणसासार संज्ञा—प० टोडरमल । पत्र सं० ४६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल सं० १८८६ चैत बुदी ७ । वे० सं० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

५४२ विपाकसूत्र—। प० सं० ३ से ३५ । आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३ विशेषमन्त्राभिर्भगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४३ । अ भण्डार ।

५७४ प्रति म० २। पत्र मं ६। म काल X। के सं ३४६। अ मण्डार

५७५ प्रति म० ३। पत्र म ४७। मे काल सं १० २ प्रमोज बुदी १३। मपूर्व। के मं ८१८।

अ मण्डार।

विशेष—३ मे ३४ तक पत्र नहीं है। जयपुर में प्रतिनिधि हुई।

५७५ प्रति म० ४। पत्र सं २। म काल X। मपूर्व। के मं ८३२। अ मण्डार।

विशेष—केवल धामध विमर्शी ही है।

५७७ प्रति सं ५। पत्र म ७३। म काल X। मपूर्व। के सं ७६। अ मण्डार।

विशेष—दो तीन प्रतिमों का सम्मिश्रण है।

५७८ पटलेरेशा वरुण - - - - - पत्र मं १। मा १ X४३ इज। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—मिठात।

२ काल X। मे काल <। मपूर्व। के सं १८६। अ मण्डार।

विशेष—पट लम्पारों पर बोधे हैं।

५७९ पञ्चाधिक रामक टीका—रामहंसोपाध्याय। पत्र सं ३१। मा १ ३/४ इज। भाषा

संस्कृत। विषय—मिठात। २ काल सं १७७६ भादवा। मे काल सं १७७६ मयहन बुदी ६। पूर्ण। के मं

१३२। अ मण्डार।

विशेष—प्रवृत्ति किम्ब प्रवर्ध है।

श्रीमज्जइकडाभिसो कोमै गौत्रावर्तसिके सुभाजकगिरारत्न वेस्हाक्यो ममसूपुरा ॥ १ ॥

स्वजन—जमपिचन्द्रस्तलपूजो विर्तडा विदुमकुमुबचन्द्र सर्वविद्यासमुद्र ।

जमति प्रवृत्तिमत्र प्राग्भराग्ये समुद्र कस हरिणा हरीश्रो रामकजो महीन्द्र ॥ २ ॥

तर्दवज्जमाविनचैमकक परीपकारम्पनैकमक मवा सदाचारविचारविज्ञ सीहमराज सुहृतीकनज ॥ ३ ॥

श्रीमाल—मूपासकुसप्रदीप ममेपिनी मल्लइ पाननीय। मंचावर्मच सुस्मावपाल शम्पुपुरन्यूनकुमाप्रधान ॥ ४ ॥

मामविद्यकुगौरार्त्ता वरमार्त्तपतिवता कमलव हरेस्तस्य मम्बामागे विराजते ॥ ५ ॥

तन्पुत्राभयचडास्ति मम्बस्मन्त्र इबापरः निर्मयो निस्कर्तकम नि-कुर्ग- कताप्रमिभिः ।

तन्म्याम्यर्चनया नया विरचितया श्रीरामहंसामिषोपाध्यायै जनपदिकस्य विमलावृत्ति विपुनां हिता ।

वर्षे नव मुनिपुत्रं सहिते तात्प्राथम्यात्ता बुधे । माले भाद्रपदे विक्रमरपुरे मंचाविर् भूतल ॥ ७ ॥

स्वन्दे वरतरकज्ज श्रीमज्जनदत्तमूरिसताने । जिननिसकमूरिसुतरा सिम्प श्रीहर्षविलक्येडभूत् ॥ ८ ॥

तन्निष्पद्येन इत्येवं पाठकपुण्येन राजहंसिन पञ्चाधिकमतप्रकरकुनीका मंचाविचर मर्द्या ॥ ९ ॥

इति पञ्चाधिकमतप्रकरणस्य टीका कृता श्री रामहंसोपाध्यायै ॥ ममयहमेन नि ॥

मंचन् १२७६ ममये पयहृत्त वधि ६ रविदामरे मलक श्री मिन्तारीयामेन सेति ।

५८० गलाकवासिक—भा० विद्यानन्दि। पत्र मं १७८५। मा १२X७३। मा संस्कृत। विषय-

मिठात। २ काल X। मे काल १८४४ भाद्रपद बुदी ७। पूर्ण। के मं ७७। अ मण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की बृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन

वेष्टनो मे वधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० ७८। व्य भण्डार।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३। पत्र स० ८०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६५। व्य भण्डार।

५५३. सप्रहणीसूत्र "। पत्र स० ३ से २८। आ० १०×४ इच्छ। भाषा प्राकृत। विषय—आगम।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०२। ख भण्डार।

विशेष—पत्र स० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नहीं है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ४, २१ और २८वें पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० २३३। छ भण्डार। ३११ गाययें हैं।

५५५. सप्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगणि। पत्र स० ७ से ५३। आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ । भाषा—
प्राकृत-हिन्दी। विषय—आगम। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १००१। अ भण्डार-
विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार "। पत्र स० ३ से ७ तक। आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इच्छ। भाषा सस्कृत। विषय—सिद्धान्त
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६१। च भण्डार।

५५७. सत्तात्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० २ से ४०। आ० १२×६ इच्छ। भाषा प्राकृत।
विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८४२। ट भण्डार।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद। पत्र सं० ११८। आ० १३×६ इच्छ। भाषा सस्कृत। विषय—सिद्धान्त
२० काल ×। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ११२। अ भण्डार।

५५९. प्रति स० २। पत्र स० ३६८। ले० काल स० १६४४। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

५६०. प्रति सं० ३। पत्र स० "। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०७। ड भण्डार।

५६१. प्रति स० ४। पत्र स० १२२। ले० काल ×। वे० स० ३७७। च भण्डार।

५६२. प्रति सं० ५। पत्र स० ७२। ले० काल ×। वे० सं० ३७८। च भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १-१३३, २००-२६३। ले० काल स० १६२५। मात्र सुदी ५। वे०
स० ३७६। च भण्डार।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

स० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ कानादेरा मे श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। स० १७१७ कार्तिक सुदी
१३ ब्रह्म नाथ ने भेंट मे दिया था।

४६४ प्रति सं० ७। पत्र सं १८२। से काल ×। वै सं ३८। अ मण्डार।

४६५ प्रति सं० ८। पत्र सं १५८। से काल ×। वै सं ८४। अ मण्डार।

४६६ प्रति सं० ९। पत्र सं० १३४। से काल सं १८८३ ज्येष्ठ बुदी २। वै सं ८५। अ मण्डार।

४६७ प्रति सं० १०। पत्र सं २७४। से काल सं० १७४ वैशाख बुदी २। वै सं २११। अ मण्डार।

४६८ सर्वायसिद्धि माया—अमरचन्द्र ब्राह्मण। पत्र सं १४३। मा १३×७६ इञ्च। माया हिन्दी विषय-सिद्धान्त। १ काल सं १८६१ वैश्व सुदी ५। से काल सं १९२९ कार्तिक सुदी ९। पूर्ण। वै सं ७६९ क मण्डार।

४६९ प्रति सं० २। पत्र सं ३१८। से काल ×। वै सं ८८। अ मण्डार।

४७० प्रति सं० ३। पत्र सं ४६७। से काल सं १९१७। वै सं ७५। अ मण्डार।

४७१ प्रति सं० ४। पत्र सं २७। से काल सं १८८३ कार्तिक बुदी २। वै सं १६७। अ मण्डार।

४७२ सिद्धान्तभयसार—प० रङ्गू। पत्र सं ११। मा १३×८ इञ्च। माया मयम सं। विषय-सिद्धान्त। १ काल ×। से काल सं १९५९। पूर्ण। वै सं ७९१। अ मण्डार।

विशेष—यह प्रति सं १५९३ वाली प्रति से लिखी गई है।

४७३ प्रति सं० २। पत्र सं १९। से काल सं १८६४। वै सं ८। अ मण्डार।

विशेष—यह प्रति भी सं १५९३ वाली प्रति से ही लिखी गई है।

४७४ सिद्धान्तसार भाषा—। पत्र सं ७५। मा १४×७ इञ्च। माया हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ७९९। अ मण्डार।

४७५ सिद्धान्तकोशसंग्रह—। पत्र सं १४। मा १४×६ इञ्च। माया हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १४४८। अ मण्डार।

विशेष—वैदिक साहित्य है। दो प्रतिमें का सम्मिश्रण है।

४७६ सिद्धान्तसार दीपक—सकलश्रुति। पत्र सं २२२। मा १२×५ इञ्च। माया संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १६१।

४७७ प्रति सं० २। पत्र सं १८४। से काल सं १८२६ पौष बुदी ३। वै सं १९८। अ मण्डार।

विशेष—यं जोडबन्ध के सिव्य वं विश्वरास के वाचगार्थ प्रतिभिवि की गई थी।

४७८ प्रति सं० ३। पत्र सं १५५। से काल सं १७९२। वै सं १३२। अ मण्डार।

४७९ प्रति सं० ४। पत्र सं २३६। से काल सं १८३२। वै सं ८। अ मण्डार।

विशेष—कस्तोपराम पत्नी के प्रतिभिवि की थी।

४८० प्रति सं० ५। पत्र सं १७। से काल सं १८१३। वैशाख सुदी ८। वै सं १२६। अ मण्डार।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाला शीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५८१. प्रति सं० ६। पत्र स० १७३। ले० काल स० १८२७ वैशाख बुदी १२। वे० म० २६२। ज
भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

५८२. प्रति सं० ७। पत्र स० ७८-१२४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २५२। छ भण्डार।

५८३. सिद्धान्तसारदीपक । पत्र स० ६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय-सिद्धान्त।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२४। ख भण्डार।

विशेष—केवल ज्योतिषलोक वर्णन वाला १४वा अधिकार है।

५८४. प्रति सं० २। पत्र स० १८४। ले० काल ×। वे० स० २२५। ख भण्डार।

५८५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला। पत्र स० ८७। आ० १३ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च। भाषा हिन्दी।

विषय-सिद्धान्त। २० काल स० १८४५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२४। घ भण्डार।

५८६. प्रति सं० २। पत्र स० २५०। ले० काल ×। वे० स० ८५०। ङ भण्डार।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति में है।

५८७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव। पत्र स० १४। आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च। भाषा सस्कृत।

विषय-सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११६५। झ भण्डार।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

५८८. प्रति सं० २। पत्र स० १००। ले० काल स० १८६६। वे० स० १६४। झ भण्डार।

५८९. प्रति सं० ३। पत्र स० ५५। ले० काल स० १८३० मगसिर बुदी ४। वे० स० १५०। झ भण्डार

विशेष—प० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

५९०. सूत्रकृतांग । पत्र स० १६ से ५६। आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-आगम।

२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २३३। ट भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं हैं। प्रति सस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र दीसको ने खा लिये हैं।

बीच में मूल माथाये हैं तथा ऊपर नीचे टीका है। इति श्री सूत्रकृतांगदीपिका पौडपमान्याय।

विषय-धर्म एव आचार शास्त्र

५६१ अष्टाईसमूहगुणवर्णन । पत्र सं १ । पा १ ३×२ इत्थ । मापा-संस्कृत । विषय-
मुनिपत्र बगम । र कास × । पूर्ण । वै सं २ ३ । अ मण्डार ।

५६२ अनगरभर्मावृत—प० आशाघर । पत्र सं० १७७ । पा ११५×२ इत्थ । मापा-संस्कृत ।
विषय-मुनिधर्म वर्णन । र कास सं १३ । न कास सं १७७७ माप सुवी १ । पूर्ण । वै सं २३१ । अ
मण्डार ।

विशेष—प्रति स्वान्त टीका सहित है । बौली नगर म धीमहाराज कुसमसिंहजी के नामनक्षत्र मे माहजी
रामचन्द्रजी ने प्रतिस्ति करवायी थी । स १८२९ म र्व सुकराम के शिष्य र्व केशव ने ग्रन्थका संशोधन किया था ।
६२ मे १६१ तक नहीं पत्र है ।

५६३ प्रति सं० २ । पत्र सं १२३ । से कास × । वै सं १८ । अ मण्डार ।

५६४ प्रति सं० ३ । पत्र सं १७७ । से कास सं १६२३ कालिक सुवी ५ । वै सं १६ ।
अ मण्डार ।

५६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं ३७ । से कास × । वै सं ४६७ । अ मण्डार ।

विषय—प्रति प्राचीन है । र्व माधव ने ग्रन्थ की प्रतिस्तिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'वर्मावृतसूक्ति
संग्रह' भी है ।

५६६ अनुभवप्रकार—वीपधर्म कासलीबाज । पत्र सं० ४४ । पाकर १२×२३ इत्थ । मापा-
हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय-धर्म । र कास सं १७८१ वीप सुवी ५ । से कास सं १८१४ । अपूर्ण । वै सं
१ । अ मण्डार ।

५६७ प्रति सं० २ । पत्र सं २ मे ७४ । से कास × । अपूर्ण । वै सं २१ । अ मण्डार ।

५६८ अनुभवानन्द — । पत्र सं ५६ । पा १३५×२ इत्थ । मापा-हिन्दी (गद्य) । विषय-धर्म ।
र कास × । से कास । पूर्ण । वै सं १३ । अ मण्डार ।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणधर्मदेव । पत्र सं ३ से ६६ । पा १ ५×४३ मापा-संस्कृत । विषय-
प्राकार काव्य । र कास × । से कास सं १९८५ वीप सुवी १ । अपूर्ण । वै सं २३४ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं । अन्तिम पुष्पिका—इति श्री गुणधर्मदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्य
व्याख्यानं भावप्रतिबन्धनं चतुर्विधं प्रकरणं संपूर्णं । प्रसक्ति निम्न प्रकार है—

पट्ट श्री कृष्णबाबासे तत्पट्ट श्री महम्मकीति तत्पट्ट विष्णुनदीतिरेवमद्वारक तरुट्ट श्री पचनरिदेव
मद्वारक तरुट्ट श्री जगदीतिरेव तरुट्ट श्री पतिनकीतिरेव तरुट्ट श्री पुस्तककीति तत्पट्ट श्री गुणधर्मदेव मद्वारक

धर्म एवं आचार शास्त्र]

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थं । लोहटमुत्त पंडितश्री मावलदास पठनार्थं । अन्तिसीश्यसावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकर्तार्थं । चन्द्रप्रभ वैद्यालय माघ मासे कृष्णपक्षे पूष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे स० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्र-मेनिसहाये तत्मुत्त चनुभुज जगमनि परसरामु खेमराज भ्राता पत्र सहायिका । शुभ भवतु ।

६०० आगमविलाम—द्यानतराय । पत्र स० ७३ । आ० १०^३×६^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)
विषय—धर्म । २० काल स० १७८३ । ले० काल म० १९२८ । पूर्ण । वे० म० ४२ । क भण्डार ।

विशेष—रचना सवत् सम्बन्धी पद्य—“गुण वसु शैल सितश”

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय क पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को भामू को बेचा तथा उसक में वह मूल प्रति जगतराय के हाथ में आयी । ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही में स्वर्गवान होजाने के कारण जगतराय ने सवत् १७८४ में मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया । आगम त्रिलास में कवि की विविध रचनाओं का संग्रह है ।

६०१ प्रति स० २ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १९५४ । वे० स० ४३ । क भण्डार ।

६०२. आचारसार—धीरनट्टि । पत्र स० ४९ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल म० १८९४ । पूर्ण । वे० म० १२७ । अ भण्डार ।

६०३ प्रति स० २ । पत्र म० १०१ । ले० काल × । वे० स० ४४ । क भण्डार ।

६०४ प्रति सं० ३ । पत्र स० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ४ । घ भण्डार ।

६०५. प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ से ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ४८५ । ब भण्डार ।

६०६ आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० २०३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचारशास्त्र । २० काल म० १९३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । वे० स० ४५ । क भण्डार ।

६०७. प्रति स० २ । पत्र म० २६२ । ले० काल × । वे० स० ४६ । क भण्डार ।

६०८ आराधनासार—देवसेन । पत्र स० २० । आ० ११×४^३ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल १०वीं शताब्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७० । अ भण्डार ।

६०९ प्रति स० २ । पत्र म० ६४ । ले० काल × । वे० स० २२० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१० प्रति स० ३ । पत्र म० १० । ले० काल × । वे० म० ३३७ । अ भण्डार

६११ प्रति स० ४ । पत्र म० ७ । ले० काल × । वे० म० २८४ । ख भण्डार ।

६१२ प्रति स० ५ । पत्र म० ९ । ले० काल × । वे० म० २१५१ । ट भण्डार ।

६१३ आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र म० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल म० १९३१ चैत्र बुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ६७ । क भण्डार ।

विषय-धर्म एव आचार शास्त्र

५६१ अद्वाइसमूलगुणधर्म— । पत्र सं १। मा १ ३/४ इञ्च। माया-संस्कृत। विषय-सुनिषयन बगान। १ काय ×। पूर्ण। कैटिक सं ० ३। अ मण्डार।

५६२ अनगारधमासृत—य० आशाघर। पत्र सं १७७। मा १ १/२ × ५ इञ्च। माया-संस्कृत। विषय-सुनिषयन बगान। १ काय सं १३। म काल सं १७७७ माय सुदी १। पूर्ण। कै सं १३१। अ मण्डार।

बिषय—प्रति स्वारज टीका सहित है। बोसी नगर म भीमहाराज कुपलसिंहजी के मासवकाल में साहूजी रामचन्द्रजी ने प्रतिमिति करवायी थी। सं १८२६ में पं सुखराम के शिष्य पं केचन ने ग्रन्थका संशोधन किया था। १२ में १६१ तक नहीं पत्र है।

५६३ प्रति सं २। पत्र सं १२३। मे काल ×। कै सं १८। ग मण्डार।

५६४ प्रति सं ३। पत्र सं १७७। मे काल सं १८२३ कार्तिक सुदी ५। कै सं १८। ग मण्डार।

५६५ प्रति सं ४। पत्र सं १७। मे काल ×। कै सं ४६७। अ मण्डार।

बिषय—प्रति प्राचीन है। पं माधव ने ग्रन्थ की प्रतिमिति की थी। ग्रन्थ का सूत्रा नाम 'धर्मासृतमूर्ति संग्रह' भी है।

५६६ अनुसमप्रकार—दीपचन्द्र कासबीवाल। पत्र सं ४४। माकार १२ × ३ १/२ इञ्च। माया-हिन्दी (राजसम्राज्ञी) मय। विषय-धर्म। १ काय सं १७०१ पीप सुदी ३। मे काल सं १८१४। अपूर्ण। कै सं १। अ मण्डार।

५६७ प्रति सं २। पत्र सं २ में ७८। मे काल ×। अपूर्ण। कै सं २१। अ मण्डार।

५६८ अनुसमानम्— । पत्र सं ५६। मा १ १/२ × ६ इञ्च। माया-हिन्दी (गण)। विषय-धर्म। १ काय ×। मे काल। पूर्ण। कै सं १३। अ मण्डार।

असुतयर्मरसकाव्य—गुणधर्मदेव। पत्र सं ३ में ६१। मा १ ३/४ × ४ १/२ माया-संस्कृत। विषय-मायाकाव्य। १ काय ×। मे काल सं १६८५ पीप सुदी १। अपूर्ण। कै सं २३४। अ मण्डार।

बिषय—ब्राह्म के दो पत्र नहीं हैं। मलिक गुणधर्म—इति श्री गुणधर्मदेवविरचितसमुत्तमब्रह्मसूत्र व्याख्यानं आर्यभट्टविरचितं अनुविरचितं प्रकरणं अपूर्ण। प्राग्नि विष्णु प्रसार है—

पृष्ठ श्री दुर्गुदाशायें तपसुं श्री मह्यवीणि तपसुं त्रिभुवनवीतिदेवभट्टारक तपसुं श्री पचमदिदेव भट्टारक तपसुं श्री अमवीतिदेव तपसुं श्री ललितवीनिदेव तपसुं श्री सुगन्धवीणि तपसुं श्री २ गुणधर्मदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थ । लोहटसुत पंडितश्री सावलदास पठनार्थ । अन्तिसी-अथसावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकनार्थ । चन्द्रप्रभ चैत्यालय माघ मासे कृष्णपक्षे पूष्यनक्षत्रे फाषिवि दिने १ शुक्रवारे स० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्र-मेनियहाये तत्सुत चतुर्भुज जगमनि परसरामु खेमराज भ्राता पत्र सहायिका । शुभ भवतु ।

६०० आगमविलास—द्यानतराय । पत्र स० ७३ । आ० १०३×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—धर्म । २० काल स० १७८३ । ले० काल स० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० ४२ । क भण्डार ।

विशेष—रचना मवत् सम्बन्धी पद्य—“गुरु वसु शैल सितश”

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय क पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को भाभू को बेचा तथा उसके पान में वह मूल प्रति जगतराय के हाथ में आयी । ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु जीव ही में मर्गवाप्त हाजाने के कारण जगतराय ने सवत् १७८४ में मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया । आगम विलास में कवि की विविध रचनाओं का संग्रह है ।

६०१ प्रति स० २ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १६५४ । वे० स० ४३ । क भण्डार ।

६०२. आचारसार—वीरनट्टि । पत्र स० ४६ । आ० १२×५१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

६०३ प्रति स० २ । पत्र स० १०१ । ले० काल × । वे० स० ४४ । क भण्डार ।

६०४ प्रति सं० ३ । पत्र स० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४ । घ भण्डार ।

६०५. प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ से ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८५ । व्य भण्डार ।

६०६ आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० २०३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचारशास्त्र । २० काल स० १६३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६०७. प्रति स० २ । पत्र स० २६२ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । क भण्डार ।

६०८ आराधनासार—देवसेन । पत्र स० २० । आ० ११×४१ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल-१०वीं गताब्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

६०९ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल × । वे० सं० २२० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१० प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार

६११ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । ख भण्डार ।

६१२ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

६१३ आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १६३१ चैत्र बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

विशेष—सेवक प्रशस्ति का अंतिम पत्र नहीं है ।

६१४ प्रति स० १ । पत्र सं ४ । से काल \times । वे सं १८ । अ मण्डार ।

६१५ प्रति स० ३ । पत्र सं ५२ । से काल \times । वे सं १९ । अ मण्डार ।

६१६ प्रति स ४ । पत्र सं २४ । से काल \times । वे सं ७२ । अ मण्डार ।

विशेष—गान्धर्व भी है ।

६१७ आराधनासार भाषा - । पत्र सं १६ । या ११ \times ४ इति । माया-हिन्दी । विषय-धर्म ।
२० काल \times । ल० काल \times । पूर्ण । वे सं २१२१ । अ मण्डार ।

६१८ आराधनासार बचनिका—बाबा बुद्धीचम्पू । पत्र सं २२ । या १२ \times ८ इति । माया-
हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । २ काल २०वीं शताब्दी । से० काल \times । पूर्ण । वे सं १८३ । अ मण्डार ।

६१९ आराधनासार वृत्ति—प० आराधर । पत्र सं ६ । या १ \times ४ इति । माया-संस्कृत ।
विषय-धर्म । २ काल १३वीं शताब्दी । से काल \times । पूर्ण । वे सं १ । अ मण्डार ।

विशेष—मुनि नमस्कार के लिए स्वरचना की थी । टीका का नाम आराधनासार बर्षण है ।

६२० आहार के क्रियाशील होप वर्णन—भैया भगवतीदास । पत्र सं २ । या ११ \times ७ इति ।
माया-हिन्दी । विषय-आचारशास्त्र । २ काल सं १७५ । से० काल \times । पूर्ण । वे सं २४ । अ मण्डार ।

६२१ उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगणित । पत्र सं २ । या १ \times ४ इति । माया-संस्कृत । विषय-
धर्म । २ काल \times । से काल सं १७२५ कालिक बुद्धी ७ । पूर्ण । वे सं ५२५ । अ मण्डार ।

६२२ प्रति स० २ । पत्र सं १४ । से काल \times । वे सं ३४५ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

६२३ उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र सं १२९ । या ११ \times ४ इति । माया-संस्कृत ।
विषय-धर्म । २ काल सं १९२७ भाषण मुद्दी ६ । से काल सं १७९७ भाषण मुद्दी १४ । पूर्ण । वे सं ११ ।
अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री गोपीराम बिलास्ता ने प्रतिनिधि करवाई थी ।

६२४ प्रति स० । पत्र सं १३९ । से काल \times । वे सं २७ । अ मण्डार ।

२५ प्रति स० । पत्र सं १२९ । से काल सं १७२ भाषण मुद्दी ४ । वे सं २५ । अ
मण्डार ।

६३ प्रति स ५ । पत्र सं १९९ । से काल सं १९८५ कालिक मुद्दी १२ । पूर्ण । वे सं ८२
अ मण्डार ।

विशेष—पत्र सं ९ म ६३ तथा १ ८ नहीं है । प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है— 'भयपुर की समस्त
भाषणगी आज कस्यास्य विहित इस साक्ष्य की भी पारदर्शक विहित मण्डार में उपजाया ।

६२७. प्रति स० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल X । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।
 ६२८ प्रति स० ६ । पत्र म० १३८ । ले० काल X । वे० सं० ७७ । क भण्डार ।
 ६२९ प्रति सं० ७ । पत्र म० १२८ । ले० काल X । वे० सं० ८२ । ड भण्डार ।
 ६३०. प्रति स० ८ । पत्र म० ३६ मे ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । ड भण्डार ।
 ६३१ प्रति सं० ९ । पत्र स० ६४ से १४५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।
 ६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।
 ६३३ प्रति स० ११ । पत्र स० १६७ । ले० काल म० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ३१ । च भण्डार ।
 ६३४. प्रति स० १२ । पत्र स० १८१ । ले० काल X । वे० सं० २७० । च भण्डार ।
 ६३५. प्रति स० १३ । पत्र स० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ४५२ ।
 च भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धान्तमाला—भडारी नेमिचन्द्र । पत्र स० १६ । आ० १२X७३ इन्द्र । भाषा—
 प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल सं० १६४३ आपाढ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

६३७ प्रति स० २ । पत्र म० ६ । ले० काल X । वे० सं० ७९ । क भण्डार ।

६३८ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वे० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९ उपदेशसिद्धान्तमाला भाषा—भागचन्द्र । पत्र स० २८ । आ० १२X८ इन्द्र । भाषा—
 हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६१२ आपाढ बुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की सं० १६६७ में कालूराम पोल्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशमाला का
 हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति म० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल म० १६२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० म० ८० । क भण्डार

६४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४९ । ले० काल X । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७३ । ले० काल सं० १६४३ सावण बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भण्डार ।

६४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७९ । ले० काल X । वे० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४ प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५ प्रति स० ७ । पत्र स० ४५ । ले० काल X । वे० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५८ । ले० काल X । वे० सं० ८४ । ड भण्डार ।

६४७. प्रति स० ९ । पत्र स० ५९ । ले० काल X । वे० सं० ८५ । ड भण्डार ।

६४८ उपदेशमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र स० २० । आ० १०३X७ इन्द्र । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—धर्म । २० काल म० १६६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४६ उपद्रा रत्ननाला भाषा—वेवीसिंह छावड़ा । पत्र सं० २ । मा ११ $\frac{१}{२}$ ७५ इच्छ । भाषा—
हिन्दी पद्य । र काल में १७६९ मत्स्य बुद्धी १ । न काल × । पूर्ण । वै सं ८६ । क मण्डार ।

विशेष—नरवर नगर में प्रथम रचना की गई थी ।

६४७ प्रति सं० २ । पत्र सं १६ । ले० काल × । वै सं ८८ । क मण्डार ।

६४८ प्रति सं० ३ । पत्र सं १६ । ले० काल × । वै सं ८९ । क मण्डार ।

६४९ उपसर्गार्थ विवरण—सुपाचार्य । पत्र सं १ । मा १३ \times ४ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
धर्म । र काल × । पूर्ण । वै सं ९० । क मण्डार ।

६५० उपासकाचार दीक्षा—आचार्य सरसीचन्द्र । पत्र सं २७ । मा ११ \times ७ इच्छ । भाषा—
प्रबन्ध प्र । विषय—आषाढ धर्म वर्णन । र काल × । ले काल में १५३३ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वै सं २२३ ।
क मण्डार ।

विशेष—य व का नाम आषाढाचार जी है । य सप्तमगुण क पठनार्थ प्रतिस्तिपि की गई थी । विस्तृत
प्रसस्ति निम्न प्रकार है —

स्मृति सन् १५३३ वर्षे कार्तिक सुदी १२ सोमे श्री मूलमन्त्रे भरस्वरीयच्छे बभूवुःकारगण य विद्यानेत्री
पट्टे य मन्त्रिभूषण तन्निष्पन्न पंडित सप्तमगुण पठनार्थं द्रुष्ट्वा आषाढाचार शास्त्रं समाप्तं । प्रथम सं २७ । तार्हीं की
संख्या २२४ है ।

६५१ प्रति सं० २ । पत्र सं १८ । न काल × । वै सं २४८ । क मण्डार ।

६५२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११ । न काल × । वै सं १७ । क मण्डार ।

६५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं १२ । न काल × । वै सं २६८ । क मण्डार ।

६५४ प्रति सं० ५ । पत्र सं ७७ । न काल × । वै सं ६६५ । क मण्डार ।

६५५ उपासकाचार्य—..... । पत्र सं ७२ । मा १३ $\frac{१}{२}$ ६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आषाढ
धर्म वर्णन । र काल × । न काल × । पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वै सं ४२ । क मण्डार ।

६५६ उपासकाध्ययन—..... । पत्र सं ११४—११६ । मा ११ $\frac{१}{२}$ ३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आषाढ मास । र काल × । ले काल । पूर्ण । वै सं २९ । क मण्डार ।

६६० अष्टांगसूक्त—स्वरूपचन्द्र बिलास । पत्र संख्या ६ । मा १३ \times ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । र काल में १६२ ज्येष्ठ सुदी १ । न काल में १६६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वै सं २ । क मण्डार ।

विषय—हीरासय की प्रेरणा से मर्वाट जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई ।

६६१ कुशीलसूदन—अपभ्रंश । पत्र सं २६ । मा १० \times ७३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र
काल में १६३ । न काल २ । पूर्ण । वै सं ४११ । क मण्डार ।

६६२ प्रति सं० २ । पत्र म० ५२ । ले० काल × । वै० स० १२७ । ड भण्डार ।

६६३ प्रति सं० ३ । पत्र म० ३८ । ले० काल × । वै० स० १७६ । छ भण्डार ।

६६५ केवलज्ञान का व्यौरा " । पत्र म० १ । आ० १२३×५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० म० २६७ । ग भण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र म० १२२ । आ० ११३×५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ४३ । अ भण्डार ।

६६६ प्रति सं० २ । पत्र म० ११७ । ले० काल म० १६५६ चैत्र सुदी १ । वै० म० ११५ । क भण्डार ।

६६७ प्रति सं० ३ । पत्र म० ७४ । ले० काल स १७६५ भाद्रवा सुदी ४ । वै० म० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति नवाई जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे लिखी गई थी ।

६६८ प्रति सं० ३ । पत्र म० २०७ । ले० काल म० १५७७ वैशाख सुदी ४ । वै० म० १८८७ । ट
भण्डार ।

विशेष—'प्रशस्ति सग्रह' मे ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है ।

६६९ क्रियाकलाप " । पत्र म० ७ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म
वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २७७ । छ भण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका " । पत्र म० ६१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १५३६ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज माडौगढदुर्गे श्री सुलतानगयासुदीनराज्ये चन्देरीदेगेमहाशेरखानध्याप्रीयमाने वेसरे ग्रामे
त्रास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राधो लिखित ।

६७१ प्रति सं० २ । पत्र म० ४ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १०७ । ज भण्डार ।

६७२ 'क्रियाकलापवृत्ति' । पत्र म० ६६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल म० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एव क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पूना पुत्रेण द्याबुकेन लिखित श्लोकानामष्टादश-
शतानि ॥ पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति सग्रह' मे पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३ क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र म० ८१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल स० १७८४ भाद्रवा सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ४०२ । अ भण्डार ।

६७४ प्रति सं० २ । पत्र म० १२६ । ले० काल स० १८३३ मगसिर सुदी ६ । वै० म० ४२६ । अ
भण्डार ।

६७५ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४२। ले० काल X। मपूर्णा। वै० सं० ७२८। अ मन्डार।

६७६ प्रति सं० ४। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १५५३ मापाङ्ग कुची १०। वै० सं० ८। ग भंडार
विशेष—स्वोत्सासजी साहू के प्रतिनिधि बरवायी थी।

६७७ प्रति सं० ५। पत्र सं० १२ से ११५। म काल सं० १५८८। मपूर्णा। वै० सं० ११०। अ
मन्डार।

६७८ प्रति सं० ६। पत्र सं० २७। म० काल X। वै० सं० १११। अ मन्डार।

६७९ प्रति सं० ७। पत्र सं० १०। ले० काल X। मपूर्णा। वै० सं० २२४। अ मन्डार।

६८० प्रति सं० ८। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १५५१ मंगसिर कुची १३। वै० सं० १२२।

अ मन्डार।

६८१ प्रति सं० ६। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १२५६ मापाङ्ग कुची ६। वै० सं० १२६। अ
मन्डार।

अ मन्डार।

विशेष—प्रति क्रियामण्ड के मन्दिर की है।

६८२ प्रति सं० १०। पत्र सं० ४ से २। म काल X। मपूर्णा। वै० सं० ३४। अ मन्डार।

६८३ प्रति सं० ११। पत्र सं० १ से १४। ले० काल X। मपूर्णा। वै० सं० २७७। अ मन्डार।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है।

६८४ क्रियाकोश—। पत्र सं० २। मा० १ १/२ X २ १/२ इञ्च। माया—हिन्दी। विषय—भास्कर धर्म
वर्णन। र काल X। ले० काल X। मपूर्णा। वै० सं० २०२। अ मन्डार।

६८५ कुमुदप्रकाश—। पत्र सं० १। मा० ६ X ४ १/२ इञ्च। माया—हिन्दी। विषय—धर्म। र
काल X। म काल X। पूर्णा। वै० सं० १७१२। अ मन्डार।

६८६ कामाक्षीसी—विमलमसूरि। पत्र सं० ३। मा० ८ १/२ X ४ इञ्च। माया—हिन्दी। विषय—
धर्म। र काल X। ले० काल X। पूर्णा। वै० सं० २१४१। अ मन्डार।

६८७ क्षेत्रसमयसमकरण—। पत्र सं० ६। मा० १ X ४ १/२। माया—प्राकृत। विषय—धर्म। र
काल X। ले० काल सं० १०७। पूर्णा। वै० सं० ५२६। अ मन्डार।

६८८ प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल X। वै० सं० X। अ मन्डार।

६८९ क्षेत्रममास्टीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि। पत्र सं० ७। मा० ११ X ४ १/२। माया—संस्कृत।
विषय—धर्म। र काल X। ले० काल X। पूर्णा। वै० सं० ५३। अ मन्डार।

६९० गणसार—। पत्र सं० ५। मा० ११ १/२ X २ १/२ माया—हिन्दी। विषय—धर्म। र काल X। ले०
काल X। पूर्णा। वै० सं० २३३। अ मन्डार।

६९१ अठसरण प्रकरण—। पत्र सं० ४। मा० ११ X ४ १/२ इञ्च। माया—प्राकृत। विषय—धर्म। र
काल X। पूर्णा। वै० सं० १५४६। अ मन्डार।

विशेष—

प्रारम्भ—सावज्जजीगविरइ उकित्तरा गुणवउ अपडिवत्ती ।

रवलि अस्सय निदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगारा वज्जणा सेवणत्तरणउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा इच्छएण किज्जइय ।

अच्चपत्त अगुण कित्तरा ख्वेण जिणवरिदारां ॥३॥

अन्तिम—मदणभावाबद्धा तिब्बणु भावाउ कुणई ताचेव ।

असुहाऊ निरणु बधउ कुणई निब्बाउ मदाउ ॥ ६० ॥

ता एवं कायव्व बुहेहि निच्चंपि सकिलेसंमि ।

होई तिवकाल सम्म असकिले समि सुगइफलं ॥ ६१ ॥

चउरगो जिणधम्मो नकउ चउरगसरण मवि नकर्म ।

चउरगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरभद् तमेव अम्बयण ।

भाए सुति संभम वंभं कारण निव्वुइ सुहाण ॥ ६३ ॥

इति चंडसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२. चारभावना . . . । पत्र सं० ६ । आ० १०^३×६^३ । भाषा—संस्कृत । विसय—धर्म । २० काल × १० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३. चारित्रसार—श्रीमच्चामु डराय । पत्र सं० ६६ । आ० ६^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १५४५ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ३४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसयमसम्पन्न श्रीमज्जिनमेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुष्ठमहाराजविरचिते भावनासारसग्रहे चरित्रसारे अनागारधर्मसमाप्त ॥ ग्रन्थ सख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे बैशाख वदी ५ भीमवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकु-कु दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवा तत् शिष्य आचार्य श्री मुनिरत्नकीर्ति तदाग्राम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयो पुष्पा साह डावर भार्या लक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयो पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्मा तयो पुत्र साह दामा साह योजा भार्या होली तयो पुत्री रणमल क्षेमराजसा डाकुर भार्या खेत तयो पुत्र हरराज । सा जालप साह तेजा भार्या त्यजनिरि पुत्रपीत्रादि प्रभृतीना एतेषा मध्ये सा अर्जुन इद चरित्रसारं शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय आर्यसारंगाय प्रदत्तं लिखितं ज्योतिर्गुणा ।

६६४ प्रति स० १। पत्र सं १४१। से काम सं १२३५ भाषाट मुदी ४। वे सं १५१। क

मण्डार।

विशेष—डा कुमीचन्द ने लिखवाया।

६६५ प्रति सं० ३। पत्र सं ७७। से काम सं० १५८२ मंगलिर कुपी २। वे सं १७७। क

मण्डार।

६६६ प्रति स० ४। पत्र सं० ३२। से पत्र ५। वे सं ३२। क मण्डार।

विशेष—कहो कही दरिद्र लोगों के सर्प भी विधे हुये हैं।

६६७ प्रति स० ५। पत्र सं १३। से काम सं १७०३ कार्तिक मुदी ८। वे सं १२३। क

मण्डार।

विशेष—हीरापुरी में प्रतिमिपि हुई।

६६८ चारित्रसार भाषा—मन्नाक्षाल। पत्र सं ३७। भा १७×६। भाषा—हिन्दी(पद्य)। विषय—धर्म।

र काम सं १८७१। से काम ५। संपूर्ण। वे सं २७। ग मण्डार।

६६९ प्रति स २। पत्र सं १६८। सं० काम सं १८७७ फाल्गुन मुदी १। वे सं १७५।

क मण्डार।

७०० प्रति स० ३। पत्र सं १३८। से काम सं १२६ कर्तिक कुपी १३। वे सं १७९।

क मण्डार।

७०१ चारित्रसार भाषा—। पत्र सं २२ से ७६। भा० ११×५। भाषा—संस्कृत। विषय—आचारशास्त्र

र काम ५। से० काम सं १६४३ ज्येष्ठ कुपी १। संपूर्ण। वे सं २१४। ट मण्डार।

विशेष—प्रचलित निम्न प्रकार है—

सं १६४३ वर्षे जाके १५ ७ प्रवर्तमाने ज्येष्ठमास शुक्लपक्षे ब्रह्म्यां तिथी नामवासरु पातिसाह भी मङ्गल रात्र्याग्नेप्रवर्तने पोषी तिथिर्न माषी तन्मुत्र जोसी मोषा तिथिर्न मस्तपूरा।

७०२ चौबीस बृहद्वक्त्रभाषा—द्वैततराम। पत्र सं ६। भा २३×४३। भाषा—हिन्दी। विषय—

धर्म। र काम १८०वीं पद्यवि। स काम सं १८४७। पूर्ण। वे सं ४२०। क मण्डार।

विशेष—महोद्वैतराम ने रामपुरा में ये तिहातचन्द्र के पठनार्थ प्रतिमिपि की पा।

७०३ प्रति स० २। पत्र सं ६। से काम ५। वे सं २८६२। क मण्डार।

७०४ प्रति स० ३। पत्र सं २१। से काम सं १२३७ फाल्गुन मुदी ४। वे सं १२८। क मण्डार।

७०५ प्रति स० ४। पत्र सं १। से काम ५। वे सं १२९। क मण्डार।

७०६ प्रति स ५। पत्र सं ३। से काम ५। वे सं १२९। क मण्डार।

७०७ प्रति स० ६। पत्र सं ४। से काम ५। वे सं १२२। क मण्डार।

७०८ प्रति स० ७। पत्र सं ५। से काम सं १८१५। वे सं ७३३। क मण्डार।

धर्म एव आचार-शास्त्र]

७०६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५ । ले० काल X । वे० स० ७३६ । च भण्डार ।

७१० प्रति स० ६ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य है ।

७११ चौरामी आसादना । पत्र सं० १ । आ० ६X४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० म० ८४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरों में वर्जनीय ८४ क्रियाओं के नाम हैं ।

७१२ प्रति स० २ । पत्र म० १ । ले० काल X । वे० स० ४४७ । ज भण्डार ।

७१३ चौरासी आसादना । पत्र स० १ । आ० १०X४^३ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २०

काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टिका सहित है ।

७१४ चौरासीलाख उत्तर गुण । पत्र स० १ । आ० ११^३X४^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—

धर्म । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष—१५००० शील के शेर भी दिये हुए हैं ।

७१५ चौसठ ऋद्धि वर्णन । पत्र स० ६ । आ० १०X४^३ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० म० २५१ । अ भण्डार ।

७१६ छहढाला—दौलतराम । पत्र स० ६ । आ० १०X६^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०

काल १८वीं शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२२ । अ भण्डार ।

७७ प्रति स० २ । पत्र स १३ । ले० काल स० १६५७ । वे० म० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८ प्रति सं० ३ । पत्र म० २८ । ले० काल म० १८६१ त्रैनाल मुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भण्डार

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीषद्, पञ्चमगलपाठ, महावीरस्तोत्र एवं सकटहरणविलती आदि भी

शे हुई हैं ।

७२० छहढाला—वृषजान । पत्र सं० ११ । आ० १०X७ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म ।

२० काल स० १८५६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६७ । ड भण्डार ।

७२१ छेदपिण्ड—इन्द्रनदि । पत्र स० ३६ । आ० ८X५ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रायश्चित्त

शास्त्र । २० काल X । पूर्ण । वे० म० १८२ । क भण्डार ।

७२२ जैनानगरप्रक्रियाभाषा—बा० तुलीचन्द्र । पत्र स० २४ । आ० १२X७ इच्छ । भाषा—हिन्दी

विषय—प्रायश्चित्त वर्णन । २० काल स० १६३६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०८ । क भण्डार ।

७३ प्रति स० २ । पत्र सं ८१ । ल काल सं० १११६ भाषण सुदी १ । वै सं २१ । क मण्डार ।

७४ ज्ञानानन्दभाषकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं २३१ । मा १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—व्यापार शास्त्र । र काल १८वीं शताब्दी । ल काल × । पूर्ण । वै सं २३३ । क मण्डार ।

७५ प्रति स० २ । पत्र सं १२९ । ले काल × । वै सं २९१ । क मण्डार ।

७६ प्रति स० २ । पत्र सं ३ । ले काल × । अपूर्ण । वै सं २२१ । क मण्डार ।

७२० प्रति स० ३ । पत्र सं २३२ । ल काल सं ११३२ भाषण सुदी १४ । वै सं २२० ।

क मण्डार ।

७८ प्रति सं० ४ । पत्र सं १२ म २७४ । ले काल × । वै सं १६७ । क मण्डार ।

७२६ प्रति स० ५ । पत्र सं १ । ले काल × । अपूर्ण । वै सं १६८ । क मण्डार ।

७३० ज्ञानविद्यामणि—मनाहरदास । पत्र सं १ । मा ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

धर्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वै सं १३३३ । क मण्डार ।

विषय—२ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ल काल सं १८६४ भाषण सुदी ६ । वै सं ३३ । क मण्डार ।

७३२ प्रति स० ३ । पत्र सं ८ । ल काल × । वै सं १८७ । क मण्डार ।

विषय—१२८ छप है ।

७३३, तत्त्वज्ञानतरंगिणी—मद्वारक ज्ञानमूषण । पत्र सं २७ । मा ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत

विषय—धर्म । र काल म १२६ । ले काल सं ११३५ भाषण सुदी २ । पूर्ण । वै सं १८१ । क मण्डार ।

७३४ प्रति स० २ । पत्र सं २६ । ल काल सं १७११ शैव सुदी ८ । वै सं ३३३ । क मण्डार ।

७३५ प्रति स० ३ । पत्र सं ३६ । ल काल सं ११३४ ज्येष्ठ सुदी ११ । वै सं २६३ । क मण्डार ।

७३६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४७ । ले काल सं १८१४ । वै सं २६४ । क मण्डार ।

७३७ प्रति स० ५ । पत्र सं ७ । ल काल × । वै सं २४३ । क मण्डार ।

विषय—प्रति हिन्दी धर्म सहित है ।

७३८ प्रति सं० ६ । पत्र सं २६ । ल काल सं १७८ भाषण सुदी १३ । वै सं ३१३ । क

मण्डार ।

७३९ त्रिबन्धुआर—म० सामसुत । पत्र सं १७ । मा ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्यापार—धर्म । र काल सं १६३७ । ल काल सं १७३२ भाषण सुदी १ । पूर्ण । वै सं २८८ । क मण्डार ।

विषय—प्रारम्भ के २२ पत्र इमरा किरि के हैं ।

७४० प्रति स० २ । पत्र सं ८१ । ले काल सं १८३८ कार्तिक सुदी १३ । वै सं ८१ । क

मण्डार ।

विषय—पंडित बलराम और उमक सिन्हा सम्प्रदाय के प्रतिनिधि भी हैं ।

७४१. प्रति स० ३ । पत्र स० १४३ । ले० काल × । वे० स० २८२ । व्य भण्डार ।

७४२ त्रिवर्णाचार । पत्र स० १८ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० ० ७८ । ख भण्डार ।

७४३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० २८५ । अपूर्ण । ड भण्डार ।

७४४ त्रेपनक्रिया । पत्र स० ३ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक की क्रियाओं का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८४ । च भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र स० ८२ । आ० १२×६^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आचार । २० काल स० १७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. दण्डकपाठ । पत्र स० २३ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य
(आचार) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप । पत्र स० १६ । आ० ११^३×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रावक की म्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८ दशभक्ति । पत्र स० ५६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
२० काल स० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० स० १०६ । व्य भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पद्मनदि के ग्राम्नाथ वाले खण्डेलवात्र ज्ञातीय सा०
ठाकुर वंश में उत्पन्न होने वाले साहू भीखा ने चन्द्रकीर्ति के लिए मौजमावाद में प्रतिलिपि कराई ।

७४९ दशलक्षणधर्मवर्णन—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ४१ । आ० १२×५^३ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० २६५ । ड भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका में से है ।

७५०. प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० २६६ । ड भण्डार ।

७५१. प्रति स० ३ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० २६७ । ड भण्डार ।

७५२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

७५३ प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १८६ ।
छ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६४१ । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७११ प्रति स ७। पत्र म ३४। से कास X।। के सं १८१। छ मण्डार।

७१६ प्रति स० ८। पत्र सं ३। से कास X। प्रपूर्ण। के सं १८६। छ मण्डार।

७१७ प्रति स० ६। पत्र म ४२। से कास X। के सं १७६। छ मण्डार।

७१८ गगलद्वयधर्मवर्णित। पत्र सं २८। मा १२४ X ७५ इत्य। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म।

१ कास X। से कास >। पूर्ण। के सं ५८७। छ मण्डार।

७१९ प्रति स० २। पत्र सं ६। से कास X। के सं १९१७। छ मण्डार।

विषय—ब्रह्मरसास से प्रतिलिपि को भी।

७६० धानपचाशत—पद्यनदि। पत्र सं ५। मा ११ X ४२ इत्य। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म।

१ कास >। से कास X। के सं ३२४। छ मण्डार।

विषय—सन्तिस प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

धी पद्यनदि मुनिराप्रित मुनि प्रमदल पंचायत समित्तवर्ण त्रयो प्रकरण ॥ इति शान पंचायत समाप्त ॥

७६१ दानकुसुम - - - - -। पत्र सं ७। मा १ X ४५ इत्य। भाषा-माहृत। विषय-धर्म। १ कास X।

५ कास सं १७३६। पूर्ण। के सं ८३३। छ मण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा में धर्म विद्या हुआ है। लिपि नागरी है। प्रारम्भ में ४ पत्र तक चैत्यबंदनव सत्य

रिया है।

७६२ दानरीक्षतपमापना—धर्मसी। पत्र सं १। मा १२ X ४५ इत्य। भाषा-हिन्दी। विषय-

धर्म। १ कास X। से कास X। पूर्ण। के सं २१५३। छ मण्डार।

७६३ दानरीक्षतपमापना - - - - -। पत्र सं ९। मा १ X ४५ इत्य। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म।

१ कास >। से कास X। प्रपूर्ण। के सं १३६। छ मण्डार।

विषय—८५ पत्र मही है। प्रति हिन्दी धर्म महित है।

७६४ दानरीक्षतपमापना - - - - -। पत्र सं १। मा १५ X ४५ इत्य। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म।

१ कास X। से कास <। पूर्ण। के सं १२९६। छ मण्डार।

विषय—मौसी घोर बाण्ड का संवार भी ब्रह्म मुन्दर रूप में रिया गया है।

७६५ दीपमानिक्रमिलय - - - - -। पत्र सं १२। मा १२ X ६ इत्य। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म।

१ कास <। से कास X। पूर्ण। के सं ३६। छ मण्डार।

विशेष—विचित्र काष्ठरूप म्याम।

७६६ प्रति स० २। पत्र सं ३। से कास >। पूर्ण। के सं ३७। छ मण्डार।

७६७ दादाभादुद—रामसिंह। पत्र सं २। मा ११ X ४ इत्य। भाषा-संस्कृत। विषय-माचार

वस्तु। १ कास १ से कास X। पूर्ण। के सं २२। छ मण्डार।

विशेष—पुन ३३३ रीति है। ६ म १६ तक पत्र मही है।

७६८ धर्मचाहना । पत्र स० ८ । आ० ८३×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । छ भण्डार ।

७६९. धर्मपचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० ३ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२७ गौप बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचित धर्मपचविंशतिका नामशास्त्र समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीप्रभाषा—पन्नालाल संधी । पत्र स० ६४ । आ० १२×७१/२ । भाषा—हिन्दी । २० काल

स० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६२ आसोज मुदी १४ । वे० स० ३३७ । छ

भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा है ।

७७२ धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्ति । पत्र सं० ५० । आ० १०३/२×४३/२ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १८१६ फागुन सुदी ५ । व्य भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नों के उत्तर हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण — तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमारूढान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द्र के शिष्य रायमल ने जयपुर में शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर । पत्र स० २७ । आ० ८३/२×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।

ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४ धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र स० ४ में ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १६३३ । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । च भण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र स० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावकों के आचार का वर्णन है । २० काल स० १८६८ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । छ भण्डार ।

७५४ प्रति स० ७। पत्र सं ३४। से काल ×।। वे० सं १८६। छ मण्डार।

७५६ प्रति स० ८। पत्र सं ३। से काल ×। पूर्ण। वे सं १८६। छ मण्डार।

७५७ प्रति स० ६। पत्र सं ४२। से काल ×। वे सं १७२। ट मण्डार।

७५८ अंगलक्ष्यधर्मवर्णन। पत्र सं २८। प्रा १ × ७^१ इच्छ। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म।

२ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १८७। छ मण्डार।

७५९ प्रति स० २। पत्र सं ६। से काल ×। वे सं १९१७। ८ मण्डार।

विशेष—बनारसवास से प्रतिसिपि की थी।

७६० दानपंचाशत—पद्यनदि। पत्र सं ८। प्रा ११ × ४ इच्छ। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म।

२ काल ×। से काल ×। वे सं ३२५। छ मण्डार।

विशेष—अन्तिम अक्षरि निम्न प्रकार है—

धी पद्यार्थि मुनिराधित मुनि पुमवत्त पंचाशत समित्तवर्ग त्रयो प्रकरणु ॥ इति दान पंचाशत समाप्त ॥

७६१ दानकुण्डल। पत्र सं ७। प्रा १ × ४ इच्छ। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। २ काल ×।

५ काल सं १७५६। पूर्ण। वे सं ८३३। छ मण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा में धर्म दिया हुआ है। सिपि मागरी है। प्रारम्भ में ४ पत्र तक अक्षरव्यत्यय भाष्य दिया है।

७६२ दानशीलतपभावना—धर्मसी। पत्र सं १। प्रा २२ × ४ इच्छ। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं २१२३। ट मण्डार।

७६३ दानशीलतपभावना। पत्र सं ६। प्रा १ × ४ इच्छ। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं २३६। छ मण्डार।

विशेष—४२ पत्र मही है। प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७६४ दानशीलतपभावना। पत्र सं १। प्रा २^१ × ४ इच्छ। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १२६६। छ मण्डार।

विशेष—मोठी और बाँधने का संवार भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है।

७६५ दीपमालिकानिर्णय। पत्र सं १२। प्रा १२ × ६ इच्छ। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं ३६। छ मण्डार।

विशेष—लिपिकार बाणुमान श्याम।

७६६ प्रति स० २। पत्र सं ८। से काल ×। पूर्ण। वे सं ३५। छ मण्डार।

७६७ आदापाहुह—रामसिंह। पत्र सं ०। प्रा ११ × ४ इच्छ। भाषा—प्राकृत। विषय—प्राचा वास्तु। २ काल १ की कालदि। से काल ×। पूर्ण। वे सं २६२। छ मण्डार।

विशेष—पुत्र ३३३ पाने है। ६ म १६ तक पत्र नहीं है।

७६८ धर्मचाहना । पत्र स० ८ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । ड भण्डार ।

७६९ धर्मपचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० ३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पौष वृदी ९ । पूर्ण । वे० स० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचित धर्मपचविंशतिका नामशास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीप्रभाषा—पन्नालाल सघी । पत्र स० ९४ । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ । भाषा—हिन्दी । २० काल

स० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । ड भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १९६२ आसोज सुदी १४ । वे० स० ३३७ । ड

भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा है ।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—त्रिमलकीर्त्ति । पत्र स० ५० । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १८१६ फागुन सुदी ५ । व भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषयों के प्रश्नों के उत्तर हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण .— तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमारूढान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द्र के शिष्य रायमल ने जयपुर में शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर । पत्र स० २७ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।

ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४ धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र स० ४ से ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १९३३ । अपूर्ण । वे० स० ५९८ । च भण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र स० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—श्रावकों के आचार का वर्णन है । २० काल स० १८६८ । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० स०

३३८ । ड भण्डार ।

७७६ धर्मप्रशानाचरभावकाचार --- । पत्र सं० १ से ३१ । मा ११×२३ इञ्च । मापा-संस्कृत ।

विषय-धातक धर्म वर्णन । २० कास × । से कास × । प्रपूर्णा । के सं २३ । अ मन्थार ।

७७७ प्रति सं० २ । पत्र सं ३१ । से कास × । के सं २६ । अ मन्थार ।

७७८ धर्मरत्नाकर-समग्रहकर्ता प० मराठ । पत्र सं १६१ । मा ११×७ इञ्च । मापा-संस्कृत ।

विषय-धर्म । २ कास सं १६०० । से कास × । पूर्णा । के सं ३४ । अ मन्थार ।

विशेष-सैखक प्रसस्ति निम्न प्रकार है-

सं० १९० वर्षे काह्लासंके तंबतट ग्रामे म्दुआरक भीभूषण दिव्य पंडित मङ्गल कुंत धास्त्र रत्नाकर नाम सास्त्र संपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७९ धर्मरसायन-पद्मनदि । पत्र सं २३ । मा १२×३ इञ्च । मापा-प्राकृत । विषय-धर्म ।

२ कास × । से कास × । पूर्णा । के सं ३४१ । अ मन्थार ।

७८० प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । से कास सं १७६७ बीजाब मुबी १ । के सं० ४३ । अ मन्थार ।

७८१ धर्मरसायन --- । पत्र सं० ५ । मा ११×२३ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-धर्म । २

कास × । से कास × । प्रपूर्णा । के सं १९९३ । अ मन्थार ।

७८२ धर्मसंग्रह --- । पत्र सं १ । मा १ × ४ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-धर्म । २० कास × ।

से कास × । पूर्णा । के सं० २१३३ । अ मन्थार ।

७८३ धर्मसंग्रहभावकाचार-पं० मेघाजी । पत्र सं ४० । मा १२×३ इञ्च । मापा-संस्कृत ।

विषय-धातक धर्म वर्णन । २० का सं १३४१ । से कास सं १३४२ कालिक मुबी ३ । पूर्णा । के सं १९९ । अ मन्थार ।

विशेष-प्रति बाइ में संशोधित की हुई है । मंगसावरण की कष्ट कर दूसरा मंगसावरण लिखा गया है । तथा पुष्पिका में दिव्य के स्थान में प्रतिवादिना धर्य जोड़ा गया है । सखक प्रसस्ति निम्न है-

श्री विष्णुसाहित्यरत्नसंग्रह संवत् १३४२ वर्षे कालिक मुबी ३ कुसविने श्री बर्द्धमानचैतन्यवधिराजमाने श्रीहिम र केरोजारतने सुसवालश्रीबहूलोत्साहिराज्यप्रवर्तमाने श्री मूससने नंघाम्नाये सारस्वतमन्त्रे बसत्कारपण म्दुआरक श्रीपद्मनधिरैवा । तन्पट्ट कुचसकलविकासनीकचन्द्र श्री सुमचन्द्रदेवाः । तन्पट्ट पटवर्कचक्रवर्तिहृत्तेषाः म्दुआरक श्री विनचन्द्रदेवाः तन्पुष्पिक्ये मंडमाचाम मुनि श्री रत्नकीर्तिः । तस्य दिव्यो विषयम्बर सृतिर्मुनि श्री विमलकीर्ति पंडितश्रीमीहालयः तराम्नाये श्रीतर्कामन्त्रये श्रीसा गोरी परमप्राणवसानु साधुनामा तरयाषा भार्या श्रीबहुरपावारविब मवततरा साध्वी मास्त्रिक्रिया तयो परमपाचारोत्पत्नी साधुमोजा-नेष्ठीमिपानी । साधुनाम्ना द्वितीय भार्या साध्वी इति नाम्नी । तन्पट्टनो निमित्तज्ञानविदारमभासुसावतामिषेकः अथ साधुमोजास्त्रीपातिप्रत्याबिपुसुनिसबाभोत्तविरि संज्ञा । तयो प्रथमपुत्रः साधुबामीष्य । तन्पुष्पिक्येबहुरारणार्थबदवचरीका साध्वी जनयोः । द्वितीय पुत्रः श्री निर नारिमिरी श्री नैमीधर बाबाकारक संवर्तित मन्हा नामा । तस्य मेहिनी कीलघामिनी जही इति संज्ञिका । तयोर्मेष्ठ पुत्रवन्पुष्पिक्येपशानविदररुपराबुध धर्मिशासः तस्य मानिनी मनेबहुलनामिनी साध्वी हिज सिरि नाम

धेया । द्वितीय पुत्र पचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदास तस्य भार्या विहितानेकधर्मकार्या गुणसिरि इति प्रसिद्धि तत्पुत्री चिरंजीविनी ससार चदराय चदाभिधानी । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नखानि साध्वी कमलप्री द्वितीयानेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सूवरीनामा तत्तनूज. सम्यक्त्वालंकृतद्वादशव्रतपालक । सद्यपति हूगराह । तस्त्वलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्र साधु लाडी नाम धेय । तयो सुतो देवपूजादिषट्क्रिया कमलिनीविकास-नैकमार्त्तण्डोपमो जिनदास तन्महिलाधर्मकर्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषा मध्येसद्यपति खल्हाख्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शातिदासनेमिदासयो न्योपाजितवित्तेन इद श्री धर्मसंग्रह पुस्तकपचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापित भव्याना पठनाय । निजज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं आचन्द्रावर्कादिनदत्ताम् ।

७८४. प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । कं भण्डार ।

७८५. प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १७८६ । वे० स० ३४२ । ड भण्डार ।

७८६. प्रति स० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल स० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० स० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४८ से ५५ । ले० काल स० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वे० स० १७३ । च भण्डार ।

७८८ प्रति सं० ६ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—भखतराम के शिष्य सपतिराम हरिवशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९ धर्मसंग्रहश्रावकाचार । पत्र स० ६६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
भावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार" । पत्र स० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
भावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४१ । ड भण्डार ।

७९१ धर्मशास्त्रप्रदीप । पत्र स० २३ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२ धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र स० ३६ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्मोपदेश । २० काल सं० १७२४ ग्रापाठ सुदी ५५ । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वे० स० ३३४ । क भण्डार

विशेष—तागवद्ध, धनुषवद्ध तथा चक्रवद्ध कविताओं के चित्र हैं । प्रति स० २ के आधार से रचना सवत् है

७९३. प्रति स० २ । ले० काल स० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वे० स० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सागानेर मे हुई थी ।

७९४. धर्मसार—प० शिरोमणिदास । पत्र स० ३१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०४० । अ भण्डार ।

७९५ प्रति सं० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८५ फागुण बुदी ५ । वे० स० ४६ । ग
भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने संवाई माजोपुरे मे सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७६६ धर्माभूतसूक्तिसमूह—आशाधर । पत्र सं ६५ । भा ११×४३ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
 आचारार्थं धर्म । र काल सं १२६६ । से काल सं १७४७ मासोक्त सुदी २ । पूर्ण । वै सं २६३ ।

विशेष—संज्ञत् १७४७ वर्षे मासोक्त सुदी २ बुधवासरे मयं द्वितीय मासपरम्य स्वयं पञ्चम्यत्रयत्तस्य-
 धिकानि चत्वारिमासानि ॥१७७६ ॥ स ॥

प्रतभुतमस्लेपी रम मुष्टिर्ष्य सिमापन्त्वा ॥

हुति प्रसस्य भीमानिदिन सम्भवरसी ॥ दुग्धा राधा ॥

संगर कङ्क मिषीभूगजरोमसू कम्मासं ।

एव सूर्ध विरस वज्जोपम्भापयशैण ॥ १ ॥

विरसं भी भी पद्या मुहं च पत्तं च शक्तिभो विज्जा ।

महवावि मत्र पत्तो मुंविज्ज गोरसायि ॥ २ ॥

हुति विरस भाषा ॥ धी ॥

रथनो का नाम धर्ममूल है । यह दो भागों में विभक्त है । एक सत्त्वाधर्माभूत तथा दूसरा प्रमागार धर्ममूल ।

७६७ धर्मोपदेशापीयूषभाषकाचार—सिंहनदि । पत्र सं ३६ । भा १ ३×४३ इत्य । भाषा—
 संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र काल × । से काल सं १७८३ मास सुदी १३ । पूर्ण । वै सं ४८ । ष
 मण्डार ।

७६८ धर्मोपदेशाभाषकाचार—धर्मोपदेश । पत्र सं ३३ । भा १ ३×४३ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—आचार शास्त्र । र काल × । से काल सं १७८३ मास सुदी १३ । पूर्ण । वै सं ४८ । ष मण्डार ।

विशेष—बोटा में प्रतिमिपि की गई थी ।

७६९ धर्मोपदेशाभाषकाचार—ब्रह्म नेमिन्ध । पत्र सं २६ । भा १ ×४३ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—आचार शास्त्र । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं २४३ । ष मण्डार । अन्तिम पत्र नहीं है ।

८०० प्रति सं ० २ । पत्र सं १५ । से काल सं १८६६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वै सं ८ । ष मण्डार ।

विशेष—भदानीचन्द्र ने स्वपठमार्ग प्रतिमिपि की थी ।

८०१ प्रति सं ० ३ । पत्र सं १८ । से काल × । वै सं २३ । ष मण्डार ।

८०२ धर्मोपदेशाभाषकाचार— । पत्र सं २६ । भा १ ३×४३ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
 आचार शास्त्र । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं १७४ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०३ धर्मोपदेशसमूह—सेमाराम साह । पत्र सं २१३ । भा १२×८८ इत्य । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—धर्म । र काल सं १८३८ । से काल × । वै सं ३६३ ।

विशेष—स्य रचना सं १८३८ में हुई किन्तु कुछ संस सं १८६१ में पूर्ण हुआ ।

८०४ प्रति सं ० १ । पत्र सं १६ । से काल × । वै सं ३६० । ष मण्डार ।

८०५ प्रति सं ० ३ । पत्र सं २७६ । से काल × । वै सं १८६३ । ट मण्डार ।

८०६ नरकदुःखवर्णन—भूधरदान । पत्र स० ३ । आ० १२×५३ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—नरक के दुखों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्श्वपुराण में से है ।

८०७ .प्रति स० २ । पत्र म० १० । ले० काल × । वे० स० ६६६ । अ भण्डार ।

८०८ नरकवर्णन । पत्र स० ८ । आ० १०^३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—नरकों का वर्णन ।

२० काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०९ नवकारश्रावकाचार । पत्र सं० १४ । आ० १०^३×४^३ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—

श्रावकों का आचार वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६१२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में खडेलवाल गोत्र वाली बाई तील्ह ने श्री आर्थिका विनय श्री को भेंट

किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्ष वैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसधे सरस्वती गच्छे बलात्कार-
गणे श्रीकु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्-
शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई
तील्ह इदं शास्त्र नवकारे श्रावकाचार ज्ञानावरणी कर्मक्षय निमित्त अजिका विनैसिरीए दत्त ।

८१०. नष्टोद्दिष्ट । पत्र स० ३ । आ० ८×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३३ । अ भण्डार ।

८११ निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र स० २ । आ० ८×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६८ । क भण्डार ।

८१२ नित्यकृत्यवर्णन । पत्र स० १२ । आ० १२×५^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । छ भण्डार ।

८१३. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३५६ । छ भण्डार ।

८१४. निर्माल्यदोषवर्णन—ब्रा० दुलीचन्द्र । पत्र स० ६ । आ० १०^३×८^३ भाषा—हिन्दी । विषय—
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । क भण्डार ।

८१५ निर्वाणप्रकरण । पत्र स० ६२ । आ० ६^३×८^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल स० १८६६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनैतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६ निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र स० ११ । आ० ११^३×७^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । २० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० मं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७ पञ्चपरमेष्ठीगुण्य— पत्र सं० १ । मा ७४२ ईश्व । माया—हिन्दी । विषय—धर्म । र
काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ११२० । अ मन्डार ।

८१८ पञ्चपरमेष्ठीगुण्यवर्णन—डाक्टराम । पत्र सं ७३ । मा ४३×४३ । माया—हिन्दी यथ ।
विषय—प्रसिद्ध सिद्ध प्राचार्य उपाध्याय एवं सर्व छात्र पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । र० काल सं १५१२
पत्रगुण सुवी १ । से काल सं १८१६ माया सुवी १२ । पूर्ण । वे० सं १७ । अ मन्डार ।

विषय—१ वे पत्र से हास्यमनुश्रेया माया है ।

८१९ पञ्चानंदिपंचविंशतिशत—पञ्चनदि । पत्र सं १ से ८१ । मा १२३×२ इश्व । माया—संस्कृत ।
विषय—धर्म । र काल × । से काल सं १३८६ शत सुवी १० । अपूर्णा । वे सं १९७१ । अ मन्डार ।

विषय—मैत्रिक प्रशस्ति अपूर्णा है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्म अग्रस्तवाम्नामे बंध गोत्रे कंडेलकाम्नामये रामधरिवस्तव्ये राम श्री जगन्नाथ राव्यप्रवर्तमाने सप्त
सीतपास—

८२० प्रति सं० २ । पत्र सं १२९ । से काल सं १३७ ज्येष्ठ सुवी प्रतिपदा । वे सं २४५ ।
अ मन्डार ।

विषय—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १३७ चर्षे ज्येष्ठ सुवी १ रवी की सुसंधि बसंतकरमले सप्तस्वती
गच्छे श्री कु वरु वाचार्थान्वये म० श्री सप्तमीतिस्त्वच्छिष्य भ भुवनेश्वरिस्त्वच्छिष्य भ श्री जगन्मूषण तच्छिष्य ब्रह्म
धरया पठनार्थ । हेसुनि प्राये वास्तव्ये व्या शयवाधम लिखित । सुभं वचतु ।

विषय सुवी पर सं ११०२ चर्षे लिखा है ।

८२१ प्रति सं० ३ । पत्र सं १ । से काल × । वे सं १२ । अ मन्डार ।

८२२ प्रति सं० ४ । पत्र सं २ । से काल सं १७७२ । वे सं ४९२ । अ मन्डार ।

८२३ प्रति सं० ५ । पत्र सं १३१ । से काल × । वे सं ४२० । अ मन्डार ।

८२४ प्रति सं० ६ । पत्र सं ३१ । से काल × । वे सं ४२१ । अ मन्डार ।

विषय—प्रति संस्य टीका सहित है ।

८२५ प्रति सं० ७ । पत्र सं ५६ । से काल सं १७४८ माघ सुवी ४ । वे सं १२ । अ
मन्डार ।

विषय—अट्ट ब्रह्म मे सर्वती वे प्रतिनिधि श्री श्री । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६ प्रति सं० ८ । पत्र सं ११९ । से काल सं १३७८ माघ सुवी २ । वे सं १३ । अ
मन्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १३७८ माघ सुवी २ बुधे श्रीमूलमये सप्तस्वतीगच्छ बसंतकरमले श्री
शुभुवाचार्थान्वय अट्टाष्टक श्री पंचमदि वैवास्तव्ये अट्टाष्टक श्री सप्तमीतिवैवास्तव्ये अट्टाष्टक श्री भुवनेश्वरिदेवकाल
स्वायु माचार्य श्री जगन्मूर्तिवैवास्तव्ये माचार्य श्री रामजीतिवैवास्तव्ये माचार्य श्री योगजीति उपदेशात् पूज्य

जातीय बागडदेशे सागवाह शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हबड जातीय गाधी श्री पोपट भार्या धर्मदिस्तयोःसुत गाधी रामा भार्या रामादे सुत हू गर भार्या दाडिमदे ताम्पा स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इय पचविंशतिका दत्ता ।

८२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल स० १६३८ आषाढ सुदी ६ । वे० स० ५४ । घ भण्डार
विशेष—बैराठ नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ४१८ । ङ भण्डार ।

८२९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५१ से १४९ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ४१९ । ङ भण्डार ।

८३०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ४२० । ङ भण्डार ।

८३१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ४२१ । ङ भण्डार ।

८३२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल स १६८२ पौष बुदी १० । वे० स० २९० । ज भण्डार

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

८३३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६८ । ले० काल स० १७३२ सावण सुदी ६ । वे० स० ४६ । व्य
भण्डार ।

विशेष—पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० काल स० १७३५ कार्तिक सुदी ११ । वे० स० १०८ । ज
भण्डार ।

८३५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल × । वे० स० २९४ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य सस्कृत टीका सहित है ।

८३६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल स० १५८५ वैशाख सुदी १ । वे० स० २१२० । ट
भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्षे वैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठासधे मात्रार्णिके (माथुरान्ने) पुष्करगणे भट्टारक
श्री हेमचन्द्रदेव । तत् " - ।

८३७. पद्मनन्दिपंचविंशतिटीका । पत्र सं० २०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल स० १९५० भाद्रवा बुदी ३ । अपूर्णा । वे० स० ४२३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं हैं ।

८३८. पद्मनन्दिपञ्चीसीभाषा—जगतराय । पत्र सं० १८० । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी
पद्य । २० काल स० १७२२ फागुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना औरङ्गजेब के शासनकाल मे आगरे मे हुई थी ।

८३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । २० काल स० १७५८ । वे० सं० २९२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

८४० पद्मनद्विष्वीमीभाषा—मन्नालाल त्रिभूका । पत्र सं १४१ । मा १३×८ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । र काल सं १११५ मंसिर बुदी ५ । म काल × । पूर्ण । वै सं ४१६ । क मन्थार

विषय—इस ग्रन्थ की रचना मिहना शोमभन्नी के पुत्र चौहरीलालजी ने प्राग्म की थी । 'मिह
न्युति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई । पुत्र मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया । रचनाकाल प्रति सं ३ क
भाषार में लिखा गया है ।

८४१ प्रति सं ० । पत्र सं ४१७ । ले काल × । वै सं ४१७ । क मन्थार ।

८४२ प्रति सं ३ । पत्र सं ३२७ । ले काल सं ११४४ चैत बुदी ३ । वै सं ४१७ । क
मन्थार ।

८४३ पद्मनद्विष्वीमीभाषा—..... । पत्र सं १७ । मा ११×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वै सं ४१८ । क मन्थार ।

८४४ पद्मनदिभालकाचार—पद्मनदि । पत्र सं ४ से ५३ । मा ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—भाषार शास्त्र । र काल × । ले काल सं १११३ । अपूर्ण । वै सं ४२८ । क मन्थार

८४५ प्रति सं २ । पत्र सं १ से ११ । ले काल × । अपूर्ण । वै सं २१७ । क मन्थार ।

८४६ परीयहर्षण— । पत्र सं १ । मा १ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र
काल × । ले काल × । पूर्ण । वै सं ४४१ । क मन्थार ।

विषय—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है ।

८४७ पुष्पदीपेय—..... । पत्र सं २ । मा १×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र काल × ।
म काल × । वै सं १२७ । पूर्ण । क मन्थार ।

८४८ पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं ११ । मा १३ $\frac{१}{२}$ ×२ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत
विषय—धर्म । र काल × । ले काल सं १७७ मंसिर बुदी ३ । वै सं ५३ । क मन्थार ।

विषय—आचार्य अकल्पित के शिष्य सदाराम ने काठुर्पुर में प्रतिलिपि की थी ।

८४९ प्रति सं २ । पत्र सं १ । ले काल × । वै सं ३३ । क मन्थार ।

८५० प्रति सं ३ । पत्र सं ३१ । ले काल सं १८३२ । वै सं १७८ । क मन्थार ।

८५१ प्रति सं ४ । पत्र सं ३८ । ले काल सं ११३४ । वै सं ४७१ । क मन्थार ।

विषय—स्तोत्रों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है ।

८५२ प्रति सं ५ । पत्र सं ५ । ले काल × । वै सं ४७२ । क मन्थार ।

८५३ प्रति सं ६ । पत्र सं १४ । ले काल × । वै सं १७ । क मन्थार ।

विषय—प्रति प्राचीन है । ग्रन्थ का दूसरा नाम बिन प्रबन्ध एख भी दिया हुआ है ।

८५४. प्रति स० ७ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ
भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८५५ प्रति सं० ८ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६ पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० ६७ । आ० ११३×५ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल म० १८२७ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७ प्रति स० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १६५२ । वे० सं० ४७३ । ड भण्डार ।

८५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । वे० स० ११८ । झ
भण्डार ।

८५९ पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र स० ११६ । आ० ११३×८ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल स० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क

८६०. पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र स० १३६ । आ० १३×७ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८६१ पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र स० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इच्छ । भाषा—
संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल म० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है । श्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२ प्रति सं० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

८६३. प्रति स० ३ । पत्र स० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क भण्डार ।

८६४ प्रतिक्रमण । पत्र स० १३ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।

८६५. प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च भण्डार ।

८६६ प्रतिक्रमण पाठ । पत्र स० २६ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय किये हुये
दोषों की आलोचना २० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।

८६७ प्रतिक्रमणसूत्र । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८ प्रतिक्रमण । पत्र स० २ से १८ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुये
दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

८६९ प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित) । पत्र स० २२ । आ० १२×४ इच्छ । भाषा—प्राकृत
संस्कृत । विषय किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । व भण्डार ।

८७० प्रतिमासत्वापक कू उपदेश—अग्ररूप । पत्र सं ४७ । मा ६×४ इत्य । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । र काल × । से काल सं १८२३ । पूर्ण । के सं ११२ । ग मन्थार ।

विशेष—श्रीरत्नाबाद में रचना की गयी थी ।

८७१ प्रत्याख्यान— । पत्र सं १ । मा १×४ इत्य । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र

काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १७७२ । ट मन्थार ।

८७२ प्रश्नोत्तरभावकाचार - । पत्र सं २३ । मा ११×८ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार

शास्त्र । र काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं १९१८ । ट मन्थार ।

विषय—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

८७३ प्रश्नोत्तरभावकाचारभाषा—बुझाकीदास । पत्र सं १६८ । मा ११×३ इत्य । भाषा—

हिन्दी उच्च । विषय—आचार शास्त्र । ३ काल सं १७४७ बैशाख सुदी २ । से काल सं १८८२ मगधिर सुदी ६ ।

व स ६२ । ग मन्थार ।

विषय—स्योत्तासजी व पुत्र छानूत्तासजी साहू ने प्रतिनिधि करादी । इस ग्रन्थ का ३ भाग बहामाबाद

तथा चौबार्द ४ भाग पत्नीपठ में लिखा गया था ।

तीन हिस्से या कल्प की भये बहामाबाद ।

चौबार्द असपन्न विवे श्रीतराम परसाद ॥

८७४ प्रति स २ । पत्र सं १६ । से काल सं १८८३ सावण सुदी १ । के सं ६३ । ग मन्थार ।

विशेष—स्योत्तासजी साहू ने सबार्द माधोपुर में प्रतिनिधि कराकर चौबार्दों के मन्थिर ग्रन्थ बढ़ाया ।

८७५ प्रति स० ३ । पत्र सं १५ । से काल सं १८६४ वैश्व सुदी ५ । के सं ३२१ । क

मन्थार ।

विषय—स १८२६ फागुण सुदी १३ की बलतराम घोषा ने प्रतिनिधि की थी श्रीर जसी प्रति स इस

की सबसे उठारी गई है । महामा सीताराम के पुत्र रामचन्द्र ने इसकी प्रतिनिधि की ।

८७६ प्रति स ४ । पत्र सं ११ । से काल × । व सं ६४८ । अपूर्ण । ग मन्थार ।

८७७ प्रति स० ५ । पत्र सं १५ । से काल सं १८६६ माघ सुदी २२ । के सं १८१ । इ

मन्थार ।

८७८ प्रति स० ६ । पत्र सं १२ । से काल सं १८८३ पौष सुदी १४ । के सं १८ । क

मन्थार ।

८७९ प्रश्नोत्तरभावकाचार भाषा—पद्मासाह चौबरी । पत्र सं ३४८ । मा १२,४×३ इत्य ।

भाषा—हिन्दी उच्च । विषय—आचार शास्त्र । र काल सं १८३१ पौष सुदी १४ । से काल सं १८३८ । पूर्ण ।

के सं ३१ । क मन्थार ।

८८० प्रति स० २ । पत्र सं ४ । से काल सं १८३६ । के सं ३१३ । क मन्थार ।

८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० २३१ से ४६० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६४६ । च भण्डार ।

८८० प्रश्नोत्तरश्रावकाचार . . । पत्र स० ३३ । आ० ११३X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १८३२ । पूर्ण । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६४७ । च भण्डार ।

८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१८ । ड भण्डार ।

८८५ प्रति सं० ४ । पत्र स० ३०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१६ । ड भण्डार ।

८८६ प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० १३१ । आ० ११X४ इञ्च । भाषा—

सरकृत । विषय—धर्म । र० काल X । ले० काल स० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सख्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६६५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रमचेत्यालये श्री

काष्ठासधे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० शीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ०

श्री सोमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयमेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री

रत्नभूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७ प्रति म० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० स० १७४ । अ

भण्डार ।

८८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १८८१ मगसिर सुदी ११ । वे० स० १६७ । अ

भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या

ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में अबावती (आमेर) बाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे

जती ननसागर के शिष्य मन्नालाल के यहाँ सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के घडों में (१२वें दिन पर)

श्याजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में स० १८६३ में भेंट की ।

८८९ प्रति स ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६०० । वे० स० २१७ । अ भण्डार ।

८९० प्रति सं० ५ । पत्र स० २१६ । ले० काल स० १६७६ आसोज बुदी ५ । वे० स० २११ । अ

भण्डार ।

विशेष—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि अनिवासरे रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावांसिध

राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवातत्पट्टे

भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तितत्पट्टे

भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिस्तदान्नाये गोधा गोत्रे जाचक-जनसदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित्त साह श्री धनराज

तद्भार्या सीमवीथ-वर्षिकृणी दिनव-वागेनरी धनमिरि तथा पुत्रा भय प्रथमपुत्रपमभुदापण पीरसाह भी न्ना तद्भार्या
 दामसीमगुणभूषणभूषितवभाभानान्ना पूररि तथा पुत्र रावतमा गृ नारहारस्वप्रतादिनकरमुद्रुतिहृतमगुद्रुमुद्रुमुद्रु-
 कर स्वय- --निसाकरमाभारिष कुवममदामगुण मन्त्रीभूतकनपादप भी पंचपरमेष्टिकितन गकिचितकित सवमगुणि-
 जनविभामस्वान साह भी मन्त्रुतमनोरमा पंच प्रथमभार्यदे द्वितीया हरकमर कुवीया मुत्रानदे चतुर्था सनासदे पंचम
 भार्या साडी । हरकमदेजनितपुत्राः भय स्वकुममामप्रवारीमैवचन्द्राः प्रथम पुत्र साह धादाकर्म तद्भार्या मईकारदेपुत्र
 नाशु । कुवीभार्यामाइमदे पुत्र केसवदास भार्या चतुर्थे द्वितीय पुत्र चि नृगणरण भार्या हे प्रथमसमताते पुत्र रामवर्ग
 द्वितीय साइमदे । कुवीय पुत्र चि बलिचर्गा भार्या बलमदे । चतुर्थ पुत्र चि पूर्णमल भार्या पुरवद । साह मनराज द्विती
 पुत्र साह धो प्रोभा तद्भार्या बीणादेतयो पुत्रसमय प्रथमपुत्रपामिक साह नरमचन्द तद्भार्या सोहादे तयो पुत्र चि
 द्यात्मदास भार्या बाइमदे । द्वितीयपुत्र साह धर्मदास तद्भार्याडे । प्रथम भार्या धारदे द्वितीय भार्या लाइमदे तयो पुत्र साह
 हू गरसी तद्भार्या बाइमदे तसुत्री इ । प्र पु मन्मीदास द्वि पुत्र चि तुमसीदाम । जोना कुवीय पुत्र त्रिणचरणकमल
 मभुप साह पदारप तद्भार्या हुमीरदे । साह मनराज कुवीय पुत्र दानगुणधेयांससकस जनान्दवारनस्वचचमप्रतिपासन
 कर्मसर्वोपकारकसाहपीरतनसी तद्भार्या इ प्रथम भार्या रतनादे द्वितीय भार्या मौसादे तयो पुत्राध्वजार प्रथम पुत्र
 सुपास तद्भार्या सुप्यारदे तयो पुत्र चि भोजराज तद्भार्या भावकदे । भीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरादे
 तयोपुत्रा भय प्रथम पुत्र चि साहू न द्वि पुत्र चि मिषा कुवीय पुत्र चि ससहरी । साह रतनसी कुवीय पुत्र साह
 मर्या तद्भार्या मावसते चतुर्थ पुत्र चि परबत तद्भार्या पाटमदे । एतेया मध्ये चिपची भी मल्ल भार्या प्रथम नारंगदे ।
 मन्त्रुत्प्रीचन्कीति सिव्य धा भी कुमचन्द्र इई साप्प प्रतनिमित्त बटापित कर्मधयनिमित्त । कामचान ज्ञानदाने--

८६१ प्रति सं० ६ । पत्र सं ४६ मे १९४ । से काल X । मपूर्व । वे सं ११८३ । क मन्धार ।
 ८६२ प्रति सं० ७ । पत्र सं १३ । से काल सं १८६२ । मपूर्व । वे सं १ १६ । क मन्धार ।
 विशेष—प्रशस्ति मपूर्व है । बीच के कुछ पत्र लुप्त हैं । पं केवरीचिह के सिव्य सासकन्द मे महत्पमा
 मन्पुराम से सवाई जयपुर में प्रतिलिपि करायी ।

८६३ प्रति सं ८ । पत्र सं ११५ । से काल सं ११८२ । वे सं ५११ । क मन्धार ।
 ८६४ प्रति सं० ९ । पत्र सं ८१ । से काल सं ११८८ । वे सं ३२ । क मन्धार ।
 ८६५ प्रति सं० १० । पत्र सं २२१ । से काल सं १६७७ पीप मुरी । वे सं ५१७ । क
 मन्धार ।

८६६ प्रति सं० ११ । पत्र सं ११ । से काल सं १८८ । वे सं ११५ । क मन्धार ।
 विशेष—पं क्यचन्द मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की गी ।

८६७ प्रति सं १२ । पत्र सं ११६ । से काल X । वे सं ९४ । क मन्धार ।
 ८६८ प्रति सं० १३ । पत्र सं २ से २६ । से काल X । मपूर्व । वे सं ५१७ । क मन्धार ।
 ८६९ प्रति सं १४ । पत्र सं ९६ । से काल X । मपूर्व । वे सं ५१७ । क मन्धार ।
 ६०० प्रति सं० १५ । पत्र सं १२६ । से काल X । वे सं ५९ । क मन्धार ।

६०१ प्रति स० १६ । पत्र स० १४५ । ले० काल X । वे० स० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र वाद मे लिखा हुआ है ।

६०२ प्रति स० १७ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ

भण्डार ।

६०३ प्रति सं० १८ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० स० १०९ ।

विशेष—पाचोलास मे चातुर्मास योग के समय प० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे घासीराम छाबडा ने सागनेर में गोधों के मन्दिर मे चढाई ।

६०४ प्रति सं० १९ । पत्र स० १६० । ले० काल स० १८२६ मगसिर बुदी १४ । वे० स० ७८ ।

व्य भण्डार ।

६०५ प्रति स० २० । पत्र स० १३२ । ले० काल X । वे० स० २२३ । व्य भण्डार ।

६०६ प्रति स० २१ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १७५९ मगसिर बुदी ८ । वे० स० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति स० २२ । पत्र स० १६४ । ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० ३७५ । व्य

भण्डार ।

६०८ प्रति स० २३ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० स० ३४३ । व्य

भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इद पुस्तकं लिखापित ।

६०९. प्रति स० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल X । वे० स० १८७३ । ट भण्डार ।

६१० प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र सख्या ५० । आ०-१०^३×५^३ इत्त्व । भाषा-हिन्दी । विषय-
आचार शास्त्र । २० काल-X । ले० काल-स० १९०५ सावन बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १९९ । छ भण्डार ।

विशेष—चूरु नगर मे स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११ प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र सख्या १९ । आ० ६^३×४^३ इत्त्व । भाषा-संस्कृत ।
विषय-धर्म । २० काल-X । ले० काल-स० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० स० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—बस्तराम के शिष्य शम्भु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देव सर्व विघ्न विनाशन ।

गुरु च करुणानाथ ब्रह्मानदाभिधानक ॥१॥

प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

चतुर्णामपि वर्णाना क्रमत कार्यकारिका ।

निख्यते सर्वविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

यस्या सजन मन्त्रेण विद्याकीर्तिपगोपि च ।

प्रतिष्ठा सम्पद्ये शीघ्रमनायामेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२ प्रायश्चित्त विधि— । पत्र सं ४ । मा १२×५^३ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।
र काल—X । स काल—X । पूर्ण । वे सं १६१६ । अ मण्डार ।

६१३ प्रायश्चित्त विधि— । पत्र सं ३ । मा ११×६ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्य ह्य
दायों की प्राप्तिबना । र काल—X । स काल—X । पूर्ण । वे सं १५२ । अ मण्डार ।

६१४ प्रायश्चित्त विधि—अकलक वृष । पत्र सं १ । मा ६×४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
विषय—विद्य ह्य दायों की प्राप्तिबना । र काल—X । स काल—X । पूर्ण । वे सं १५२ । अ मण्डार ।

६१५ प्रति सं २ । पत्र सं २६ । स काल—X । वे सं १५२ । अ मण्डार ।

विषय—१ पत्र स प्राये क्षम्य अ वा के प्रयश्चित्त पात्रों का संघह है ।

६१६ प्रति सं ३ । पत्र सं ४ । स काल सं १६३४ क्षेत्र बुद्धी १ । वे सं ११७ । अ मण्डार ।

विषय—२ पत्रालाम ने जोबनेर क मंदिर जयपुर प्रतिनिधि की थी ।

६१७ प्रति सं ४ । स काल—X । वे सं ५२३ । अ मण्डार ।

६१८ प्रति सं २ । स काल—सं १७४४ । वे सं २४४ । अ मण्डार ।

विषय—भाषार्थ महेश्वरिणी ने दू बावती (संवावती) में प्रतिनिधि की ।

६१९ प्रति सं ५ । स काल—सं १७६६ । वे सं ८ । अ मण्डार ।

विषय—बाक नगर में पं हीरालंद के विष्णु पं चोक्तवन्त्र में प्रतिनिधि की थी ।

६२० प्रायश्चित्त विधि— । पत्र सं ५६ । मा ६×४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्य ह्य
दायों की प्राप्तिबना । र काल—X । स काल सं १८५ । पूर्ण । वे सं —१२८ । अ मण्डार ।

विषय—२२ वां ठपा २६ वां पत्र नहीं है ।

६२१ प्रायश्चित्त विधि— । पत्र सं ६ । मा ८^३×४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्य
ह्य दायों का पश्चात्ताप । र काल—X । स काल—X । पूर्ण । वे सं १२८१ । अ मण्डार ।

६२२ प्रायश्चित्त विधि—अ० एकमधि । पत्र सं ४ । मा ६×४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
विद्य ह्य दायों की प्राप्तिबना । र काल—X । स काल—X । पूर्ण । वे सं ११७ । अ मण्डार ।

६२३ प्रति सं १ । पत्र सं २ । स काल—X । वे सं २४६ । अ मण्डार ।

विषय—प्रतिष्ठामार का क्षम्य अर्थात् है ।

६२४ प्रति सं ३ । स काल सं १७६६ । वे सं ३३ । अ मण्डार ।

६२५ प्रायश्चित्त शास्त्र—इन्द्रनमि । पत्र सं १४ । मा १ ×४ इत्य । भाषा—प्राकृत ।
विषय—विद्य ह्य दायों का पश्चात्ताप । र काल—X । स काल—X । पूर्ण । वे सं १६३ । अ मण्डार ।

६२६ प्रायश्चित्त शास्त्र— । पत्र सं ६ । मा १ ×४ इत्य । भाषा—गुजराती (निधि

देवनागरी) विषय—किये हुए दोषा की आलोचना २० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० स० १९६८ । ट भण्डार ।

६२७ प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नदिगुरु । पत्र स० ८ । आ० १२×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए दोषो की आलोचना । २० काल-× । ले० काल-स० १९३४ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ११८ । ख भण्डार ।

६२८ प्रोषध दोष वर्णन । पत्र स० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । वे० स० १४७ । पूर्ण । छ भण्डार ।

६२९. बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द । पत्र स० ३२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल-स० १९४१ वैशाख सुदी ५ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स० ५३२ । क भण्डार ।

६३० बाईस अभक्ष्य वर्णन × । पत्र स० ९ । आ० १०×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० स० ५३३ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति सशोधित है ।

६३१ बाईस परीपह वर्णन—भूधरदास । पत्र स० ६ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—मुनियो द्वारा सहन किये जाने योग्य परीपहो का वर्णन । २० काल १८ वी गताव्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९९७ । अ भण्डार ।

६३२ बाईस परीपह × । पत्र स० ६ । आ० ९×४ भाषा—हिन्दी । विषय—मुनियो के सहने योग्य परीपहो का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९९७ । ड भण्डार ।

६३३ बालाविवेध (णमोकार पाठ का अर्थ) × । पत्र स० २ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ । भाषा प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४ बुद्धि विलास—बखतराम साह । पत्र स० ७५ । आ० ७×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—आधार शास्त्र । २० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । ले० काल स० १८३२ । पूर्ण । वे० स० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० १९५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६. ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन × । पत्र स० ४ । आ० ८×५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० पूर्ण । वे० स० २३१ । झ भण्डार ।

६३७ बौधसार × । पत्र स० ३७ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १९२८ । काती सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बौधसर्पय की आम्नाय की मान्यतानुसार है ।

६३८ मगवद्गीता (कृष्णार्जुन सवाद) - X । पत्र सं २२ से ४६ । मा १३ X ५ इत्य । मापा-
हिन्दी । विषय-बौद्धिक साहित्य । र काल X । से काल X । अपूर्ण । वे सं १५६७ । ट मन्डार ।

६३९ मगवती आराधना-शिवार्च्य । पत्र सं ३२१ । मा ११ १/२ इत्य । मापा-प्राकृत ।
विषय-मुनि धर्म ब्रह्म । र काल X । से काल X । पूर्ण । वे सं ५४९ । क मन्डार ।

६४० प्रति सं २ । पत्र सं ११२ । से काल X । वे सं ५५ । क मन्डार ।
विशेष-पत्र ६९ तक संस्कृत में भाषाओं के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

६४१ प्रति सं ३ । पत्र सं ११ । से काल X । वे सं २५९ अ मन्डार ।
विशेष-प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये हैं ।

६४२ प्रति सं ४ । २९५ । से काल X । वे सं २९ अ मन्डार ।
विशेष-संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६४३ प्रति सं ५ । पत्र सं ३१ से काल X । अपूर्ण । वे सं ६३ । अ मन्डार ।
विशेष-कृती २ संस्कृत में टोका भी थी है ।

६४४ मगवती आराधना टीका-अपराधितसूरि श्रीमद्दिगम्ब । पत्र सं ४३४ । मा १२ X ६
इत्य । मापा-मसकृत । विषय-मुनि धर्म वर्णन । र काल X । से काल सं १७९३ माघ सुदी ७ पूर्ण । वे सं
२७६ । अ मन्डार ।

६४५ प्रति सं ७ । पत्र सं ३१५ । से काल सं १५९७ वैशाख सुदी ६ । वे सं ३३१ ।
अ मन्डार ।

६४६ मगवती आराधना भाषा-प० सवासुख काससीबाबू । पत्र सं ६७ । मा १२ X ८ इत्य । मापा-हिन्दी ।
विषय-धर्म । र काल सं १९८ । से काल X । पूर्ण । वे सं ५४८ । क मन्डार ।

६४७ प्रति सं २ । पत्र सं ६३ । से काल सं १९५५ माघ सुदी १३ । वे सं ५६ । क
मन्डार ।

६४८ प्रति सं ३ । पत्र सं ७२२ । से काल सं १९११ जेठ सुदी ९ । वे सं ६६२ । अ
मन्डार ।

६४९ प्रति सं ४ । पत्र सं ५७ से ५१९ । से काल सं १९२८ वैशाख सुदी १ । अपूर्ण ।
वे सं २५३ । अ मन्डार ।
विशेष-यह ग्रन्थ हीरामालवी बगवा का है । मिति १९४२ माघ सुदी १ को धार्धार्य जी के कर्मबहुत
व्रत के उद्योग में बढ़ाई ।

६५० प्रति सं ५ । पत्र सं ५६ । से काल X । अपूर्ण । वे सं ३५ । अ मन्डार ।
६५१ प्रति सं ६ । पत्र सं ३२५ । से काल X । अपूर्ण । वे सं १९९७ । ट मन्डार ।

६५१ भावदीपक—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १ से २७७ । आ० १०×५३ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल—स० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्णा । वै० सं० ६५६ ।

च भण्डार ।

६५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । २० काल × । ले० काल—स० १६०४ कार्तिक सुदी १० ।

वै० सं० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. भावनासारसग्रह—चामुण्डराय । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—स० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्णा । वै० सं० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखितं वाई धानी कर्मध्यनिमित्त ।

६५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ५ । वै० सं० २११६ ।

ट भण्डार ।

६५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल—× । अपूर्णा । वै० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

६५७ भावसग्रह—देवसेन । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल—× । ले० काल—स० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्णा । वै० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रथ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगड महादुर्यो महाराज श्री रामचद्रराजप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यानवये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ।

६५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल—स० १६०४ भाद्रवा सुदी १५ । वै० सं० ३२६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भीमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे घृतनाम्नियोगे सुरित्राण मानेमसाहिराज्यप्रवर्तमाने सिकदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठानघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीभानुकीर्ति तस्य शिक्षणी वा० मोमा योग्य भावसग्रहाव्य शास्त्र प्रदत्त ।

६५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल—× । वै० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

६६० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल—स० १८६४ पौष सुदी १ । वै० सं० ५५८ ।

क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६६१ प्रति सं० ५। पत्र सं ७ से ४५। न० कास-सं १३६४ फलकण बुकी ३। अपूर्ण।
के सं २१६३। ट मण्डार।

६६२ प्रति सं० ६। पत्र सं ४। न० कास-सं १३७१ मण्डार बुकी ११। के सं २१६६।
ट मण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—

संस्कृत १५७१ वर्षे आत्माठ बरि ११ आदित्यनारै पेरोगा साहे। श्री मूससंबे पंडितबिरुगुबामन लिखावितं।

६६३ प्रति सं० ७। पत्र सं ६। न० कास- \times । अपूर्ण। के सं २१७६। ट मण्डार।

विशेष—६ से आगे पत्र नहीं है।

६६४ भावसमूह—भुतमुनि। पत्र सं ५६। मा १२ \times ५३ इच्च। भाषा—प्राकृत। विषय—
धर्म। ८ कास- \times । न० कास-सं १७६२। अपूर्ण। के सं ३१६। क मण्डार।

विशेष—बीसवां पत्र नहीं है।

६६५ प्रति सं० १। पत्र सं १। न० कास- \times । अपूर्ण। के सं २३३। क मण्डार।

६६६ प्रति सं० ३। पत्र सं ५६। न० कास-सं १७७३। के सं ५६६। क मण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६६७ प्रति सं० ४। पत्र सं १। न० कास- \times । के सं १८४१। ट मण्डार।

विशेष—कही २ संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं।

६६८ भावसमूह—प० बामदेव। पत्र सं २७। मा १२ \times ६६ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
धर्म। ८ कास- \times । न० कास सं १८२८। पूर्ण। के सं ३१७। क मण्डार।

६६९ प्रति सं० २। पत्र सं १४। न० कास- \times । अपूर्ण। के सं १३४। क मण्डार।

विशेष—१ बामदेव की पूर्ण प्रशस्ति भी हुई है। २ प्रतिबों का मिश्रण है। अक्ष के कुछ पानी में मीये
हृय है। प्रति प्राचीन है।

६७० भावसमूह—। पत्र सं १४। मा ११ \times ५३ इच्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म।
८ कास- \times । न० कास- \times । के सं १३३। क मण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। १४ से आगे पत्र नहीं है।

६७१ मनोरथमाहा—। पत्र सं १। मा ७ \times ४ इच्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म।
८ कास- \times । न० कास- \times । पूर्ण। के सं ३७। क मण्डार।

६७२ मरकतबिज्ञास—यमाशाल। पत्र सं ६१। मा १२ \times ६३ इच्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
आधुनिक धर्म वर्णन। ८ कास- \times । न० कास- \times । अपूर्ण। के सं ६६२। क मण्डार।

६७३ मिथ्यात्ववहन—बलतराम। पत्र सं ३८। मा १४ \times ५३ इच्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)।
विषय—धर्म। ८ कास-सं १८२१ पीठ बुकी ५। न० कास-सं १८६२। पूर्ण। के सं ३७७। क मण्डार।

६७४. प्रति स० २ । पत्र स० १७० । ले० काल-× । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

६७५. प्रति स० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-स० १८२४ । वे० स० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३७ से १०५ । ले० काल-× । अपूर्णा । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७. मिथ्यात्वखंडन । पत्र स० १७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल-× । ले० काल-× । अपूर्णा । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल-× । अपूर्णा । वे० स० ५६४ । ङ भण्डार ।

६७९. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र स० ३६८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—

प्राकृत सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-स० १८२६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण ।

वे० स० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र स० ३७३ । ले० काल-× । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१. प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल-× । अपूर्णा । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीं है ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र स० १२६ । आ० १२ इञ्च×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत ।

विषय—आचारशास्त्र । २० काल-× । ले० काल-स० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी ।

६८३. प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल-× । वे० स० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति स० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल-× । वे० स० २७७ । च भण्डार ।

६८५. प्रति स० ४ । पत्र स० १५५ । ले० काल-× । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रति स० ५ । पत्र स० ६३ । ले० काल-स० १८३० पौष सुदी २ । वे० स० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—प० चोखचद के शिष्य प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति स० ६ । पत्र स० १८० । ले० काल-स० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० स० १०१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८८. प्रति स० ७ । पत्र स० १३७ । ले० काल-स० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ ।

अ भण्डार ।

६८९. मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र स० ३० से ६३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १८८८ । ले० काल-स० १८६१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार ।

६६० मूलाचार भाषा। पत्र सं ३० स ११। भा १ ३×८ इत्य। भाषा-हिन्दी। विषय-
आचार शास्त्र। १ काल-×। ले काल-×। प्रपूर्णा। वे सं २१७।

६६१ प्रति स० २। पत्र सं १ से १ ३४६ से ३९०। भा १ ३×८ इत्य। भाषा-हिन्दी।
विषय-आचार शास्त्र। १० काल-×। स काल-×। प्रपूर्णा। वे सं २१८। क मन्थार।

६६२ प्रति स० ३। पत्र सं १ से ८१ १ १ से ९ । स काल-×। प्रपूर्णा। वे सं ९ ।

६६३ मौल्यपीठी—बनारसीदास। पत्र सं १। भा ११२×६३ इत्य। भाषा-हिन्दी। विषय-
धर्म। १ काल-×। ले काल-×। पूर्णा। वे सं ७१५। क मन्थार।

६६४ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल-×। वे सं १ २। क मन्थार।

६६५ मौल्यमार्गप्रकारक—प० टोडरमल। पत्र सं ३२१। भा १२३×८ इत्य। भाषा-ब्रह्मरी
(राजस्थानी) मन्थ। विषय-धर्म। १ काल-×। ले काल-सं ११२४ भाषण मुदी १४। पूर्णा। वे सं १८३।
क मन्थार।

विषय—ब्रह्मरी मन्थों के लक्षण पर कुछ हिन्दी के संस्कृत श्लोकों को लिखे हुये हैं।

६६६ प्रति स० २। पत्र सं २८२। ले काल-सं ११२४। वे सं २८४। क मन्थार।

६६७ प्रति स० ३। पत्र सं २१२। ले काल-सं ११४। वे सं २६३। क मन्थार।

६६८ प्रति स० ४। पत्र सं २१२। ले काल-सं १८८८ संज्ञात्त मुदी १। वे सं १८।

क मन्थार।

विषय—शास्त्रालय साहू ने प्रतिलिपि कराई थी।

६६९ प्रति स० ५। पत्र सं २२८। ले काल-×। वे सं १ ३। क मन्थार।

१००० प्रति स० ६। पत्र सं २७६। ले काल-×। वे सं १३८। क मन्थार।

१००१ प्रति स० ७। पत्र सं १ १ से २१९। ले काल-×। प्रपूर्णा। वे सं १३९।

क मन्थार।

१००२ प्रति स० ८। पत्र सं १२३ से २२५। ले काल-×। प्रपूर्णा। वे सं १९। क मन्थार।

१००३ प्रति स० ९। पत्र सं ३५१। ले काल-×। वे सं ११९। क मन्थार।

१००४ पतिविनयार्थ—बैजसूरि। पत्र सं २१। भा १ ३×४ इत्य। भाषा-प्राकृत। विषय-
आचार शास्त्र। १ काल-×। ले काल-सं १११८ संज्ञात्त मुदी १। पूर्णा। वे सं ११२९। क मन्थार।

विषय—प्रसिद्ध पुष्पिका विनय प्रकार है—

इति श्री मुनिवृत्तिसिरोमणिश्रीबैजसूरिचिरविता पतिविनयार्थं संपूर्णा।

प्रसिद्धि—संवत् १६१८ वर्षे वैशखमासे शुक्लपक्षे नवमीप्रीमवाचरे श्रीमत्पद्मस्यशापरान्त मठारक
श्री श्री ५ विजयमेज सुटीचराम लिखितं ग्यातिथी चक्रम श्री सुजाठलपुरे।

१० ५ परम्याचार—भा० बसुनदि। पत्र सं ९। भा १२३×३ इत्य। भाषा-प्राकृत। विषय-

मुनि धर्म वर्णन । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६ रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ७ । आ० १०^३×५^३ इच्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । अथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टिप्पणियाँ दी हुई हैं । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह सुदी १० । वे० सं०

१५६ । ख भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टिप्पणियाँ दियी हैं ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३० । ङ भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । ङ भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२ । ले० काल-× । वे० सं० ६३४ । ङ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५ प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पन्नालाल सघी कृत टीका भी है । टीका सं० १६३१ में की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१७ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल-सं० १६५० । वे० सं० ६३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८ प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३९ । ङ भण्डार ।

१०१९ प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । च भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२० प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

- १०२३ प्रति स० १८ । पत्र सं १३ । से नाम-× । के सं २६५ । च मण्डार ।
 १०२४ प्रति स० १६ । पत्र सं ११ । से नाम-× । के सं ७४ । च मण्डार ।
 १० ५ प्रति स० १० । पत्र सं १३ । से नाम-× । के सं ७४२ । च मण्डार ।
 १०२६ प्रति स० २१ । पत्र सं १३ । से नाम-× । के सं ७४३ । च मण्डार ।
 १०२७ प्रति स० २२ । पत्र सं १ । से नाम-× । के सं ११ । छ मण्डार ।
 १० ८ प्रति स० ३ । पत्र सं १० । से नाम-× । के सं १४४ । ज मण्डार ।
 १० ६ प्रति स० २४ । पत्र सं १६ । से नाम-× । अपूर्ण । के सं ६२ । म मण्डार ।
 १०३० प्रति स० २५ । पत्र सं १२ । से नाम-सं १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । के सं १३५ ।

म मण्डार ।

१०३१ रसकरण्यभावकाचार टीका—प्रभाषणम् । पत्र सं ८३ । मा १ ३×३३ इत्थ । माया-
 सन्धुत । विषय—आचार शास्त्र । र नाम-× । से नाम-सं १५६ भाषण सुदी ७ । पूर्ण । के सं ३१९ ।
 अ मण्डार ।

- १०३२ प्रति सं० २ । पत्र सं २२ । से नाम-× । के सं १ १५ । अ मण्डार ।
 १० ३ प्रति स० ३ । पत्र सं ११-१३ । से नाम-× । अपूर्ण । के सं ३८ । अ मण्डार ।
 १०३४ प्रति स० ४ । पत्र सं ३६-३२ । से नाम-× । अपूर्ण । के सं ३२६ । अ मण्डार ।
 विषय—इसका नाम आचारशास्त्र नाम टीका जो है ।

- १०३५ प्रति स० ५ । पत्र सं १६ । से नाम-× । के सं १३६ । अ मण्डार ।
 १ ३६ प्रति स० ६ । पत्र सं ४५ । से नाम-सं १७०६ फागुण सुदी ५ । के सं १७४ ।
 अ मण्डार ।

विषय—सट्टारक मुरेश्वरकीर्ति की प्रामाण्य में ललितनाम राष्ट्रीय सीमा गोत्रोत्पत्त साहू सुब्रह्मण्य व
 शंकर साहू अग्रभाग की भार्या स्त्रीकी ने प्रथम की प्रतिसिद्धि कटाकर प्रामाण्य अग्रकीर्ति के सिद्ध हर्षकीर्ति के लिये
 कर्मक्षय निमित्त मंत्र की ।

- १०३७ रसकरण्यभावकाचार—५० सदासुख कासलीवासा । पत्र सं १ ४२ ।
 मा १२ ५८ इत्थ । माया—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र नाम सं १६२ वैश्व सुदी १४ ।
 से नाम सं १६४१ । पूर्ण । के सं ६१६ । अ मण्डार ।

विषय—अथ २ केत्या में है । १ स ४५७ तथा ८७६ से १ ४२ तक है । प्रति सुन्दर है ।

- १०३८ प्रति सं० २ । पत्र सं ५६९ । से नाम-× । अपूर्ण । के सं ६२ । अ मण्डार ।
 १०३९ प्रति स० ३ । पत्र सं ६१ से १७६ । से नाम-× । अपूर्ण । के सं ६४२ । अ मण्डार ।
 १ ४० प्रति स० ४ । पत्र सं ४१६ । से नाम—प्रामाण्य सुदी ८ सं १६२१ । के सं ६६६ ।
 अ मण्डार ।

- १०४१ प्रति स० ५ । पत्र सं ६१ । से नाम-× । अपूर्ण । के सं ६७ । अ मण्डार ।
 विषय—नेमीचंद्र नामक नाम के लिये और सदासुखकी देवायने मिरासा—यह पद्य में लिया हुआ है ।

१०४० प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल—X । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—“इस प्रकार मूलग्रथ के प्रसाद तै सदामुखदास डेडाका का अपने हस्त तै लिखि ग्रथ समाप्त किया ।”

अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २२१ । ले० काल—स० १६६३ कार्तिक बुदी ५५ । वे० सं० १६८ ।

छ भण्डार ।

१०४४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३६ । ले० काल—स० १६५० वैशाख सुदी ६ । वे० सं० ।

झ भण्डार ।

विशेष—इस ग्रथ की प्रतिलिपि स्वयं सदामुखजी के हाथ में लिखे हुये सं० १६१६ के ग्रथ से सामोद में प्रतिलिपि की गई है । महामुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५ रत्नकरगण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—स० १६२० माघ सुदी ६ । ले० काल—X । वे० सं० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल—X । वे० सं० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल—X । वे० सं० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८ रत्नकरगण्डश्रावकाचार—सधी पन्नालाल । पत्र सं० ४४ । आ० १०३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—स० १६३१ पौष बुदी ७ । ले० काल—स० १६५३ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल—X । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०५० प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल—X । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल—X । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२ रत्नकरगण्डश्रावकाचार भाषा । पत्र सं० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—स० १६५७ । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७० । ले० काल—स० १६५३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल—X । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ से २५६ । ले० काल—X । अपूर्ण । वे० सं० ६४० । छ भण्डार ।

१०५६ रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र सं० ४ । आ० ११२×४२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ —

सर्वज्ञ सर्ववागीश वीर मारमदायह ।

प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

सारं क्लृप्तमैतरेषु षट् यद्भित्तेष्वपि ।

अनेकान्तमयं षडि तदहैव षडनं सदा ॥२॥

भोक्तिम्—यो नित्यं पठति धीमान् एतन्मातामिमांषरा ।

समुद्रचरणो मूर्तं शिवकोटिष्वमाप्नुयात् ॥

इति श्री समन्तमय स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विचिता एतन्माता उवाच ।

१०५७ प्रति स० २ । पत्र सं ५ । से काल- \times । वे सं २११५ । अ मण्डार ।

१०५८ रथस्यसार—कुम्भकुम्भाचार्य । पत्र सं १० । मा १ \times ५५ इत्य । माया—प्रकृत ।

विषय—भाषार शास्त्र । र काल- \times । से काल-स १८५३ । पूर्ण । वे सं १४९ । अ मण्डार ।

१०५९ प्रति स० २ । पत्र सं १ । से काल- \times । वे सं १८१ । अ मण्डार ।

१०६० रात्रि मोक्षन त्याग वर्णन— । पत्र सं १९ । मा १२ \times ४ इत्य । माया—हिन्दी ।

विषय—भाषार शास्त्र । र काल- \times से काल- \times । पूर्ण । वे सं ४५५ । अ मण्डार ।

१०६१ राधाकम्बोत्सव— । पत्र सं १ । मा १२ \times ६ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—धर्म ।

र काल- \times । से काल- \times । पूर्ण । वे सं ११३१ । अ मण्डार ।

१०६२ रक्तिभिभाग प्रकरण— । पत्र सं २१ । मा १३ \times ७ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—

भाषार शास्त्र । र काल- \times । से काल- \times । पूर्ण । वे सं ५७ । अ मण्डार ।

१०६३ कमुस्यमायिक पाठ— । पत्र सं २ । मा १२ \times ७ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—धर्म ।

र काल- \times । से काल-सं १५१४ । पूर्ण । वे सं २२१ । अ मण्डार ।

विषय—प्रवृत्ति—

१८१४ महाहन सुषी १५ सनै बुन्दी मधे नेमनाथ जैत्यासे मित्तिर्त श्री बैरक ति भाषारम सीरोज के पदु स्वयं हूस्ते ।

१०६४ प्रति स० २ । पत्र सं १ । से काल- \times । वे सं १२४९ । अ मण्डार ।

१०६५ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । से काल- \times । वे सं १२२ । अ मण्डार ।

१०६६ साधुसामायिक— । पत्र सं ३ । मा ११ \times ५३ इत्य । माया—संस्कृत—हिन्दी । विषय—

धर्म । र काल- \times । से काल- \times । पूर्ण । वे सं ९४ । अ मण्डार ।

१०६७ साटीसंहिता—राजमह । पत्र सं ७ । मा ११ \times २ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—भाषार

शास्त्र । र काल-सं १९४१ । से काल- \times । पूर्ण । वे सं ५८ ।

१०६८ प्रति स० २ । पत्र सं ७३ । से काल-सं १८६७ पैसाब कुरी— । विषय—

वे सं ६११ । अ मण्डार ।

१०६९ प्रति स० ३ । पत्र सं ५१ । से काल-सं १८६७ मैत्रिक कुरी ३ । वे सं ६१६ ।

अ मण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७०. वज्रनाभि चक्रवर्ति की भावना—भूधरदास । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । २० काल—X । ले० काल—X पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण में से है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल—स० १८८८ पौष सुदी २ । वे० सं० ६७२ । अ भण्डार ।

१०७२ वनस्पतिसन्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३ वसुनदिश्रावकाचार—आ० वसुनदि । पत्र सं० ५६ । आ० १० $\frac{3}{4}$ ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल—X । ले० काल—सं० १८६२ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रथ का नाम उपासकाध्ययन भी है । जयपुर मे श्री पिरागदास बाकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी । मस्कृत मे भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ ने २३ । ले० काल—स० १६११ पौष सुदी ६ । अपूर्ण ॥ वे० सं० ८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—सारगपुर नगर मे पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल—स० १८७७ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमे प्रतिलिपि की थी । गाथाओ के नीचे सस्वृत टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल—X । वे० सं० ८७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल—X । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

१०७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । ले० काल—सं० १५६८ भाद्रवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५६८ वर्षे भाद्रवा बुदी १२ गुरु दिने पुष्यनक्षत्रेऽमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषा मध्ये मडलाचार्य श्री धर्मकीर्ति तत् शिष्य मुनि वीरनदिने इदं शास्त्र लिखापित । प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ मे पार्श्वनाथ (सोनियो) के मंदिर मे चढाया ।

१०७९ वसुनदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २१८ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—स० १६३० कार्तिक बुदी ७ । ले० काल—स० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

१०८० प्रति स० २ । ले काल सं ११३ । वे सं १५१ । ङ मन्थार ।

१०८१ बार्त्तासमह - - । पत्र सं० २५ से १७ । मा १×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।
 र काल × । ले काल × । मपूर्णा । वे सं १३७ । छ मन्थार ।

१०८२ विद्वज्जनबोधक - - । पत्र सं २७ । मा १२३×८३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म ।
 र काल × । ले काल × । मपूर्णा । वे सं १७१ । ङ मन्थार ।

विशेष—हिन्दी धर्म संहिता है । ४ मन्थाय तक है ।

१०८३ प्रति स० २ । पत्र सं ३३२ । ले काल × । मपूर्णा । वे सं २४ । ट मन्थार ।

विशेष—प्रति द्वितीयो धर्म संहिता है । पत्र क्रम से नहीं है और कितने ही बीच के पत्र नहीं है । दो प्रतिबो
 का विषय है ।

१०८४ विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पञ्जाबी । पत्र सं० ८१ । मा १४×७३ इञ्च । भाषा-
 संस्कृत हिन्दी । विषय-धर्म । र काल सं ११३१ मास सुदी ४ । ले काल × । मपूर्णा । वे सं १७७ ।
 ङ मन्थार ।

१०८५ प्रति स० २ । पत्र सं ४४३ । ले काल सं ११४२ मासोज सुदी ४ । वे सं १७७ ।
 ङ मन्थार ।

विशेष—शाहूनाम छाह के पुत्र नन्दसाल ने अपनी माताजी के बतीखारत के उपलक्ष में प्रथम मन्दिर
 बीकान प्रसरत्नखरी क में बनवाया । यह ग्रन्थ के त्रितीयबन्ध के प्रस्त में लिखा है

१०८६ विद्वज्जनबोधकटीका - - । पत्र सं० ४४ । मा ११३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।
 र काल × । ले काल × । पूर्णा । वे सं ११ । ङ मन्थार ।

विशेष—प्रथमबन्ध के पाचमें उस्तास तक है ।

१०८७ विवेकविलास - - । पत्र सं १८ । मा १३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शास्त्र
 पाल्प । र काल सं० १७७ फागुण सुदी । ले काल सं १८८ चैत सुदी ३ । वे सं ८२ । ङ मन्थार ।

१०८८ ब्रह्मप्रतिक्रमण - - । पत्र सं १९ । मा १×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र
 काल × । ले काल × । पूर्णा । वे सं २१४८ । ट मन्थार ।

१०८९ प्रति स० २ । ले काल × । वे सं २१३१ । ट मन्थार ।

१०९० प्रति स० ३ । ले काल × । वे सं २१७१ । ट मन्थार ।

१ ११ ब्रह्मप्रतिक्रमण - - । पत्र सं ११ । मा ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-
 धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्णा । वे सं २३ । ङ मन्थार ।

१०९२ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । ले काल × । वे सं १३६ । ङ मन्थार ।

१०६३ वृहत्प्रतिक्रमण । पत्र स० ३१ । आ० १०३×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४ ब्रतों के नाम... । पत्र स० ११ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

१०६५ ब्रतनामावली' ... । पत्र स० १२ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल स० १६०४ । पूर्ण । वे० म० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. ब्रतसंख्या ... । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ ब्रतों एवं ४१ मंडल विधानों के नाम दिये हुये हैं ।

१०६७. ब्रतसार' । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य हैं ।

१०६८. ब्रतोद्यापनश्रावकाचार । पत्र स० ११३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३ । घ भण्डार ।

१०६९ ब्रतोपवासवर्णन । पत्र स० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३३८ । व्य भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

११०० ब्रतोपवासवर्णन । पत्र स० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४७८ । व्य भण्डार ।

११०१ प्रति स० २ । पत्र म० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ४७६ । व्य भण्डार ।

११०२ पट् आवश्यक (लघुमामासिक)—महाचन्द्र । पत्र स० ३ । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३ पट् आवश्यकविधान—पन्नालाल । पत्र स० १४ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल स० १६३० । ले० काल म० १६३४ । वैशाख वृदी ६ । पूर्ण । वे० म० ७४८ । ड भण्डार ।

११०४ प्रति स० २ । पत्र म० १७ । ले० काल स० १६३२ । वे० म० ७४७ । ड भण्डार ।

११०५ प्रति स० ३ । पत्र म० २३ । ले० काल × । वे० स० ४७६ । ड भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन वोपक के तृतीय व पञ्चम उत्साम का हिन्दी अनुवाद है ।

११०६ पट्कर्मोपदेशरत्नमाज्ञा (छद्ममावस्व)—महाकवि अमरकीर्ति । पत्र सं० ३ से ७१ ।

भा १ ३/४ इत्य । भाषा—मगध । विषय—व्याचार शास्त्र । र काल सं १२४७ । से काल सं० १६२२ चंद्र मुदी १३ । वै सं ३३६ । अ मण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमें अखिलकामाख्य वाराणसीगीतबान भीमतीहरणमदे ने प्रत्यकी प्रतिनिधि करवासी थी ।

११०७ पट्कर्मोपदेशरत्नमाज्ञाभाषा — पांडे ज्ञानचन्द्र । पत्र संख्या १२६ । भा १२×६ इत्य ।

भाषा—हिन्दी । विषय—व्याचार शास्त्र । र काल सं० १८१८ माघ मुदी ५ । से काल सं १८४६ चाके १७ ५ भादवा मुदी १ । पूर्ण । वै सं ४२६ । अ मण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी वैद्यकरण ने महत्मा भूरा से जयपुर में प्रतिनिधि करवासी ।

११०८ प्रति सं० ७ । पत्र सं १२८ । से० काल सं १८१६ माघ मुदी ६ । वै सं ६७ । अ मण्डार ।

विशेष—पुस्तक र्व महापुत्र दिल्लीवालों की है ।

११०९ पट्सहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं ३ । भा० १ ३/४ इत्य ।

भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल सं १७८६ । से काल × । पूर्ण । वै सं० ७१५ । क मण्डार ।

१११० पद्मसक्तिवर्णन—। पत्र सं २२ से २६ । भा० १२×३ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—

धर्म । र काल × । से काल × । मपूर्ण । व सं २६६ । अ मण्डार ।

११११ पौडराक्षरणभाषनावर्णनसृष्टि—प० शिवजिह्वरुद्र । पत्र सं ४६ । भा ११×३ इत्य ।

भाषा प्राकृत संस्कृत । विषय—धर्म । र काल > । से काल × । पूर्ण । वै सं २ ४ । अ मण्डार ।

१११२ पौडपकारणभाषना—प० महापुत्र । पत्र सं ८ । भा १२×७ इत्य । भाषा हिन्दी मय ।

विषय—धर्म । र काल > । से काल × । वै सं ६६० । अ मण्डार ।

विशेष—एकतरणभाषनाभाष भाषा में से है ।

१११३ पौडराक्षरणभाषना अपमाल—जयमल । पत्र सं २८ । भा ११×७ इत्य । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । र काल सं १६२५ भाषन मुदी ४ । से काल × । पूर्ण । वै सं ७१६ । क मण्डार ।

१११४ प्रति सं० ७ । पत्र सं २४ । से काल × । वै सं ७४६ । क मण्डार ।

१११५ प्रति सं० ३ । पत्र सं २४ । से काल × । वै सं ७४६ । क मण्डार ।

१११६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । से काल > । मपूर्ण । वै सं० ७२ । क मण्डार ।

१११७ पौडराक्षरणभाषना—। पत्र सं ६८ । भा ११२×३ इत्य । भाषा—हिन्दी । विषय—

धर्म । र काल १ से काल सं १६६२ वागिन मुदी १४ । पूर्ण । वै सं ७५३ । क मण्डार ।

विशेष—नागपुरात ध्यान से प्रतिनिधि थी थी ।

१११८ प्रति सं० १ । पत्र सं ९१ । से काल × । वै सं ७२८ । क मण्डार ।

१११६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५५ । ड भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० मे आगे पत्र नहीं है ।

११२१ षोडशकारणभावना*** । पत्र सं० १७ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सकेत भी दिये हैं ।

११२२ शीलनववाङ्ग । पत्र सं० १ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना—

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । अ भण्डार ।

११२३ श्राद्धपडिकमणसूत्र*** । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—प० जसवन्त के पीत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ५० । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३० भाष बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन । पत्र सं० १० । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक

धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण***** । पत्र सं० २५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । हुक्मीजीवरण ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९ श्रावकप्रतिक्रमण । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । ख भण्डार ।

११३० श्रावकप्रायश्चित्त—वीरसेन । पत्र सं० ७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वे० सं० १६० ।

विशेष—प० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११३१ भावकाचार—अमितिगति । पत्र सं १७ । या १२×५ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । वे सं १६४ । अ मन्डार ।

विषय—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी है । बन्ध का नाम उपासकाचार भी है ।

११३२ प्रति सं० २ । पत्र सं ३६ । मे काल × । अपूर्ण । वे सं ४४ । अ मन्डार ।

११३३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ८३ । मे काल × । अपूर्ण । वे सं १८ । अ मन्डार ।

११३४ भावकाचार—उमास्वामी । पत्र सं २१ । या ११×५ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । वे सं २८१ । अ मन्डार ।

११३५ प्रति सं० २ । पत्र सं ३७ । मे काल सं १६२६ भाषा कुची २ । वे सं २६ । अ
मन्डार ।

११३६ भावकाचार—गुरुभूषणाचार्य । पत्र सं २१ । या १३×४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचार शास्त्र । १ काल × । मे काल सं १५९२ बीघाल कुची ४ । पूर्ण । वे सं १३८ । अ मन्डार ।

विषय—प्रशस्ति

संवत् १५९२ वर्षे बीघाल कुची ४ भी मूससंने बभत्कारबणे सरस्वतीगच्छे श्री कु बकु बाचार्यान्वये अ
भी पद्मनन्दि बेवास्तत्पट्ट अ भी सुमन्त्र बेवास्तत्पट्ट अ भी जिनन्त्र बेवास्तत्पट्ट अ ओ प्रभाकरबेवा ठवन्नाथ
संकेतबालान्वये सा योने सं परबत तस्य भार्या रोहातस्तुत्र मेठा तस्य भार्या शारंगबे । तस्तुत्र मन्त्रिणस तस्य भार्या
अमरी कुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या बोरवी तस्तुत्र मन्मस कुतीय बीवा सा नरसिंह महाबास एतवान्भे इर्वास्त्रं
मिजाप्ते कर्मसमितिसे भावकाचार । अजिना पद्मसिखिरिगोम्य बाई मरिम बटापितं ।

११३७ प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । मे काल सं० १५२६ भाषा कुची १ । वे सं ५१ । अ
मन्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२६ वर्षे भाद्रपद १ पक्षो भी मूससंने अ भी जिनन्त्र अ नरसिंह संकेतबालान्वये
-सं भक्तव भार्या जैभी पुत्र हाम्य मिजावस्तु ।

११३८ भावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र सं २ से २६ । या ११३×५ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । १ काल × । मे काल × । अपूर्ण । वे सं २१७ ।

विषय—३६ से माने भी पत्र नहीं है ।

११३९ भावकाचार—पूरुषपाद । पत्र सं ६ । या ९×५ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार
शास्त्र । १ काल × । मे काल सं १८५४ बीघाल कुची ३ । पूर्ण । वे सं १२ । अ मन्डार ।

विषय—बन्ध का नाम उपासकाचार तथा उप सनाम्ययन भी है ।

११४० प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । मे काल सं १८८ पीप कुची १५ । वे सं ८६ । अ
मन्डार ।

११४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८८४ आषाढ बुदी २। वै० सं० ४३। च भण्डार

११४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८०४। भाद्रवा सुदी ६। वै० सं० १०२।
छ भण्डार।

११४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वै० सं० २१५१। ट भण्डार।

११४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वै० सं० २१५८। ट भण्डार।

११४५ श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ६६। आ० ८३×६३ इअ। भाषा—संस्कृत। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २०८८। अ भण्डार।

११४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२३। ले० काल सं० १८५५। वै० सं० ६६३। क भण्डार।

११४७ श्रावकाचारभाषा—५० भागचन्द्र। पत्र सं० १८६। आ० १२×८ इअ। भाषा—हिन्दी गद्य।
विषय—आचार शास्त्र। २० काल सं० १६२२ आषाढ सुदी ८। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २८।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है। अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है।

११४८. श्रावकाचार * * *। पत्र संख्या १ से २१। आ० ११×५ इअ। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार
शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २१८२। ट भण्डार।

विशेष—इससे आगे के पत्र नहीं हैं।

११४९. श्रावकाचार * * *। पत्र सं० ७। आ० १०३×४३ इअ। भाषा—प्राकृत। विषय—आचारशास्त्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १०८। छ भण्डार।

विशेष—६० गाथाये है।

११५०. श्रावकाचारभाषा * * *। पत्र सं० ७२ में १३१। आ० ६३×५ इअ। भाषा—हिं दी। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २०६४। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

११५१ प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ६६६। क भण्डार।

११५२ प्रति सं० ३। पत्र सं० १११ से १७८। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ७०६। छ भण्डार।

११५३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १६६८ भाद्रवा सुदी १। पूर्ण। वै० सं० ७१०।
ड भण्डार।

विशेष—गुणभूषण एत श्रावकाचार की भाषा टीका है। मन्व १५२६ चैत सुदी ५ रविवार की यह
गद्य जिहानाबाद जैमिहपुरा में लिखा गया था। उस प्रति में यह पतिलिपि की गयी थी।

११५४. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०८। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ६८२। च भण्डार।

११५५ भुवमानवर्णन - - । पत्र नं ८ । भा ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र

काल × । से काल × । पूर्ण । वै नं ७१ । क मण्डार ।

११५६ प्रति स० २ । पत्र नं ८ । से काल × । वै नं ७२ । क मण्डार ।

११५७ समरखोकीगीता - - । पत्र नं २ । भा १×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र

काल × । से काल × । पूर्ण । वै नं १७४ । क मण्डार ।

११५८ समकितवाक्य—व्यासकरण्य । पत्र नं १ । भा १५×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

काल × । से काल स १८१३ । पूर्ण । वै नं २१२१ । क मण्डार ।

११५९ समुद्रातुभेद - - । पत्र नं ४ । भा ११×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । र

काल × । से काल × । अपूर्ण । वै स ७८८ । क मण्डार ।

११६० सम्मेदशिकर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र नं ८१ । भा ११×६ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । र काल स १६४३ । से० काल स १८८ । पूर्ण । वै स २८२ । क मण्डार ।

११६१ प्रति स० २ । पत्र नं १४७ । से काल × । वै स ७१३ । क मण्डार ।

११६२ प्रति स० ३ । पत्र नं ४ । से काल × । अपूर्ण । वै स ३७३ । क मण्डार ।

११६३ सम्मेदशिकरमहात्म्य—साक्षचन्द्र । पत्र नं ६३ । भा १३×३ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—धर्म । र काल स १८४२ फरगुण सुदी ३ । से काल × । पूर्ण । वै स ६१ । क मण्डार ।

विशेष—मठारक भी जगतकीर्ति के विषय नामचन्द्र ने देवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४ सम्मेदशिकरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र नं ११ । भा ११×३ १/२ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । र काल × । से काल स ११४१ मासोत्तर सुदी १ । पूर्ण । वै स १३१ । क मण्डार ।

विशेष—रचना संबत् सम्बन्धी बोहा—

बाग वैद सचिगये दिक्कमार्त तुम बाल ।

धस्वनि मित बघाभी मुपुस प्रन्व समास्त ठाल ॥

सोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा ठीका है ।

११६५ प्रति स० २ । पत्र नं १२ । से काल स १८८४ वैत सुदी २ । वै स ७८ । क मण्डार ।

११६६ प्रति स० ३ । पत्र स ६२ । से काल स १८८७ वैत सुदी १५ । वै स ७१६ । क

मण्डार ।

विशेष—स्योजीरामजी मांबसा ने अक्कुर में प्रतिभिति की ।

११६७ प्रति स० ४ । पत्र स १४२ । से काल स ११११ पौष सुदी १३ । वै स २२ । क

मण्डार ।

११६८ सम्मेदशिकरविस्वास—केशरीसिंह । पत्र नं ३ । भा ११ १/२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । र काल २ वी अठमासी । से काल × । पूर्ण । वै नं ७१७ । क मण्डार ।

११६६ सम्मोदशिखर विलास—देवाब्रह्म । पत्र स० ४ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन । पत्र स० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । व्य भण्डार ।

११७१ सागारधर्मावृत—प० आशावर । पत्र स० १४३ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावको के आचार धर्म का वर्णन । २० काल स० १२६६ । ले० काल स० १७६८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ मस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा गवाड़ जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० स० ७७५ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ़ वाले ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ में ४० तक के पत्र किमी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १५६ । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी ५ । वे० स० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७ प्रति सं० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० स० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचयिता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८ प्रति सं० ८ । पत्र स० १४० । वे० काल × । वे० स० १ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९ प्रति सं० ९ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५६५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रथम—खण्डेलवानान्वये धर्ममेरागोत्रे पादे डीडा तेन इदं धर्मावृतनामोपाध्ययन आचार्य नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तन् शिष्य म० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११५५ भुतज्ञानवर्षान् - - । पत्र सं ८ । भा० ११३×७३ इत्य । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

काव्य × । म० काव्य × । पूर्ण । वै सं ७१ । क मण्डार ।

११५६ प्रति स० २ । पत्र सं ८ । म० काव्य × । वै सं ७२ । क मण्डार ।

११५७ सप्तश्लोकीगीता - - - - - । पत्र सं २ । भा ६×४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

काव्य × । म० काव्य × । पूर्ण । वै सं १७४० । क मण्डार ।

११५८. समकितदास—आसकप्यु । पत्र सं १ । भा २३×४ इत्य । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

काव्य × । म० काव्य सं १८३३ । पूर्ण । वै सं २१२६ । क मण्डार ।

११५९. समुद्रातुभेद - - - - - । पत्र सं ४ । भा० ११×३ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्यान्त ।

काव्य × । म० काव्य × । अपूर्ण । वै सं ७५५ । क मण्डार ।

११६० सम्मोदशिलर महात्म्य—वीरसिंह देवदत्त । पत्र सं ५१ । भा ११×६ इत्य । भाषा—

संस्कृत । र काव्य सं १६४३ । म० काव्य सं १८८ । पूर्ण । वै सं २५२ । क मण्डार ।

११६१ प्रति सं २ । पत्र सं १४७ । म० काव्य × । वै सं ७६३ । क मण्डार ।

११६२. प्रति स० ३ । पत्र सं ४ । म० काव्य × । अपूर्ण । वै सं १७५ । क मण्डार ।

११६३ सम्मोदशिलर महात्म्य—ज्ञानचन्द्र । पत्र सं ६३ । भा १३×३ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—धर्म । र काव्य सं १८४२ फागुण सुदी ३ । म० काव्य × । पूर्ण । वै सं ६६ । क मण्डार ।

विशेष—मृदारक धी जगतकैलि के शिष्य सातचन्द्र ने देवाड़ी में यह प्रन्थ रचना की थी ।

११६४ सम्मोदशिलर महात्म्य—मनसुखदास । पत्र सं १६ । भा० ११×३ इत्य । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । र० काव्य × । म० काव्य सं १६४१ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । वै सं १३६ । क मण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी बोद्धा—

मान वैद सपिणये विक्रमार्क पुत्र मान ।

मन्वनि सिद्ध वरामी मुकुन्द प्रन्थ समाप्त ठान ॥

सोहाबर्म्ह विरचित प्रन्थ की माया टीका है ।

११६५. प्रति स० २ । पत्र सं १०२ । म० काव्य सं १८८४ चैत सुदी २ । वै सं ७८ । क मण्डार ।

११६६ प्रति स० ३ । पत्र सं ६२ । म० काव्य सं १८८७ चैत सुदी १३ । वै सं ७६६ । क

मण्डार ।

विशेष—स्योबीरामजी साबसा ने जयपुर में प्रतिमिति की ।

११६७ प्रति स० ४ । पत्र सं १४२ । म० काव्य सं १६११ पौष सुदी १३ । वै सं २२ । क

मण्डार ।

११६८ सम्मोदशिलर विलास—केरारीसिंह । पत्र सं ३ । भा ११३×७ इत्य । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । र काव्य ० बीं हताम्नी । म० काव्य × । पूर्ण । वै सं ७६७ । क मण्डार ।

११६६ सम्मेदशिलर विलास—देवाब्रह्म । पत्र स० ४ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—धर्म । २० काल १८वीं अताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन । पत्र स० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । व्य भण्डार ।

११७१ सागारधर्माभृत—प० आशावर । पत्र स० १४३ । आ० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—श्रावको के आचार धर्म का वर्णन । २० काल स० १२६६ । ले० काल स० १७६८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण ।

वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महागजा सवाई

जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा भानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० स० ७७५ ।

क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । व भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५ प्रति सं० ५ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १५६ । ले० काल स० १८९१ भादवा बुदी ५ । वे० स० ७८ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रति-

लिपि की थी ।

११७७ प्रति सं० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० स० १४६ । ज

भण्डार ।

विशेष—प्रति टक्का टीका सहित है । रचयिता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८ प्रति सं० ८ । पत्र स० १४० । ले० काल × । वे० स० १ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९ प्रति सं० ९ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५६५ फागुण सुदी २ । वे० स० १८ । च

भण्डार ।

विशेष—प्रणमि—खण्डेलवानान्वये अजमेरागोत्रे पाडे डीडा तेन इद धर्माभृतनामोपाध्ययन आचार्य नेमिचन्द्राय दत्त । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तान् लिप्य म० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११८० प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । से० वात \ । मपूर्त् । वे० सं० १८ क । अ भण्डार ।

११८१ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । से० वात \ । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

विशेष—रघोपम टीका सहित है ।

११८२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । से० वात \ । वे० सं० ४१० । अ भण्डार ।

विशेष—पुस्तकान्त प्रति प्राचीन है ।

११८३ प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । से० वात सं० १२६४ काष्ठण मुद्रा १२ । वे० सं० ३०० ।

अ भण्डार ।

विशेष-पद्यरित— संवत् १२६४ वर्षे काष्ठण मुद्रा १२ रविवातरे पुनर्वसुनक्षत्रे भीमूतसंवे वसिष्ठसंवे नरात्मभारयणे सरस्वतीक्षेत्रे भी बुधपुण्याश्रावणवद्ये च० भी पद्मसिद्ध लक्ष्मणे भी पुनर्वसुदेवातारणु च० भी विजयचन्द्र दशाक्षरुर्ध्वे च० भी ब्रह्मचर्यदेवताप्रतिष्ठापनकार्ये भी धर्मचर्यदेवतापुस्तकप्रतिष्ठापनार्थे भी वैश्वदेवतास्तैरित्थं धर्मावृत्तनामाताभारकाशास्त्रीस्य भद्रकुमुदवर्गिणामास्वी तिस्रसिंहात्मपत्रकार्ये ज्ञानावरणारिबर्धनकार्ये च ।

११८४ प्रति सं० १४ । पत्र सं० १० । से० वात \ । मपूर्त् । वे० सं० २ ६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत शिखण प्रति है ।

११८५ प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४१ । से० वात \ । मपूर्त् । वे० सं० १६६३ । अ भण्डार ।

११८६ प्रति सं० १६ । पत्र सं० १ से ७२ । से० वात सं० १२६४ भावरा मुद्रा १ । मपूर्त् । वे०

संख्या २११० । अ भण्डार ।

विशेष—अथवा पत्र नहीं है । मिलाक प्रतिसिद्ध पूर्ण है ।

११८७ सातव्यसंग्रहाध्याय पत्र सं० १ । भा० १ \ २ इत्य । भाग-द्वितीय । विषय-धर्म ।

८ वात \ । से० वात सं० १७८० । पूर्त् । वे० सं० १८०२ ।

विशेष—रघुपञ्चमी भी भी हुई है मिलाके पाठ पद्य है ।

११८८ साधुदिनचर्या पत्र सं० ६ । भा० २१ \ २२ इत्य । भाग-प्राज्ञ । विषय-साधारण

साधन । २ वात \ । से० वात \ । पूर्त् । वे० सं० २७४ ।

विशेष—भीमत्तपोबले भी विजयराजपुरि विजयराज्ये ज्ञपि रत्ना मितिन ।

११८९ सामाधिकपाठ—बहुमुनि । पत्र सं० ११ । भा० ८ \ १ इत्य । भाग-प्राज्ञ संस्कृत । विषय-

धर्म । २ वात \ । से० वात \ । पूर्त् । वे० सं० २१ १ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रस्ताव पुस्तिका निम्न प्रकार है—

रुद्रि भी बहुमुनिविरचिनी सामाधिकपाठ संपूर्त् ।

११९० सामाधिकपाठ पत्र सं० १२ । भा० ८ \ १ इत्य । भाग-प्राज्ञ । विषय-धर्म ।

२ वात \ । से० वात \ । मपूर्त् । वे० सं० २ ६२ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १६३ । अ भण्डार ।
विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२ प्रति स० ३ । पत्र स० २ । ले० काल × । वै० स० ७७९ । क भण्डार ।

११६३ सामायिकपाठ । पत्र स० ५० । आ० ११३ × ७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १६५६ कार्तिक वृदी २ । पूर्ण । वै० स० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४ प्रति सं० २ । पत्र स० ६८ । ले० काल स० १८६१ । वै० स० ७७७ । अ भण्डार ।
विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वै० स० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० स० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० ८२० कार्तिक वृदी २ । वै० स० ६५ । व
भण्डार ।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६९. सामायिक पाठ । पत्र स० २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वै० स० ८१४ । ड भण्डार ।

१२०० प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वै० स० ८१५ । ड
भण्डार ।

१२०१ प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खालिया है ।

१२०२ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३. प्रति स० ५ । पत्र स० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८१३ । ड भण्डार ।

१२०४ सामायिकपाठ (लघु) । पत्र स० १ । आ० १० ३/४ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वै० स० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६. प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ७१३ क । च भण्डार ।

१२०७ सामायिकपाठभाषा—बुध महाचन्द । पत्र स० ६ । आ० ११ × ५ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जीहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है ।

१२०८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६५४ सावन वृदी ३ । वै० स० १६४१ । ट
भण्डार ।

१०६६. सामाधिक्याठभाषा—अथयम्द छाबड़ा। पत्र सं० ८२। भा १२^३×२ इञ्च। भाषा—

हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। १० कल्प ×। से कल्प सं० १६३७। पूर्ण। के सं० ७८। अ मन्डार।

१२१० प्रति सं० २। पत्र सं ८८। से० कल्प सं १६३६। के सं ७८१। अ मन्डार।

१२११ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६। से कल्प ×। के सं ७८२। अ मन्डार।

१२१२. प्रति सं० ४। पत्र सं ४६। से कल्प ×। के सं ७८३। अ मन्डार।

१२१३ प्रति सं० १। पत्र सं २६। से कल्प सं १६७१। के सं ८१७। अ मन्डार।

बिसेव—श्री केसरराम गोधा न जयपुर में प्रतिमिति की थी।

१२१४ प्रति सं० ६। पत्र सं ३६। से कल्प सं १८७८ फागुन मुरी ६। के सं १८३। अ

मन्डार।

१२१५ प्रति सं० ७। पत्र सं ४२। से कल्प सं० १६११ माघाज मुरी ८। के सं २६। अ

मन्डार।

१२१६ सामाधिक्याठभाषा—स० श्री विलोकाचन्द्र। पत्र सं ६८। भा ११×२ इञ्च। भाषा—

हिन्दी। विषय—धर्म। १ कल्प सं १८६२। से कल्प ×। पूर्ण। के सं ७१। अ मन्डार।

१२१७ प्रति सं० २। पत्र सं ७२। से कल्प सं १८६१ सावन मुरी १३। के सं ७१३।

अ मन्डार।

१०१८ सामाधिक्याठ भाषा—। पत्र सं ४२। भा १२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—

धर्म। १ कल्प ×। से कल्प सं १७२८ ज्येष्ठ मुरी २। पूर्ण। के सं १२८। अ मन्डार।

बिसेव—जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में ज्योती नैसामगर ताराचन्द्र बाल ने प्रतिमिति

की थी।

१०१९. प्रति सं० २। पत्र सं ५८। से कल्प सं १७४ बैशाख मुरी ७। के सं ७६। अ

मन्डार।

बिसेव—महाराजा साधुसदाश बमर बाले ने प्रतिमिति की थी। संस्कृत भाषा प्राकृत छन्दों का धर्म दिया

हुमा है।

१२२० सामाधिक्याठ भाषा—। पत्र सं २ से ३। भा ११^३×२^३ इञ्च। भाषा—हिन्दी।

विषय—धर्म। १ कल्प ×। से कल्प ×। अमूर्त। के सं ८१२। अ मन्डार।

१२२१ प्रति सं० २। पत्र सं ६। से कल्प ×। के सं ८१६। अ मन्डार।

१२२२ प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। से कल्प ×। अमूर्त। के सं ४८६। अ मन्डार।

१२२३. सामाधिक्याठभाषा—। पत्र सं १७। भा ६×२^३ इञ्च। भाषा—हिन्दी (कृष्णारी)

१ कल्प ×। से कल्प ×। से कल्प सं० १७६३ मंसिर मुरी ८। के सं० ७११। अ मन्डार।

१२२४ सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र म० १५ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल म० १६०७ पौष बुदी ४ । वै० स० ४५६ । ज भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के लिख्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५ सावयवम्म दोहा—मुनि रामसिंह । पत्र म० ८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । वै० म० १४१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६ सिद्धों का स्वरूप .. । पत्र स० ३८ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८५४ । ड भण्डार ।

१२२७ सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द्र । पत्र म० ४०५ । आ० १५×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल म० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल म० १८६१ भाद्रवा सुदी ३ । पूर्ण । वै० स० ७५७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

१२२८ प्रति स० २ । पत्र स० ८० । ले० काल × । वै० स० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९ प्रति स० ३ । पत्र स० ६११ । ले० काल म० १६४४ । वै० स० ८११ । क भण्डार ।

१२३० प्रति स० ४ । पत्र स० ३६१ । ले० काल म० १८६३ । वै० म० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—श्यालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१ प्रति स० ५ । पत्र म० १०५ मे १२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० म० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२ प्रति स० ६ । पत्र म० १६६ । ले० काल × । वै० म० १२८ । छ भण्डार ।

१२३३ प्रति स० ७ । पत्र स० ५४५ । ले० काल म० १८६८ आसोज सुदी ६ । वै० म० ८६८ । ड

भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है ।

१२३४ प्रति स० ८ । पत्र म० ५०० । वै० काल स० १६६० कार्तिक बुदी ५ । वै० म० ८६६ ।

ड भण्डार ।

१२३५ प्रति स० ९ । पत्र म० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ७२२ । च भण्डार ।

१२३६ प्रति स० १० । पत्र म० ४३० । ले० काल म० १६४६ चैत बुदी ८ । वै० म० ११ । ज

भण्डार ।

१२३७ प्रति स० ११ । पत्र स० ५३५ । ले० काल म० १८३६ फागुण बुदी ८ । वै० स० ८६ । फ

भण्डार ।

१२३८ सुदृष्टितरंगिणीभाषा । पत्र म० ५१ ने ५७ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० म० ८६७ । ड भण्डार ।

१०७६। सामाधिकपाठभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा। पत्र सं ८२। भा १२^३×२ इञ्च। भाषा—

हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र काल ×। से काल सं १६३७। पूजा। के सं ७८०। अ मण्डार।

१२१० प्रति सं २। पत्र सं ८८। से काल सं १६५६। के सं ७८१। अ मण्डार।

१२११ प्रति सं ३। पत्र सं ४६। से काल ×। के सं ७८२। अ मण्डार।

१२१२ प्रति सं ४। पत्र सं ४६। से काल ×। के सं ७८३। अ मण्डार।

१२१३ प्रति सं ५। पत्र सं २६। से काल सं १६७१। के सं ८१७। अ मण्डार।

विशेष—श्री केसरसाम मोवा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१२१४ प्रति सं ६। पत्र सं ३१। से काल सं १८७४ काङ्गु मुरी ६। के सं १८३। अ

मण्डार।

१२१५ प्रति सं ७। पत्र सं ४२। से काल सं १६११ मल्लार मुरी ८। के सं ३६। अ

मण्डार।

१२१६ सामाधिकपाठभाषा—म० जी तिकाकचन्द्र। पत्र सं ९८। भा ११×१ इञ्च। भाषा—

हिन्दी। विषय—धर्म। र काल सं १८९२। से काल ×। पूर्ण। के सं ७१। अ मण्डार।

१२१७ प्रति सं १०। पत्र सं ७३। से काल सं १८६१ सत्यन बुदी १३। के सं ७१३। अ

मण्डार।

१२१८ सामाधिकपाठ भाषा— " "। पत्र सं ४२। भा १२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—

धर्म। र काल ×। से काल सं १७२८ कच्छ मुरी २। पूजा। के सं १२८। अ मण्डार।

विशेष—जयपुर में महाराजा बरधिसिंहजी के मासमकाल में श्री नैणसागर तारानन्द बाल ने प्रतिलिपि

की थी।

१२१९ प्रति सं ११। पत्र सं ३८। से काल सं १७४ बेजास मुरी ७। के सं ७६। अ

मण्डार।

विशेष—महाराजा साबसदास बसर बाले ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत मन्त्रना प्राकृत शब्दों का धर्म विद्या

कुमा है।

१२२० सामाधिकपाठ भाषा— " "। पत्र सं २ से ३। भा ११^३×२^३ इञ्च। भाषा—हिन्दी।

विषय—धर्म। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं ८१२। अ मण्डार।

१२२१ प्रति सं १२। पत्र सं ६। से काल ×। के सं ८१६। अ मण्डार।

१२२२ प्रति सं १३। पत्र सं १२। से काल ×। अपूर्ण। के सं ४८६। अ मण्डार।

१२२३ सामाधिकपाठभाषा— " "। पत्र सं १७। भा ६×३^३ इञ्च। भाषा—हिन्दी (ब्रजवादी)

र काल ×। से काल सं १७६३ मंसिर मुरी ८। के सं ७११। अ मण्डार।

विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

- १२५० अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र स० १० । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।
१२५१. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी ६ । वे० स० ४ । क भण्डार ।
विशेष—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।
१२५२. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३८ आषाढ बुदी १० । वे० स० ८२ । ज भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । विबुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।
१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द्र झावड़ा । पत्र म० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । २० काल १४वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७ । क भण्डार ।
- १२५४ अध्यात्मवत्तीसी—बनारसीदास । पत्र म० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।
१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत । पत्र म० १५ । आ० ५ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । ड भण्डार ।
१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० १० से २७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०२३ । अ भण्डार ।
विशेष—प्रति जीर्ण है । १ से ६ तथा २४-२५वा पत्र नहीं है ।
१२५७. प्रति स० २ । पत्र म० ४८ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ७ । क भण्डार ।
- १२५८ अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द्र झावड़ा । पत्र स० ४३० । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १८६७ भादवा सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३ । क भण्डार ।
विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुन्द है ।
१२५९. प्रति स० २ । पत्र म० १७ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० मं० १४ । क भण्डार ।
१२६०. प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । वे० स० १५ । क भण्डार ।
- १२६१ प्रति स० ४ । पत्र स० १६७ । ले० काल × । वे० स० १६ । क भण्डार ।
- १२६२ प्रति स० ५ । पत्र सं० ३३५ । ले० काल म० १६२६ । वे० स० १ । क भण्डार ।
- १२६३ प्रति स० ६ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० २ । क भण्डार ।

१२३६ सोनगिरपचीसी—भागीरथ । पत्र सं ८ । भा १२×६३ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । र काल सं० १८६१ ग्येष्ठ सुदी १८ । म काल × । वे सं० १४७ । छ मण्डार ।

१२४० सोनगिरपचीसी—प० मदासुख । पत्र सं ८६ । भा १२×८ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । र काल × । वे काल × । पूर्ण । वे सं ७२६ । छ मण्डार ।

१२४१ प्रति सं० २ । पत्र सं ५३ । म काल × । वे सं १८८ । छ मण्डार ।

१२४२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ३७ । वे काल म १२२७ सातण सुदी ११ । वे सं १८८ । छ मण्डार ।

विषय—सवाई जयपुर में गणेशीलास पांड्या ने फानी के मस्जिद में प्रतिमिति की थी ।

१२४३ प्रति सं० ४ । पत्र सं ३१ स ६२ । म काल सं १२२८ माह सुदी २ । अपूर्ण । वे सं १२१ । छ मण्डार ।

विषय—प्राग्म के ३ पत्र नहीं हैं । सुन्दरलाल पांड्या ने वाटमू में प्रतिमिति की थी ।

१२४४ सोनगिरपचीसी—प० सदासुख । पत्र सं ११८ । साइज ११२×२ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । र काल × । म काल सं १२४१ मंगतिर सुदी १३ । पूर्ण । वे सं २४ । छ मण्डार ।

१२४५ स्थापनानिर्णय । पत्र सं ६ । भा १२×६ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—धर्म । र काल × । म काल × । पूर्ण । वे सं २ । छ मण्डार ।

विषय—विद्वज्जननीयक क प्रथम बार का मठम उद्घाटन है । हिन्दी टीका नहीं है ।

१ ४६ स्वाध्यायपाठ । पत्र सं २ । भा २×६३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—धर्म । र काल × । म काल × । पूर्ण । वे सं ३३ । छ मण्डार ।

१ ४७ स्वाध्यायपाठभाषा । पत्र सं ७ । भा ११२×७३ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । र काल × । वे काल × । पूर्ण । वे सं ६४२ । छ मण्डार ।

१ ४८ सिद्धान्तधर्मोपदेशमाहा । पत्र सं १२ । भा ११×३६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । काल × । म काल × । पूर्ण । वे सं २२१ । छ मण्डार ।

१२४९ दुर्गावसतिष्ठीकास्तदाप—मासकवन्द । पत्र सं ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र काल × । म काल सं १२३७ । पूर्ण । वे सं ६३२ । छ मण्डार ।

विषय—बाबा कुमावन्द ने प्रतिमिति की थी ।

विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५० अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र स० १० । आ० ११×१३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।

१२५१ प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ४ । क भण्डार ।

विशेष—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१२५२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३८ आषाढ बुदी १० । वे० सं० ८२ । ज

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । त्रिवुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

२० काल १४वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । क भण्डार ।

१२५४. अध्यात्मवत्तीसी—बनारसीदास । पत्र स० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत । पत्र स० १५ । आ० ५^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ड भण्डार ।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० १० में २७ । आ० १०×१ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । १ में ६ तथा २४-२५वा पत्र नहीं है ।

१२५७. प्रति सं० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १६४३ । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० ४३० । आ० १२×७^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १८६७ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । क भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुन्द है ।

१२५९ प्रति सं० २ । पत्र स० १७ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

१२६० प्रति सं० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२६१ प्रति सं० ४ । पत्र स० १६७ । ले० काल × । वे० सं० १६ । क भण्डार ।

१२६२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १ । क भण्डार ।

१२६३ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४११ । ले० काल स० १६४३ । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१०६४ प्रति स० ७। पत्र मं १६२। न कर्म ×। के सं ३। अ मण्डार।

१०६५ प्रति स० ८। पत्र मं १६३। न कर्म मं १६३६ आत्मोत्र बुद्धी १५। के सं ३८। अ मण्डार।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति है। ८८ मे १२३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ न १२० ठम क पत्र किसी अन्य प्रति के हैं।

१०६६ प्रति स० ९। पत्र मं २४३। न कर्म मं १६२१ आत्मोत्र बुद्धी १४। के सं ३९। अ मण्डार।

१०६७ प्रति स० १०। पत्र मं १६७। न कर्म <। के सं ५८। अ मण्डार।

१०६८ प्रति स० ११। पत्र मं १४५। न कर्म मं १८८ नात्म बुद्धी १। के सं ३८। अ मण्डार।

१०६९ आत्मध्यान—बनारसीवास। पत्र मं १। भा ८५ × ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आत्मनिश्चय। र कर्म ×। न कर्म ×। के सं १२७६। अ मण्डार।

१२०० आत्मप्रबोध—कुमारकवि पत्र मं ११। भा १ १/४ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र कर्म ×। न कर्म >। पूर्ण। के सं २४८। अ मण्डार।

१२०१ प्रति स० २। पत्र मं १४। न कर्म ×। के सं ३८ (क) अ मण्डार।

१२०२ आत्मसंशोधनकाव्य—पत्र मं २७। भा १ १/४ × ४ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—अध्यात्म। र कर्म ×। न कर्म ×। पूर्ण। के सं १८२४। अ मण्डार।

१२०३ प्रति स० २। पत्र मं ३१। न कर्म ×। अपूर्ण। के सं ५२। अ मण्डार।

१२०४ आत्मसंशोधनकाव्य—ज्ञानसूत्र। पत्र मं २ मे २६। भा १ १/४ × ४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र कर्म >। न कर्म ×। अपूर्ण। के सं १६८७। अ मण्डार।

१२०५ आत्मसंशोधन—श्रीपद्म कासलीवाल। पत्र मं २९। भा १ १/२ × ३ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—अध्यात्म। र कर्म ×। न कर्म सं १०७४ काष्ठ बुद्धी। के सं १८। अ मण्डार।

विशेष—कृष्णाय में इवाराम लक्ष्मीराम ने अक्षयन चोखामय में प्रतिसिद्धि की थी।

१२०६ आत्मानुशासन—गुरुभद्रावास। पत्र मं ४२। भा १ × ३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र कर्म ×। न कर्म ×। के सं २२६२। पूर्ण। बीर्ण। अ मण्डार।

विशेष—प्रसिद्ध—
धीनमितामर्ष्यासय । धीमूत्रसंके मंघास्नाये बसन्वारबडे तरस्वतीतध्धु धीकृष्णकुन्दाचार्यान्विये म्हारकधीपयनमिदवा
तत्पट्टे म श्रीमुत्रबन्धनवा तत्पट्टे म धीमिनचम्बरवा तत्पट्टे म प्रभाचन्द्रदेवा तन् धियमर्ष्याचार्ये धीपमचम्बर
दस्मान् । मिश्रितं यवानि (पी) धी गैवा तत्पुत्र मह्य मिश्रितं ।

अध्यात्म एवं योगशास्त्र]

१२७७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १५६४ आषाढ सुदी ८ । वै० सं० २६६ । अ
भण्डार ।

१२७८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६० सावण सुदी ४ । वै० सं० ३१५ । अ
भण्डार ।

१२७९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वै० सं० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एक प्राचीन है ।

१२८० प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २७० । अ भण्डार ।

१२८१ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वै० सं० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वै० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४ प्रति सं० ९ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६४० । वै० सं० ४७ । क भण्डार ।

१२८५ प्रति सं० १० । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वै० सं० ४६ । क भण्डार ।

१२८६ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वै० सं० १५ । क भण्डार ।

१२८७ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८ । वै० सं० ५३ । अ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले मस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८ प्रति सं० १३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७३० भाद्रपद सुदी १२ । वै० सं० ५४ । अ
भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२८९ प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६७० फागुन सुदी २ । वै० सं० २६ ।
अ भण्डार ।

विशेष—रहितगपुर निवासी चौधरी सोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९० प्रति सं० १५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६६५ मगसिर सुदी ५ । वै० सं० २२० । अ
भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१ आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १० । पूर्णा । वै० सं० २७ । अ भण्डार ।

१२९२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६०१ । वै० सं० ४८ । क भण्डार ।

१२९३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६८५ मगसिर सुदी १४ । वै० सं० ६३ । अ
भण्डार ।

विशेष—कृत्वावती नगर में प्रतिनिधि हुई ।

१६४ प्रति स० ४ । पत्र सं ४२ । से काल सं १८३२ अषाढ सुदी ६ । व सं २ । अ
मन्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिनिधि हुई ।

१२६५ प्रति स० ८ । पत्र सं ११ । से काल सं १६१६ अषाढ सुदी १ । व सं ७१ ।

विशेष—सङ्ग तिहुसु मन्दास गर्ग गोपीय ने प्रत्येकी प्रतिनिधि करवायी ।

१२६६ आत्मानुरागसनमापा—प० टोडरमल्ल । पत्र सं ५७ । मा १४×० इत्य । नाया—हिन्दी

(गण) विशेष—अष्ट्यात्म । र काल × । से काल सं १५६ । पूर्ण । व सं ३७१ । अ मन्डार ।

१२६७ प्रति स० ८ । पत्र सं १५६ । से काल सं १६५ । व सं ३६६ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१२६८ प्रति स ३ । पत्र सं १४५ । स० काल × । व सं ३६८ । अ मन्डार ।

१२६९ प्रति स० ४ । पत्र सं १२६ । से काल सं १६६३ । व सं ४३४ । अ मन्डार ।

१३०० प्रति स० ७ । पत्र सं २३६ । से काल सं १६३ । व सं ५ । अ मन्डार ।

विशेष—श्रीमच्छास्त्रार्थ हृत संस्कृत टीका भी है ।

१३०१ प्रति स० ६ । पत्र सं ३३ । से काल सं १६४ । व सं ५१ । अ मन्डार ।

१३०२ प्रति स० ७ । पत्र सं ११८ । से काल सं १८३३ कार्तिक सुदी २ । व सं १ । अ

मन्डार ।

१३०३ प्रति स० ८ । पत्र सं ७ । से काल × । अपूर्ण । व सं ५३ । अ मन्डार ।

१३०४ प्रति स० ३ । पत्र सं ८६ से १२ । से काल × । अपूर्ण । व सं ५६ । अ मन्डार ।

१३०५ प्रति स० १० । पत्र सं १५ । से काल × । अपूर्ण । व सं ५७ । अ मन्डार ।

१३०६ प्रति स० ११ । पत्र सं १३१ । से काल सं १६३३ ज्येष्ठ सुदी ५ । व सं २५ । अ

मन्डार ।

विशेष—प्रति संक्षिप्त है ।

१३०७ प्रति स० १२ । पत्र सं १७ । से काल × । अपूर्ण । व सं ५९ । अ मन्डार ।

१३०८ प्रति स० १३ । पत्र सं ६१ से ११५ । से काल × । अपूर्ण । व सं ६० । अ मन्डार ।

१३०९ प्रति स० १४ । पत्र सं ७१ से १८६ । से काल × । अपूर्ण । व सं ५१३ । अ मन्डार ।

१३१० प्रति स० १५ । पत्र सं ६६ से १४३ । से काल सं १६२४ कार्तिक सुदी ३ । अपूर्ण ।

व सं ५१८ । अ मन्डार ।

१३११ प्रति स० १६ । पत्र सं ५ । से काल × । अपूर्ण । व सं ५१५ । अ मन्डार ।

१३१२ प्रति स० १७ । पत्र सं ६३ । से काल सं १८४४ अषाढ सुदी ५ । व सं २२२ । अ

मन्डार ।

विशेष—रायचन्द साहवाढ ने स्वगठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१३१३ प्रति स० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ में आगे पत्र नहीं है ।

१३१५. आध्यात्मिकगाथा—भ० लक्ष्मीचन्द्र । पत्र स० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंज ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । व्य भण्डार ।

१३१५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं० ०४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वे० स० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६ प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । १८६ गाथाएँ हैं ।

१३१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वे० स० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाथाएँ हैं ।

१३१८ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० स० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९ प्रति स० ५ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १८८८ । वे० स० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

१३२० प्रति स० ६ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११४ । ड भण्डार ।

१३२२. प्रति स० ८ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १६४३ सावण सुदी ४ । वे० स० ११६ । ड

भण्डार ।

१३२३ प्रति स० ९ । पत्र स० २८ से ७५ । ले० काल स० १८८६ । अपूर्ण । वे० स० ११७ । ड

भण्डार ।

१३२४. प्रति स० १० । पत्र स० ५० । ले० काल स० १८२५ पीप बुदी १० । वे० स० ११९ । ड

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३२५ प्रति स० ११ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १६३६ । वे० सं० ४३७ । च भण्डार ।

१३२६ प्रति स० १२ । पत्र स० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३८ । च भण्डार ।

१३२७ प्रति स० १२ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६६ सावण सुदी ६ । वे० स० ४३९ । च

भण्डार ।

१३२८ प्रति स० १३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६२० सावण सुदी ८ । वे० स० ४४० । च

भण्डार ।

१३२६ प्रति स० १४ । पत्र सं० ६६ । से काल नं १३५९ । वै सं० ४४२ । अ मण्डार ।

विषय—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द विद्ये हुये हैं ।

१३३० प्रति स० १३ । पत्र सं० ४६ । से काल नं १८८१ भाषणा कुटी १ । वै सं० ८ । अ मण्डार ।

१३३१ प्रति स० १६ । पत्र सं० ६३ । न काल × । वै सं० १७ । अ मण्डार ।

विषय—संस्कृत में टिप्पण बिना हुआ है ।

१३३२ प्रति स० १७ । पत्र सं० १२ । न काल × । अपूर्ण । वै सं० ६६ । अ मण्डार ।

१३३३ प्रति स० १८ । पत्र सं० ६ । न काल × । वै सं० ५२५ । अ मण्डार ।

१३३४ प्रति स० १९ । पत्र सं० १ । से काल २ । अपूर्ण । वै सं० ५६१ । अ मण्डार ।

विषय—११ से ७४ तथा १ न पत्रों के पत्र नहीं हैं ।

१३३५ प्रति स० ३० । पत्र सं० ३८ स ६४ । से काल × । अपूर्ण । वै सं० २८६ । अ मण्डार ।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३६ कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका - । पत्र सं० ५४ । भा १ ३ × ८ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

अथ्यात्म । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं० ७३ । अ मण्डार ।

१३३७ प्रति स० २ । पत्र सं० ६७ स ११ । से काल × । अपूर्ण । वै सं० ११८ । अ मण्डार ।

१३३८ कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र सं० २१ । भा १ ३ × ५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अथ्यात्म । र काल नं १६ भाषा कुटी १ । से काल सं० १८३४ । पूर्ण । वै सं० ८४३ । अ मण्डार ।

१३३९ प्रति स० २ । पत्र सं० ६६ । न काल × । वै सं० ११५ । अपूर्ण । अ मण्डार ।

१३४० प्रति स० ३ । पत्र सं० ६५ । से काल × । अपूर्ण । वै सं० ४४१ । अ मण्डार ।

१४४१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ स १७२ । न काल नं १८३२ । अपूर्ण । वै सं० ४४३ । अ मण्डार ।

मण्डार ।

१३४२ प्रति स० ५ । पत्र सं० ५१७ । से काल नं १८२२ भाषा कुटी १२ । वै सं० ७६ । अ मण्डार ।

मण्डार ।

विषय—सर्वाङ्गानु में आयोमिह के जालनकाल में अष्टप्रसू शोभात्मक में न शोभात्मक के विषय नामक के प्रतिनिधि की पी ।

१३४३ प्रति स० ६ । पत्र सं० २८८ । न काल नं १ ६६ भाषा कुटी ८ । वै सं० ५५ । अ मण्डार ।

मण्डार ।

१३४४ कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—अथ्यात्म अथ्यात्म । पत्र सं० २३७ । भा १ १ × ८ इच्छ । भाषा—

हिन्दी (नव) । विषय—अथ्यात्म । र काल नं १८६३ भाषा कुटी १ । न काल नं १ २६ । पूर्ण । वै सं० ८६६ । अ मण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८१ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४९ कुशलाणुबधिअञ्जुयण ... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबधिअञ्जुयण समन्त । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

इसके अतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां और हैं ।

१३५०. चक्रवर्तिकीवारहभावना ... । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान ... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । ऋ भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र सं० ४० । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२६ । क भण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० सं० ३० । घ

भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल सं० १०८६ सावण सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—रथमाङ्गल वाली माया निम्न प्रकार है—

सिरि विष्णुमस्तुम्बावे बसससपासी शु यमि बहुमस्तोह
सावसुसिय एवभीए प्रबसणुपरीम्मक्यं मेयं ॥

१३५६ ज्ञानार्थिक—शुभचन्द्रापाय । पत्र सं १५ । मा १२३×२३ इञ्च । माया—तंतुय ।

विशेष—माय । र काल × । से काल सं १६७६ चैत्र बुदी १४ । पूजा । वे सं २७४ । क मन्थार ।

विशेष—बैराग्य नगर में श्री बतुरवास मे प्राय श्री प्रतिसिपि करवायी की ।

१३६० प्रति स० २ । पत्र सं १३ । से काल सं १६५६ माघवा सुदी १३ । वे सं ४२ । क

मन्थार ।

१३६१ प्रति स० ३ । पत्र सं २७ । से काल सं १६४२ पीव सुदी ६ । वे सं २२ । क

मन्थार ।

१३६२ प्रति स० ४ । पत्र सं २६ । से काल × । मपूर्णा । वे सं २२१ । क मन्थार ।

१३६३ प्रति स० ५ । पत्र सं १८ । से काल × । वे सं २२२ । क मन्थार ।

१३६४ प्रति स० ६ । पत्र सं २६४ । से काल सं १८३३ माघवा सुदी ३ । वे सं २३४ । क

मन्थार ।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नहीं है ।

१३६५ प्रति स० ७ । पत्र सं १ से ८२ । से काल × । मपूर्णा । वे सं ६२ । क मन्थार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं है ।

१३६६ प्रति स० ८ । पत्र सं १३१ । से काल × । वे सं ३२ । क मन्थार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१३६७ प्रति स० ९ । पत्र सं १७६ से २१ । से काल × । मपूर्णा । वे सं २२३ । क मन्थार ।

१३६८ प्रति स० १० । पत्र सं २६८ । से काल × । वे सं २२४ । मपूर्णा । क मन्थार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । हिन्दी टीका सहित है ।

१३६९ प्रति स० ११ । पत्र सं १६ । से काल × । वे सं २२५ । क मन्थार ।

१३७० प्रति स० १२ । पत्र सं ४४ । से काल × । मपूर्णा । वे सं २२५ । क मन्थार ।

१३७१ प्रति स० १३ । पत्र सं १३ । से काल × । मपूर्णा । वे सं २२६ । क मन्थार ।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है ।

१३७२ प्रति स० १४ । पत्र सं १४२ । से काल सं १८८६ । वे सं २२७ । क मन्थार ।

१३७३ प्रति स० १५ । पत्र सं १४ । से काल सं १६४८ माघवा सुदी ८ । वे सं १२४ ।

क मन्थार ।

विशेष—सम्प्रीचनर बीच मे प्रतिसिपि की की ।

१३७४ प्रति स० १६ । पत्र स० १३५ । ले० काल × । वे० स० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५ प्रति सं० १७ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० स० २८२ । छ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६ प्रति सं० १८ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० स० २५ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवा । आवेर गण स्थानत् । क्लृप्तमवने महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पंचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिखापित त्रैपनक्रिया-वर्तनिवतवाइ धनाइयोगु घटापित कर्मक्षयनिमित्त ।

१३७७ प्रति सं० १९ । पत्र स० ११५ । ले० काल × । वे० स० ६० । झ भण्डार ।

१३७८ प्रति स० २० । पत्र स० १०४ । ले० काल × । वे० स० १०० । ब भण्डार ।

१३७९ प्रति सं० २१ । पत्र स० ३ से ७३ । ले० काल स० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्णा । वे० स० १५३ । ब भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८० प्रति स० २२ । पत्र स० १३४ । ले० काल स० १७८८ । वे० स० ३७० । ब भण्डार ।

१३८१ प्रति स० २३ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १९४१ । वे० स० १९६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२ प्रति स० २४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १९०१ । अपूर्णा । वे० स० १९६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२५ । क भण्डार ।

१३८५ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८२३ माघ सुदी १० । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३८६ प्रति स० ४ । पत्र स० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३१ । घ भण्डार ।

१३८७ प्रति स० ४ । पत्र सं० १ । से काल स १७४६ । पूर्ण । वे सं २२८ । क मन्थार ।
विषय—भौममाया में मायार्थ क्लृप्तेति के सिष्य व सवाराम ने प्रतिस्तिपि की थी ।

१३८८ प्रति स० ६ । पत्र सं० २ से १२ । से काल × । अपूर्ण । वे सं २२९ । क मन्थार ।

१३८९ प्रति स० ७ । पत्र सं १२ । से काल सं १७५१ मायवा । वे सं २३ । क मन्थार ।
विषय—वं रामचन्द्र ने प्रतिस्तिपि की थी ।

१३९० प्रति सं० ८ । पत्र सं १ । से काल × । वे सं २२१ । क मन्थार ।

१३९१ ज्ञानार्णवटीका—य० नय विज्ञास । पत्र सं २७१ । या १३×८ इञ्च । माया—संस्कृत ।

विषय—योग । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २२७ । क मन्थार ।

विषय—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति शुभकथाप्रसिद्धिचतुष्टयप्रदीपाधिकारे वं नयविज्ञानेन साह पाषा कल्पुन साह टोडर तत्कुलकाम-
दिनाकरसाहज्जिवास्तस्य अग्रगण्य वं विमवाद्यो वर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३९२ प्रति सं० २ । पत्र सं ११६ । से काल × । वे सं २२८ । क मन्थार ।

१३९३ ज्ञानार्णवटीकाभाषा—कठिणविमलगण्डि । पत्र सं ११८ । या ११×६ इञ्च । माया—
हिन्दी (पद्य) । विषय—योग । र काल सं १७२८ मासोक्त मुदी १ । से काल सं १७३ वैशाख मुदी ३ । पूर्ण ।
वे सं ११४ । क मन्थार ।

१३९४ ज्ञानार्णवभाषा—अथचन्द्र व्याख्या । पत्र सं ११३ । या ११×७ इञ्च । माया—हिन्दी
(पद्य) विषय—योग । र काल सं १८९९ मास मुदी १ । से काल × । पूर्ण । वे सं २२३ । क मन्थार ।

१३९५ प्रति स० २ । पत्र सं ४२ । से काल × । वे सं २२४ । क मन्थार ।

१३९६ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४२१ । से काल सं १८८३ सावन मुदी ७ । वे सं ३४ । ग
मन्थार ।

विषय—साह जिहानाबाद में संतुमाल की प्रेरणा से भावा रचना की गई । कानपुरावनी साह ने मोनपाल
जीवनी से प्रतिस्तिपि कराने कीपरियों के मन्दिर में बढ़ाया ।

१३९७ प्रति स० ४ । पत्र सं ४८ । से काल × । वे सं २१२ । क मन्थार ।

१३९८ प्रति स० ५ । पत्र सं १३ से २११ । से काल × । अपूर्ण । वे सं २६९ । क मन्थार ।

१३९९ प्रति स० ६ । पत्र सं ३६२ । से काल सं १९११ मासोक्त मुदी ८ । अपूर्ण । वे सं २६९ ।

क मन्थार ।

विषय—प्राग्ज के २१ पत्र मध्ये है ।

१४०० तत्त्वयोग " । पत्र सं ३ । या १ × १ इञ्च । माया—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र
काल × । से काल सं १८८१ । पूर्ण । वे सं ३१ । क मन्थार ।

१४०१ त्रयोविंशतिका । पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र सं० २६ । आ० १०३×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना दृष्टान्त " " । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—गुजराती । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७०७ बैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर मे श्री हसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४ द्वादशभावनाटीका " " । पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी है ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा " " । पत्र सं० २० । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४ ८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१४०८ द्वादशानुप्रेक्षा—कविछत्त । पत्र सं० ८३ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०७ भाद्रवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । छ भण्डार ।

१४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

१४१३ पञ्चतत्त्वधारणा " " । पत्र सं० ७ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४-पन्द्रहविंशती - १। पत्र सं ४। मा १३×१३ इत्थं। भाषा-हिन्दी। विषय-अथर्वशास्त्र।
२। काल ×। से काल >। पूर्ण। वै सं ४३१। अ मन्डार।

विशेष—सूत्ररत्नस्य कृत एकीकृतस्तोत्र भाषा भी है।

१४१५ परमात्मपुराण—हीपचन्द्र। पत्र सं २४। मा १२×११ इत्थं। भाषा-हिन्दी (मन्त्र)।
विषय-अथर्वशास्त्र। २। काल ×। से काल सं १८६४ साधन सुवी ११। पूर्ण। अ मन्डार।

विशेष—महत्त्वा उमेद के प्रतिनिधि की थी।

१४१६ प्रति स० - १। पत्र सं २ से २२। से काल सं १८६३ साधन सुवी २। अपूर्ण। वै सं ६२६। अ मन्डार।

१४१७ परमात्मप्रकार—धागीन्द्रद्वय। पत्र सं १३ स १४४। मा १७×१५ इत्थं। भाषा-
अथर्वशास्त्र। विषय-अथर्वशास्त्र। २। काल १ की अठारवी। से काल सं १७६६ साधन सुवी २। अपूर्ण। वै सं २८३। अ मन्डार।

विशेष—सुधात्मचन्द्र विमलराम के प्रतिनिधि की थी।

१४१८ प्रति स० २। पत्र सं ६७। से काल सं १९३५। वै सं ४४४। अ मन्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४१९. प्रति स० ३। पत्र सं ७२। से काल सं १९४ भावग सुवी १३। वै सं ५७। अ
मन्डार। संस्कृत टीका सहित है।

विशेष—अथर्व सं ४। स्लोक। अथर्व ६ पृष्ठों में बहुत बारीक विधि है।

१४२० प्रति स० ४। पत्र सं १५। से काल ×। अपूर्ण। वै सं ४३४। अ मन्डार।

१४२१ प्रति स० ५। पत्र सं २ से १५। से काल ×। अपूर्ण। वै सं ४३५। अ मन्डार।

१४२२. प्रति स० ६। पत्र सं २५। से काल >। अपूर्ण। वै सं २९। अ मन्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

१४२३ प्रति स० ७। पत्र सं १९। से काल ×। अपूर्ण। वै सं २१। अ मन्डार।

१४२४ प्रति स० ८। पत्र सं २४। से काल सं १८३ वेदान्त सुवी ३। वै सं ८२। अ
मन्डार।

विशेष—अथर्व में सुत्रचन्द्रजी के विषय जो कुछ कहा उसके विषय वं अथर्वशास्त्र के प्रतिनिधि की।
संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं।

१४२५ परमात्मप्रकारटीका—असुतचन्द्राचार्य। पत्र सं ६९ से २४५। मा १३×४ इत्थं।
भाषा-संस्कृत। विषय-अथर्वशास्त्र। २। काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वै सं ४३३। अ मन्डार।

१४२६ प्रति स० ९। पत्र सं १३६। से काल ×। वै सं ४२३। अ मन्डार।

१४२७ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४१ । ले० काल स० १७९७ पौष सुदी ५ । वे० स० ४५४ । व
भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८ परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७९ । अ भण्डार ।

१४२९ प्रति सं० २ । पत्र स० ८ से १४९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र हैं ।

१४३० परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० १९३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १९५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८९० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० २०७ । च भण्डार ।

१४३२ प्रति सं० २ । पत्र स० २६ मे १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८ । च भण्डार ।

१४३३ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० १७० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १९९६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४ परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र स० ४४४ । आ० ११×९ । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वे० स० ४४९ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५ प्रति सं० २ । पत्र स० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३६ । छ भण्डार ।

१४३६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २४७ । ले० काल स० १९५० । वे० स० ४३७ । छ भण्डार ।

१४३७ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० से १९६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८ प्रति सं० ५ । पत्र स० ३२४ । ले० काल × । वे० स० १९२ । छ भण्डार ।

१४३९ परमात्मप्रकाशबालावबोधिनीटीका—खानचन्द । पत्र सं० २४१ । आ० १२½×५ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १९३६ । पूर्ण । वे० स० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुल्तान मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने
किया है ।

१४४० परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र स० २१ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल स० १९१९ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४० । क भण्डार ।

१४४० प्रति सं० २ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १९४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२ प्रति सं० ० । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३ प्रति स० ४ । पत्र सं २ स १५ । से काल मं १६३७ । वै सं ४४३ । क मण्डार ।

१४४४ परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजमान आसवाक । पत्र सं १५४ । भा १२३×८ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र काल सं १८४३ भाषाक बुकी ७ । से काल सं १६५२ मंगल बुकी १० । पूर्ण । वै सं ५४४४ । क मण्डार ।

१४४५ परमात्मप्रकाशभाषा— । पत्र सं १५ । भा १३×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र काल × । से काल × । वै सं ११६ । क मण्डार ।

१४४६ परमात्मप्रकाशभाषा— । पत्र सं ३६ । भा ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ६२७ । क मण्डार ।

१४४७ परमात्मप्रकाशभाषा— । पत्र सं ६३ से १८ । भा १×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं ४३२ । क मण्डार ।

१४४८ प्रवचनसार—आचार्य कृष्णकुण्ड । पत्र सं ४७ । भा १२×४३ इञ्च । भाषा—प्रकृत । विषय—अध्यात्म । र काल प्रथम सताब्दी । से काल मं १६४ भाषा बुकी ७ । पूर्ण । वै सं ३८ । क मण्डार ।

विशेष—मंस्कृत में पर्यायवाची शब्द विधे हुए हैं ।

१४४९ प्रति स० २ । पत्र सं ३८ । से काल × । वै सं ३१ ।

१४५० प्रति स० ३ । पत्र सं २ । से काल मं १८६६ भाषा बुकी ३ । वै सं २३८ । क मण्डार ।

१४५१ प्रति स० ४ । पत्र सं ९८ । से काल × । अपूर्ण । वै सं २३६ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२ प्रति स० ५ । पत्र सं २२ । से काल मं १८६७ भाषा बुकी ६ । वै सं २४ । क मण्डार ।

विशेष—परायणस मोहा नामे से प्रतिलिपि की थी ।

१४५३ प्रति स० ६ । पत्र सं १३ । से काल × । वै सं १४८ । क मण्डार ।

१४५४ प्रवचनसारटीका—असूतबन्धु आचार्य । पत्र सं ६७ । भा ६×३ इञ्च । भाषा—मैसूरु ।

विषय—अध्यात्म । र काल १ वी सताब्दी । से काल × । पूर्ण । वै सं १९ । क मण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तरबरीपिका है ।

१४५५ प्रति स० ७ । पत्र सं ११८ । से काल × । वै सं ८३२ । क मण्डार ।

१४५६ प्रति स० ३ । पत्र सं २ से ६ । से काल × । अपूर्ण । वै सं ७८३ । क मण्डार ।

१४५७ प्रति स० ४ । पत्र सं ११ । से काल × । वै सं ८१ । क मण्डार ।

१४५८ प्रति स० ५ । पत्र सं १८ । से काल मं १८६८ । वै सं ३७ । क मण्डार ।

विशेष—महाका दरफर्न से अजमेर में प्रतिलिपि की थी ।

१४५६ प्रति स० ६ । पत्र स० २३६ । ले० काल स० १६३८ । वै० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६० प्रति सं० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल × । वै० स० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१ प्रति सं० ८ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १७४७ फागुण बुदी ११ । वै० स० ५११ । ड

भण्डार ।

१४६२ प्रति स० ६ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १६४० भाद्रपद बुदी ३ । वै० स० ६१ । ज

भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३ प्रवचनसारटीका । पत्र स० ४१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।

र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ५१० । ड भण्डार ।

विशेष—प्राकृत में मूल संस्कृत में छाया तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४ प्रवचनसारटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वै० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५ प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति । पत्र स० ५१ मे १३१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १७६५ । अपूर्ण । वै० स० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल में नेवटा में महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६ प्रवचनसारभाषा—पाडे हेमराज । पत्र स० ८३ मे ३०५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—

हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल स० १७०६ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वै० स०

४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—मागानेर में ओसवाल गुजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७ प्रति स० २ । पत्र स० २६७ । ले० काल स० १६४३ । वै० स० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८ प्रति स० ३ । पत्र स० १७३ । ले० काल × । वै० स० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९ प्रति स० ४ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १६२७ फागुण बुदी ११ । वै० स० ६३ । घ

भण्डार ।

विशेष—प० परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१४७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १७४३ पौष सुदी २ । वै० सं० ५१३ । ड

भण्डार ।

१४७१ प्रति स० ६ । पत्र स० २४१ । ले० काल स० १८६३ । वै० स० ६४१ । च भण्डार ।

१४७० प्रति स० ७ । पत्र सं १५४ । से काल सं १८८३ कार्तिक बुदी २ । वै सं १२३ । छ मण्डार ।

विषय—सबाण मिवासी भमरचन्द्र के पुत्र महात्मा मणोस ने प्रतिसिपि की थी ।

१४७२ प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं १८ । मा ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अथ्यात्म । र काल सं १७२६ । से काल सं १७३३ प्राषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वै सं १४४ । छ मण्डार ।

१४७४ प्रवचनसारभाषा—बृम्हाचनदास । पत्र सं २१७ । मा १२ $\frac{1}{2}$ ×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अथ्यात्म । र काल × । से काल सं १८३३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वै सं ५११ । छ मण्डार ।

विषय—अथ के अन्त में बुन्दाचनदास का परिचय दिया है ।

१४७४ प्रवचनसारभाषा— । पत्र सं ८६ । मा ११×१ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अथ्यात्म । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं ५१२ । छ मण्डार ।

१४७६ प्रति स० २ । पत्र सं ३ । से काल × । अपूर्ण । वै सं ६४२ । छ मण्डार ।

विषय—अन्तिम पत्र नहीं है ।

१४७७ प्रवचनसारभाषा— । पत्र सं १२ । मा ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अथ्यात्म । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं १८२२ । ट मण्डार ।

१४७८ प्रवचनसारभाषा— । पत्र सं १४२ से १५२ । मा ११ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अथ्यात्म । र काल × । से काल सं १८६७ । अपूर्ण । वै सं ६४२ । छ मण्डार ।

१४७९ प्रवचनसारभाषा— । पत्र सं २३२ । मा ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अथ्यात्म । र काल × । से काल सं १८२६ । वै सं ६४३ । छ मण्डार ।

१४८० प्राश्यायामशास्त्र— । पत्र सं ६ । मा ११ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ६१६ । छ मण्डार ।

१४८१ बारह भावना—रङ्गू । पत्र सं २ । मा ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अथ्यात्म । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २४१ । छ मण्डार ।

विषय—मिथिलार न रङ्गू इत बारह भावना होना लिखा है ।

प्रारम्भ—शुभकस्त त्रिभुज सदा शुभकाम परजाय ।

स्वरूप जो देखिये पुरुषत तणो निभाय ॥

अन्तिम—अथ कहानी काल की बहुत गुणम की मण्डि ।

धानदी मे पाइये जब देने कर्माहि ॥

इति श्री रङ्गू इत बारह भावना मपूर्ण ।

१४८२ वारहभावना ' ' । पत्र स० १५ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५२६ । ड भण्डार ।

१४८३ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ६८ । झ भण्डार ।

१४८४ वारहभावना—भूधरदास । पत्र स० १ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४७ । ब् भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है ।

१४८५ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २५२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की वारह भावना है ।

१४८६ वारहभावना—नवलकवि । पत्र स० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । ड भण्डार ।

१४८७. बोधप्राभृत—आचार्य कुदकुद्र । पत्र स० ७ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३५ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८ भववैराग्यशतक । पत्र स० १५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल स० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । ब् भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९. भावनाद्वारिशिका । पत्र स० २६ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह और है । यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दपञ्चविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र ।

प्रति स्वर्णाक्षरो मे है ।

१४९० भावनाद्वारिशिकाटीका । पत्र स० ४६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६८ । ड भण्डार ।

१४९१ भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० ६ । आ० १४×५^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । ज भण्डार ।

विशेष—प्राकृत गाथाओं पर संस्कृत श्लोक भी हैं ।

१४९२. मृत्युमहोत्सव । पत्र स० १ । आ० ११^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४१ । अ भण्डार ।

१४९३ मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र स० २२ । आ० ६^३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल स० १६१८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८० । घ भण्डार ।

१४९४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ६०४ । ड भण्डार ।

१८६५ प्रति स० ३। पत्र सं १। न काल ×। वै सं १८४। छ मण्डार।

१८६६ प्रति स० ४। पत्र सं ११। न काल ×। वै सं १८४। छ मण्डार।

१८६७ प्रति स० ५। पत्र सं १। न काल ×। वै सं १६३। छ मण्डार।

१८६८ योगविदुषकरणा—आ० हरिभद्रसूरि। पत्र सं १८। भा १ × ४^३ इत्थ। भाषा—मंस्कृत।

विषय—वाम। र काल ×। न काल ×। पूर्ण। वै सं २६२। छ मण्डार।

१८६९. योगमति—। पत्र सं १। भा १२ × ४^३ इत्थ। भाषा—प्राकृत। विषय—योग। र

काल ×। न काल ×। पूर्ण। वै सं ६१३। छ मण्डार।

१९०० योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि। पत्र सं २३। भा १ × ४^३ इत्थ। भाषा—मंस्कृत। विषय—

योग। र काल ×। न काल ×। पूर्ण। वै सं ८६३। छ मण्डार।

१९०१ योगशास्त्र—। पत्र सं १४। भा १ × ४^३ इत्थ। भाषा—मंस्कृत। विषय योग। र

काल ×। न काल सं १७३ भाषाङ्क कुटी १। पूर्ण। वै सं ८२६। छ मण्डार।

विषय—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

१९०२. योगसार—योगीन्द्रदेव। पत्र सं १२। भा १ × ४ इत्थ। भाषा—अपभ्रंश। विषय—

अध्यात्म। र काल ×। न काल सं १८४। अपूर्ण। वै सं ८२। छ मण्डार।

विषय—मुक्ताराम झावका ने प्रतिनिधि की थी।

१९०३ प्रति स० २। पत्र सं १७। न काल सं १९३४। वै सं १६। क मण्डार।

विषय—मंस्कृत छाया सहित है।

१९०४ प्रति स० ३। पत्र सं १३। न काल ×। वै सं १७। क मण्डार।

विषय—हिन्दी अर्थ भी दिया है।

१९०५ प्रति स० ४। पत्र सं १२। न काल सं १८१३। वै सं ११६। क मण्डार।

१९०६ प्रति स० ५। पत्र सं २६। न काल ×। वै सं ३१। क मण्डार।

१९०७ प्रति स० ६। पत्र सं ११। न काल सं १८८२ वैज सुवी ४। वै सं २८२। प

मण्डार।

१९०८ प्रति स० ७। पत्र सं १। न काल सं १८४ भास्वोत्र कुटी ३। वै सं ३३६। छ

मण्डार।

१९०९ प्रति स० ८। पत्र सं २। न काल ×। अपूर्ण। वै सं ३१६। छ मण्डार।

१९१० योगसारभाषा—मन्दाराम। पत्र सं ३७। भा १२३ × ४^३ इत्थ। भाषा—हिन्दी। विषय—

अध्यात्म। र काल सं १९४। न काल ×। पूर्ण। वै सं ६१३। क मण्डार।

विषय—आगरे में छात्रवृत्त में भाषा टीका सिद्धी गई थी।

१९११ योगसारभाषा—पद्मालाल चौधरी। पत्र सं ३३। भा १२ × ७ इत्थ। भाषा—हिन्दी

(नव)। विषय—अध्यात्म। र काल सं १९३२ छात्र सुवी ११। न काल ×। पूर्ण। वै सं १६। क मण्डार।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । ङ भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—प० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७३ इच्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा ... । पत्र सं० ६ । आ० २१×६३ इच्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । ङ भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह ... । पत्र सं० १८ । आ० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन ... । पत्र सं० २ । आ० १०३×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । ङ भण्डार ।

‘धर्मनाथस्तुवे धर्ममय सद्धर्मसिद्धये ।

धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तक ॥

१५१९. लिंगपाहुड़—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×५३ इच्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड़ तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । भ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८५ सावण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ष भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड़ (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४३ इच्च ।

भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । अ भण्डार ।

१५२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० सं० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में प० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६५ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । से काल × । के सं १८४ । छ मन्धार ।

१४६६ प्रति स० ४ । पत्र सं ११ । से काल × । के सं १८४ । छ मन्धार ।

१४६७ प्रति सं० ५ । पत्र सं १ । से काल × । के सं १९३ । छ मन्धार ।

१४६८. योगविदुमकरण—भा० हरिमन्त्रसुरि । पत्र सं १८ । भा १ × ४३ इत्त । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २६२ । छ मन्धार ।

१४६९ योगमक्ति— । पत्र सं ६ । भा १२ × ३३ इत्त । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र

काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ६१३ । छ मन्धार ।

१५० योगशास्त्र—हेमचन्द्रसुरि । पत्र सं २३ । भा १ × ४३ इत्त । भाषा—संस्कृत । विषय—

योग । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ८६३ । छ मन्धार ।

१५०१ योगशास्त्र— । पत्र सं १४ । भा १ × ४३ इत्त । भाषा—संस्कृत । विषय योग । र

काल × । से काल सं १७ ३ भाषाङ्ग मुषी १ । पूर्ण । के सं ८२६ । छ मन्धार ।

विशेष—हिन्दी में धर्म दिया हुआ है ।

१५०२ योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं १२ । भा १ × ४ इत्त । भाषा—सप्तम । विषय—

सध्यात्म । र काल × । से काल सं १८ ४ । अपूर्ण । के सं ८२ । छ मन्धार ।

विशेष—सुखराम नामका से प्रतिनिधि की थी ।

१५०३ प्रति स० २ । पत्र सं १७ । से काल सं ११३४ । के सं ६६ । क मन्धार ।

विशेष—संस्कृत नामा सहित है ।

१५ ४ प्रति सं० ३ । पत्र सं १३ । से काल × । के सं ९७ । क मन्धार ।

विशेष—हिन्दी धर्म भी दिया है ।

१५०५ प्रति स० ४ । पत्र सं १२ । से काल सं १८१३ । के सं ६६ । क मन्धार ।

१५०६ प्रति स० ५ । पत्र सं २६ । से काल × । के सं ३१ । क मन्धार ।

१५०७ प्रति स० ६ । पत्र सं ११ । से काल सं १८८२ । भाषा मुषी ४ । के सं २८२ । छ

मन्धार ।

१५०८. प्रति स० ७ । पत्र सं १ । से काल सं १८ ४ भाषाङ्ग मुषी ३ । के सं ३३६ । म

मन्धार ।

१५०९ प्रति स० ८ । पत्र सं ३ । से काल × । अपूर्ण । के सं ३१६ । म मन्धार ।

१५१० योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं ३७ । भा १२३ × ४३ इत्त । भाषा—हिन्दी । विषय—

सध्यात्म । र काल सं ११ ४ । से काल × । पूर्ण । के सं ६११ । क मन्धार ।

विशेष—भाषा में ताजगङ्ग में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११ योगसारभाषा—पद्माकाश चौधरी । पत्र सं ३३ । भा १२ × ७ इत्त । भाषा—हिन्दी

(पद्य) । विषय—सध्यात्म । र काल सं ११३२ ताजग मुषी ११ । से काल × । पूर्ण । के सं ६१ । क मन्धार ।

१५१२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । ड भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७३ इच्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल सं० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा पत्र सं० ६ । आ० २१×६३ इच्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । ड भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह . पत्र सं० १८ । आ० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन . पत्र सं० २ । आ० १०३×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । ड भण्डार ।

‘धर्मनाथस्तुवे धर्ममय सद्धर्मसिद्धये ।

धीमता धर्मदातार धर्मचक्रप्रवर्तक ॥

१५१९ लिंगपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×५३ इच्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । झ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८५ सावण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च

भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । झ भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४३ इच्च ।

भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । झ भण्डार ।

१५२५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० सं० १८८ । झ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में प० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०७ प्रति स० ४। पत्र सं ४२। से काल सं १८१७ कातिक सुदी ७। वै सं ११३। ल मन्थार।

विशेष—संस्कृत पद्यों में भी अर्घ्य दिया है।

१५२८ प्रति सं० ५। पत्र सं ६। से काल ×। वै सं २८ ल मन्थार।

१५२९ प्रति स० ६। पत्र सं ३२। से० काल ×। वै सं ११७। ल मन्थार।

१५३० प्रति स० ७। पत्र सं ३१ से ५२। से काल ×। अपूर्णा। वै सं ७३७। ल मन्थार।

१५३१ प्रति स० ८। पत्र सं २६। से काल ×। अपूर्णा। वै सं ७३८। ल मन्थार।

१५३२ प्रति स० ९। पत्र सं २७ से ६५। से काल ×। अपूर्णा। वै सं ७३९। ल मन्थार।

१५३३ प्रति स० १०। पत्र सं ५४। से काल ×। वै सं ७४। ल मन्थार।

१५३४ प्रति स० ११। पत्र सं ६३। से काल ×। वै सं ३२७। ल मन्थार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१५३५ प्रति स १२। पत्र सं २। से काल सं १५१६ वैश्व सुदी १३। वै सं १८। ल मन्थार।

१५३६ प्रति स० १३। पत्र सं २६। से काल ×। वै सं १८४६। ट मन्थार।

१५३७ प्रति सं० १४। पत्र सं ५२। से काल सं १७१५। वै सं १८४७। ट मन्थार।

विशेष—नन्दापुर में पार्ष्वनाथ चैत्यालय में प्र मुक्तेश्वर के पठमार्च मनोहरदास ने प्रतिमिति की थी।

१५३८ प्रति स० १५। पत्र सं १ से ८३। से काल ×। अपूर्णा। वै सं २८५। ट मन्थार।

विशेष—निम्न प्राप्त है— बर्तमान सूत्र चारित्र। चारित्र प्राकृत की ४५ भाषा से घाये नहीं है। प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

१५३९ पट्टपाहुडटीका... पत्र सं २१। या १२×६ इड। मावा-संस्कृत। विशेष-अध्यात्म। र काल ×। से काल ×। पूर्णा। वै सं ५६। ल मन्थार।

१५४० प्रति स० २। पत्र सं ४२। से काल ×। वै सं ७१३। ल मन्थार।

१५४१ प्रति स० ३। पत्र सं ५१। से काल सं १८८ काकुत्स्थ सुदी ८। वै सं ११६। ल मन्थार।

विशेष—यं स्वल्पचन्द्र के पठमार्च भाबमथर में प्रतिमिति हुई।

१५४२ प्रति स ४। पत्र सं ६४। से काल सं १८२५ ज्येष्ठ सुदी १। वै सं २३८। ल मन्थार।

१५४३. षट्पाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० स० ७४१ । ङ

भण्डार ।

१५४५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १० । वे० स० ६२ । छ

भण्डार ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० स० ६ । ब

विशेष—श्रीलालचन्द्र के पठनार्थ आमेर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ आश्विन सुदी ७ । वे० स० ६८ । ब

भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने ५० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी ।

१५४८ संबोधनचरवावनी—द्यानतराय । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । च भण्डार ।

१५४९ संबोधनचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—बाणपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५० समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० २३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत्त सं० २६३ सर्व भवति । वे० सं० १८१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसधे नदिसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे म० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे म० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तौरिमानि नाटकसमयसारवृत्तानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० स० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० स० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

१५५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ । वे० स० ७३४ । क भण्डार ।

१५५४ प्रति स० ५ । पत्र सं ५१ । से काल × । वे० सं ७१५ । क मन्थार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत में वर्ण है ।

१५५५ प्रति स० ६ । पत्र सं ७ । से काल × । वे सं १८ । घ मन्थार ।

१५५६ प्रति स० ७ । पत्र सं ४१ । से काल सं १८७७ बैशाख सुदी १ । वे० सं १९९ । ङ मन्थार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७ प्रति स० ८ । पत्र सं० २१ । से काल × । मपूर्णा । वे सं १९७ । च मन्थार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८ प्रति स० ९ । पत्र सं० १२ । से काल × । वे सं १९७ क । च मन्थार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५९ प्रति स० १० । पत्र सं ३ से १३१ । से काल × । मपूर्णा । वे सं १९८ । च मन्थार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६० प्रति स० ११ । पत्र सं ८२ । से काल × । मपूर्णा । वे सं १९८ क । च मन्थार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१ प्रति सं० १२ । पत्र सं ७ । से काल × । वे० सं १७ । च मन्थार ।

१५६२ प्रति स० १३ । पत्र सं ४७ । से काल × । वे सं १७१ । च मन्थार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३ प्रति स० १४ । पत्र सं ३३ । से काल सं १५१३ पौष सुदी ६ । वे सं २१४ । ट मन्थार ।

१५६४ समयसारकृत्या—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं १२२ । मा ११×४३ इत्य । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अभ्युत्थान । १ काल × । से काल सं १७४३ माघीक सुदी २ । पूर्णा । वे सं १७३ । अ मन्थार ।

प्रकृति—संवत् १७४३ वर्षे माघीक मासे शुक्लपक्षे द्विदिना २ तिथी दुस्वासरे श्रीमत्कामागरे श्रीस्वीतम्बरदासाया श्रीमद्विजयपञ्चे भट्टारक श्री १ व श्री कल्याणसागरसूरिणी तद् विषय चरितरत्न श्री जयवर्तनी तद् विषय चरित सप्तमोत्तम पठनाय सिद्धिबद्धे शुभं भवतु ।

१५६५ प्रति स० २ । पत्र सं १८४ । से काल सं १६१७ माघीक सुदी ७ । वे सं १३३ । अ मन्थार ।

मन्थार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में प्रतिस्तिपि हुई थी । प्रकृति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१७ वर्षे अक्षय्य वदि सप्तम्या शुक्लमासरे महाराजाधिराज श्री जयसिंहजी प्रतापे ब्रजावतीमध्ये सिद्धाहृतं संधी श्री मोहनदासजी पठनार्थ । निमित्तं श्री श्री अमृतचन्द्र ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४१ । ले० काल X । वे० स० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल सस्कृत मे टीका दी है तथा नीचे श्लोको की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२४ । ले० काल X । वे० स० ७३७ । क भण्डार ।

१५७० प्रति सं० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१ प्रति सं० ८ । पत्र स० २३ । ले० काल X । वे० स० ७३९ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२ प्रति सं० ९ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशो पर भी संस्कृत मे टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल X । वे० सं० ११० । घ भण्डार ।

१५७४ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से सस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५ प्रति सं० १२ । पत्र स० २ से ४७ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० स० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति सं० १३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी २ । वे० स० ६१ । छ

भण्डार ।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७ प्रति सं० १४ । पत्र स० ५३ । ले० काल X । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका गहित है ।

१५७८ प्रति सं० १५ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १६१४ पौष बुदो ८ । वे० सं० २०५ । ज

भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९ प्रति सं० १६ । पत्र स० ५६ । ले० काल X । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । आ० १०३ X ४३ इञ्च
मापा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल सं० १८३३ माह बुदो ६ । पूर्णा । वे० सं० २ । अ
भण्डार ।

१५८० प्रति स० २ । पत्र सं ११९ । से० काल सं १७ ३ । वे सं १ ४ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रघस्ति—संवत् १७ ३ मार्गसिर कृष्णपक्ष्यां तिथी बुधवारि मिक्षितेयम् ।

१५८१ प्रति स० ३ । पत्र सं १ १ । से० काल × । वे सं ३ । अ मन्डार ।

१५८४ प्रति स० ४ । पत्र सं १० से ४६ । से० काल × । वे सं २ ३ । अ मन्डार ।

१५८५ प्रति स० ५ । पत्र सं १६ । से० काल सं १७ ३ वैशाख सुदी १ । वे सं २२६ । अ

मन्डार ।
विशेष—प्रघस्ति—सं १७ ३ वर्षे वैशाख कृष्णपक्षस्यां तिथी लिखितम् ।

१५८६ प्रति स० ६ । पत्र सं ११६ । से० काल सं १६३८ । वे सं ७४ । क मन्डार ।

१५८७ प्रति स० ७ । पत्र सं १३८ । से० काल सं १६५७ । वे सं ७४१ । क मन्डार ।

१५८८ प्रति स० ८ । पत्र सं १ २ । से० काल सं १७ ६ । वे सं ७४२ । क मन्डार ।

विशेष—मपवत् पुत्रे मे सिरोज ग्राम में प्रतिमिति का थी ।

१५८९ प्रति स० ९ । पत्र सं १३ । से० काल × । वे सं ७४३ । क मन्डार ।

१५९० प्रति स० १० । पत्र सं १६१ । से० काल × । वे सं ७४४ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१ प्रति स० ११ । पत्र सं १७६ । से० काल सं १६८४ वैशाख सुदी ३ । वे सं १ ६ । अ

मन्डार ।
विशेष—मन्डार बागसाह के वासनकाल में मत्स्यपुरा में मेरुज मूरि शैलाम्बर मुनि जैसा है प्रतिमिति की

थी । नीचे निम्नलिखित पंक्तियां प्रौर लिखी हैं—

पादे शैतु सैठ तत्र पुत्र पादे पारसु पीपी देहुरे ।

बासी सं १६७३ तत्र पुत्रु बीसास्तान्त्र कनहर ।

बीच में कुछ पत्र लिखवाये हुये हैं ।

१५९२ प्रति स० १२ । पत्र सं १६८ । से० काल सं १६९० माघ सुदी १ । वे सं ७५ । अ

मन्डार ।
विशेष—संपत्नी पमासाम्ब मे स्वपञ्चार्थ प्रतिमिति की थी । ११२ से १७ तक नीसे पत्र हैं ।

१५९३ प्रति स० १३ । पत्र सं २५ । से० काल सं १७३ रमसिर सुदी १५ । वे सं १ ६ ।

अ मन्डार ।
१५९४ समयसारशुक्ति— । पत्र सं ४ । मा ५ × १ इत्त । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।

८ काल × । से० काल × । मपूर्व । वे सं १ ७ । अ मन्डार ।

१५९५ समयसारटीका— । पत्र सं ८१ । मा १ ३ × १ इत्त । भाषा—उत्कृत । विषय—अध्यात्म ।

८ काल × । से० काल × । मपूर्व । वे सं ७६९ । अ मन्डार ।

१५६६ समयसारनाटक—बनारसीदास । पत्र स० ६७ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १६६३ आसोज सुदी १३ । ले० काल स० १८३८ । पूर्णा । वे० स० ४०६ । अ
भण्डार ।

१५६७ प्रति स० २ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८६७ फागुण सुदी ६ । वे० स० ४०६ । अ
भण्डार ।

विशेष—आगरे मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५६८. प्रति सं० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १०६६ । अ भण्डार ।

१५६९ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६८४ । अ भण्डार ।

१६००. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४ से ११५ । ले० काल स० १७८६ फागुण सुदी ४ । वे० सं० ११२८

अ भण्डार ।

१६०१ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८४ । ले० काल स० १९३० ज्येष्ठ बुदी १५ । वे० स० ७४६ । क
भण्डार ।

विशेष—पद्यो के बीच मे सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना स०
१९१४ कार्तिक सुदी ७ है ।

१६०२ प्रति सं० ७ । पत्र स० १११ । ले० काल स० १९५६ । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

१६०३. प्रति स० ८ । पत्र स० ४ से ५६ । ले० काल × । वे० स० २०८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं ।

१६०४ प्रति सं० ९ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८८७ माघ सुदी ८ । वे० स० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५ प्रति स० १० । पत्र स० ३६६ । ले० काल स० १९२० वैशाख सुदी १ । वे० स० ८५ । ग
भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटके के रूप मे है । लिपि बहुत सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं तथा एक पत्र मे ५ लाइन और
प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं । पद्यो के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रो मे है । यह ग्रन्थ तनसुख
सोनी का है ।

१६०६. प्रति स० ११ । पत्र स० २८ से १११ । ले० काल स १७१४ । अपूर्णा । वे० स० ७६७ । ड
भण्डार ।

विशेष—रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. प्रति सं० १२ । पत्र स० १२२ । ले० काल स० १९५१ चैत्र सुदी २ । वे० स० ७६८ । ड
भण्डार ।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८ प्रति स० १३ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १९४३ मंगसिर बुदी १३ । वे० स० ७६९ ।
ड भण्डार ।

विशेष—सहस्रीनारात्मक ब्राह्मण ने ज्यमनर में प्रतिनिधि की थी ।

१६०६. प्रति स० १४ । पत्र सं १६ । से काल सं १९७७ प्रथम सावण सुदी १३ । वै० सं ७७० । ऋ मन्थार ।

विशेष—हिन्दी मद्य में भी टीका है ।

१६१० प्रति स० १४ । पत्र सं १ । से काल × । मपूर्णे । वै सं ७७१ । ऋ मन्थार ।

१६११ प्रति स० १६ । पत्र सं २ से २२ । से काल × । मपूर्णे । वै सं ३३७ । ऋ मन्थार ।

१६१२ प्रति स० १७ । पत्र सं ३७ । से काल सं १७६३ सावण सुदी १३ । वै० सं ७७२ ।

ऋ मन्थार ।

१६१३ प्रति सं० १८ । पत्र सं ६ । से काल सं १८६४ मंसिर सुदी ६ । वै सं ९२२ । ऋ

मन्थार ।

विशेष—पंडे नानवराम ने सवाईराम गौडा से प्रतिनिधि कराई ।

१६१४ प्रति स० १६ । पत्र सं ६ । से काल × । मपूर्णे । वै सं ९२३ । ऋ मन्थार ।

१६१५ प्रति स० २० । पत्र सं ४१ से १३२ । से काल × । मपूर्णे । वै सं ९२४ (क) । ऋ

मन्थार ।

१६१६ प्रति स० २१ । पत्र सं १३ । से काल × । वै सं ९२५ (ख) । ऋ मन्थार ।

१६१७ प्रति स० २२ । पत्र सं २६ । से काल × । वै सं ९२५ (ग) । ऋ मन्थार ।

१६१८ प्रति स० २३ । पत्र सं ४ से ३ । से काल सं १७ ४ ज्येष्ठ सुदी २ । मपूर्णे । वै

सं ९२ (घ) । ऋ मन्थार ।

१६१९ प्रति स० २४ । पत्र सं १८३ । से काल सं १७८८ सावण सुदी २ । वै सं ९ । ऋ

मन्थार ।

विशेष—विष्णु मिनासी किसी कामस्य ने प्रतिनिधि की थी ।

१६२० प्रति स० २५ । पत्र सं ४ से ८१ । से काल × । मपूर्णे । वै सं १५२६ । ऋ मन्थार ।

१६२१ प्रति स० २६ । पत्र सं ३६ । से काल × । मपूर्णे । वै सं १७ ८ । ऋ मन्थार ।

१६२२ प्रति स० २७ । पत्र सं २३७ । से काल सं १७४६ । वै सं १९ ९ । ऋ मन्थार ।

विशेष—प्रति राजमन्थार मद्य टीका सहित है ।

१६२३ प्रति स० २८ । पत्र सं ६ । से० काल × । वै सं १८६ । ऋ मन्थार ।

१६२४ समयसारभाषा—अथचन्द्र धावडा । पत्र सं ५१३ । सा १३ × ८ इय । भाषा—हिन्दी (मद्य) । विषय—मध्याराम । र काल सं १८६४ कार्तिक सुदी १ । से काल सं १९४६ । पूर्णे । वै सं ७४८ ।

ऋ मन्थार ।

१६२५ प्रति स० २ । पत्र सं ४९६ । से काल × । वै सं ७४९ । ऋ मन्थार ।

१६२६ प्रति स० ३ । पत्र सं २१६ । से काल × । वै सं ७५ । ऋ मन्थार ।

१६२७. प्रति स० ४ । पत्र स० ३२५ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३१७ । ले० काल स० १८७७ आषाढ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ

भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में नवाब गजुहीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३७५ । ले० काल स० १९५२ । वे० स० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति स० ७ । पत्र स० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० स० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३०५ । ले० काल × । वे० स० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका । पत्र स० २०० से ३३२ । आ० ११६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बघ मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नहीं हैं । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक स० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा । पत्र स० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४ समयसारवचनिका । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र स० ५१ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति स० ३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४० समाधितन्त्र । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । व्य भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

विशेष—सुकमीनारायण प्राण्यण ने जयनगर में प्रतिमिति की थी।

१६०६ प्रति सं० १४। पत्र सं १६। से काल सं १६७७ प्रथम सावण सुदी १३। वै० सं ७७०। क मन्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य में श्री टीका है।

१६१० प्रति सं० १४। पत्र सं १। से काल ×। मपूर्णा। वै सं० ७७१। क मन्डार।

१६११ प्रति सं० १६। पत्र सं २ से २२। से काल ×। मपूर्णा। वै सं ११७। क मन्डार।

१६१२ प्रति सं० १७। पत्र सं ६७। से काल सं १७६३ भाषाङ्ग सुदी १३। वै सं ७७२।

क मन्डार।

१६१३ प्रति सं० १८। पत्र सं ६। से काल सं १८३४ मंगसिर सुदी ६। वै सं ९१२। ज

मन्डार।

विशेष—पंडे गानगराय ने सबाहराम मोबा से प्रतिमिति कराई।

१६१४ प्रति सं० १६। पत्र सं ६। से काल ×। मपूर्णा। वै सं ९१३। ज मन्डार।

१६१५ प्रति सं० २०। पत्र सं ४१ से १३२। से काल ×। मपूर्णा। वै सं ९१५ (क)। ज

मन्डार।

१६१६ प्रति सं० २१। पत्र सं १३। से काल ×। वै सं ९१५ (ख)। ज मन्डार।

१६१७ प्रति सं० २२। पत्र सं २६। से काल ×। वै सं ९१५ (ग)। ज मन्डार।

१६१८ प्रति सं० २३। पत्र सं ४ से ५। से काल सं १७४ ज्येष्ठ सुदी २। मपूर्णा। वै

सं ९२ (घ)। क मन्डार।

१६१९ प्रति सं० २४। पत्र सं १८३। से काल सं १७८८ भाषाङ्ग सुदी २। वै सं ९। ज

मन्डार।

विशेष—मिष्ट मिवासी किसी कर्मस्थ ने प्रतिमिति की थी।

१६२० प्रति सं० २५। पत्र सं ४ से ८१। से काल ×। मपूर्णा। वै सं १३२६। ट मन्डार।

१६२१ प्रति सं० २६। पत्र सं ३६। से काल ×। मपूर्णा। वै सं १७८। ट मन्डार।

१६२२ प्रति सं० २७। पत्र सं २३७। से काल सं १७४६। वै सं १६९। ट मन्डार।

विशेष—प्रति राममन्डल गद्य टीका सहित है।

१६२३ प्रति सं० २८। पत्र सं ६। से काल ×। वै सं १८६। ट मन्डार।

१६२४ समघसारभाषा—जयचन्द्र द्वापदा। पत्र सं ५१६। भा १३×८ द्वा। भाषा—हिन्दी

(गद्य)। विषय—अध्यात्म। र काल सं १८६४ कार्तिक सुदी १। से काल सं १९४६। पूर्ण। वै सं० ७४८।

क मन्डार।

१६२५ प्रति सं० २। पत्र सं ४६३। से काल ×। वै सं ७४६। क मन्डार।

१६२६ प्रति सं० ३। पत्र सं ९१६। से काल ×। वै सं० ७५१। क मन्डार।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ

भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में तवाव गण्डीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२ समयसारकलशाटीका । पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नहीं हैं । पहले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक सं० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा । पत्र सं० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४ समयसारवचनिका । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणिक्यचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३ प्रति स० २ । पत्र सं० ७५ । से काल स १६४२ । के सं० ७५५ । क मण्डार ।

१६४४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । से काल X । के सं० ७५७ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी प्रबन्ध पत्रदास निगोरेमा द्वारा कुछ किया गया है ।

१६४५ प्रति स० ४ । पत्र सं० २ । से काल X । के सं० ७६ । क मण्डार ।

१६४६ समाधितन्त्रभाषा—जाधूराम दासी । पत्र सं० ४१५ । मा १२५ X ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—योग । १० काल सं० १६२३ चौथी सुबि १२ । से काल सं० १६३८ । पूर्ण । के सं० ७६१ । क मण्डार ।

१६४७ प्रति स० २ । पत्र सं० २१ । से काल X । के सं० ७६२ । क मण्डार ।

१६४८ प्रति स० ३ । पत्र सं० १६८ । से काल सं० १६२३ द्वि अष्टे सुबि १ । के सं० ७८ । क मण्डार ।

१६४९ प्रति स० ४ । पत्र सं० १७५ । से काल X । के सं० ६२७ । क मण्डार ।

१६५० समाधितन्त्रभाषा—पर्यंतचर्मर्षि । पत्र सं० १८७ । मा १२३ X ५ इञ्च । भाषा—गुजराती

लिपि हिन्दी । विषय—योग । १ काल X । से काल X । पूर्ण । के सं० ११३ । क मण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा मिले मये हैं । सारमपुर निवासी पं चरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१ प्रति स० २ । पत्र सं० १४८ । से काल सं० १७४१ कालिक सुबि ६ । के सं० ११४ । क मण्डार ।

१६५२ प्रति स० ३ । पत्र सं० ११ । से काल X । अपूर्ण । के सं० ७८१ । क मण्डार ।

१६५३ प्रति स० ४ । पत्र सं० २१ । से काल X । के सं० ७८२ । क मण्डार ।

१६५४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । से काल सं० १७७१ । के सं० ६६८ । क मण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं मानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५ प्रति स० ६ । पत्र सं० २३२ । से काल X । अपूर्ण । के सं० १४२ । क मण्डार ।

१६५६ प्रति स० ७ । पत्र सं० १२४ । से काल सं० १७३८ पीप सुबि ११ । के सं० ४४ । क मण्डार ।

विशेष—पाण्डे उभोखल काला ने केसरसास पोही से बहिन दाबी के पठार्थ सीमोर में प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति छुटका साफ है ।

१६५७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । से काल सं० १७८६ भाद्र सुबि ११ । के सं० २६ । क मण्डार ।

१६५८ समाधिसरण— । पत्र सं० ४ । मा ७३ X १३ इञ्च । भाषा—प्रान्त । विषय—अध्यात्म । १ काल X । से काल X । पूर्ण । के सं० १३२६ ।

१६५९ समाधिसरणभाषा—दानतराय । पत्र सं० ३ । मा ८५ X ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । १ काल X । से काल X । पूर्ण । के सं० ६४२ । क मण्डार ।

१६६० प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । से काल X । के सं० ७७६ । क मण्डार ।

१६६१ प्रति स० ३ । पत्र सं० २ । से काल X । के सं० ७८३ । क मण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल म० १६३३ । पूर्ण । वे० स० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचन्द । पत्र स० ७ । आ० ७ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

१६६४ समाधिमरणभाषा । पत्र स० १३ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८४ । छ भण्डार ।

१६६५. प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० १७३७ । ट भण्डार ।

१६६६ समाधिमरणस्वरूपभाषा । पत्र स० २५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८७८ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४३१ । अ भण्डार ।

१६६७ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८८३ मगसिर बुदी ११ । वे० स० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

१६६८ प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० ६६६ । च भण्डार ।

१६६९. प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६३४ भादवा सुदी १ । वे० स० ७०० । च भण्डार ।

१६७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८८४ भादवा बुदी ८ । वे० स० २३६ । छ भण्डार ।

१६७१ प्रति स० ६ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८५३ पौष बुदी ६ । वे० स० १७५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरवश लुहाख्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७२ समाधिशातक—पूज्यपाद । पत्र स० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६४ । अ भण्डार ।

१६७३ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६७४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६२४ वैशाख बुदी ६ । वे० स० ७७ । ज भण्डार ।

विशेष—सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७५ समाधिशातकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ५२ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६३५ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६ प्रति सं० २ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ७६५ । क भण्डार ।

१६७७ प्रति स० ३ । पत्र सं २४ । ले कास सं ११२८ काठुण मुनी १३ । वे सं ३७३ । व
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिमिति हुई थी ।

१६७८ प्रति स० ४ । पत्र सं ७ । ले कास X । वे सं ३७४ । व मन्थार ।

१६७९ प्रति स० ५ । पत्र सं २४ । ले कास X । वे सं ७८३ । व मन्थार ।

१६८० समाधिरातकटीका— । पत्र सं १५ । भा १२X२३ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—
अप्यात्म । र कास X । ले कास X । पूर्ण । वे सं ३३३ । व मन्थार ।

१६८१ सप्तोपपासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं १६ । भा १३X४ इत्य । माया—प्रकृत ।
विषय—अप्यात्म । र कास X । ले कास X । पूर्ण । वे सं ७८६ । व मन्थार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२ सप्तोपपासिका—रङ्गू । पत्र सं ३ । भा ११X६ इत्य । माया—अप्यस । र कास X ।
ले कास स १७११ पीप मुनी २ । पूर्ण । वे सं २२६ । व मन्थार ।

विशेष—यं बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिमिति करना भी । प्रशस्ति—

संवत् १७११ वर्षे दिती पीप वदि ७ सुम दिने महाराजाधिराज भी जैसिहजी विजयराज्ये साह भी
हंसराज तत्पुत्र साह भी गेनराज तत्पुत्र अय प्रथम पुत्र साह पादमनजी । द्वितीय पुत्र साह भी बलिकर्ण तृतीय पुत्र
साह देवसी । चाति सावडा साह भी रावमनजी का पुत्र पवित्र साह भी बिहारीदासजी निवासते ।

दोहाडा—पूरव भावक को बहे, पुण इकबीस निवास ।

सो परतलि पेसिये अदि बिहारीदास ॥

मिळतं महारामा इ परसी रचित परमसीजी का निता करतर पन्हे बासी भीजे भीहणाल् मुकाम दिङ्गी मप्ये ।

१६८३ सप्तोपपासिका—द्यानतराय । पत्र सं ३४ । भा ११X७ इत्य । माया—हिन्दी । विषय—
अप्यात्म । र कास X । ले कास X । पूर्ण । वे सं ७८१ । व मन्थार ।

विशेष—प्रथम २ पत्रों में करवा सतक भी है । प्रति दोनों ओर से बनी हुई है ।

१६८४ सप्तोपपासिका— । पत्र सं २ से ७ । भा ११X४ इत्य । माया—प्रकृत । विषय—
अप्यात्म । र कास X । ले कास X । अपूर्ण । वे सं ८८ । व मन्थार ।

१६८५ स्वराज्य— । पत्र सं १६ । भा १ X४ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—योग । र
कास X । ले कास सं १८११ मंगसिर मुनी १५ । पूर्ण । वे सं २४१ । व मन्थार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । हेकेन्द्रजीति के शिष्य जयवाम ने टीका लिखी थी ।

१६८६ त्वातुभबद्धपद्य—नाथूराम । पत्र सं २१ । भा ११X८ इत्य । माया हिन्दी (पद्य) ।
विषय—अप्यात्म । र कास सं ११३६ शेर मुनी ११ । ले कास X । पूर्ण । वे सं १८७ । व मन्थार ।

१६८७ दृढयागपीपिका— । पत्र सं २१ । भा ११X२ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—योग ।
र कास X । ले कास X । अपूर्ण । वे सं ४४४ । व मन्थार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६५८. अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड—कवि राजमल्ल । पत्र स० २ से १२ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७५ । अ भण्डार ।

१६५९. अष्टशती—अकलंकदेव । पत्र स० १७ । आ० १२×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७९४ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २२२ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । प० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६६०. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १६७५ फागुन सुदी ३ । वे० स० १५९ । ज भण्डार ।

१६६१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र सं० १९७ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनदर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७९१ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २४४ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । लिपि सुन्दर है । अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है । प० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई । प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मडनमणि , श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगरागच्छपुस्तकत्रिधा, श्री देवसघाग्रणी सुवत्सरे चद्र रघ्र मुनीद्रुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्या तिथौ चोखचंद्रेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्र्यासप्तप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं ।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वं चोखचंद्रेण धीमता ।

प्रहीत शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६६२ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४० । अ भण्डार ।

१६६३ आत्मपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र स० २५७ । आ० १२×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल स० १९३६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५८ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भीगने से पत्र चिपक गये हैं ।

१६६४. प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० सं० ५९ । क भण्डार ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

१६६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । अपूर्ण । च भण्डार ।

१६७७ प्रति स० ३। पत्र सं २४। स काल सं १९५८ फागुण सुदी १३। वै सं ३७३। प
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

१६७८ प्रति स० ४। पत्र सं ७। स काल ×। वै सं ३७४। प मण्डार।

१६७९. प्रति स० ५। पत्र सं २४। स काल ×। वै सं ७८३। क मण्डार।

१६८० समाधिशावकटीका—। पत्र सं १३। मा १२×३३ इत्य। भाषा—संस्कृत। विषय—
प्रध्यात्म। र काल ×। स काल ×। पूर्ण। वै सं ३३३। प मण्डार।

१६८१ सप्तोपनिषद्—गौतमस्वामी। पत्र सं १६। मा २३×४ इत्य। भाषा—प्रसृत।
विषय—प्रध्यात्म। र काल ×। स काल ×। पूर्ण। वै सं ७८६। क मण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१६८२ सप्तोपनिषद्—रङ्गू। पत्र सं ३। मा ११×६ इत्य। भाषा—प्रसृत। र काल ×।
स काल स १७१९ पीप सुदी ३। पूर्ण। वै सं २२६। प मण्डार।

विशेष—यं बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी। प्रशस्ति—

संवत् १७१९ वर्षे शिवी पीप नदि ७ सुम दिने महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी विजयराज्ये साहू श्री
हंसराज तनुपुत्र साहू श्री गेनराज तनुपुत्र जय प्रथम पुत्र साहू चन्द्रमलजी। द्वितीय पुत्र साहू श्री कमिन्दर्य तृतीय पुत्र
साहू देवसी। चाचि सावडा साहू श्री राममलजी का पुत्र पवित्र साहू श्री बिहारीदासजी लिखायते।

बोहडा—पूरा भाषक भी कहे, कुछ इकतीस निवास।

सो परतलि वेखिये धर्मि बिहारीदास ॥

लिखत महारामा डू परसी पंडित परमसीजी का बेना करतर गण्डे बासी मौजे मौहणाम् मुकाम शिवी मध्ये।

१६८३ सप्तोपनिषद्—धानतराय। पत्र सं ३४। मा ११×७ इत्य। भाषा—हिन्दी। विषय—
प्रध्यात्म। र काल ×। स काल ×। पूर्ण। वै सं ७८९। क मण्डार।

विशेष—प्रथम २ पत्रों में बरबा शावक भी है। प्रति दोनों धोर से बनी हुई है।

१६८४ सप्तोपनिषद्—। पत्र सं २ से ७। मा ११×४ इत्य। भाषा—प्रसृत। विषय—
प्रध्यात्म। र काल ×। स काल ×। अपूर्ण। वै सं ८८। प मण्डार।

१६८५ स्वराज्य—। पत्र सं १६। मा १×४ इत्य। भाषा—संस्कृत। विषय—योग। र
काल ×। स काल सं १८१३ मंगल सुदी १३। पूर्ण। वै सं २४१। क मण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है। बेकेशरीति के सिद्ध उदयराम ने टीका लिखी थी।

१६८६ त्रानुमधस्य—जाधूराम। पत्र सं २१। मा १३×८ इत्य। भाषा—हिन्दी (पद्य)।
विषय—प्रध्यात्म। र काल सं १९३६ वैश्व सुदी ११। स काल ×। पूर्ण। वै सं १८७। क मण्डार।

१६८७ इत्यागदीपिका—। पत्र सं २१। मा ११×३ इत्य। भाषा—प्रसृत। विषय—योग।
र काल ×। स काल ×। पूर्ण। वै सं ४४४। प मण्डार।

१७१०. प्रति स० ७ । पत्र स० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । त्र भण्डार ।

१७११ प्रति सं० ८ । पत्र स० १० ले० काल X । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद । पत्र सं० ३ । आ० १०X४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल X । पूर्ण । वे० सं० २ । व्य भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३ गर्भण्डारचक्र—देवनदि । पत्र स० ३ । आ० ११X४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२७ । झ भण्डार ।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र स० २४ । आ० १२X५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१५ प्रति सं० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल X । वे० सं० २३ । झ भण्डार ।

१७१६. प्रति स० ३ । पत्र स० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्ण ।

१७१७ ज्ञानदीपकवृत्ति पत्र स० ८ । आ० ६^३X४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृत्त ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिङ्गितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरे ।

स्वरस्नेहव सयोज्य ज्वालयेदुत्तराघरै ॥२॥

१७१८ तर्कप्रकरण । पत्र स० ४० । आ० १०X४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९. तर्कदीपिका । पत्र स० १५ । आ० १४X४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल स० १८३२ माह सुदी १३ । वे० सं० २२४ । ज भण्डार ।

१६६६ आत्ममीमांसा—समस्तभद्राचार्ये । पत्र सं ८४ । भा १२×२ इञ्च । मापा—संस्कृत ।

विषय—जैन न्याय । १ काल × । से काल सं १६३२ भाषा सुरी ७ । पूर्ण । के सं ६ । क मन्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम वेदाममस्तीन सटीक प्रष्टसती दिया हुआ है ।

१६६७ प्रति सं २ । पत्र सं ११ । से काल × । के सं ३१ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६६८ प्रति सं ३ । पत्र सं ३२ । से काल × । के सं ६१ । क मन्डार ।

१६६९ प्रति सं ४ । पत्र सं १८ । से काल × । के सं ६२ । क मन्डार ।

१७०० आत्ममीमांसासङ्घट्टि—विद्यानन्दि । पत्र सं २२६ । भा १६×७ इञ्च । मापा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । १ काल × । से काल सं १७६६ भाषा सुरी १२ । के सं १४ ।

विशेष—इसो का नाम प्रष्टसती नाम्य तथा प्रष्टसहस्री भी है । मासपुरा ग्राम में महाराजाधिराज रत्नसिंह जी के शासनकाल में बभ्रुर्षु ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति काफ़ी बड़ी साइज की है ।

१७०१ प्रति सं २ । पत्र सं २२२ । से काल × । के सं ८६६ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

१७०२ प्रति सं ३ । पत्र सं १७२ । भा १२×२ इञ्च । से काल सं १७८४ भाषा सुरी

१ । पूर्ण । के सं ७३ । क मन्डार ।

१७०३ आत्ममीमांसाभाषा—जयचन्द्र झावड़ा । पत्र सं ६२ । भा १२×२ इञ्च । मापा हिन्दी ।

विषय—न्याय । १ काल सं १८६६ । से काल १८९ । पूर्ण । के सं ३६५ । क मन्डार ।

१७०४ आशापपद्धति—ब्रह्मसेन । पत्र सं १ । भा १३×२ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—

दर्शन । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २ । क मन्डार ।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राशुतमार ४ से ६ तक सप्तमंग ग्रन्थ गौर है ।

प्राशुतसार—मोह विमिर मार्तण्ड त्रिपुत्रमन्दिपत्र शास्त्रियदेवैर्द नर्षितं ।

१७०५ प्रति सं २ । पत्र सं ७ । से काल सं २१ फागुण सुरी ४ । के सं २२७ । क

मन्डार ।

विशेष—धारम्भ में प्राशुतसार तथा सप्तमंगी है । जयपुर में नासूनाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

१७०६ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । से काल × । के सं ७६ । क मन्डार ।

१७०७ प्रति सं ४ । पत्र सं ११ । से काल × । अपूर्ण । के सं ३६ । क मन्डार ।

१७०८ प्रति सं ५ । पत्र सं १२ । से काल × । के सं ३ । क मन्डार ।

१७०९ प्रति सं ६ । पत्र सं १२ । से काल × । के सं ४ । क मन्डार ।

विशेष—पुनसब के प्राचार्य वैमिष्य के फलार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । त्र

भण्डार ।

१७११ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० ले० काल × । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद । पत्र सं० ३ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २०

काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । व् भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३ गर्भण्डारचक्र—देवनदि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । म् भण्डार ।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २३ । म् भण्डार ।

१७१६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिमा पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुखो चित्तधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्ण ।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति । पत्र सं० ८ । आ० ६^३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृत ।

सर्वाकाराभापिभा शक्त्या लिङ्गितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासादासरै ।

स्वरस्नेहन सयोज्य ज्वालयेदुत्तराधरै ॥२॥

१७१८ तर्कप्रकरण । पत्र सं० ४० । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९ तर्कदीपिका । पत्र सं० १५ । आ० १४×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १८३२ माह सुदी १३ । वे० सं० २२४ । ज भण्डार ।

१७२० तर्कप्रमाण - पत्र सं ८ सं ५०। मा ११४४- इअ। माया-संस्कृत। विषय-न्याय।
र कास ×। से कास ×। अपूर्ण एवं बीर्ण। वे सं १६४३। अ मण्डार।

१७२१ तर्कमाया-केशव मिश्र। पत्र सं ८४। मा १४४३ इअ। माया-संस्कृत। विषय-
न्याय। र कास ×। से कास ×। वे सं ७१। अ मण्डार।

१७२२ प्रति सं २। पत्र सं २ मे २६। से कास सं १७४६ मादवा बुदी १। वे सं २७३।
अ मण्डार।

१७२३ प्रति सं २। पत्र सं ६। मा १४४३ इअ। से कास सं १९९६ ज्येष्ठ बुदी २। वे
सं २२५। अ मण्डार।

१७४ तर्कमायाप्रकाशिका-वाल्मिकि। पत्र सं ६३। मा १४४ इअ। माया-संस्कृत।
विषय-न्याय। र कास ×। से कास ×। वे सं ३११। अ मण्डार।

१७२५ तर्कस्मृतिपिका-गुणरत्नसूरी। पत्र सं १३२। मा १२४२ इअ। माया-संस्कृत।
विषय-न्याय। र कास ×। से कास ×। अपूर्ण। वे सं २२६४। अ मण्डार।

बिषय-यह हरिभद्र के पदवर्धन समुच्चय की टीका है।

१७२६ तर्कसंग्रह-अर्जुनभट्ट। पत्र सं ७। मा ११४३ इअ। माया-संस्कृत। विषय-न्याय।
र कास ×। से कास ×। पूरा। वे सं ८२। अ मण्डार।

१७२७ प्रति सं २। पत्र सं ४। से कास सं १८९४ मादवा बुदी ५। वे सं ४७। अ
मण्डार।

बिषय-रावम मुखराज के शासन में लक्ष्मीराम ने बीसपुर में स्वपठार्थ प्रतिमिति की थी।

१७२८ प्रति सं ३। पत्र सं ६। से कास सं १८१२ मह सुदी ११। वे सं ४८। अ
मण्डार।

बिषय-गोपी मण्डलकर बुद्धाभा की है। 'नेत्रक विजयाम पीप बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा
हुआ है।

१७२९ प्रति सं ४। पत्र सं ८। से कास सं १७९३ वैश्व सुदी १५। वे सं १७२५। अ
मण्डार।

बिषय-घामेर के मेमिनाय चैत्यालय में मठारक अमतीति के दिव्य (शाह) बोरराज ने स्वपठार्थ
प्रतिमिति की थी।

१७३० प्रति सं ५। पत्र सं ४। से कास सं १८४१ संमिहिर बुदी ४। वे सं १७२८। अ
मण्डार।

बिषय-बेला प्रतापसागर पठार्थ।

१७३१ प्रति सं ६। पत्र सं १। से कास सं १८३६। वे सं १७२९। अ मण्डार।
बिषय-सवाई पाचोपुर में मठारक मुण्डकीति ने अपने शाह से प्रतिमिति की।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अ भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १७६६, १८३२) और हैं ।

१७३२ तर्कसंग्रहटीका । पत्र सं० ८ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

१७३३ तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३४ दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन ।
२० काल सं० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—प० बख्तराम के शिष्य हरवश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधो के मन्दिर) जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टक्का टीका सहित है ।

१७३७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१७३८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भाद्रपदा बुदी ८ । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३९ दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२० प्र० श्रावण बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४० दर्शनसारभाषा—प० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

१७४१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । ङ भण्डार ।

१७४२ दर्शनसारभाषा । पत्र सं० ७२ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

१७४३ द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । ज भण्डार ।

१७४४ प्रति स० २। पत्र सं० ४। से काल X। के सं १७६८। क मन्थार।

विषय—प्रति प्राचीन है।

१७४५ नयचक्र—देवसेन। पत्र सं ४५। भा १ ३×७ इत्य। भाषा प्रकृत। विषय—सप्त नवों का वर्णन। र काल X। से काल सं १९४३ पीप सुवी १५। पूर्ण। के सं ३३५। क मन्थार।

विषय—ग्रन्थ का बूसरा नाम सुबबोपार्थ नामा पद्धति भी है। उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क मन्थार में तीन प्रतियाँ (के सं ३३३ ३३४ ३३६) क मन्थार में एक एक प्रति (के सं १७७ व १ १) प्रौर हैं।

१७४६ नयचक्रभाषा—हेमरास। पत्र सं ५१। भा १ २×४ इत्य। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—सप्त नवों का वर्णन। र काल सं १७२६ फागुण सुवी १। से काल सं १९३८। पूर्ण। के सं ३५७। क मन्थार।

१७४७ प्रति स० २। पत्र सं ६। से काल सं १७२६। के सं ३५८। क मन्थार।

विषय—७७ पत्र से तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है।

नाट—उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त क, छ, ख, म् मन्थारों में एक एक प्रति (के सं ३४५, १८७ ६२३ ८१) क्रमशः प्रौर हैं।

१७४८ नयचक्रभाषा " "। पत्र सं १९। भा १ ३×४ इत्य। भाषा—हिन्दी। र काल X। से काल सं १९४८ भाषा सुवी ६। पूर्ण। के सं ३५९। क मन्थार।

१७४९ नयचक्रभाषाप्रकाशनीटीका—निहालचन्द्र अमवाह। पत्र सं १३७। भा १ २×७ इत्य। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—न्याय। र काल सं १८९७। से काल सं १९४४। पूर्ण। के सं ३६१। क मन्थार।

विषय—महू टीका कानपुर सेंट में भी गई थी।

१७५० प्रति स० २। पत्र सं १८। से काल X। के सं ३६१। क मन्थार।

१७५१ प्रति स० ३। पत्र सं २२४। से काल सं १९३८ फागुण सुवी ६। के सं ३६२। क मन्थार।

विषय—कानपुर में प्रतिनिधि की बनी थी।

१७५२ म्यायकुमुदचन्द्रोदय—महू अकसरकबेन पत्र सं १५। भा १ ३×४ इत्य। भाषा—तत्कृत। विषय—वर्णन। र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ३७। क मन्थार।

विषय—छ १ से ६ तक म्यायकुमुदचन्द्रोदय ३ परिच्छेद तथा सैव सूत्रों में महूवर्त्मक्यसोपानुस्मृति प्रब ब्रन प्रवेश है।

१७५३ प्रति स० ०। पत्र सं ३८। से काल सं १८९४ पीप सुवी ७। के सं २७। क मन्थार।

विषय—मर्दाई राम ने प्रतिनिधि की थी।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र स० ५८८ । आ० १४ $\frac{१}{२}$ ×५ इच्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टाकलक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र स० ३ से ८ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इच्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३६७, ३६८) घ एव च भण्डार मे एक २ प्रति
(वे० स० ३४७, १८०) च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १८०, १८१) तथा ज भण्डार मे एक प्रति
(वे० स० ५२) और है ।

१७५६ न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ७१ । आ० १४×७ $\frac{१}{२}$ इच्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—दर्शन । २० काल स० १६३० । ले० काल स० १६३८ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । ड
भण्डार ।

१७५७ न्यायदीपिकाभाषा—सधी पन्नालाल । पत्र स० १६० । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इच्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल स० १६३५ । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

१७५८ न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र स० ८६ से १२७ ।
आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६०० सावण बुदी ५ । अपूर्ण ।
वे० स० २०६३ । अ भण्डार ।

१७५९ न्यायशास्त्र । पत्र स० २ से ५२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७६ । अ भण्डार ।

१७६० प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ मे उद्धृत है ।

१७६१. प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५ । ज भण्डार ।

१७६२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३ न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र स० २८ से ८७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×८ $\frac{१}{२}$
इच्च । भाषा संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल स० १७४६ । अपूर्ण । वे० स० १३४३ अ भण्डार ।

१७६४ न्यायसार । पत्र स० २४ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है ।

१७६५ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र स० १४ से ४६ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×३ $\frac{१}{२}$ इच्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १७७८ । अपूर्ण । वे० स० १५७८ । अ भण्डार ।

१७६६ म्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि । पत्र सं २८ । भा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—म्याय । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५३ । क मञ्जरी ।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है ।

१७६७ म्यायसूत्र— । पत्र सं ४ । भा० १ × ४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—म्याय । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ २१ । क मञ्जरी ।

विशेष—हैम व्याकरण में से म्याय सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह किया गया है । प्राद्यामन्त्र में प्रतिसिपि की भी ।

१७६८ पट्टरीति—विष्णुभट्ट । पत्र सं २ से ६ । भा १ २ × ३ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—म्याय । १ काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १२१७ । क मञ्जरी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका— इति साधर्म्य वैशर्म्य संग्रहोऽयं कियत्काले विष्णुभट्टे पट्टरीत्या वासप्युत्पत्तये कृत । प्रति प्राचीन है ।

१७६९ पत्रपरीक्षा—विद्यानंदि । पत्र सं १३ । भा १ २ १/२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—म्याय । १ काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७८१ । क मञ्जरी ।

१७७० प्रति स० २ । पत्र सं ३१ । ले काल सं १६७७ भाषाव कुची १ । वे सं १६४९ । क मञ्जरी ।

विशेष—शेरपुरा में श्री जित शैत्यालय में लिखनीयत्व में प्रतिसिपि की भी ।

१७७१ पत्रपरीक्षा—पात्र केरारी । पत्र सं ३७ । भा १ २ २ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—म्याय । १ काल × । ले काल सं ११३४ भाषाव कुची ११ । पूर्ण । वे सं ४३७ । क मञ्जरी ।

१७७२ प्रति स० २ । पत्र सं ९ । ले काल × । वे सं ४३८ । क मञ्जरी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७३ परीक्षासुक्त—सायिक्यमदि । पत्र सं ५ । भा १ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—म्याय । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४३१ । क मञ्जरी ।

१७७४ प्रति स० २ । पत्र सं १ । ले काल सं १८६६ भाषाव कुची १ । वे सं २१३ । क मञ्जरी ।

१७७५ प्रति स० ३ । पत्र सं १७ से १२६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २१४ । क मञ्जरी ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७६ प्रति स० ४ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं २८१ । क मञ्जरी ।

१७७७ प्रति स० ५ । पत्र सं १४ । ले काल सं १६८१ । वे सं १४५ । क मञ्जरी ।

संस्कृत काल सट्टे ध्योम क्षिति निर्भि मूर्ध्नि ते काद्रभाषये)

१७७८ प्रति स० ६ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं १७३८ । क मञ्जरी ।

१७७६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छात्रदा । पत्र सं० ३०६ । आ० १२×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६३ आषाढ सुदी ४ । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । क भण्डार ।

१७८० प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरो में है । एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं । अन्य पत्रो पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं । लिपिकार ने ग्रन्थ अघूरा छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७८१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १९३० मगसिर सुदी २ । वे० सं० ५९ । घ भण्डार ।

१७८२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । क भण्डार ।

१७८३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१८ । ले० काल × । वे० सं० ६३९ । च भण्डार ।

१७८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९५ । ले० काल सं० १९१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ६४० । च भण्डार ।

१७८५ पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर । पत्र सं० ९ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र सं० २८८ । आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४९६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है । मूलकर्ता वादिदेव सूरि हैं ।

१७८७ प्रमाणनिरणय . । पत्र सं० ९४ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४९७ । क भण्डार ।

१७८८ प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानदि । पत्र सं० ९६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४९८ । क भण्डार ।

१७८९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १७९ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिराषाढमासस्यपक्षेऽश्यामलके तिथौ तृतीयाया प्रमाणग्रन्थ परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७९० प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र सं० २०२ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १९१३ । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ४९९ । क भण्डार ।

१७९१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २१९ । ले० काल × । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र सं० ६७ । आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । क भण्डार ।

१७६३ प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि । पत्र सं ४ । भा० ११३×७३ इत्य । मापा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ६२ । क मन्थार ।

१७६४ प्रमाणमीमांसा— । पत्र सं ६२ । भा ११३×८ इत्य । मापा—संस्कृत । विषय—न्याय ।

र काल × । से काल सं १६५७ भावग सुदी १३ । पूर्ण । के सं ५२ । क मन्थार ।

१७६५ प्रमेयकमलमार्शियट—आचार्य प्रभाषन्नु । पत्र सं २७६ । भा १३×५ इत्य । मापा—

संस्कृत । विषय—दर्शन । र काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं ३७८ । क मन्थार ।

विशेष—पृष्ठ १३४ तथा २७६ से प्राये नहीं है ।

१७६६ प्रति सं ० २ । पत्र सं ६३८ । से काल सं १६४२ ज्येष्ठ सुदी ५ । के सं ५३ । क

मन्थार ।

१ ६७ प्रति सं ० ३ । पत्र सं ६६१ । से काल × । अपूर्ण । के सं ५४ । क मन्थार ।

१७६८ प्रति सं ० ४ । पत्र सं ११८ । से काल × । के सं १६१७ । ट मन्थार ।

विशेष—५ वर्षों तक संस्कृत टोका भी है । सर्वत्र सिद्धि से मदेहवाचिओं के लक्षण तक है ।

१७६९ प्रति सं ५ । पत्र सं ४ से ३४ । भा १ × ४ इत्य । से काल × । अपूर्ण । के सं

२१४७ । ट मन्थार ।

१८०० प्रमेयरत्नमाळा—अनन्तदीर्घ । पत्र सं १५६ । भा १२×५ इत्य । मापा—संस्कृत । विषय—

न्याय । र काल × । से काल सं १६३४ भाद्रमा सुदी ७ । के सं ४५२ । क मन्थार ।

विशेष—परीभामुख की टीका है ।

१८०१ प्रति सं ० २ । पत्र सं १२७ । से काल सं १८६८ । के सं ० २३७ । क मन्थार ।

१८०२ प्रति सं ० ३ । पत्र सं ३३ । से काल सं १७६७ भाद्र सुदी १ । के सं ११ । क

मन्थार ।

विशेष—तच्छकपुर में एतच्छक्ति से प्रतिनिधि की थी ।

१८०३ कासबोधिनी—शास्त्र भगति । पत्र सं १३ । भा ८×४ इत्य । मापा—संस्कृत । विषय—

न्याय । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १३६२ । क मन्थार ।

१८०४ भावनीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं ११ । भा १३×६ इत्य । मापा—संस्कृत । विषय—

न्याय । र काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं १८६५ । ट मन्थार ।

विशेष—सिद्धांतमञ्जरी की व्याख्या की हुई है ।

१८-५, महाविद्याविद्यम्वन— । पत्र सं १२ से १६ । भा १ ३×४ इत्य । मापा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । र काल × । से काल सं १६६३ फाल्गु सुदी ११ । अपूर्ण । के सं १६८६ । क मन्थार ।

विशेष—वर्ष १६६३ वर्षे फाल्गु सुदी ११ सोमे अर्धेह मीपतलमाये एतत् पत्राणि लिखितानि

काम्पूरानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ९ । आ० १२३×७३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । ६०५ । क भण्डार ।

१८०८ युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि । पत्र सं० १८८ । आ० १२३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

विशेष—त्रावा दुलोचन्द्र ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९ प्रति सं० ० । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

१८१० प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १९४७ । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

१८११ वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० १११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । अ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग में प्रतिलिपि की गई थी । सवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट
दुर्गेऽनिखत ।

१८१२. वीरद्वित्रिशतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३३ । आ० १२×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७७ । अ भण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८१३ षड्दर्शनवार्त्ता । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ट भण्डार ।

१८१४. षड्दर्शनविचार । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—सागानेर में जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोको का हिन्दी अर्थ भी दिया
हुआ है ।

१८१५ षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । आ० १२३×५ इ च । विषय—दर्शन । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०९ । क भण्डार ।

१८१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ९८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एव संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१८१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १५७० भाद्रवा सुदी २ । वे० सं० ३९९ । व्य
भण्डार ।

१८१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

१८२० षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गणरतनसूरि । पत्र सं० १८५ । आ० १३×८ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १९४७ द्वि० भाद्रवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

१८१ पद्मदर्शनसमुच्चयटीका— । पत्र सं ६ । मा १२३×३ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । १ काल × । २ काल × । पूर्ण । वै सं ७१ । अ मण्डार ।

१८२२ सखिप्रवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया— । पत्र सं ४६ । मा १२×४३ इ च । मापा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । १ काल × । २ काल सं १७२७ । वै सं ३६७ । अ मण्डार ।

१८२३ सप्तमवाक्याद्य—मुनि नेत्रसिंह । पत्र सं ६ । मा १ ×४ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—
दर्शन (सप्त तयों का दर्शन है) । १ काल × । २ काल सं १७४५ । पूर्ण । वै सं ३४६ । अ मण्डार ।

प्रारम्भ—

विद्यय-मुनि-नयस्या सर्वभावा मुचिस्था ।

विद्यमत्तद्वृत्तिगम्या नैतरेषां सुरम्या ॥

उपकृतपुस्तकारास्तेष्वमाणा सवा मे ।

विद्यक्तु सुकृपांते प्रत्य परम्यमाणो ॥१॥

मास्त्रैर्बं प्रणम्यादी सप्तमवाक्यबीजं

बं मुत्वा येन मार्गेण यच्छान्ति सुखियो जना ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । नीचे प्रारम्भे पञ्चोऽनेनेति मयः खीत्र प्रसले इति बचनम्— ।

शान्तिम्—

तत्सुख्यं मुनि-वर्मकर्मनिचर्न मोक्ष फलं निर्मलं ।

सख्यं येन जनेन निरवयनमात् श्री मेतृसिंहोचितं ॥

स्यादावमार्याभक्तिणो जनः ये शोच्यति शास्त्रं मुनयावबीजं ।

मोक्षमिति चैकांतमर्तं सुखोर्बं मोक्षं यमिष्यंति सुखेन क्वच्यः ॥

इति श्री सप्तमवाक्यबीजं शास्त्र मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं सुखं चैवं ॥

१८२४ सप्तपदार्थी— । पत्र सं ३६ । मा ११×३ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—जीन मतसुधार
सात पदार्थों का वर्णन है । १ काल × । २ काल × । पूर्ण । वै सं १८५ । अ मण्डार ।

१८२५ सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र सं × । मा १ ३/४×४ ३/४ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—
ईश्वेरिक म्यास के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन । १ काल × । २ काल × । पूर्ण । वै सं १६३३ । अ मण्डार ।

विशेष—वयपुर में प्रतिष्ठित है ।

१८२६ सम्प्रतिवर्त—मूलकर्ता सिद्धसेन विद्याकर । पत्र सं ४८ । मा १ ×४ ३/४ इ च । मापा—
संस्कृत । विषय—न्याय । १ काल × । २ काल × । पूर्ण । वै सं ६३ । अ मण्डार ।

१८२७ सारसप्रह—बदराज । पत्र सं २ से ७३ । मा १ ३/४×४ ३/४ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । १ काल × । २ काल × । पूर्ण । वै सं ८२१ । अ मण्डार ।

१८२८ सिद्धाम्बुमुक्त्यामिटीका—साहादेवमठ । पत्र सं ६८ । मा ११×४ ३/४ इ च । मापा—
संस्कृत । विषय—न्याय । १ काल × । २ काल सं १७३६ । वै सं ११७२ । अ मण्डार ।

विशेष—बैनेतर म्य है ।

१८२६ स्याद्वादचूलिका । पत्र सं० १५ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १६३० कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—सागवाटा नगर में ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । समयसार के कुछ पाठों का अंश है ।

१८३० स्याद्वादमञ्जरी—मल्लिपेणामूरि । पत्र सं० ४ । आ० १२३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ में १०६ । ले० काल स० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०
३६६ । अ भण्डार ।

१८३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ ।
अ भण्डार ।

विशेष—केवल कारिकामात्र है ।

१८३३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६० । अ भण्डार ।



विषय- पुराण साहित्य

१८३४ अश्विपुत्रपुराण—पश्चिमाचार्ये अरुणस्य। पत्र सं २७३। मा १२×३३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। १० काल सं १७१९। से काल सं १७८६ स्पष्ट सुवी ६। पूर्ण। वे सं २१८। अ म्बहार।

प्रशस्ति—संस्कृत १७८६ वर्षे मितौ श्लेष सुवी ६। ब्रह्माचार्यमन्त्रे मिलापितं व्याख्यानं हर्षकीर्तिनी मयाराम स्वपठभार्य।

१८३५ प्रति सं २। पत्र सं २६। से० काल X। अपूर्ण। वे सं १७। अ म्बहार।

विशेष—१९वें पर्व के १४वें श्लोक तक है।

१८३६ अश्विपुत्रपुराण—विजयसिंह। पत्र सं १२६। मा २३×४ इञ्च। भाषा—मगध। विषय—पुराण। १२ काल सं १५२ कालिक सुवी १५। से काल सं १५८० ब्रज सुवी ५। पूर्ण। वे सं २२८। अ म्बहार।

विशेष—सं १५८ में इनाहीम सोरी के छासनकाल में विप्लवराज्य में प्रतिमिति हुई थी।

१८३७ अनन्तनाभपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र सं ५। मा १३×३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। १ काल X। से काल सं १८८५ नावना सुवी १। पूर्ण। वे सं ७४। अ म्बहार।

विशेष—उत्तरपुराण से मिला गया है।

१८३८ आगामीत्रिसटशशाकापुरुषवखन...। पत्र सं ८ से २१। मा १२३×९ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पुराण। १० काल X। से काल X। अपूर्ण। वे सं ३८। अ म्बहार।

विशेष—एकसौ उल्लेख पुरुष पुरवों का भी वर्णन है।

१८३९ आदिपुराण—अनसेनाचार्य। पत्र सं ५२७। मा १३×३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। १ काल X। से काल सं १८९४। पूर्ण। वे सं २२। अ म्बहार।

विशेष—अपपुर में वं कुशलचन्द्र के प्रतिमिति की थी।

१८४० प्रति सं ०। पत्र सं ५६। से काल सं १९९४। वे सं १५४। अ म्बहार।

१८४१ प्रति सं ३। पत्र सं ४। से काल X। अपूर्ण। वे सं २४९। अ म्बहार।

१८४२ प्रति सं ३। पत्र सं ४८१। से काल सं १९५। वे सं ३६। अ म्बहार।

१८४३ प्रति सं ४। पत्र सं ४३७। से काल X। वे सं ३७। अ म्बहार।

विशेष—इहती के सप्तताम्री की बोली पर प्रतिमिति हुई थी।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ६ । घ

भण्डार ।

विशेष—हायरम नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६१ । ले० काल सं० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २५० । ज

भण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड से अपने पुत्र पीत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी ।

प्रशस्ति काफी बड़ी है । भरतखण्ड का नवशा भी है जिस पर सं० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । वही कही कठिन शब्दा का संस्कृत मे अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० सं० १४६ । व्य भण्डार ।

१८४७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६०४ मगसिर बुदी ६ । वे० सं० २५२ । व्य

भण्डार ।

१८४८ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४१० । ले० काल सं० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५१ । व्य

भण्डार ।

विशेष—नैणमागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४९ प्रति सं० १० । पत्र सं० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०४२) क भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५५५) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६) च भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३०, ३१, ३२) ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

१८५० आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ से ६२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३ आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।

१८५४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच मे कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । साहू व्यहराज ने पंचमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

१८५६ प्रति स० ४। पत्र सं २१५। से० काल सं १७११। वे सं० २१६। अ मन्थार।
 विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं।

१८५७ आदिपुराण—प० बौद्धतराम। पत्र सं ४। भा १५×१६ इंच। मापा—हिन्दी पत्र।
 विषय—पुराण। २ काल सं १८२४। से० काल सं १८८३ साव सुदी ७। पूर्ण। वे सं० ५। अ मन्थार।
 विशेष—कलुराम साहू ने प्रतिनिधि कराई थी।

१८५८ प्रति स २। पत्र सं ७४६। से० काल ×। वे सं १४१। अ मन्थार।
 विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र महीन मिले मये हैं।

१८५९ प्रति स० ३। पत्र सं ५६। से० काल सं १८२४ साशोज सुदी ११। वे सं १३२।
 अ मन्थार।

विशेष—उक्त प्रतिमों के अतिरिक्त अ मन्थार में एक प्रति (वे सं ६) अ मन्थार में ४ प्रतिमों (वे सं १७ १८, १९ ७) अ मन्थार में २ प्रतिमों (वे सं ५१८ ५१९) अ मन्थार में एक प्रति (वे सं १३३) तथा अ मन्थार में २ प्रतिमों (वे सं ५६ १४६) भी हैं। ये सभी प्रतिमों अपूर्ण हैं।

१८६० उत्तरपुराण—गुण्यमन्त्रार्थ। पत्र सं ४२६। भा १२×५ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—
 पुराण। २ काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वे सं १३। अ मन्थार।
 १८६१ प्रति स० २। पत्र सं ३८३। से० काल सं १६६ साशोज सुदी १३। वे सं ८। अ
 मन्थार।

विशेष—बीच में २ पृष्ठ गये मिटाकर रखे गये हैं। महासंजी मातुरामजी अटारक भी उत्तरसेन की बड़ी प्रशस्ति की हुई है। जहांगीर बादशाह के शासनकाल में बौद्धधरामन्त्रार्थ समाजपुर (अलवर) के त्रिवारा नामक ग्राम में श्री धर्मनाथ वैष्णव में श्री पीठा ने प्रतिनिधि की थी।

१८६० प्रति स० ३। पत्र सं ५४। से० काल सं १६३२ साह सुदी ५। वे सं ३१। अ
 मन्थार।
 विशेष—संस्कृत में संक्षेपार्थ दिया है।

१८६३ प्रति स० ४। पत्र सं ३६। से० काल सं १८२७। वे सं १। अ मन्थार।
 विशेष—सवाई जयपुरमें महाराजा पूम्पीसिंह के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई। सा हेमराज ने संतोचरण के दिव्य बलतराम को भेंट किया। कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं।

१८६४ प्रति स० ५। पत्र सं ४२३। से० काल सं १८८८ सावस सुदी १३। वे सं ६। अ
 मन्थार।
 विशेष—सांगलेर में बोनहराम ने धर्मनाथ वैष्णव में प्रतिनिधि की थी।

१८६५ प्रति सं ६। पत्र सं ४८४। से० काल सं १९१७ चैत्र सुदी १। वे सं ८३। अ
 मन्थार।
 विशेष—अटारक जयजीति के दिव्य ब्रह्मचर्यामण्यार ने प्रतिनिधि की थी।

पुराण माहित्य]

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६६ । ले० काल म० १७०६ फागुण सुदी १० । वै० सं० ३२४ ।

ब भण्डार ।

विशेष—पाडे गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी । कही कही केठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये है ।

१८६७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७२ । ले० काल स० १७१८ भाद्रवा सुदी १२ । वै० सं० २७२ ।

ब भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और छ भण्डार मे एक-एक प्रति (वै० सं० ६२४, ६७३, ७७)

और हैं । सभी प्रतिया अपूर्ण है ।

१८६८ उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल स० १०८० । ले० काल म० १५७५ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य सवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमेपदविवरणसागरसेनसैद्धातान् परि-
ज्ञाय मूलटिप्पणकाचावलोक्य कृतमिद समुच्चयटिप्पणं । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कोरगणश्रीसघाचार्य सत्कवि
शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दीर्ढाभिभूतरिपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणटिप्पणक प्रभाचन्द्राचार्यविरचितसमाप्तं ॥ अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द
सवत् १५७५ वर्षे भाद्रवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजांगलदेशे सुलितान सिक्केंदर पुत्र सुलितानेनाहिपुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठा-
सघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्रसूरिदेवा तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगसी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इद
उत्तरपुराण टीका लिखायित । शुभ भवतु । मागत्य दधति लेखक पाठेकयो ।

१८६९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वै० सं० १४५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्द्वारानिवासिना परापरभेष्टिप्रणामोपाजितामलपुष्पनिराकृताखिलमल
कलकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पडितेन महापुराण टिप्पणक सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाण कृतमिति ।

१८७० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वै० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

१८७१ उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० ३१० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—पुराण । २० काल स० १७८६ मगसिर सुदी १० । ले० काल स० १६२८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं०
७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशालचन्द्र का ५३ पद्यो मे विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बस्ताविरलाल ने जयपुर
में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२० । ले० काल स० १८८३ वैशाख सुदी ३ । वै० सं० ७ । ग
भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१२ । ति० काल सं० १८१६ मंसतिर बुदी १ । वै सं० १ । अ

मन्थार ।

१८७४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७४ । ति० काल सं० १८२८ क्रांतिर बुदी १३ । वै सं० १८ । अ

मन्थार ।

१८७५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४०४ । ति० काल सं० १८६७ । वै सं० १३७ । अ मन्थार ।

विशेष—अ मन्थार में तीन सम्पूर्ण प्रतिमां (वै सं० ५२२ ५२३ ५२४) भीर हैं ।

१८७६ उत्तरपुराणभाषा—सधी पञ्जालाल । पत्र सं० ७६३ । मा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी

पद्य । विषय—पुराण । र काल सं० ११३ भाषाङ्क बुदी ३ । ति० काल सं० ११४२ मंसतिर बुदी १३ । पूर्ण । वै सं० ७५ । अ मन्थार ।

१८७७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३५ । ति० काल × । सम्पूर्ण । वै सं० ८ । अ मन्थार ।

विशेष—५३४वां पत्र नहीं है । किन्तु ही पत्र मधीन मिले हुए हैं ।

१८७८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१६ । ति० काल × । वै सं० ८१ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रारम्भ के ११७ पत्र नीचे दिये हैं । यह संघोषित प्रति है । अ मन्थार में एक प्रति (वै सं० ७१) अ मन्थार में दो प्रतिमां (वै सं० ५२१ ५२२) तथा छ मन्थार में एक प्रति भीर है ।

१८७९ अमृतप्रमपुराण—दीरालाल । पत्र सं० ३१२ मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

पुराण । र काल सं० १११३ भाषा बुदी १३ । ति० काल × । पूर्ण । वै सं० १७६ । अ मन्थार ।

१८८० त्रिनेत्रपुराण—भट्टारक त्रिनेत्रभूषण । पत्र सं० ६१ । मा० ११×११ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । र काल × । ति० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ७ । वै सं० १४ । अ मन्थार ।

विशेष—त्रिनेत्रभूषण के प्रसिद्ध ब्रह्मर्षिसागर के माई के । ११३ अधिकार हैं । पुराण के विविध विषय हैं ।

१८८१ त्रिपट्टिस्मृति—महापण्डित आशाधर । पत्र सं० २४ । मा० १२×१३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । र काल सं० १२१२ । ति० काल सं० १८१५ अक्ष सं० १६८ । पूर्ण । वै सं० २३१ । अ मन्थार ।

विशेष—मल्लनन्दपुर में श्री नेमिचिन्मयेत्यासम में धन्य की रचना की गई थी । तैलक प्रकृति विस्तृत है ।

१८८२ त्रिपट्टिरत्नाक्षरपुरुषवर्णन— । पत्र सं० ३७ । मा० १ × १३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । र काल × । ति० काल × । सम्पूर्ण । वै सं० १९११ । अ मन्थार ।

विशेष—३७ से पहले पत्र नहीं हैं ।

१८८३ नमितामपुराण—भागवन् । पत्र सं० १६६ । मा० ११½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—पुराण । र काल सं० ११७ सावन बुदी २ । ति० काल × । पूर्ण । वै सं० १ । अ मन्थार ।

१८८४ नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदाम । पत्र स० २६२ । आ० १४×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । छ भण्डार ।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० १६० । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १४६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये वलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-
चार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातपट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा
द्वितीय शिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा
द्वितीयशिष्य मडलाचार्य श्रीविशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीसहसकीर्त्तिदेवा
तत्पट्टे मडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द्र तदाम्नाये अग्रवालान्वये मुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा-
पत्न्य । प्रथम पुत्र सा खेता तस्य भार्या छानाही । सा जीणा द्वितीय पुत्र सा जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय
प्रथम पुत्र सा देइदाम तस्य भार्या साताही तयो पुत्रात्रय प्रथमपुत्र चि० सिरवत द्वितीयपुत्र चि० मागा तृतीयपुत्र चि०
चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतायपुत्र सा चीमा तस्य भार्या मानु । सा जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा
सातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्री द्वौ प्रथम पुत्र सा गोविंदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र
चि० मोहनदास । सा जीणातस्य चतुर्थपुत्र सा मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्रा त्रय प्रथमपुत्र सा उत्ता तस्य भार्या
वनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा टेमा तस्य भार्या मोरवणही ।
सा जीणा तस्य पञ्चमपुत्र सा सावू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषा मध्ये सा
मल्लूतेनेद शास्त्र हरिवंशपुराणाख्य ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त मडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्द्रतस्यशिष्या अजिका शाति
श्री योग्य घटापित्त ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त ।

१८८६ प्रति स० २ । पत्र स० १२७ । ले० काल स० १६६३ आसोज सुदी ३ । वे० स० ३८७ । क

भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है ।

१८८७ प्रति स० ३ । पत्र सं० १५७ । ले० काल स० १६४६ माघ बुदी १ । वे० स० १८६ । च

भण्डार ।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (आमेर) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ चैत्यालय में
लिखी गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१८८८ प्रति स० ४ । पत्र स० १८८ । ले० काल स० १८३४ पौष बुदी १२ । वे० स० ३१ । छ

भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० स० २३८) छ भण्डार में एक प्रति (वे० स०
५२) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१३) और हैं ।

पुस्तक पद्मपुराण—रविप्रेयाचार्य । पत्र सं ८७६ । भा ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काल X । से काल सं १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । के सं ६३ । अ म्पार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साहू जोधसी ने प्रतिनिधि करावर व भी हर्ष कस्याण की घेंट किया ।

१८३० प्रति स० २ । पत्र सं ५६५ । से काल सं १८८२ मासोज सुदी ६ । के सं ५२ । अ
म्पार ।

विशेष—जैतराम साहू ने सखाराम घोषा से प्रतिनिधि करवाई की ।

१८३१ प्रति स० ३ । पत्र सं ४४५ । से काल सं १८५५ मासवा सुदी २२ । के सं ६२९ ।
अ म्पार ।

१८३२ प्रति स० ४ । पत्र सं ७६८ । से काल सं १८३२ सातण सुदी १ । के सं १८२ । अ
म्पार ।

विशेष—चौपरियों के जैयानम में व गौरधनदास ने प्रतिनिधि की की ।

१८३३ प्रति स० ५ । पत्र सं ४८१ । से काल सं १७१२ मासोज सुदी ४ । के सं १८३ । अ
म्पार ।

विशेष—प्रधान काशीय विद्यो भावक ने प्रतिनिधि की की ।

इसके अतिरिक्त क म्पार में एक प्रति (के सं ४२६) तथा क म्पार में दो प्रतियां (के सं ४२३
४२५) पौर हैं ।

१८३४ पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र सं ३२ । भा ६३×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पुराण । से काल सं १६५६ भाषण सुदी १३ । से काल सं १८१८ मासवा सुदी, १४ ।
पूर्व । के सं २४ । अ म्पार ।

१८३५ प्रति स० २ । पत्र सं ३३३ । से काल सं १८२५ ज्येष्ठ, सुदी १५ । के सं ४२५ । क
म्पार ।

विशेष—शायो महेशचौत के प्रसार से यह रचना की गई ऐसा स्वयं मन्थक ने लिखा है । लिखक प्रचलित
कटी हुई है ।

१८३६ प्रति स० ३ । पत्र सं ९ । से काल सं १८३६ वैशाख सुदी ११ । के सं ८ । अ
म्पार ।

विशेष—शाचार्य रत्नचौत के दिव्य वैमिनाथ के सांगानेर से प्रतिनिधि की की ।

१८३७ प्रति स० ४ । पत्र सं २५७ । से काल सं १७६४ मासवा सुदी १६ । के सं ३२२ ।
अ म्पार ।

विशेष—सांगानेर में जोशों के अन्धर म प्रतिनिधि हुई ।

१८६८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ ।

च भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे मढूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं०

२०४) तथा छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६) और हैं ।

१८६६ पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० २०७ । आ० १३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पुराण । २० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१९०० पद्मपुराण (उत्तरखण्ड) । पत्र सं० १७६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१९०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

२० काल सं० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे प० शिवदीनजी के समय मे मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर मे चढाया ।

१९०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग

भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९०३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ४२४, ५३) घ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५५, ५६) च और ज भण्डार मे दो तथा एक प्रति (वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२) तथा ङ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६, ८८) और हैं ।

१९०४ पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—पुराण । २० काल सं० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१९०५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ३३ । वे० सं० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल मे हुई थी ।

इसी भण्डार मे (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६ पाण्डवपुराण—महारक शुभचन्द्र । पत्र सं १७३ । भा ११×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । ८ काष्ठ सं १६८ । से काष्ठ सं १७२१ काष्ठण बुकी ३ । पूर्ण । के सं ६२ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री साकवाटपुर में हुई थी । पत्र १३३ तथा १३७ बाज में सं १८०६ में पुनः

लिखे गये हैं ।

१६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं ३ । से काष्ठ सं १८२६ । के सं ४६३ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ महाभारत की प्रेरणा से लिखा गया था । महाभारत ने इसका मशौघन किया ।

१६०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२ । से काष्ठ सं १९१३ बज बुकी १ । के सं ४४३ । अ मण्डार ।

विशेष—एक प्रति ट मण्डार में (के सं २६०) भी है ।

१६०९. पाण्डवपुराण—स० श्रीमूषण । पत्र सं २४६ । भा १२×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । ८ काष्ठ सं १९३ । से काष्ठ सं १८ मंसिर बुकी २ । पूर्ण । के सं २३७ । अ मण्डार ।

विशेष—सैलक प्रसिद्धि विस्तृत है । पत्र बजबगो है ।

१६१० पाण्डवपुराण—प्यराकीर्ति । पत्र सं ३४ । भा १ × ४ इञ्च । भाषा—मगध ।

विषय—पुराण । ८ काष्ठ × । से काष्ठ × । अपूर्ण । के सं ६९ । अ मण्डार ।

१६११ पाण्डवपुराणभाषा—मुक्ताकीदाम । पत्र सं १४६ । भा १३×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी

पद्य । विषय—पुराण । ८ काष्ठ सं १७५४ । से काष्ठ सं १८१२ । पूर्ण । के सं ४६२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रथम ३ पत्रों में बाईस पदीय वर्णन भाषा में है ।

अ मण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (के सं १११८) भी है ।

१६१२. प्रति सं० २ । पत्र सं १३२ । से काष्ठ सं १८८६ । के सं ३३ । अ मण्डार ।

विशेष—कालुराम साहू ने प्रतिमिति करवायी थी ।

१६१३ प्रति सं० ३ । पत्र सं २ । से काष्ठ × । के सं ४४६ । अ मण्डार ।

१६१४ प्रति सं० ४ । पत्र सं १४६ । से काष्ठ × । के सं ४४७ । अ मण्डार ।

१६१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं १३७ । से काष्ठ सं १८९ मंसिर बुकी १ । के सं ६२६ ।

अ मण्डार ।

१६१६ पाण्डवपुराण—पद्माशोक चौधरी । पत्र सं २२२ । भा १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी

पद्य । विषय—पुराण । ८ काष्ठ सं १६२३ बेलाज बुकी २ । से काष्ठ सं १६३७ पीप बुकी १२ । पूर्ण । के सं ४६३ । अ मण्डार ।

१६१७ प्रति सं० २ । पत्र सं ३२ । से काष्ठ सं १६४६ कार्तिक बुकी १३ । के सं ६९४ ।

अ मण्डार ।

विशेष—रामरत्न पारम्पर ने प्रतिमिति की थी ।

अ मण्डार में इसकी एक प्रति (के सं ४४८) भी है ।

१६१८ पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल स० १०७७ । ले० काल स० १६०६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर (आम्रगढ) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५४३ फाल्गुण बुदी १० । वे० सं० ४७१ । ऊ

भण्डार ।

१६२०. पुराणसारसग्रह—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० १५६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १८५६ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१ वालपद्मपुराण—प० पद्मलाल वाकलीवाल । पत्र स० २०३ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कलकत्ते में रामग्रहीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२ भागवत द्वादशम् स्कंध टीका । पत्र स० ३१ । आ० १४×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३ भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंध) । पत्र सं० ६७ । आ० १४३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४ प्रति स० २ (षष्ठम स्कंध) । पत्र स० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१६२५ प्रति सं० ३ । (पञ्चम स्कंध) । पत्र स० ८३ । ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी १२ । वे० सं० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—चौथे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६ प्रति स० ४ (अष्टम स्कंध) । पत्र स० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७ प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध) । पत्र स० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ में आगे पत्र नहीं हैं ।

वे० सं० २०८८ में २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं ।

१६२८ भागवतपुराण । पत्र स० १४ में ६३ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है ।

१६२६ प्रति सं० २। पत्र सं १६। से काल X। वे सं २११३। ट नम्बर।

विशेष—द्वितीय स्तंभ के तृतीय मध्यम तक की टीका पूर्ण है।

१६३० प्रति सं० ३। पत्र सं ४ से १३। से काल X। अपूर्ण। वे सं २१७२। ट नम्बर।

विशेष—तृतीय स्तंभ है।

१६३१ प्रति सं० ४। पत्र सं ६। से काल X। अपूर्ण। वे सं २१७३। ट नम्बर।

विशेष—प्रथम स्तंभ के द्वितीय मध्यम तक है।

१६३२. मङ्गिनामपुराण—सकलकीर्ति। पत्र सं ४२। भा १२X३ इका। भाषा—संस्कृत। विषय—
चरित्र। १ काल X। से काल १८८८। वे सं २०८। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वे सं ८३६) भी है।

१६३३ प्रति सं० २। पत्र सं ३७। से काल सं १७२ माह सुदी १४। वे सं २०९। क

नम्बर।

१६३४ प्रति सं० ३। पत्र सं ४७। से काल सं १६९३ माह सुदी ६। वे सं २७२।

विशेष—उपयन्त्र बुहादिया ने प्रतिमिति करके बीमारण प्रमरचन्द्रजी के मन्दिर में रखी।

१६३५ प्रति सं० ४। पत्र सं ४२। से काल सं १८१ माह सुदी ३। वे सं १३६। क

नम्बर।

१६३६ प्रति सं० ५। पत्र सं ४६। से काल सं १८८१ माह सुदी ८। वे सं १३६। क

नम्बर।

१६३७ प्रति सं० ६। पत्र सं ४६। से काल सं १८६१ माह सुदी ८। वे सं ३८७। क

नम्बर।

विशेष—ब्रह्मपुर में शिवलाल गोधा ने प्रतिमिति करवाई थी।

१६३८ प्रति सं० ७। पत्र सं ३१। से काल सं १८४६। वे सं १२। क नम्बर।

१६३९ प्रति सं० ८। पत्र सं ३२। से काल सं १७८६ माह सुदी ३। वे सं २१। म

नम्बर।

१६४० प्रति सं० ९। पत्र सं ४। से काल सं १८६१ माह सुदी ४। वे सं १५२। क

नम्बर।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस प्रन्थ की प्रतिमिति करवाई थी।

१६४१ मङ्गिनामपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी। पत्र सं ३६। भा १२X४ इका। भाषा—
हिन्दी मन्त्र। विषय—चरित्र। १ काल X। से काल X। अपूर्ण। वे सं १८८। अ नम्बर।

१६४२. महापुराण (संक्षिप्त)" । पत्र सं १७। भा ११X४ इका। भाषा—संस्कृत। विषय—
पुराण। १ काल X। से काल X। अपूर्ण। वे सं १८६। क नम्बर।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । आ० १४×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७८) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण * । पत्र सं० ३२ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्तिक वृदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे इसकी दो प्रतिया (वे० सं० २३३, २४६,) और हैं ।

१६४६ मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १६८१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ ।

क भण्डार ।

१६४७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—काव का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८ मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

पुराण । २० काल सं० १८४५ पौष वृदी २ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ वृदी १२ । वे० सं० ४७५ । व्य भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने बटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४९ लिंगपुराण * । पत्र सं० १३ । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुराण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । ज भण्डार ।

१६५० वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वे० सं० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० सं० ३२८ । च

भण्डार ।

१६५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५ । छ भण्डार ।

१६४५. प्रति स० ६। पत्र सं १४१। से काल सं १७८३ कालिक सुदी ४। वै सं ११। म
मन्थार।

१६४६ प्रति स० ७। पत्र सं १११। से काल X। वै सं ४६३। अ मन्थार।

विशेष—या ध्रुवचन्द्रजी चोसचन्द्रजी रायचन्द्रजी की पुरतक है। ऐसा लिखा है।

१६४७ प्रति स० ८। पत्र सं १७। से काल सं १८३१। वै सं १८११। ट मन्थार।

विशेष—सवाई माधोपुर में म सुरेन्द्रकीर्ति ने भादिनाथ शैत्यालय में लिखवायी की।

१६४८ प्रति स० ९। पत्र सं १२३। से काल सं० १६६८ भाद्रमा सुदी १९। वै सं १८११।

ट मन्थार।

विशेष—बालाब महावेश के सत्यपतन मकर में म० सकलचन्द्र के उपदेश में हुंकारजातीय ब्रह्मिणाका बोन
वाले साहू भाका भार्या बाई तावके में प्रदिलिजिपि करवायी थी।

इस ग्रन्थ की छ मीर अ मन्थार में एक एक प्रति (वै सं ८६ ३२१) अ मन्थार में १ प्रति
(वै सं ३२ ४१) मीर हैं।

१६४९. वर्तमानपुराण—१० केयरीसिंह। पत्र सं ११८। या ११X८ इच्छ। भाषा—हिन्दी बघ।

विषय—पुराण। र काल सं १८७३ फगुण सुदी १२। से काल X। पूर्ण। वै सं १४७।

विशेष—बालचन्द्रजी छाबड़ा बीबाम जयपुर के पौत्र बालचन्द्र के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना
की गई।

अ मन्थार में तीन मपूर्व प्रतियाँ (वै सं १७४ १७२, १७६) अ मन्थार में एक प्रति (वै सं
१२३) मीर हैं।

१६६० प्रति स० २। पत्र सं ७८। से काल सं १७७३। वै सं १७। क मन्थार।

१६६१ बामुपुण्यपुराण.....। पत्र सं १। या १०३X८ इच्छ। भाषा—हिन्दी बघ। विषय—पुराण।

र काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं १२८। अ मन्थार।

१६६२ विमलनाथपुराण—ब्रह्महृष्यदास। पत्र सं ७२। या १२X१३ इच्छ। भाषा—संस्कृत।

विषय—पुराण। र काल सं ११७४। से काल सं १८३१ बैसाख सुदी ४। पूर्ण। वै सं १३१। अ मन्थार।

१६६३ प्रति स० २। पत्र सं ११। से काल सं १८१७ वैश्व सुदी ८। वै सं १९। अ

मन्थार।

१६६४ प्रति स० ३। पत्र सं १७। से काल सं १६१९ ज्येष्ठ सुदी १। वै सं १८। अ

मन्थार।

विशेष—मन्थार का नाम व कृष्णविष्णु भी दिया है। प्रचलित लिख प्रकार है—

संवत् १६१६ वर्ष ज्येष्ठमासे कृष्णशुक्र की वैश्वानरा महानवमी की भादिनाथ शैत्यालये श्रीमत् ब्रह्महृष्ये
नीलकण्ठसे विद्यालये श्रुतारक श्री रामसेवालयमें एतदनुक्रमेण म० श्री रामकृष्णल तन्त्र म भी कल्पकीर्ति व भी

मंगलाग्रज स्वविराचार्य श्री केशवमेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विष्णुकीर्ति तत्पुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखित स्वज्ञानाचरणं कर्मक्षयार्थं । भ० श्री ५ विश्वमेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति प० दीपचन्द्र प० मयाचद युक्तं आत्म पठनार्थं ।

१६६५. शान्तिचरिताथपुराण—महाकवि अशग । पत्र स० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक सवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भाद्रवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्ष भाद्रवा वदि वारीस रवी अयेह श्री गधारमन्वे लिखित पुस्तक लेखक पाठकपो चिगजीयात् । श्री मूलमषे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभवन्देदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जितचन्द्रदेवाच्छिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्या सपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना स० थावर स० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे नयो पुत्र विद्यावर द्वितीय पुत्र धर्मधर एतै सवै. शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः ।

अनदानात् सुखी नित्य निर्व्याधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६ प्रति सं० २ । पत्र म० १४४ । ले० काल स० १८६१ । वे० स० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ को छ, व्य और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ७०४, १६, १६३५) और हैं ।

१६६७ शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द्र । पत्र स० ५१ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण मे से है ।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और है ।

१६६८. हरिविषयपुराण—जितसेनाचार्य । पत्र स० ३१४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक स० ७०५ । ले० काल स० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर में प० हूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ८६८) और है ।

१६६९. प्रति स० २ । पत्र स० ३२४ । ले० काल स० १८३६ । वे० स० ८५२ । क भण्डार ।

१६७० प्रति स० ३ । पत्र म० २८७ । ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० १३२ । घ भण्डार ।

विशेष—गोपावल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७१ प्रति स० ४ । पत्र सं २४२ से २१७ । ने काम सं० १६२३ कार्तिक बुदी २ । अपूर्णा । के सं ४४७ । अ मन्थार ।

विशेष—श्री पुराणमस ने प्रतिमिति की थी ।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ४४९) भी है ।

१६७२ प्रति स० ५ । पत्र सं २७४ से ३११ ३४१ से ३४३ । ने० काम सं १६६३ कार्तिक बुदी १ । अपूर्णा । के सं ७६ । छ मन्थार ।

१६७३ प्रति स० ६ । पत्र सं २४३ । ने काम सं १६२३ चैत्र बुदी २ । के सं २९ । अ मन्थार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में सांघानेर में आदिनाथ भैरवालय में प्रतिमिति हुई थी । सेवक प्रशस्ति अपूर्णा है ।

उक्त प्रतिमें के प्रतिरिक्त अ मन्थार में एक प्रति (के सं ४४९) छ मन्थार में दो प्रतिमें (के सं ७६ में) भी हैं ।

१६७४ हरिश्चन्द्रपुराण—ब्रह्मसिद्धास । पत्र सं० १२५ । पृ ११२×२ इंच । माया—संस्कृत । विषय—पुराण । ने काम सं १५८ । पूर्णा । के सं २१३ । अ मन्थार ।

विशेष—ग्रन्थ बोंबराम पाटोरी के बनस्ये हुये मन्दिर में प्रतिमिति करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्णा प्रति की पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५ प्रति स० २ । पत्र सं २३७ । ने काम सं १६६१ मासाज बुदी ६ । ने सं १३१ । अ मन्थार ।

विशेष—देवपत्नी शुभस्थाने पार्श्वनाथ भैरवालय के कक्षासंके नंदीतटमन्थे विद्यापण रामसेनामन्थे धारार्थ कस्मान्क्रीत्तिना प्रतिमिति हुई ।

१६७६ प्रति स० ३ । पत्र सं ३४६ । ने काम सं १८४ । के सं १३३ । अ मन्थार ।

विशेष—बैहली में प्रतिमिति की गई थी । विष्णु ने महात्मबसाह नर शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७ प्रति स० ४ । पत्र सं २२७ । ने काम सं १७३ । के सं ४४८ । अ मन्थार ।

१६७८ प्रति स० ५ । पत्र सं २३२ । ने काम सं १७८३ कार्तिक बुदी ३ । के सं २६ । अ मन्थार ।

विशेष—साह मन्डूरकबन्धी के पठार्थ बौली ग्राम में प्रतिमिति हुई थी । न विजनाथ म सनतक्रीत्ति के सिद्ध है ।

१६७९ प्रति सं० ६ । पत्र सं २६८ । ने काम सं १६३० पीप बुदी ३ । के सं ३३३ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रशस्ति—सं १५३७ बने पीप बुदी २ सोमे श्री भूतसंके बलभारण्ये सरस्वतीमन्थे थी

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनदि पठनार्थं । हृबद्ध
जातीय ।

१६८० प्रति सं० ७ । पत्र स० ४१३ । ले० काल स० १६३७ माह सुदी १३ । वे० सं० ४६१ । व्य

भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, छ एव व्य भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ८५१, ९०६, ९७)

और हैं ।

१६८१ हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४९१ । व्य भण्डार ।

१६८२ हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० २७१ । आ० ११^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल स० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३ हरिवंशपुराण—धवल । पत्र स० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९६ । अ भण्डार ।

१६८४ हरिवंशपुराण—यश कीर्त्ति । पत्र स० १६६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल स० १५७३ । फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ९८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ सवत्सरेऽतस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ९ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । अलाव-
लखा राज्ये श्री काष्ठ । अपूर्ण ।

१६८५ हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र स० २० । आ० ९×४^३ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—
पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४५० । च भण्डार ।

१६८६ हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र स० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १८२९ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९८ । ग
भण्डार ।

१६८७ प्रति सं० २ । पत्र स० ५६६ । ले० काल स० १९२६ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० ९०९ (क)
छ भण्डार ।

१६८८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२५ । ले० काल स० १९०८ । वे० सं० ७२८ । च भण्डार ।

१६८९ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७०६ । ले० काल स० १९०३ भासोज सुदी ७ । वे० सं० २३७ । छ
भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतिया (वे० सं० १३४, १५१) ड, तथा भ
भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ९०९, १४४) और हैं ।

१६३५ प्रति सं० ६। पत्र सं १४१। से नाम सं० १७८२ कालिका मुरी ४। के सं १३। अ
अङ्क।

१६३६ प्रति सं० ७। पत्र सं ११६। से नाम X। के सं ४६३। अ अङ्क।

विषय—सा धुनबन्द्री चौसबन्दी रामबन्दी की पुरतक है। ऐसा लिखा है।

१६३७ प्रति सं० ८। पत्र सं १७। से नाम सं १८३६। के सं १८६१। ट अङ्क।

विषय—सर्दार माचीपुर में ब० सुरेश्वरीति ने आदिनाथ शैखानथ में लिखवायी थी।

१६३८ प्रति सं० ९। पत्र सं १२३। से नाम सं १९९८ भारवा मुरी १२। के सं १८६३।

ट अङ्क।

विषय—बायब महारिग के सामन्तान कदर म म सवमबन्ध के जारेग म हुंजडजानीय बत्रिमण्ण। शीब
बावे साह भावा भायी बाई भायके ने प्रतिभिसिदि करवायी थी।

इस ग्रन्थ की छ छोर च अङ्क में एक एक प्रति (के सं ८६ १२६) अ अङ्क में २ प्रतिमें
(के सं ३२ ४६) छोर हैं।

१६३९ वर्तमानपुराण—५० फेशरीसिंह। पत्र सं ११८। मा ११X८ हज। भावा—हिन्दी मय।

विषय—पुराण। र नाम सं १८७३ पद्मगुण मुरी १२। से नाम X। पूर्ण। के सं १४७।

विषय—बालबन्दी छाबदा बीबाल बमपुर के शीब बलबन्ध के भावह पर इस पुराण की भावा रचना
वा गई।

च अङ्क में तीन अङ्क प्रतिमें (के सं १७४ १७५, १७६) छ अङ्क में एक प्रति (के सं
१२९) छोर हैं।

१६६० प्रति सं० २। पत्र सं ७८। से नाम सं १७७३। के सं १७। ट अङ्क।

१६६१ बामुग्मपुराण..... पत्र सं ६। मा १२३X८ हज। भावा—हिन्दी मय। विषय—पुराण।

र नाम X। से नाम X। पूर्ण। के सं १३८। छ अङ्क।

१६६२ विमजनावपुराण—महाहृष्णनाम। पत्र सं ७३। मा १२X९ हज। भावा मंगल।

विषय—पुराण। र नाम सं १९७४। से नाम सं १८३१ दीगाम मुरी ४। पूर्ण। के सं १३१। अ अङ्क।

१६६३ प्रति सं० ७। पत्र सं ११०। से नाम सं १८६७ शैब मुरी ८। के सं १९। च

अङ्क।

१६६४ प्रति सं० ३। पत्र सं १७। से नाम सं १९६९ उदेठ मुरी ९। के सं १८। छ

अङ्क।

विषय—अङ्क में नाम व इच्छा... की दिया है। वर्तमान लिख द्वारा है—

मंथ १९६९ वच जो बावे हुणारी की केवभावा कसबरी की साँवला शैखानथे की बू कछाने

दीगामने विमजने अङ्क की रककेवलाद एणमुकेण म की एणमुण एण्ड म की उदेठिन व की

मगलाग्रज स्यविराचार्य श्री केरावमेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्ति तत्पुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखित स्वज्ञानावर्णा कर्मक्षयार्थ । भ० श्री ५ विश्वमेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति प० दीपचन्द प० मयाचद युक्तं आत्म पठनार्थ ।

१६६५ शान्तिनाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र स० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक नवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भाद्रवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्ष भाद्रवा तदि वारोस रवौ अद्योह श्री गधारमन्वे लिखित पुस्तकं लेखक पाठकयो चिज्जीयात् । श्री मूलसधे श्री कुदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थ हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्या सपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना स० धावर स० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे तयो पुत्र विद्यावर द्वितीय पुन धर्मधर एतौ सर्वे शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः ।

अन्नदानात् मुखी नित्य निर्व्याधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६ प्रति स० २ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १८६१ । वे० स० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की ड, अ और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १६३५) और हैं ।

१६६७ शान्तिनाथपुराण—सुशालचन्द । पत्र स० ५१ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण मे से है ।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और हैं ।

१६६८ हरिवशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ३१४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल एक स० ७०५ । ले० काल स० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर मे प० झूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ८६८) और है ।

१६६९ प्रति स० २ । पत्र स० ३२४ । ले० काल स० १८३६ । वे० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७० प्रति स० ३ । पत्र स० २८७ । ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० १३२ । घ भण्डार ।

विशेष—गोपाचल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७१ प्रति स० ४ । पत्र सं २४२ से २१७ । से० काल सं १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्णा । के सं ४४७ । अ मन्थार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं० ४४६) भी है ।

१६७२ प्रति स० ५ । पत्र सं २७४ से ३१३ ३४१ से ३४३ । से० काल सं १६६३ कार्तिक सुदी ३ । अपूर्णा । के सं ७६ । अ मन्थार ।

१६७३ प्रति स० ६ । पत्र सं २४३ । से० काल सं १६५३ चैत्र सुदी २ । के सं २६ । अ मन्थार ।

विशेष—महाराजाधिराज मलसिंह के सातमकाल में सामाने से भाविनाथ बैतानाथ में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक अज्ञात अपूर्णा है ।

उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त अ मन्थार में एक प्रति (के सं ४४६) अ मन्थार में दो प्रतियाँ (के सं ७६ में) भी हैं ।

१६७४ हरिहरपुराण—ब्रह्मविनवास । पत्र सं १२८ । भा ११३×३ इंच । मलय-संस्कृत । विषय—पुराण । १८ काल × । से० काल सं० १५८ । पूर्णा । के सं २१३ । अ मन्थार ।

विशेष—मन्त्र जोधराज पाटोली के बनाये हुये मन्दिर में प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्णा प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५ प्रति स० २ । पत्र सं २५७ । से० काल सं १६६१ मासाज सुदी ६ । के सं १३१ । अ मन्थार ।

विशेष—बैतण्डी कुम्हाने पार्वतीमाथ बैतानाथे कछासके नदीतटके विद्यागले रामसेनाथके मातार्थ कल्याणकीतिना प्रतिलिपि हुई ।

१६७६ प्रति सं० ३ । पत्र सं ३४६ । से० काल सं १८४ । के सं १३३ । अ मन्थार ।

विशेष—बैतण्डी में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का सातमकाल होना लिखा है ।

१६७७ प्रति स० ४ । पत्र सं २६७ । से० काल सं १७३ । के सं ४४८ । अ मन्थार ।

१६७८ प्रति स० ५ । पत्र सं २३२ । से० काल सं १७८३ कार्तिक सुदी ३ । के सं ६६ । अ मन्थार ।

विशेष—साह मस्युकान्धी के पठनार्थ बीसी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी । अ विनवास म सकलकीर्ति के लिप्य है ।

१६७९ प्रति स० ६ । पत्र सं २६८ । से० काल सं १६३७ वीप सुदी ३ । के सं ३३३ । अ मन्थार ।

विशेष—अज्ञात—सं १५३७ वर्षे वीप सुदी २ सोमे श्री भूमसेने बसन्तप्रवणु सरस्वतीनन्दे श्री

पुराण साहित्य]

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणोनि शिष्यमुनि जयनदि पठनार्थं । हूबड़
जातीय ।

१६८० प्रति सं० ७ । पत्र स० ४१३ । ले० काल स० १६३७ माह बुदी १३ । वे० स० ४६१ । व्य
मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, छ एव व्य मण्डारो में एक एक प्रति (वे० स० ८५१, ६०६, ६७)

और हैं ।

१६८१ हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६१ । व्य मण्डार ।

१६८२ हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० २७१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८५० । क मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३ हरिवंशपुराण—धवल । पत्र स० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६६ । अ मण्डार ।

१६८४ हरिवंशपुराण—यश कीर्त्ति । पत्र स० १६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १५७३ । फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ सवत्सरेऽतस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुद्धि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । अलाव-
लखा राज्ये श्री काष्ठ । अपूर्ण ।

१६८५ हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र स० २० । आ० ६×४½ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४५० । च मण्डार ।

१६८६ हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र स० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल स० १८२६ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । ग
मण्डार ।

१६८७ प्रति स० २ । पत्र स० ५६६ । ले० काल स० १६२६ भाद्रवा सुदी ७ । वे० स० ६०६ (क)
छ मण्डार ।

१६८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२५ । ले० काल स० १६०८ । वे० स० ७२८ । च मण्डार ।

१६८९ प्रति स० ४ । पत्र स० ७०६ । ले० काल स० १६०३ आसोज सुदी ७ । वे० स० २३७ । छ
मण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ मण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० १३४, १५१) छ, तथा अ
मण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ६०६, १४४) और हैं ।

१११० हरिहरपुराणभाषा—सुरासम्पन्न । पत्र सं २७ । मा १४×० इत्य । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । १० काव्य सं १७८ बैशाख सुदी ३ । से काव्य सं १८६ पूर्ण । वै सं १७२ । अ मन्डार ।

विशेष—दो प्रतिभों का सम्मिश्रण है ।

११११ प्रति म० २ । पत्र सं २२ । से काव्य सं १८ १ पीय कुटी ८ । अपूर्ण । वै सं १२४ । अ मन्डार ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नहीं हैं । जयपुर में प्रतिसिद्धि हुई थी ।

१११२ प्रति स० ३ । पत्र सं २१४ । से काव्य × । वै सं ४६६ । अ मन्डार ।

विशेष—भारत के ४ पत्रों में महाहरदास कृत गरक पुस्तक बर्णित है पर अपूर्ण है ।

१११३ हरिहरपुराणभाषा— " । पत्र सं १३ । मा १२×२ इत्य । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । १ काव्य × । से काव्य × । अपूर्ण । वै सं ६७ । अ मन्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । (वै सं ६८) भीर है ।

१११४ हरिहरपुराणभाषा— " । पत्र सं १८१ । मा ८×४ इत्य । भाषा—हिन्दी पद्य (रत्नस्वामी) । विषय—पुराण । १ काव्य × । से काव्य सं १९७१ भासाज कुटी ८ । पूर्ण । वै सं १२२ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—अप कथा सम्बन्ध लीलीयद् छंद । तैल कासेर्य तर्ण समर्ण समणो मगवत महावीरै राबधेई समासरीये तहीअ कल्प तेही अ समउ ते अमर्ण थी बार बर्मान् राबधही नमरी भाबी समोसरया । ते विसा अर बीतराम अउतीस धरिसद करी सहित पईतीस बचन बाली करी सोजिता अउरइसह साष छतीस सहस परबद्या । अनेक भविक थीव प्रतिबोधता भीराबधही नमरी भाबी समोसरया । तिवारई बनमाली भाबी राबध थी सेणिक करइ । कषामखी विषी । सामी भाष थी बर्मान् भाबी समोसरया छइ । सेणिक ते बाठ सामी नई बचामखी भापी । राबध भाण महाहर्षवत बकउ । बीरवाणी सामी करतख सावउ । ते कि सामा वसीसा "कीपउ । पछि भाषं भेरि उखनी उव बयकार बइ बउ । भवीक सोक समताई सार्ण पटिपवा । बन बन कइती सोक सभसाई बादिवा बसवा । पछु राबध भाषु क विचालक हुसी सिणगारी उवरि छइउठ । मानई सेत अर भरतउ । उबइ पास बामर डालइ छइ । बनी बल नई बार नरइ छई । मणिए कए बहिव बोमइ छइ । पांच सख बाजिन बसते । अशुरगिनी सेना सजकरी । राम राणा मंडलीक सुबन्धनी सार्णत अउरसिसा " ।

एक अन्य उदाहरण— पत्र ११८

तिणो मनाप्या नउ हेमरव राजा राज पाली छई । तेह राजा नइ बारणी रगणी अइ । तेह नउ माव अर्म उरै बगउ छई । तेहनी कुपि तें कुमर पलइ उगनो । तेह नउ नाम बुबुकीव बाणिकउ । ते पुणु कुमर बाखे विस ममान छई । इम करना ते कुमर ओबन अरिया । तिवारई पिआई तेह नई राज बार बालठ । तिवारई तेप जमा नव भोगवता नाम धरिबमई छइ । बनी अिस नउ अर्म पाणु करइ छइ ।

पत्र सख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा साभलउ । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउ । पछइ मरी रोइ सर्प थयउ । सयम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहा थको मरण पाम्यो । बीजै नरक गई तिहा तिन सागर आयु भोगवी । छेदन भेदन तावन दुख भोगवी । बली तिहा थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चपा नगरी माहि चाडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल अवतार पाम्यउ । पछइ ते एक वार वन माहि तिहा उबर वीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र सख्या ३८०—८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभरण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउ । पछइ देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रबोधीया । बलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक सबोध्या । पछइ सहस वरस आउषउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइ धणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयउ । तिवारइ ते धातिया कर्म षय करी चउदमइ गुणठाणइ रह्या । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा आठ गुण सहित जाणवा । बली पाच सइ छत्रीस साव साथइ मूकति गया । तिणी सामी अचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सुखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते सोध तिरती कीज्यो । बली सामनी साखि । जे काई मइ आपणी बुध थकी । हरवस कथा माहि अघ कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिद्धामि दुकड था ज्यो ।

सबत् १६७१ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथौ । लिखित मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये ।
विज शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थ ।



काव्य एव चरित्र

१६६५ अक्षयकुपरित्र—नाथूराम । पत्र सं १२ । भा १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
बेताचार्य अक्षयकु की जीवन कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७६ । अ नम्बर ।

१६६६ अक्षयकुपरित्र— । पत्र सं १९ । भा १२ $\frac{1}{2}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
चरित्र । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २ । अ नम्बर ।

१६६७ अमरुतासक— । पत्र सं ९ । भा १२ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र
काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २२६ । अ नम्बर ।

१६६८ अक्षयसवेशाक्षयप्रबन्ध— । पत्र सं ८ । भा ११ $\frac{1}{2}$ ×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । र काल × । से काल सं १७०६ । पूर्ण । वै सं ३१६ । अ नम्बर ।

१६६९ अयमनायचरित्र—स० सक्कळकीर्ति । पत्र सं ११६ । भा १२×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—प्रथम तीर्थङ्कर मादिनाथ का जीवन चरित्र । र काल × । से काल सं १३६१ पीप बुकी ५ । पूर्ण । वै
सं २४ । अ नम्बर ।

विषय—ग्रन्थ का नाम मादिपुराण तथा अयमनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति— १३६१ वर्षे पीप बुकी ५ रबी । श्री मुसबंवे सरस्वतीमन्थे अमात्कारणसे श्रीकृष्णकृष्णार्चामा
म्वये म श्री ६ प्रमात्कारणसे म श्री ६ पयनविदेवाः म श्री ६ सक्कळकीर्तिदेवाः अ श्री ६ अयमनाथीतिदेवाः म
श्री ६ प्रमात्कारणसे म श्री ६ विजयकीर्तिदेवाः म श्री ६ अयमनाथदेवाः म श्री ६ मुमतिकीर्तिदेवाः स्वविराचार्य
श्री ६ अक्षयसवेशास्तद्विषय श्री २ श्रीवंत से विषय अह्म श्री अक्षयसवेश पुस्तकं पठनार्थं ।

२००० प्रति सं० ७ । पत्र सं २६ । से काल सं १८८ । वै सं १३ । अ नम्बर ।

इस नम्बर में एक प्रति (वै सं ११३) भीर है ।

२००१ प्रति सं० ३ । पत्र सं १६ । से काल सं १६२७ । वै सं ३२ । अ नम्बर ।

एक प्रति वै सं ६६६ की भीर है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं १६४ । से काल सं १७१७ अक्षय बुकी १ । वै सं ६४ । अ

नम्बर ।

२००३ प्रति सं० ५ । पत्र सं १८२ । से काल सं १७८३ अक्षय बुकी ६ । वै सं १४ । अ

नम्बर ।

२००४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ८ । वे० सं० ३० ।

छ भण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १७७४ । वे० सं० २८७ । व्य भण्डार ।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१८३) और हैं ।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास । पत्र सं० १३ । आ० १०×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० सं० ४७१ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६२४ वर्ष अश्वनि मुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव मूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे ।

२००७ करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर । पत्र सं० ६१ । आ० १०×५ इच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२००८ करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १०×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भौमे सोमना (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासधे भ० श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्शिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्य ब्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखित ।

आचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्तिजी तत्शिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । व्य भण्डार ।

२०१० कविप्रिया—केशवदेव । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य (शृङ्गार) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२०११ कादम्बरीटीका । पत्र सं० १५१ से १८३ । आ० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । अ भण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक .. । पत्र सं० ८३ । आ० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है ।

२०१३ किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र सं० ४६ । आ० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०२ । अ भण्डार ।

२०१४ प्रति स० २ । पत्र सं ३१ से ६३ । से काल X । पूर्ण । के सं ५३ । क मन्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५ प्रति स० ३ । पत्र सं ८७ । से काल सं १५३ भाषणा सुवी ८ । के सं १२२ । क
मन्डार ।

२०१६ प्रति स० ४ । पत्र सं ११ । से काल सं १८४२ भाषणा सुवी । के सं १२३ । क
मन्डार ।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है ।

२०१७ प्रति स० ५ । पत्र सं १७ । से काल सं १८१७ । के सं १२४ । क मन्डार ।

विशेष—बयपुर नगर में भाषासिंहजी के राज्य में पं गुमालीराम ने प्रतिनिधि कर्त्वायी थी ।

२०१८ प्रति स० ६ । पत्र सं ८१ । से काल X । के सं १२५ । क मन्डार ।

२०१९ प्रति स० ७ । पत्र सं १२० । से काल X । के सं १२६ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति मॉल्लिनाथ द्वारा संस्कृत टीका सहित है ।

इनके प्रतिरिक्त क मन्डार में एक प्रति (के सं १३८) क मन्डार में एक प्रति (के सं ३५) क
मन्डार में एक प्रति (के सं ७) तथा क मन्डार में तीन प्रतियाँ (के सं १४ २३१ २३२) भी हैं ।

२०२० कुमारसंभव—महाकवि कालिदास । पत्र सं ४१ । भा १२ X २५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । र काल X । से काल सं १७६३ मेवाडि सुवी २ । पूर्ण । के सं १३६ । क मन्डार ।

विशेष—पुस्तक जाले से घसर कराना होयमे है ।

२०२१ प्रति स० २ । पत्र सं २३ । से काल सं १७२७ । के सं १८४३ । पीर । क मन्डार ।

२०२२ प्रति स० ३ । पत्र सं २७ । से काल X । के सं १२५ । क मन्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके प्रतिरिक्त क एच क मन्डार में एक एक प्रति (के सं ११८ ११३) क मन्डार में दो
प्रतियाँ (के सं ७१, ७२) क मन्डार में दो प्रतियाँ (के सं ११८ ११९) तथा क मन्डार में तीन प्रतियाँ
(के सं २३२ १२३ ११४) भी हैं ।

२ २३ कुमारसम्बतटीका—कमलसागर । पत्र सं २२ । भा १ X ४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । र काल X । से काल X । पूर्ण । के सं २३८ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति पीर है ।

२०२४ चंद्र-चूडामणि—बाबीमसिंह । पत्र सं ४२ । भा ११ X ४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । र काल सं १९८७ सावण सुवी ६ । पूर्ण । के सं १३३ । क मन्डार ।

विशेष—इसका नाम जोरवार चरित्र भी है ।

२ २५ प्रति स० २ । पत्र सं ४१ । से काल सं १८६१ भाषणा सुवी १ । के सं ७१ । क
मन्डार ।

विशेष—दीवाना घमरकजी ने मानूनाथ बैद्य के पास प्रतिनिधि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

२०२६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । व्य
भण्डार ।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य । पत्र सं० ३ । आ० ८३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल सं० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) में
प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणियों श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है । वैसे प्रारम्भ में
रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खण्डप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा ।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इच्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । ड भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वा पत्र नहीं है ।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र सं० २ । आ० ११३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—भालरापाटन में गौड ब्राह्मण पडा औरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३० प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १७४६) और है ।

२०३१. गौतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ६३×५ इच्च । भाषा—
संस्कृत विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

२०३२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३९ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० १३२ । क
भण्डार ।

२०३३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६०९ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० २१ । म
भण्डार ।

२०३५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २५४ । व्य भण्डार ।

२०३६ गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०८ । आ० १३×५ इच्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं । रचना सवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।

२०१४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ से ३३ । से काल × । मूर्त्त । के सं० २३ । छ मन्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । से० काल सं० १५३ मोंदवा बुकी ८ । के सं० १२२ । छ
मन्डार ।

२०१६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । से काल सं० १८४२ नादवा बुकी । के सं० १२३ । छ
मन्डार ।

विशेष—साकेतिक टीका भी है ।

२०१७ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७ । से काल सं० १८१७ । के सं० १२४ । छ मन्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में वं गुमानीराय ने प्रतिनिधि करवायी थी ।

२०१८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । से काल × । के सं० १२ । छ मन्डार ।

२०१९ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । से० काल × । के सं० १४ । छ मन्डार ।

विशेष—प्रति मन्दिनाथ इत संस्कृत टीका सहित है ।

इसके अतिरिक्त छ मन्डार में एक प्रति (के सं० १३८) छ मन्डार में एक प्रति (के सं० १३) छ
मन्डार में एक प्रति (के सं० ७) तथा छ मन्डार में तीन प्रतियाँ (के सं० १४ २३१ २३२) भी हैं ।

२०२० कुमारसमय—महाकवि कालिदास । पत्र सं० ४१ । या १२×१५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाम्य । ८ काल × । से काल सं० १७८३ मेयसिर बुकी २ । पूर्ण । के सं० १३१ । छ मन्डार ।

विशेष—पुस्तक बाले से प्रहार कराया होयके हैं ।

२००१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । से काल सं० १७५७ । के सं० १८४३ । बीर्सा । छ मन्डार ।

२००२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । से काल × । के सं० १२१ । छ मन्डार । पट्टम सर्प पर्यंत ।

इसके अतिरिक्त छ एन छ मन्डार में एक एक प्रति (के सं० ११८ ११९) छ मन्डार में दो
प्रतियाँ (के सं० ७१, ७२) छ मन्डार में दो प्रतियाँ (के सं० १३८ ३१) तथा छ मन्डार में तीन प्रतियाँ
(के सं० २ ३२ ३२३ २१ ४) भी हैं ।

२०२३ कुमारसमयटीका—कनकमागर । पत्र सं० २२ । या १ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाम्य । ८ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं० २ ३८ । छ मन्डार ।

विशेष—प्रति बीर्सा है ।

२००४ सुत्र-बुद्धासिंह—बाबीमसिंह । पत्र सं० ४२ । या ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाम्य । ८ काल सं० १६८७ सावत बुकी १ । पूर्ण । के सं० १३३ । छ मन्डार ।

विशेष—इसका नाम जोधवार चरित्र भी है ।

२५ प्रति सं० १ । पत्र सं० ४१ । से काल सं० १८११ नादवा बुकी ६ । के सं० ७३ । छ
मन्डार ।

विशेष—बीबाब समरचम्वरी के मातृपाल देव के पास प्रतिनिधि थी थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

२०२६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३३२ ।

भण्डार ।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य । पत्र स० ३ । आ० ८३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—क।

२० काल × । ले० काल स० १८७१ प्रथम भादेवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटीदी प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है । वैसे १२ रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खण्डप्रशस्ति काव्यानि संपूर्ण ।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र स० २३ । आ० १०३×४३ इ च ।

संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५ । ड भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वा पत्र नहीं है ।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र स० २ । आ० ११३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—भालरावाटन में गौड ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३० प्रति स० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल स० १८४४ । वे० स० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १७४६) और है ।

२०३१. गीतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र स० ५३ । आ० ६३×५ इ च ।

संस्कृत विषय—चरित्र । २० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१ । अ भण्डार ।

२०३२. प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८३६ कार्तिक सुदी १२ । वे० स० १३२ ।

भण्डार ।

२०३३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल स० १६०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० स० २१ ।

भण्डार ।

२०३५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० २५४ । ज भण्डार ।

२०३६ गीतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १०८ । आ० १३×५ इ च । भाषा

हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १६४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र है । रचना सन् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।

२०३७ घटकर्परकाठय—घटकर्पर । पत्र सं ४ । मा १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र काल × । से काल सं १८१४ । पूर्ण । के सं २३ । अ मन्डार ।

विशेष—बम्बामुर में प्रादितान्य शैत्यालय में प्रन्थ सिद्धा गया था ।

अ श्रीर अ मन्डार में इसकी एक एक प्रति (के सं १२४८ ७२) भीर है ।

२०३८ चम्पूनाचरित्र—स० शुभचम्पू । पत्र सं ३१ । मा १ × ३२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र काल सं १६२५ । से काल सं १८३३ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । के सं १८३ । अ मन्डार ।

२०३९ प्रति सं २ । पत्र सं ३४ । से काल सं १८२५ भाद्र सुदी ३ । के सं १७२ । अ मन्डार ।

१०४० प्रति सं ३ । पत्र सं ३३ । से काल सं १८१३ द्वि० भाद्रण । के सं १६७ । अ मन्डार ।

२०४१ प्रति सं ४ । पत्र सं ४ । से काल सं १८३७ भाद्र सुदी ७ । के सं २४ । अ मन्डार ।

विशेष—सांगानेर मे पं सवाईराम गीषा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२०४२ प्रति सं ४ । पत्र सं २७ । से काल सं १८११ भादवा सुदी ८ । के सं १८८ । अ मन्डार ।

इसी मन्डार में एक प्रति (के सं २७) भीर है ।

२०४३ प्रति सं ६ । पत्र सं १८ । से काल सं १८३२ मंगतिर सुदी १ । के सं २ । अ मन्डार ।

२०४४ चम्पूप्रमचरित्र—बारनदि । पत्र सं १३ । मा १२×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र काल × । से काल सं १३८२ पीप सुदी १२ । पूर्ण । के सं ६१ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रचलित अपूर्ण है ।

२०४५ प्रति सं ७ । पत्र सं १८१ । से काल सं १८४१ मंगतिर सुदी १ । के सं १७८ । अ मन्डार ।

२०४६ प्रति सं ३ । पत्र सं ८७ । से काल सं १३२४ भादवा सुदी १ । के सं ११ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रचलित प्रचलित विष्णु प्रकार है—

श्री वात्सेयस्य शंभो विष्णुस्य सुनि जनार्णवस्यै प्रसिद्धे कपालामेति साधुः सप्तमवमित्तमस्तानेक प्रवीणो मन्थस्तस्तस्युभे त्रिवार बभूवात्पकी वात्सेयस्यैर्वात्सेयस्यै निद्रकरनिमित्तं अग्रनाभस्य शार्ङ्गं सं १३२४ वर्षे भादवा सुदी ७ प्रन्थ लिखितं वर्षशायनिमित्तं ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ मे ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसधे वलात्कारगणे श्री कुन्दकृन्दाचार्यान्वये श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्र देवातत्शिष्य ब्र० सजैयति इद शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्त लिखायित्वा ठीकुरदारस्थानो साधु लि .

इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४६) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० ६०, ८८) ज भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १०३, १०४, १०५) अ एव ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० १६४, २१६०) और हैं ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका—टीकाकार गुणानन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इ च ।

संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वीरनदि । संस्कृत मे सक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गों मे है ।

२०४९ चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र सं० २१ । आ० १०^३×४^३ इ अ । भाषा—संस्कृत ।

चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । अ भण्डार ।

२०५० चन्द्रप्रभचरित्र—यशकीर्ति । पत्र सं० १०६ । आ० १०^३×४^३ इ अ । भाषा—अपभ्रं

विषय—आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ सवत् १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासधे मा (अपूर्ण)

२०५१ चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४^३ इ अ ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—वमवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे आचार्यवर श्री मेरुकीर्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के नदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ ।

भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६६ ।

भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त ख एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २३६६) और हैं ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कविदामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४६ । आ० १०^३×४^३ इ

भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२७ मादवा सुदी ६ । ले० काल सं० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—शादिभास—

ॐ नमः । श्री परमहंसगे नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।
 भिमं चंद्रप्रभो नित्यांबुद बभ्रुवर्त्तकः ।
 मय कृमुदचंद्रोदरचंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ॥१॥
 कुमासनबधो पूडयमतारणहेतवे ।
 तेन स्वपारम्पूरोस्मिद्धमपीतः प्रकाशितः ॥२॥
 मुगाधो येन तीर्थेषामर्षेतीर्थः प्रवर्तितः ।
 तमर्हं भुवम बंधे भूपरं भुपनामर्कं ॥३॥
 पक्षी तीर्थकरः कामो मुक्तिप्रियो महाबली ।
 सातिमापः सदा शान्तिं करोतु नः प्रजातिं कृत् ॥४॥

प्रथम भाग—

सूत्रमेवात्म (१७२१) एवमपठक प्रमे चर्षेज्जीते
 तत्प्रतिबिम्बतेनासि मात्र सुयोगे ।
 एवमेवमि विट्बिम्बितं श्रीनहाराम्नाम्नि
 नाभेयनचप्रहरमवने भूरि धोत्रानिवासे ॥८५॥
 एवमं चतुः सप्तसाणि पंचदशपुतानि वै
 एतदुत्तुर्वैः समाम्पातं स्तोत्रैरिवं प्रमस्तुतः ॥८६॥

इति श्री मंडलसूरिभीसूयण तत्पुनश्चेत् श्रीचर्मचंद्रशिष्य बनि बासोदरविट्बिम्बे श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निबन्धि
 नम्रम बर्गर्भे नाम सप्तविंशति नामः सर्ग ॥१७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ मासख द्वितीय शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे सवाई
 जयमनरे बोरराज पाटोदी कृत मंदिरे निघण्टे पं जोसबंदस्य शिष्य सुरारामजी तस्य शिष्य बन्ध्याणुशासस्य तत् शिष्य
 न्युवात्मर्षेण स्वहस्तेनपूष्णिकृतं ॥

२०५५ प्रति सं० २ । पत्र सं १६२ । ते कात सं १८९२ पौष सुदी १४ । वै सं १७५ । क
 बन्ध्या ।
 २०५६ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११ । ते कात सं १८३४ अषाढ सुदी २ । वै सं २१५ । क
 बन्ध्या ।

विशेष—पं० जोसबंदजी शिष्य पं रामचन्द्र ने कथ्य श्री प्रतिनिधि श्री पी ।
 २०५७ चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—अमचन्द्र व्यासदा । पत्र सं ११ । घा १२५×११ । भाषा-हिन्दी ।
 विषय-चरित्र । ८ भाग १६वो पताम्नी । ते कात सं १९४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वै सं १९५ । क बन्ध्या ।
 विशेष —केवल दूसरे सर्ग में पाये हुये व्यास वरुण के स्तोत्रों की कथा है ।
 इसी बन्ध्या में तीन प्रतियां (वै० सं १९९, १९७ १९८) छीर हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र स० १६ । आ० १०३/४×४३ इञ्च । भाषा—
विषय—सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । २० काल स० १६६२ । ले० काल स० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण ।
स० ८७४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम मे प० अमीचन्द ने
लिपि की थी ।

मादिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्य श्री सारदाई नमः ॥

आदि जिनआदिस्तवु अति श्री महावीर ।

श्री गौतम गणधर नमु बलि भारति गुणगभीर ॥१॥

श्री मूलसधमहिमा धणो सरस्वतिगच्छ शृ गार ।

श्री सकलकीर्ति गुरु अनुक्रमि नमुश्रीपद्मनदि भवतार ॥२॥

तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।

चारुदत्त श्रेष्ठोत्तरो प्रबंध रचु नमी पाय ॥३॥

अन्तिम—

... .. भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभाणि अति विचक्षण वदि वारण केशरी ।

भट्टारक श्री पद्मनदिचरणकज सेवि हरि ॥१०॥

एसहु रे गच्छ नायक प्रणामि करि

देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य धरी ।

धरिचित्त चरणो नमि कल्याणकीरति इम भरणौ ।

चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रचिमि आदर धरिण ॥११॥

रायदेश मध्य रे भिलोड डवसि

निज रचनायि रे हरिपुर निहसि

हसि अमर कुमारनितिहा धनपति वित्त विलसए ।

प्रासाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुवृत्त सचए ॥१२॥

सुकुत सचि रे व्रत बहु आचरि

दान महोद्वरे जिन पूजा करि

करि उद्व गान गद्य चन्द्र जिन प्रासादए ।

बावन सिखर सोहामण ध्वज कनक कलश विलासए ॥१३॥

मंडप मध्य समवसरण सोहि

श्री जिन बिबरे मनोहर मन मोहि ।

भोहि विनमन प्रति वसत मालस्तंमविद्यास्य ।
 तिहो विचयस्य विद्यास मुन्दर विमसासन रक्षपाम्य ॥१४॥
 तर्हा ओमासि रे रचना करि
 सोलवांगु पिरे घासो मनुसरि ।
 मनुसरि घासो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणस्य करि ।
 कस्याणकीरति कहि सज्जन भयो भावर करि ॥१५॥

दोहा—भावर ब्रह्म संभ जीतरिण विनम सहित सुखकार ।
 ते रेखि चारुत्त नो प्रबंध रण्यो मनोहार ॥१॥
 मरिण मुणि भावर करि याचक निरिय दान ।
 इ हो ठणो पर मे कहि धमर दीपि बहुमान ॥२॥
 इति भी चारुत्त प्रथम समाप्त ॥

विषय—संभव १७११ वर्षे कार्तिक चरि १ गुरुवारे मिसिर्त बहोपुरपुरग्रामे श्री विद्यावती चैत्यालये म्हा-
 रक श्री ३ धर्मभूषण तत्पट्ट म्हाारक श्री २ रेविकर्षीति तत्किय्य पंडित धमीचंद स्वहस्तेन लिखितं ।
 ॥ श्री रत्नु ॥

- २०२६ चारुत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र सं २ । पृ १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 चरित्र । र काल सं १८१३ सावन सुदी ३ । से० काल × । पूर्ण । के सं १७८ । अ मण्डार ।
 २०६० चारुत्तचरित्र—सद्यक्षाक्ष । पत्र सं १६ । पृ १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी वच ।
 विषय—चरित्र । र काल सं १६२६ माघ सुदी १ । से० काल × । के सं १७१ । अ मण्डार ।
 २०६१ जन्मसुखामीचरित्र—श० जिनदाम । पत्र सं १०७ । पृ १२×४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—चरित्र । र काल × । से० काल सं १६३३ । पूर्ण । के सं १७१ । अ मण्डार ।
 २०६२ प्रति स० २ । पत्र सं ११६ । से० काल सं १७३६ काष्ठुण सुदी २ । के सं १२५ । अ
 मण्डार ।
 २०६३ प्रति स० ३ । पत्र सं ११४ । से० काल सं १८२३ भाद्रवा सुदी १२ । के सं १८४ । अ
 मण्डार ।

अ मण्डार में एक प्रति (के सं २५) खोद है ।
 २०६४ प्रति सं० ४ । पत्र सं ११२ । से० काल × । के सं २६ । अ मण्डार ।
 विशेष—ग्रंथि प्राचीन है । प्रथम २ तथा अन्तिय पत्र नये मिले हुये हैं ।
 २०६५ प्रति स० ५ । पत्र सं १२२ । से० काल × । के सं १६६ । अ मण्डार ।
 विशेष—प्रथम तथा अन्तिय पत्र नये मिले हुये हैं ।

२०६६ प्रति स० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पीप बुदी १४ । वे० स० २०० । छ
भण्डार ।

२ ६७ प्रति स० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च
भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८ प्रति स० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल स० १८२५ । वे० स० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९ प्रति स० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० स० ११२ । न्न भण्डार ।

२०७० जम्बूस्वामीचरित्र—प० राजमल्ल । पत्र सं० १२९ । आ० १२३×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१ जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्ति । पत्र सं० २० । आ० १३×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । आ० १४३×५३ इच्छ ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल स० १९३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल स० १९३६ । वे० स० ४२७ ।
अ भण्डार ।

२०७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । आ० १२३×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १६९ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र । पत्र सं० ६ से २० । आ० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६ जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७ प्रति स० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल स० १८१६ माघ सुदी ५ । वे० स० १८९ । क
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८ प्रति स० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० स० २०३ । छ
भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल स० १९०४ आसोज सुदी २ । वे० स० १०३ । च
भण्डार ।

२०८० प्रति स० ५ । पत्र सं० १४ । से काल सं० १८०७ मंसिर सुदी १३ । वै सं० १४ । अ
मन्डार ।

विशेष—यह प्रति पं चोक्तचन्द्र एवं रामचंद्र की भी (ऐसा उल्लेख है),
छ मन्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै सं ७१) भी है ।

२०८१ प्रति स० ६ । पत्र सं १७ । से काल सं १९४ कार्तिक सुदी १२ । वै सं ३६ । अ
मन्डार ।

विशेष—गोपीराम बसवा बाले ने कामो में प्रतिनिधि की थी ।

२०८२ प्रति स० ७ । पत्र सं ३८ । से काल सं० १७८३ मंसिर सुदी ८ । वै सं २४३ । अ
मन्डार ।

विशेष—क्रिसाय में पं चौधरी ने प्रतिनिधि की थी ।

२०८३ अिनचचरित्रभाषा—पन्नासाक चौधरी । पत्र सं ७९ । मा १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी
विषय—चरित्र । २० काल सं १९३६ माघ सुदी ११ । से काल × । पूर्ण । वै सं १९ । अ मन्डार ।

२०८४ प्रति स० २ । पत्र सं ९ । से काल × । वै सं १९१ । अ मन्डार ।

२०८५ जीवधरचरित्र—महारक शुभचन्द्र । पत्र सं १२१ । मा ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २ काल सं० १४९६ । से काल सं १८४ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वै सं १२३ । अ
मन्डार ।

इसी मन्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वै सं ५७३ ८६९) भी हैं ।

२०८६ प्रति स० २ । पत्र सं ७२ । से काल सं १५३१ भाद्रपद सुदी १३ । वै सं २६ । अ
मन्डार ।

विशेष—लेखक प्रगति कटी हुई है ।

२०८७ प्रति स० ३ । पत्र सं ९७ । से काल सं १८९८ फागुण सुदी ८ । वै सं ४१ । अ
मन्डार ।

विशेष—सवाई अमनगर में महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में मैदिनाद जित चैतानन्द (मोर्षी का
मन्दिर) में बसतराम, हृष्याराम ने प्रतिनिधि की थी ।

२०८८ प्रति स० ४ । पत्र सं १४ । से काल सं १८८ ज्येष्ठ सुदी २ । वै सं ४२ । अ
मन्डार ।

२०८९ प्रति स० ५ । पत्र सं ९१ । से काल सं १८३३ वैशाख सुदी २ । वै सं २७ । अ
मन्डार ।

२०९० जीवधरचरित्र—जयमल बिसाला । पत्र सं ११४ । मा १२३×१३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । २ काल सं १८४ । से काल सं १८३६ । पूर्ण । वै सं ११७ । अ मन्डार ।

२०६१. प्रति स० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । च

भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ मे १५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४३ । ट

भण्डार ।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पन्नलाल चौधरी । पत्र म० १७० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय—चरित्र । २० काल म० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । क भण्डार ।

२०६४ प्रति स० २ । पत्र म० १३५ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । ड भण्डार ।

विशेष—श्रुतिम ३५ पत्र चूहो द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५ प्रति स० ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६ जीवधरचरित्र । पत्र सं० ४१ । आ० ११^३/_४×५^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २०२६ । अ भण्डार ।

२०६७. रोमिणाहचरित्र—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । आ० ११×४^३/_४ इञ्च ।

भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५३६ शक १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२०६८ रोमिणाहचरित्र—दामोदर । पत्र सं० ४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—

काव्य । २० काल स० १२८७ । ले० काल स० १५८२ भाद्रवा सुदी ११ । वे० म० १२५ । ब भण्डार ।

विशेष—चदेरी मे आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया ।

२०६९ त्रैसठशलाकापुरुषचरित्र । पत्र सं० ३६ से ६१ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

३००० दुर्घटकाव्य । पत्र सं० ४ । आ० १२×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०

काल × । ले० काल × । वे० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

३००१ द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३२ । ट भण्डार । (दो सर्ग हैं)

३००२. द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र सं० ६२ । आ० १०^३/_४×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं है । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य,

भी है ।

३००३ प्रति स० २ । पत्र म० ३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ३३१ । क भण्डार ।

३००४ प्रति स० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल स० १५७७ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क

भण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री खेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी ।

३००५ द्विसप्तानकाव्यटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं २२ । भा १२३×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३१ । क मन्थार ।

३००६ द्विसप्तानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र । पत्र सं ३६१ । विषय—काव्य । भाषा—संस्कृत । १ काल × । से काल सं १६३२ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । के सं ३२६ । क मन्थार ।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है ।

३००७ प्रति स० २ । पत्र सं ३२८ । से काल सं १८७५ भाद्र सुदी ८ । के सं १२७ । क मन्थार ।

३००८ प्रति स० ३ । पत्र सं ७ । से काल सं १३ ९ कार्तिक सुदी २ । के सं ११३ । क मन्थार ।

विशेष—लेखक प्रचलित अपूर्ण हैं । योषावस (ग्वाभिवर) में महाराजा जगदरेव के शासनकाल में प्रतिमिति की गई थी ।

३००९ द्विसप्तानकाव्यटीका— । पत्र सं २६४ । भा १ ३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३२८ । क मन्थार ।

३०१० धन्यकुमारचरित्र—आ० गुणमद्र । पत्र सं २३ । भा १ ×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३३३ । क मन्थार ।

३०११ प्रति स० २ । पत्र सं २ से ४३ । से काल सं १३६७ भाद्र सुदी १ । अपूर्ण । के सं ३२३ । क मन्थार ।

विशेष—दूध पांव के निवासी लखनवाला वासीय ने प्रतिमिति की थी । उस समय दूध (जयपुर) पर बहसीराय का राज्य निघा है ।

३०१२ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । से काल सं १६३२ दि ज्येष्ठ सुदी ११ । के सं ४३ । क मन्थार ।

विशेष—धन्य प्रचलित की हुई है । धामेर में प्रादिनाथ नैत्यालय में प्रतिमिति हुई । लेखक प्रचलित अपूर्ण है ।

३०१३ प्रति स० ४ । पत्र सं ३३ । से काल सं १६ ४ । के सं १२८ । क मन्थार ।

३०१४ प्रति स० ५ । पत्र सं ३३ । से काल × । के सं ३६१ । क मन्थार ।

३०१५ प्रति स० ६ । पत्र सं ४८ । से काल सं १६ ३ भाद्र सुदी ३ । के सं ४३८ । क मन्थार ।

विशेष—दादिना कीरायी ने कव्य की प्रतिमिति करके मुनि भी नमनकीति को सेंट किया था ।

३०१६ धन्यकुमारचरित्र—ध० सकलकीर्ति । पत्र सं १७ । भा ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं ३३ । क मन्थार ।

विशेष—चतुर्थ प्रविचार तक है ।

३०१७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० आषाढ बुदी १३ । वे० सं० २५७ । अ
भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२५ माघ सुदी १ । वे० सं० ३१४ । अ
भण्डार ।

३०१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं०
१०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नहीं है । ब्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२० प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८१३ भाद्रवा बुदी ८ । वे० सं० ४४ । अ
भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दीसा) में प० वस्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ
दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

३०२२ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६६१ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे गुरुवासरे नद्याम्नाये बलात्कारगरो
परस्वती गच्छे ।

३०२३ धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६०१ पीष बुदी ३ । वे० सं० ३२७ । अ
भण्डार ।

विशेष—फौजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६० श्रावण सुदी ५ । वे० सं० ८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१६ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—सुशालचन्द्र । पत्र सं० ३० । आ० १४×७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

३०२८ प्रति सं० २। पत्र सं ३१। से काल X। के सं ४१२। अ मन्थार।

३०२९ प्रति सं० ३। पत्र सं ३२। से काल X। के सं ३१४। क मन्थार।

३०३० प्रति सं० ४। पत्र सं ३३। से काल X। के सं ३२६। क मन्थार।

३०३१ प्रति सं० ५। पत्र सं ४४। से काल सं १११४ कार्तिक बुदी १। के सं ५१३। अ मन्थार।

३०३२ प्रति सं० ६। पत्र सं १८। से काल सं १८५२। के सं २४। क मन्थार।

३०३३ प्रति सं० ७। पत्र सं ३६। से काल X। के सं ४६५। अ मन्थार।

विशेष—सत्तोवराम शाबदा मीजमात्राव बाले ने प्रतिनिधि की थी। प्रथम प्रसिद्ध काफी विस्तृत है।

इसके प्रतिरिक्त अ मन्थार में एक प्रति (के सं ५१४) तथा छ घोर क मन्थार में एक एक प्रति (के सं १६८ व १२) भी हैं।

३०३४ चम्पकुमारचरित्र—। पत्र सं १८। भा १ X १ इत्य। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। २ काल X। से काल X। अपूर्ण। के सं ३२३। क मन्थार।

३०३५ प्रति सं० २। पत्र सं १८। से काल X। अपूर्ण। के सं ३२४। क मन्थार।

३०३६ धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचम्पू। पत्र सं १३३। भा १ X २ इत्य। भाषा—संस्कृत। विषय—काम्य। २ काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ११। अ मन्थार।

३०३७ प्रति सं० २। पत्र सं १८७। से काल सं ११३८ कार्तिक सुदी ८। के सं ३४८। क मन्थार।

विशेष—भीने संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं।

३०३८ प्रति सं० ३। पत्र सं ३३। से काल X। के सं २३। अ मन्थार।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त अ तथा क मन्थार में एक एक प्रति (के सं १४८१ ३४९) भी हैं।

३०३९ धर्मशर्माभ्युदयगीता—यशोकीर्ति। पत्र सं ४ स ६१। भा १२ X ३ इत्य। भाषा—संस्कृत। विषय—काम्य। २ काल X। से काल X। अपूर्ण। के सं ८३६। अ मन्थार।

विशेष—टीका का नाम 'संदिह प्वात शीपिका' है।

३०४० प्रति सं० २। पत्र सं ३४। से काल सं ११३१ भाषात्र बुदी १। पूर्ण। के सं ३४०। क मन्थार।

विशेष—क मन्थार में एक प्रति (के सं ३४१) भी भी है।

३०४१ नलादयकाम्य—माणिक्यसूरि। पत्र सं ३२ से ११७। भा १ X ४ इत्य। भाषा—संस्कृत। विषय—काम्य। २ काल। से काल सं १४४३ अ फागुन बुदी ८। अपूर्ण। के सं ३४२। अ मन्थार।

पत्र सं १ से ३१ ३५, ३६ तथा ३२ से ७२ नहीं हैं जो पत्र बीच के घोर हैं जिन पर पत्र सं नहीं है।

विशेष—इसका नाम 'नलादय महाकाम्य' तथा 'बुबेर पुस्तक' भी है। इसकी रचना स १४२४ के पूर्व हुई थी। जिन रत्नघोष में चम्पकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १४४५ वर्षे प्रथम फागुन वदि ८ शुक्ले लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२ नलोदयकाव्य—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ११४३ । अ भण्डार ।

३०४३ नवरत्नकाव्य । पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है ।

३०४४ प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ११४६ । अ भण्डार ।

३०४५ नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र स० २२ । आ० १० $\frac{१}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये षण्ठेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहसा नृप चु डा सा० सागा भार्या सूरवदे द्वि० शृ गारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आसा, धरणपाल आसा भार्या हकारदे, धरणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल महिमादे । चु डा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दामा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषा मध्ये आसा भार्या अहकारदे इदशास्त्र लि०मडलाचार्य श्री धर्मचद्राय ।

३०४६ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल म० १८२६ पौष सुदी ५ । वे० स० ३६५ । क भण्डार ।

३०४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० स० ५० । घ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० से १६ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । अन्त में निम्न प्रकार लिखा है । पाडे रामचन्द्र के माथे पधराई पोथी । सवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली ।

३०४८ प्रति स० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १५८० । वे० स० ३५३ । छ भण्डार ।

३०४९. प्रति स० ५ । पत्र स० २५ । ले० काल म० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० स० ४६६ । ज भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में कल्याणराज के समय में आ० मोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५०. प्रति सं० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०७ । ट भण्डार ।

३०५१ नागकुमारचरित्र—पत्र सं ५३। पत्र सं ५३। पत्र १ ३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र काल सं० १३११ भाद्रपद सुदी १३। से काल सं १९१९ वैशाख सुदी १। पूर्ण। के सं २३०। अ मण्डार।

३०५२ नागकुमारचरित्र—पत्र सं २२। पत्र ११×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र काल ×। से काल सं १८६१ मारवा सुदी ८। पूर्ण। के सं ८६। अ मण्डार।

३०५३ नागकुमारचरितटीका—टीकाकार प्रभाकरम्बर। पत्र सं २ से ९। पत्र १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं २१८८। अ मण्डार।

विषय—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री अर्षसिद्धदेवराज्ये श्रीमद्यापिबासिमो पराररमेष्टिप्रभास्योपनिषत्समपुष्पनिराहृताकितकलकेन श्रीमत्प्रजा
कल्पवृक्षेण श्री मत्पंचमी टिप्पण्यं दृष्टमिति ।

३०५४ नागकुमारचरित्र—उदयसाहा। पत्र सं ३६। पत्र १३× इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ३३४। अ मण्डार।

३०५५ प्रति सं० २। पत्र सं ३३। से काल ×। के सं ३३३। अ मण्डार।

३०५६ नागकुमारचरित्रभाषा—पत्र सं ४३। पत्र १३×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं १७७। अ मण्डार।

३०५७ प्रति सं० २। पत्र सं ४। से काल ×। के सं १७३। अ मण्डार।

३०५८ नेमिजी का चरित्रभाषणम्। पत्र सं २ से ३। पत्र १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र काल सं १८४ फाल्गुन सुदी ३। से काल सं १८६१। अपूर्ण। के सं २२३७। अ मण्डार।

विषय—अन्तिम भाग—

नेम ठस ताठ सभर मध्ये रे रहा ब कब जायी ।
 बरत पस्ये सस्य सारे सहस बरसना धाव ॥
 सहस बरसना धावय पूरा बिलखर कसरी पीकरी ।
 मरत कर्म कीबत बरकपुर पांच सस्य सस्य सस्य पूरा थी ।
 संवत १८ बिजोसर फाल्गुन मास संकारो ।
 सुब पंचमी सुबीसुर रे श्रीबो चरित उबारो ॥
 श्रीबो बरत उबार भासबा इम भासी साको पहचंदा ।
 अर २ सस्य विरानेबा श्रव शेष सह नेम बिलखंदा ॥३९॥
 इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त ।

सं १८६१ केसारी श्री श्री श्रीराम जी लिखत कल्याणजी राजवट मध्ये ।
 माने नेमिजी के मय मय दिये हुये है ।

२१५६ नेमिनाथ के दशभव । पत्र स० ७ । आ० ६×४^१ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६१८ । वे० स० ३५४ । क भण्डार ।

२१६० नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र स० २२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है ।

२१६१ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३७३ । ब भण्डार ।

२१६२ नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ७८ । आ० १२×४^१ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल स० १५८१ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२१६३ नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र सं० १०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नेमिनाथ का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६० । क भण्डार ।

२१६४ प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८२३ । वे० स० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे० स० ३८६) और है ।

२१६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८२ । ड भण्डार ।

२१६६ नेमिनिर्वाणपजिका । पत्र स० ६२ । आ० ११^१×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६ । ज भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिस्वर चित्ते लब्ध्वानत चतुष्टय ।

कुर्वेह नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पजिका ॥

२१६७ नैषधचरित्र—हर्षकवि । पत्र स० २ से ३० । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एवं प्राचीन है ।

२१६८ पद्मचरित्रसार । पत्र स० ५ । आ० १०×४^१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का सक्षिप्त भाग है ।

२१६९ पर्युषणकल्प । पत्र स० १०० । आ० ११^३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६६६ । अपूर्ण । वे० स० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं । श्रुतस्कंध का द्वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—स० १६६६ वर्षे मूलताणामध्ये सुश्रावक सोनू तत् वधू हस्मी तत् मुता मुसम्बरी मेरूपु बडागृहे

वधू तेन एषा प्रति प० श्री राजकीर्तिगरिणा विहरेऽपिता म्वपुन्याय ।

२१७७ परिशिष्टपत्र—पत्र सं २८ में सं० १। भा० १०३५×४५ इंच। माता-मंगल। विष्णु-चरित्र। र काम ×। सं काम सं १९७३। पूर्ण। के सं ११६। अ मण्डार।

विशेष—६१ व ६२ को पत्र मर्ज है। शारदापुर नगर में प्रतिनिधि हुई थी।

२१७८ पद्मलताकाम्य—वादिशंकरसूत्र। पत्र सं १३। भा १२×३० इंच। माता-मंगल। विष्णु-काम्य। र काम ×। सं काम सं ११३७। पूर्ण। के सं ४२३। क मण्डार।

विशेष—सं ११३३ में राम के प्रभाव के साईं दुष्कीकाम्य क प्रबन्धोपनाथ सनितपुर नगर में प्रतिनिधि हुई

२१७९ प्रति सं० २। पत्र सं १२। सं काम ×। के सं ४३६। क मण्डार।

२१८० पायलकचरित्र—आकवसन। पत्र सं २०। भा १३×४३ इंच। माता-शुक्ल। विष्णु-चरित्र। र काम सं० १७६८। सं काम सं ३८१०। पूर्ण। के सं ११२३। ट मण्डार।

२१८१ पारबंताचरित्र—वादिराजसूत्र। पत्र सं १६। भा १२×३ इंच। माता-सोम। विष्णु-पारबंताच का बीबन चरित्र। र काम सं० १४७०। सं काम सं १३७७ फासुण कुबी १। पूर्ण। के सं २२५८। अ मण्डार।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं। पत्र का दूसरा नाम पारबंताच ही है।

प्रसिद्धि किम्ब प्रकाश है—

मन्त्र १५७७ वर्ये फासुण कुबी १ भी मूलसङ्घि कमात्कारण्यो वासुदेवीगण्यो मन्त्रान्तर्यो महारक श्री प वल्लभ महारक भी मुबर्कअरेवस्तवष्ट महारक श्रीविश्वशंकरदेवस्तवष्ट महारक श्रीमहाशंकरदेवस्तवष्टमात्रे वासु माह कापिन तस्य भार्या श्रीवमदे तयो पुत्रः बभूविसदान तदाकुमा तदा वही तस्य भार्या मवमा तयोः पुत्र पचाइए भार्या बालादे तयोपुत्रः ताह दूकह स्ते निर्ये प्रसवति।

२१८२ प्रति सं० २। पत्र सं २२। सं काम ×। पूर्ण। के सं १७। अ मण्डार।

विशेष—२२ में धागे पत्र नहीं है।

२१८३ प्रति सं० ३। पत्र सं १३। सं काम सं १४२३ फासुण कुबी १। के सं २१०

मण्डार।

विशेष—केसक प्रसिद्धि मात्रा पत्र नहीं है।

२१८४ प्रति सं० ४। पत्र सं ३४। सं काम सं १८७१ सोम सुवी १०। के सं २११

मण्डार।

२१८५ प्रति सं० ५। पत्र सं १५। सं काम सं १६८२ माण्ड। के सं १३। अ मा

२१८६ प्रति सं० ६। पत्र सं १७। सं काम सं १०८१। के सं १२। अ मण्डार।

विशेष—कुदरवती में शरदनाथ भोवाला में भोव'न के प्रतिनिधि भी थी।

काव्य एवं चरित्र]

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं० १२० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

२१८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८२३ कार्तिक वुदी १० । वे० सं० ४६६ ।

क भण्डार ।

२१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७६१ । वे० सं० ७० । घ भण्डार ।

२१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७५ मे १३६ । ले० काल सं० १८०२ फागुण वुदी ११ । अपूर्ण । वे०

सं० ४५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येसुश्रावक-पुण्यप्रभावक-

श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक मा० श्री दौलतरामजी पठनार्थ ।

२१८४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ मे २२६ । ले० काल सं० १८५४ मगसिर सुदी २ । अपूर्ण । वे०

सं० २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति दीवान सगही ज्ञानचन्द्र की थी ।

२१८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८ । वे० सं० २१७ ।

च भण्डार ।

विशेष—प्रति खेनकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास मे लिखवायी थी ।

२१८६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० १५ । छ

भण्डार ।

विशेष—प० श्यौजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई ।

२१८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२१८८ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६१ से १४४ । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १६४५ ।

ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और हैं ।

२१८९ पार्श्वनाथचरित्र—रङ्गधू । पत्र सं० ८ से ७६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—अनन्तर श ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२७ । ट भण्डार ।

२१९० पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी ५ । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ ।

अ भण्डार ।

२१६१ प्रति सं० २ । पत्र सं ८६ । ले काल सं १६२६ । वे सं ४४० । अ मन्थार ।

विशेष—सोन प्रतिमा घोर है ।

२१६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ६२ । ले काल सं १८६ माह बुदी ६ । वे सं ३७ । ग

मन्थार ।

२१६३ प्रति सं० ४ । पत्र सं ६३ । ले काल सं १८६१ । वे सं ४२ । अ मन्थार ।

२१६४ प्रति सं० ५ । पत्र सं १३८ । ले काल सं १८६३ । वे सं ४३१ । अ मन्थार ।

२१६५ प्रति सं० ६ । पत्र सं १२३ । ले काल सं १८८१ पीप बुदी १४ । वे सं ४३३ । अ

मन्थार ।

२१६६ प्रति सं० ७ । पत्र सं ४६ से १३ । ले काल सं १६२१ सावन बुदी ६ । वे सं १७५ ।

अ मन्थार ।

२१६७ प्रति सं० ८ । पत्र सं १ । ले काल सं १८२ । वे सं १४ । अ मन्थार ।

२१६८ प्रति सं० ९ । पत्र सं १३ । ले काल सं १८३२ फागुण बुदी १४ । वे सं १ । अ

मन्थार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिमिपि हुई थी । सं १८३२ में झुण्णकरस्य गोमा ने प्रतिमिपि की ।

२१६९ प्रति सं० १० । पत्र सं ४६ से १३४ । ले काल सं १६ ७ । अपूर्णा । वे सं १८४ ।

अ मन्थार ।

२२०० प्रति सं० ११ । पत्र सं ६२ । ले काल सं १८६६ माघ बुदी १२ । वे सं ३८ । अ

मन्थार ।

विशेष—फ्लोहसाल संधी बीचाम ने सोनियों के मन्थार में सं १६४ सावना बुदी ४ को बहाया ।

इसके अतिरिक्त अ मन्थार में तीन प्रतिमा (वे सं ४३३ ४ ८ ४४७) ग तथा अ मन्थार में

एक एक प्रति (वे सं ५६ ७१) अ मन्थार में तीन प्रतिमा (वे सं ४४६ ४३२, ४३४) अ मन्थार में ३

प्रतिमा (वे सं ६३ ६३१ ६३२ ६३३ ६३४) अ मन्थार में एक तथा अ मन्थार में २ (वे सं १३६ १

२) तथा अ मन्थार में दो प्रतिमा (वे सं १६१६ २ ७४) घोर हैं ।

२२ १ प्रद्युम्नचरित्र—प० महासेन्याचार्य । पत्र सं ३८ । भा १ ३ ४ ५ ६ ७ ८ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । र काल × । ले काल × । अपूर्णा । वे सं २३६ । अ मन्थार ।

२०२ प्रति सं० २ । पत्र सं १ १ । ले काल × । वे सं ३४३ । अ मन्थार ।

२२०३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११८ । ले काल सं १५६३ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे सं ३४६ । अ

मन्थार ।

विशेष—संवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ बुदी अशुभदिने बुधवारदिने सिद्धियोने मूलनक्षत्र श्रीमूलसंके नक्षत्राचार्य

वसन्तकारणो सरस्वतीगण्ड्ये श्रीकुम्भकुम्भाचार्याचार्यने च श्रीपद्मनिधिरेवास्तत्पट्ट म श्रीसुभचन्द्ररेवास्तत्पट्ट म श्रीजिनचन्द्र

काव्य एवं चरित्र]

देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खडेल-
वालान्वये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरषखू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्री द्वौ प्रथम साह दामार्
द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयो पुत्र सा० बोदिय तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयोः
पुत्र सा० खरहथ एतेषा मध्ये जिनपूजापुरदरेण सा० चेलाख्येन इद श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थ
निमित्त सत्पात्रायम श्री धर्म इन्द्राय प्रदत्त ।

२२०४ प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र स० १९५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल स० १५३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना सवत् 'ङ' प्रति मे से है । सवत् १७२१ वर्षे आसीज वदि ७ शुभ दिने लिखित आवर
(आमेर) मध्ये लिखति आचार्य श्री महोचद्रकीर्त्तिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ॥

२२०५ प्रति स० २ । पत्र स० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ११३ । ख
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से
ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७ प्रति स० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल स० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी (भासी) वाले भैया श्री डमल्ल अग्रवाल आक्क ने ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि
करवाई थी । प० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समण्डा की गई ।

२२०८ प्रति सं० ५ । पत्र स० ११६ से १६५ । ले० काल स० १८६६ सावन सुदी १० । वे० न०
५०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिखित पंडित सगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित
गोर्दनदासेन आत्मार्थ ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र स० २२१ । ले० काल म० १८३३ । श्रावण बुदी-३ । वे० न० १६ । छ
भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । ये आ० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१० प्रति स० ७ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० म० ११ ।
झ भण्डार ।

विशेष—दखतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११ प्रति स० ८ । पत्र सं २७४ । ले काल सं० १८ ४ भाद्रमा सुदी ६ । वै० सं० १७४ । अ
अम्बार ।

विषय—मगरबन्धनी आदिवाङ्ग मे प्रतिनिधि बनानी थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ अम्बार में तीन प्रतिमां (वै सं ४१६ ६४८ २ ८६ तथा अ अम्बार में एक प्रति
(वै सं १०८) भी है ।

२२१२ प्रद्युम्नचरित्र—। पत्र सं २ । या ११×२ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।
१ काम × । ले काल × । अपूर्ण । वै सं २३२ । अ अम्बार ।

१३ प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं ४ से ८६ । या १ ३/४×४ ३/४ इंच । मापा—मपत्र सं ।
विषय—चरित्र । १ काम × । ले काल × । अपूर्ण । वै सं० २ ४ । अ अम्बार ।

२२१४ प्रद्युम्नचरित्रभाषा—सभाशास्त्र । पत्र सं २ १ । या १३×२ इंच । मापा—हिन्दी (मघ) ।
विषय—चरित्र । १ काम सं १६१६ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले काल सं १६३७ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वै सं ४६४ ।
अ अम्बार ।

२२१५ प्रति स० २ । पत्र सं ३२२ । ले काल सं १६३३ मंसिर सुदी २ । वै सं २ ६ । अ
अम्बार ।

२२१६ प्रति स० ३ । पत्र सं १७ । ले काल × । वै सं १३५ । अ अम्बार ।
विषय—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७ प्रद्युम्नचरित्रभाषा—। पत्र सं २७१ । या ११ ३/४×७ ३/४ इंच । मापा—हिन्दी मघ । विषय—
चरित्र । १ काम × । ले काल सं १६१६ । पूर्ण । वै सं ४२ । अ अम्बार ।

२१८ प्रीतिकरचरित्र—अ० नमिदत्त । पत्र सं २१ । या १२×२ ३/४ इंच । मापा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । १ काम × । ले काल सं १८२७ मंसिर सुदी ८ । पूर्ण वै सं १२६ । अ अम्बार ।

२२१६ प्रति सं० २ । पत्र सं २३ । ले काल सं १८६४ । वै० सं २३ । अ अम्बार ।

२२२० प्रति स० ३ । पत्र सं ३४ । ले काल × । अपूर्ण । वै सं ११६ । अ अम्बार ।

विषय—२९ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । बी तीन तरफ भी लिपि है ।

२२२१ प्रति स० ४ । पत्र सं २ । ले काल सं १८१ वैशाख । वै सं १२१ । अ अम्बार ।

२२२२ प्रति सं० ५ । पत्र सं २५ । ले काल सं १६७६ प्र भाद्रपद सुदी १ । वै सं १२२ ।

अ अम्बार ।

२२२३ प्रति स० ६ । पत्र सं १४ । ले० काल सं १८३१ भाद्रपद सुदी ७ । वै सं ११ । अ

अम्बार ।

विषय—४ श्रीकृष्ण के दिव्य वं रामचन्द्रजी के जन्मपुर में प्रतिनिधि थी थी ।

इसकी बी प्रतिमां अ अम्बार में (वै सं १२ २७६) भी है ।

२२२४ प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । २० काल स० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

२२२५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । छ भण्डार ।

२२२६ गति सं० ३ पत्र सं० २ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

२२२७ भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र सं० २२ । आ० १२×५^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

२२२८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ५५१ । क भण्डार ।

२२२९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल स० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० सं० १३० । ख
भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल स० १७८६ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ५५८ । च
भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालो ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२२३१ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल स० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल स० १७६३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । ज
भण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्ति ने बौली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१३३ । ट भण्डार ।

२२३४ भद्रबाहुचरित्र—नवलकवि । पत्र सं० ४८ । आ० १२^३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । छ भण्डार ।

२२३५ भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ३८ । आ० १२^३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
चरित्र । २० काल स० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६ भद्रबाहुचरित्र * * * * * । पत्र सं० २७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

२२३७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३८ भरतेशवैभव * * * * * । पत्र सं० ५ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२०३६. मविष्यद्भूतचरित्र—प्र० श्रीधर । पत्र सं १०८ । मा २३×४२ इञ्च । मापा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १०२ । क मन्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२०४० प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । से काल सं १६१४ माप सुवी ८ । वै० सं १२३ । क

मन्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिनिधि वसुदेव में हुई थी । सेलक प्रसूति वाला प्रथम पत्र नहीं है ।

२०४१ प्रति सं० ३ । पत्र सं ६२ । से काल सं १७२४ माप सुवी ९ । वै० सं १६१ । क

मन्डार ।

विशेष—येदना निवासी साहू की ईमर सोमाली के बच में मे सा रावबन्ध की भार्या रङ्गादे ने प्रति निधि करवाकर भंडसाधर्म धीमूयल के सिष्य कृष्ण को कर्मसमर्थ निमित्त दिया ।

२२४२ प्रति सं० ४ । पत्र सं ७ । से काल सं १६६२ माप सुवी ७ । वै सं ७५ । क

मन्डार ।

विशेष—ग्रन्थमे गढ़ मध्ये मिलित प्रभु नमुठ जोसी सूरदास ।

हमारे घोर निम्न प्रसूति है ।

हमारे मध्ये राधा की सावतबास रामे कप्येसपालाम्य साह देव भार्या देवसदे ने कृष्ण की प्रतिनिधि करवायी थी ।

२२४३ प्रति सं० ५ । पत्र सं ३३ । से काल सं १८३७ माप सुवी ७ । पूर्ण । वै सं २६५ । क

मन्डार ।

विशेष—सेलक व मोहनबास ।

२२४४ प्रति सं० ६ । पत्र सं ८६ । से काल × । वै सं २६३ । क मन्डार ।

२०४५ प्रति सं० ७ । पत्र सं ५ । से काल × । वै सं ३१ । मपूर्णा । क मन्डार ।

विशेष—कहीं कहीं मलिन चर्चों के अर्थ दिये गये हैं तथा अन्त के २२ पत्र नहीं मिले गये हैं ।

२०४६ प्रति सं० ८ । पत्र सं ६३ । से काल सं १६७७ माप सुवी २ । वै० सं ७७ । क

मन्डार ।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी ।

२२४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं ९७ । से काल सं १६९७ माप सुवी ६ । वै सं १६४४ । क

मन्डार ।

विशेष—ग्रामे में महाराजा मालसिंह के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई थी । प्रसूति का प्रथम पत्र नहीं है ।

२२४८ मविष्यद्भूतचरित्रमापा—पद्मासाह चौधरी । पत्र सं १ । मा ११३×७६ इंच ।

मापा—हिन्दी (वच) । विषय—चरित्र । र काल सं १६९७ । क काल सं १६२ । पूर्ण । वै सं २२४ । क

मन्डार ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल X । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२५१ भोज प्रबन्ध—पंडितप्रवर बल्लाल । पत्र सं० २६ । आ० १२३ X ५ इच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । ड भण्डार ।

२२५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७११ आसोज बुदी ६ । वे० सं० ४६ । अपूर्ण ।
अ भण्डार ।

२२५३ भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ४३ । आ० १० X ५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्टपदी—रगविनयगणि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १० X ४ इच्च ।
भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) विषय—चरित्र । २० काल सं० १७१४ श्रावण सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण ।
वे० सं० ८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—चीतोडा ग्राम मे श्री रगविनयगणि के शिष्य दयामेह मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाई ।

पुण्य पुरुषराणा गुण धुरता छता पातक हरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥

शातिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।

मंगलकलशमुनि सतरगा कहा गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥

गछ खरतर युग वर गुण आगलउ श्री जिनराज सुरिद ।

तसु पट्टधारी सूरि शिरोमणी श्री जिनरग मुर्गिद ॥४॥ ए० ॥

तासु सोस मंगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह ।

रगविनय वाचक मनरग सु जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥

नगर अभयपुर अति रलिआमराउ जहा जिन गृहचउसाल ।

मोहन मूरति वीर जिरोदनी सेवक जन सु रसाल ॥६॥ ए० ॥

जिन अनइबलि सोवत घणी जूणा देवल ठाम ।

जिहा देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ वद्धित काम ॥७॥ ए० ॥

निरमल नीर भरयउ सोहइ यणु ऊभ महेश्वर नाम ।

आप विधाता जगि अवतरी कीषउ की मति काम ॥८॥ ए० ॥

जिहा किण आवक सगुण शिरोमणी धरम मरम नउ जाण ।

श्री नारायणदास सराहियइ मोनइ जिरोवेर आण ॥९॥ ए० ॥

मनु तण्डुल मासह ए बजगई कीपी मन उल्लास ।
 प्राधिकउ उछठ के इहां भाजिमउ मिछा दुस्नइ तास ॥१॥ ए० ॥
 सासण नामक बीर प्रसाद बी बठगी बडीव प्रमण ।
 भणिसवई सुणिसवई के नर भावमु धारपई तासु वस्त्राण ॥११॥ ए ॥
 ए संबध सरस रस गुण भरवठ मन्व्य मठि मनुमारि ।
 धरमी बरु पुख बालग मन रमी रंधबिसन मुसकउर ॥१२॥ छ ॥
 एह वा मुनिबर मिथि रिम गार्दमइ सर्व गावा बुहा ॥ ५३२ ॥

इति श्री मंभक्तकस्तसमहामुनिचरपही संपूर्तिमगमद् मिलिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री विजय दसमी बसारे श्री चौतोडा महाप्राने राजि श्री परछासिहजी विजयराज्ये बाबनाथार्थे श्री पण्डित श्यामद मुनि धारमधेयसे कुर्म भवतु । कम्भाणमरतु सिलक पाठक्योः ॥

२२४५ महीपासचरित्र—चारित्रमूपय । पत्र सं० ४१ । पृ ११३×२३ इञ्च ।
 विषय—चरित्र । र काल सं० १७११ भास्वण सुबी १२ (छ) । सि० काल सं० १८१५ फासुण सुबी १४
 सं ११३ । क मन्थार ।

विशेष—जीहरीमान्त पोत्रीका के प्रतिसिपि करवाई ।
 २२४६ प्रति सं० २ । पत्र सं ४६ । सि काल × । के सं० १११ । क मन्थार ।
 २२४७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । सि काल सं० ११२५ फासुण सुबी १२ । के सं
 मन्थार ।

विशेष—रीडूरास बंध के प्रतिसिपि श्री थी ।
 २२४८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । सि काल × । के सं ४६ । क मन्थार ।
 २२४९ प्रति सं० ५ । पत्र सं ४२ । सि० काल × । के सं १७ । क मन्थार ।
 २२५० महीपासचरित्र—म० रत्ननन्दि । पत्र सं ३४ । पृ १२×२३ इञ्च ।
 विषय—चरित्र । र काल × । सि काल सं १७३६ भास्वण सुबी ६ । पूर्ण । के सं ३७४ । क मन्थार ।

२२६१ महीपासचरित्रभाषा—नवमस । पत्र सं १२ । पृ १३×२ इञ्च । भाषा—
 विषय—चरित्र । र काल सं १११८ । सि० काल सं ११३६ भास्वण सुबी ३ । के सं ३७३ । क
 विशेष—हूसकर्ता चारित्र मूपय ।

२२६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ३८ । सि काल सं ११३६ । के सं० ३१२ । क मन्थार ।
 विशेष—शारद्व के १३ नवे पत्र मिले हुये हैं ।

कवि परिचय—नवमस लक्ष्मण कश्यपीबाल के विषय के । इनके पितामह का नाम कुलीचन्द तथा
 वा नाम विवस्वत था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ ।

चमण्डार ।

२२६४ मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । चमण्डार ।

२२६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । जमण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । टमण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । टमण्डार ।

मण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । नमण्डार ।

२२६९ यशस्तिलकचम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत

गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०

८५१ । नमण्डार ।

विशेष—कई प्रतियो का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । नमण्डार ।

२२७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फाल्गुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । नमण्डार ।

मण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । कमण्डार ।

२२७३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । नमण्डार ।

मण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कही कही कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

अबावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगत्कीर्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । टमण्डार ।

मण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । नमण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता सोमदेव सूरि ।

मासु तण्डु प्रमह ए चउपई वीधी मन उजास ।
 प्रथिक्क उधउर के र्हा आबियउ मिछा कुक्कउ तास ॥१ ॥ ए० ॥
 वासण मामक बीर प्रसाद वी चउरी चडीय प्रमसु ।
 अफिक्कई मुण्णिसवई जे तर मावसु भारयई तासु कम्पाण ॥११॥ ए ॥
 ए संबंज सरस एस कुण परयउ काव्य मति प्रनुसारि ।
 घरमी अणु मुसु मावण मन रती रंगविनय सुखकार ॥१२ ॥ ए ॥
 एह वा मुनिवर मिति दिन पाईयइ सर्ब पावा हुआ ॥ १३२ ॥

इति श्री श्रीगणेशस्तोत्रमहात्म्यनिबन्धपट्टी संपूर्णममत् मिश्रिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री मासोत्र सुदी
 विजय दशमी वासरे श्री श्रीसोडा महाप्रामे रात्रि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनार्थम् श्री रंगविनयगणु विष्य
 बधिष्ठ रवामिद मुनि प्रात्मभेक्ते कुर्म बबतु । कम्पाणमस्तु लेखक पाठक्यो ॥

२२७५ महीपाकचरित्र—चारित्रमूपय । पत्र सं ४१ । पृ ११३×१३ इञ्च । पावा—संस्कृत ।
 विषय—चरित्र । र काल सं १७३१ भावण सुदी १२ (स) । ले काल सं १८१८ काष्ठण सुदी १४ । पूर्ण । के
 सं १९३ । क नम्बर ।

विशेष—अहिदीनाल बोधीक ने प्रतिमिति करवाई ।

२२७६ प्रति सं० २ । पत्र सं ४६ । ले काल × । के सं १९११ । क नम्बर ।

२०५७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले काल सं १९२८ काष्ठण सुदी १२ । के सं २७१ । क
 नम्बर ।

विशेष—रोड्डराम शैव ने प्रतिमिति की थी ।

२२७८ प्रति सं० ४ । पत्र सं ३२ । ले काल × । के सं ४६ । क नम्बर ।

२०५६ प्रति सं० ४ । पत्र सं ४३ । ले काल × । के सं १७ । क नम्बर ।

२२६० महीपाकचरित्र—स० रत्नगिह । पत्र सं ३४ । पृ १२×१३ इञ्च । पावा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । र काल × । ले काल सं १८३६ भावण सुदी ९ । पूर्ण । के सं ३७४ । क नम्बर ।

२०६१ महीपाकचरित्रमाया—नबमस । पत्र सं ६२ । पृ १३×१३ इञ्च । पावा—हिन्दी मय ।

विषय—चरित्र । र काल सं १९१८ । ले काल सं १९३९ भावण सुदी ९ । के सं ३७३ । क नम्बर ।

विशेष—भूतकर्ता चरित्र भूबस ।

२२६२ प्रति सं० ५ । पत्र सं ३८ । ले काल सं १९३३ । के सं ३९९ । क नम्बर ।

विशेष—भारत के १३ नवें पत्र निकले हुये हैं ।

कवि परिचय—नबमल लक्ष्मण काठलीवाल के विष्य वे । इनके पितामह का नाम सुनीकन तथा पिता
 का नाम सिवचन्द्र था ।

२०६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ ।

चभण्डार ।

२०६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । च भण्डार ।

२०६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२०६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२०६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट

भण्डार ।

२०६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । व्य भण्डार ।

२०६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत
गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०
८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७० प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ

भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । व्य

भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

अबावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्ति के शिष्य पं० दीदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट

भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता सोमदेव सूरि ।

२२५६ यशस्विनकव्यम्पूटीका—पत्र सं० १४६। मा० १२३×७ इत्य। माया-संस्कृत। विषय-काव्य। र काल ×। से काल सं० १५४१। पूर्ण। वै० सं० १५८। क मन्थार।

२२७० प्रति सं० २। पत्र सं० ११। से काल ×। वै० सं० १८१। क मन्थार।

२२७८ प्रति सं० ३। पत्र सं० १८१। से काल × वै० सं० १११। क मन्थार।

२२७६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१ से ४२१। से काल सं० ११४५। अपूर्ण। वै० सं० १५०।

क मन्थार।

२२८० यशोधरचरित—महाकवि पुष्पकस्त। पत्र सं० ८२। मा १ ×४ इत्य। माया-यशस सं०

विषय-चरित्र। र काल ×। से काल सं० १४७ मासोज सुदी १। पूर्ण। वै० सं० २११। क मन्थार।

विशेष—संवत्सरैस्मिन् १४ ७ वर्षे प्रथमभासे सुप्रसिद्धे १ पुष्पकस्तरे तस्मिन् यशसुपुटीदुर्गेहोमीपुष्पकस्तरे

माले महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमस्य क्लिप्तजीवश उच्यते क मुनिव्यामहमुवसाहिरास्ये तद्विजयस्ये श्रीकाष्ठ-संके मासुरास्ये मुष्करगणे म्प्टारक धी वेवसेन वेवास्तवदृष्टे म्प्टारक धी विमसेन वेवास्तवदृष्टे म्प्टारक धीपमसेन वेवा-स्तवदृष्टे म्प्टारक धी भावसेन वेवास्तवदृष्टे म्प्टारक धी सङ्कलीति वेवास्तवदृष्टे श्रीगुणकीति वेवास्तवदृष्टे म्प्टारक धी कसे कीति वेवास्तवदृष्टे म्प्टारक मसयकीति वेवास्तवदृष्टे महत्त्वा धी हरिदेण वेवास्तवदृष्टे म्प्टारक धी मीतममोमे साधु धीकरमसी तन्मार्त्तानुजा तयो पुनस्तनयः वैष्ठ सा मीणस्त द्वितीय सा. पूना तृतीयः सा मन्थार। साधु मीणस्त भास्ये ई चाड मुराही। सा. मन्थार पुन कसमल मोमा एतेषामध्ये इत्युस्तकं ज्ञानावरलीकम् जयार्थं वाइ वर्षी इत्यं यशोधरचरित्रं लिखाय महत्त्वा हरिदेणवेवा इत्यं पञ्चमं। सिद्धं सं० विजयसिंहेन।

२२८१ प्रति सं० २। पत्र सं० १४१। से काल सं० ११११। वै० सं० ११८। क मन्थार।

विशेष—कही नहीं संस्कृत में टीका जी बी हुई है।

२२८२ प्रति सं० ३। पत्र सं० १ से १८। से काल सं० १११ मासो १। अपूर्ण। वै० सं० २५८।

क मन्थार।

विशेष—प्रतिविधि भाषे में राजा भारमन के प्रसन्नकाल में मेगीचर वेत्पत्तय में श्री गई थी। प्रसन्न

अपूर्णा है।

२२८३ प्रति सं० ४। पत्र सं० ११। से काल सं० १११७ मासोज सुदी २। वै० सं० १८११। क

मन्थार।

२२८४ प्रति सं० ५। पत्र सं० ८१। से काल सं० ११७२ मंगसिद्ध सुदी १। वै० सं० २८७। क

मन्थार।

२२८५ प्रति सं० ६। पत्र सं० ८१। से काल ×। वै० सं० २१२१। क मन्थार।

२२८६ यशोधरचरित्र—अ० संकलीति। पत्र सं० ११। मा १ ३×१ इत्यं। माया-संस्कृत।

विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै० सं० ११४। क मन्थार।

२२८७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्णा । वे०

सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च

भण्डार ।

विशेष—पं० ननिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ

भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च

भण्डार ।

२२९२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सवत्सर १७७५ वर्ष मिति चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य आज्ञाविधायि आचार्य श्री क्षेमकीर्ति । पं० चोखचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि की थी—
अन्त में यह श्रीर लिखा है—

संवत् १३५२ बेली भौसे प्रतिष्ठा कराई लाडला मे तदिस्यो ल्हीडसाजण उपजो ।

२२९४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ बुदी २ । अपूर्णा । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ११४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति मचित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४ । अपूर्णा । वे० सं० १९३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्राचार्य शुभचन्द्र ने टोक में प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार में दो प्रतिया (वे० सं० ५६६, ५६७) श्रीर हैं ।

२२९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७० । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—मस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२२६८ प्रति सं० २ । प्रति सं २८ । सं० काव्य सं १३६३ सावन सुदी १३ । वै सं १३२ । क
अम्बार ।

विशेष—यह ग्रन्थ वीमसिरी से प्राच्य सुवनकीर्ति की सिध्दा पार्यिका मुक्तिभी के लिए ब्यासुम्बर से
मिलवया तथा बैशाख सुदी १ सं १७८३ की मंडलाचार्य की अनन्तकीर्तिवी के लिए नाचुरामजी ने समर्पित किया ।

२२६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं ३४ । सं० काव्य X । वै सं ८४ । घ अम्बार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३०० प्रति सं० ४ । पत्र सं ८३ । सं० काव्य सं १९६७ । वै सं ९९ । क अम्बार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में घाघेर में प्रतिलिपि हुई ।

२३०१ प्रति सं० ४ । पत्र सं ४३ । सं० काव्य सं० १८३३ पीव सुदी १३ । वै सं २१ । ख
अम्बार ।

विशेष—सवाई जयपुर में वं बलतराम ने मैमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३०२ प्रति सं० ६ । पत्र सं ७६ । सं० काव्य सं० माववा सुदी १ । वै सं ९६ । घ अम्बार ।

विशेष—डोडरमसजी के पठनार्थ पांडे मोरघनबास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुणकीर्ति के उपदेश
से प्राप्तकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३ घराणपरचरित्र—बादिराजसूरी । पत्र सं २ से १२ । भा ११X२ इअ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काव्य X । सं० काव्य सं १८३६ । अपूर्ण । वै सं ८७२ । घ अम्बार ।

२३०४ प्रति सं० २ । पत्र सं १२ । सं० काव्य १८२४ । वै सं २६५ । क अम्बार ।

२३०५ प्रति सं० ३ । पत्र सं २ से १९ । सं० काव्य सं १३१८ । अपूर्ण । वै सं ८३ । घ
अम्बार ।

विशेष—मूलक प्रचरित अपूर्ण है ।

२३०६ प्रति सं० ४ । पत्र सं २२ । सं० काव्य X । वै सं २१३८ । ट अम्बार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७ घराणपरचरित्र—प्राणदेव । पत्र सं ३ से ९ । भा १ X ४ इअ । भाषा—मैथिली ।

विषय—चरित्र । १० काव्य X । सं० काव्य X । अपूर्ण । भीर्ण । वै सं २८६ । घ

२३०८ घराणपरचरित्र—वासुदेव । पत्र सं ७१ । भा १२X

चरित्र । १० काव्य सं १३६३ काव्य सुदी १२ । पूर्ण । वै सं ९४ । घ अम्बार

विशेष—प्रचरित—

सं० १३६३ अथे वाचनाद सुम्यत्तौ द्वारपीठिकसे कृष्णविद्यागरी

नाम रावत की लेखनी प्रकाशे मांतीण नाम अथे थी

नद्याम्नाये श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदि देवाम्नात्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिराचन्द्रदेवास्त-
त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवाम्नात्तदाम्नाये खडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा तिहूणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम सा
ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊल्हा ईसरभार्या अजकिरी तयो पुत्रा चत्वार प्र० ना० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय
सा ऊधर चतुर्थ सा देवा मा लोहट भार्या ललितादे तयो पुत्रा पच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूणा
चतुर्थ होला पंचम राजा सा भूणा भार्या भूणमिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयो पुत्रो द्वौ प्रथम
लाला द्वितीय खरहथ— सा० देवा भार्या घोसिरि तयो पुत्र धनिउ वि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजी धीरा भार्या रमायी
सा टोहा भार्ये द्वे बृहद्गीला लक्ष्मी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा नाल्हा तद्भार्या नयराश्री सा० ऊल्हा भार्या
वाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेपामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेन त्रिपचाशतश्रावकसात्कृत्या प्रति-
पालण सावधानेन जिरापूजापुरदरेण सद्गुरुरूपदेश निर्वाहकेन सघपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तम-
पात्राय घटापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६६० बैशाख सुदी १३ । वै० स० ५६३ । क
भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र । पत्र सं० १७ से ४५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वै० सं० ६१३ । ङ भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १५८१ भाद्रवा सुदी १२ । ले० काल स० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वै० स०
५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४ यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचद । पत्र स० ३७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वै० स०
१०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ छिन्वा । श्रे० कुशलोजी तत्
विष्येन लिपिकृतं प० खुशालचद श्री घुतधिलोलजी के देहुरे पूर्ण कर्तव्यं ।

दिवालो जिनराज को देखस दिवालो जाय ।

निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवाली थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२२६८ प्रति सं० २ । प्रति सं० १७ । से० काल स १५१५ सावन सुदी १३ । वै सं १५२ । अ
नम्बर ।

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से साचार्य भुवनेश्वर की सिध्या प्रायिका मुक्तिभी के लिए क्यासुम्बर से
मिलकामा तथा वैद्यनाथ सुदी १ सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री प्रतापकीर्तिजी के लिए नापुरामजी ने समर्पित किया ।

२२६९ प्रति सं० ३ । पत्र सं ५४ । से काल X । वै सं ८४ । अ नम्बर ।

विशेष—प्रति मधीन है ।

२३०० प्रति सं० ४ । पत्र सं ८३ । से काल सं १९९७ । वै सं १९ । अ नम्बर ।

विशेष—नालसिंह महाराजा के सासनकाल में आमेर में प्रतिमिति हुई ।

२३०१ प्रति सं० ५ । पत्र सं १३ । से काल सं १८३३ पौष सुदी १३ । वै सं २१ । अ
नम्बर ।

विशेष—सवाई बस्पुर में पं बख्तराम ने नेमिनाथ भैरवालय में प्रतिमिति की थी ।

२३०२ प्रति सं० ६ । पत्र सं ७१ । से काल सं भाद्रमा सुदी १ । वै सं ६१ । अ नम्बर ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोखमबास ने प्रतिमिति कराई थी । महामुनि गुणश्रीति के उपदेश
से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३ पराशरचरित्र—बादिराजसुरि । पत्र सं २ से १२ । या ११X२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १२ काल X । से काल सं १८३६ । अपूर्णा । वै सं ८७२ । अ नम्बर ।

२३०४ प्रति सं० ७ । पत्र सं १२ । से काल १८२४ । वै सं ५६३ । अ नम्बर ।

२३०५ प्रति सं० ८ । पत्र सं २ से १९ । से काल सं १५१८ । अपूर्णा । वै सं ८३ । अ
नम्बर ।

विशेष—सिद्धक प्रवृत्ति अपूर्णा है ।

२३०६ प्रति सं० ९ । पत्र सं २२ । से काल X । वै सं २१३८ । अ नम्बर ।

विशेष—प्रथम पत्र मधीन लिखा गया है ।

२३०७ पराशरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं ३ से २ । या १ X ४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १२ काल X । से काल X । अपूर्णा । जीर्ण । वै सं २८१ । अ नम्बर ।

२३०८ पराशरचरित्र—बासवसेन । पत्र सं ७१ । या १९X४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । १२ काल सं १५६३ भाष सुदी १९ । पूर्ण । वै सं २४ । अ नम्बर ।

विशेष—प्रवृत्ति—

मंत्र १५६५ वर्षे नाचयाने इन्द्रमुक्ते इन्द्रपीडितसे बृहस्पतिबासरे भुवनेश्वरे राव धीमन्त्रे रात्र्यवर्षे
मान रावत श्री वेतनी प्रतापे नाचयाने नाम नवरे श्रीघातिनाथ त्रिगुणैत्यालये श्रीभुवनेश्वरेनास्कारयाने वरसवतीगण्ड

नद्याम्नाये श्रीकुदकुदाचार्यन्वये भट्टारक श्रीपद्मनदि देवाम्नात्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्त-
त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम सा
ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊल्हा ईसरभार्या अजपिणी तयो पुत्रा चत्वार प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूगा तृतीय
सा ऊधर चतुर्थ सा देवा सा लोहट भार्या ललितादे तयो पुत्रा पच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूगा
चतुर्थ होना पचम राजा सा. भूगा भार्या भूगामिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयो पुत्री द्वी प्रथम
लाला द्वितीय खरहथ— सा० देवा भार्या चोसिरि तयो पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजी धीरा भार्या रमायी
सा टोहा भार्ये द्वे वृहद्गीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयणी सा० ऊल्हा भार्या
वाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेनत्रिपचाशतश्रावकसत्क्रिया प्रति-
पालण सावधानेन जिणपूजापुरदरेण सद्गुरूपदेश निर्वाहकेन संप्रपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तम-
पात्राय घटापित ज्ञानावर्णां कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६६० वैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६३ । क
भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र । पत्र सं० १७ से ४५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १५८१ भाद्रवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० स०
५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४ यशोधरचरित्रभाष्य—खुशालचंद । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स०
१०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशालोजी तत्
शिष्येन लिपिकृतं पं० खुश्यालचंद श्री घृतधिलोलजी कै देहुरे पूर्ण कर्त्तव्य ।

दिवालो जिनराज कै देखस दिवालो जाय ।

निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवाली थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२३१५ यशोधरचरित्र—पद्माक्षर । पत्र सं ११२ । पृ १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—चरित्र । २० काल सं० १९१२ सावन सुदी ५ । से काल × । पूर्ण । वे सं १० । क मन्थार ।

विशेष—गुणवंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुबाह है ।

२३१६ प्रति सं० २ । पत्र सं ७४ । से काल × । वे सं ११२ । क मन्थार ।

२३१७ प्रति सं० ३ । पत्र सं ८२ । से काल × । वे सं ११४ । क मन्थार ।

२३१८ यशोधरचरित्र— । पत्र सं १ से १३ । पृ १२×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

चरित्र । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १११ । क मन्थार ।

२३१९ यशोधरचरित्र—भुतमागर । पत्र सं ११ । पृ १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

चरित्र । २ काल × । से काल सं १५२४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे सं १२४ । क मन्थार ।

२३२० यशोधरचरित्र—महारक ज्ञानकीर्ति । पत्र सं ११ । पृ १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २ काल सं १९५६ । से काल सं १९६ भाद्रपद सुदी ६ । पूर्ण । वे सं २६५ । क मन्थार ।

विशेष—संवत् १९६ वर्षे भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे नवम्यांतिनी सोमवासरे प्राणिनावर्षेत्प्राप्तये मोक्षमावाह

वास्तव्ये राजाविदात्र महाराजार्थामामासिचरत्स्यप्रवर्तते भीमूनसंवेवसत्कारणसे नंघाम्नायेसरस्वतीमन्त्रे श्रीमुंबहुंवाचार्थि-

म्वये तत्सप्तष्ट महारक भीषणनिदिवातत्सष्ट महार भी मुनचन्द्रदेवा तत्सष्ट महारक भी विमचन्द्रदेवा तत्सष्ट भीचन्द्र

कीर्ति वैवास्तवाम्नाये कवेतवालये पाम्नाकमगोत्रे साह हीरा तस्य भार्या हरचन्दे । तयो पुत्राचत्वार । प्रथम पुत्र साह

नासु तस्यभार्या नीलादे पुत्र भव । प्रथमपुत्र साह नासु तस्य भार्या नायक्ये तयोपुत्रा द्वी प्रथम पुत्र चिदंभीव गीरचर ।

द्वितीयपुत्र साह बोहिच तस्य भार्या कहरंगदे तस्य पुत्रा भव प्रथमपुत्र चिदंभी स्त्रियाम द्वितीय पुत्र वैसा । तृतीयपुत्र

देह । तृतीय पुत्रण तस्यभार्या कभूरदे । साह हीरा । द्वितीयपुत्र बोहिच तस्यभार्या चक्रछदे । तस्यपुत्रा द्वी प्रथमपुत्र साह

पुत्रर तस्यभार्या नारचदे । द्वितीयपुत्र चिदंभी साह । हीरा तृतीयपुत्र साह पञ्चरख । हीरा चतुर्थपुत्र साह नराण्ण तस्य

भार्या नैगादे तस्यपुत्र साह कुरंगा एनेपाम्नाये बोहिच तनेववास्तव यशोधरचरित्रवर्षेत्प्राप्तयेमिसत् महारक भीचन्द्रकीर्तिवर्षेत्प्राप्तये

भार्ये सातचक्र योम्य अटपितं ।

२३२१ प्रति सं० २ । पत्र सं ४५ । से काल सं १५७७ । वे सं ११ । क मन्थार ।

विशेष—साह मतिसागर के प्रतिमिपि श्री श्री ।

२३२२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४८ । से काल से १९५१ मंगसिर सुदी २ । वे सं ११ । क मन्थार ।

विशेष—साह छीतरमस के पठनार्थे जाणी जममार्थ के मोक्षमावाह के प्रतिमिपि श्री श्री ।

क मन्थार मे २ प्रतिर्षा (वे सं १७६८) पीर है ।

२३२३ यशोधरचरित्रप्रतिष्ठा—प्रभाषद् । पत्र सं १२ । पृ १२×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २ काल × । से काल सं १५५१ पीप सुदी ११ । पूर्ण । वे सं १७६ । क मन्थार ।

विशेष—पुष्पदत्त कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह वाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४ रघुवशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ८२ से १०५ तक नहीं है। पचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५ प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १८२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अ

भण्डार।

विशेष—कडी ग्राम में पाड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६ प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३०७ प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भादवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख

भण्डार।

२३२८ प्रति सं० ५। पत्र सं० १३२। ले० काल सं० १७८६ मगसर सुदी ११। वे० सं० १५५।

ख भण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारो ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ में प० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२६ प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६ से १३४। ले० काल सं० १६६६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २४२। छ भण्डार।

२३३० प्रति सं० ७। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। छ भण्डार।

२३३१ प्रति सं० ८। पत्र सं० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मगसर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १६६५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्ष है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ५ प्रतिया (वे० सं० १०२८, १२६४, १२६५, १८७४, २०६५) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५ [क])। ङ भण्डार में ७ प्रतिया (वे० सं० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार में दो प्रतिया (वे० सं० २८६, २९०)। छ और ट भण्डार में एक एक प्रतिया (वे० सं० २६३, १६६६) और हैं।

२३३२ रघुवशटीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र सं० २३२। आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २१२। ज भण्डार।

२३३३ प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६८। व भण्डार।

२३३४ रघुवशटीका—प० सुमति विजयगणि । पत्र सं ९ से १७९ मा १२×३३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—काव्य । र काम × । ले काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२७ ।

विशेष—टीकाकास—

निबिम्बरस नामि संवत्सरे कास्मिन्सितेकावस्थां तिथौ संपूर्णा भीरस्तु मंगस तथा कतुः टीकायाः । विक्रम पुर में टीका की गयी थी ।

२३३५ प्रति स० २ । पत्र सं ३४ से १४७ । ले काम सं १८४ चंद्र कुरी ७ । अपूर्ण । वे सं १२८ । छ मण्डार ।

विशेष—गुमानीराम के सिष्य पं चम्पूराम ने शालीराम के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (वे सं० १२६) भी है ।

२३३६ रघुवशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं ९ । मा १ १/२×३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—काव्य । र काम सं १९६२ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १७७३ । छ मण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृष्ण रघुवंश की टीका इत्यर्थक है । एक मर्प तो बड़ी है जो काव्य का है तथा दूसरा मर्प ब्रह्महट्टिकीण से है ।

२३३७ प्रति स० २ । पत्र सं ५ से १७ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २७२ । छ मण्डार ।

२३३८ रघुवशटीका—शुक्लविनयगणि । पत्र सं ११७ । मा १२×३ इञ्च । मापा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । र काम × । ले काल × । वे० सं ८६ । छ मण्डार ।

विशेष—हरद्वारस्थीय वाचनाचार्य प्रमोदभास्विभस्मणि के सिष्य संस्मयगुप्त भीमत् जयसोमगणि के सिष्य शुक्लविनयगणि में प्रतिनिधि की थी ।

२३३९ प्रति स० २ । पत्र सं १९ । ले काल सं १८६३ । वे सं १२९ । छ मण्डार ।

इसके प्रतिरिक्त छ मण्डार में दो प्रतियां (वे सं १३३ १ ८१) भी हैं । केवल छ मण्डार की प्रति ही शुक्लविनयगणि की टीका है ।

२३४० रामकृष्णकाव्य—वैद्यप० सूर्य । पत्र सं १ । मा १ × ३ इञ्च । मापा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६३ । छ मण्डार ।

२३४१ रामचन्द्रिका—केराबदास । पत्र सं १७९ । मा ६×३ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—

काव्य । र काल × । ले काल सं १७६६ भास्व कुरी १३ । पूर्ण । वे सं १३३ । छ मण्डार ।

२३४२ बरौगाचरित्र—म० वटमानदेव । पत्र सं ४६ । मा १२×३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—

राजा बरौग का जीवन चरित्र । र काम × । ले काल सं १३६४ कर्तिक-कुशी १ । पूर्ण । वे० सं १२१ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रयत्न—

वे सं १३६४ वर्ष धाके १४३६ इतिहासमाने मुहम्मद रसमीदिवसे कर्नेरवारवासरै चमिहालकामे मंड्याने माना नाम महानवरे राव श्री सूर्यदेवि रायप्रवर्तमाने क्वर श्री पुरखमज्जप्रवते श्री साधिताव विगबैत्यालये भीमूक

मधे बलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे, भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावुडागोत्रे संघाधिपति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम स श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो सुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नौलादे । तृतीय स हंगरसी तद्भार्या दाड्योदे एतेसा मध्ये स. विमलादे इद शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० ० । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भाद्रपद सुदी १४ । वे० सं० ६६६ । ङ भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । च भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिताथ चैत्यालय में सतोषराम के शिष्य बल्लराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८४७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सागावती (सागानेर) में गोघो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० ४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चद्रप्रभ चैत्यालय में प० रामचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—दो सग से १३वें सग तक है ।

२३४९. वरागचरित्र—मर्तृहरि । पत्र सं० ३ से १० । आ० १२३ X ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनदि । पत्र सं० ५० । आ० १० X ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल सं० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ङ भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिन्नमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विरचिते सुखनामा दिने श्री वर्द्धमाननिर्वाणमन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३५१ वर्द्धमानकव्या—अयमित्रहस्त । पत्र सं ७३ । मा २५ × २३ इञ्च । माया—मयत्र स । विषय—
काम्य । र काल × । से काल सं १९९५ बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वै सं १२३ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रसक्ति—

सं १९२५ वरदे बैशाख सुदी ३ शुक्रवार भ्रूयसीरनक्षत्रे मूलसमे श्रीकुंवरकुंवाचार्याभ्ये तत्पट्टे महारक श्री
कुण्डल तत्पट्टे महारक श्रीमल्लिभूषण तत्पट्टे महारक श्रीप्रभाकर तत्पट्टे महारक श्रीचक्रवर्ति विरचित श्री मेमदत्त
माचार्य प्रबन्धवीथ महापुराण श्रीनेमिनाथ चैत्याभ्ये कुशाहर्षस महाराजाधिराज महाराजा श्री मन्त्रस्यंभराभ्ये प्रब-
न्धमेराभ्ये साय श्रीरा तत्पट्टेपुष्पाभ्ये तत्पुत्र अत्वार प्रथम पुत्र (अपूर्णा)

२३५२ प्रति सं० २ । पत्र सं ३२ । से काल × । वै सं १२३३ । ट मण्डार ।

२३५३ वर्द्धमानचरित्र— । पत्र सं १९५ से २१२ । मा १ × ४ इञ्च । माया—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । र काल × । से काल × । अपूर्णा । वै सं १८९ । अ मण्डार ।

२३५४ प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । से काल × । अपूर्णा । वै सं १२७४ । अ मण्डार ।

२३५५ वर्द्धमानचरित्र—केरलीसिद्ध । पत्र सं १८३ । मा ११ × २ इञ्च । माया—हिन्दी पत्र ।
विषय—चरित्र । र काल सं १८९१ से काल सं १८९४ सावन सुदी २ । पूर्ण । वै सं १४८ । क मण्डार ।

विशेष—सबलसुखी गोपा ने प्रतिसिद्धि की थी ।

२३५६ विक्रमचरित्र—बाधनाचार्य अमयसोम । पत्र सं ४ से ३ । मा १ × ४ इञ्च । माया—
हिन्दी । विषय—विक्रमचरित्र का जीवन । र काल सं १७२४ । से काल सं १७५१ भाद्रपद सुदी ५ । अपूर्णा । वै
सं १९६ । अ मण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में विषय रामचन्द्र ने प्रतिसिद्धि की थी ।

२३५७ विद्वन्मूलसंज्ञक—बौद्धाचार्य धर्मदास । पत्र सं २ । मा १ ३/४ × २ इञ्च । माया—
संस्कृत । विषय—काम्य । र काल × । से काल सं १८३१ । पूर्ण । वै सं १२७ । अ मण्डार ।

२३५८ प्रति सं० २ । पत्र सं १८ । से काल × । वै सं १२३ । अ मण्डार ।

२३५९ प्रति सं० ३ । पत्र सं २७ । से काल सं १८२२ । वै सं १२७ । क मण्डार ।

विशेष—उदयपुर में महात्म्य ने प्रतिसिद्धि की थी ।

२३६० प्रति सं० ४ । पत्र सं २४ । से काल सं १७२४ । वै सं १२८ । क मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

२३६१ प्रति सं० ५ । पत्र सं २९ । से काल × । वै सं १२३ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर मोल माहुर है मित्र पर लिखा है श्री विम मेवक साह्य चरित्राज वाठि सोवर्णी

काव्य एवं चरित्र]

२३६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल स १९१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ

भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १८८१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७५९ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । ब

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल स० १७४३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । ब

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गरिण हैं ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ११३, १४६) ब भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५०७) और है ।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—विनयरत्न । पत्र सं० ३३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । टीकाकाल स० १५३५ । ले० काल स० १६८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विहारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल X । ले० काल स० १८४६ । वे० सं० १८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के समय मे लिखी गई थी ।

२३६८. शंभुप्रद्युम्नप्रबन्ध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २ से २१ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—श्रीकृष्ण, शबुकुमार एक प्रद्युम्न का जीवन । २० काल X । ले० काल स० १६५९ । अपूर्ण । वे०

सं० ७०१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६५९ वर्षे विजयदशम्बा श्रीस्तंभतीर्थे श्रीवृहत्स्वरत्तरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालद्दीन
मक़बरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि मूरश्वराणा (सूरेश्वराणा) साहित्यमहास्वहस्तस्थापिता
पाचार्यश्रीजिनसिंहसूरिसुपरिकराणा (सूरेश्वराणा) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना
श्रीनेसनमेह वास्तव्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक लो० सिवरीज समभ्यर्चनया कृत श्री शंभुप्रद्युम्नप्रबन्धे प्रथम खंड ।

२३६६ शान्तिनामचरित्र—अक्षितप्रभसुरि । पत्र सं० १९६ । मा २३×४३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० कास × । से० कास × । अपूर्ण । के सं १ २४ । अ मन्थार ।

विशेष—१९६ से प्रामे के पत्र नहीं हैं ।

०३७० प्रति सं० २ । पत्र सं ३ से १ २ । से कास सं १७१४ पीप बुकी १४ । अपूर्ण । के सं १२२० । ट मन्थार ।

२३७१ शान्तिनामचरित्र—अक्षरक सकलकीर्ति । पत्र सं १९२ । मा १३×२३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० कास × । से० कास सं० १७१६ पीप बुकी २ । अपूर्ण । के सं १२९ । अ मन्थार ।

२३७२ प्रति सं० २ । पत्र सं २२८ । से कास × । के सं ७ २ । अ मन्थार ।

विशेष—तीन प्रकार की सिपिया हैं ।

२३७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं २२१ । से कास सं १५६३ माह बुकी ३ । के सं ७ ३ । अ मन्थार ।

विशेष—सिद्धि बुरजीरामदास सवाई अयनग्रामके वासी मैवाटा का इसमें बड़ी मत्स्यता के मन्दिर लिखी । सिद्धाच्युत संपारामजी दासदा सवाई अयनपुर मध्ये ।

२३७४ प्रति सं० ४ । पत्र सं १८७ । से कास सं १८६४ काकुण बुकी १२ । के सं १४१ । अ मन्थार ।

विशेष—यह प्रति स्वामीरामजी दीवान के मन्दिर की है ।

०३७५ प्रति सं० ५ । पत्र सं १५६ । से कास सं १७६६ कातिक बुकी ११ । के सं १४ । अ मन्थार ।

विशेष—सं १५०३ बैठ बुकी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था ।

२३७६ प्रति सं० ६ । पत्र सं १७ से १२७ । से कास सं १८५५ वैशाख बुकी २ । अपूर्ण । के सं ४९४ । अ मन्थार ।

विशेष—महाराजा प्रतापराज ने सवाई अयनपुर में प्रतिमिति की थी ।

इनके अतिरिक्त अ अ तथा ट मन्थार में एक एक प्रति (के सं १३ ४८६ १६२६) थीर हैं ।

०३७७ शास्त्रिमन्त्रचौपई—सतिसागर । पत्र सं० । मा १ ३×४३ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० कास सं १९७८ प्रामोज बुकी ६ । से कास × । अपूर्ण । के सं २१३४ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रथम पत्र धाबा फटा हुआ है ।

२३७८ प्रति सं० २ । पत्र सं २४ । से कास × । के सं ३६२ । अ मन्थार ।

२३७९ शास्त्रिमन्त्र चौपई— । पत्र सं ३ । मा ८×६ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० कास × । से० कास × । अपूर्ण । के सं २३ ।

विशेष—रचना में ९ पद्य हैं तथा प्रमुख लिखी हुई है । अन्तिम बाठ नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सासरा नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।
अलीइ विघन दुरोहर आपे प्रमानद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४६ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

२३८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—१० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२ शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ज भण्डार ।

२३८५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । अ
भण्डार ।

२३८६. श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओ नमो पार्ष्वनाथाय ।

हेरवक्व किमत्र किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला
कृत्य किं शरजत्मनोक्त मन पार्दतारू रं स्यादिति तात ।
कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्या कला—
माकांशे जयति प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥
यं साहित्यसुधेदुर्नरहरि रल्लालनदन ।
कुस्ते सैशवरा भूषणव्या विदग्धमुखमडणव्याख्या ॥२॥
प्रकारा संतु बहवो विदग्धमुखमडने ।
तथापि मत्कृत भावि मुख्यं भुवरा—भूषणं ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थ परिच्छेद संपूर्ण ।

२३८० श्रीपालचरित्र—श० नेमिबन्धु । पत्र सं० ६८ । भा० १०३×३ ईश्व । ज्ञाना—संस्कृत । विषय-
चरित्र । १ काव्य सं १३८३ । शि० काल सं १९४३ । पूर्ण । शि० सं० २१० । अ नम्बर ।

विशेष—लेखक प्रसिद्ध अपूर्ण है । प्रसिद्धि—

संवत् १९४३ वर्षे आषाढ सुदी ३ शनिवाररे श्रीमूलसंघे संवत्साम्ने बलात्कारनछे सरस्वतीयन्त्रे श्रीकुंज-
कुंजचार्यान्त्रे मठारक श्रीपद्मनंदिवेदात्तत्पट्टे मठारक श्री सुमनसदेवात्तत्पट्टे न श्री जिनबन्धुदेवा तत्पट्टे म० प्रभाकर-
देवा मंडसाचार्य श्री एलकीर्तिदेवा तत्पिप्य म० बुचनकीर्तिदेवा तत्पिप्य म० चर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमंडसाचार्य
विद्यामकीर्तिदेवा तत्पिप्य मंडसाचार्य कठमीर्णदेवा तदन्वये म० सहस्रकीर्तिदेवा तदन्वये मंडसाचार्य मेघचंद तदन्वये
शंभुमंडसाचार्य देवासा वास्तव्ये दण्डा धोने सा लीसा त

२३८८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६९ । शि० काल सं १९४६ । शि० सं १९९ । अ नम्बर ।

२३८९ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४२ । शि० काल सं १९४३ अश्लेख सुदी ३ । शि० सं १९२ । अ
नम्बर ।

विशेष—मन्मथदेव के पूर्णासा नगर में शनिवार शैत्यालय में प्रथम रचना की गई थी । विजयराम ने
तमकपुर (टीडारामसिंह) में अपने पुत्र शि टेकनन्ध के स्वाध्यायार्थ इसकी तीन दिन में प्रतिलिपि की थी ।

यह प्रति पं सुबलाल की है । हरिपुर में यह प्रथम मिसा ऐसा उल्लेख है ।

२३९० प्रति सं० ४ । पत्र सं ३९ । शि० काल सं १९९३ आशोष सुदी ४ । शि० सं १९३ । अ
नम्बर ।

विशेष—कैफ़ी में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९१ प्रति सं० ५ । पत्र सं ४२ से ७६ । शि० काल सं १७९१ सावन सुदी ४ । शि० सं १ ।
अ नम्बर ।

विशेष—दुम्बावती में एत बुधसिंह के छासनकाल में प्रथम की प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९२ प्रति सं० ६ । पत्र सं ६ । शि० काल सं १९३१ कपूरु सुदी १२ । शि० सं ३९ । अ
नम्बर ।

विशेष—सवाई अमपुर में शैतान्धर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी ।

२३९३ प्रति सं० ७ । पत्र सं ३३ । शि० काल सं १९२७ चैत्र सुदी १४ । शि० सं ३२७ । अ
नम्बर ।

विशेष—सवाई अमपुर में पं आपमबास ने कर्मजबार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२३९४ प्रति सं० ८ । पत्र सं ४४ । शि० काल सं १९२६ माह सुदी ८ । शि० सं २ । अ नम्बर ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने अमपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२३९५ प्रति सं० ९ । पत्र सं ३८ । शि० काल सं १९४४ भाद्रवा सुदी ३ । शि० सं २१३९ । अ
नम्बर ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ मण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २३३, २५६) क, छ तथा ब मण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५) और हैं ।

२३६६. श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ५६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल शक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१४ । अ मण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी मारणकचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२ । वे० सं० ४० । छ

मण्डार ।

विशेष—तारगुपुर मे महलाचार्य रत्नकीर्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । ज मण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरंजीलाल मोढ्या ने सं० १६६३ की भादवा बुदी ८ को चढाया था ।

२३६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ (६० से ८८) ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । झ

मण्डार ।

विशेष—पं० हरलाल ने वाम मे प्रतिलिपि की थी ।

२४००. श्रीपालचरित्र । पत्र सं० १२ से ३४ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९३ । अ मण्डार ।

२४०१. श्रीपालचरित्र । पत्र सं० १७ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९६ । अ मण्डार ।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सं० १४४ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—
चरित्र । २० काल सं० १६५१ । भाषा बुदी ८ । ले० काल सं० १९३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । अ मण्डार ।

२४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८९८ । वे० सं० ४२१ । अ मण्डार ।

२४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ से १४४ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४०४ । अपूर्ण । अ

मण्डार ।

विशेष—महात्मा जानीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । दीवान शिबचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था ।

२४०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८८६ पौष बुदी १० । वे० सं० ७६ । ग

मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ आगरे मे भालमगज मे लिखा था ।

२४०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६७ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७१७ । क

मण्डार ।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२४०७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ १ । शै० काल सं० १५२७ मासोत्र बुदी ७ । वै सं ७१६ । अ
नम्बर ।

विशेष—मन्मथराम गोष्ठा के जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १ २ । शै० काल सं० १८६२ मास बुदी २ । वै सं ६६३ । अ
नम्बर ।

२४०९ प्रति सं० ८ । पत्र सं ८३ । शै० काल सं० १७६ पीप बुदी २ । वै सं १७४१ अ
नम्बर ।

विशेष—शुद्ध का साक्ष्य है । हिण्डी में प्रतिनिधि हुई थी । अन्तिम ३ पत्रों में कर्मप्रकृति बर्णन है जिसका
सेखनकाल सं १७६१ मासोत्र बुदी ३३ है । सांगानेर में पुन्नी मयूराम के काहूबीरास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१० प्रति सं० ९ । पत्र सं १३१ । शै० काल सं १८८२ सावन बुदी ३ । वै सं २२८ । अ
नम्बर ।

विशेष—दो प्रतिमों का मिश्रण है ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ नम्बर में ५ प्रतिमा (वै० सं १ ७७ ४१८) अ नम्बर में एक प्रति
(वै सं १ ४) अ नम्बर में तीन प्रतिमा (वै सं ७१३, ७१८ ७२) अ, अ धीर ट नम्बर में एक एक
प्रति (वै सं २२३, २२६ और १९१३) धीर हैं ।

२४११ श्रीपादचरित्र—। पत्र सं २३ । मा ११३ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी मध । विषय—चरित्र ।
र काल × । शै० काल सं १८६१ । पूर्ण । वै सं १ ३ । अ नम्बर ।

विशेष—मन्मथराम गोष्ठा के नामों की बहूने लिखवाकर विजैरामजी पांड्या के नम्बर में बिटाज
नाम किया ।

२४१२ प्रति सं० २ । पत्र सं ४२ । शै० काल × । वै सं ७ । अ नम्बर ।

२४१३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४२ । शै० काल सं १६२६ पीप बुदी ८ । वै सं ८ । अ
नम्बर ।

२४१४ प्रति सं० ४ । पत्र सं ९१ । शै० काल सं १६३ फाल्गु बुदी ६ । वै सं ८२ । अ
नम्बर ।

२४१५ प्रति सं० ५ । पत्र सं ४९ । शै० काल सं १६३४ फाल्गु बुदी ११ । वै सं २३६ । अ
नम्बर ।

विशेष—मन्मथराम पाण्ड्यावास के प्रतिनिधि करवायी थी ।

२४१६ प्रति सं० ६ । पत्र सं २३ । शै० काल × । वै सं १७४ । अ नम्बर ।

२४१७ प्रति सं० ७ । पत्र सं ३३ । शै० काल सं १६३६ । वै सं ४४ । अ नम्बर ।

[कान्य एवं चरित्र]

२४१८ श्रीपालचरित्र ... । पत्र सं० ३४ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-चरित्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३९ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६८४ । च भण्डार ।

२४२१. श्रेणिकचरित्र... । पत्र सं० २७ से ४८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७३२ । छ भण्डार ।

२४२२ श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ४९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३७ कार्तिक सुदी । अपूर्णा । वे० सं० २७ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २८ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

२४२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० २९ । छ भण्डार ।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

विशेष—टोक में प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम मविष्यत् पद्मनाभपुराण भी है

२४२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११९ । ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० १९४ । अ भण्डार ।

२४२८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १९२९ । वे० सं० १०५ । घ भण्डार ।

२४२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ७३५ । छ भण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२४३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८६४ ग्रापाठ सुदी १० । वे० सं० ३५२ । च भण्डार ।

२४३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८६१ थावण बुदी १ । वे० सं० ३५३ । अ भण्डार ।

विशेष—अजपुर में उदयचंद सुहाड़िया ने प्रतिनिधि भी थी ।

२४३२. भोजिकचरित्र—महारक विजयकीर्ति । पत्र सं १२६ । भा० १०×४३ इंच । भावा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । २० काल सं० १८२० फागुण सुबी ७ । से० काल सं १९०१ पीप सुबी १ । पूर्ण । वै सं ४१७ । छ मप्यार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

विजयकीर्ति महारक नाम इह भावा कीर्ती परमात्तु ।
संबत मठारास भीस फागुण सुबी साते सु बभीस ॥
बुजवार इह पुरख भई, स्वाति गजन कृश जोय सुबई ।
पोत पाटणी है सुनिराम्य, विजयकीर्ति महारक नाम ॥
ठसु पटवाटी भी सुनिबामि बडभस्पाससु मोत पिझाणि ।
बिसौकेन्द्रकीर्तिरविराज निरप्रति साक्य घातम काव ॥
विजयसुनि शिपि बुठिब सुजसु भी बैराब बेश तसु भसुण ।
बर्मचन्द्र महारक नाम, ठोस्वा मोठ बरष्यो घमिराम ।
बसकबैड सिबासल मही कारंजय पट सीमा लही ॥

२४३३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ७६ । से काल सं १८८१ ज्येष्ठ सुबी २ । वै सं ८१ । ग

मप्यार ।

विशेष—महारका भी बर्मासिंहजी के शासनकाल में अजपुर में सवाईराम जीवा ने प्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिनिधि भी थी । भोजिनराम बीबरी पांड्या ने ग्रन्थ लिखवाकर बीबरीयों के चैत्यालय में बढ़ाया ।

२४३४ प्रति सं० ३ । पत्र सं ८६ । से काल × । वै सं १९१ । छ मप्यार ।

२४३५ भोजिकचरित्रभाषा— । पत्र सं० ३३ । भा ११×४३ इंच । भावा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २ काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं ७१३ । छ मप्यार ।

ढाल पचतालीसमी गुरुवानी—

सवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ॥ सुगुण नर सांभलो ॥
 भेदपाठ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ॥ ५ ॥ सुगुण०
 गढ जालोरड युग तस्यु लिखीउए अधिकार ।
 अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ॥ ६ ॥ सु०
 भाद्रव मास महिमा वणी पूरण करयो विचार ।
 भक्क नर सांभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ॥ ७ ॥ सु०
 लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
 गुरु भांभरण श्रुत केवली थिवर गुरो चौसाल ॥ ८ ॥ सु०
 समरथथिवर महा मुनी सुदर रूप उदार ।
 तत शिष्य भाव धरी भणइ सुगुरु तरणइ आधार ॥ ९ ॥ सु०
 उछौ अधिक्यो कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
 मिथ्या दु कृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ॥ १० ॥ सु०
 सजन जन नर नारि जे सभली लहइ उल्हास ।
 नरनारी धर्मातिमा पडित म करो को हास ॥ ११ ॥ सु०
 दुरजन नड न मुहाबई नही आवइ कहे दाय ।
 माखी चदन नादरइ असुचितिहा चलि जाय ॥ १२ ॥ सु०
 प्यारो लागइ सतनइ पामर चित संतोष ।
 ढाल भली २ सभली चिते थी ढाल रोप ॥ १२ ॥ सु०
 श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।
 हीर मुनि आसीस घइ हो ज्यो कोडि कल्याण ॥ १४ ॥ सु०
 सरस ढाल सरसी कथा सरसी सहू अधिकार ।
 हीर मुनि गुरु नाम धी आणद हरष उदार ॥ १५ ॥ सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्ण । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोम-
 षासरे लिखत श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदेवासी लिपिकृतं
 मुनिसावल आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभ भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरिय—प० नरसेन । पत्र स० ४७ । मा० ६३×४३ इ च । भाषा—मपन्न श ।
 विषय—राजा भोपाल का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स०
 ४१० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

विशेष—बनपुर में सद्यचंद सुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी ।

२४३२. श्रेष्ठिकचरित्र—मट्टारक विजयकीर्ति । पत्र सं १२६ । मा १ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । १ काष्ठ सं० १८२० फरगुण सुदी ७ । ने काष्ठ सं १२०३ पाँच सुदी ३ । पूर्ण । के सं ४३७ ।
अ मन्डार ।

विशेष—मन्वकार परिचय—

विजयकीर्ति मट्टारक नाम हूँ भाषा कीबी परमाणु ।
संबत मकराक्ष बीस फरगुण सुदी सातै सु जपीस ॥
कुम्भार हूँ प्ररुण मई, त्वाँति नमक हूँ जोक सुमई ।
भोत पाटणी हूँ मुनिराय विजयकीर्ति मट्टारक नाम ॥
तसु फट्ठारी भी मुनिजानि बडजत्पातसु भोत पिछाणि ।
दिसीकेत्रकीर्तिरिदिघञ्ज निवप्रति साक्य मात्तम काज ॥
विजयमुनि धिपि कुमिय सुजाण भी बैराज भेण तसु भासु ।
वर्मकन्ध मट्टारक नाम, कोस्मा भोत बरप्पो धमिराम ।
नमस्सैव सिवात्तण मही कार्जय पट सोभा मही ॥

२४३३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ७९ । ने काष्ठ सं १८८३ ज्येष्ठ सुदी २ । के सं ४३८ । अ
मन्डार ।

विशेष—महायज्जी भी जयसिंहजी के शासनकाल में बनपुर में सवाईराम बोधा ने प्राणिकान्त चोत्पातम ने
प्रतिलिपि की थी । मोहनराम जीवपी बीकानेर ने मन्व लिखवाकर बीचरियों के चोत्पातम में बढ़ाया ।

२४३४ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४९ । ने काष्ठ × । के सं १९३ । अ मन्डार ।

२४३५ श्रेष्ठिकचरित्रभाषा— । पत्र सं० ३३ । मा ११ × ३ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । १० काष्ठ × । ने काष्ठ × । अपूर्ण । के सं ७३३ । अ मन्डार ।

२४३६ प्रति सं० २ । पत्र सं ३३ के १२ । ने काष्ठ × । अपूर्ण । के सं ७३४ । अ मन्डार ।

२४३७ समवज्जियाणाहचरित्र (समवनाम चरित्र) तैजपाल । पत्र सं १२ । मा १ × ४ इंच ।
भाषा—मगध भा । विषय—चरित्र । १ काष्ठ × । ने काष्ठ × । के सं ३९३ । अ मन्डार ।

२४३८ सागरपूचचरित्र—हीरकवि । पत्र सं १४ से २ । मा १ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । १ काष्ठ सं १७२४ भास्वी सुदी १ । ने काष्ठ सं १७२७ कार्तिक सुदी १ । अपूर्ण । के सं
४३३ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १७ पत्र नहीं हैं ।

ढाल पचतालीसमी गुरुवानी—

सवत् वेद युग जासीय मुनि शशि वर्ष उदार ॥ सुगुण नर सांभलो ॥
 मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ॥ ५ ॥ सुगुण०
 गढ जालोरइ युग तस्यु लिखीउए अधिकार ।
 अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ॥ ६ ॥ सु०
 भाद्रव मास महिमा घणी पूरण करयो विचार ।
 भविक नर सांभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ॥ ७ ॥ सु०
 लू कइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
 गुरु भाभरण श्रुत केवली थिवर गुणे चोसाल ॥ ८ ॥ सु०
 समरथथिवर महा मुनी सुदर रूप उदार ।
 तत शिष्य भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ॥ ९ ॥ सु०
 उछौ अधिक्यो कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
 मिथ्या दु कृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ॥ १० ॥ सु०
 सजन जन नर नारि जे सभली लहइ उल्हास ।
 नरनारी धर्मातिमा पडित म करो को हास ॥ ११ ॥ सु०
 दुरजन नइ न सुहाबई नही आवइ कहे दाय ।
 माखी चदन नादरइ असुचितिहा चलि जाय ॥ १२ ॥ सु०
 प्यारो लागइ सतनइ पामर चित सतोष ।
 ढाल भली २ सभली चिते थी ढाल रोष ॥ १२ ॥ सु०
 थी गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।
 हीर मुनि आसीस छइ हो ज्यो कोडि कल्याण ॥ १४ ॥ सु०
 सरस ढाल सरसी कथा सरसो सहू अधिकार ।
 हीर मुनि गुरु नाम धी आणइ हरष उदार ॥ १५ ॥ सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र सपूर्ण । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोम-
 षासरे लिखत श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदत्तेवासी लिपिकृतं
 मुनिसावल आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभ भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरिय—प० नरसेन । पत्र स० ४७ । मा० ६१×४१ इ च । भाषा—अपभ्रंश ।
 विषय—राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६१५ कार्तिक मुदी ६ । पूर्ण । वे० स०
 ४१० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४० सीताचरित्र—कवि रामचन्द्र (बासक) । पत्र सं १० । मा १२×८ इञ्च । भाषा—

हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र काल स १७१३ मंगसिर सुबि ५ । से काल × । पूर्ण । वै सं ७ ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बासक के नाम से विख्यात है ।

२४४१ प्रति सं २ । पत्र सं १८ । से काल × । वै सं ११ । ग मन्थार ।

२४४२ प्रति सं ३ । पत्र सं १९९ । से काल सं १८८४ कार्तिक सुबि १ । वै सं ७११ । ग मन्थार ।

विशेष—प्रति सभित्व है ।

२४४३ सुकुमासचरित्र—भीषण । पत्र सं ९५ । मा १ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—मगध वा । विषय—सुकुमास मुनि का भीषण वर्णन । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं २८८ । ल मन्थार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४ सुकुमासचरित्र—म० सकलकीर्ति । पत्र सं ४४ । मा १ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र काल × । से काल सं १९७ कार्तिक सुबि ८ । पूर्ण । वै सं १४ । ल मन्थार ।

विशेष—असंस्कृत निम्न प्रकार है—

संवत् १९७ वाके १५२७ प्रवर्तमाने महासायन्त्रप्रदकार्तिकमासे सुकुमासो महाम्नां त्रिषी सोमवासरे नागपुरमण्ड्ये श्रीचन्द्रप्रभवेत्यात्मने श्रीमूसर्षणे बलप्रकारमयी सरस्वतीगण्ड्ये श्रीकुंबकुंवाचार्यम्बदे अष्टारकभीषणमन्त्रिदेवा तत्पट्ट म श्रीगुणचंद्रदेवा तत्पट्ट म श्रीबिजयचंद्रदेवा तत्पट्ट म श्री प्रभाचंद्रदेवा मंडलाचार्य श्रीगुणमकीर्तिदेवा तत्पट्ट म श्रीचर्मकीर्तिदेवा तत्पट्ट म श्रीसहस्रकीर्तिदेवा तत्पट्ट मंडलाचार्य श्रीमैमचंद्रदेवा तत्पट्ट मंडलाचार्य श्रीपसकीर्ति तत्पट्टमाय लक्ष्मणनाम्बदे श्रीसागोत्रे सा सोनू तत्त्वभार्या सोमभी तयी पुत्र सा फलदू तत्त्वभार्या पूजामदे तयो पुत्रा पद् । प्रथम पुत्र सा नरसिंह तत्त्वभार्या नरसिंहदे । द्वितीयपुत्र सा चर्षसिंह तत्त्वभार्या बहुरंमदे तयो पुत्र सा अक्षुर तत्त्वभार्या अक्षुरदे । तृतीयपुत्र सा शेटा तत्त्वभार्या शेटलदे तयोः पुत्री द्वी प्रथमपुत्र सा रत्नमल तत्त्वभार्या रत्नसुखे तयो पुत्री द्वी प्र द्वि कनरा द्वितीय पुत्र चि भनेज । द्वितीय पुत्र सा पट्ट तत्त्वभार्या पाटमदे तयोः पुत्री द्वी प्रथम पुत्र चि मातृ द्वि पुत्र चि उदयसिंह । चतुर्थ पुत्र सा क्पा तत्त्वभार्या क्पमदे । पंचमपुत्र सा तेजा तत्त्वभार्या तेजसदे । तयो पुत्री द्वी प्रथमपुत्र चि बहू द्वितीयपुत्र सुसदान । षष्ठमपुत्र सा भीवा तत्त्वभार्या इ प्रथमा मातृमदे द्वितीय श्रीबलदे । तयो पुत्रा-श्ववारः प्रथम पुत्र सा नागिण तत्त्वभार्या इ प्रथमा नागिणदे द्वितीया गौसारे तयोः पुत्र चि उदयसिंह । साः श्रीवा । द्वितीय पुत्र सा हेमा तत्त्वभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि कूठा चतुर्थ पुत्र चि पुरख । एतेषामण्ड्ये साः श्रीवा तत्त्वभार्या साध्वी श्रीबसदे तयेषं मातृ सुकुमासचरित्रास्व ज्ञानावरणो कर्मक्षयमिमितं लिखाय सत्यायाम प्रवर्त ।

२४४५ प्रति सं ० । पत्र सं ४८ । ल काल सं १७८३ । वै सं १२३ । ल मन्थार ।

४४५ प्रति सं ३ । पत्र सं ४२ । से काल सं १८९४ ज्येष्ठ सुबि १४ । वै सं ४१२ । ल मन्थार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४४७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३२ । छ मण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२४४८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ३४ । छ मण्डार ।

विशेष—सागानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ५५ । वे० सं० ८६ । व्य

मण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्रजी के शिष्य मेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ, ङ, छ, झ, ऋ तथा व्य मण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६५, ३३, २, ३३४)

और हैं ।

२४५० सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी । पत्र सं० १४३ । आ० १२३×४३ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १९१८ सावन सुदी ७ । ले० काल सं० १९३७ चैत्र सुदी १४ ।

पूर्णा । वे० सं० ८०७ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वचनिका में हैं ।

२४५१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १९६० । वे० सं० ८६१ । ङ मण्डार ।

२४५२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ८६४ । ड मण्डार ।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगवाल । पत्र सं० १५३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । २० काल सं० १९१८ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी १५ । पूर्णा । वे० सं० ७२० । च मण्डार ।

२४५४ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ७२१ । च मण्डार ।

२४५५ सुकुमालचरित्र । पत्र सं० ३६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १९३३ । पूर्णा । वे० सं० ८६२ । ङ मण्डार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है ।

२४५६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० में ७६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८६० । ड मण्डार ।

२४५७ सुखनिधान—कवि जगन्नाथ । पत्र सं० ५१ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७०० आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७१४ । पूर्णा । वे० सं० १९६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १७१४ अस्तुन सुधी १० मोजाबाद (मोयमाबाद) मध्ये श्री प्राचीश्वर भैर्यालये सिद्धिंतं पं
बामोदरेण ।

२४५८ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । से काल स १८३ कार्तिक सुदी १३ । वै सं २१६ । अ
मन्थार ।

२४५९ सुदर्शनचरित्र—म० सकलकोटि । पत्र सं ६ । घा ११×४३ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—चरित्र । ८ काल × । से काल सं १७१३ । अपूर्णा । वै सं ५ । अ मन्थार ।

विशेष—२१ से ५० तक पत्र नहीं हैं ।

प्रसक्ति विम्ब प्रकार है—

संवत् १७७५ वर्षे मात्र शुक्लकालस्पाद्योमे पुष्करजातीयेन मिश्रजयरामेणोप सुदर्शनचरित्र लेखकं पाठ्यबोः
शुभं श्रुत्वा ।

२४६० प्रति स० २ । पत्र सं २ से १४ । से० काल × । अपूर्णा । वै सं ४१५ । अ मन्थार ।

२४६१ प्रति स० ३ । पत्र सं २ से ४१ । से काल × । अपूर्णा । वै सं ४१६ । अ मन्थार ।

२४६२ प्रति स० ४ । पत्र सं ३ । से काल × । वै सं ४२ । अ मन्थार ।

२४६३ सुदर्शनचरित्र—श्री मेमिबुध । पत्र सं १२ । घा ११×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । ८ काल × । से काल × । पूर्णा । वै सं १२ । अ मन्थार ।

२४६४ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । से काल × । वै सं ४ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रसक्ति अपूर्णा है । पत्र ३६ से ३८ तक नहीं लिखे हुए हैं ।

४६३ प्रति स० ३ । पत्र सं ३८ । से काल सं १६३२ फागुण सुदी ११ । वै सं २२२ । अ
मन्थार ।

विशेष—साहू मगोरथ ने मुकुंददास से प्रतिनिधि कराई थी ।

नीचे— सं १९२८ में अयाद सुधी २ को पं सुमतीदास के बळार्षी की गई ।

२४६६ प्रति स० ४ । पत्र सं १० । से काल सं १०३ वैश्व सुदी ६ । वै सं २२ । अ
मन्थार ।

विशेष—राजमन्त्र ने अपने विषय सेवकदास के बळार्षी लिखाई ।

२४६७ प्रति स० ५ । पत्र सं १७ । से काल × । वै सं १३३ । अ मन्थार ।

२४६८ प्रति स० ६ । पत्र सं ७१ । से काल सं १६६ फागुण सुधी २ । वै सं २१६८ । अ
मन्थार ।

विशेष—लेखक प्रसक्ति विलुप्त है ।

काव्य एवं चरित्र]

२४६६ सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि । पत्र स० २७ से ३६ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ४१३ । च भण्डार । ✓

२४७१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १६६५ भाद्रवा बुदी ११ । वे० स० ४८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरेति श्रीपत्निति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द सवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ गुरु-वामरे कृष्णरक्षे अर्गलापुरदुर्ग शुभस्थाने अश्वरतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमत्साहिसलेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत् काष्ठासधे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवणे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्त्तिना पठनार्थं लिखित ।

२४७३. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वे० स० ३ । भ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भ० जिनचन्द्रदेव प्रमाचन्द्रदेव आदि शिष्यो ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५. सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ४ से ५६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । अ भण्डार ।

२४७६ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५६ । छ भण्डार ।

२४७८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । आ० १३×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । छ भण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र स० ३७ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभौम चक्रवर्त्ति का जीवन चरित्र । २० काल स० १६८३ भाद्रवा सुदी ५ । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । प० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२४८० प्रति स० २ । पत्र सं २४ । से काम सं १८४ बैदास गुरी १ । से सं १३१ । अ
मण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के सिये टोकराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१ हनुमच्छरित्र—अ० अक्षित । पत्र सं १२४ । पृ १ ३/४२ इत्य । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । र काम ४ । से काम सं १६८२ बैदास गुरी ११ । पूर्ण । से सं ३ । अ मण्डार ।

विशेष—भृगुच्छरित्रो में श्री नेमिचन्द्राचार्य में पाण्य रचना हुई ।

प्रमास्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८२ वर्षे बैदासनाम बाहुमपक्षे एकास्मिन्पत्रिकी काम्यवारे । सिखापितं पंडित श्री रामस इदं
नाम्नं लिखितं शोषा मेसक प्राय बैदासमध्ये । यस्याप्रत्य २ ।

२४८२ प्रति स० २ । पत्र सं ८३ । से काम सं १६४४ बैदास गुरी ३ । से सं १४६ । अ
मण्डार ।

२४८३ प्रति स० ३ । पत्र सं ६३ । से काम सं १८२६ । से सं ८४८ । अ मण्डार ।

२४८४ प्रति स० ४ । पत्र सं ६२ । से काम सं १९२८ बैदास गुरी ११ । से सं ८४६ । अ
मण्डार ।

२४८५ प्रति स० ५ । पत्र सं २१ । से काम सं १८ ७ प्येठ गुरी ४ । से सं २४१ । अ
मण्डार ।

विशेष—मुनशीशास भोतीराम मगवान से पंडित उदयराम के पठार्थ कामादेह्य (इच्छादक) से प्रति
लिपि करवायी थी ।

२४८६ प्रति स० ६ । पत्र सं ८२ । से काम सं १८८२ । से सं ६९ । अ मण्डार ।

२४८७ प्रति स० ७ । पत्र सं ११२ । से काम सं १३८६ । से सं १३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्रमाणित नहीं है ।

४८८ प्रति स० ८ । पत्र सं ३१ । से काम ४ । पूर्ण । से सं ४४३ । अ मण्डार ।

विशेष—अति प्राचीन है ।

२ ८८ प्रति स० ९ । पत्र सं ८६ । से काम ४ । से सं ५ । अ मण्डार ।

विशेष—अति प्राचीन है ।

२४९० प्रति स० १० । पत्र सं ६७ । से काम सं १६३३ चरित्र गुरी ११ । से सं १८६ ।

अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्रमाणित नहीं है ।

भृगुच्छरित्र पठार्थ की संप्रदान से संस्कृत चरित्र नाम का नाम का नाम थी चरित्र के अंत में होने वाली
कई महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख है ।

२४६१ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० स० ३४७ ।
ब भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लोहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १६७४ । वे० स० ५१२ । ब भण्डार ।

२४६३ प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल स० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे०
सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके अतिरिक्त भू और ब भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १७७ तथा ४७३) और है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल स० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल स० १८२४ । वे० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल स० १८८३ सावण बुदी ६ । वे० स० ६७ । ग
भण्डार ।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वे० स० ६०२ । ड
भण्डार ।

विशेष—स० १६५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी बंकी बालो के बडो पर संघीजी के
मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल स० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वे० स० ६०३ । ड
भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम मे घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० स० १६६ । छ भण्डार ।

२५०० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२५०१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२. होलीरेणुकाचरित्र—प० जिनवास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल स० १६०८ । ले० काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अत महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्रीमते स्वातिनाथाय । संवत् १९ ८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ सुक्यासरे हस्तनक्षत्रे श्री
 रणस्तीर्णस्य शास्त्रान्तरे शेरपुरनाम्नि श्रीस्वातिनाथविरचित्यात्मने श्री भक्तमसाह साहिभासम श्रीसस्त्रेयसाहुरात्म्यप्रवर्त
 माने श्रीमूलसंभे बलास्कारमणे मंचाम्नाये सरस्वतीगण्ड्ये श्रीकुंडकुंडाचार्यात्मने म श्रीपद्मविदेवास्तत्पट्टे म श्रीसुमचन्द्र
 देवास्तत्पट्टे न श्रीविनयप्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पिच्छ्ये म श्रीधर्मचंद्रदेवास्तत्पाम्नायेसंज्ञितवात्मान्यये सेठीयोगे
 सा सेठ्ठु तम्भार्या कुमा तत्पुत्रात्मनः प्र सा. पञ्चमण द्वि सा श्रीका तृतीय सा करमा । सा पञ्चमण भार्या श्रीसा
 तत्पुत्र सा रामोदर तम्भार्ये इ प्र सेपी द्वि श्रीसादे तत्पुत्रात्मनः प्रथम सा. मेमा द्वितीय सा बोधु तृतीय सा तेवा ।
 सा मेमा भार्या चतुरा । सा बोधु भार्या सचीरा सा श्रीका भार्या गौरा तत्पुत्र सा हेमा तम्भार्ये इ प्रथम श्रीरणि
 द्वितीय सुहामरे तत्पुत्रात्मनः प्रथम सा श्रीकु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा भोवस्तु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्री
 द्वी प्र सा धर्मदास द्वि सा असर्वत । सा धर्मदास भार्या सिगाररे असर्वत भार्या असमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास
 एतेर्योमध्ये विनयुवापुरंदरेण उत्तमगुणमणसाकृतगणेशेण सा कमनित्मध्ये देनेरंसास्त्रसिद्धात्म्य भाचार्ये श्री सप्तिसक्तीर्ये
 ष्टापितं ब्रह्मसंज्ञासतोद्यपचार्ये ।

२२०३. प्रति स० २ । पत्र सं २ । से कास × । के सं ३१ । अ म्भार ।

२२०४ प्रति स० ३ । पत्र सं २४ । से कास सं १७२६ माघ सुदी ७ । के सं ४२१ । अ
 म्भार ।

विशेष—एह प्रति पं राममल्ल के द्वारा बुन्दारतो (बुन्दी) में स्वपठनार्थ चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई
 थी । कवि विनवास रणभंभीरयक के समय नवलसपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के स्वातिनाथ चैत्यालय में
 सं १९ ८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२२०५ प्रति स० ४ । पत्र सं १ से ३३ । से कास × । मपूर्णा । के सं २१७१ । अ म्भार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२५०६ अकलंकदेवकथा । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

२५०७ अक्षयनिम्बिमुष्टिकाविधानव्रतकथा । पत्र सं० ६ । आ० २२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८३४ । ट भण्डार ।

२५०८ अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द्र । पत्र सं० ४२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १८०५ माह सुदी ५ । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६६८ ।

अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग—

सवत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पाचा गुरुवार ।

भरण्य मुहुरत सुभ जोग में जी हो कथण कह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥

श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम ।

श्री सीध दोलती दो घणी जी हो सीध की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥

तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार ।

बेटा बेटो पोतरा जी हो अनधन अधीक अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥

श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ ।

था रावत मुराणा रणोखर दीपता जी हो ओर वाण्या हेठ ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७२॥

श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वाखारण ।

पाट वणार आतर जी हो गुण सागर गुण खारण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥

भोभागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कल्याण ।

परवारा पूरो सही जी हो सकल वाता सु वीघारण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥

श्री बीजयेगछै गीडवोघणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट ।

श्री तीलक सुरद वीर जीवज्यो जी हो सहसगुणो का धाटे ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥

साध सकल मे सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द्र नुसीम ।

अठारा नता चौथी कथी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

इती श्री धर्मउपदेस अठारा नाता चरीत्र नपूरा समाप्ता ॥

सिंहबु नेसी सुवकुबर की मारज्या की भी १ ८ भी भी भी भागाबी तत् सकली जी भी भी डमरवा
की रामकुबर जी । भी मेवकुबर की भी बंदनछात्री की पुस्हबी भणता दुणता संपूर्ण ।

संबत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मित्ती मासोब (कासी) बही ८ में दिन बार सोमरे । ग्राम सप्रामगडमध्ये
संपूर्ण बोमासो तीजो कीजो ठाणा ६॥ की जो जो पही ससीइ छ भी । भी भी १ ८ भी भी मासख्या जी क प्रसाद
सजेइ छ सेवुसी ॥ भी भी मासख्या जी बाबबाने मरण । मारका जी बाबबाल मरण ठाणा ॥ ६ ॥

२४०९ अनन्तचतुर्दशी कथा—महा ज्ञानसागर । पत्र सं १२ । मा १ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । र कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ४२३ । अ मन्डार ।

२४१० अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्ति । पत्र सं ५ । मा ११ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।
विषय—कथा । र कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ३ । अ मन्डार ।

२४११ अनन्तचतुर्दशीकथा— । पत्र सं ३ । मा ९ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
र कास × । से कास × । पूर्ण । के सं २३ । अ मन्डार ।

२४१२ अनन्तव्रतविधानकथा—भद्रकीर्ति । पत्र सं ६ । मा १२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । र कास × । से कास × । पूर्ण । के सं २३८ । ट मन्डार ।

२४१३ अनन्तव्रतकथा—भुतसागर । पत्र सं ७ । मा १ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । र कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ६ । अ मन्डार ।

विषय—संस्कृत पद्यों के हिन्दी अर्थ भी बिये हुये हैं ।

इनके प्रतिरिक्त ग मन्डार में १ प्रति (के सं २) अ मन्डार में ४ प्रतिमां (के सं ८, १,
११) छ मन्डार में १ प्रति (के सं ७४) भीर हैं ।

२४१४ अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मानभि । पत्र सं ५ । मा ११ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । र कास × । से कास सं १७८२ सावन सुदी १ । के सं ७४ । छ मन्डार ।

२४१५ अनन्तव्रतकथा— । पत्र सं ४ । मा ७ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र
कास × । से कास × । अपूर्ण । के सं ७ । अ मन्डार ।

४१६ प्रति सं० ७ । पत्र सं २ । से कास × । अपूर्ण । के सं २१८ । ट मन्डार ।

२४१७ अनन्तव्रतकथा— । पत्र सं १ । मा ६ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैमिन्तर)
र कास × । से कास सं १८३८ माघा सुदी ७ । के सं १३७ । छ मन्डार ।

२४१८ अनन्तव्रतकथा—सुराक्षबन्ध । पत्र सं ५ । मा १ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । र कास × । से कास सं १८३७ माघा सुदी ३ । पूर्ण । के सं ११६ । अ मन्डार ।

२५१६. अंजनचोरकथा पत्र सं० ६ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९१४ । ट भण्डार ।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य पत्र सं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४९ । अ भण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१ अष्टागसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्ति । पत्र सं० २ मे ३९ । आ० ७३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नहीं हैं । आठो अङ्गो की अलग २ कथायें हैं ।

२५२२ अष्टागोपाख्यान—पं० मेधावी । पत्र सं० २८ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

२५२३ अष्टाहिकाकथा—भ० शुभचद्र । पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३) ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० सं० १५, १६, १७, १८, १९, २०) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५२४ अष्टाहिकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १९२२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रो के चारो ओर बेल बनी हुई है ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २७, २८, २९, ७९३) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ४) ङ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ५०९, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७९) और हैं ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है ।

२५२५. अष्टाहिकाकौमुदी । पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२५२६ अष्टाहिकाव्रतकथा । पत्र सं० ४३ । आ० ९×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४५) की और है ।

२५२७ अष्टाहिकाव्रतकथासमूह—गुणचन्द्रसूरि । पत्र सं १४ । भा० १३×१३ इंच । मापा-संस्कृत । विषय—कथा । १ काल × । से० काल × । पूर्ण । वे सं ७२ । छ मण्डार ।

२५२८ अशोकरोहिणीकथा—भुवसागर । पत्र सं १ । भा १ ३×२ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । से० काल सं १८१४ । पूर्ण । वे सं ३५ । छ मण्डार ।

२५२९ अशोकरोहिणीव्रतकथा । पत्र सं १८ । भा १ ३×२ इंच । मापा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । १ काल × । से० काल × । पूर्ण । वे सं ३६ । छ मण्डार ।

२५३० अशोकरोहिणीव्रतकथा । पत्र सं० १ । भा ५३×६ इंच । मापा—हिन्दी गद्य । १ काल सं १७८४ पीठ कुटी ११ । पूर्ण । वे सं २८१ । छ मण्डार ।

२५३१ आकाशपञ्चमीव्रतकथा—भुवसागर । पत्र सं १ । भा ११३×६३ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । से० काल सं ११० मन्थण सुवी १३ । पूर्ण । वे सं ५१ । छ मण्डार ।

२५३२ आकाशपञ्चमीकथा । पत्र सं ६ से २१ । भा १ ×४ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । १ काल × । से० काल × । अपूर्ण । वे सं ३ । छ मण्डार ।

२५३३ आराधनाकथाकाव्य । पत्र सं ११८ से ११७ । भा १२×३ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । १ काल × । से० काल × । अपूर्ण । वे सं ११७३ । छ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में १ प्रति (वे सं १७) तथा छ मण्डार में १ प्रति (वे सं २१७४) खोर है तथा बीनो ही अपूर्ण है ।

२५३४ आराधनाकथाकोश । पत्र सं १४४ । भा १ ३×३ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । से० काल × । अपूर्ण । वे सं २५३ । छ मण्डार ।

विशेष—८४वीं कथा तक पूर्ण है । प्रत्येक कथा का निम्न परिचय दिया है ।

श्री मूससिने वरमास्तीये नन्द्ये वसन्तप्रत्ययेति रन्द्ये ।
 श्रीकुरुकुंदास्वपुनीप्रवसे जार्त्त प्रभाषप्रमहास्तीन्द्रः ॥३॥
 देवैर्ब्रह्मर्षिर्ब्रह्मर्षितेन तेन प्रभाषप्रपुनीस्वरेण ।
 धनुषार्थं रचित सुवाग्दे आराधनासारदवाप्रबन्ध ॥६॥
 तेन कमेदीव नया स्वरास्या रसोकैः प्रसिद्धैश्चविषयवते स ।
 मार्गेण किं भागुकरकामे स्वलीसया मण्डित सर्वतोक् ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है ।

२५३५ आराधनासारप्रबंध—प्रभाषप्र । पत्र सं १५१ । भा ११×४ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । १ काल × । से० काल × । अपूर्ण । वे सं २६२ । छ मण्डार ।

विशेष—२६ से भागे तथा पीठ में भी कई पत्र गड़ी हैं ।

२५३६. आरामशोभाकथा ... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ मण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें हैं ।

प्रारम्भ—

अन्यदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे
समवासरदुद्यानि भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥
सद्धर्ममूलसम्यक्त्व नैर्मल्यकरणी सदा ।
यतध्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपेर्षदि ॥२॥
देवपूजादिश्रीराज्यसपद सुरसपद ।
निर्वाणकमलाचापि लभते नियत जन ॥३॥

अन्तिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्य नाम्ना मलयसुन्दरे ।
क्षिपामि सफल तावत्करिष्यामि निर्जं जनु ॥७५॥
सूरिं नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजागजे ।
आरामशोभयायुक्ते राजान्नतमुपाददे ॥७६॥
अधीत सर्वसिद्धात संविग्नगुणसंयुत ।
एव संस्थापयामासे मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥
गीतार्थायै तथारामशोभायै गुणभूमये ।
प्रवृत्तिनीपद प्रादात् गुह्यस्तद्गुणैरजित ॥७८॥
सबोध्य भविकात् सूरिं कृत्वा तैरनशन तथा ।
विपद्यद्वावपि स्वर्गसपद प्रापतुर्वरं ॥७९॥
ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान् ।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वतीं सिद्धिमेष्यत ॥८०॥
एव भोस्तीर्थकृद्भक्ते फलमाकर्ष सुदर ।
कार्यस्तत्करणेपन्नो युष्मासि. प्रमदात्सदा ॥८१॥

॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ॥

संस्कृत पद्य सख्या २८१ है ।

२५३७. उपागललितत्रतकथा ... । पत्र सं० १४ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा (जैनैतर) २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२३ । अ मण्डार ।

२५३८ अक्षयवधकथा—अभयचन्द्रगण्डि । पत्र सं ४ । मा १ × ४२ इ च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—कथा । र काल × । से काल सं १६२२ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वै सं ८४ । अ मण्डार ।

विलेप—भाग्यवदराजगुस्ता सीसेण ममयर्चयपण्डित्य माह्वण्यस्त्रपुत्रासं महात्मिन् ध्यारपनरसए ॥१२॥

इति रिणु सर्गमे छ ॥१॥

श्री श्री प श्री श्री प्राणविक्रम मुनिभिर्लेखि । श्री किरोरमध्ये संवत् १६२२ वर्षे जैठ वदि १ दिने ।

२५३९ श्रीपद्मानकथा—अ० नेमिदत्त । पत्र सं ६ । मा १२ × ६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २ ८१ । ट मण्डार ।

विलेप—२ से २ तक पत्र नहीं है ।

२५४० कठियारकानडरीचौपई—मानसागर । पत्र सं १४ । मा १ × ४२ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । र काल सं १७४७ । से काल × । पूर्ण । वै सं १ ३ । अ मण्डार ।

विलेप—प्रादि भाग ।

श्री पुष्पमोक्षम- बाल पंचूहीप मन्दार एहमी प्रथम—

मुनिवर मानसुहृस्तिस्मिन् एक प्रथमरह मयह उबैली प्राणिवारे ।

चरण करण इतवार पुणमणि प्राणर बहु परिवारे परिवस्यए ॥१॥

वन बाड़ी विभ्राम लेह तिहां रह्या कीह मुनि मगर पठाबिया ए ।

बानक मांगण काज मुनिवर मानहुता मज्जामह करि प्राबिया ए ॥२॥

सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहुगहने कयने मात्मा इहं ए ।

मार्जतुहृस्तिना सीस मन्हे छां भाबिका जचाने पुह छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

सत्तरै सेठाने समे म तिहां कीषी बीमास ॥ मं ॥

तबहुह मा परसाह बी म पुषी मन की प्राप्त ॥ मं ॥

मालसागर सुख संपदा म अति समरगण्डि सीस ॥ मं ॥

शाफुकरा दुखयानता म पुषी मगह कनीस ॥

दिग पट कमा कीस बी म रबीयो ए अचिकार ।

धडि की उछो भावीयो मं भित्ता हुकड़ कार ॥

नबमी बाल सोहामबी मं बीडी यम सुरंग ।

मानसागर कहे ताकतो दिव दिव बस्तो रम ॥ १ ॥

इति श्री सीस विषय कठियार कानडरी चौपई संयुक्त ।

२५४१ कथाकोश—हरिषेणाचार्य । पत्र सं० ४६१ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल स० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पौष सुदी १४ । वे० स० ८४ । ज्व भण्डार ।

विशेष—सधी पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२ प्रति स० २ । पत्र सं० ३१८ । आ० १०×५३ इंच । ले० काल १८३३ भाद्रवा बुदी ५५ । वे० स० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३ कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १७६७ अषाढ बुदी ६ । अपूर्णा । वे० स० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्मा शनिवारं अजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी अहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिंहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसधेसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नद्याम्नाये कुदकुदाचार्यान्वये मडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीविद्यानदिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसाराभेण व्रतकथाकोशाख्य शास्त्रलिखापित धर्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं मंगलभूयाच्चतुर्विधसघाना ।

२५४४ कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ऋ० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२३×६६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्णा । वे० स० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५ प्रति स० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल स० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० स० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३४) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६४, ६५) और हैं ।

२५४६ कथाकोश । पत्र सं० २५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५६ । च भण्डार ।

विशेष— च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५७, ५८) ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २११७ २११८) और हैं ।

२५४७ कथाकोश । पत्र सं० २ से ६८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ६६ । छ भण्डार ।

२५४८ कथासमग्र—नारदसूत्र । पत्र सं ३ । पा १ ३/४ × ४ ३/४ इत्थ । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२५८ । अ मण्डार ।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र हैं ।

२५४९ कथासमग्र—ब्रह्मज्ञानसागर । पत्र सं २५ । पा १२ × १३ इत्थ । मापा—हिन्दी । विषय—कथा । २ काल × । से काल सं १८५४ बैशाख शुक्ल २ । पूर्ण । वै सं १९८ । अ मण्डार ।

नाम कथा	पत्र	पृष्ठ संख्या
[१] श्रीरामायण टीका कथा	१ से ३	२२
[२] निरस्यारुमी कथा	४ से ७	१४
[३] धिग रतिव्रत कथा	७ से १२	२६
[४] अष्टाङ्गिका व्रत कथा	१२ से १५	३२
[५] राजबंजन कथा	१५ से १९	७९
[६] रोहिणी व्रत कथा	१९ से २३	९५
[७] वास्तव्यवार कथा	२३ से २५	१७

विशेष—१८५४ का बैशाखमासे कृष्णशुक्ल तिथी २ गुरुवासर । सित्यंत महात्मा स्वर्पुराम सबार्डे बम्पूर मध्ये । सित्यापंत चिरेबीच सङ्गुजी हरबंजनी वाति मीसा पठनास्ये ।

२५५० कथासमग्र— । पत्र सं ३ से ९ । पा १ × ४ ३/४ इत्थ । मापा—प्राकृत हिन्दी । विषय—कथा । २ काल × । से काल × । वै सं १२९३ । अपूर्ण । अ मण्डार ।

२५५१ कथासमग्र— । पत्र सं ९४ । पा १२ × ७ ३/४ इत्थ । मापा—संस्कृत हिन्दी । विषय—कथा । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १९९ । अ मण्डार ।

विशेष—व्रत कथाओं भी हैं । इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं १) भी है ।

२५५२ कथासमग्र— । पत्र सं ७५ । पा १ ३/४ × ५ इत्थ । मापा—संस्कृत । विषय—कथा । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १४४ । अ मण्डार ।

२५५३ प्रति सं २ । पत्र सं ७६ । से काल सं १५७८ । वै सं २३ । अ मण्डार ।

विशेष—१४ कथाओं का संग्रह है ।

२५५४ प्रति सं ३ । पत्र सं ६ । से काल × । अपूर्ण । वै सं २२ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं की हैं ।

१. पोटसकारणकथा—पद्मप्रसन्न ।

२. राजनपविधानकथा—राजकीर्ति ।

ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) और है ।

२५५५ कयवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि । पत्र स० १५ । आ० १०३×४३ इच । भाषा—हिन्दी
(राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल स० १७२१ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वे० स० २४ । ख भण्डार ।

विशेष—चयनविजय ने कृष्णगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

२५५६ कर्मविपाक । पत्र स० १८ । आ० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १४ । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री सूर्यारणसवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२५५७ कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र स० ४ । आ० १२×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ब भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४४२)
और है ।

२५५८ कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत । पत्र स० ७३ । आ० ११३×५३ इच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८६० । वे० स० ११६० । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशाय नम । श्री गुरुभ्यो नम । अथ रुक्मिणी मंगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण खिनाय ।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहा बढा रुक्मिणी जादुराय ।
रूपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि ।
रुक्मिणी मंगल सुणै जी, ते अमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मंगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय ।
वै नारी इ द्र की अपछरा जी, वै नर वैकुण्ठ जाय ॥
व्याह बेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव ।
गावतो अमरापुरी जी पाव(व)न होय सब गाव ॥
बोलै राणी रुक्मिणी जी, सुणज्यो भगति मुजाण ।
या किया रति केशो तरा जी, येसडीर करोजी वखाण ॥
यो मंगल परगट करी जी, सत को सबद विचारि ।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

कुंभ गोविंद में बिनबा जी व धर्मनासी जी देव ।
 तन मन ता प्राणें धरा जी करानो दुखों की जी सेव ॥
 कुंभ गोविंद बताइया जी हरी पायें ब्रह्मंड ।
 कुंभ गोविंद के सरनै पाये होबो कुंभ की सात्र सब पेसी ।
 कृष्ण कृपा हैं काम हमारो जणता परम सो तेसी ॥

पत्र ६ - राम सिंधु ।

सतिपाल राजा बोलियो जी सुणि जे रात्र कवार ।
 जो बाहु कुप भामिणी तो भौत बनाऊ सार ॥
 ये के सार धार कर बैरबा बाण बहै अपार ।
 गोसा भासि अनेक सुटै सारम्बा री मार ॥
 बहूततारि प्योबै नसी पर भाप सुणिप्यौ राम्य के बार ॥
 मूय बतवाइयाइ जी----- ।

अन्तिम—

मर्या कटे में प्रभुजी रो धारितो भोमि बाण बत होय ।
 अकण सठ दुर सामलो दोष न सार्थ कोब ॥
 श्रीकृष्ण की व्याहृती सुछै सकल बितनाप ।
 हरि पुरवै सब कामना मयति मुकटि पम्बाय ॥
 हारामति भामन्व हुका मुनिजन दैठ मसीध ।
 अत्र पिय सायनिया, सीतासुरिण जमबीस ॥
 स्वप्नसि जी मंगल संपुर्ण ॥

संवत् १८७ का साले १७३३ का भाद्रपदमासे शुद्धशुभे पंचम्यां विनामीमकरने द्वितीयवरले तुलामक्षैसं समाप्तोर्ब ॥ शुभ ॥

२५३३ श्रीमुद्गीकथा—आचार्य धर्मकीर्ति । पत्र सं ३ से ३४ । भा ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र काल × । ले काल सं १९९९ । पूर्ण । वै सं १२२ । नम्बर ।

विशेष—बड़ा डू मरती ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नहीं हैं ।

२५६० असाह गोपीचक्का— । पत्र सं १६ । भा १२×१२ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै सं २८३ । नम्बर ।

विशेष—संत में धीर भी रागिनियों के पद दिने हुये हैं ।

२५६१ चतुर्दशीविधानकथा— । पत्र सं ११ । भा ८×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै सं ८७ । नम्बर ।

२५६२ चंद्रकुवर की वार्ता—प्रतापसिंह । पत्र स० ९ । आ० ११×४^३ ड०च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८४१ भादवा । पूर्ण । वे० स० १७१ । ज भण्डार ।

विशेष—९६ पद्य हैं । पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम—

प्रतापसिंह घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ ।

जुग जुग जीवो चंद्रकुवर, बात कही कविराय ॥ ९६ ॥

२५६३ चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन । पत्र स० ६ । आ० ११×५^३ ड०च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणामों श्री जगदीस ।

तन मन जीवन मुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥

वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात ।

प्रणामों मन धरि मोद सौ, हरै विघन संघात ॥२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार ।

बदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर ।

कहिये ताकी वारता, सुणो सबै वर वीर ॥४॥

अन्तिम—

कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर सग ।

आसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गग ॥ १८६॥

दुख जु मन मे सुख भयो, भागी विरह विजोग ।

आनन्द सौं च्यारौं मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाथा—

कच्छवि चदन राया, कच्छव मलयागिरिविते ।

कच्छ जोहि पुण्यवल होई, दिहता सजोगो हवइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं । ६ कलिका हैं ।

२५६४ चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर । पत्र स० १० । आ० १०^३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल स० १७०१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७२ । अ भण्डार ।

अन्तिम ढाल—ढाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख ही व्रत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥

अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमाण ॥ १ ॥ गुणवता साधनमु ॥

गुण बान सील तप मानना म्या रै परम प्रथम ॥
 सुमह चित्त के पालइ बी पासी सुख कस्याण ॥ २ ॥ पुण ॥
 सतिमाना गुण गान्धता बी जानइ पातिय दूर ॥
 मन्नी मानना मानइ बी जाइ उपसत्य दूर ॥ ३ ॥ पुण ॥
 संमत सनासइ इकोत्तरइ बी कीबो प्रथम प्रमास ॥
 के नर माटी सांजसो बी तस मन होइ अतास ॥ ४ ॥ पुण ॥
 राजी नगर सो पावखो बी बसइ तहाँ सरावक सोच ॥
 देव पुटा नारा गम्मा बी मानइ सभता लोक ॥ ५ ॥ पुण ॥
 गुजराति गण्ड बासीयइ बी भी पूज्य बी असराज ॥
 भाचारइ करो सोमतो बी सं ... बीरज कपराज ॥ ६ ॥ पुण ॥
 तस मछ माण्हि सोमता बी सोसा विवर मुजरा ॥
 मोहता बी ना अस भया बी सीम्या बुद्धि निबाल ॥ ७ ॥ पुण ॥
 बीर बचन कइइ बीरज हो तस पाटे बरमवास ॥
 बाळ विवर बरवासीयइ बी पखित पुण्हि निवास ॥ ८ ॥ पुण ॥
 तस सेवक हम बीनबइ बी बठर कइइ चित्तनाय ॥
 गुणमण्डता गुहता मानसुजी तस मन बँधित बाय ॥ ९ ॥ पुण ॥

॥ इति श्रीचंदनमसवापिचरिचरिचसमाप्तं ॥

२५६५ चम्पूनपष्टिकथा—अ० भुतसागर । पत्र सं ४ । भा १२×६ इंच । भाषा—उत्तर ।

विषय—कथा । र कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १७ । क मण्डार ।

विशेष—क मण्डार में एक प्रति के सं १९९ की धीर है ।

२५६६ चम्पूनपष्टिकथा—... । पत्र सं १४ । भा ११×१ इंच । भाषा—उत्तर । विषय—कथा ।

र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १८ । क मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ कथामें भी है ।

२५६७ चम्पूनपष्टिकथाभाषा—सुरासकचद कथा । पत्र सं ९ । भा ११×४ इंच । विषय—

कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १९१ । क मण्डार ।

२५६८ चंद्रहसकी कथा—टीकम । पत्र सं ७ । भा १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

र काल सं १७ व । ले काल सं १०३३ । पूर्ण । के सं २ । क मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्धुनगरण एकीकाल स्टीम प्रावि धीर है ।

२५६६. चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र स० ५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० ५५३ । च भण्डार ।

२५७०. चित्रसेनकथा । पत्र स० १८ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल स० १८२१ पौष बुदी २ । पूर्ण । वे० स० २२ । व्य भण्डार ।

विशेष—श्लोक सख्या ४६५ ।

२५७१ चौआराधनाउद्योतरुक्मिका—जोधराज । पत्र स० ६२ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६४६ मगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २२ । घ भण्डार ।

विशेष—स० १८०१ की प्रति से लिखी गई है । जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

स० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है । मूल्य—५) ≡) ॥) इस तरह कुल ५॥≡ लिखा है ।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा । पत्र स० १६ । आ० ७×८ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । छ भण्डार ।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा । पत्र स० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३११ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में (वे० स० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मागीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम । पत्र स० ५ । आ० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के संग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा । पत्र स० ४ । आ० १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में (वे० स० ४८४) की एक प्रति और है ।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र स० ११ से १४ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १७३७ आसौज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० २०८० । अ
भण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७. ढोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि । पत्र स० २८ । आ० ८×४ इ च । भाषा—
हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । छ भण्डार ।

२५७८ दोलामास्वीकीयास" । पत्र सं २ से ७७ । मा १×८३ इ. च । माया-हिन्दी । विषय-कथा । र काल × । से काल सं ११ । पापाड मुदी ८ । संपूर्ण । वे सं १३११ । ट मन्थार ।

विशेष—१ ४ २ तथा ६ठा पत्र नहीं है ।

हिन्दी पद्य तथा बोहे हैं । कुल १८८ बोहे हैं जिनमें दोलामास्वी की बात तथा राजा मल की विपत्ति प्रादि का वर्णन है । मन्थार नाम इस प्रकार है—

मास्वी पीहरने काबल लिखि प्रोहित में सील बीनी । ई भाति मरबस को राज करे छै । मास्वी की कू ल कंबर सिद्धमण स्वयं जी हुवा । मसबण की कू लि कंबर धोरभाण जी हुवा । दोम कंबर दोसा जी क हुवा । दोसा जी की मास्वी को भी महादेव जी की फिरपा सु मर जोड़ी हुई । सिद्धमण स्वयं, जी कंबर सुं भीसाद कुषाहा की जानी । दोसा सु राजा रामस्वयं जी तारि पीढी एक सोबस हुई । राजाबिराज महाराजा भी सुबाई ईसरीसिहजी लौडी पीढी एक सो बार हुई ॥

इति श्री दोलामास्वी वा राजा मल का विवा की बास्ता संपूरण । मिती सप्त मुदी ८ बुधवार सं ११ का सिद्धमणराम बाबिबाद की पोथी सु जतार लिखित—रामराज में—

पत्र ७७ पर कुछ गू गार रस के कवित तथा बोहे हैं । बुधराम तथा रामचरस के कवित एवं विरघर की कुंडलियां भी हैं ।

२५७९. दोलामास्वी की बात—पत्र सं १ । मा ८३×१ इ. च । माया-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र काल × । से काल × । संपूर्ण । वे सं १३६ । ट मन्थार ।

विशेष—३२ पद्य तक मद्य तथा पद्य मिश्रित हैं । बीच बीच में बोहे भी दिये गये हैं ।

२५८०. गुमोकारमन्त्रकथा—पत्र सं ४२ से ७१ । मा १२३×१ इ. च । माया-हिन्दी । विषय-कथा । र काल × । से काल × । संपूर्ण । वे सं २३७ । ट मन्थार ।

विशेष—गुमोकार मन्त्र के प्रभाव की कथाओं हैं ।

२५८१. त्रिकालचौबीसीकथा (राटतीकथा)—पत्र सं २ । मा ११७×२२ इ. च । माया-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । से काल सं १८२२ । पूर्ण । वे सं २६१ । मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में १ प्रति (वे सं १८) की प्रीर है ।

२५८२. त्रिकालचौबीसी (राटवीक) कथा—गुणनमि । पत्र सं २ । मा १३×४ इ. च । माया-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । से काल सं १८१६ । पूर्ण । वे सं ४८२ । मन्थार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३३७) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५४) छ भण्डार में तीन प्रतिया (वे० सं० ६६२, ६६३, ६६४) और है ।

२५२३. त्रिलोकसारकथा । पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ डच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल सं० १६२७ । ले० काल सं० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३८७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सं० १८५० शके १७१५ मिति ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविदिने लिखायित पं० जी श्री भागचन्दजी माल कोट पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजी चेलान लेवा । दक्षण्याकैर उ भाई कै राडि हुई सूवादार तकूजी भाग्यो राजा जी की फते हुई । लिखित गुरुजी मेघराज नगरमध्ये ।

२५८४ दत्तात्रय । पत्र सं० ३६ । आ० १३३×६३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । ज भण्डार ।

२५८५ दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० २३ । आ० १२×७३ इच्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१४) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६३) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५८६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० २६५, २६६, २६७) और हैं ।

२५८६ दर्शनकथाकोश । पत्र सं० २२ से ६० । आ० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

२५८७ दशमूर्खोंकी कथा । पत्र सं० ३६ । आ० १२×५३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वे० सं० २६० । छ भण्डार ।

२५८८ दशलक्षणकथा—लोकसेन । पत्र सं० १२ । आ० ६३×४ डच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ भण्डार ।

विशेष—घ भण्डार में दो प्रतिया (वे० सं० ३७, ३८) और हैं ।

२५८९ दशलक्षणकथा । पत्र सं० ५ । आ० ११×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१३ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०२) की और है ।

२५९० दशलक्षणव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । अ भण्डार ।

२५६१ दानकथा—भारुमल्ल । पत्र सं १८ । मा ११३×८ इंच । माया—हिन्दी पत्र । विषय—
कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ४१६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसके धतिरिक्त अ मण्डार में १ प्रति (के सं ६७६) क मण्डार में १ प्रति (के सं
३ ४) क मण्डार में १ प्रति (के सं १ ४) अ मण्डार में १ प्रति (के सं १८) तथा अ मण्डार में १ प्रति
(के सं २६८) और है ।

२५६२ दानशीलवपभावनाका चौडाक्या—समयसुन्दरगणि । पत्र सं ३ । मा १ × ४_२ इंच ।
माया—हिन्दी । विषय—कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ८३२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (के सं २१७६) भी और है । जिस पर केवल वात बीस तप
भावना ही दिया है ।

२५६३ देवराजवच्छराम चौपई—सोमदेवसुरि । पत्र सं २३ । मा ११×१३ इंच । माया—
हिन्दी । विषय—कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १ ७ । अ मण्डार ।

२५६४ देवलोकनकथा— । पत्र सं २ से ५ । मा १२×१३ इंच । माया—संस्कृत । विषय—
कथा । र काल × । से काल सं १८३३ कार्तिक सुषी ७ । अपूर्ण । के सं १६९१ । अ मण्डार ।

२५६५ द्वादशप्रतकथा—प० अन्नदेव । पत्र सं ७ । मा ६×१३ इंच । माया—संस्कृत । विषय—
कथा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३२५ । क मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में दो प्रतियां (के सं ७३ एक ही बेटन) और है ।

२५६६ द्वादशप्रतकथासमूह—अष्टाचन्द्रसागर । पत्र सं २२ । मा १२×१३ इंच । माया—हिन्दी ।
र काल × । से काल सं १८५४ वैशाख सुषी ४ । पूर्ण । के सं ३६६ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न नवार्थें और है ।

बीस एकप्रतकथा— अ कालसागर माया— हिन्दी ।

भुवर्कपत्रकथा— " " "

कौकिलार्चकीकथा— अ हर्षा " हिन्दी र काल सं १७३६

जिनसुखसंपत्तिकथा— अ जलसागर माया— हिन्दी ।

रात्रिभोजनकथा— — " "

२५६७ द्वादशप्रतकथा— । पत्र सं ७ । मा १२×१३ इंच । माया—संस्कृत । विषय—कथा । र
काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २ । अ मण्डार ।

विशेष—य अन्नदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है ।

कथा साहित्य]

व भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) श्रीर हैं ।

२५६८. धनदत्त सेठ की कथा पत्र सं० १४ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल स० १७२५ । ले० काल × । वे० स० ६८३ । अ भण्डार ।

२५६९ धन्नाकथानक । पत्र स० ६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । घ भण्डार ।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई । पत्र स० २४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र है । २४ से आगे के पत्र नहीं है । प्रति अधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१ धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र स० ३७ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । विषय—कथा । भाषा—

हिन्दी पद्य । २० काव स० १७३६ । ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ६० । ख भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है । (पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२ धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा .. पत्र स० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १८५५ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

२६०३ धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन । पत्र स० २४ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । २० काल स० १८०७ । ले० काल स० १६२७ सावण बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । क भण्डार ।

नदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

विशेष—सागानेर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) स० १७८२ की लिखी हुई श्रीर है ।

२६०५ नदीश्वरविधानकथा—हरिषेण । पत्र स० १३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

२६०६. नदीश्वरविधानकथा . पत्र स० ३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७३ । ट भण्डार ।

२६०७ नागमता ... पत्र स० १० । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इच । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रादि अंत भाग निम्न प्रकार हैं ।

श्री नाममता सिस्ते—

नवर हीरापुर पौटण भणीयइ माहि हर केसरबेच ।
 मणिए करइ बेर नाम सेई नइ करइ तुम्हारी सेब ॥१॥
 करइ तुम्हारी सेबनइ बसियराइ तेजाबीना ।
 कास कंकोडनइ तिलमिलत मर, प्रवर बैग बीमालीया ॥२॥
 माइ बैव माखइ मणिका, करइ तुम्हारी सेब ।
 नवर हीरापुर पट्टख मणीयइ, माहि हर केसरबेच ॥३॥
 राउ वेहरासर बइठउ घाणे निरमस नीर ।
 डंक मयउ भावीरपी समुद्रइ पइसइ तीर ॥४॥
 नीर सेई डंक मोकस्यउ सापी प्रति कणवार ।
 भाप सवारप पडीउ लोमइ, समुद्रइ पइसेपाट ॥५॥
 सहस प्रतापी बिही बेवता बाई तिलुबनि पइठउ ।
 मंदा तलउ ब्रवाह कु घायउ राउ ईहरा सरबइ कउ ॥६॥
 राम मोकस्य के बाडीये घाणे सुर ही बाइ ।
 घाणे सुरही पातरी घाणे सुरही जाइ ॥७॥
 घाणे सुरही बाइ मइ, घाणे सुरही पातरी ।
 भाकसुस सीनइ पावपी करि कउ बीर सुरतडी ॥८॥
 बाइ बैठल करखउ केवडो राइ मच कुंड कु सारी ।
 पुष्क करंडक मटीनइ, घाणे राइमो कस्यपइ बाडी ॥९॥

१। सम—

एक कमिखि प्रवर वाली विछोही भरतार ।
 डंक तखइ धिर बरसही तम्हना घनी संचारि ॥
 तम्हण घनीय संचारि, मुळ त्रिंभ मरइ मपूटइ ।
 बाकि सहारि विप संघालिउ तम्ह बचस नइ ऊठइ
 कस्य करइ मुक्त भाइ ह्यं पु सगेहा टाली ।
 विछोही भरतार एक कमिखि मइ वाली ॥१॥
 तम्हनुंदा कस बाजही, बहु कंसी अजकार ।

चद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धरा मिली भरतार नइ ॥

तित्य गिराणउ तूठउ बोलइ, अमीयविष गयउ छडी ।

डक तराइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हई मन संती ॥

मू ध मगलक छाजइ, ।

बहु कासी भमकार डाक छंडा कल वाजइ ॥

इति श्री नागमता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी आ० मेरुकीर्ति जी की ॥ कथा के रूप मे है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८ नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० १६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल स० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३६७) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १०८) की
और है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोधा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०९. नागश्रीकथा—किशानसिंह । पत्र स० २७५ । आ० ७३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल स० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल स० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । ड
भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी मे है किन्तु
अपूर्ण है ।

२६१०. नि शल्याष्टमीकथा " । पत्र स० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० से ५५ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६८) की और है जिसकी कि स० १८०१ म महाराजा ईश्वर
सिंहजी के शासनकाल मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा " " । पत्र स० २१ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिव्याहलो । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नरसरीपुरी राबिवाहु समबबिजय राय पारो ।
 उस मंदन भी मेमजी हुं साबस बरए सरीरी ॥
 बन बन बदे छी ज्यो तेब राजसबरसए करता ।
 बालरनासै भीननो सो छोरजी हुं हुतो ॥
 समबबजजी रो मंद बढेरो ले पावए जी ।
 हुतो सानसी हुं भी रो नमे कस्यए सु पावए जो ॥

प्रति प्रसुद्ध एवं बीर्य है ।

२६१४ नेमिराजसक्याहजो—गोपीकुण्ड । पत्र सं १ । भा १ × ४५ इञ्च । मापा—हिन्दी ।

विषय—कथा । र काल सं १८९१ प्र बावए कुरी ४ । से काल × । प्रपूर्व । वे सं २२२ । अ मन्थार ।

प्रारम्भ—

भी बियु बरए कमल नमो नमो बरुवार ।
 नेमनाब र डाल तछे स्याहज बाहु सुसयाम ॥
 डारामती नदरी कसी छोट देस मन्थार ।
 इन्द्रपुरी सी ऊपमा सुंदर बहु बिस्तार ॥
 बीडा नो बीजए तिहां साबा बारा बरए ।
 छठि कोठि बर साहि रे बाहर बहतर प्रमए ॥२॥

प्रतिबन्ध—

राजल नेम तछो स्याहजो भी पानधी जो नरवारी ।
 नए गुण सुखसी मतो भी पावसी सुल प्रपार ॥

कथा—

प्रथम राजस जोब सुकसी बार मयसवार ए ।
 सबत् मठारा बरए तरेठठि नान कुल सुन्दार ए ।
 भी नेम राजस कसन गोपी ठास बरत बखालह ।
 सुदार सीसा ताहि ताहि जाकी कसी कथा प्रमए ए ॥

इति भी नेम राजल विवाहजो संपूर्ण ।

इससे माने तब भद्र की डाल बी है बहु प्रपूर्णा है ।

२६१५ पचासयान—बिष्णु शर्मा । पत्र सं १ । भा १२३ × २३ इञ्च । मापा—मंथार । विषय—
 कथा । र काल × । से काल × । प्रपूर्व । वे सं २ १ । अ मन्थार ।

विषय—नेमस २३वां पत्र है । अ मन्थार में १ प्रति (वे सं ४ १) प्रपूर्णा मीर है ।

कथा-साहित्य]

२६१६ परसरामकथा । पत्र स० ६ । आ० १०^३×४^३ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७ पल्यविधानकथा—खुशालचन्द्र । पत्र स० २१ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्य ।

विषय-कथा । २० काल स० १७८७ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २० । अ भण्डार ।

२६१८ पल्यविधानत्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ११७ । आ० ११^३×५ इच्छ । भाषा-

संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ८३) जिसका ले० काल स० १६१७ शाके है और है ।

२६१९ पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० ५ । आ० ११×४^३ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-

कथा । २० काल × । ले० काल ×^३ । पूर्ण । वे० स० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर मे ५० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी ।

२६२० पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र स० २०० । आ० ११×४ इच्छ । भाषा-संस्कृत ।

विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६७) तथा छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६, ७०) और हैं किन्तु तीनों ही अपूर्ण हैं ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र स० २४८ । आ० ११^३×६ इच्छ । भाषा-हिन्दी

गद्य । विषय-कथा । २० काल स० १७७७ भादवा सुदी ५ । ले० काल स० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद मे श्री अभयसेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा ङ भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६३५) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७७) ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २६८) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६४६) और है ।

२६२२ पुण्याश्रवकथाकोश । पत्र स० ६४ । आ० १६×७^३ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द्र के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियों के मन्दिर मे चढाई ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६२) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६०) [अपूर्ण] और हैं ।

०६०३ पुण्याभयकथाकोश—टंकजम् । पत्र सं ३४१ । भा० ११२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । ८ कास से ११२८ । से कास × । पूर्ण । के सं ४६७ । क्र मन्डार ।

०६२४ पुण्याभयकथाकोश की सूची— । पत्र सं० ४ । भा १३×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । ८ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ३४६ । क्र मन्डार ।

०६२५ पुष्पांजलीप्रतकथा—भुवकीचि । पत्र सं ३ । भा ११×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । ८ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १३३ । क्र मन्डार ।

विशेष—१ मन्डार में एक प्रति (के सं ५१) भी है ।

०६२६ पुष्पांजलीप्रतकथा—मिनदास । पत्र सं ३१ । भा १५×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । ८ कास × । से कास सं १६७७ फास्टुण बुकी ११ । पूर्ण । के सं ४७४ । क्र मन्डार ।

विशेष—यह प्रति भागड़ देह स्थित बाटसन नगर में भी बासुपूज्य औरपासय में ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य यगादास ने लिखी थी ।

०६२७ पुष्पांजलीप्रतविधानकथा— । पत्र सं ६ से १ । भा १५×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । ८ कास × । से कास × । अपूर्ण । के सं २२१ । क्र मन्डार ।

०६२८ पुष्पांजलीप्रतकथा—सुरासाधनम् । पत्र सं ६ । भा १२×१३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । ८ कास × । से कास सं ११४२ कालिक बुकी ४ । पूर्ण । के सं ६ । क्र मन्डार ।

विशेष—१ मन्डार में एक प्रति (के सं ११) भी थी है जिसे महारमा थोणी पन्नालास में बयपुर में प्रतिमिति की थी ।

०६२९ बैतालपक्षीसी— । पत्र सं ३५ । भा ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । ८

कास × । से कास × । अपूर्ण । के सं २३ । क्र मन्डार ।

०६३० महाभारताश्रकथा—नयमल । पत्र सं ८१ । भा १३×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । ८ कास सं १८२१ । से कास सं १८५१ फास्टुण बुकी ७ । पूर्ण । के सं २५२ । क्र मन्डार ।

विशेष—१ मन्डार में एक प्रति (के सं ७३१) भी है ।

०६३१ महाभारताश्रकथा—विनोदीलास । पत्र सं १३७ । भा १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी

पद्य । विषय—कथा । ८ कास सं १७५७ साधन बुकी २ । से कास सं ११४६ । अपूर्ण । के सं २२१ । क्र मन्डार ।

विशेष—बीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके प्रतिरिक्त १ मन्डार में २ प्रतियाँ (के सं ३३३ ४२४) २ मन्डार में २ प्रतियाँ (के सं

१८१ २२) तथा १ मन्डार में १ प्रति (के सं १२१) भी थी है ।

ऋथा साहित्य]

२६३२. भक्तामरस्तोत्रऋथा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १२८ । आ० १३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल स० १६३१ फागुण सुदी ४ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ५४० । क भण्डार ।

२६३३ भोजप्रबन्ध । पत्र स० १२ मे २५ । आ० ११^३×४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७६) की और है ।

२६३४ मधुकैटभवध (महिषासुरवध) । पत्र स० २३ । आ० ८^३×४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५३ । अ भण्डार ।

२६३५. मधुमालतीऋथा—चतुर्भुजदास । पत्र स० ४८ । आ० ९×६^६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । र० काल × । ले० काल स० १६२८ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५८० । ड भण्डार ।

विशेष—पद्य स० ६२८ । सरदारमल गोवा ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । अन्त के ५ पत्रो मे स्तुति दी हुई है । इसी भण्डार मे १ प्रति [अपूर्ण] (वे० स० ५८१) तथा १ प्रति (वे० स० ५८२) की [पूर्ण] और हैं ।

२६३६ मृगापुत्रचडाला । पत्र स० १ । आ० ६^३×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चोडाला है ।

२६३७ माधवानलकथा—आनन्द । पत्र स० २ से १० । आ० ११×४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८ मानलुगमानवतिचौपई—मोहनविजय । पत्र स० २६ । आ० १०×४^३ इच्छ । भाषा हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल स० १८५१ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष—आदि अ तभाग निम्न प्रकार है—

आदि—

ऋषभ जिगाद पदाबुजै, मधुकर करी लीन ।

आगम गुण सोइसवर, अति आरद थी लीन ॥१॥

यान पान मम जिनकर, तारण भवनिधि तोय ।

आप तर्या तारै अवर, तेहनै प्रणवति होड ॥२॥

भावै प्रणमु भारती, वरदाता सुविलास ।

बावन अखर की भरयो, अखय खजानो जान ॥३॥

सुकु करया केई छनि बरु, एह बीजे हनी शक्ति ।

किम मू काइ तेहना पर नीको बिये मरिह ॥४॥

प्रतिम— पूर्ण काय सुनीचंद्र सुव वर्ष बुद्धि मास बुधि पसे है । (भासे पत्र फटा हुआ है) ४७ डाल है ।

२६३६ मुक्ताबलिप्रतकथा—भ्रतसागर । पत्र स ४ । मा ११×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । १ काल × । से काल स १८७३ पीप बुदी ३ । पूर्ण । के स ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—यति बयाचंद्र ने प्रतिमिपि की थी ।

२६४० मुक्ताबलिप्रतकथा—सोमप्रभ । पत्र स ११ । मा १३×४ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । १ काल × । से काल स १८५३ सावन सुदी २ । के स ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—अयपुर में मेदिनीय चैत्यालय में कानूमास के पठनार्थ प्रतिमिपि हुई थी ।

२६४१ मुक्ताबलिपिधानकथा— । पत्र स १ से ११ । मा १ × ४ इच । भाषा मयप्र स ।

विषय—कथा । १ काल × । से काल स १५४१ फल्गुन सुदी ३ । मपूर्णा । के स १११८ । अ मण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ श्रीमूससंधे बजात्कारणणे सरस्वतीपन्थे श्रीकुंडाकुंडाचार्याग्निदे

म्टारिक पीपचनदिवेबा ठण्टी अटारिक श्रीगुमचंद्रदेबा तस्विय मुनि जिनचन्द्रदेबा लडिमबासात्म्ये भावसागाणे सचनी

मेता मार्या होती तत्पुत्रा संघनी बाइड मासस काम, जालन मखमण तेषाम्भे संघनी नामू मार्या कीतसिरी तत्पुत्रा

हेमराज गिपमदान सेने दी साह हमराज मार्या हिमसिरी एत रिब राहिणीमुक्ताबलीकथानकं लितापठ ।

२६४२ मयमासाप्रतोषापनकथा— । पत्र स ११ । मा १२×१ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के स ८१ । अ मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में एक प्रति (के स २७१) कीर है ।

१५३ मेषमासाप्रतकथा— । पत्र स २ । मा ११×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

१ काल × । से काल × । पूर्ण । के स ३१ । अ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (के स ७४) की कीर है ।

२६४४ मयमासाप्रतकथा—सुरासपद । पत्र स २ । मा १४×४ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के स ७८१ । अ मण्डार ।

१५७ मौनिप्रतकथा—मुखमद्र । पत्र स २ । मा १२×३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के स ४४१ । अ मण्डार ।

२६४६. मौनिव्रतकथा । पत्र स० १२ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८२ । घ भण्डार ।

२६४७. यमपालमातगकीकथा । पत्र स० २६ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × ; ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । ख भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टांत कथा तथा पत्र १० से १६ तक पंच नमस्कार कथा दी हुई है । कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । कथायें कथाकोश मे से ली गई हैं ।

२६४८. रत्नावधनकथा—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२३×८ इ च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६१ । अ भण्डार ।

२६४९. रत्नावधनकथा' । पत्र स० १ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल स १८३५ सावन सुदी २ । वे० स० ७३ । छ भण्डार ।

२६५०. रत्नत्रयगुणकथा—प० शिवजीलाल । पत्र स० १० । आ० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७२ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५७) और है ।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ४ । आ० ११३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६०४ श्रावण बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ६५२ । ड भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७३) और है ।

२६५२. रत्नावलिब्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र स० ४ । आ० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वे० स० ६३४ । क भण्डार ।

२६५३. रविब्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० १८ । आ० ६३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । ज भण्डार ।

२६५४. रविब्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १८ । आ० ६×३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

२६५५. रविब्रतकथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । आ० ६३×६३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वे० स० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७४), ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४१), क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११३) तथा ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७५०) और हैं ।

२६५६ राठोडरतनमहेराशोचरी— । पत्र सं ३ से ८ । प्रा १३×४ इंच । मापा-हिन्दी

[राजस्थानी] विषय-कथा । र काल सं १२१३ बैशाख शुद्ध ६ । ले काल X । अपूर्ण । के सं १७७ । अ नम्बर ।

विशेष—प्रथम पाठ निम्न प्रकार है—

बाहा—

सावित्रीजयमा धीमा धारी सास्त्री धारि ।

सुंदर सोचने इंदिर लइ बचाइ ॥१॥

हुंसा बननि नयन हरण बधीया नेह मजल ।

सूर रतन सतीयां सटीस मिथीया भाइ महल ॥२॥

मौ सुरगर फुरतबरे बेहुठ कीयासास ।

राजा रमणामरठखी कुय प्रविचन जस बास ॥३॥

पड बेचाबह विधि नवमी पनरीठरे बरस ।

बार सुकन कीयाविह, हीरू पुरक बहस ॥४॥

बाडि मछे बिडीवी जने राओ रतन रसान ।

सूरा पूरा संजमड बज मोटा भूपाल ॥५॥

बिनी राठ बाका उबैली रासा का प्यार गुपर हिंसी कपि बास कैसी ॥ इति श्री राठोडरतन महेरा शोचरी बचनिका संपूर्ण ।

२६५७ रात्रिमोहनकथा—भारामल्ल । पत्र सं ८ । प्रा ११×८ इंच । मापा-हिन्दी पत्र ।

विषय-कथा । र काल X । ले काल X । पूर्ण । के सं ४१२ । अ नम्बर ।

२६५८ प्रति स० २ । पत्र सं १२ । ले काल X । के स ६ ६ । अ नम्बर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम मिथिमोहन कथा भी है ।

२६५९ रात्रिमाहनकथा—किशोरसिंह । पत्र सं २४ । प्रा १३×२ इंच । मापा-हिन्दी पत्र ।

विषय-कथा । र काल सं १७०३ भाद्रपद सुदी ६ । ले काल सं ११२८ भाद्रपद सुदी २ । पूर्ण । के सं १३२ । अ नम्बर ।

विशेष—अ नम्बर में १ प्रति और है जिसका ले काल स १८८३ है । बानूराज साहू ने प्रतिनिधि कराई भी ।

२६६० रात्रिमाहनकथा— । पत्र सं ४ । प्रा १३×२ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-कथा ।

र काल X । ले काल X । अपूर्ण । के सं २६६ । अ नम्बर ।

विशेष—अ नम्बर में एक प्रति (के सं १६१) और है ।

२६६१ रात्रिभोजनचौपई" " । पत्र स० २ । आ० १०×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३१ । अ भण्डार ।

२६६२ रूपसेनचरित्र " । पत्र स० १७ । आ० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । ड भण्डार ।

२६६३ रैदत्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । आ० १०×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । अ भण्डार ।

२६६४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—सगर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा ड भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६१) की प्रार हैं ।

२६६५. रैदत्रतकथा " । पत्र स० ४ । आ० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल स० १७८५ आसोज सुदी ४ है ।

२६६६ रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्ति । पत्र स० १ । आ० ११३×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८८८ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६७) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७२) प्रार है ।

२६६७ रोहिणीव्रतकथा " । पत्र स० २ । आ० ११×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—ड भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ले० काल स० १६१७ वैशाख सुदी ३ प्रार हैं ।

२६६८ लब्धिविधानकथा—पं० अश्रदेव । पत्र स० ६ । आ० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०७ भाद्रमास सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रधास्ति का सक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भाद्रमास सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराज

धीरामर्चंद्रराजप्रवर्तमाने भी मूलसंबंधे बसाकारणणे सरस्वतीमन्त्रे कुंदकु बाभामन्त्रिये मंडलाचार्य धर्मवशात्माने कन्धेसवाताम्बदे मन्त्रमेरापाने सा पया तद्भार्या केसमदे सा कसु इदं कया मंडलाचार्य धर्मवशात्माने वर्त ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा । पत्र सं० ८ । मा १ × ४३ इत् । माया-संस्कृत । विषय-कथा ।

१ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १ ६ । अ मन्त्रार ।

२६७०. लोकरप्रत्याख्यानपमिलकथा । पत्र सं ७ । मा १ × ४३ इत् । माया-संस्कृत । विषय-

कथा । ले काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं १८५ । अ मन्त्रार ।

विशेष—स्तोक सं २४३ है । प्रति प्राचीन है ।

२६७१. बारिपेयासुनिकथा—बोधराजगोडीका । पत्र सं ३ । मा १ × ४३ इत् । माया-हिन्दी ।

विषय-कथा । १ काल × । ले काल सं १७१६ । पूर्ण । के सं १७४ । अ मन्त्रार ।

विशेष—ब्रह्मयत्न बिलम्बा ने प्रतिनिधि की पयी बी ।

२६७२. विक्रमचौबीलीचौपई—अमयचन्द्रसूरि । पत्र सं १३ । मा १ × ४३ इत् । माया-

हिन्दी । विषय-कथा । १ काल सं १७२४ मायात्त कुटी १ । ले काल × । पूर्ण । के सं १६२१ । अ मन्त्रार ।

विशेष—मठिसुन्दर के लिए प्रन्व की रचना की बी ।

२६७३. विष्णुकुमारसुनिकथा—मुहसागर । पत्र सं ३ । मा १ × ४३ इत् । माया-संस्कृत ।

विषय-कथा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ३१ । अ मन्त्रार ।

२६७४. विष्णुकुमारसुनिकथा । पत्र सं ३ । मा १ × ४३ इत् । माया-संस्कृत । विषय-

कथा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १७५ । अ मन्त्रार ।

२६७५. वैदरमीविवाह—पेमराज । पत्र सं ६ । मा १ × ४३ इत् । माया-हिन्दी । विषय-कथा ।

१ काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २२५४ । अ मन्त्रार ।

विशेष—शादि प्रन्ववात्त निम्न प्रकार है—

बोहा—

जिसु बरम मझी बीफता करी बरम सुरग ।
 सो रावा राजा पणोइ डाल मन्हु रंग ॥१॥
 रय बिगुरत्य न भावसी किमता करो बिवाट ।
 पढतां तबि मुज संपजै हुरस भाग हासइ जाज ॥
 सुज भागणे हो रंग मन्हु न जिस भार पोही सेजबी ।
 बोम मनता उफया बाणोववार बिघोरान महेबी ॥

अन्तिम—

कवनाथ सुजाण छै वैदरभी वेस्वार ।
 सुख अनंता भोगिया बेले हुवा अणगार ॥
 दान देई चारित लीयौ होवा तो जय जयकार ।
 पेमराज गुरु इम भगी, मुकत गया तत्काल ॥
 भगी गुरौ जे साभली वैदरभी तरणो विवाह ।
 भएण तास वे सुख सपजे पहुत्या मुकत मभार ।
 इति वैदरभी विवाह सपूर्ण ॥

ग्रन्थ जीर्ण है । इसमे काफी ढालें लिखी हुई हैं ।

२६७६ व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र स० ७६ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

२६७७ प्रति स० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल स० १६४७ कार्तिक सुदी ३ । वे० सं० ६७ । छ

भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ बुधवारे इद पुस्तक लिखायत श्रीमद्काष्ठासुधे नदीतरगच्छे विद्यागरो भट्टारक श्रीराममेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्ति तत्पट्टे भ० यश कीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीउदयसेन तत्पट्टे धोधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इद पुस्तिका लिखापित खडेलवालज्ञातीय कासलीवाल गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ वृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेमलदे तृ० पुत्र इसर तस्य भार्या ब्रह्मकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह वालेन इद पुस्तकं कथाकोशनामधेय ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं लिखाप्य प्रदत्त । लेखक लक्ष्मन श्वेताबर ।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मडलाचार्य श्री ३ जयकीर्ति प० दीपचद प० मयाचद युक्तै ।

२६७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ७३ से १२६ । ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

२६७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १७६५ फागुण बुदी ६ । वे० सं० ६३ । छ भण्डार ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६७५, ६७६) ड भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६८८) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २० ७३, २१००) और हैं ।

२६८०. व्रतकथाकोश—प० दामोदर । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१ प्रतकथाकोश—सकलकीर्ति । पत्र सं १६४ । मा ११×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं ८७१ । अ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में १ प्रति (वे सं ७२) की प्रौर है जिसका से काल सं १८६१ सावन बुधी ३ है । शैलाम्बर पूम्पिराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिमिति की थी ।

२६८२. प्रतकथाकोश—वेवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं ८१ । मा १२×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं ८७७ । अ मण्डार ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । कुछ कथाओं प वामोदर की भी हैं । क मण्डार में १ अपूर्ण प्रति (वे सं १७४) प्रौर है ।

२६ ३ प्रतकथाकोश— । पत्र सं ३ से १ । मा ११×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत धनप्रदा ।

विषय—कथा । १ काल × । से काल सं ११ १ फल्गुण बुधी ११ । अपूर्ण । वे सं ८७९ । अ मण्डार ।

विशेष—बीच के २२ से २३ तथा २३ से २४ तक के भी पत्र नहीं हैं । निम्न कथाओं का समूह है—

१ पुण्यांशुविधान कथा — संस्कृत पत्र ३ से ३

२ मन्मथद्वाराकथा—चन्द्रमूषण क शिष्य प० अश्वदेव " " ५ से ८

अभितम—चन्द्रमूषणविषयेण कथितं पाण्डुरिणी ।

संस्कृता पंक्तिार्थेण कृता प्राकृत सूत्रतः ॥

३ रत्नप्रपविधानकथा—प० रत्नकीर्ति — संस्कृत पत्र ८ से ११

४ पौडराकारकथा—प० अश्वदेव " पत्र " ११ से १४

५ जिनरात्रिविधानकथा— । " " १४ से २१

२११ पत्र हैं ।

६ मेघमात्राप्रतकथा— । " पत्र " २१ से ३१

७ परात्माकथिककथा—साकसेन । " " " ३१ से ३५

८ सुगंधद्वाराप्रतकथा— । " " " ३५ से ४

९ त्रिकालचरबीसीकथा—अश्वदेव । " पत्र " ४ से ४३

१० रत्नप्रपविधि—आशाधर " पत्र " ४३ से ५१

प्रारम्भ— श्रीवर्द्धमानमानस्य गीतमादीरचतद्रुणम् ।

रत्नप्रपविधि कथ्ये यथान्तामविशुद्धये ॥१॥

अभितम प्रशस्ति— साधो मंडितभाषार्थपापुमर्गः सज्जनचूडामणो ।

भासात्साम्यनुन- प्रतीतवहिमा श्रीमानरेवोऽनवद् ॥१॥

य शुक्लादिपदेषु मालवपते ज्ञानातियुक्तं शिवं ।
 श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवस का प्रापयन्न श्रिय ॥२॥
 श्रीमत्केशवसेनार्यवर्यवाक्यादुपेयुषा ।
 पाक्षिकश्रावकीभाव तेन मालवमडले ॥
 सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुजर ।
 पडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्त सम्यगेकदा ॥३॥
 प्रायेण राजकार्येऽवरुद्धर्माश्रितस्य मे ।
 भाद्र किञ्चिदनुष्ठेय व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥
 ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तर ।
 उपविष्टसतामिष्टस्तस्याय विधिसत्तम ॥५॥
 तेनान्यंश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठित ।
 अथो बुधाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृतः ॥६॥
 विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाब्दशतात्यये ।
 दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथता कथा ॥७॥
 पत्नी श्रीनागदेवस्य नद्याद्धर्मैण नायिका ।
 यासीद्रत्नत्रयविधिं चरतीना पुरस्मरी ॥८॥
 इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि समाप्त ॥

११	पुरदरविधानकथा	• ।	सस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२	रत्नाविधानकथा	।	गद्य	५४ से ५६
१३	दशलक्षणजयमाल—रङ्गू ।		अपभ्रंश	५६ से ५८
१४	पत्यविधानकथा	• • ।	सस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५	अनथमोत्रतकथा—प० हरिचद्र ।		अपभ्रंश	६३ से ६६

अगरवाल वरवसि उप्पण्णइ हरियदेण ।

भत्तिण जिणुयणपणवेवि पयडिउ पद्धडियाछदेण ॥१६॥

१६	चदनषष्ठीकथा—	”	”	६६ से ७१
१७.	मुखावलोकनकथा	—	सस्कृत	७१ से ७५
१८	रोहिणीचरित्र—	देवनदि	अपभ्रंश	७६ से ८१
१९.	रोहिणीविधानकथा—	”	”	८१ से ८५

२०	अक्षयनिधिविधानकथा	—	संस्कृत	८१ से ८८	
२१	मुकुटसप्तमीकथा—प० अन्नदेव		"	८८ से ८९	
२२	मौनप्रवृत्तविधान—रत्नकीर्ति		संस्कृत मद्य	९ से १४	
२३	रुक्मसिधिविधानकथा—सुप्रसेन		संस्कृत पद्य	१	[अपूर्ण]

सन् १९१६ ई. वर्षे फस्तुण्ण बदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंके बसात्कारणो सरस्वतीयन्त्रे कुम्भवाचार्थ-
नवे ।

२६८४ प्रतकथाकोश— । पत्र सं १२२ । भा १२×२ इत्य । माता—संस्कृत । विषय—कथा । र
काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२ । छ मण्डार ।

२६८५ प्रतकथाकोश—सुराक्षचद । पत्र सं ८९ । भा १२½×६ इत्य । माता—हिन्दी । विषय—
कथा । र काल सं १७८७ फागुन बुदि १३ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १९७ । छ मण्डार ।

विशेष—१८ कथाएँ हैं ।

इसके प्रतिरिक्त छ मण्डार में एक प्रति (वे सं ११) छ मण्डार में १ प्रति (वे सं १८९) तथा
छ मण्डार में १ प्रति (वे सं १७८) मौर हैं ।

२६८६ प्रतकथाकोश— । पत्र सं ५ । भा १ × ५ इत्य । माता हिन्दी । विषय—कथा । र
काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १८३३ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

नाम	कर्ता	विषय
ब्रह्मनिनबरप्रतकथा—	सुराक्षचद	१ काल सं १७८२
आदिस्वारकथा—	भाऊ कवि	×
अधुरविप्रतकथा—	ब्र० ज्ञानसागर	—
सप्तपरमस्थानप्रतकथा—	सुराक्षचद	—
मुकुटसप्तमीकथा—	"	१ काल सं १७८३
अक्षयनिधिप्रतकथा—	"	—
पोद्दराक्षरप्रतकथा—	"	—
मेघमाताप्रतकथा—	"	—
चम्पनपट्टीप्रतकथा—	"	—
सिधिविधानकथा—	"	—
अनूपमापुरंदरकथा—	"	—
इतः शेषकथा—	"	—

नाम	कर्ता	विशेष
पुष्पाजलिब्रतकथा—	खुशालचन्द्र	—
आकाशपंचमीकथा—	”	२० काल सं० १७८५
मुक्तावलीब्रतकथा—	”	—

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है ।

२६८७. ब्रतकथासंग्रह” . । पत्र स० ६ से ६० । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नहीं हैं ।

२६८८. ब्रतकथासंग्रह” . । पत्र स० १२३ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १५१६ सावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ११० । व् भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीब्रतकथा		अपभ्रंश	—
अनन्तब्रतकथा		”	—
रोहिणीब्रतकथा—	×	”	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	”	—
दुधारसविधानकथा—	मुनिविनयचंद्र ।	”	—
सुखसपत्तिविधानकथा—	विमलकीर्ति ।	”	—
निम्नोरपञ्चमीविधानकथा—	विनयचंद्र ।	”	—
पुष्पाजलिविधानकथा—	पं० हरिश्चन्द्र ।	”	—
श्रवणद्वादशीकथा—	प० अभ्रदेव ।	”	—
षोडशकारणविधानकथा—	”	”	—
श्रुतस्कंधविधानकथा—	”	”	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन ।	”	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारक ।

रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्याना बोधकारणं ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

पश्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
इराजहृद्यविधानकथा—	श्लोकसेन	—	"	—
चन्दनपष्ठीविधानकथा—	×	—	मगध	—
मिनरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
मिनपूजापुरंदरविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
मिनमुक्ताबद्धीकनकथा—	×	—	"	—
शीलविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रवृत्ति—संभव १३१६ वर्षे भावएल बुरी १५ श्रीमूसासंभे सरस्वतीमन्त्रे बनात्कारमरो च श्रीपद्य
मंदिरेवा उत्पट्टे म श्रीमूसासंभेवा उत्पट्टे म श्रीमूसासंभेवा । अट्टारक श्रीपद्यनंदि सिष्य मुनि मदनकीर्ति सिष्य च
नरसिंह निमित्त । अट्टारकसात्मने बोसीगोत्रे संभो राजा भार्या वैठ सुपुत्र श्रीजा भार्या गणोपुत्र कस्तु पद्मना चर्मा भारत
कर्मसंभारं इव संस्त्रं सिद्धाप्य ज्ञान पात्रसत्त ।

२६८६. प्रतकथासमह—। पत्र सं ५५ । भा १२×७२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ११ । क मण्डार ।

विषय—मिथ्य कथामों का संग्रह है ।

छादराप्रतकथा—	प० अश्रदेव ।	संस्कृत	—
कबलचन्द्रायणप्रतकथा—		"	—
चन्दनपष्ठीप्रतकथा—	सुराजचन्द्र ।	हिन्दी	—
मयीरवरप्रतकथा—		संस्कृत	—
मिनगुणसपत्तिकथा—		"	—
होसी की कथा—	छीवर ठाकिया	हिन्दी	—
रैवप्रतकथा—	म० मिनवास	"	—
रत्नाबलिप्रतकथा—	गुणनंदि	"	—

२६६०. प्रतकथासमह—म० महतिसागर । पत्र सं २७ । भा १ ×४२ । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १७७ । क मण्डार ।

२६६१ व्रतकथासंग्रह " । पत्र सं० ४ । आ० ८५४ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल × । पूर्ण । वै० न० ६७२ । क भण्डार ।

विवेप—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा उनका संग्रह है षोडश-कारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२०६२. व्रतकथासंग्रह " । पत्र नं० २२ में १०४ । आ० ११५३ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० न० ६७८ । क भण्डार ।

विवेप—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

परमविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशमसुखविधानकथा—	श्लोकसेन	—	"	—
चम्पूनपष्ठीविधानकथा—	×	—	प्रपञ्च	—
चिनरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
चिनपूजापुराणविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
चिनमुखावसोक्तकथा—	×	—	"	—
शीलाविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे भाषण बुध १५ धीमूलसंके चरस्वतीमन्त्रे ब्रह्मकारणसे म श्रीपथ भक्तिवत्ता उत्पट्टे म श्रीगुणचन्द्रवेषा उत्पट्टे म श्रीजितचन्द्रवेषा । अद्वारक भोवर्णने विषय भुक्ति मदनकीर्ति विषय म मर्यादित् निर्मित । चरितवाचानसे बोलीभोजे संकी राजा मार्या देव सुपुत्र लीला मार्या गणोपुत्र कस्तु परमा भर्मा ब्रह्मः कर्मतापार्थ इव वास्तवं सिद्धाय ज्ञान पायावर्त ।

२६८६ प्रतकथासंग्रह—। पत्र सं ८८ । मा १२४७३ इज । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२ कथा × । ले कथा × । पूर्ण । के सं १२ । क मन्थार ।

विषय—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

द्वादशप्रतकथा—	५० अक्षयवैद्य ।	संस्कृत	—
कथसप्तशतप्रतकथा—		"	—
चम्पूनपष्ठीप्रतकथा—	सुराक्षचन्द्र ।	हिन्दी	—
मपीरवरप्रतकथा—		संस्कृत	—
चिनगुणसपत्तिकथा—		"	—
बोली की कथा—	झीतर ठाकिया	हिन्दी	—
रैवप्रतकथा—	प्र० चिनवास	"	—
रत्नाक्षतिप्रतकथा—	गुणनदि	"	—

२६६० प्रतकथासंग्रह—म मइतिमागर । पत्र सं २७ । मा १४५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २ कथा × । ले कथा × । पूर्ण । के सं १७७ । क मन्थार ।

कथा-साहित्य]

२६६१ व्रतकथासंग्रह । पत्र स० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०

काल × । पूर्ण । वे० स० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षरात्रकथा इनका संग्रह है षोडश-
कारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२६६२ व्रतकथासंग्रह । पत्र स० २२ से १०४ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—प० अभ्रदेव । पत्र स० २६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६६० भाद्रवा सुदी ५ । वे० स० ७२२ । क भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रुक्मिणीकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्ता का नाम प० मदनकीर्ति
है ।
ट भण्डार में एक प्रति (वे० स० २०२६) और है ।

२६६४ शिवरात्रिउद्यापनविधिरुथा—शंकरभट्ट । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा (जैनेतर) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७२ । अ भण्डार ।

विशेष—३२ से आगे पत्र नहीं हैं । स्कंधपुराण में से है ।

२६६५ शीलकथा—भारामल्ल । पत्र स० २० । आ० १२×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ६६६, १११६) क भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६२)
घ भण्डार में एक प्रति (वे० स० १००), ङ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ७०८), छ भण्डार में एक प्रति (वे०
स० १८०), ज भण्डार में एक प्रति (ले० स० १६६७) और हैं ।

२६६६ शीलोपदेशमाला—मेरुमुन्दरगणि । पत्र स० १३१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—गुजराती
लिपि हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष—४३वीं कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है) ।

२६६७ शुकसप्तति । पत्र स० ६४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६६८ श्रावणद्वादशीउपाख्यान । पत्र स० ३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा (जैनेतर) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८० । अ भण्डार ।

२६६६. भावखण्डावरीकथा— । पत्र सं १८ । मा १२×३ इ. च । माता-सस्तुत मघ । विषय-

कथा । २ कास × । से कास × । प्रपूरा । वे सं ७११ । ऊ मण्डार ।

२७०० श्रीपालकथा— । पत्र सं २७ । मा ११×७ इ. च । माता-हिन्दी । विषय-कथा । २

कास × । से कास सं ११२६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे सं ७१३ । ऊ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे सं ७१४) भी है ।

२७०१ मेणिकबौपई—इ. मा. वैद । पत्र सं १४ । मा १३×४ इ. च । माता-हिन्दी । विषय-

कथा । २ कास सं १८२६ । पूर्ण । वे सं ७१४ । ऊ मण्डार ।

विशेष—इति मातपुरा के रहने वाले थे ।

घन मेणिक बौपई लीकते—

भादिनाथ बंदी बमबीस । जाहि चरित वे होई बमीस ॥
 हुआ बंदी गुर निरमय । भ्रमा मय्य बीसावण पंच ॥१॥
 लीजा साधु सबै का पाइ । बौपा सरस्वती करी सहाय ।
 बहि सेवा वे सब बुधि होय । करी बौपई मन बुधि जोई ॥२॥
 माता हमने करी सहाई । अक्षर हीण सवाये भाई ।
 मेणिक चरित बाल में गही । जैसी बाली बौपई गही ॥३॥
 राखी सही बेसमा बाणि । बर्म बनि केने मनि माणि ।
 राजा बर्म बलाई बोप । बोन बर्म को काटे लोच ॥४॥

पत्र ७ पर—बोहा—

जो सूखी मुल वे कहे, अणुतोत्या वे रोस ।
 वे नर बासी नरक में मठ जोइ मास्ती रोस ॥१२१॥
 बौपई—
 कहे बती इक सख सुबाण । बामण एक पद्यो प्रति भाणि ।
 अइ की पुत्र गही को भास । तनें खील इक पास्यो जाय ॥२॥
 बेटो करि राख्यो निरठाइ । हुनैउ पाव एक वै भाइ ।
 बांसणी सही जाइयो पूठ । पमी बानै बाणि मठठ ॥३॥
 एक दिवस बांसण विचारि । पाखी नैवा बाली मारि ।
 पालण बालक मेल्ही ठहो । खील बचन ए मासै बहो ॥४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार । जे सुणिसी ते उतरै पार ।
 हीन पद अक्षर जो होय । जको सवारो गुणियर लोय ॥२८६॥
 में म्हारी बुधि सारु कही । गुणियर लोग सवारो सही ।
 जे ता तरणो कहै निरताय । सुणता सगला पातिग जाइ ॥२९०॥
 लिखिवा चाल्यो सुख नित लहौ, जै साधा का गुण यो कही ।
 यामे भोलो कोइ नही, हूँ वैदं चौपड़ कही ॥२९१॥
 वास भलो मालपुरो जाणि । टोक मही सो कियो वखाण ।
 जठै वसै माहाजन लोग । पान फूल का कोजै भोग ॥२९२॥
 पौरिण छतीसों लीला करै । दुख थे पेट न कोइ भरै ।
 राइस्यघ जी राजा वखाणि । चौर चवाहन राखै आणि ॥२९३॥
 जीव दया को अधिक सुभाव । सबै भलाई साधै डाय ।
 पतिसाहा वदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भवि सुणै बहोडि ॥२९४॥
 धनि हिंदवाणो राज वखाणि । जह में सीसोद्यो सो जाणि ।
 जीव दया को सदा वीचार । रँति तरणों राखै आधार ॥२९५॥
 कीरति कही कहा लागि जाणि । जीव दया सहू पालै आणि ।
 इह विधि सगला करै जगीस । राजा जीज्यौ सौ अरु वीस ॥२९६॥
 एता वरस मै भोलो नही । वेटा पोता फल ज्यो सही ।
 दुखिया का दुख टालै आय । परमेस्वर जी करै सहाय ॥२९७॥
 इ पुन्य तरणो कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार ।
 वाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म आपरणो चाले खोइ ॥२९८॥
 सबत् सौलह सै प्रमाण । उपर सही इतासौ जाण ।
 निन्याणवै कहुँ निरदोष । जीव सबै पावै पोष ॥२९९॥
 भाद्रव सुदी तेरस सनिवार । कडा तीन सै पट अधिकाय ।
 इ सुणता सुख पासो देहं । आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपड़ संपूरण मीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्के स० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं
 वखतसागर वाचै जहने निम्सकार नमोस्त वाच ज्यो जी ।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्ति । पत्र स० ११ । आ० ६३×४ इच । भाषा—
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६८६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३५० । न
 भण्डार ।

२७०३ सप्तम्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं ४१ । मा १३ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र काल सं १५२६ माघ सुदी १ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६ । अ म्भार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७०४ प्रति सं २ । पत्र सं १४ । ले काल सं १७७२ भाद्रपद सुदी १३ । वे सं १२ । अ म्भार ।

प्रसस्ति—सं १७७२ वर्षे भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे ज्योत्स्ना तिथी अर्कवासरे विजौरामेण सिपिबक मकम्बरपुर समीपेषु केरवाग्रामे ।

२७०५ प्रति सं ३ । पत्र सं २५ । ले काल सं १८६४ भाद्रपद सुदी ६ । वे सं ३६३ । अ म्भार

विशेष—मेवटा निवासी महारुपा द्वीरा ने जम्पुर में प्रतिमिति की थी । दीवाण सैबही अमरचंदजी किन्नुका ने प्रतिमिति दीवाण स्वोजीराम के मंदिर के लिए करवाई ।

२७०६ प्रति सं ४ । पत्र सं १४ । ले काल सं १७७६ माघ सुदी १ । वे सं २२ । अ म्भार ।

विशेष—वं नरसिंह ने भावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिष्बीन में प्रतिमिति की थी ।

२७०७ प्रति सं ५ । पत्र सं १५ । ले काल सं १९४७ भाद्रपद सुदी २ । वे सं १११ । अ म्भार ।

२७०८ प्रति सं ६ । पत्र सं ७७ । ले काल सं १७२६ कार्तिक सुदी २ । वे सं १३६ । अ म्भार ।

विशेष—वं जम्पुरचंद के बाबनार्थ प्रतिमिति की गयी थी ।

इनके अतिरिक्त अ म्भार में एक प्रति (वे सं १६) अ म्भार में एक प्रति (वे सं ७५) भी हैं ।

२७०९ सप्तम्यसनकथा—भारामल्ल । पत्र सं ८६ । मा ११ $\frac{1}{2}$ × ३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र काल सं १८१४ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । वे सं ६८८ । अ म्भार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं । अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है ।

२७१० सप्तम्यसनकथाभाषा— । पत्र सं १२ । मा १२ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद्य । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७६६ । अ म्भार ।

विशेष—सोमकीर्ति द्वारा सप्तम्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है ।

अ म्भार में एक प्रति (वे सं ६८८) भी है ।

२७११. सम्भेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८७ आषाढ बुदी*** । वे० स० ८८ । ग भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाडी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल स० १५०४ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल X । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—झ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६१) तथा व्य भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०)

और है ।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० १३ से ३३ । आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल X । ले० काल स० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठ्या गनौ

.... श्रीकुभलमेरूदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री गुणलाल नहोपाध्यायै स्ववाचनार्थं लिखापिता सौवाच्यमाना चिर नदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० ८६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल X । ले० काल स० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४१ । व्य भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० मे खेटक स्थान मे शाह आलम के राज्य मे प्रतिलिपि हुई । ब्र० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोत्रीय मडलाराणापुर निवासी के वंश मे उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ६४ । अ भण्डार ।

श्री हू गर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था ।

अथ सवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्तितदाम्नाये अग्रवालान्वये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा गोपी सा. दीपा । सा गोपी तस्य भार्या वीवो तयो पुत्र सा. भावन साह उवा सा. भावन भार्या बूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदाश । साह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र हूंगरती साम्न्त्र सम्यक्त कौमदी अथ ब्रह्मचार रायमल्लद्वयात् पठनार्थं ज्ञानावर्णां कर्मक्षयहेतु । शुभ भवतु । लिखितं जीवात्मज गोपालदाश । श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमच्छे ।

२०१७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । से० काल सं० १७१६ पौष सुदी १४ । पूर्ण । के सं० ७२६ ।

क मन्थार ।

२०१८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । से० काल सं० १८११ माघ सुदी २ । के सं० ७२४ । क

मन्थार ।

विशेष—काकुराम साहू ने जयपुर नगर में प्रतिमिति की थी ।

इसके प्रतिरिक्त छ मन्थार में २ प्रतिमां (के सं० २ ६६, ८६४) च मन्थार में एक प्रति (के सं० ११२) क मन्थार में एक प्रति (के सं० ८) छ मन्थार में एक प्रति (के सं० ८७) क मन्थार में एक प्रति (के सं० ६१) च मन्थार में एक प्रति (के सं० ३), तथा ट मन्थार में २ प्रतिमां (के सं० २१२६ २१३) [दोनों अपूर्ण] भी हैं ।

२०१६. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीशरण । पत्र सं० १६ । मा ११×३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र काल सं० १७४६ । से काल सं० १८३ धावन सुदी २ । पूर्ण । के सं० ८७ । ग मन्थार ।

२०२० सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—सगतराज । पत्र सं० १३१ । मा ११×३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र काल सं० १७७२ माघ सुदी १३ । से काल × । पूर्ण । के सं० ७२३ । क मन्थार ।

२०२१ सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोयराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । मा १ ३/४×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र काल सं० १७२४ फागुण सुदी १३ । से काल सं० १८२३ आशुज सुदी ७ । पूर्ण । के सं० ४३५ । क मन्थार ।

विशेष—मैतसामर ने श्री पुलाचरंजनी मोदीका के वाचनार्थ सभाई जयपुर में प्रतिमिति की थी । सं० १८६८ में पीबी की निखरावलि विचारों व कुस्यामती वं सिंघराजजी मोदीका वृ हस्ते महारत्ना फताह्नी भाई व १) विवा ।

२०२२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । से काल सं० १८६३ माघ सुदी २ । के सं० २११ । क मन्थार ।

२०२३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । से काल सं० १८८४ । के सं० ७२८ । क मन्थार ।

२०२४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । से काल सं० १८६४ । के सं० ७३ । च मन्थार ।

२०२५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । से काल सं० १८३३ चैत्र सुदी १३ । के सं० १ । क मन्थार ।

इसके प्रतिरिक्त च मन्थार में एक प्रति (के सं० ७४) ट मन्थार में एक प्रति (के सं० १५४३) भी हैं ।

२७२६ सम्यक्त्त्वकौमुदीभाषा..... । पत्र स० १७४ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । च भण्डार ।

२७२७. संयोगपञ्चमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८०१) और है ।

२७२८. शालिभद्रघनानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र सं० ४६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० ८४२ । ड भण्डार ।

विशेष—किशनगढ मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९. सिद्धचक्रकथा । पत्र स० २ से ११ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४३ । ड भण्डार ।

२७३०. सिंहासनवन्तीसी । पत्र सं० ११ से ६१ । आ० ७×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५६७ । ट भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१. सिंहासनद्वारिंशिका—क्षेमकरमुनि । पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—राजा विक्रमादित्य की कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्ध ।

पुरा महाराष्ट्रपरिष्ट्रभाषा मय महाश्चर्यकरनराणा ॥

क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबधेनमुक्तिकृतसंस्कृतवधुरेण ।

विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनायचक्रे चिरादमरपडितहर्षहेतु ॥

२७३२ सिंहासनद्वारिंशिका । पत्र स० ६३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल सं० १७६८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४११ । च भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा । पत्र स० २७ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३४ सुगन्धवरासीकथा..... । पत्र सं० ६ । भा ११३×४३ इ च । माता—संतुष्ट । विपय—कथा ।

१ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ८२ । क मन्डार ।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है ।

२७३५ सुगन्धवरासीप्रतकथा—हेमराज । पत्र सं ३ । भा ८३×७ इ च । माता—हिन्दी । विपय—

कथा । १ काल × । से काल सं १६८३ मावख सुदी ३ । पूर्ण । वे सं १६३ । क मन्डार ।

विशेष—मिथिल नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—प्रथम सुगन्धवरासी प्रतकथा सिद्धये—

चौपई—
 बर्द्धमान बंदी सुक्ताई, सुर पीतम बंदी चित्तसाय ।
 सुगन्धवरासीप्रत मुनि कथा बर्द्धमान परकासी यथा ॥१॥
 पूर्वदिश रात्रप्रह नाब श्रेतिक राज करै अमिराम ।
 नाम बेसना गृहपटरानी बंररोहिणी रूप समान ।
 मुप सिंहस्तन बैठो कथा बनमासी फल स्वामी तथा ॥२॥

अन्तिम—
 सहर नहे सोउ तिय बात बौनमर्म को करैप्रकास ॥
 सब भावक बत संपम बरै बाल पूजा सो पाठिक हुरै ।
 हेमराज कविमन यौ कही विस्वभूषन परकासी सही ।
 सो मर स्वर्ग अमरपति होम मन बच काम सुनै जो कोय ॥३॥
 इति कथा संपूरणम्

बोहा—
 भावसु सुद्ध पंचमी बंरवार सुम जात ।
 भीजिन भुषन सहायनौ तिहा सिखा बरि म्यात ॥
 संवत् विक्रम सुप को इक नव भाठ सुजात ।
 ताके ऊपर पांच कवि सीजे बपुर सुजात ॥
 वेद्य बनावर के विपै मिह नगर सुन ठाम ।
 वही में हम रहत है, रामसाय है नाम ॥

२७३६ सुदयबण्डसावर्णिगाकी चौपई—मुनि केराव । पत्र सं २७ । भा ६×४३ इ च । माता—
 हिन्दी । विपय—कथा । १ काल सं १९२७ । से काल सं १८३७ । वे सं १६४१ । ट मन्डार ।

विशेष—कटक में लिखा गया ।

२७३७ सुदर्शनसेठकीडास (कथा) । पत्र सं २ । भा ६३×४३ इ च । माता—हिन्दी ।
 विपय—कथा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ८२१ । क मन्डार ।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । अ भण्डार ।

२७३९. सौभाग्यपचमीकथा—सुन्दरविजयगणि । पत्र सं० ९ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल सं० १६९६ । ले० काल सं० १८११ । पूर्ण । वे० सं० २९९ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

२७४०. हरिवंशवर्णन .. । पत्र सं० २० । आ० १०^३×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ भण्डार ।

२७४१ होलिकाकथा .. । पत्र सं० २ । आ० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल सं० १९२१ । पूर्ण । वे० सं० २९३ । अ भण्डार ।

२७४२ होलिकाचौपई—हूंगरकवि । पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल सं० १६२९ चैत्र बुदी २ । ले० काल सं० १७१८ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार ।

नयर सिकदरावादगुणकरि आगाध, वाचक मङ्गण श्री खेमा साध ॥८४॥

तासु मीस हू गर मति रली, भण्यु चरित्र गुण साभली ।

जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह धरि बहुली हूई सपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई । मुनि हरचद लिखित । सवत् १७१८ वर्षे.....आगरामध्ये लिपिकृत ॥
रचना में कुल ८५ पद्य हैं । चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं ।

२७४३ होलीकीकथा—छीतर ठोलिया । पत्र सं० २ । आ० ११^३×५^३ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५८ । अ भण्डार ।

२७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७५० । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गाव में उसने ग्रंथ रचना की थी ।

२७४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ९९ । अ भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

२७४६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२ । वे० सं० १६४२ । अ

भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२७४७ होलीकथा—विजयसुन्दरसूरि । पत्र सं १४ । भा १ २४२ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा × । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में इसके प्रतिरिक्त ३ प्रतिबां वे सं ७४ में ही भीर हैं ।

२७४८ होलीपर्वकथा ————— । पत्र सं ३ । भा १ ४२ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र

काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ४४६ । छ मण्डार ।

२७४९ प्रति सं २ । पत्र सं २ । के० काल सं १८ ४ मात्र सुपी ३ । वे सं २८२ । छ

मण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त छ मण्डार में २ प्रतिबां (वे सं ६१ ६११) भीर हैं ।



व्याकरण-साहित्य

२७५० अनिटकारिका पत्र सं० १ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । अ भण्डार ।

२७५१ प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

२७५२ अनिटकारिकावचूरि पत्र सं० ३ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । व भण्डार ।

२७५३ अव्ययप्रकरण । पत्र सं० ६ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

२७५४ अव्ययार्थ । पत्र सं० ८ । आ० ८×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २०

काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० १२२२ । ऋ भण्डार ।

२७५५ प्रति स० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है ।

२७५६ उणादिसूत्रसमग्र—समग्रकर्त्ता—उज्ज्वलदत्त । पत्र सं० ३८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२७५७ उपाधिव्याकरण । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७२ । अ भण्डार ।

२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि—चारित्रसिंह । पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निर्मल प्रकार है—

नत्वा जिनेद्र स्वयुरु च भक्त्या तत्सत्प्रसादात्सुसिद्धिशक्त्या ।

सत्संप्रदायादवच्छिमेता लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥

प्रम्य प्रयोगानुर्द्धाः कित्तकर्तव्य विप्रमो ।

येषु भो मुह्यते श्रेष्ठ साञ्चिकोऽपि यथा वक् ॥२॥

कर्तव्यसूत्रविसरः कसु साप्रतं ।

यथाति प्रसिद्ध इह चाति आरोपरीयत् ॥

स्वस्वेतरस्मे च सुबोधविषयार्थी ।

ऽस्त्विच्छं नमात्र सफलो सिद्धन प्रयत्नः ॥

प्रथम पाठ—

वाङ्माञ्चिकविभुमिधे संभवति धवतककपुरवरे समहे ।

धीकरतरमखुषुष्करसुधिवामुष्टप्रकाररक्षा ॥१॥

धीञ्चिनमारुणिकमामिधसूरीक्षा सक्कसार्थमौमाना ।

पट्टे करे विचयिन्तु धीमञ्चिनमर्षसूरिरास्त्रेषु ॥२॥

वीति

वाचकमतिमङ्गणसेः सिध्यस्तुपास्त्यवस्तपरमार्थः ।

चारिणसिंहसाधुर्ध्वदवदवधुर्मिह सुगमा ॥३॥

यच्चिचितं मतिमाघारभुतं प्रवलोत्तरेच किञ्चिदपि ।

तत्सम्पन्न प्रववरे शोष्यं स्वपरोपकाय ॥४॥

इति कर्तव्यविप्रमावधुष्टिः संपूर्णा सिद्धनतः ।

माचार्य धीररत्नसुपरणस्तच्छिष्य पंडित केसवः देनेयं निधि कृता धर्मपञ्चार्थं । कुर्मं मनतु । सवत् १९६६
वर्षे कार्तिक सुदी ३ तिथी ।

२७५६. कातग्रन्टीका— । पत्र सं ३ । भा १ २×४६ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१ काल × । मे काल × । संपूर्ण । वै सं १६१ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२७६० कातग्रन्थमाझाटीका—शैवसिद्धि । पत्र सं ३१४ । भा १२×४६ इ च । मापा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । १ काल × । मे काल सं १६३० । पूर्ण । वै सं १११ । छ मण्डार ।

विशेष—टीका का नाम वनाय व्याकरण भी है ।

२७६१ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । मे काल × । संपूर्ण । वै सं ११२ । छ मण्डार ।

२७६० प्रति सं० ३ । पत्र सं ७७ । मे काल × । संपूर्ण । वै सं १७ । छ मण्डार ।

२७६३ कातग्रन्थमाझापुष्टि— । पत्र सं १४ मे २६ । भा १×४६ इ च । मापा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १ काल × । मे काल सं १६२४ कार्तिक सुदी ३ । संपूर्ण । वै सं २१४४ । छ मण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोकपत्तने सुरत्राणश्रलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपचनदिवेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचद्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीकम निमित्त । खडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे स० धन्ना भार्या घनश्री पुत्र स. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्त ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र सं० ३ । आ० १०^३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र सं० ८ । आ० ११×५^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र सं० ५ । आ० ११×४^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र सं० ६ । आ० ६^३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया मे से है ।

२७६९ गणपाठ—चादिराज जगन्नाथ । पत्र सं० ३४ । आ० १०^३×४^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १७८० । ट भण्डार ।

२७७० चद्रोन्मीलन । पत्र सं० ३० । आ० १२×५^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ फागुन बुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१ जैनैन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र सं० १२६ । आ० १२×५^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रथ का नाम पचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पचवस्तु तक । सीलपुर नगर मे श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा वधेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२ प्रति स० २। पत्र सं ३१। से काल सं १८६३ फागुन सुदी १। वै सं २१२। क मण्डार।

२७७३ प्रति स० ३। पत्र सं २४ से २१४। से काल सं १८६४ माह सुदी २। मपूर्णा। वै सं २१३। क मण्डार।

२७७४ प्रति स० ४। पत्र सं १। से काल सं १८६६ कार्तिक सुदी ३। वै सं २१। क मण्डार।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त संकेतार्थ दिये हुये हैं। पञ्जासास मीसा ने प्रतिमिति की थी।

२७७५, प्रति स० ५। पत्र सं ३। से काल सं १८८१। वै सं ३२८। क मण्डार।

२७७६ प्रति स० ६। पत्र सं १२५। से काल सं १८८८ बसाख सुदी १४। वै सं २। क मण्डार।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त च मण्डार में एक प्रति (वै सं १२१) क मण्डार में २ प्रतिमा (वै सं ३२३ २८८) धोर हैं। (वै सं ३२३) वाले मन्थ में सोमदेवसूरि कृत वाक्याशय बहिरका नाम की टोका भी है।

२७७७ जैनेन्द्रमहापृथि—अमयनदि। पत्र सं १४ से २३२। मा १२३×६ इञ्च। माया—संस्कृत। विषय—व्याकरण। २ काल ×। से काल ×। मपूर्णा। वै सं १४२। क मण्डार।

२७७८ प्रति स० २। पत्र सं ६१। से काल सं १८४६ माहवा सुदी १। वै सं २११। क मण्डार।

विशेष—पञ्जासास जीवरी ने इसकी प्रतिमिति की थी।

२७७९, संक्षिप्तप्रक्रिया—। पत्र सं १६। मा १ ×३ इञ्च। माया—संस्कृत। विषय—व्याकरण। २ काल ×। से काल ×। पूर्णा। वै सं १८७। क मण्डार।

२७८० धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं १३। मा १ ×४ इञ्च। माया—संस्कृत। विषय—व्याकरण। २ काल ×। से काल सं १७२० भावण सुदी ५। वै सं २१९। क मण्डार।

२७८१ धातुपाठ—। पत्र सं २१। मा ११×२ इञ्च। माया—संस्कृत। विषय—व्याकरण। २ काल ×। से काल ×। मपूर्णा। वै सं २६। क मण्डार।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं।

२७८२ प्रति स० २। पत्र सं १७। से काल सं १८६४ फागुण सुदी १२। वै सं २१। क मण्डार।

विशेष—आचार्य वैमिषद ने प्रतिमिति करवायी थी।

इनके प्रतिरिक्त क मण्डार में एक प्रति (वै सं १३३) तथा क मण्डार में एक प्रति (वै सं २६) धोर हैं।

२७८३ धातुरूपावलि..... । पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

विशेष—शब्द एव धातुओं के रूप हैं ।

२७८४ धातुप्रत्यय ... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५ पचसधि . . . । पत्र सं० २ से ७ । आ० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल सं० १७३२ । अपूर्ण । वे० सं० १२६२ । अ भण्डार ।

२८८६. पचिकरणवाचिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र सं० २ से ४ । आ० १२×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७ परिभाषासूत्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल सं० १५३० । पूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्णा ॥

प्रगति निम्न प्रकार है—

सं० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिना

लिखिता वाचिता च ।

२७८८ परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र सं० ६७ । आ० ६×३३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ज भण्डार ।

२७९० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्ताओं ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२७९१ प्रक्रियाकौमुदी । पत्र सं० १४३ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२७९२ पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२७६३ प्राकृतरूपमासा—भीराममट्ट सुत वरदराज । पत्र सं ४७ । मा० २२×४ इत्य । माता-
प्राकृत । विषय—व्याकरण । १ काल × । से काल सं १७२४ माघशुदी ६ । पूर्ण । के सं १२२ । क
मन्थार ।

विशेष—शास्त्रार्थ जनकश्रुति से इम्प्युर (मासपुरा) में प्रतिमिति की थी ।

२७६४ प्राकृतरूपमासा..... । पत्र सं ३१ रे ४६ । माता—प्राकृत । विषय—व्याकरण । १ काल × ।
से काल × । प्रपूर्णा । के सं २४६ । अ मन्थार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

२७६५ प्राकृतव्याकरण—बहकवि । पत्र सं ६ । मा ११३×५३ इत्य । माता—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १६४ । अ मन्थार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है । संस्कृत प्राकृत, अथवा सं, वैशाखिकी माघमी तथा शीतलेनी
माघि माघामौ पर प्रकाश बनाया गया है ।

२७६६ प्रति सं० २ । पत्र सं ७ । से काल सं १८६६ । के सं ३२६ । क मन्थार ।

२७६७ प्रति सं० ३ । पत्र सं १६ । से काल सं १८२६ । के सं ५२४ । क मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ३२२) भी है ।

२७६८ प्रति सं० ४ । पत्र सं ४ । से काल सं १८४४ मंगसिर सुदी १५ । के सं १८ । अ
मन्थार ।

विशेष—जयपुर के मौजो के मन्थार मेमिमान भैरवराज में प्रतिमिति हुई थी ।

२७६९ प्राकृतव्याकरण—सौभाम्यमाथि । पत्र सं २२४ । मा १२३×५३ इत्य । माता—
संस्कृत । विषय—व्याकरण । १ काल × । से काल सं १८६६ माघशुदी २ । पूर्ण । के सं ५२७ । क
मन्थार ।

२८० भाष्यप्रदीप—कैटपट । पत्र सं ३१ । मा १२३×६ इत्य । माता—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १ काल × । से काल × । प्रपूर्णा । के सं १५१ । अ मन्थार ।

२८०१ रूपमासा..... । पत्र सं ४ से ५ । मा १२३×४ इत्य । माता—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१ काल × । से काल × । प्रपूर्णा । के सं ३६ । अ मन्थार ।

विशेष—पालुओं के रूप दिये हैं ।

इसके प्रतिरिक्त इसी मन्थार में २ प्रतिमा (के सं ३७ ३८) भी है ।

२८०२ लघुव्याकरण..... । पत्र सं १२७ । मा १ × ४३ इत्य । माता—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १ काल × । से काल × । प्रपूर्णा । के सं १७७२ ट मन्थार ।

२८०३ लघुरूपसर्गवृत्ति " । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४८ । ट भण्डार ।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर । पत्र सं० २१५ । आ० ११३×५३ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं ।

२८०५ लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र सं० २३ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ३११, ३१२, ३१३, ३१४) और हैं ।

२८०६. प्रति सं० २ । " " । पत्र सं० २० । आ० ११३×५३ इच्छ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । च भण्डार ।

२८०७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८ । वे० सं० ३१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ३१३, ३१४) और हैं ।

२८०८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज । पत्र सं० १०४ । आ० १०×४ इच्छ । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

२८०९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० १७३ । ज भण्डार ।

विशेष—आठ अध्याय तक है ।

च भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ३१५, ३१६) और हैं ।

२८१० लघुसिद्धान्तकौस्तुभ " " । पत्र सं० ५१ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१२ । ट भण्डार ।

विशेष—पारिणी व्याकरण की टीका है ।

२८११ वैय्याकरणभूषण—कौहनभट्ट । पत्र सं० ३३ । आ० १०×४ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७७४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६८३ । ङ भण्डार ।

२८१२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १६०५ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० २८१ । ङ भण्डार ।

२८१३ वैय्याकरणभूषण " " । पत्र सं० ७ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । ङ भण्डार ।

२८१४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । से काल सं १८६६ बैश क्रुषी ४ । के सं० ३३२ । अ मण्डार ।

विशेष—साहित्यमन्त्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५ व्याकरण..... । पत्र सं ४६ । भा १ ३/४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं० १ १ । अ मण्डार ।

२८१६ व्याकरणटीका..... । पत्र सं ७ । भा १ × ४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १३८ । अ मण्डार ।

२८१७ व्याकरणभाषाटीका..... । पत्र सं १८ । भा १ × २ इत्य । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—व्याकरण । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं २६८ । अ मण्डार ।

२८१८ शब्दशोभा—कवि नीलकण्ठ । पत्र सं ४३ । भा १ ३/४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १ काल सं १६६३ । से काल सं १८७६ । पूर्ण । के सं ७ । अ मण्डार ।

विशेष—महाराजा सातगढ़ के प्रतिलिपि की थी ।

२८१९ शब्दरूपबली..... । पत्र सं ८६ । भा २ × ४ इत्य । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १३६ । अ मण्डार ।

२८२० शब्दरूपिणी—भाषार्थी बरहृषि । पत्र सं २७ । भा १ ० ३/४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ३१२ । अ मण्डार ।

२८२१ शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं ३१ । भा १ × ४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं ४८८ । अ मण्डार ।

२८२२ प्रति सं० ० । पत्र सं १ । भा १ ३/४ इत्य । से काल × । अपूर्ण । के सं
११८६ । अ मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में ६ प्रतिमा (के सं ६८१ ६८२, ६८३ ६८३ (क) ६८४ २२६) तथा अ
मण्डार में एक प्रति (के सं ११८६) थीं हैं ।

२८२३ शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं ७६ । भा १ २ × ४ इत्य । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १ काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं । २२६३ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४ प्रति सं० २ । पत्र सं २ । से काल सं १८६६ बैश क्रुषी ३ । के सं ३२३ । अ
मण्डार ।

विशेष—भास्कर मिश्री पिरानबास महुआ वाले के प्रतिलिपि की थी ।

२८२५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है ।

२८०६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट
भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भीमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्तिसिंहदेवराज-
प्रवर्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्मे . . . ।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ से २० । आ० १५×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल सं० १७३६ माघ सुदी २ । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपाल, नत्वागोपालमीश्वरं ।

क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषत ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया । पत्र सं० ४ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

२८३० सम्बन्धविवक्षा . . . । पत्र सं० २४ । आ० ९^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी . . . । पत्र सं० ४ । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११९७ । अ भण्डार ।

२८३२ सारस्वतीधातुपाठ . . . । पत्र सं० ५ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपचसधि . . . । पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४ सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ से १४५ । आ० ८^३×४^३ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३९५ । अ भण्डार ।

२८३५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६ प्रति स० ३। पत्र सं १८१। से काल सं १८६१। के सं १२२। अ मण्डार।

२८३७ प्रति स० ४। पत्र सं ६१। से काल सं १८३१। के सं १५१। अ मण्डार।

विशेष—श्रीसचंद्र के सिध्द कृष्णदास ने प्रतिनिधि की थी।

२८३८ प्रति स० ५। पत्र सं १ से १२४। से काल सं १८३८। मयूर। के सं १८५। अ

मण्डार।

दण्ड (बस्ती) मगर में प्रतिनिधि हुई थी।

२८३९ प्रति स० ६। पत्र सं ४१। से काल सं १७५१। के सं १२४१। अ मण्डार।

विशेष—बन्धसागरमणि ने प्रतिनिधि की थी।

२८४० प्रति स० ७। पत्र सं ४७। से काल सं १७१। के सं १७। अ मण्डार।

२८४१ प्रति स० ८। पत्र सं ३२ से ७२। से काल सं १८३२। मयूर। के सं १३७। अ

मण्डार।

२८४२ प्रति स० ९। पत्र सं २१। से काल सं १८५१। मयूर। के सं १५१। अ मण्डार।

विशेष—बन्धनीति इत संस्कृत टीका सहित है।

२८४३ प्रति स० १०। पत्र सं १६४। से काल सं १८२१। के सं ७९। अ मण्डार।

विशेष—बिमलराम के पठनार्थ प्रतिनिधि हुई थी।

२८४४ प्रति स० ११। पत्र सं १४६। से काल सं १८२७। के सं ७९१। अ मण्डार।

२८४५ प्रति स० १२। पत्र सं १। से काल सं १८४६ माघ सुदी १४। के सं २६८। अ

मण्डार।

विशेष—श्री जयस्यराम ने दुल्लोचन के पठनार्थ मगर हरिदुर्ग में प्रतिनिधि की थी। केवल वित्तर्ग रुचि तक है।

२८४६ प्रति स० १३। पत्र सं ११। से काल सं १८१४ भाद्रपद सुदी ५। के सं २६१। अ

मण्डार।

२८४७ प्रति स० १४। पत्र सं ६६। से काल सं १७५५ के सं १३७। अ मण्डार।

विशेष—दुर्गादास शर्मा के पठनाय प्रतिनिधि हुई थी।

२८४८ प्रति स० १५। पत्र सं १७। से काल सं १९१७। के सं ४८। अ मण्डार।

विशेष—बल्लोचन पाठय के पठनार्थ प्रतिनिधि की गई थी। श्री प्रतिभा का सम्बन्ध है।

२८४९ प्रति स० १६। पत्र सं ११। से काल सं १८७६। के सं १२१। अ मण्डार।

विशेष—इसके प्रतिनिधि अ मण्डार में १७ प्रतिष्ठा (के सं १७ १२२ ८ ९, १३ १ ९

करण-साहित्य]

२३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, ३०२) ख भण्डार में ७ प्रतिया (वे सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१९, २६८) घ भण्डार में प्रतिया (वे सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार में १५ प्रतिया (वे सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२५, ८२६, २७, ८२८, ८२९, ८३१, से ८३८, ८३९) च भण्डार में ५ प्रतिया (वे सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) ञ भण्डार में ६ प्रतिया (वे सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार में ३ प्रतिया (वे सं० १२१, ४०, २२२) ञ भण्डार में १ प्रति (वे सं० २०) तथा ट भण्डार में ५ प्रतिया (वे सं० १६८८, १६९०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं ।

उक्त प्रतियो में बहुत सी अपूर्ण प्रतिया भी हैं ।

२८५० सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे सं० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५१ सज्ञाप्रक्रिया' " । पत्र सं० ६ । आ० १०^३/_४×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं० ३०० । ञ भण्डार ।

२८५२ सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे सं० । ज भण्डार ।

विशेष—सवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

२८५३ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र सं० ८ । आ० ११×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूर्वाद्ध है ।

२८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल × । वे सं० १०१ । ज भण्डार ।

विशेष—उत्तराद्ध पूर्ण है ।

इसके अतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतिया (वे सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार में २ प्रतिया (वे सं० १६३४, १६६६) और हैं ।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी..... । पत्र सं० ४३ । आ० १२^३/_४×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । अपूर्ण । वे सं० ८४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रतिरिक्त क व तथा ट मन्डार में एक एक प्रति (के सं ८४८ ४ ७ २७२) और है।

२८५७ सिद्धान्तचौमुदीटीका - ... । पत्र सं १२ । मा० ११३×१६ इंच । मापा संस्कृत । विषय-

व्याकरण । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्डार ।

विशेष—पत्रों के कुछ अंश पत्नी से मस भये हैं।

२८५८ सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचन्द्राभम । पत्र सं ४४ । मा १३×१२ इंच । मापा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ११२१ । अ मन्डार ।

२८५९ प्रति सं० २ । पत्र सं २६ । से काल सं १८४७ । के सं ११२२ । अ मन्डार ।

विशेष—दृव्यानाड में मन्दारक सुरेन्द्रप्रति के प्रतिमिति की थी।

२८६० प्रति सं० ३ । पत्र सं ११ । से काल सं १८४७ । के सं ११२३ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में १ प्रतिमां (के सं ११२१ ११२४ ११२५ ११२६ ११२७ ११२८
१ = ११७ ११८ २ २३) और है।

२८६१ प्रति सं० ४ । पत्र सं १४ । मा ११३×१२ इंच । से काल सं १७७४ मापाह बुदी १४ ।

के सं ७८२ । क मन्डार ।

२८६२ प्रति सं० ५ । पत्र सं ५७ । से काल सं ११२३ । के सं २२३ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में २ प्रतिमां (के सं २२२ तथा ४ ८) और है।

२८६३ प्रति सं० ६ । पत्र सं २१ । से काल सं १७५२ मापाह बुदी १ के सं १ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी केंद्र में एक प्रति और है।

२८६४ प्रति सं० ७ । पत्र सं ११ । से काल सं १८१४ मापाह बुदी ६ । के सं ३२२ । अ मन्डार ।

विशेष—प्रथम प्रति तक है। संस्कृत में नहीं सम्भार्य भी है। इसी मन्डार में एक प्रति (के सं ३२३) और है।

इसके प्रतिरिक्त अ मन्डार में १ प्रतिमां (के सं १२८३, ११२४ ११२५, ११२६, ११२७
१ = ११७ ११८) अ मन्डार में २ प्रतिमां (के सं २२२, ४ ८) अ तथा अ मन्डार में एक एक प्रति (के सं १ ३२३) और है। अ मन्डार में ३ प्रतिमां (के सं ११७७ १२१६ १२१७) पूर्ण । अ मन्डार में २ प्रतिमां (के सं ४ १ ४१) अ मन्डार में एक प्रति (के सं १११) तथा अ मन्डार में ३ प्रतिमां (के सं ३४२, ३४८ ३४९) और है।

व गभी प्रतिमां पूर्ण है।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । आ० ११^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगण । पत्र सं० १७३ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २ काल × । ले० काल × । वै० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वै० सं० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्तिसूरि । पत्र सं० १६० । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल स० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ से ११६ । ले० काल स० १६५७ । वै० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१. प्रति स० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वै० स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति स० ४ पत्र स० ३ । ले० काल सं० १६६१ । वै० स० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वै० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४) भी है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी . . . । पत्र स० १० । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वै० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८४६ । छ भण्डार ।

२८७५. सिद्धान्तविन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती । पत्र सं २८ । मा १३×६ इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल सं १७४२ प्रासाद बुकी १३ । पूर्ण । वै सं ८१७ । ज मण्डार ।

विशेष—इति श्रीमदरमहर्षेय परिव्राजकाचार्य श्रीविरसेखर सरस्वती भगवत्पार विष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तविन्दुसमाप्तः ॥ संवत् १७४२ वर्षे प्राश्रितमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवारं भगवन्नाम्निनगरे मित्र श्री ववापलत्व पुत्रेण भगवत्प्राम्ना सिद्धान्तविन्दुरलेखि । धुनमस्तु ॥

२८७६ सिद्धान्तमसूफिका—नागेरामट्ट । पत्र सं १३ । मा १२'×५' इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल × । मपूर्ण । वै सं ३३४ । ज मण्डार ।

२८७७ सिद्धान्तमुक्तावली—परधानन महापाय । पत्र सं ७ । मा १२×५ इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल सं १८३३ भाद्रवा बुकी ३ । वै सं ३८ । ज मण्डार ।

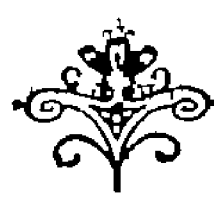
२८७८ सिद्धान्तमुक्तावली --- । पत्र सं ७ । मा १२×५ इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल सं १७५५ चैत बुकी ३ । पूर्ण । वै सं २८६ । ज मण्डार ।

२८७९. हेमनीबुद्धवृत्ति --- । पत्र सं ५४ । मा १×३ इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल × । मपूर्ण । वै सं १४६ । रु मण्डार ।

२८८० हेमव्याकरणवृत्ति—हमचन्द्राचार्य । पत्र सं २४ । मा १२×६ इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वै सं १८४४ । ट मण्डार ।

२८८१ हेमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं ५३ । मा १×४ इंच । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल × । मपूर्ण । वै सं ३५८ ।

विशेष—बीच में मपिचम पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।



कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीक्षपण कवि । पत्र सं० ११ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४ । ड भण्डार ।

२८८३ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी ' ' ' । पत्र सं० १४ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१५ । ट भण्डार ।

विशेष— तृतीय अधिकार तक पूर्ण है ।

२८८४ अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास । पत्र सं० २१ । आ० ८३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । ऋ भण्डार ।

२८८५ अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्ति । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १६६७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५ । ङ भण्डार ।

२८८६. अनेकार्थसमग्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ अषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । क भण्डार ।

२८८७. अनेकार्थसमग्र ' ' ' । पत्र सं० ४१ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ३४ । आ० ११३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७१ । अ भण्डार ।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९० प्रति सं० २ । पत्र सं० २३५ । ले० काल सं० १७३० अषाढ बुदी १० । वे० सं० ३६ । क

भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८६१ प्रति स० ३। पत्र सं १९। से काल सं १८ २ ज्येष्ठ सुदी १०। वै सं १७। क
अम्बार।

विशेष—स्वोपक्रमवृत्ति है।

२८६२ प्रति स० ४। पत्र सं ७ से ११४। से काल सं १७८ मासीक सुदी ११। अपूर्णा। वै०
सं ५। अ अम्बार।

२८६३ प्रति स० ५। पत्र सं ११२। से काल सं ११२६ मासाक सुदी २। वै सं ८२। अ
अम्बार।

२८६४ प्रति सं० ६। पत्र सं १८। से काल सं १८१३ बेसाक सुदी १३। वै सं १११। अ
अम्बार।

विशेष—यं भीमराज ने प्रतिनिधि की थी।

२८६५ अमिधानरजाकर—अर्धचन्द्रगण्डि। पत्र सं २६। मा १ × ४३ इंच। मापा—संस्कृत।
विषय—कोस। १ काल ×। से काल ×। अपूर्णा। वै सं ८२७। अ अम्बार।

२८६६ अमिधानसार—यं शिबजीकाक। पत्र सं २१। मा १२ × ३५ इंच। मापा—संस्कृत।
विषय—कोस। १ काल ×। से काल ×। पूर्णा। वै सं ८। अ अम्बार।

विशेष—रेनकाक तक है।

२८६७ अमरकोश—अमरसिंह। पत्र सं २६। मा १२ × १६ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—कोस।
१ काल ×। से काल सं १८ ज्येष्ठ सुदी १४। पूर्णा। वै सं २७२। अ अम्बार।

विशेष—इसका नाम निगानुषस्तन भी है।

२८६८ प्रति सं० २। पत्र सं ३८। से काल सं १८३२। वै सं ११११। अ अम्बार।

२८६९ प्रति स० ३। पत्र सं ५४। से काल सं १८११। वै० सं १२२। अ अम्बार।

२८७० प्रति स० ४। पत्र सं १८ से ६१। से काल सं १८८२ मासीक सुदी १। अपूर्णा। वै
सं १२१। अ अम्बार।

२८७१ प्रति स० ५। पत्र सं १६। से काल सं १८६४। वै सं २४। क अम्बार।

२८७२ प्रति स० ६। पत्र सं १३ से ६१। से काल सं १८२४। वै सं १२। अपूर्णा। अ
अम्बार।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । छ
भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० २७ । छ
भण्डार ।

विशेष—जयपुर में दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३६ । छ
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ
सुदी २ में ३) सं० देकर प० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६ प्रति सं० १० । पत्र सं० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण ।
वे० सं० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८८ । ले० काल सं० १८८१ बैशाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज
भण्डार ।

विशेष—कही २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८ प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७६६ मगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७ । व्य
भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २१ प्रतिया (वे० सं० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६,
११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७ १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६०
१८५१, २१०५) क भण्डार में ५ प्रतिया (वे० सं० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार में ५ प्रतिया (वे०
सं० ६, १०, ११, २६६ २६६) छ भण्डार में ११ प्रतिया (वे० सं० १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३,
२४, २५, २६) च भण्डार में ७ प्रतिया (वे० सं० ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४) झ भण्डार में ४ प्रतिया
(वे० सं० १३६ १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) ऋ भण्डार
१ प्रति (वे० सं० ६५), तथा ट भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६)
और हैं ।

२६०६ अमरकोपटीका—भानुजीदीक्षित । पत्र सं ११४ या १ × ६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । के सं ६ । अ म्बहार ।

विशेष—बनेन बसोमुख थी महीपार श्री वरिचिदिहरेव को यात्रा स टीका मिली गई ।

२६१० प्रति सं० २ । पत्र सं २४१ । से काल × । अपूर्ण । के सं ७ । अ म्बहार ।

२६११ प्रति सं० ३ । पत्र सं ३२ । से काल × । के सं १८८६ । ट म्बहार ।

विशेष—प्रथमअष्ट तक है ।

२६१२. एकाक्षरकोश—कृपयक । पत्र सं ४ । या ११ × १३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय कोश ।

१ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ म्बहार ।

२६१३ प्रति सं० २ । पत्र सं २ । से काल सं १८८६ कालिक सुदी १ । के सं २१ । अ

म्बहार ।

२६१४ प्रति सं० ३ । पत्र सं २ । से काल सं ११ ३ जैत सुदी ६ । के सं १२५ । अ

म्बहार ।

विशेष—१ सदासुखजी के अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिनिधि की थी ।

२६१५. एकाक्षरीकोश—बरकृषि । पत्र सं २ । या ११ × १३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २७१ । अ म्बहार ।

२६१६ एकाक्षरीकोश— । पत्र सं १ । या ११ × १ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १

काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं १३ । अ म्बहार ।

२६१७ एकाक्षरनाममाळा— । पत्र सं ४ । या १२ × ६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—कोश ।

१ काल × । से काल सं ११ ३ जैत सुदी १ । पूर्ण । के सं ११५ । अ म्बहार ।

विशेष—सवाई जमपुर में महाराजा रामसिंह के शासनकाल में भ वेङ्कटकीर्ति के समय में १ सदासुखजी

के शिष्य कृतेनाम से प्रतिनिधि की थी ।

२६१८. त्रिकाण्डशेषसूची (अमरकाश)—अमरसिंह । पत्र सं ३४ । या ११ × १३ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १४१ । अ म्बहार ।

विशेष—अमरकोश के शब्दों में आने वाले शब्दों की स्तोत्र संख्या ही हुई है । प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक

श्लोक भी दिया हुआ है ।

इसके प्रतिरिक्त इसी म्बहार में ३ प्रतियां (के सं १४२ १४३ १४४) थीर हैं ।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इ च । भाषा-
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८० । ङ भण्डार ।

२६२० प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ आसौज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में प० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि
की थी ।

२६२२ नाममाला—धनजय । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । अ भण्डार ।

२६२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० सं० २८२ । अ

भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० १४, १०७३, १०८६) और हैं ।

२६२४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६३ । ख

भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२२) और है ।

२६२५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । छ

भण्डार ।

विशेष—प० भारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६६) तथा ज भण्डार में (वे० सं० २७६) की
एक प्रति और है ।

२६२६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । व्य भण्डार ।

२६२७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । व्य

भण्डार ।

२६२८ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० १०७३, १४, १०८६) ङ, छ तथा ज
भण्डार में १-१ प्रति (वे० सं० ३२२, २६६, २७६) और हैं ।

२६२६ नाममात्रा --- । पत्र सं १२ । मा० १ X ३३ इंच । माया-संस्कृत । विषय-भाव । १
काल X । से काल X । अपूर्ण । वे सं १६२८ । छ मन्थार ।

२६३० नाममात्रा—बनारसीदाम । पत्र सं १४ । मा ८ X ३ इंच । माया-हिन्दी । विषय-कोष ।
१ काल X । से काल X । पूर्ण । वे सं १४ । छ मन्थार ।

२६३१ बीरक(कोरा) --- । पत्र सं २३ । मा ६ X ४ इंच । माया-हिन्दी । विषय-कोष ।
१ काल X । से काल X । पूर्ण । वे सं १०४ । छ मन्थार ।

विषय—बिमलहृद्यगणित के प्रतिमिति की थी ।

२६३२ मानसखरी—नन्ददाम । पत्र सं २२ । मा ८ X ६ इंच । माया-हिन्दी विषय-कोष । १०
काल X । से काल सं १८५६ काष्ठण सुवी ११ । पूर्ण । वे सं २६३ । छ मन्थार ।

विषय—बनमाल बज के प्रतिमिति की थी ।

२६३३ मेदिनीकाश । पत्र सं १४ । मा १३ X ४ इंच । माया-संस्कृत । विषय-भाव ।
१ काल X । से काल X । पूर्ण । वे सं ५८२ । छ मन्थार ।

२६३४ प्रति सं २ । पत्र सं ११६ । से काल X । वे सं २७८ । छ मन्थार ।

२६३५ रूपमखरीनाममात्रा—गोपालदाम सुत रूपचन्द्र । पत्र सं ८ । मा १ X ३ इंच ।
माया-संस्कृत । विषय-कोष । १ काल सं १६४४ । से काल सं १७८ चैत्र सुवी १ । पूर्ण । वे सं
१८७१ । छ मन्थार ।

विषय—आरम्भ में नाममात्रा की तरह स्थाप है ।

२६३६ सधुनाममात्रा—हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं २३ । मा ६ X ९ इंच । माया-संस्कृत । विषय-
कोष । १ काल X । से काल सं १८२८ ज्येष्ठ सुवी १ । पूर्ण । वे सं ११२ । छ मन्थार ।

विषय—सवाईराम के प्रतिमिति की थी ।

२६३७ प्रति सं २ । पत्र सं २ । से काल X । वे सं ४६८ । छ मन्थार ।

२६३८ प्रति सं २ । पत्र सं ८ से १६ ३७ से ४३ । से काल X । अपूर्ण । वे सं ११८४ । छ
मन्थार ।

२६३९ सिमानुशासन --- । पत्र सं ३ । मा १ X ४ इंच । माया-संस्कृत । विषय-कोष ।
१ काल X । से काल X । अपूर्ण । वे सं १९६ । छ मन्थार ।

विषय—१ से आगे पत्र नहीं है ।

२६४०. लिङ्गानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई है ।

२६४१ विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका... । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५ शतक । पत्र सं० ६ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । छ भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । आ० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्दरत्न " । पत्र सं० १६६ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८ शारदीयानाममाला..... । पत्र सं० २४ से ४७ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९ शिलोच्छ्रकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमर्हसिहस्य कृतिरेषाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिङ्गानुशासनम् ।

पद्मानिवोधयत्यवर्कं शास्त्राणि कुरुते कवि ।

तत्सौरभनभस्वत संतस्तन्वन्तितद्गुणाः ॥

धूरेष्यमर्षसहेन मामसिमेतु तामिपु ।
एव वाङ्मयवशु तिस्रोषु श्रियते तया ॥

२६५० सर्वायसाधनी—मट्टवररुषि । पत्र सं० २ से २४ । पृ० १२×३ इत्य । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कीर्ष । १० काल × । से० बाल सं० १५१७ मंगलिर बुदी ७ । प्रवृत्ति । वै० सं० २१२ । अ मण्डार ।

विशेष—हिंसाय पिरोग्यबोट में कर्षणीयवन्ध के देवसुंदर के पट्ट में धीमिनदेवसूरि ने प्रतिमिति की थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । २० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर मे हुई थी ।

२६५२. अरिष्ट कर्ता । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष
० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३. अरिष्टाध्याय . . . । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया
हुआ है ।

२६५४ अखण्ड केवली . . । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । ख भण्डार ।

२६५५. उषग्रह फल .. . । पत्र सं० १ । आ० १०३×७३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल । पत्र सं० ११ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७. करलखण . . . । पत्र सं० ११ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन मे प्रतिलिपि की ।

२६५८ कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । आ० १४३×११ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारो ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । प०
खुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६५६. प्रति स० २। पत्र सं १। से काल सं० १८४। वे सं २१६९ अ मन्डार।

विषय—मित्र बरणीबर ने नागपुर में प्रतिस्तिपि की थी।

२६६० कर्मराशि फल (कर्म विपाक)-----। पत्र सं ३१। मा ८३×४४ इ च। भाषा—संस्कृत

विषय—ज्योतिष। र काल ×। से काल ×। पूर्ण ×। वे सं १६३१। अ मन्डार।

२६६१ कर्म विपाक फल-----। पत्र सं ३। मा १ ×४६ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १३। अ मन्डार।

विषय—राशियों के प्रमुखार कर्मों का फल दिया हुआ है।

२६६२ कासज्ञान—। पत्र सं १। मा ६×४२ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र

काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १८१८। अ मन्डार।

२६६३ कासज्ञान-----। पत्र सं० २। मा १ ५×४३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं ११८६। अ मन्डार।

२६६४ कौतुक लीलावती-----। पत्र सं० ५। मा १ ३×४६ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। र काल ×। से काल सं १८६२। वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे सं २६१। अ मन्डार।

२६६५ क्षेत्र व्यवहार-----। पत्र सं २। मा ८३×४६ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वे सं १६६७। अ मन्डार।

२६६६ गर्गमनोरमा-----। पत्र सं ७। मा ७३×३३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल सं १८८८। पूर्ण। वे सं २१२। अ मन्डार।

२६६७ गर्गसंहिता—गर्गश्रुति। पत्र सं १। मा ११×३३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष

र काल ×। से काल सं १८८६। अपूर्ण। वे सं ११९७। अ मन्डार।

२६६८ ग्रह दशा बरौन-----। पत्र सं १८। मा ६×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल सं १८६६। पूर्ण। वे सं १७२७। अ मन्डार।

विषय—ग्रहों की दशा तथा उपवासार्थों के मन्त्र एवं फल दिये हुए हैं।

२६६९ ग्रह फल-----। पत्र सं ६। मा १ ३×३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र

काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वे सं० २ २२। अ मन्डार।

२६७० ग्रहलापन—गणेश देवज्ञ। पत्र सं ४। मा १ ३×३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वे सं ४४। अ मन्डार।

२६७८ चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच..... पत्र सं० ५-२३ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८ । ड भण्डार ।

विशेष—इसके आगे पचस्रत प्रमाण लक्षण भी हैं ।

२६७९. चमत्कारचिन्तामणि..... पत्र सं० २-९ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० × । १८१८ फागुण बुधो ५ । पूर्ण । वे० सं० ९३२ । अ भण्डार ।

२६८०. चमत्कारचिन्तामणि..... पत्र सं० २६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३० । ट भण्डार ।

२६८१. छायापुरुषलक्षण..... पत्र सं० २ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
सामुद्रिक शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

विशेष—नौनिबराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८२. जन्मपत्रीमहविचार पत्र सं० १ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१३ । अ भण्डार ।

२६८३. जन्मपत्रीविचार..... पत्र सं० ३ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१० । अ भण्डार ।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य । पत्र सं० २-२० । आ० १२×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८३१ । अपूर्ण । वे० सं० १०४८ । अ भण्डार ।

विशेष—शकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८५. जन्मफल पत्र सं० १ । आ० ११^३×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२४ । अ भण्डार ।

२६८६ जातककर्मपद्धति . श्रीपति । पत्र सं० १४ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १६३८ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ९०० । अ भण्डार ।

२६८७. जातकपद्धति—केशव । पत्र सं० १० । आ० ११×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७ । ज भण्डार ।

२६८८ जातकपद्धति पत्र सं० २९ । आ० ८×६^३ । भाषा-संस्कृत । २० काल × । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४९ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२६८६ आतकासरख—द्वैवसू डिराज । पत्र सं० ४३ । मा० १ २×४२ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । र काम × । से काम सं १७३६ भावना सुधी १३ । पूर्ण । के सं ८६७ । अ मन्डार ।

विषय—नागपुर में वं सुककुसुमगणिका ने प्रतिमिति की थी ।

२६६० प्रति सं० २ । पत्र सं १० । से काम सं १८४० कार्तिक सुधी ६ । के० सं १२७ ।

अ मन्डार ।

विषय—मृष्ट संयापर ने नागपुर में प्रतिमिति की थी ।

२६६१ आतकासकार— । पत्र सं १ से ११ । मा १२×५ इ च । माया—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । र काम × । से काम × । अपूर्ण । के सं १७४२ । ट मन्डार ।

२६६२. ज्योतिषरत्नमासा— । पत्र सं १ से २४ । मा १ २×४२ इ च । माया—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । र काम × । से काम × । अपूर्ण । के सं १६८३ । अ मन्डार ।

२६६३ प्रति सं० २ । पत्र सं ३३ । से काम × । के सं १३४ । अ मन्डार ।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२६६४ ज्योतिषमणिमासा—केराव । पत्र सं ३ से २७ । मा १ २×४२ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं २२ ५ । अ मन्डार ।

२६६५. ज्योतिषरत्नमथ— । पत्र सं १ । मा १ २×४२ इ च । माया—संस्कृत । विषय ज्योतिष

र काम × । से काम × । पूर्ण । के० सं २१४ । अ मन्डार ।

२६६६ ज्योतिषसारभाषा—कृमाराम । पत्र सं ३ से १३ । मा १ २×६ इ च । माया—हिन्दी

(पद्य) । विषय—ज्योतिष । र काम × । से काम सं १८४१ कार्तिक सुधी १२ । अपूर्ण । के सं १२१३ ।

अ मन्डार ।

विषय—श्रीराम वैद्य ने नीनिपद्यम नाम की पुस्तक से लिया ।

आदि नाम—(पत्र ३ पर)

अथ केंदरिया त्रिदोश पर की भेद—

केंदरियो कोपी मरम मरतन इतमो जान ।

एवम पर मोमो मरम यह त्रिदोश बजान ॥६॥

दीर्घा मरतन म्मारमो पर इतमो बर मेनि ।

इत को उरने कटन है मरुं प य में देनि ॥७॥

अन्तिम—

वरष लग्यो जा अंस मे सोई दिन चित धारि ।

वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लगन विचारि ॥४०॥

लगन लिखे तै गिरह जो जा घर बैठो आय ।

ता घर के फल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण ।

२६६७ ज्योतिषसारलघुचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र स० ६३ । आ० ६३×४ इच्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८६३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६३ । ख भण्डार ।

२६६८ ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र । पत्र स० १६ । आ० १०×४ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८२ । ब् भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता सागरचन्द्र हैं ।

२६६९. ज्योतिषशास्त्र ... । पत्र स० ११ । आ० ५×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१ । ङ भण्डार ।

३००० प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ५२१ । व्य भण्डार ।

३००१. ज्योतिषशास्त्र । पत्र स० ५ । आ० १०×५^३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८४ । ट भण्डार ।

३००२ ज्योतिषशास्त्र' ' । पत्र स० ५८ । आ० ६×६^३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १११५ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है ।

प्रारम्भ मे कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी सख्या २२ है । इनमे मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा विशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह

जन्म स० १७४५ मगसिर

महाराजा विशनसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह

जन्म स० १७४७ चैत्र सुदी ६

महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गोंडि के पुत्र

स० १७६६

रामचन्द्र (जन्म नाम भाभूराम)

सं० १७१५ फागुण सुदी २

दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)

सं० १७४६ आषाढ वुदी १४

३००३ सात्त्विकसमुच्चय.....। पत्र सं ११। मा ११×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १० कात्त ×। से० कात्त सं १५३६। पूर्ण। के सं २३३। अ मन्डार

विषय—बडा सरासने में श्री पार्श्वनाथ चैत्यामम में श्रीबलुराम के प्रतिमिति की की।

३००४ तत्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल.....। पत्र सं ३। मा १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १ कात्त ×। से० कात्त ×। पूर्ण। के सं १२२। अ मन्डार।

३००५ त्रिपुरबधसुहूर्त.....। पत्र सं १। मा ११×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १ कात्त ×। से० कात्त ×। पूर्ण। के सं ११५५। अ मन्डार।

३००६ त्रैलोक्यप्रकार.....। पत्र सं १६। मा ११×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १ कात्त ×। से० कात्त ×। पूर्ण। के सं ११२। अ मन्डार।

विषय—१ से १ तक दसवीं प्रति के पत्र हैं। २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। बी प्रतियों का सम्मिश्रण है।

३००७ इशोडनसुहूर्त.....। पत्र सं ३। मा ७ $\frac{१}{२}$ ×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १ कात्त ×। से० कात्त ×। पूर्ण। के सं १७२३। अ मन्डार।

३००८ जलप्रविचार.....। पत्र सं ११। मा ५×३ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। १ कात्त ×। से० कात्त सं १५६५। पूर्ण। के सं १७६। अ मन्डार।

विषय—श्रीक मादि विचार भी विषय हुये हैं।

निम्नलिखित रचनायें भीर हैं—

सर्वमप्रकार बोधा—

कवि ठाकुर हिन्दी [१ पत्रित]

मित्रविषय के बोधे—

हिन्दी [४४ पौठे हैं]

रक्तशुद्धाकरुप—

हिन्दी [से० कात्त सं १६६७]

विषय—आम बिरमी का संभल बताया गया है किउके राज लेने से क्या घतर होया है इतका सर्लांग ३६ बोहों में किया गया है।

३००९. तक्षप्रवेशपीडाज्ञान.....। पत्र सं० ६। मा १ २×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १० कात्त ×। पूर्ण। के सं ५६४। अ मन्डार।

३०१० तक्षप्रसव.....। पत्र सं ३ से २४। मा ६×३ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १० कात्त ×। से० कात्त सं १५ १ अनतिर सुदी ५। मपूर्णा। के सं १७३६। अ मन्डार

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान]

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र स० १४८ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × [अपूर्णा] । वे० स० ६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं हैं ।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र स० २६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१० मगसिर बुदी १४ । पूर्णा । वे० सं० १७२ । अ भण्डार ।

३०१३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । अ भण्डार ।

३०१४. प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी ३ । वे० सं० ६५ । ख

भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५ निमित्तज्ञान (भद्रवाहु सहिता)—भद्रवाहु । पत्र स० ७७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७७ । अ भण्डार ।

३०१६ निपेकाध्यायवृत्ति * । पत्र स० १८ । आ० ८×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं हैं ।

* ३०१७. नीलकण्ठताजिक—नीलकण्ठ । पत्र स० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १०५८ । अ भण्डार ।

३०१८ पञ्चागप्रबोध । पत्र स० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७३५ । ट भण्डार ।

३०१९. पचाग—चण्डू । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पचाग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२० पंचांग *** । पत्र स० १३ । आ० ७३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्णा । वे० स० २४७ । ख भण्डार ।

३०२१ पंचांगसाधन—गणेश (केशवपुत्र) । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८२ । वे० स० १७३१ । ट भण्डार ।

३०२२ पर्यविचार—। पत्र सं १। मा १३×४३ इत्थ। भाषा—हिन्दी। विषय—शकुन शास्त्र।

१० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ६३। अ मन्थार।

३०२३ पर्यविचार—। पत्र सं २। मा १३×४३ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—शकुनशास्त्र।

१० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १३६२। अ मन्थार।

३०२४ पाराशरी—। पत्र सं ३। मा १३×४३ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

१० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ३३२। अ मन्थार।

३०२५ पाराशरीसञ्जनरत्ननीटीका—। पत्र सं २३। मा १२×६ इत्थ। भाषा—संस्कृत।

विषय—ज्योतिष। १० काल ×। से काल सं १८३१ प्राप्ते सुषी २। पूर्ण वै सं ६३३। अ मन्थार।

३०२६ पाराशरी—गर्गमुनि। पत्र सं ७। मा १३×३ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त

शास्त्र। १० काल ×। से काल सं १८७१। पूर्ण। वै सं ६२३। अ मन्थार।

विषय—ग्रह का नाम शकुनावली भी है।

३०२७ प्रति सं २। पत्र सं ४। से काल सं १७३८। बीर्ता। वै सं १७६। अ मन्थार।

विषय—अपि मनोहर ने प्रतिमिति की थी। श्रीचन्द्रसूरि रचित मेमिनाथ स्तम्भ भी दिया हुआ है।

३०२८ प्रति सं ३। पत्र सं ११। से काल ×। वै सं ६२३। अ मन्थार।

३०२९ प्रति सं ४। पत्र सं १। से काल सं १८१७ पीप सुषी १। वै सं ११८। अ

मन्थार।

विषय—मिनाथपुरी (सांघानेर) में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में सवाईराम के शिष्य लौधराम ने प्रतिमिति

की थी।

३०३० प्रति सं ३। पत्र सं ११। से काल ×। वै सं ११८। अ मन्थार।

३०३१ प्रति सं ६। पत्र सं ११। से काल सं १८९१ देवाथ बुद १२। वै सं ११४। अ

मन्थार।

विषय—दयाचन्द वर्म ने प्रतिमिति की थी।

३०३२ पाराशरी—ज्ञानभास्कर। पत्र सं ३। मा १३×४३ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—

निमित्त शास्त्र। १० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं २२। अ मन्थार।

३०३३ पाराशरी—। पत्र सं ११। मा १३×४३ इत्थ। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्तशास्त्र।

१० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १६४६। अ मन्थार।

३०३४ प्रति सं ७। पत्र सं १। से काल सं १७७१ फागुण सुषी १। वै सं २११। अ

मन्थार।

विषय—पंडे देवायाम सीनी ने रामेश्वर में बलिनाथ चैत्यालय में प्रतिमिति की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १८२४) और हैं ।

२०३५ पाशाकेवली । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

३०३८ पाशाकेवली ... । पत्र सं० १ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९ पाशाकेवली ... । पत्र सं० १३ । आ० ८३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८५० । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विश्वनलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं हैं ।

३०४० पुरश्चरणविधि ... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भोग गये हैं जिससे कई जगह पढा नहीं जा सकता ।

३०४१ प्रश्नचूडामणि ... । पत्र सं० १३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०८ आसोज सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं०

१४५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३ प्रश्नविद्या ... । पत्र सं० २ से ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४. प्रश्नविनोद । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग । पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १६२८ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० १७४१ । ट भण्डार ।

३०४६ प्रश्नमासा..... पत्र सं १ । मा ६×३३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र

काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं २६३ । अ मन्थार ।

३ ४७ प्रश्नसुगनावधिरमसा..... । पत्र सं ४ । मा ६३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

ज्योतिष । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ४६ । अ मन्थार ।

३०४८ प्रश्नावधि । पत्र सं ७ । मा ६×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र

काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं १८१७ । अ मन्थार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

३०४९ प्रश्नसार..... । पत्र सं १६ । मा १२३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र ।

र काल × । ले काल सं १६२६ फागुण बुध १४ । के सं ३३६ । अ मन्थार ।

३०५० प्रश्नसार—इयप्रीव । पत्र सं १२ । मा ११×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय शकुन

शास्त्र । र काल × । ले काल सं १६२६ । के सं ३३३ । अ मन्थार ।

विशेष—पत्रों पर कोठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुए हैं उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है

३०५१ प्रश्नोत्तरमाणिक्यमासा—संप्रहकर्त्ता ब्र० ज्ञानसागर । पत्र सं २७ । मा १२×३३

इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८६ । पूर्ण । के सं २११ । अ मन्थार ।

३०५२ प्रति स० २ । पत्र सं ३७ । ले काल सं १८६१ वैश्व बुध १ । अपूर्ण । के सं ११ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमासा महाप्रणै म्भारक श्री चरणधरविद मनुकरोपमा ब्र ज्ञानसागर संपर्हिते श्री

जिनमाधित प्रथमोपकाटः ॥ प्रथम पत्र नहीं है ।

३०५३ प्रश्नोत्तरमासा..... । पत्र सं २ से २२ । मा ७३×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८६४ । अपूर्ण । के सं २६५ । अ मन्थार ।

विशेष—श्री बलदेव दासदेवी दास ने दासा दासमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

३०५४ प्रति स० २ । पत्र सं ३६ । ले काल सं १८१७ अश्लेष बुध १ । के सं ११४ । अ

मन्थार ।

३ ५५ भवनीवाक्य..... । पत्र सं ३ । मा ६×३३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष ।

र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२८२ । अ मन्थार ।

विशेष—सं १६ ५ से १६६६ तक के प्रतिवर्ष का सविष्य फल दिया हुआ है ।

३०५६ भङ्गली . . . पत्र स० ११ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, बरसना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं ।

३०५७ भाष्वती—पद्मनाभ । पत्र सं० ६ । आ० ११×३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

३०५८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० २६५ । च भण्डार ।

३०५९ भुवनदीपिका . . . पत्र स० २२ । आ० ७½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वे० स० २४१ । ज भण्डार ।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र स० ५८ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३०६१ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८५६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२ प्रति स० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है ।

३०६३. भृगुमहिता . . . पत्र स० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३०६४ मुहूर्त्तचिन्तामणि . . . पत्र स० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८६ । अपूर्ण । वे० स० १४७ । ख भण्डार ।

३०६५ मुहूर्त्तमुक्तावली . . . पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिभ्राजकाचार्य । पत्र स० ६ । आ० ६½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है ।

३०६७ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १८७१ वैशाख बुदी १ । वे० सं० १४८ । ख भण्डार ।

३०६८ प्रति स० ३। पत्र स ७। से काल स १७८२ मार्गशीर्ष कुबी ३। अ मन्वार।

विशेष—सप्तम्या नगर में मुनि बोधबन्ध ने प्रतिनिधि की थी।

३०६९ मुहूर्त्तमुक्तावली— । पत्र स १३ से २१। मा २३×४ इच। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विषय—ज्योतिष। र काल ×। से काल ×। अपूर्णा। वै स १४९। अ मन्वार।

३०७० मुहूर्त्तमुक्तावली— । पत्र स ९। मा १×४ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल स १८१६ कार्तिक कुबी ११। पूर्णा। वै स १३२४। अ मन्वार।

३०७१ मुहूर्त्तदीपक—महादेव। पत्र स ८। मा १×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल स १७९७ वैशाख कुबी ३। पूर्णा। वै स ११४। अ मन्वार।

विशेष—यं हू गरसी के पठनार्थ प्रतिनिधि की गई थी।

३०७२ मुहूर्त्तसमूह— । पत्र स २२। मा १३×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल ×। अपूर्णा। वै स १३। अ मन्वार।

३०७३ मेघमाहा— । पत्र स २ से १५। मा १२×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। र काल ×। से काल ×। अपूर्णा। वै स ८२६। अ मन्वार।

विशेष—बर्षा घाने के सम्बन्धों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। श्लोक स ३४९ हैं।

३०७४ प्रति स० २। पत्र स ३३। से काल स १८६२। वै स ११३। अ मन्वार।

३०७५ प्रति स० ३। पत्र स २८। से काल ×। अपूर्णा। वै स १७४७। अ मन्वार।

३०७६ यागपत्र— । पत्र स १९। मा २३×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष र

काल ×। से काल ×। अपूर्णा। वै स २८३। अ मन्वार।

३०७७ रत्नदीपक—गणपति। पत्र स २३। मा १२×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

र काल ×। से काल स १८२८। पूर्णा। वै स १६। अ मन्वार।

३०७८ रत्नदीपक— । पत्र स ५। मा १२×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र

काल ×। से काल स १८१। पूर्णा। वै स १११। अ मन्वार।

विशेष—अमपत्री विचार भी है।

३०७९ रमसशास्त्र—पं० चिंतामणि। पत्र स १३। मा ५×६ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। र काल ×। से काल ×। अपूर्णा। वै स १३४। अ मन्वार।

३०८० रमसशास्त्र— । पत्र स १६। मा ९×६ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—निमित्त शास्त्र

र काल ×। से काल ×। पूर्णा। वै स २३२। अ मन्वार।

३०८१ रसलक्षण ...। पत्र स० ५ । आ० ११×५ इच्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल स० १८६६ । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय मे आचार्य रतनकीर्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०८२ प्रति स० २ । पत्र स० २ से ४४ । ले० काल स० १८७८ आषाढ बुदी ३ । अपूर्णा । वे० स० १५६४ । ट भण्डार ।

३०८३ राजादिफल । पत्र स० ४ । आ० ६३×४ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८२१ । पूर्णा । वे० स० १६२ । ख भण्डार ।

३०८४. राहुफल । पत्र स० ८ । आ० ६३×४ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्णा । वे० स० ६६६ । च भण्डार ।

३०८५ रुद्रज्ञान । पत्र स० १ । आ० ६३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७५७ चैत्र । पूर्णा । वे० स० २११६ । झ भण्डार ।

विशेष—देवणाग्राम मे लालसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा । पत्र स० ८ । आ० ८×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३४८ । ऋ भण्डार ।

३०८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २१६ । ज भण्डार ।

३०८८ लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र स० १७ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १६३ । व्य भण्डार ।

३०८९ वर्षबोध । पत्र स० ५० । आ० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ८६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है ।

३०९० विवाहशोधन । पत्र स० २ । आ० ११×१ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २१६२ । अ भण्डार ।

३०९१ वृहज्जातक—भट्टोत्पल । पत्र स० ४ । आ० १०×४ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १८०२ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शिष्य भारमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. पटपंचामिका—वराहमिह्वर । पत्र सं ६ । मा ११×१२ इत्य । मापा—संस्तुत । विषय—

ज्योतिष । र काल × । से काल स १७६६ । पूर्ण । के सं ७३६ । अ मन्डार ।

३०६३ पटपंचामिकावृत्ति—महोत्पल । पत्र सं २२ । मा १२×२ इत्य । मापा—संस्तुत । विषय—

ज्योतिष । र काल × । से काल स १७५५ । अपूर्ण । के सं ६४४ । अ मन्डार

विशेष—इमरात्र विम ने तथा साहू पूरणमत्र ने प्रतिनिधि की थी । इसमें १२, ८ ११

पत्र नहीं हैं ।

३०६४ शकुनविचार --- । पत्र सं ३ । मा १२×४ इत्य । मापा—हिन्दी मय । विषय—सकुन

शास्त्र । र काल × । से काल × । पूर्य । के सं १४५ । अ मन्डार ।

३ ६५ शकुनावली --- । पत्र सं २ । मा ११×२ इत्य । मापा—संस्तुत । विषय—ज्योतिष । र

काल × । से काल × । पूर्य । के सं ६२५ । अ मन्डार ।

विशेष—५२ अक्षरों का संज्ञ दिया हुआ है ।

३०६६ प्रति सं २ । पत्र सं ४ । से काल सं १५६६ । के सं १२ । अ मन्डार ।

विशेष—यं सवासुन्दराम ने प्रतिनिधि की थी ।

३०६७ शकुनावली—गग । पत्र सं २ से ५ । मा १२×३ इत्य । मापा—संस्तुत । विषय—

ज्योतिष । र काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं २५४ । अ मन्डार ।

विशेष—इसका नाम पञ्चालीवली भी है ।

३०६८ प्रति सं २ । पत्र सं ६ । से काल × । के सं ११६ । अ मन्डार

विशेष—अमरचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी ।

३०६९ प्रति सं ३ । पत्र सं १ । से काल सं १८१३ मपसिह सुबी ११ । अपूर्ण । के सं

२७६ । अ मन्डार

३१०० प्रति सं ४ । पत्र सं ३ से ७ । से काल × । अपूर्ण । के सं २६५ । अ मन्डार ।

३१०१ शकुनावली—अमरचन्द्र । पत्र सं ७ । मा ११×२ इत्य । मापा हिन्दी । विषय—सकुन

शास्त्र । र काल × । से काल सं १५६२ सामन सुबी ७ । पूर्ण । के सं २२५ । अ मन्डार

३१०२ शकुनावली --- । पत्र सं १३ । मा ५२×४ इत्य । मापा—मुत्तरी हिन्दी । विषय—सकुन

शास्त्र । र काल × । से काल × । अपूर्ण । के सं ११४ । अ मन्डार

३१०३ प्रति सं २ । पत्र सं १६ । से काल सं १७५१ सामन सुबी १४ । के सं ११४ । अ

मन्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर में राणा नरामसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । २० कमलावार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं । पत्र ५ में आगे प्रश्नों का फल दिया हुआ है ।

३१०४. प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ३४० । ऋ भण्डार

३१०५ शकुनावली । पत्र स० ५ में ८ । आ० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १८६० । अपूर्ण । वे० स० १२५८ । अ भण्डार ।

३१०६. शकुनावली * * । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शकुनशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १८०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पातिगाह के नाम पर रमलशाम्भू है ।

३१०७ शनिश्चरदृष्टिविचार * । पत्र स० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४६ । अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र में से शनिश्चर दृष्टि विचार है ।

३१०८ शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र स० ११ में ३७ । आ० ८३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४३ । अ भण्डार ।

३१०९ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८३० । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० माणिकचन्द्र ने छोढीग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

३११० प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८४८ आसोज बुदी ६ । वे० स० १३८ । छ भण्डार ।

विशेष—सपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११. प्रति स० ४ । पत्र स० ७१ । ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १४ । वे० स० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—आ० रत्नकीर्ति के शिष्य प० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार में २ प्रति (वे० स० १८७) छ, ऋ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १३८, १६२ तथा २११६) और है ।

३११२ शुभाशुभयोग । पत्र स० ७ । आ० ६३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १८७५ पीपु बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प० हीरालाल ने जाबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

३११३ सक्रातिफल । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१ । ख भण्डार ।

२११४ सक्रांतिफल । पत्र सं ११ । भा १३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र काल × । स काल सं ११ । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२११५ सक्रांतिवर्णन --- । पत्र सं २ । भा १३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ११४१ । अ मन्थार

२११६ समरसार—रामवाल्मयेय । पत्र सं १८ । भा १३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । र काल × । स काल सं १७११ । पूर्ण । के सं १७१२ । अ मन्थार

विषय—योगिनोपुर (दिल्ली) में प्रतिमिति हुई । स्वर शास्त्र में लिखा हुआ है ।

२११७ सवत्सरी विचार --- । पत्र सं ८ । भा १३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

ज्योतिष । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २८९ । अ मन्थार

विषय—सं ११५ से सं २ तक का बर्णफल है ।

२११८ सामुद्रिकशास्त्र --- । पत्र सं १८ । भा १३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । स्त्री पुत्रों के घर्गों के भुमाभुम सक्षण प्रादि दिये हैं । र काल × । स काल सं १२९४ वीप सुवी १२ । पूर्ण । के सं २८९ । अ मन्थार

२११९ सामुद्रिकविचार --- । पत्र सं १४ । भा १३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त ।

शास्त्र । र काल × । से काल सं १७११ वीप सुवी ४ । पूर्ण । के सं ६८ । अ मन्थार ।

२१२० सामुद्रिकशास्त्र—भीतिभिसमुद्र । पत्र सं ११ । भा १२×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—निमित्त । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं ११६ । अ मन्थार ।

विषय—घट में हिन्दी में १३ गुज़ार रख के बोहे है तथा स्त्री पुत्रों के घर्गों के सक्षण दिये हैं ।

२१२१ सामुद्रिकशास्त्र --- । पत्र सं १ । भा १४×४३ इ च । भाषा—प्रकृत । विषय निमित्त ।

र काल × । स काल × । पूर्ण । के सं ७४ । अ मन्थार ।

विषय—छठ व तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

२१२२ सामुद्रिकशास्त्र --- । पत्र सं ४१ । भा १३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

र काल × । स काल सं १८२७ ज्येष्ठ सुवी १ । अपूर्ण । के सं ११६ । अ मन्थार ।

विषय—स्वामी नेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिमिति की थी । २ ३ ४ पत्र नहीं है ।

२१ ३ प्रति सं २ । पत्र सं २३ । स काल सं १७१ कानुख सुवी ११ । अपूर्ण । के सं १४२ । अ मन्थार ।

विषय—बीच क कई पत्र नहीं है ।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र " : पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र सं० १४ । आ० ८×६ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । क भण्डार ।

३१२७ सारणी । पत्र सं० ४ से १३४ । आ० १२×४ इ च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ भाद्रवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और हैं ।

३१२८ सारावली " । पत्र सं० १ । आ० ११×३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२९ सूर्यगमनविधि । पत्र सं० ५ । आ० ११३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३० सोमउत्पत्ति । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१ स्वप्नविचार । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२ स्वप्नाध्याय । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३ स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ भाद्रवा बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५ स्वप्नावली । पत्र सं० २ । आ० १०×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६ होराज्ञान । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ । अ भण्डार ।

३११४ सप्तविंशत्यम् । पत्र सं १६ । भा १३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र काल ✓ । न काल सं १६ । भाषा—संस्कृत । पत्र सं २१३ । अ मन्थार

३११५ सप्तविंशत्यम् । पत्र सं २ । भा ६×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र काल × । न काल × । पूर्ण । पत्र सं १६४६ । अ मन्थार

३११६ समरसार—रामबाबपेय । पत्र सं १० । भा १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । र काल × । न काल सं १७१३ । पूर्ण । पत्र सं १७३२ । अ मन्थार

विषय—योमिनोपुर (दिल्ली) में प्रतिमिति हुई । स्वतः शास्त्र में लिखा हुआ है ।

३११७ सप्तसती विचार । पत्र सं ८ । भा ६×१३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

ज्योतिष । र काल × । न काल × । पूर्ण । पत्र सं २८६ । अ मन्थार

विषय—सं १६५ से सं २ तक का वर्षफल है ।

३११८ सामुद्रिकशास्त्र । पत्र सं १८ । भा ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । स्त्री पुरुषों के अंगों के मुताबिक लक्षण भाषि दिये हैं । र काल × । न काल सं १३६४ पीप सुदी १२ । पूर्ण । पत्र सं २०१ । अ मन्थार

३११९ सामुद्रिकविचार । पत्र सं १४ । भा ८३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त ।

शास्त्र । र काल × । न काल सं १७६१ पीप सुदी ४ । पूर्ण । पत्र सं ६८ । अ मन्थार ।

३१२० सामुद्रिकशास्त्र—भीनिधिसमुद्र । पत्र सं ११ । भा १२×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—निमित्त । र काल × । न काल × । पूर्ण । पत्र सं ११६ । अ मन्थार ।

विषय—अंत में हिन्दी में १६ शृङ्गार एत के दोहू है तथा स्त्री पुरुषों के अंगों के लक्षण दिये हैं ।

३१२१ सामुद्रिकशास्त्र । पत्र सं ६ । भा १४×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

र काल ✓ । न काल × । पूर्ण । पत्र सं ७८४ । अ मन्थार ।

विषय—एत न तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

३१२२ सामुद्रिकशास्त्र । पत्र सं ४१ । भा ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

र काल ✓ । न काल सं १८२७ ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्ण । पत्र सं ११६ । अ मन्थार ।

विषय—स्वामी केतनदास ने गुमान्नीराम के पठनार्थ प्रतिमिति की थी । र ३ ४ पत्र नहीं है ।

३१ ३ प्रति सं ०२ । पत्र सं २३ । न काल सं १७६ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । पत्र सं १४५ । अ मन्थार ।
विषय—बीज में कई पत्र नहीं है ।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र " । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र सं० १४ । आ० ८×६ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । क भण्डार ।

३१२७ सारणी । पत्र सं० ४ से १३४ । आ० १२×४३ इ च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ भाद्रवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और है ।

३१२८ सारावली " । पत्र सं० १ । आ० ११×३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२९ सूर्यगमनविधि । पत्र सं० ५ । आ० ११३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३० सोमउत्पत्ति । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१ स्वप्नविचार । पत्र सं० १ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२ स्वप्नाध्याय । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३ स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ भाद्रवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५. स्वप्नावलि । पत्र सं० २ । आ० १०×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६ होराज्ञान । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ । अ भण्डार ।

विषय-आयुर्वेद

३१३७ अजीर्णरसमञ्जरी - पत्र सं ५। मा ११३×१३ इ. माया-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल सं १७८८। पूर्ण। के सं १ ३१। अ मन्थार।

३१३८. प्रति स० २। पत्र सं ७। से काल ×। के सं १३६। अ मन्थार।
विशेष—प्रति प्राचीन है।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—अशीराज। पत्र सं ३। मा १ १/२×३ इ. माया-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं २८६। अ मन्थार।

३१४० अमृतसागर - पत्र सं ४। मा ११३×४३ इ. माया-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।
र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं १३४। अ मन्थार।

३१४१ अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं ११७ से १६४। मा १२१×६३
इ. माया-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं २२। अ मन्थार।
विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२ प्रति स० २। पत्र सं ५३। से काल ×। अपूर्ण। के सं ३२। अ मन्थार।
विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

अ मन्थार में २ प्रतिमा (के सं ३ ३१) अपूर्ण भी है।

३१४३ प्रति स० ३। पत्र सं १४ से १३। से काल ×। अपूर्ण। के सं २ ३६। अ मन्थार।

३१४४ अर्थप्रकारा—सुकानाथ। पत्र सं ४७। मा १ ३/४×८ इ. माया-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल सं ११८४ सावण बुधी ४। पूर्ण। के सं ८८। अ मन्थार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को सतक में विभक्त किया गया है।

३१४५ आग्नेयबैद्यक—आग्नेयश्रुति। पत्र सं ४२। मा १ ×४३ इ. माया-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल सं १८७ सावण बुधी १४। के सं २३। अ मन्थार।

३१४६ आयुर्वेदिक तुस्तों का समूह - पत्र सं १२। मा १ ×४३ इ. माया-हिन्दी।
विषय-आयुर्वेद। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं २३। अ मन्थार।

३१४७ प्रति स० २। पत्र सं ४। से काल ×। के सं ६३। अ मन्थार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।
विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे । पत्र सं० ४ से २० । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २५९ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० २६०, २६६, २६६) और हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ '.....' पत्र सं० १६ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र सं० २४ । आ० ९^३×४^३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । ब्भण्डार ।

३१५४ कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

आयुर्वेद एव मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या) । पत्र सं० २१ । आ० ११^३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्ण । वे० सं० १८९७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयाया सहिताया कल्पस्थान समाप्तं ॥

३१५६. कालज्ञान । पत्र सं० ३ से १९ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४१ मगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख

भण्डार ।

विशेष—भिरुद् ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

विषय-आयुर्वेद

३१३७ अजीर्णसमञ्जरी—। पत्र सं २। मा ११३×५३ इच। मापा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल सं १७८८। पूर्ण। के सं १२१। अ मण्डार।

३१३८ प्रति स० २। पत्र सं ७। से काल ×। के सं १३९। छ मण्डार।

विषय—प्रति प्राचीन है।

३१३९ अजीर्णसमञ्जरी—आशीराज। पत्र सं २। मा १०३×५ इच। मापा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं २८९। छ मण्डार।

३१४० अङ्कतसागर—। पत्र सं ४। मा ११३×४६ इच। मापा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।
र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं १३४। अ मण्डार।

३१४१ अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं ११७ से १६४। मा १२१×९३
इच। मापा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं २६। छ मण्डार।

विषय—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२ प्रति स० २। पत्र सं २३। से काल ×। अपूर्ण। के सं ३२। छ मण्डार।

विषय—संस्कृत मूल भी दिया है।

छ मण्डार में २ प्रतिर्या (के सं ३ ३१) अपूर्ण और हैं।

३१४३ प्रति स० ३। पत्र सं १४ से १५। से काल ×। अपूर्ण। के सं २३९। छ मण्डार।

३१४४ अथप्रकारा—संज्ञनाथ। पत्र सं ४७। मा १३×८ इच। मापा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल सं १६५४ साबल बुकी ४। पूर्ण। के सं ८८। अ मण्डार।

विषय—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय की शतक में किनासक दिया गया है।

३१४५ आग्नेयबैद्यक—आग्नेयश्रुति। पत्र सं ४२। मा १×४३ इच। मापा संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। र काल ×। से काल सं २८७ साबल बुकी १४। के सं २३। छ मण्डार।

३१४६ आयुर्वेदिक नुस्खों का समूह—। पत्र सं १६। मा १×४३ इच। मापा-हिन्दी।
विषय-आयुर्वेद। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं २३। छ मण्डार।

३१४७ प्रति स० २। पत्र सं ४। से काल ×। के सं ६३। छ मण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।
विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे । पत्र सं० ४ से २० । आ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
युर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २५९ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० २६०, २६६, २६६) और हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रन्थ '...' । पत्र सं० १६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
र० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र सं० २४ । आ० ९ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३५५ । व भण्डार ।

३१५४ कल्पपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या) '...' । पत्र सं० २१ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्णा । वे० सं० १८९७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयाया सहिताया कल्पस्थान समाप्तं ॥

३१५६. कालज्ञान । पत्र सं० ३ से १९ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४१ मगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख
भण्डार ।

विशेष—भिरुद ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

३१३६. प्रति स० ४। पत्र सं ७। से० काल X। वै० सं ११८। छ मन्थार।

३१३७. प्रति स० ५। पत्र सं १। से० काल X। वै० सं ११७४। छ मन्थार।

३१३९. चिकित्साजिनम्—उपाध्यायविद्यापति। पत्र सं २। मा० १५८। छ मन्थार।

विषय आमुर्षेद। र काल X। से० काल सं १११५। पूर्ण। वै० सं १३२। छ मन्थार।

३१३२. चिकित्सासार—। पत्र सं ११। मा० १३५। छ मन्थार। माया—हिन्दी। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। पूर्ण। वै० सं १८। छ मन्थार।

३१३३. प्रति स० २। पत्र सं ५-३१। से० काल X। पूर्ण। वै० सं २७१। छ मन्थार।

३१३४. चूर्णाधिकार—। पत्र सं १२। मा० १३५। छ मन्थार। माया—संस्कृत। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। पूर्ण। वै० सं १८११। छ मन्थार।

३१३५. चरसङ्ग्रह—। पत्र सं ४। मा० १३५। छ मन्थार। माया—हिन्दी। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। पूर्ण। वै० सं १८१२। छ मन्थार।

३१३६. चरचिकित्सा—। पत्र सं ५। मा० १३५। छ मन्थार। माया—संस्कृत। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। पूर्ण। वै० सं १२३७। छ मन्थार।

३१३७. प्रति स० २। पत्र सं ११ से ३१। से० काल X। पूर्ण। वै० सं २६४। छ मन्थार।

३१३८. चरविमिरभास्कर—आमुर्षेद। पत्र सं १४। मा० १३५। छ मन्थार। माया—संस्कृत।

विषय—आमुर्षेद। र काल X। से० काल सं १५। मा० सुदी १३। वै० सं १३७। छ मन्थार।

विषय—आमुर्षेद में चिकित्सा में प्रतिनिधि की थी।

३१३९. त्रिराती—शाङ्गधर। पत्र सं ३२। मा० १३५। छ मन्थार। माया—संस्कृत। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। वै० सं १३१। छ मन्थार।

३१४०. प्रति स० २। पत्र सं १२। से० काल सं ११११। वै० सं २३३। छ मन्थार।

विषय—पत्र सं ३३३ है।

३१४१. मदनसीपाराधिनि—। पत्र सं ३। मा० १३५। छ मन्थार। माया—हिन्दी। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। पूर्ण। वै० सं १३१। छ मन्थार।

३१४२. नाडीपरीक्षा—। पत्र सं ६। मा० १३५। छ मन्थार। माया—संस्कृत। विषय—आमुर्षेद।

र काल X। से० काल X। पूर्ण। वै० सं २३। छ मन्थार।

आयुर्वेद]

३१७३ निघंटु' ... । पत्र सं० २ से ८८ । पत्र सं० ११×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७७ । अ भण्डार ।

३१७४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८४ । अ भण्डार ।

३१७५ पचप्ररूपणा ... । पत्र सं० ११ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल सं० १५५७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल ११वा पत्र ही है । ग्रन्थ मे कुल १५८ श्लोक हैं ।

प्रशस्ति—स० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ । देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्तमाने ब्र० ग्राहू लिखित कर्म-

क्षयनिमित्तं । ब्र० जालप जोगु पठनार्थं दत्त ।

३१७६, पथ्यापथ्यविचार । पत्र सं० ३ से ४४ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ । ट भण्डार ।

विशेष—श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार ब्रक है । १६ से भागे के पत्रो मे दीमक लग गई है ।

३१७७ पाराविधि " " । पत्र सं० १ । आ० ६^३×४^३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३१७८ भावप्रकाश—मानमिश्र । पत्र सं० २७५ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाशः सपूर्णा ।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मिति वैशाख शुक्ला ६ शुक्ले लिखितमृषिराणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७९. भावप्रकाश " " । पत्र सं० १६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जगु पंडित तनयदास पंडितकृते त्रिसतिकाया रसायन वा जारण समाप्त ।

३१८० भावसमग्रह " " । पत्र सं० १० । आ० १०^३×६^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

३१८१ मदनविनोद—मदनपास । पत्र सं० १३ मे ६२ । मा ८३×३३ इञ्च । मापा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । १ नाम × । मे नाम सं १७६३ ज्येष्ठ सुबी १२ । अपूर्ण । के सं १७६८ । अ म्भार ।

विशेष—पत्र १३ पर निम्न पुष्पिका है—

इति श्री मदनपास विरचिते मदनविनोदे अष्टाविंशति ।

पत्र १८ पर— यो राज्ञां मुखातिमकः कटारमस्त्येन श्रीमदनगुरोण निमित्तेन प्रत्येऽस्मिन् मदनविनोदे कटादि पंचमवर्ष ।

मेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ पुरी तद्दिने सि.....घामबी विष्णवेन परोपकारार्थं । मन्वत् १७६३ निस्वेषर समिषी...

मदनपासविरचिते मदनविनोदे तिर्बटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्विंशत् ॥

३१८२. मत्र ब औपधि का मुस्ता..... । पत्र सं १ । मा १ ×३ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—

आयुर्वेद । १ नाम × । मे नाम × । पूर्ण । के सं २१८८ । अ म्भार ।

विशेष—ठिठ्ठी काटने का मन्त्र भी है ।

३१८३ माघननिदान—माघन । पत्र सं १२४ । मा १×४ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १ नाम × । मे नाम × । पूर्ण । के सं २२६३ । अ म्भार ।

३१८४ प्रति सं ७ । पत्र सं १२४ । मे नाम × । अपूर्ण । के सं २ । अ म्भार ।

विशेष—यं ज्ञानमेव इति हिन्दी टीका सहित है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री रं ज्ञानमर विनिमित्तो बलबोधसमाप्तोऽनार्षो मनुजोप परमार्थः ।

४ पत्राभास अष्टमवर्ष रामचन्द्र की पुस्तक है ।

इसके अतिरिक्त अ म्भार मे ३ प्रतियां (के सं० ८८ १३४२ १३४०) अ म्भार में ही प्रतियां

(के सं १४३ १६३) तथा अ म्भार में एक प्रति (के सं ७४) पाए हैं ।

३१८५ मानविनाद—मानसिंह । पत्र सं १७ । मा ११३×३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १ नाम × । मे नाम × । अपूर्ण । के सं १८४ । अ म्भार ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है । १७ के माने पर नहीं है ।

३१८६ मुष्टिदान—ज्योतिषाचार्य इन्द्रचन्द्र । पत्र सं २ । मा १०×४ इञ्च । मापा—हिन्दी ।

विषय—आयुर्वेद ज्योतिष । १ नाम × । मे नाम × । पूर्ण । के सं १८६१ । अ म्भार ।

आयुर्वेद]

३१८७ योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र सं० १२ से ४८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०२ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नहीं हैं ।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अतेवासि मनूसिंहकृते योगचिन्तामणि बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीय ।

३१८८. योगचिन्तामणि * * * * । पत्र सं० ४ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९. योगचिन्तामणि * * * * । पत्र सं० १२ से १०५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जयनगर मे फतेहखन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९० योगचिन्तामणि * * * * । पत्र सं० २०० । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

३१९१ योगचिन्तामणिबीजक * * * * * । पत्र सं० ५ । आ० ९ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२ योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० १५८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे सक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

३१९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८३४ आपाढ बुदी २ । वे० सं० ८८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सागानेर मे गोधो के चैत्यालय मे प० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

३१९६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७७९ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा मे जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३११७ प्रति स० ६ । पत्र सं १३ । से० कास सं १७१६ ज्येष्ठ बुदी ४ । धूर्त्त । पे० सं० ११ ।
अ मण्डार ।

विषय—प्रति सटीक है । प्रथम बी पत्र मही है ।

३११८. योगरात—वरकृषि । पत्र सं २१ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
१ कास × । से० कास सं १११ भावण सुभी १ । पूर्ण । पे० सं २२ । अ मण्डार ।

विषय—आयुर्वेद का संपूर्ण प्रथम है तथा उत्तम टीका है । चंपावती (काटसू) में वं चिबन्ध ने स्वार्थ
बुझाना से लिखाया था ।

३११९. योगरातटीका— । पत्र सं २१ । मा ११ $\frac{३}{४}$ ×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
१ कास × । से० कास × । पूर्ण । पे० सं २७६ । अ मण्डार ।

३२०० योगरातक— । पत्र सं ७ । मा १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
१ कास × । से० कास सं १६६ । पूर्ण । पे० सं ७२ । अ मण्डार ।

विषय—यं विनय समुद्र के स्वपठार्थ प्रतिनिधि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१ योगरातक— । पत्र सं ७५ । मा ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।
१ कास × । से० कास × । पूर्ण । पे० सं १३३ । अ मण्डार ।

३२०२ रसमञ्जरी—शास्त्रिणाथ । पत्र सं २२ । मा १×३ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । १ कास × । से० कास × । धूर्त्त । पे० सं १८३१ । अ मण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शास्त्रिणाथ । पत्र सं २६ । मा १ $\frac{३}{४}$ ×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । १ कास × । से० कास सं ११४१ सविन बुदी ७ । पूर्ण । पे० सं १६१ । अ मण्डार ।

विषय—यं पत्रालय जोबनेर निवासी ने अजपुर में पिस्वानसिन्धी के मन्दिर में सिद्ध ब्रह्मण के पठ-
नार्थ प्रतिनिधि की थी ।

३२०४ रसमञ्जरी— । पत्र सं ४ । मा १ $\frac{३}{४}$ ×३ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०
कास × । से० कास × । धूर्त्त । पे० सं २३३ । धूर्त्त । अ मण्डार ।

३२०५ रसमञ्जरी— । पत्र सं १२ । मा १×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
१ कास । से० कास × । धूर्त्त । पे० सं १३६१ । अ मण्डार ।

३२०६ रामविनाद—रामचन्द्र । पत्र सं २११ । मा १ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र ।
विषय—आयुर्वेद । १ कास सं १६३ । से० कास × । धूर्त्त । पे० सं १३८४ । अ मण्डार ।

विषय—शास्त्रिणाथ के पत्रालय का हिन्दी पत्रालय है ।

३२०७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८५१ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवणलालजी के पठनार्थ भैंसलाना ग्राम मे प्रतिनिधि हुई थी ।

३२०८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२०९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियाँ अपूर्ण (वे० सं० १६९९, २०१८, २०६२) और हैं ।

३२१० रासायनिकशास्त्र * । पत्र सं० ५२ । आ० ५३×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८९ । आ० ११३×५ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२ लङ्घनपथ्यनिर्णय * * * * । पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवनलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३ विषहरनविधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल सं० १७४१ । ले० काल सं० १८६६ भाव सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

सिस रिष वैद अर खंडले जेष्ठ सुकल रुदाम ।

चंद्रापुरी सवत् गिनौ चद्रापुरी मुकाम ॥२७॥

सवत यह संतोष कृत तादिन कविता कीन ।

सशि मनि गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यरुसार * * * । पत्र सं० ५ से ५४ । आ० ९×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—४वाँ विलास तक है ।

३२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ३२ । ले० काल सं० १८३८ । वे० सं० १५७१ । अ
भण्डार ।

३२१७ प्रति सं० ३। पत्र सं ३१। से काल सं १८७२ फागुण । वे सं १७१। ल मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में दो प्रतियां (वे सं १८, १८१) भीर हैं।

३२१८ प्रति सं० ४। पत्र सं २१। से काल ×। प्रपूर्णा। वे सं १८१। ल मन्थार।

३२१९. प्रति सं० ५। पत्र सं ३३। से काल ×। वे सं २३। ल मन्थार।

३२२० वैद्यजीवनमय.....। पत्र सं ३ से १८। मा १ ×४ इत्य। माया-संस्कृत। विषय-
आसुर्वेद। र काल ×। से काल ×। प्रपूर्णा। वे सं ३३३। ल मन्थार।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नहीं है।

३२२१ वैद्यजीवनटीका—रुद्रमहृ। पत्र सं २३। मा १ ×३ इत्य। माया-संस्कृत। विषय-
आसुर्वेद। र काल ×। से काल ×। प्रपूर्णा। वे सं ११९६। ल मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में दो प्रतियां (वे सं २ १९, २ १७) भीर हैं।

३२२२ वैद्यमनोत्सव—नयनसुप्त। पत्र सं ३२। मा ११ × ३ इत्य। माया-संस्कृत हिन्दी।
विषय-आसुर्वेद। र काल सं १६४९ मायास सुधी २। से काल सं १८३३ ज्येष्ठ सुधी १। पूर्णा। वे सं
१८७६। ल मन्थार।

३२२३ प्रति सं० २। पत्र सं १९। से काल सं १८ १। वे सं २ ७१। ल मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ११९३) भीर है।

३२२४ प्रति सं० ३। पत्र सं २ से ११। से काल ×। प्रपूर्णा। वे सं १८। ल मन्थार।

३२२५ प्रति सं० ४। पत्र सं १८। से काल सं १८६३। वे सं १३७। ल मन्थार।

३२२६ प्रति सं० ५। पत्र सं १६। से काल सं १८६९ चावण सुधी १४। वे सं २ ४। ट
मन्थार।

विशेष—पाण्डु में मुनिमुद्रत चैत्यामत्र में भट्टारक मुनेश्वरीति के विषय में चम्पाराम के स्वयं प्रतिनिधि
की थी।

३२२७ वैद्यसंज्ञा.....। पत्र सं १९। मा १ ×३ इत्य। माया-संस्कृत। विषय-आसुर्वेद।
र काल ×। से काल सं १६ १। पूर्णा। वे सं १८७१।

विशेष—बेकाराम से सवाई जयपुर में प्रतिनिधि की थी।

३० ८ प्रति सं० २। पत्र सं १। से काल ×। वे सं २६७। ल मन्थार।

३२२६ वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । आ० १०×४ इच्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । ख भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर मे श्रीगजकुशलगरि के शिष्य गरिगसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३२३० प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७७३ माघ । वे० सं० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र सं० २० । आ० ६×८ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । ख भण्डार ।

विशेष—माणिक्यभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे ।

३२३२ वैद्यविनोद ... । पत्र सं० १८३ । आ० १०३×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । ख भण्डार ।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशकर । पत्र सं० २०७ । आ० ८३×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७२ । ख भण्डार ।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी सकेत भी दिये हुये हैं ।

३२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

३२३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १८७७ । वे० सं० १७३३ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ वैशाख सुदी ५ । वार चद्रवासरै वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखाजी के नायवरूपलमखा स्याहीजी श्री म्याहअलमजी की तरफ मिया साहवजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक । सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारलिखितं मिश्रलालजी कस्थ पुत्र रामनारायणे पठनार्थ ।

३२३६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ से ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७० । ट भण्डार ।

३२३७. शाङ्गवरसहिता—शाङ्गवर । पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७) भी हैं ।

३२८ प्रति स० । पत्र सं १७ । मे काज X । के सं १८१ । अ मण्डार ।

विष्य—इसी मण्डार म २ प्रतियो (के सं २७ २७१) पीर है ।

३२९ प्रति स० ३ । पत्र सं १-४ । मे काज X । अणुर्ण । के सं २०८२ । ट मण्डार ।

२४० शाङ्ग परसहिताटीका—नाडमक्ष । पत्र सं ४१३ । मा ११ X ४२ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विष्य—आयुर्वेद । ४ काज X । मे काज सं १८१२ पीर मुरी १३ । पूर्ण । के सं १३१२ । अ मण्डार ।

विष्य—दीपा का नाम शाङ्ग परसीपिका है । अस्मिन् पुस्तिका निम्न प्रकार है—

शाङ्गपरसहिताटीका येव भीमाउत्तिहासवेनाहमत्स्यक विरचितासाम शाङ्ग परसीपिकापुस्तकस्ये नैवप्रसारित
अविधि इतिवशात्प्रायः । प्रति मुम्बै है ।

४१ प्रति स० २ । पत्र सं १ २ । मे काज X । के सं ७ । अ मण्डार ।

विष्य—अपमण्डल तस्य ३ विमके ७ अणुव्य है ।

३२४२ शक्तिदात्र (अभयिदिता) —नडुस पटित । पत्र सं १ । मा १ X ४२ इंच । भाषा—
मद्रूप शिपी । विष्य—आयुर्वेद । १ काज X । मे काज सं १७२६ । पूर्ण । के सं १२३६ । अ मण्डार ।

विष्य—नासादर्या में नष्टमा कुलमनिर् क मापत्र हविष्मन् के प्रतिनिधि की थी ।

३२४३ शक्तिदात्र (अभयिदिता) —पत्र सं १८ । मा ७ X ४२ इंच । भाषा—मद्रूप ।

विष्य—आयुर्वेद । १ काज X । मे काज सं १७१८ पातर मुरी १ । पूर्ण । कीर्ण । के सं १०८३ । अ
मण्डार ।

३२४४ साक्षात्विधि—पत्र सं ३ । मा ११ इंच इंच । भाषा शिपी । विष्य—आयुर्वेद ।
१ काज । १ काज । पूर्ण । के सं ११७ । अ मण्डार ।

विष्य—अपमण्डल तस्य हारे के मापत्र म ४ काज है ।

३२४४ साक्षात्विधि (मद्रूप) —पत्र सं १ । मा १ X ४२ इंच । भाषा—मद्रूप । विष्य—आयुर्वेद ।
१ काज । १ काज । पूर्ण । के सं २३ । अ मण्डार ।

३२४५ साक्षात्विधि (मद्रूप) —पाठदशम । पत्र सं १४ । मा ११ २, १४ । भाषा—
मद्रूप । विष्य—आयुर्वेद । १ काज X । मे काज सं १७३२ पीर मुरी १३ । पूर्ण । के सं २३ । अ
मण्डार ।

विष्य—दीपा परसहिता है ।

३२४७ सन्निपातकलिका... । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । अ भण्डार ।

विशेष—जीवनपुर मे पं० जीवणदाम ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८. सप्तविधि... । पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१७ । अ भण्डार ।

३२४९ सर्धज्वरसमुच्चयदर्पण... । पत्र सं० ४२ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

३२५० सारसग्रह । पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७४७ कार्तिक । अपूर्ण । वे० सं० ११५६ । अ भण्डार ।

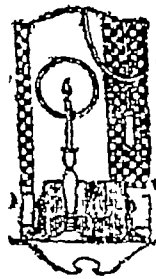
विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१ सालोत्तररास । पत्र सं० ७३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।
१० काल × । ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

३२५२ सिद्धियोग । पत्र सं० ७ मे ४३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ भण्डार ।

३२५३. हरडैकल्प । पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । अ भण्डार ।

विशेष—मालकागढी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)



विषय-छन्द एव अलङ्कार

३२५४ अमरचरित्रिका— । पत्र सं ७५ । भा ११×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सर्व
प्रसङ्गार । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं १३ । अ म्बहार ।

विशेष—चतुर्षु अधिकार तक है ।

३२५५ अलङ्काररत्नाकर—दक्षिणतराय बशीषर । पत्र सं ३१ । भा ८^३×३^३ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—प्रसङ्गार । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ३४ । अ म्बहार ।

३२५६ अलङ्कारवृत्ति—जिमवर्द्धन सुरि । पत्र सं २७ । भा १२×८ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—रस प्रसङ्गार । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ३४ । अ म्बहार ।

३२५७ अलङ्कारटीका— । पत्र सं १४ । भा ११×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रसङ्गार ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १६८१ । अ म्बहार ।

३२५८ अलङ्कारशास्त्र— । पत्र सं ७ से ११२ । भा ११^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रसङ्गार । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं २ १ । अ म्बहार ।

विशेष—प्रति बीर्ण शीर्ण है । बीच के पत्र भी नहीं है ।

३२५९ कविकर्पटी— । पत्र सं ६ । भा १२×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस प्रसङ्गार ।
र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं १८३ । अ म्बहार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३२६० कुवलयानन्द— । पत्र सं २ । भा ११×३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रसङ्गार ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १७८१ । अ म्बहार ।

३२६१ प्रति स० २ । पत्र सं ३ । से काल × । वे सं १७८२ । अ म्बहार ।

३२६२ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । से काल × । अपूर्ण । वे सं २ २३ । अ म्बहार ।

३२६३ कुवलयानन्द—अप्यय दीक्षित । पत्र सं ६ । भा १२×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रसङ्गार । र काल × । से काल सं १७४३ । पूर्ण । वे सं १५३ । अ म्बहार ।

विशेष—सं १८ ३ माह बुदी ३ की नैणसामर ने जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

अंश एव अलङ्कार]

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १२६ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ३१४ । ज

भण्डार ।

विशेष—प० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७ कुवलयानन्दकारिका । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अलङ्कार । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—प० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायण मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. चन्द्रावलीक . . . पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७० प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । आ० १० इ ५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कारशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३२७२ छदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १२×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६० । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्याकरणोनाम अष्टमोऽध्याय समाप्त । समाप्तोपग्रन्थ । श्री . भुवनकीर्ति

शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थ लिख्यत । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३ छदोशतक—हर्षकीर्ति (चद्रकीर्ति के शिष्य) । पत्र सं० ७ । आ० १० इ ४ इ च ।

भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४ छदकोश—रत्नशेखर सुरि । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । ङ भण्डार ।

३२७५ क्वचिन्मेषा— । पत्र सं २ से २६ । प्रा १ × ४२ इ च । मापा-मस्कृत । विषय-संद
शास्त्र । र काल × । ले काल × । प्रपूर्ण । के सं २७ । अ मन्थार ।

३२७६ नक्षिताक्षयक्ष्व— । पत्र सं ७ । प्रा २ × ४ इ च । मापा-प्राकृत । विषय-संद मापा
र काल × । ले काल × । के सं ४२७ । अ मन्थार ।

३२७७ विगल्लक्ष्मणरास्त्र—माखनकवि । पत्र सं ४६ । प्रा १३ × ४२ इ च । मापा-हिन्द
विषय-संदशास्त्र । र काल सं १५९३ । के काल × । प्रपूर्ण । के सं १४४ । अ मन्थार ।

निर्णय—४६ ने माने पत्र नहीं हैं ।

आदिभारा— श्री गणेशायनमः अथ विगत । सर्वथा ।

मंस श्री बुद्धेय नरोस विगत गुणत गिरा सरसाती ।
बंदन के पर पंक्त पावन माखन संद विगत बखानी ॥
कोविद बु द बु बनि की कल्पद्रुम का मनु का काल निवानी ।
नारद ईंद्र मयुष निखीतल मुत्तर सत नुवारस बानी ॥१॥

दादा— विगत सापर संभमसि करण बरस बभुत्त ।
रस उपमा उपमैय हैं मुत्तर अरब तरत ॥२॥
तार्ते रखा विचारि के तर बानी मरुत्त ।
उबाहरस बनु रसन के बरस मुमति समेत ॥३॥
विगत बरस मूपन कभित बानी मकित रसात ।
सदा मुकवि नोपल की श्री योपल कृपास ॥४॥
निम मुत माखन नाम है, उक्ति मुक्ति त हीन ।
एक सने योपल कवि सासन हरिम्ह बीन ॥५॥
विगत नाम विचारि मत्त गारी बानीहि प्रकस ।
रखा मुमति सी श्रीजिदे माखन संद विगत ॥६॥

दादागीत— नह मुकवि श्री योपल को मुप कई समस है वन ।
पर कूपल बंदन मुनिने उर मुमति बानी है तने ।
सति निम विगत सिधु में मगमीन हूँ करि संभरपी ।
अदि कवि संद विगत माखन कविन सी विनती करवी ॥

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देह ।
भूल्यो भ्रम ते ही वहा जहा सोधि किन लेहु ॥८॥
सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वारण श्रुति दिन रच्यो माखन छद विलास ॥९॥

पिंगल छंद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदो का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छंद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नही है ।

३२७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र स० १० । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९ पिंगलशास्त्र..... । पत्र स० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद

गान्ध । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५९ । अ भण्डार ।

३२८० पिंगलशास्त्र . । पत्र स० ४ । आ० १०^३×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१ पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र स० ७ । आ० १३×६ इ च ।

भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । २० काल स० १७९५ । ले० काल स० १८२९ । पूर्ण । वे० स० १८६९ । अ भण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।

डिडवाना दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल-ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत, छंद रत्नावलीः संपूर्ण ।

३२८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र स० ९८ । आ० ९×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

रस अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३ प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र स० ५ । आ० १३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—

छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४ प्राकृतछंदकोष—अल्हू । पत्र स० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंद

शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १९३ । पौष बुदीः ९ । पूर्ण । वे० स० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५ प्राकृतछंदकोष . । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १७९२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२६ प्राकृतपिंगलशास्त्र— । पत्र सं २ । मा० ११×४ $\frac{१}{२}$ इव । मापा—प्राकृत । विप-
 संवत्सर । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं० २१४८ । अ मन्त्रार ।

३२८० मायामुपय—असवतसिह राठौह । पत्र सं १६ । मा० ६×६ इव । मापा—हिन्दी ।
 विपम—मन्त्रार । २ काल × । से काल × । पूर्ण । बीर्ण । वे सं० ३०१ । अ मन्त्रार ।

३२८८ रघुनाथ विज्ञास—रघुनाथ । पत्र सं ३१ । मा० १०×४ इव । मापा—हिन्दी । विप-
 रसासद्धार । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ६६३ । अ मन्त्रार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसवर्षिणी भी है ।

३२८६ रत्नमन्त्रिका— । पत्र सं ६ । मा ११ $\frac{१}{२}$ ×३ $\frac{१}{२}$ इव । मापा—संस्कृत । विपम—संवत्सर ।
 २ काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं ६१६ । अ मन्त्रार ।

३२९ रत्नमन्त्रिका— । पत्र सं २७ । मा १२×५ इव । मापा—संस्कृत । विपम—संवत्सर ।
 २ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ४४ । अ मन्त्रार ।

विशेष—प्रसिद्ध पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमन्त्रिकायां सर्वो विचर्यामाभ्यस्तोऽमोघ्यात् ।

मङ्गलाचरण—ॐ वचरामेतिम्यो नमो नमः ।

३२९१ वाग्मन्त्रालङ्कार—वाग्मन्त्र । पत्र सं १६ । मा १२×४ $\frac{१}{२}$ इव । मापा—संस्कृत । विप-
 मन्त्रार । २ काल × । से काल सं १६४६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे सं ६३ । अ मन्त्रार ।

विशेष—प्रसिद्ध— सं १६४६ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथी शुक्लमासरे भिन्नतं वशिष्ठ
 मङ्गलरोठमध्ये स्वस्वधीः पठनीयं ।

३२९० प्रति स० २ । पत्र सं २६ । से काल सं १६४४ कार्तिक सुदी ७ । वे सं ६३३ । अ
 मन्त्रार ।

विशेष—मन्त्रक प्राम्ति बटी हुई है । नञ्जि धर्मी के धर्म भी दिने हुए हैं ।

३२९३ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । से काल सं १६४६ ज्येष्ठ सुदी ९ । वे सं १०२ । अ
 मन्त्रार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है या कि चारों ओर हासिये पर मिली हुई है ।

यह प्रतिरिक्त अ मन्त्रार म एक प्रति (वे० सं० ११६) अ मन्त्रार में एक प्रति (वे सं ६०२)
 में १३८) अ मन्त्रार में बी प्रतियाँ (वे सं ६ १४६), अ मन्त्रार में एक प्रति
 में एक प्रति (वे सं १४६) जोर है ।

छंद एवं अलङ्कार]

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० स० ४५ । अ
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हसा ने सादडी मे प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४६) और है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र स० ४० । आ० ६३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अलङ्कार । २० काल स० १७२६ कार्तिक बुदी ५ (दीपावली) । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण
वे० स० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत्सरे निघट्टगणवशाशाकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवगे सगुरौ सचित्रे ।

लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिर प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ॥

श्रीराजसिंहनुपतिजयसिंह एव श्रीटोडाक्षकात्यनगरी अषहिल्य तुल्या ।

श्रीवादिराजविवुधोऽपर वाग्भटोय श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदनु चावर्कचन्द्र' ॥

श्रीमद्भूमिभृपात्मजस्य धलिन श्रीराजसिंहस्य मे सेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिषूना हिता ।

हीनाधिकवचोयदत्र लिखित तद्वैबुधै क्षम्यता गार्हस्थ्यवनिनाथ सेवनाधियासक स्वष्ठतामाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकाया पोमराजश्रेष्ठिसुतवादिराजविरचितायां कविचन्द्रिकाया पचम परिच्छेदः
समाप्त । स० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखित महात्मौरूपनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभ भूयात् ॥

३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० स० २५६ । अ
भण्डार ।

३२६७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल स० १६६० । वे० स० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १७३१ । वे० स० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे खण्डेलवालान्वये सौगाणी गौत्र वाले
सम्राट गयासुद्दीन मे सम्मानित साह महिराणा साह पोभा सुत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि
करवायी थी ।

३२६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २० । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ६५६ । क भण्डार ।

३३०० प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० स० ६७३ । ड भण्डार ।

३३०१ वाग्भट्टालङ्कार टीका । पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पचम परिच्छेद तक) वे० स० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०२ पुत्तरनाकर—भट्ट केदार। पत्र सं ११। भा १ X ४ इ. च। मापा—संस्कृत। विषय—संस्कृत वास्तव। र काल X। ले काल X। पूर्ण। के सं १८३२। अ मन्थार।

३३०३ प्रति सं २। पत्र सं १३। ले काल सं १९८४। के सं १८४। अ मन्थार।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त अ मन्थार में एक प्रति (के सं २२) अ मन्थार में एक प्रति (के सं २७२) अ मन्थार में दो प्रतियाँ (के सं १७७ ३ ६) मौजूद हैं।

३३०४ पुत्तरनाकर—कालिदास। पत्र सं ६। भा १ X ३ इ. च। मापा—संस्कृत। विषय—संस्कृत वास्तव। र काल X। ले काल X। पूर्ण। के सं २७६। अ मन्थार।

३३०५ पुत्तरनाकर— "। पत्र सं ७। भा १२ X ३३ इ. च। मापा—संस्कृत। विषय—संस्कृत वास्तव। र काल X। ले काल X। पूर्ण। के सं २८३। अ मन्थार।

३३०६ पुत्तरनाकरटीका—मुनिहय कवि। पत्र सं ४। भा ११ X ६ इ. च। मापा—संस्कृत। विषय—संस्कृत वास्तव। र काल X। ले काल X। पूर्ण। के सं ६६८। अ मन्थार।

विशेष—मुनिहय कवि का नामक टीका है।

३३०७ पुत्तरनाकरटीका—समयमुन्दरगणेश। पत्र सं १। भा १ ४ X ३३ इ. च। मापा—संस्कृत। विषय—संस्कृत वास्तव। र काल X। ले काल X। पूर्ण। के सं २२१२। अ मन्थार।

३३०८ अथबोध—कालिदास। पत्र सं ६। भा ८ X ४ इ. च। मापा—संस्कृत। विषय—संस्कृत वास्तव। र काल X। ले काल X। पूर्ण। के सं १३६१। अ मन्थार।

विशेष—अथबोध विचार लक्ष्य है।

३३०९ प्रति सं ८। पत्र सं ४। ले काल सं १८४६ फागुण सुदी २। के सं ६२। अ मन्थार।

विशेष—यं दामोदर के पठनार्थ प्रतिमिति हुई थी।

३३१० प्रति सं ३। पत्र सं ६। ले काल X। के सं ३२६। अ मन्थार।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पण सहित है।

३३११ प्रति सं ४। पत्र सं ७। ले काल सं १८२३ भाद्रपद सुदी २। के सं ७२३। अ मन्थार।

३३१२ प्रति सं ७। पत्र सं २। ले काल सं १८ ४ ज्येष्ठ सुदी २। के सं ७२७। अ मन्थार।

विशेष—यं राजवंश के विजयती काल में प्रतिमिति की थी।

३३१३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८१ चैत्र सुदी १ । वे० सं० १७८ । व्य
मण्डार ।

विशेष—प० सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८११ । ट मण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके अतिरिक्त अ मण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ङ, च और ज मण्डार
में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) व्य मण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १५६, १८७)
और हैं ।

३३१५ श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । आ० ११३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्दशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ मण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—छन्दशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क मण्डार ।

३३१७ श्रुतबोधटीका ... । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्दशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । अ मण्डार ।

३३१८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क मण्डार ।

३३१९ श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
दशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख मण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं०
२३३ । छ मण्डार ।



३३०२. वृत्तरत्नाकर—महृ केदार । पत्र सं ११ । भा १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—वै
मास्य । र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं १८२२ । अ मञ्जार ।

३३०३ प्रति सं २ । पत्र सं १३ । से काम सं १९८४ । के सं १८४ । अ मञ्जार ।

विषय—इसके प्रतिरिक्त अ मञ्जार में एक प्रति (के सं १५) का मञ्जार में एक प्रति (के सं
२०२) का मञ्जार में का प्रतियां (के सं १७७ ३ ६) और हैं ।

३३०४ वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र सं १ । भा १ ×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—वै
मास्य । र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं २७६ । अ मञ्जार ।

३३०५. वृत्तरत्नाकर— । पत्र सं ७ । भा १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैशाख
र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं २८२ । अ मञ्जार ।

३३०६ वृत्तरत्नाकरटीका—सुबह्य कवि । पत्र सं ४० । भा ११×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—वैशाख । र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं १९८ । अ मञ्जार ।

विषय—सुबह्य सुब्य नामक टीका है ।

३३०७ वृत्तरत्नाकरटीका—समथसुन्दरगणि । पत्र सं १ । भा १ ×५ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—वैशाख । र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं २२११ । अ मञ्जार ।

३३०८. अतषोष—कालिदास । पत्र सं ६ । भा ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैशाख
र काम / । से काम × । पूर्ण । के सं १३६१ । अ मञ्जार ।

विषय—अष्टम्य विचार तक है ।

३३०९ प्रति सं २ । पत्र सं ४ । से काम सं १८४६ पाण्डु मुदी १ । के सं १९ । अ
मञ्जार ।

विषय—यं काश्याम के पठ्यार्थ प्रतिमिति हुई को ।

३३१० प्रति सं ३ । पत्र सं ६ । से काम सं १८६ । अ मञ्जार ।

विषय—श्रीवरात्र वृत्त टिप्पण लिखित है ।

३३११ प्रति सं ४ । पत्र सं ७ । से काम सं १८२२ पाण्डु मुदी १ । के सं ७२५ ।
मञ्जार ।

३३१२ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । से काम सं १८ / गण्ड मुदी २ । के सं ७२७ ।
मञ्जार ।

विषय—यं रामचंद्र के विषयी मन्त्र प प्रतिमिति की को ।

नाटक एवं सङ्गीत]

३३३० ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल स० १९१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १९१७ पीष ११ । पूर्ण । वे० स० २१६ । छ भण्डार ।

३३३१. प्रति सं० २ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १९३६ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ से ११५ । ले० काल सं० १९३६ । अपूर्ण । वे० स० ३४४ । म

भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द्र । पत्र स० ४१ । आ० १३×७^३ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र सं० ४० । आ० ११^३×७^३ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २२० । छ भण्डार ।

३३३५ ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल । पत्र सं० ८७ । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल स० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १९२८ वैशाख बुदी ८ । वे० स० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६ धर्मदशावतारनाटक*** । पत्र सं० ६६ । आ० ११^३×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

नाटक । २० काल स० १९३३ । ले० काल × । वे० स० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयती नाटक । पत्र सं० ३ से २४ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६८ । ट भण्डार ।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति । पत्र स० २६ । आ० ६×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १९०७ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८१४ । अ भण्डार ।

३३३९. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० सं० २१६ । म भण्डार ।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह । पत्र स० ४४ । आ० १३×८^३ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१ मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्र सं० ३६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८८५ । अ भण्डार ।

विषय-संग्रहित एवं नाटक



३३०१ अक्षयकुनाटक—भीमकसनकास। पत्र सं २३। मा १२×५ इंच। भाषा—हिंदी।

विषय—नाटक। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं १। अ मण्डार।

३३२२ प्रति सं० २। पत्र सं २४। से काल सं १११३ कालिक सुदी ६। के सं १०२। अ मण्डार।

मण्डार।

३३०३ अभिज्ञान साकुन्तल—कालिदास। पत्र सं ७। मा० १ १/२ × ४ १/२ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय नाटक। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। के सं ११७। अ मण्डार।

३३०४ कपूरमखरी—राखरोलर। पत्र सं १२। मा १२ १/२ × ४ १/२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-

नाटक। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं १८१३। अ मण्डार।

विषय—प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्ति ने प्रतिनिधि की थी। प्रत्य के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत में व्याख्या की हुई है।

३३०५ ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिषम्बरसूरि। पत्र सं ६३। मा १ २ × ४ १/२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र काल सं १६४८ मास सुदी ८। से काल सं १६६८। पूर्ण। के सं १८। अ मण्डार।

विषय—भाष्य में प्रतिनिधि हुई थी।

३३०६ प्रति सं० २। पत्र सं ६२। से काल सं १८८७ मास सुदी ३। के सं २३१। अ मण्डार।

३३०७ प्रति सं० ३। पत्र सं ३७। से काल सं १८६४ मास सुदी ६। के सं २३२। अ मण्डार।

विषय—दृष्यगुण्ड निवासी महारमा राधापुष्प के जयमकर में प्रतिनिधि की थी तथा इसे सभी जयमकर हीरान के मन्दिर में विराजमान की।

३६ ८ प्रति सं० ४। पत्र सं ६६। से काल सं ११३५ मास सुदी २। के सं २३। अ मण्डार।

३३०८ प्रति सं० ४। पत्र सं ४३। से काल सं १७६। के सं १३४। अ मण्डार।

विषय—मदुराज जगदीश के लिये भी ज्ञानकीर्ति ने प्रतिनिधि करके वं शारदाजी को भेंट करवा दी थी। इसके प्रतिनिधि हरी मण्डार में २ प्रतिभा (के सं १४७ ३३७) और है।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल स० १६१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १६१७ पीप ११ । पूर्ण । वे० स० २१६ । ड भण्डार ।

३३३१. प्रति सं० २ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १६३६ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४८ ने ११५ । ले० काल स० १६३६ । अपूर्ण । वे० स० ३४४ । झ भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द्र । पत्र स० ४१ । आ० १३×७ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र सं० ४० । आ० ११३×७ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २२० । ड भण्डार ।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—वख्तावरलाल । पत्र सं० ८७ । आ० ११×५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल स० १८५४ ज्येष्ठ मुदी २ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख बुदी ८ । वे० स० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक... । पत्र स० ६६ । आ० ११३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । र० काल स० १६३३ । ले० काल × । वे० स० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयती नाटक . . । पत्र सं० ३ ने २४ । आ० ११×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । ट भण्डार ।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—चैजल भूपति । पत्र स० २६ । आ० ६×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल स० १६०७ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८१४ । अ भण्डार ।

३३३९. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० २१६ । झ भण्डार ।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह । पत्र स० ४४ । आ० १३×८ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्र सं० ३६ । आ० १०३×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं २ से ७ २७ २८ नहीं हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२ प्रति सं० २। पत्र सं ४२। से काल सं १८२६। वै सं २६७। क मन्थार।

३३४३ प्रति सं० ३। पत्र सं ४१। से काल X। वै सं २७८। क मन्थार।

विशेष—प्रारम्भ के २३ पत्र नवीन मिले गये हैं।

३३४४ प्रति सं० ४। पत्र सं ४६। से काल X। वै सं १। क मन्थार।

३३४५ प्रति सं० ५। पत्र सं ४८। से काल सं १९१६। वै सं २४। क मन्थार।

३३४६ प्रति सं० ६। पत्र सं ३१। से० काल सं १८३६ माह सुदी ६। वै सं ४६। क मन्थार।

विशेष—सवाई जयदामर में बन्धुप्रभ चैतानन्द में वं शोकाचन्द के शेषक प रामचन्द ने सवाईराम के पञ्जार्थ प्रतिनिधि की थी।

३३४७ प्रति सं० ७। पत्र सं ४। से काल X। वै सं २१।

विशेष—सयबाल राष्ट्रीय मितल भोज बाले में प्रतिनिधि कराई थी।

३३४८ सदनपराक्रम..... पत्र सं ३ से २५। भा १ X ४२ इत्य। भाषा—प्रकृत। विषय नाटक। र काल X। से० काल X। सपूर्ण। वै सं १९९२। क मन्थार।

३३४९ प्रति सं० २। पत्र सं ७। से काल X। सपूर्ण। वै सं १९९२। क मन्थार।

३३५० सदनपराक्रम—प० स्वरूपचन्द्र। पत्र सं १२। भा ११२ X ८ इत्य। भाषा—हिन्दी।

विषय—नाटक। र काल सं १९१८ मंगसिर सुदी ७। से काल X। पूर्ण। वै सं ३७६। क मन्थार।

३३५१ रागमाळा..... पत्र सं ६। भा ८२ X २ इत्य। भाषा—संस्कृत। विषय—सङ्गीत। र काप X। से काल X। सपूर्ण। वै सं १९७६। क मन्थार।

३३५२ राग रागनिबो के नाम..... पत्र सं ८। भा ८२ X ६ इत्य। भाषा—हिन्दी। विषय—सङ्गीत। र काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं ३७। क मन्थार।



विषय-लोक-विज्ञान

३३५३ अढाईद्वीप वर्णन पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराढ्य द्वीप का वर्णन है । २० काल × । ले० काल स० १८१५ । पूर्ण । वे० स० ३ । छ भण्डार ।

३३५४ ग्रहोंकी ऊचाई एवं आयुवर्णन" पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-नक्षत्रों का वर्णन है । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११० । अ भण्डार ।

३३५५ चन्द्रप्रज्ञप्ति ' ' पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । २० काल × । ले० काल स० १६६४ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १९७३ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका-

इति श्री चन्द्रपण्यसती (चन्द्रप्रज्ञप्ति) सपूर्णा । लिखत परिष करमचद ।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १०० । च भण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७ तीनलोककथन . पत्र सं० ६६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५० । म् भण्डार ।

३३५८ तीनलोकवर्णन " . पत्र सं० १५४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है । २० काल × । ले० काल स० १८६१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १० । ज भण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रियावास घाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ में नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है । प्रारम्भ में लिखा है— दू डार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य प० सदासुख के शिष्य श्री प० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भादवा सुदी १० स० १९११ ।

३३५९. तीनलोकचार्त्त पत्र सं० १ । आ० ५×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २ से ७ २७ २८ तक हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२ प्रति सं० २। पत्र सं० ४३। से काल सं० १८२६। वै सं० २१७। क मन्थार।

३३४३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१। से काल X। वै सं० २७८। क मन्थार।

विशेष—भारत के २३ पत्र महीना निकले गये हैं।

३३४४ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। से काल X। वै सं० १। क मन्थार।

३३४५ प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। से काल सं० १९१६। वै सं० २४। क मन्थार।

३३४६ प्रति सं० ६। पत्र सं० ३१। से० काल सं० १८३६ साहसुषी ६। वै सं० ४८। क मन्थार।

मन्थार।

विशेष—सवाई जयनगर में बन्धुप्रभ चंदासजी में पं जोरानन्द के सेवक पं रामचन्द्र न सवाईराम के पञ्चार्थ प्रतिनिधि की थी।

३३४७ प्रति सं० ७। पत्र सं० ४। से काल X। वै सं० २१।

विशेष—सवाईराम राष्ट्रीय मित्तल गोत्र वाले थे प्रतिनिधि कराई थी।

३३४८ मदनपराजय—पत्र सं० ३ से २३। भा १ X ४३ दश। भाषा—प्राकृत। विषय—नाटक। र काल X। से काल X। मपूर्ण। वै सं० १९१३। क मन्थार।

३३४९ प्रति सं० २। पत्र सं० ७। से काल X। मपूर्ण। वै सं० १९१३। क मन्थार।

३३५० मदनपराजय—पं स्वरूपचन्द्र। पत्र सं० २२। भा ११३ X ८ दश। भाषा—हिन्दी।

विषय—नाटक। र काल सं० १९१८ मंसिर सुषी ७। से काल X। पूर्ण। वै सं० २७६। क मन्थार।

३३५१ रागसाक्षा—पत्र सं० ६। भा ३३ X २ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—सङ्गीत। र काल X। से काल X। मपूर्ण। वै सं० १९७६। क मन्थार।

३३५२ राग रागिनियों के नाम—पत्र सं० ८। भा ३३ X ६ दश। भाषा—हिन्दी। विषय—सङ्गीत। र काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं० ३७। क मन्थार।



विषय-लोक-विज्ञान



३३५३ अढाईद्वीप वर्णन । पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान—जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराद्वीप का वर्णन है । २० काल × । ले० काल स० १८१५ । पूर्ण । वे० स० ३ । ख मण्डार ।

३३५४ ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुर्वर्णन । पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—नक्षत्रों का वर्णन है । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११० । अ मण्डार ।

३३५५ चन्द्रप्रज्ञप्ति' । पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । २० काल × । ले० काल स० १६६४ भाद्रवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १९७३ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा । लिखत परिय करमचद ।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १०० । च मण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७ तीनलोककथन । पत्र सं० ६६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान—तीनलोक वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५० । झ मण्डार ।

३३५८ तीनलोकवर्णन । पत्र सं० १५४ । आ० ९ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान—तीन लोक का वर्णन है । २० काल × । ले० काल स० १८६१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १० । ज मण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ में नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है । प्रारम्भ में लिखा है— बू ढार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य क्षीरोमणि श्री यणोदानन्द स्वामी के शिष्य प० सदासुख के शिष्य श्री प० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भाद्रवा सुदी १० स० १९११ ।

३३५९. तीनलोकचार्त्त । पत्र सं० १ । आ० ५×९ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोकविज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५ । झ मण्डार ।

विशेष—त्रिसोकरार के मापार पर बनाया गया है। तीसलोक की आनकाटी के लिए बना उपयोगी है।

३३६० त्रिसोकरचित्र—। मा २ × ३ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—लोकविज्ञान। २० फुल ×। से फल सं १५७५। पूर्ण। के सं ३३६। अ मण्डार।

विशेष—रूपके पर तीसलोक का चित्र है।

३३६१ त्रिसोकरवीपक—बामदेव। पत्र सं ७२। मा १६ × ७ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—लोकविज्ञान। २ फल ×। से० फल सं १५३२ फापाठ मुदी ५। पूर्ण। के सं ५। अ मण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह लोक का चित्र सुन्दर है तथा उस पर धन बूटे भी हैं।

३३६२ त्रिसोकरसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं ५१। मा १३ × १ इंच। मापा—श्राकृत। विषय—लोकविज्ञान। २ फल ×। से फल सं १८१६ मंगसिर मुदी ११। पूर्ण। के सं ४६। अ मण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिचन्द्र की मूर्ति का चित्र है जिसके बाईं ओर बलमद तथा बाईं ओर श्रीकृष्ण हार जोड़े लड़े हैं। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे सक्की के सिंहासन पर बैठे हैं सामने सक्की के स्टैंड पर बन्द है आगे लिखी ओर कमण्डलु है। उनके आगे दो चित्र भी हैं जिसमें एक बामुन्दरान का तथा दूसरा भीर किसी घोटा का चित्र है। दोनों हार जोड़े गाड़ी माले बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके प्रतिरिक्त भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३३६३ प्रति सं २। पत्र सं ४५। से फल सं १८६६ म देवाच मुदी ११। के सं २५५। अ मण्डार।

३३६४ प्रति सं ३। पत्र सं ६२। से फल सं १८२६ फापाठ मुदी ५। के सं २५३। अ मण्डार।

३३६५ प्रति सं ४। पत्र सं ७२। से फल ×। के सं २८६। अ मण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६ प्रति सं ५। पत्र सं ९५। से फल ×। के सं २६। अ मण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई छुट्टों पर हाथिया में सुन्दर चित्राण हैं।

३३६७ प्रति सं ६। पत्र सं ९६। से फल सं १७३३ माह मुदी ५। के सं २५३। अ मण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में बसवा में रामचन्द्र कसा ने प्रसिद्धिपि करवायी थी।

३३६८ प्रति सं ७। पत्र सं १६। से फल सं १५३३। के सं १६४७। अ मण्डार।

विशेष—बालकाल एवं ऋषिर्मंडल पूजा भी है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २६२, २६३,) च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १४७, १४८) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४) और है ।

३३६६ त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन । पत्र सं० ३२ से २२८ । आ० ११×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १८२ । भू भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० २८६ । आ० १४×७ इ झ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

३३७४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३६४ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वाले ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा । पत्र सं० ४५२ । आ० १२^३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा ... । पत्र सं० १०८ । आ० ११^३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । क भण्डार ।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८ त्रिलोकसारभाषा ... । पत्र सं० १५० । आ० १२×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९ त्रिलोकसारभाषा (वचनिका) ... । पत्र सं० ३१० । आ० १०^३×७^३ इ च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ८५ । झ भण्डार ।

३३२० त्रिलोकसारवृत्ति—भाष्यचन्द्र त्रैविद्यादेव । पत्र सं २४ । मा० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम सं ११४२ । पूर्ण । के सं २८२ । क मण्डार ।

३३२१ प्रति स० २ । पत्र सं १४२ । से काम × । के सं १६ । छ मण्डार ।

३३२२ त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० १ । मा १ × ११२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम × । अपूर्ण । के सं ८ । छ मण्डार ।

३३२३ त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं ३७ । मा १२ $\frac{३}{४}$ × २ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम × । अपूर्ण । के सं ७ । छ मण्डार ।

३३२४ त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं २५ । मा १ × २ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम × । अपूर्ण । के सं २३३ । ट मण्डार ।

३३२५ त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं १३ । मा १३ × १ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम × । अपूर्ण । के सं २१७ । छ मण्डार ।

विषय—प्रति प्राचीन है ।

३३२६ त्रिलोकसारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं १३ । मा १३ $\frac{३}{४}$ × ८ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम × । पूर्ण । के सं २८४ । क मण्डार ।

३३२७ त्रिलोकसारपद्याख्या—उद्यतामल गंगाधराल । पत्र सं ३ । मा १३ × ७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २ काम सं ११४४ । से काम सं ११४ । पूर्ण । के सं ९ । छ मण्डार ।

विषय—यु पद्यात्मक श्रीमद्भागल एवं विमललातकी की प्रेरणा से रचना हुई थी ।

३३२८ त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं ३६ । मा १२ × ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम सं १८२ । कतिपय मुरी ३ । पूर्ण । के सं ७७ । छ मण्डार ।

विषय—जानासे नहीं है । केवल दर्शनग्रन्थ है । लोक के विषय में है । समुद्रीय वर्णन तक पूर्ण है । महाभारत के पठनार्थ जयपुर में प्रतिनिधि हुई थी ।

३३२९ त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं १३ से ३७ । मा १ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २ काम × । से काम × अपूर्ण । के सं ७६ । छ मण्डार ।

विषय—प्रति सचित्र है । १ से १४ १८ २१ २३ से २६ २८ से ३४ तक पत्र नहीं है । पत्र सं १३ ३६ तथा ३७ पर विज्ञ नहीं है । इनके प्रतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में भरक का दूसरे में ५३, मृगशरक दुग्धमंडीर और तीसरे में बौद्ध, मधुना जनतद्वारा के विज्ञ है । विज्ञ मुद्रण एवं दर्शनीय है ।

३३६०. त्रिलोकवर्णन . । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल X । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धगिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४ ३/४ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कही कही पीछे कपडा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १X१ फुट है । चित्र सभी विन्दुओं से बने हैं । नरक वर्णन नहीं है ।

३३६१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । व्य भण्डार ।

३३६२ त्रिलोकवर्णन " " । पत्र सं० ५ । आ० १७X११ १/२ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२X५ ३/४ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८६ । ड भण्डार ।

३३६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल X । वे० सं० २८७ । ड भण्डार ।

३३६५ भूगोलनिर्माण " " । पत्र सं० ३ । आ० १०X४ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प० हर्षागम गणित वाचनार्थ लिखित फोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वापर एव त्रेता में होने वाले अवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६ सधपण्टपत्र " " । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६ ३/४ X ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे पत्र नहीं हैं ।

३३६७ सिद्धात त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६४ । आ० १३X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३११ । व्य भण्डार ।



विषय- सुभाषित सर्व नीतिशास्त्र



३३६८ अक्षयम्बापत्नी—पत्र सं० २ । भा० १२×४३ इच । माया-हिस्वी । विषय-मुनापित ।

१० काल × । से कास × । पूर्ण । वै सं ११ । क मण्डार ।

३३६९. प्रति सं० २ । पत्र सं २ । से कास × । वै सं १२ । क मण्डार ।

३४०० उपदेराछ्चीसी—जिनहर्ष । पत्र सं ३ । भा १ ×४३ इच । माया-हिस्वी । विषय-

मुनापित । १० काल × । से कास सं १०३२ । पूर्ण । वै सं ४२८ । अ मण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—भी सर्वत्रैम्यो नमः । अथ भी जिनहर्षेण भीर वितायांभयवैश छ्चीसी कामहमेक सक्त्ये स्यात् ।

जिनस्तुति—

सकस अप मामे प्रभुता प्रभूप भूष

भुष अत्मा माहे हे न जगवीरा बु ।

पुष्य हि न पाप हे भविष्य हे न ताप हे,

जान के प्रताप बटे करम भविसमु ॥

शान नरे भयत्र पुन सुख भुष के भिडुंज

भक्तिभय भौठिस भुवि बचन से तितमु ।

येसे जिनराज जिनहर्ष प्रभुनि उपदेरा

भी भविसी नही सबद एषतीसमु ॥१॥

अधिरत्न कथन—

परे भिड नाचिनीज ठाडू परी भजार तीमे,

तो भतीमति करी भी रती उठरिनि हे ।

तु तो नहीं भित्ता हे बाणे हे र्हेवी बुड

मेरी २ कर रही अयमि रति नागी हे ॥

मान भी नीजीर जोल देल न कचहे

तेरी मोह बाण मे नसो बचगणी भजानी हे ।

पहे जीनहर्ष बर तम लपनी बार,

नागर भी दुही नोमू र्हे भी हा पस्ती ॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,
 भरम मै भूलि रहै कुल रूढ कीजीयै ।
 कुल टढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
 सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीयै ॥
 दया रूप सोइ धर्म धर्म तँ कटै है मर्म,
 भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीयै ।
 करि कै परीक्षया जिनहरष धरम कीजीयै,
 कसि कै कसोटी जैसे कचरण क लीजीयै ॥३५॥

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्णा चतुर नर
 है जे याकौ मध्य रस पीजीयै ।
 मेरी है अल्पमति तो भी मैं कोए कवित,
 कविताह सो हौ जिन ग्रन्थ मान लीजीपै ॥
 सरस है है वखाण जीऊ अक्सर जाण,
 दोइ तीन थाकै भैया सवैया कहीजीयौ ।
 कहै जिनहरष सवत्त गुण सिंसि भक्ष कीनी,
 जु सुण कै सावास मोकु दीजीयौ ॥३६॥
 इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्णा ।

सवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवण भले री देश ।
 सपत्त हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ॥
 सूरवलि तो सूहामणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।
 माडल तरणे प्रगरो पारणी अथग अथाह ॥२॥

३४०१ उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
 सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । च मण्डार ।

३४०२. कपूर्प्रकरण..... । पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ ।

विषय—१७६ पद्य है। अस्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री बन्धनेनस्य गुरोस्त्रिपद्यि

सार प्रथमस्तु सद्गुणस्य ।

सिष्येण च हृदयेम मिष्टा

सूतावसी नैमिषरिज वर्ता ॥१७६॥

इति नपू रासिच सुभाषित कोश समाप्ता ॥

३४०३ प्रति सं० २। पत्र सं २। से काल सं ११४७ ज्येष्ठ सुदी ३। वे सं १३। अ

मन्डार ।

३४०४ प्रति सं० ३। पत्र सं १२। से काल सं १७७१ भाद्रपण ४। वे सं २७१। अ

मन्डार ।

विषय—मूषरबत्त ने प्रतिनिधि की थी।

३४०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा—। पत्र सं २ से १७। मा १२×५ इ च। भाषा—हिन्दी

गद्य। विषय—नीति। र काल ×। से काल ×। मपूर्णा। वे सं २८। अ मन्डार।

३४०६ प्रति सं० २। पत्र सं ३ से ६। से काल ×। मपूर्णा। वे सं ६८। अ मन्डार।

३४०७ प्रति सं० ३। पत्र सं ३ से ६८। से काल ×। मपूर्णा। वे सं ६८। अ मन्डार।

३४०८ व्याख्याननीति—व्याख्यान। पत्र सं ११। मा १ × ४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

नीतिशास्त्र। र काल ×। से काल सं १८६६ मंगसिर सुदी १४। पूर्णा। वे सं ५११। अ मन्डार।

इसी मन्डार में ५ प्रतिभा (वे सं ६३ ६६१ ११ १६५४ १६५५) घोर है।

३४०९. प्रति सं० २। पत्र सं १। से काल सं १८४६ पीव सुदी ६। वे सं ७। ग

मन्डार।

इसी मन्डार में १ प्रति (वे सं ७१) घोर है।

३४१० प्रति सं० ३। पत्र सं ३४। से काल ×। मपूर्णा। वे सं १७५। अ मन्डार।

इसी मन्डार में २ प्रतिभा (वे सं ३७ १५७) घोर है।

३४११ प्रति सं० ४। पत्र सं ६ से ११। से काल सं १८८३ मंगसिर सुदी ३३। मपूर्णा। वे

सं ६३। अ मन्डार।

इसी मन्डार में १ प्रति (वे सं ६४) घोर है।

३४१२. प्रति सं० ५। पत्र सं १३। से काल सं १८७४ ज्येष्ठ सुदी ११। वे सं २४६। अ

मन्डार।

सुभाषित एवं नीतिशास्त्र]

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १३८, २४८, २५०) और हैं ।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता—चाणक्य । समग्रकर्त्ता—मथुरेश भट्टाचार्य । पत्र सं० ७ ।

आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१० ।

अ भण्डार ।

३४१४ चाणक्यनीतिभाषा " । पत्र सं० २० । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१९ । ट भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वें अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियो का अधिक प्रयोग हुआ है ।

३४१५ छद्मशतक—वृन्दावनदास । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १८६८ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १९४० मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । क भण्डार ।

३४१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ६ । वे० सं० १८१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १७९, १८०) और हैं ।

३४१७ जैनशतक—भूधरदास । पत्र सं० १७ । आ० ९×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७८१ पौष सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९७७ फागुण सुदी ५ । वे० सं० २१८ । क भण्डार ।

३४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१७ । ड भण्डार ।

विशेष—प्रति नीले कागजो पर है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१६) और है ।

३४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ५६० । च भण्डार ।

३४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८८९ । वे० सं० १५८ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २८४) और है जिसमे कर्म छत्तीसी पाठ भी है ।

३४२२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८८१ । वे० सं० १९४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६५१) और है ।

३४२३ ढालगाण " " " " पत्र सं० ८ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । क भण्डार ।

३४२४ सखधर्मसूत्र..... । पत्र सं ३३ । मा ११×३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

र कास × । से कास सं १६१६ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वे सं ४६ । अ मण्डार ।

विशेष—नेत्रक प्रशस्ति—

संवत् १६१६ वर्षे ज्येष्ठमासे सुप्रपदे इशान्यातिथी बुधवासरे चिदानन्दने परिचयागे यत्रा दिवसे । प्राचीनर
 चैत्यामये । अंशवतिनामनगरे श्रीमूससंघे सरस्वतीगण्डे बसन्त्यागणे श्रीकुन्वकुम्भाचर्यान्वये मृदा पपनन्दिदेवास्तत्पट्ट
 म श्री सुमन्त्रदेवास्तत्पट्टे म श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे म श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडसाचार्य श्री धर्म (बी) इ
 देवास्तत्पट्टे मंडसाचार्य श्री सन्निवर्तनीति देवास्तत्पट्टे मंडसाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे मंडसाचार्यान्वये मंडसा
 गोत्र साहू हरनाम भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेहराज । साहू समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र सधिसी
 वास । साहू मेहराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या साहमवेद् द्वितीक..... । मण्डार ।

३४२५ प्रति सं० २ । पत्र सं ३ । से कास × । मपूर्णा । वे सं २१४३ । ट मण्डार ।

विशेष—३ से मासे पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

सुदरमस्वमापन्नं प्रणिपत्यं पुरो पुंसं ।

सखधर्मसूत्रं नाम धर्म्ये संज्ञेयम् ॥

धर्मे मृते पापमुपैति नाशं धर्मे मृते पुण्यमुपैति बुद्धि ।

स्वर्गापवर्गं प्रवरोह सीस्यं धर्मे मृते ऐव न चास्पृशास्ति ॥२॥

३४२६ वराहोक्त । पत्र सं २ । मा १ × १३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र
 कास × । से कास × । मपूर्णा । वे सं १९४७ । ट मण्डार ।

३४२७ दृष्टान्तरातक..... । पत्र सं १७ । मा १२×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
 र कास × । से कास × । पूर्णा । वे सं ८३६ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी धर्म दिया है । पत्र १३ से मासे १३ फुटकर स्लोकों का संग्रह और है ।

३४२८ ध्यानतद्विज्ञास—ध्यानतराय । पत्र सं २ से ११ । मा ९×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 सुभाषित । र कास × । से कास × । मपूर्णा । वे सं ३४४ । अ मण्डार ।

३४२९ धर्मविज्ञास—ध्यानतराय । पत्र सं २३४ । मा ११३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 सुभाषित । र कास × । से कास सं १९३८ फागुण सुदी १ । पूर्णा । वे सं १४२ । अ मण्डार ।

३४३० प्रति सं० २ / पत्र सं १३९ । से कास सं १ म १ मासोज सुदी २ । वे सं ४५ । ग
 मण्डार ।

विशेष—वैतरामजी साहू के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैरपल्लय (चौधरियों का मन्दिर) के लिए
 विष्मन्नाल देवार्थी से बीसा में प्रतिमिति करवायी थी ।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र स० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । ड भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३४०) और है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र स० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । झ भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)..... । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० सं० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६३४ । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पचरत्न और है । श्री विरधीचद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार ... । पत्र स० ६ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ४ । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति स० ३ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल स० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । ड भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । व्य भण्डार ।

विशेष—भूलायनगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । ड भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । व्य भण्डार ।

३४४५ नीतियाख्यामृत—सोमदेव सूरि । पत्र सं १५ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १५४ । क मन्डार ।

३४४६ नीतिविनोद—। पत्र सं ४ । मा १×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र । र काल × । ले काल सं १११८ । के सं ३३३ । क मन्डार ।

विशेष—ममलान पाठ्या ने संग्रह करवाया था ।

३४४७ नीलसूक्त । पत्र सं ११ । मा ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २२५ । क मन्डार ।

३४४८ नौरोरवा बादशाह की दस ताज । पत्र सं ३ । मा० ४३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—उपदेश । र काल × । ले काल सं ११४६ बेगास सुबि १४ । पूर्ण । के सं ४ । क मन्डार ।

विशेष—गणेशनाम पाठ्या ने प्रतिसिपि की थी ।

३४४९ पञ्चतन्त्र—वं० विष्णु शर्मा । पत्र सं १ ६४ । मा १२×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं ८१८ । क मन्डार ।

इसी मन्डार में एक प्रति (के सं ६३७) भी है ।

३४५० प्रति सं० २ । पत्र सं ८९ । ले काल × । के सं ११ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४५१ प्रति सं० ३ । पत्र सं १४ से ११८ । ले काल सं १८३२ बेग सुबि २ । अपूर्ण । के सं ११४ । क मन्डार ।

विशेष—गुणवन्ध सूरि द्वारा संशोधित पुरोहित भागीरथ पन्नीबत्त ब्राह्मण ने सवाई जयमर (जयपुर) में पृथ्वीसिंहजी के सासनकाल में प्रतिसिपि की थी । इस प्रति का बीछोडार सं १८३५ फागुण सुबि ३ में हुआ था ।

३४५२ प्रति सं० ४ । पत्र सं २८० । ले काल सं १८८७ पीठ सुबि ४ । के सं ६११ । क मन्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में संसही बीकान प्रसरचंदजी के आग्रह से मयनगुज ब्यास के शिष्य माणिक्यवन्ध ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी ।

३४५३ पञ्चतन्त्रभाषा—। पत्र सं २२ से १४३ । मा १×७ इंच । भाषा—हिन्दी मध । विषय—नीति । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं ११७८ । क मन्डार ।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुबाव है ।

३४५४ पांचबोस—। पत्र सं १ । मा १×४ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—उपदेश । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ११६१ । क मन्डार ।

३४५५ पैसठबोल । पत्र सं० १ आ० १०×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—उपदेश । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] अरय लोमी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मत्री [४] पुत्र सुत्रा अरना लोभा [५] नीचा पेपा भाई वधव [६] असतोप प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बाच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगअही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट बलवंत सुत्र सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अगहीण मनुख होसी [२०] अल्प मेघ [२१] उस्ल सात वीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] सथा .. [२५] . [२६] . [२७] [२८] [२९] अराकीधा न कीधो कहसी [३०] आपको कीधो दोष पैला का लगावसी [३१] असुद्ध साप भणसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेष धारावैरागी होसी [३४] अहकार द्वेष मुख घणा [३५] मुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नही [३७] डुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निद्या घणी करेसी [४०] कुलवता नार लहोसी [४१] वेसा भंगतरण लज्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवत होसी [४७] मुहमाग्या मेघ नही होसी [४८] घरतो मे मेह थोडो होसी [४९] मनख्या में नेह थोडो होसी [५०] बिना देख्या चुगली करसी [५१] जाको सरणो लेसी तासू ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीणा बाजा होसासी [५३] न्याइ कहा हान क लेसी [५४] अववंसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतवा प्राप्त होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजोग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघणा [६०] अस्त्री सील हीण घणी होमी [६१] सीलवती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होसी [६३] ससार चलावाता ते दुखी जाण जोसी ।

॥ इति श्री पचावण बोल संपूरण ॥

३४५६ प्रबोधसार—यशःकोत्ति । पत्र सं० २३ । आ० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल अपभ्रंश का उल्या है ।

३४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।

३४५८ प्रनोत्तर रत्नमात्रा—सुलसीदास । पत्र सं २ । मा २६×१३ इंच । भाषा—गुजराती ।

विषय—सुभाषित । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२७० । ट मन्डार ।

३४५९ प्रनोत्तररत्नमाक्षिका—अमोघवर्ष । पत्र सं २ । मा ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २७ । अ मन्डार ।

३४६० प्रति सं २ । पत्र सं २ । से काल सं १९७१ मगसिर सुदी २ । वै सं २१९ । क

मन्डार ।

३४६१ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । से काल × । वै सं ११ । छ मन्डार ।

३४६२ प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । से काल × । वै सं १७६२ । ट मन्डार ।

३४६३ प्रस्तावित श्लोक— । पत्र सं ३६ । मा ११×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ३१४ । क मन्डार ।

विशेष—हिन्दी प्रर्ष संहित है । विभिन्न प्रर्षों में से उत्तम प्रर्षों का संग्रह है ।

३४६४ बारहसडी—सूरत । पत्र सं ७ । मा ६×९ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २२९ । क मन्डार ।

३४६५ बारहसडी— । पत्र सं २ । मा ३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र

काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २२६ । क मन्डार ।

३४६६ बारहसडी—पार्वदास । पत्र सं ३ । मा ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

र काल सं १८६१ पीप सुदी ६ । से काल × । पूर्ण । वै सं २४ ।

३४६७ सुभजनविज्ञान—सुभजन । पत्र सं ६८ । मा ११×२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

संग्रह । र काल सं १८६१ कार्तिक सुदी २ । से काल × । पूर्ण । वै सं ८७ । क मन्डार ।

३४६८ सुभजन सतसई—सुभजन । पत्र सं ४८ । मा ८×२३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । र काल सं १८७६ ज्येष्ठ सुदी ८ । से काल सं १९८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वै सं ४४४ । अ मन्डार ।

विशेष—७ दोहों का संग्रह है ।

३४६९ प्रति सं २ । पत्र सं २५ । से काल × । वै सं ७६४ । अ मन्डार ।

इसी मन्डार में २ प्रतिमां (वै सं ६३४ ६८४) भी हैं ।

३४७० प्रति सं ३ । पत्र सं ८ । से काल × । पूर्ण । वै सं ३३४ । क मन्डार ।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० ७२६ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६५४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० १६४० । ट

भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल X । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४ ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । आ० १३X५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७५५ वैशाख सुदी ३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल X । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं । प्रति गुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५३८) और है ।

३४७६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२० । ले० काल X । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोरामपुरा मे महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मित्ती माह सुदी ६ सं० १८८६ मे गोविन्दराम साहबडा (छावडा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे चढाया था ।

३४७९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल X । वे० सं० ७३ । व भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक । पत्र सं० ५६ । आ० ६३X४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१ भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८३X५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार में ८ प्रतिमा (के सं ६५५ ६८१ ६२८ ६४६ ७६३ १ ७४, १११६ ११७१)
भीर है ।

३४८२ प्रति सं० ० । पत्र सं १२ से १६ । से० काल × । मपूर्ण । के सं० ५६१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतिमा (के सं ५६२ ५६३) मपूर्ण भीर है ।

३४८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११ । से० काल × । के सं० २६३ । च भण्डार ।

३४८४ प्रति सं० ४ । पत्र सं २८ । से० काल सं १८७३ चैत मुरी ७ । के सं १३८ । क

भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (के सं २८८) भीर है ।

३४८५ प्रति सं० ५ । पत्र सं ५२ । से० काल सं १६२८ । के सं २८४ । च भण्डार ।

विषय—प्रति संस्कृत टीका सहित है । मुक्तकाल में कालप्रम चेत्यात्म में प्रतिमिति की थी ।

३४८६ प्रति सं० ६ । पत्र सं ४५ । से० काल × । के सं १६२ । च भण्डार ।

३४८७ प्रति सं० ७ । पत्र सं ८ से २६ । से० काल × । मपूर्ण । के सं ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८ भावशास्त्र—भी नागरास । पत्र सं १४ । मा ६×४ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २ काल × । से० काल सं १८३८ सावन कुटी १२ । पूर्ण । के सं ३७ । क भण्डार ।

३४८९ मनमोदनपञ्चशतीभाषा—द्वयप्रति चैतवाह । पत्र सं ८६ । मा ११×३ इञ्च । मापा—

हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २ काल सं १६१६ । से० काल सं १६१६ । पूर्ण । के सं ३६६ । क
भण्डार ।

विषय—सभी सामान्य विषयों पर संक्षेप का संग्रह है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (के सं ३६६) भीर है ।

३४९० मान वाचनी—मानकवि । पत्र सं २ । मा ६×३ इञ्च । मापा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । २ काल × । से० काल × । पूर्ण । के सं ३१६ । च भण्डार ।

३४९१ मित्रविद्यास—चासी । पत्र सं ३४ । मा ११×३ इञ्च । मापा—हिन्दी पद्य । विषय—
सुभाषित । २ काल सं १७६६ काण्ड मुरी ४ । से० काल सं १६३२ चैत कुटी १ । पूर्ण । के सं ३७६ । क
भण्डार ।

विषय—सेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता बहालसिंह की सहायता से लिखा था ।

३४९२ रत्नकोष— । पत्र सं ८ । मा १ × ३ इञ्च । मापा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २
काल × । से० काल सं १७२२ काण्ड मुरी २ । पूर्ण । के सं १३८ । च भण्डार ।

विशेष—विश्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा व्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है ।

३४६३ रत्नकोष . . । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि ।

३४६४ राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । आ० ५ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । क भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशायनम अथ राजनीत जसुराम कृत लीखत ।

दीहा—

अछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय ।
सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय ॥

छप्पय—

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी ।
कर करुनो करन तरन सब तारन तरनी ॥
शिर पर धरनी छत्र भरन सुख संपत भरनी ।
भरनी अमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ॥
धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी ।
सकल भय जग वध आदि वरनी जसु जे जग धरनी ॥ मात जे०

दीहा—

जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार ।
करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

अन्तिम—

लोक सीरकार राजी और सत्र राजी रहै ।
चाकरी के कीये बिन लालच न चाइयै ॥
किन हु की भली बुरी कहिये न काहु भागै ।
सटका दे लछन कछु न आप साई है ॥
राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग ।
येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये ॥
रीक खीक सिरकुं चढाय लीजे जसुराम ।
येक परापत कु येते गुन चाहीये ॥४॥

३४६४. राजनीति शास्त्र—वेधोदास । पत्र स १७ । मा ८३×९ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—राजनीति । र काम × । से काम स १६७३ । पूर्ण । वे सं ३४३ । अ मन्डार ।

३४६६ लघुसाप्तिकय राजनीति—बाणिकय । पत्र सं० ९ । मा १२×३३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—राजनीति । र काम × । से काम × । पूर्ण । वे सं ३३६ । अ मन्डार ।

३४६७ वृन्दसतसई—कवि वृन्द । पत्र सं ४ । मा १३३×१२ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सुभाषित । र काम सं १७९१ । से काम सं १८३४ । पूर्ण । वे सं ७७६ । अ मन्डार ।

३४६८ प्रति सं० २ । पत्र सं ४१ । से काम × । वे सं ९८३ । अ मन्डार ।

३४६९ प्रति सं० ३ । पत्र सं ६४ । से काम सं १८६७ । वे सं १६६ । अ मन्डार ।

३४७० वृहद् साप्तिकयनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय । पत्र सं ३८ । मा ८३×९ इंच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र । र काम × । से काम × । पूर्ण । वे सं १३१ । अ मन्डार ।

विषय—मणिकयचंद्र के प्रतिमिति की थी ।

३४७१ प्रति सं० २ । पत्र सं ४८ । से काम × । पूर्ण । वे सं १३२ । अ मन्डार ।

३४७२ पट्टिशास्त्रक टिप्पण्य—भक्तिशास्त्र । पत्र सं ३ । मा १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । र काम × । से काम सं १४७२ । पूर्ण । वे सं ३३८ । अ मन्डार ।

विषय—भक्तिम पुस्तिका—

इति पट्टिशास्त्रकं समाप्तं । श्री भक्तिशास्त्रीपाप्याय शिष्य प चारु चन्द्र शक्तिवि ।

इसमें कुल १६१ गाथाएँ हैं । अंत की गाथा में अम्बकर्ता का नाम दिया है । १६ की गाथा की रचयिता

टीका निम्न प्रकार है—

एवं सुगमा । श्री मेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व कुल विद्ये धर्मस्य ज्ञातानामृत । श्री जितबल्लभमूरि पुणानामुता

तदुते रिड विगुड्यादि परिवदेन धमतद्वयो ठतरतेन सर्ववर्म मूल सम्यक्तव्य बुद्धि दृढताद्येनुभूता ॥ १६ ॥ तस्या गाथा विरचमा चंडे दात सम्भव्य ।

व्यास्यम्बय पूर्वाऽवबुद्धि रैवानुभविष्यामभूता ।

सुधार्य ज्ञान यसा विज्ञेवा पठि यतवस्य ॥१॥

प्रसंगित— सं १२७२ काय श्री विष्णुनगरे श्री जय नायरोशाप्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रपाप्याय शिष्य श्री भक्तिशास्त्री
पाप्याय ज्ञान रचयिता वा विरचयितार र चारु चंद्रशक्तिविर्चयमाना विरं संरताम् । श्री कल्याण भवन श्री धर्मगुरु
सपस्य ।

३४७३ सुभाषीय—। पत्र सं २ । मा ८३×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित ।

र काम × । से काम × । पूर्ण । वे सं १८० । अ मन्डार ।

मुभाषित एव नीतिशास्त्र]

३५०५. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल X । वे० स० १५६ । छ मण्डार ।

विशेष—१३६ सोखो का वर्णन है ।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिपेण । पत्र सं० ३ । आ० ११३X५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुभाषित । र० काल X । ले० काल न० १८२२ । पूर्ण । वे० न० १०५७ । अ मण्डार ।

३५०६ प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० स० ७३१ । क मण्डार ।

३५०७ प्रति स० ३ । पत्र न० ४ । ले० काल स० १६५४ पौष बुदो ३ । वे० सं० ७२८ । क
मण्डार ।

३५०८ प्रति स० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० स० २६३ । छ मण्डार ।

३५०९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४६ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ३०४ । च
मण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११X८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६६ । ज मण्डार ।

३५११ सज्जनचित्तवल्लभ * । पत्र सं० ४ । आ० १०^३X४^३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुभाषित । र० काल X । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख मण्डार ।

३५१२. प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० १५३ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३ सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल । पत्र स० ६६ । आ० १२^३X५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
मुभाषित । र० काल स० १६०६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७२७ । क मण्डार ।

विशेष—हर्गूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर
चले गये थे वहाँ मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ७२६, ७३०) और हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचन्द्र । पत्र स० ३१ । आ० ११X७ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
मुभाषित । र० काल स० १६२१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क मण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल X । वे० स० ७२५ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३२१६ सद्भाषितावली—सकलकीर्ति । पत्र सं १४ । भा १ ३×२ इच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—सुभाषित । र काल × । से काल × । अपूर्णा । के सं ८२७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में १ प्रति (के सं १०२८) भी है ।

३२१७ प्रति सं २ । पत्र सं २३ । से० काल सं १०२ मंगलदिन सुबे ७ । के० सं ४०२ । अ
मन्थार ।

विशेष—बासीराम मति के मन्थार में यह एक पढाया था ।

३२१८ प्रति सं ३ । पत्र सं २२ । से० काल × । के सं १९४२ । अ मन्थार ।

३२१९ सद्भाषितावलीभाषा—पद्माक्षक चौबरी । पत्र सं १३९ । भा ११×८ इच । भाषा—
हिन्दी । विषय—सुभाषित । र काल × । से काल सं १२४२ ज्येष्ठ बुबे १३ । पूर्णा । के सं ७१२ । अ
मन्थार ।

विशेष—पृष्ठों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है ।

३२२० प्रति सं ४ । पत्र सं ११७ । से काल सं १२४ । के सं ७३३ । अ मन्थार ।

३२२१ सद्भाषितावलीभाषा—..... । पत्र सं २५ । भा १२×२३ इच । भाषा—हिन्दी पत्र ।
विषय—सुभाषित । र काल सं १२११ सावन बुबे ३ । पूर्णा । के सं ५२ । अ मन्थार ।

३२२२ सन्देशसमुच्चय—धर्मकक्षरासूरि । पत्र सं १८ । भा १ × ४२ इच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—सुभाषित । र काल × । से काल × । पूर्णा । के सं २७१ । अ मन्थार ।

३२२३ सभासार नाटक—रघुराम । पत्र सं १५ से ४३ । भा ५२×५३ इच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—सुभाषित । र काल × । से काल सं १८०१ । अपूर्णा । के सं २७ । अ मन्थार ।

विशेष—भारतमें पंचमेह पूर्व मन्दीस्वर्गीय पूजा है ।

३२२४ सभातरंग—..... । पत्र सं ३८ । भा ११×३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र
काल × । से काल सं १८७४ ज्येष्ठ बुबे ३ । पूर्णा । के सं १ । अ मन्थार ।

विशेष—योर्को के मेमिनाथ नैस्थानय सानातेर में हरिबन्दास के सिध्द कृष्णचन्द्र के प्रतिस्तिपि की थी ।

३२२५ सभाशृङ्गार—..... । पत्र सं ४६ । भा ११×४ इच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—
सुभाषित । र काल × । से काल सं १७३१ कार्तिक बुबे १ । पूर्णा । के सं १८७७ ।

विशेष—भारतमें—

सकलमणि मन्थार की भी थी साधु विजयमणिगुरुद्वयोत्तम । अथा सभाशृङ्गार एक लिखते । की अथवा—

देवाय नमः । ओ रस्तु ॥

सुभाषित एवं नीतिशास्त्र]

नाभि नदनु सकलमहीमडनु पचरात धनुप मानु तो... तोरी सुवर्णा समानु हर गवल श्यामल कुतलावली
विभूषित स्कधु केवलजान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकाह्लिमुक्ति[क्ति]मार्गनी देखाउडं । साध ससार शधरूप (अधरूप)
प्राणिवर्ग पडता दद हाथ । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवत श्री आदिनाथ श्री संघतरणी मनोरथ पुरो ॥१॥
वीतराग वाणा ससार समुत्तारिणी । महामोह विव्वसनी । दिनकरानुकारिणी । क्रोधाग्नि दावानलोपक्षामिनीमुक्तिमार्ग
प्रकाशिनी । सर्व जन वित्त सम्मोहकारिणी । आगमोदगारिणी वीतराग वाणी ॥२॥

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहाधकारविच्छेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । अछेद्य अभेद्य
प्राणिवर्ग हृदय भेदक अनतानत विज्ञान इसिउं अपनु केवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

अथश्री गुरा— १ कुलीना २ शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्त्तवती ६. विज्ञानवती ७
गुराग्राहणी ८. उपकारिणी ९ कृतज्ञा १० धर्मवती ११ सोत्साहा १२ सभवमंत्रा १३. क्लेशसही १४. अनुपतापीनी
१५ सूपात्र सधीर १६. जितेन्द्रिया १७ समूह्या १८. अल्पाहारा १९ अल्डोला २० अल्पनिद्रा २१ मितभाषिणी
२२ चितज्ञा २३ जीतरोपा २४ अलोभा २५ विनयवती २६ सरूपा २७. सौभाग्यवती २८ सूचिवेषा २९.
शुभाश्रया ३० प्रसन्नमुखी ३१ सुप्रमाणशरीर ३२. सूलषणवती ३३ स्नेहवती । इतियोद्गुरा ।

इति सभाशृङ्गार सपूर्ण ॥

ग्रन्थाग्रन्थ सख्या १००० सवत् १७३१ वर्षेमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलाभो के लक्षण एव सुभाषित के रूप मे विविध बातें दी हुई हैं ।

३५२६ सभाशृङ्गार । पत्र सं० २८ । आ० १०×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । ङ्ग भण्डार ।

३५२७ सवोधसत्तारु—वीरचद । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।

परमारथ परिण पदशुभु, सवोधसत्तारु बीसार ॥१॥

आदि अनादि ते आत्मा, अडवड्यु ऐहअनिवार ।

धर्म विद्वरणी जीवणी, वापडु पळ्यो ये ससार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचद ।

तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ६६ ॥

तह कृते कमल बीरसगरी बमसी जाती बीरबंद ।

सुगुहा भगवा ए मावना पीपीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री बीरबंद विरचिते सशोषसत्संगुदुमा सपूर्ण ।

३५२८ सिम्बूरप्रकरण—सामप्रभाषार्थ । पत्र सं १ । भा ६ × ४ ८ ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । र काल × । मे काल × । पूर्ण । बीर्ण । के सं २१७ । ट मन्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । क्षेमसागर के सिष्य श्रीतिसागर ने कथा में प्रतिनिधि की थी ।

३५२९. प्रति स० २ । पत्र सं ५ से २७ । मे काल सं १६३ । सपूर्ण । के सं २ १ । ट

मन्डार ।

विशेष—हर्षकीर्ति मूरि हृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

प्रन्तिम— इति सिम्बूर प्रकरणस्यस्य व्याख्याणां हर्षकीर्तिभिः सूरिर्निबद्धिताम् ।

३५३० प्रति स० ३ । पत्र सं ५ मे ३५ । मे काल सं १८७ धारण सुदी १२ । सपूर्ण । के

सं २ १९ । ट मन्डार ।

विशेष—हर्षकीर्ति मूरि हृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१ सिम्बूरप्रकरणभाषा—वनारसीदास । पत्र सं २९ । भा १ ३ × ४ ३ । भाषा हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । र काल सं १९६१ । मे काल सं १८३२ । पूर्ण । के सं ८२६ ।

विशेष—सशासुक्त भाषणा ने प्रतिनिधि की थी ।

३५३२. प्रति स० २ । पत्र सं १३ । मे काल × । के सं ७१० । क मन्डार ।

इसी मन्डार में १ प्रति (के सं ७१७) भी है ।

३५३३ सिम्बूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं २ ७ । भा १२ × ४ ३ इत्य । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । र काल सं १६२९ । मे काल सं १६३६ । पूर्ण । के सं ७६७ । क मन्डार ।

३५३४ प्रति स० २ । पत्र सं २ से ६ । मे काल सं १६३७ सातन सुदी ९ । के सं ८२३ ।

क मन्डार ।

विशेष—भाषाकार बहाबर के रहने वाले थे । बाद में वे मालवदेश के ह जावतिपुर में रहने लगे थे ।

इसी मन्डार में ३ प्रतियां (के सं ७६८ ८२४ ८५७) भी हैं ।

३५३५. सुगुहातक—अनदास भाषा । पत्र सं ४ । भा १ ३ × ५ इत्य । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—सुभाषित । र काल सं १८३२ श्रैत सुदी ८ । मे काल सं १६३७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । के सं

८१ । क मन्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली . . . । पत्र स० २६ । आ० ६×४^१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६७ । अ मण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र स० ५४ । आ० १०×३^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल स० १०७० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० २६) और है ।

३५३८ प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८२६ भाद्रवा सुदी १ । वे० स० ८२१ । क मण्डार ।

विशेष—सन्नामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ से ४६ । ले० काल स० १८६२ आसोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० ८७६ । क मण्डार ।

३५४० प्रति सं० ४ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १९१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ४२० । क मण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्डका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पाठ्या नाथूलाल से पार्वनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १८८ । आ० १२^३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । २० काल स० १९३३ । ले० काल × । वे० स० ८१८ । क मण्डार ।

विशेष—महले मोतीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी मण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं ।

३५४२ सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र स० ३८ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ मण्डार में १ प्रति (वे० स० १९७६) और है ।

३५४३. प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० २३१ । क मण्डार ।

इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० स० २३०, २६८) और हैं ।

३५४४ सुभाषितसम्रह । पत्र स० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २१०२ । अ मण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में मट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मन्थार में १ प्रति पूर्ण (के सं २२११) तथा २ प्रतिवां अपूर्ण (के सं ११९१ ११८) पीर हैं ।

३४४५. प्रति सं २ । पत्र सं ३ । के काल X । के सं ८८२ । अ मन्थार ।

३४४६ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । के काल X । के सं १४४ । अ मन्थार ।

३४४७ प्रति सं ४ । पत्र सं १७ । के काल X । अपूर्ण । के सं ११३ । अ मन्थार ।

३४४८ सुभाषितसमग्र --- । पत्र सं ४ । भा १ X ४२ इ च । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—सुभाषित । र काल X । के काल X । पूर्ण । के सं ८६२ । अ मन्थार ।

विशेष—हिन्दी में टप्पा टीका भी हुई है । यति कर्मचन्द्र ने प्रतिनिधि की भी ।

३४४९. सुभाषितसमग्र --- । पत्र सं ११ । भा ७ X ३ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र काल X । के काल X । अपूर्ण । के सं २११४ । अ मन्थार ।

३४५० सुभाषितावली—सफरकीर्ति । पत्र सं ५२ । भा १२ X ३२ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र काल X । के काल सं १७४८ मंगलिर सुदी ६ । पूर्ण । के सं १८५ । अ मन्थार ।

विशेष—मिश्रितविधे चौबे क्यमी बीबसी प्रसन्न, जाति सनाइय बरुहटा मध्ये । मिश्रितं पहम्प्या मयाचर । सं १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुद्ध ६ रविवारे ।

३४५१, प्रति सं २ । पत्र सं ३१ । के काल सं १८२ पीप सुदी १ । के सं २२४ । अ मन्थार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं गोविन्द के स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की भी ।

३४५२. प्रति सं ३ । पत्र सं ३३ । के काल सं १९०२ पीप सुदी १ । के सं २२७ । अ मन्थार ।

विशेष—नेहरू प्रसिद्धि निम्न प्रकार है—

उक्त १९२३ समये पीप सुदी २ शुक्लवास्तरे श्रीमूलधर्म बलात्कारगणो सरस्वतीगण्ये बुद्धुवाचार्यव्यये म्दृष्टारक भी पद्मनिदिबा तराट्टे म्दृष्टारक भी सुमचन्द्रदेवाः तत्पुट्टे म्दृष्टारक भी विमचन्द्रदेवा तदाम्नाये मंडलाचार्य भी सिद्धनिदिबा तराट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्तिदेवाः तद्विष्णुही पंचमपुत्रतमारिणी श्रीक्योसिदि तद्विष्णुमि बाई उक्त सिदि पठनार्थ प्रसोतनाम्बे मित्तमगोत्रे सापु भीबाने भार्या रचना तयो पुत्राः जयाः प्रथमपुत्र सापु भी रदमल मर्मा पदारण । द्वितीय पुत्र बाहमल भार्या मरीसिदि तथा पुत्र परत । तृतीयपुत्र तपनपु क्रियप्रतिपातकाल ऐकारक प्रतिमा धारकात् विमसात्म तमुद्धरणपीरान् सापु भी क्येडना भार्या सापु भी परमल तयो इयं प्रथं सिद्धापितं धर्मक्य निमित्तं । मिश्रितंकाण्येन उक्तव्यभीकेद्यं तत्पुत्र वनेत् ॥

३५५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० सं० २३५ । अ
मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्त । श्रीमच्छ्रीपद्मसागरसूरिविजयराज्ये सवत्
१६४७ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु । लेखक पाठकयो ।

सवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्या मालपुरेमध्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये शुद्धी-
कृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पाठेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचन्द्रेण ।

अ मण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है ।

३५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ८१३ । क मण्डार ।

इसी मण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ८१४) और है ।

३५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० २३३ । ख मण्डार

विशेष—प० मारणकचन्द की प्रेरणा से प० स्वरूपचन्द ने प० कपूरचन्द से जवनपुर (जोवनेर) मे
प्रतिलिपि कराई ।

३५५६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ८७४ । छ
मण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं ।

३५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७६५ आसोज सुदी ८ । वे० सं० २६५ । छ
मण्डार ।

३५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६०४ माघ बुदी ४ । वे० सं० ११४ । ज
मण्डार ।

३५५९ प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से ३०-। ले० काल सं० १६३५ वैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे०
सं० २१३४ । ट-मण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६० सुभाषितावली..... । पत्र सं० २१ । आ० ११३×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित-। २० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च मण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान सगही ज्ञानचन्दजी का है ।

अ मन्थार में २ प्रतिमां (के सं ४१८ ४१९) अ मन्थार में २ अपूर्ण प्रतिमां (के सं २३१ १२०१) तथा ट मन्थार १ (के सं १ ८१) अपूर्ण प्रतिमां धीर है।

३२६१ सुभाषितावलीभाषा—पद्मावली शौचरी। पत्र सं १२। मा १२३×२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। ८ काष्ठ ×। ले काष्ठ ×। पूर्ण। के सं ८२२। क मन्थार।

३२६२ सुभाषितावलीभाषा—दूतीचन्द्र। पत्र सं १३१। मा १२३×२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। ८ काष्ठ सं १६३१ ज्येष्ठ सुवी १। ले काष्ठ ×। पूर्ण। के सं ८८८। क मन्थार।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ८८९) भी है।

३२६३ सुभाषितावलीभाषा—। पत्र सं ४३। मा ११×४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। ८ काष्ठ ×। ले काष्ठ सं १८६३ प्र० भाषा सुवी २। पूर्ण। के सं ११। क मन्थार।

विशेष—२ २ बंधे हैं।

३२६४ सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य। पत्र सं १७। मा १२×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। ८ काष्ठ ×। ले काष्ठ ×। पूर्ण। के सं ११९। अ मन्थार।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है।

३२६५ प्रति सं २। पत्र सं १७। ले काष्ठ सं १९८४। के सं ११७। अ मन्थार।

विशेष—प्रकाशित मूल प्रकार है—

संवाद १९८४ बर्ये श्रीकृष्णदासने नवीनदृष्ट्यन्त्रे विद्यालयसे म श्रीरामसेनालयसे तत्पट्टे म श्री विश्वसूयण तत्पट्टे म श्री मकरःकीर्ति ब्राह्म श्रीमेवराज तत्पट्टे म श्री करमवी स्वयमेव हस्तोक्त विहित पठनार्थ।

अ मन्थार में ११ प्रतिमां (के सं १९३, १९४ १९५ २३ ७९१ १७२ २१ २ ४७ १२४८ २ ३३ ११२९) भी है।

३२६६ प्रति सं ३। पत्र सं २३। ले काष्ठ सं १६३१ सावन सुवी ८। के सं ८२२। क मन्थार।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ८२४) भी है।

३२६७ प्रति सं ४। पत्र सं १। ले काष्ठ सं १७७१ भाद्रपद सुवी २। के सं २९४। क विशेष—ब्रह्मचारी शैतली पठनार्थ मालगुज में प्रतिलिपि हुई थी।

३२६८ प्रति सं ५। पत्र सं २४। ले काष्ठ ×। के सं २२९। क मन्थार।

विशेष—श्रीमान मारुतराम सिद्धका के पुत्र कुंवर बलतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। मन्थार मोटे एवं सुन्दर है।

इसी मन्थार में २ अपूर्ण प्रतिमां (के सं २३२, २६५) भी है।

३५६६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ मे २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इ भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वै० सं० ८८३, ८८४, ८८५) और हैं ।

३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ५५ । वै० सं० ४२१ ।

च भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वै० सं० ४२२, ४२३) और हैं ।

३५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । वै० सं० १०३ । छ

भण्डार ।

विशेष—रैनवाल मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे (वै० सं० १०३) मे ही ४ प्रतिया और हैं ।

३५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी २ । वै० सं० १८३ । ज

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वै० सं० ३६) और है ।

३५७३ प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७६७ आश्विन सुदी ८ । वै० सं० ८० । ञ

भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वै० सं० १६५, २८६, ३७७) तथा ट भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वै० सं० १६६४, १६३१) और हैं ।

३५७४ सूक्तावली । पत्र सं० ६ । आ० १०X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
२० काल X । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वै० सं० ३४७ । अ भण्डार ।

३५७५ स्फुटश्लोकसंग्रह । पत्र सं० १० ले २० । आ० ६X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । २० काल X । ले० काल सं० १८८३ । अपूर्ण । वै० सं० २५७ । ख भण्डार ।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं० २ । आ० १३३X६३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ८१५ । अ भण्डार ।

३५७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र सं० ३६ । आ० १२३X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
नीति । २० काल X । ले० काल सं० १८७३ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—भारिक्यचन्द्र ने कुमार ज्ञानचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५८ प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल ×। वे सं २४६। अ मण्डार।

३५०३. द्विविधेशमाया - ३। पत्र सं २६। मा ६×३ इत्य। माया-हिन्दी। विषय-सुभाषित।

२ काल ×। स काल ×। पूर्ण। वे सं २१११। अ मण्डार।

३५८० प्रति स० २। पत्र सं ८६। ले काल ×। वे सं १८१२। ट मण्डार।



विषय-मन्त्र-शास्त्र



३५८१ इन्द्रजाल । पत्र स० २ से ४२ । आ० ८३×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७७८ वैशाख सुदी ६ । अपूर्णा । वे० सं० २०१० । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख साव वक्ष केसरीसिंह समाहितेन मनि मडन मिश्र विरचिते पुरदरमाया नाम ग्रन्थ वद्वित स्वामिका का माया ।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्त ।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं । कई कौतूहल की सी बातें हैं । मन्त्र संस्कृत में है अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५८२ कर्मदहनव्रतमन्त्र । पत्र स० १० । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १९३४ भाद्रवा सुदी ९ । पूर्णा । वे० सं० १०४ । ड भण्डार ।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र । पत्र स० ४ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १९०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० ११३७ । अ भण्डार ।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५८४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ख भण्डार ।

३५८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १९६६ । वे० सं० २८२ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है ।

३५८६ घटाकर्णकल्प । पत्र स० ५ । आ० १२३×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १९२२ । अपूर्णा । वे० सं० ४५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है । ५ यत्र तथा एक घटा चित्र भी है । जिसमें तीन घण्टे दिये हुये हैं ।

३५८७ घटाकर्णमन्त्र । पत्र स० ५ । आ० १२३×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २० काल × । ले० काल स० १९२५ । पूर्णा । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

३५८८ पटाकार्यवृद्धिकल्प" । पत्र सं १। मा १३×३ इच। भाषा हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल सं १११३ वैशाल सुदी १। पूर्ण। के सं १५। अ मन्धार।

३५८९ चतुर्विंशतियज्ञविधान" । पत्र सं ३। मा ११३×३३ इच। भाषा संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं १६६। अ मन्धार।

३५९० चिन्तामणिस्रोत्र" । पत्र सं २। मा ८३×९ इच। भाषा-संस्कृत। विषय मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं २८७। अ मन्धार।

विषय—ब्रह्मवचरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५९१ प्रति सं २। पत्र सं २। से काल ×। के सं २४५। अ मन्धार।

३५९२ चिन्तामणियन्त्र" । पत्र सं ३। मा १×३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल ×। प्रपूर्ण। के सं २१७। अ मन्धार।

३५९३ चौसठयोगिनीस्तोत्र" । पत्र सं १। मा ११×३३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ६२२। अ मन्धार।

विषय—इसी मन्धार में ३ प्रतिमा (के सं ११८७ ११९६ २ १४) जोर है।

३५९४ प्रति सं २। पत्र सं १। से काल सं १८३३। के सं ३१७। अ मन्धार।

३५९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान" । पत्र सं २। मा ११×३३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ६। अ मन्धार।

३५९६. एमोकारकल्प" । पत्र सं ४। मा ८३×९ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल सं ११४१। पूर्ण। के सं २८८। अ मन्धार।

३५९७. एमोकारकल्प" । पत्र सं ६। मा ११३×३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। से काल सं ११४। पूर्ण। के सं ३३३। अ मन्धार।

३५९८. प्रति सं २। पत्र सं २। से काल ×। प्रपूर्ण। के सं २७४। अ मन्धार।

३५९९. प्रति सं ३। पत्र सं ६। से काल सं १११३। के सं २३२। अ मन्धार।

विषय—हिन्दी में मन्त्रशास्त्र की विधि एवं फल दिया हुआ है।

३६००. एमोकारपैतृसी" । पत्र सं ४। मा १२×३३ इच। भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी।

विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं २३३। अ मन्धार।

३६०१. प्रति सं २। पत्र सं ३। से काल ×। के सं १२३। अ मन्धार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र स० ४५ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । अ भण्डार ।

३६०३ नवकारकल्प । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रक्षरो की स्याहो मिट जाने मे पढने मे नही आता है ।

३६०४ पचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६७६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० २४ । ज भण्डार ।

३६०५ पद्मावतीकल्प । पत्र स० २ मे १० । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६८२ । अपूर्ण । वे० स० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रणस्ति- सधत् १६८२ आसादेर्गलपुरे श्री मूलसधसूरि देवेन्द्रकीर्तिस्तदन्तेवामिभिराचार्य श्री हर्षकीर्तिभिरिदमलेखि । चिर नदतु पुस्तकम् ।

३६०६ वाजकोश । पत्र स० ६ । आ० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—सग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है ।

३६०७ भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र स० ६ । आ० ६३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०८ भूवल । पत्र स० ८ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य मे 'अयात. सप्रवश्यामि भूवलानि समासत.' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९ भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ यंत्र एवं विधि सहित है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ३२२, १२७६) और है ।

३६१०. प्रति स० २ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७६३ वैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६५ । क भण्डार ।

विषय—प्रति सचिव है।

इसी मन्डार में १ अपूर्ण सचिव प्रति (वे सं ३६३) भी है।

३६११ प्रति सं ३। पत्र सं ३३। से काम X। वे सं ३७५। छ मन्डार।

३६१२. प्रति सं ४। पत्र सं २८। से काम सं १८६५ बैठ कुरी ---। वे सं २६३। प
मन्डार।

विषय—इसी मन्डार में १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे सं २७) भी है।

३६१३ प्रति सं ५। पत्र सं १३। से काम X। वे सं १६३६। ट मन्डार।

विषय—बीजाधारों में ३३ पत्रों के बिना हैं। यत्रविधि तथा मंत्रों सहित है। संस्कृत टीका भी है।

पत्र ७ पर बीजाधारों में दोनों ओर दो विक्रमण यन्त्र तथा विधि भी हुई है। एक विक्रमण में ब्राह्मण पहिले बने हुये मन्त्र स्त्री का बिना है जिसमें बगहू २ मन्त्र मिले हैं। दूसरी ओर भी ऐसा ही मन्त्र बिना है। यत्रविधि ३। ३ से ६ व ९ से ४६ तक पत्र नहीं है। १-२ पत्र पर मंत्र मंत्र सूची भी है।

३६१४ प्रति सं ६। पत्र सं ४७ से ५७। से काम सं १८१७ ज्येष्ठ सुबी ३। अपूर्ण। वे सं १६३७। ट मन्डार।

विषय—सवाई जयपुर में पं श्रीबालचन्द्र के सिष्य मुखराम ने प्रतिमिति की थी।

इसी मन्डार में एक प्रति अपूर्ण (वे सं १६३९) भी है।

३६१५ औरबपद्याबसीकल्प ---। पत्र सं ४। मा २X४ इ व। माया संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। र काम X। से काम X। पूर्ण। वे सं ३७४। छ मन्डार।

३६१६ मन्त्रशास्त्र ---। पत्र सं ५। मा ८X३ इ व। माया—हिन्दी। विषय—मन्त्रशास्त्र। र काम X। से काम X। पूर्ण। वे सं ३३१। छ मन्डार।

विषय—निम्न मन्त्रों का संग्रह है।

१ श्रीकै नाहरसिंह की २ कामण विधि ३ मंत्र ४ हनुमान मंत्र ५ टिड्डी का मन्त्र ६ पनीता मूत्र व बुहेम का ७ मंत्र देवदत्त का ८ हनुमान का मन्त्र ९ सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १ सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारा कोना पर श्रीरङ्गदेव का नाम दिया हुआ है) ११ मूत्र जातिनी का यन्त्र।

३६१७ मन्त्रशास्त्र ---। पत्र सं १७ से २७। मा २२X३३ इ व। माया—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। र काम X। से काम X। अपूर्ण। वे सं ३८४। छ मन्डार।

विषय—इसी मन्डार में दो प्रतिमा (वे सं ३८३ ३८६) भी है।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—प० महीधर । पत्र स० १२० । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २ । पूर्णा । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

३६१९ प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ५८३ । ड भण्डार ।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है ।

३६२० मन्त्रसंग्रह * । पत्र स० फुटकर । आ० * । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । २० काल

× । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं । प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं ।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह) * । पत्र स० २० । आ० ११३×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ७९ । घ भण्डार ।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है ।

३६२२. यक्षिणीकल्प * । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—मन्त्र

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ६०५ । ड भण्डार ।

३६२३ यत्र मंत्रविधिफल * । पत्र स० १५ । आ० ६३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्र

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६६६ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ यत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं । कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं । मन्त्र बीजाक्षरों में हैं ।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक । पत्र स० ६ से २६ । आ० १० इ × ४ इ च । भाषा—संस्कृत

हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १४९५ । अपूर्णा । वे० सं० १९९७ । ट भण्डार ।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एव जोर्ण है ।

८वें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्य श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोन्वलविशदमना लिखत
वाक्कल्प ॥६६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्प ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जाय । भूगल गज बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाम हुई ।

पत्र ८ पक्ति ९— ओ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आवीज २ । जग मन मोहनी सूती बइठी उठी
जगमण हाथ जोडिकरि साम्ही आवइ । माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बाथदेवी कामाख्या माहरी शक्ति आर्काषि ।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकार ॥ अन्त्याग्रन्थ १७५ अक्षर १६
स० १४९५ वर्षे सगरकूपशालाया अणिल्लपाटकपरपर्याये श्रीमत्तनमहानगरेऽलेखि ।

पत्र २५— छुटिकाओं के बमलार हैं। बी स्तोत्र है। पत्र २६ पर मासिकेर मन्त्र दिया है।

३६२५ विद्ययमन्त्रविधान.....। पत्र सं ७। मा १०३×२ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ५०। अ मन्डार।

विशेष—इसी मन्डार में २ प्रतियां (के सं ५६५ ५६६) तथा अ मन्डार में १ प्रति (के सं ३३१) थीं हैं।

३६२६ विद्यानुशासन.....। पत्र सं ३७। मा ११×१३ इच। भाषा—संस्कृत। २ काल ×। स काल सं १२ २ प्र। भाषा बुकी २। पूर्ण। के सं ६३६। क मन्डार।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित मन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीसाक्षी ठोमिया के पठनाथ पं मोठीसाक्षी के द्वारा हीरामात कसखीबात से प्रतिलिपि कराई। पारिभसिक २४१-) लगा।

३६२७ प्रति सं० २। पत्र सं० २५५। के काल सं १६३३ मंत्रिर बुकी १। के सं ६५। घ मन्डार।

विशेष—मन्त्रावकाश ब्राह्मण में प्रतिलिपि की थी।

३६२८ धनसमह.....। पत्र सं ७। मा १३३×१३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ५४१। अ मन्डार।

विशेष—आनमग ३१ मन्त्रों का संग्रह है।

३६२९ पटकर्मकथन.....। पत्र सं ३। मा १३×२ इच। भाषा—संस्कृत। विषय मन्त्रशास्त्र। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं २१ ३। ट मन्डार।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३० सरस्वतीकथन.....। पत्र सं २। मा ११३×६ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ७७। क मन्डार।



विषय-कामशास्त्र

३६३१ कौकशास्त्र । पत्र सं० ९ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कौक । २० काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १९५९ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न विषयो का वर्णन है ।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलोकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिमस्कारविधि आदि ।

३६३२ कौकसार " । पत्र सं० ७ । आ० ९×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२९ । ङ भण्डार ।

३६३३. कौकसार—आनन्द । पत्र सं० ५ । आ० १३३×६३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१६ । अ भण्डार ।

३६३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

३६३५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २९४ । म् भण्डार ।

३६३६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७३९ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० १५५२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जट्ट व्यास ने नरायणा मे प्रतिलिपि की थी ।

३६३७. कामसूत्र—कविहाल । पत्र सं० ३२ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-काम शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । ख भण्डार ।

विशेष—इममे कामसूत्र की गायार्थे दी हुई हैं । इसका दूसरा नाम सत्तसअसमत्त भी है ।



विषय- शिल्प-शास्त्र



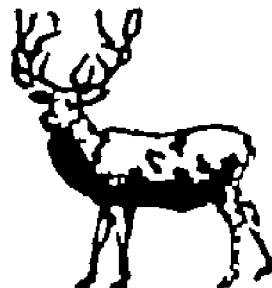
३६३= विम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं ९। मा ११३×७३ इ.च। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्प-शास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ५३३। क मण्डार।

३६३L. विम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं ९। मा ११×७३ इ.च। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्प-शास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ५३४। क मण्डार।

३६४० विम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं ३६। मा ८३×९३ इ.च। भाषा-संस्कृत। विषय-निसरक्या [प्रतिष्ठा] र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं २४७। च मण्डार।

विषय-कापी साहज है। पं बस्तूरचन्द्रजी साहू द्वारा लिखित हिन्दी मर्ष सहित है। प्रारम्भ में ३ पेट्टों की सुमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के बलोर्षों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। स्तोत्र ६१ है। पत्र २६ से ३६ तक विम्ब निर्माणविधि भाषा की गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमामों के विषय भी दिये गये हैं। (के सं २४२) च मण्डार। कसकारीपण विधि भी है। (के सं २४८) च मण्डार।

३६४१ वास्तुविन्यास.....। पत्र सं ३। मा ६३×४३ इ.च। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पशास्त्र। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं १४५। छ मण्डार।



विषय- लक्षण एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा । पत्र सं० ३ । आ० ७×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३ छंदशिरोमणि—शोभनाथ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लक्षण । २० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ... । ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

३६४४ छंदकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट भण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छंदकीयकवित्ते कामवेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिविरचिते समवृतप्रकरणे समाप्त । प्रारम्भ में कमलवध कवित्त में चित्र दिये हैं ।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य । विषय-समीक्षा । २० काल सं० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मात हमीरदे जाणि ।

कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तज्ञ वखाणि ॥

संवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।

फागुण तम एकादशी पूरण भई मुभाय ॥

धर्म परीक्षा वचनिका मुवरदास सहाय ।

साधर्मि जन समभि नै दशरथ कृति चितलाय ॥

टीका— विषया कै वसि पढ्या क्रियण जीव पाप ।

करे छै सह्यो न जाई ती थे दुखी हांइ मरे ॥

संक्षेप प्रशस्ति— संवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगोवारे दिवसा नगर्या (दौसा) जिन चैत्यालये लि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य प० (गिरधर) कटा हुआ ।

३६४६ प्रति स० ०। पत्र सं ४५। से काल सं १७१६ माघ सुदी ६। वे सं ३३। क
अम्बार।

विशेष—इति श्री अमितिगतिहस्ता धर्मपरीक्षा मूल तिहृषी बालबोधनामटीका तत्र चर्माभिर्बसरवैत इत्याः

समाप्ता।

३६४७ प्रति स ३। पत्र सं १३३। से काल सं १८२६ भाद्रपद सुदी ११। वे सं ३३१। क

अम्बार।

३६४८ धर्मपरीक्षा—अमितिगति। पत्र सं -३। भा १२×४६ ३५। भाषा संस्कृत। विषय-

समीक्षा। र काल सं १७। से काल सं १८८४। पूर्ण। वे सं २१२। अ अम्बार।

३६४८ प्रति स० २। पत्र सं ७५। से काल सं १८८६ वैश्व सुदी १५। वे सं ३३२। अ

अम्बार।

विशेष—इसी अम्बार में २ प्रतिमा (वे सं ७८४ ६४३) भीर हैं।

३६५० प्रति स० ३। पत्र सं १३१। से काल सं १९३९ भाद्रपद सुदी ७। वे सं ३३३। क

अम्बार।

३६५१ प्रति स० ४। पत्र सं २४। से काल सं १७८७ भाद्रपद सुदी १। वे सं ३२९। क

अम्बार।

३६५२ प्रति स० ५। पत्र सं १६। से काल ×। वे सं १७१। अ अम्बार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३६५३ प्रति सं ६। पत्र सं १३३। से काल सं १९२९ वैशाख सुदी २। वे सं ३३१। अ

अम्बार।

विशेष—सत्तावर्द्धन के सासनकाल में लिखा गया है। लेखक प्रकृति सम्पूर्ण है।

इसी अम्बार में २ प्रतिमा (वे सं १ ११) भीर हैं।

३६५४ प्रति स० ७। पत्र सं २१। से काल ×। वे सं ११३। अ अम्बार।

विशेष—इसी अम्बार में २ प्रतिमा (वे सं ३४४ ४७४) भीर हैं।

३६५५ प्रति स० ८। पत्र सं ७८। से काल सं १५९३ भाद्रपद सुदी १३। वे सं २१३७।

अ अम्बार।

विशेष—रामपुर में श्री चन्द्रप्रभ वैद्यालय में पत्र से निकलाकर इ श्री धर्मशास्त्र की विद्या। प्रथम

पत्र फटा हुआ है।

लक्षण एवं समीक्षा]

३६५६ धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी, पत्र सं० १०२। आ० १०३×४३ इंच। भाषा—

हिन्दी पद्य। विषय—समीक्षा। २० काल १७००। ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ७७३।

अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति अपूर्णे (वे० सं० ११६६) और है।

३६५७ प्रति सं० २। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६५४। वे० सं० ३३६। क भण्डार।

३६५८ प्रति सं० ३। पत्र सं० ११४। ले० काल सं० १८२६ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ५६५। च

भण्डार।

विशेष—हसराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। पत्र चिपके हुये हैं।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५६६) और है।

३६५९ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६३। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ३४५। क भण्डार।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १३६) और है।

३६६० प्रति सं० ५। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १८२५। वे० सं० ५२। क भण्डार।

विशेष—बखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) और है।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ३८६। आ० ११×५३ इंच। भाषा—

हिन्दी गद्य। विषय—समीक्षा। २० काल सं० १६३२। ले० काल सं० १६४२। पूर्ण। वे० सं० ३३८। क भण्डार।

३६६२ प्रति सं० २। पत्र सं० ३२२। ले० काल सं० १६३८। वे० सं० ३३७। क भण्डार।

३६६३ प्रति सं० ३। पत्र सं० २५०। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ३३४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३३३, ३३५) और हैं।

३६६४ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६२। ले० काल ×। वे० सं० १७०७। ट भण्डार।

३६६५ धर्मपरीक्षाभाषा—ब्र० जिनदास। पत्र सं० १६। आ० ११×४३ इंच। भाषा—हिन्दी।

विषय—समीक्षा। २० काल ×। ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११। अपूर्णा। वे० सं० ६७३। अ भण्डार।

विशेष—१६ व १७वां पत्र नहीं है। अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जोरावाल स्तोत्र है।

आदिभाग—

धर्म जिरोसर २ नमूने सार,
तीर्थकर जे पनरमु वांछित फल बहु दान दातार,
सारदा स्वामिणि वली तबु बुधिसार,

मुक्त वेतमात्रा भीमराजपर स्वामी भवसकलधी सकलकीर्ति भवतार,
मुनि भवनकीर्ति पाम प्रणमति कहिसू रसहू सार ॥१॥

इहा—

परम परीक्षा करू निस्मन्ती भवीमण सुगु ठहू सार ।
बहु जिणदास कहि निरमहु जिम बाणु विचार ॥२॥
कमक रतन भाणिक प्रादि परीक्षा करी सीजिसार ।
तिम परम परीपीद सत्य सीजि भवतार ॥३॥

प्रन्तिम प्रघट्टि—

इहा—

भी सकलकीर्तिपुत्रप्रणमीनि मुनिभवनकीरठिमवतार ।
बहु जिणदास भाणिक भहु रासकीर सनिचार ॥६ ॥
परमनदीसारसनिरमहु परमकणु निजात ।
पदि पुण्डि वै सांमसि तेहनि उनजि सति ज्ञान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रस समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सुरतस्थाने श्री श्रीतत्त्वनाथ चैत्यासने प्राचार्य श्री विनयकीर्ति
'दित वैपराजकेन लिखित स्वयमिदं ।

३६६६ धर्मपरीक्षामाया—। पत्र सं १ ते ३ । पा ११×५ इ च । माया—हिन्दी । विषय—
समीक्षा । र काल × । ले काल × । मपूर्णा । वै सं ३३२ । क मण्डार ।

३६६७ मूलके सङ्ख्य—। पत्र सं २ । पा ११×२ इ च । माया—संस्कृत । विषय—सहाणप्रण्य ।
र काल × । ले काल × । पूण । वै सं २७२ । क मण्डार ।

३६६८ रत्नपरीक्षा—रामकवि । पत्र सं १७ । पा ११×४२ इ च । माया हिन्दी । विषय—सहाण
व्य । र काल × । ले काल × । पूर्णा । वै सं ११५ । क मण्डार ।

विशेष—दृष्ट्युदी में प्रतिमिति हुई थी ।

प्रारम्भ—

गुरु पाण्डित सरस्वति धामरि मनी कथ हे बुद्धि ।
सरसबुद्धि धरद रत्ना रतन परीक्षा मुनि ॥१॥
रतन बीदिना पत्र मे रतन परिष्का जान ।
सगुद देव परतात ते भावा बरनी धानि ॥२॥

समाप्त—

रतन परीक्षा रंमणु बीगडी राम नरिद ।
दृष्ट्युदी में धानि है जिणी बु माभारत ॥६१॥

३६६६. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०५३ । ए भण्डार ।

विवेच—१२ से आगे पत्र नहीं है ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ पीप सुदी १ । पूर्ण । वै० सं० ६४१ । अ भण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी १३ । वै० सं० २३६ । ज भण्डार ।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण * । पत्र सं० ६ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६४२ । क भण्डार ।

३६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ६४३ । क भण्डार ।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण * । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६४४ । क भण्डार ।

३६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ६४५ । क भण्डार ।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

३६७७ शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वै० सं० ११४१ । अ भण्डार ।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक सपूर्णम्

प्रसस्ति— संवत्सरे सप्तशतकवर्षेण्डु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्या पडितजी श्री हीरामन्दजी तन्त्रिष्य पडितजी श्री चोक्षचन्द्रजी तन्त्रिष्य पडित विनयवताजिमदासेन लिपीकृतं । भूरामलजी या आका ॥

३६७८ स्त्रीलक्षण । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११८१ । अ भण्डार ।



विषय- फागू रासा एवं वेलि साहित्य

3509, धुञ्जना रास-शास्त्रिकृतम् । पत्रां १२ से २० ॥ पा १०५४ देव । भाषा-हिन्दी ।

विषय-भाषा । २ वाक्य सं १९९३ ग्राह सुदी २ । से १ वाम सं १९७१ । प्रवर्गा ३ से सं २१२ ॥ क सं २१२ ॥

विशेष-प्रथिम प्रथमिद निम्न प्रकार है-

रास रथु ष्ठी चक्रना मर भूमी चतुर्द जोई रे ।

प्रविर्तुं गच्छं के कथ मुम् निम्पा बोक्क जोई रे ॥

संभन् सामर सठर सठि भाहा मुवि ती बीज बलस्यु रे ।

मोहन गिरिराठ मोभीउ जइ सोमर पूर बसगु रे ॥

सत गण भासक पुणु निपउ विभव मेन मूठी करणामर रे ।

प्राकारिज महिमा भणो विज देव सुदी पर छाजइ रे ॥

ठाव पकादणि बीपनु पत महिमा नीपति बटिजव ।

ब्रान प्रममर उरि परया देव कर पाटली प्रवतरिउ रे ॥

विमवसुगाम पठिन कर परमापी पुणुवरिउ रे ।

बरणु बमम मेका मही शोविपुगाम इव रास करिउ रे ॥

प्रविबमवैरति प्रकता या रीव सने हीकर भासा रे ।

वई पुगीर के सावपेई रहि सगिनी तंग वई बीसर रे ॥

3510 आरीधर रास-ज्ञानभूषण । पत्र सं ११ । पा ११५२ देव । भाषा-हिन्दी । विषय-

भाषु (बंगाल प्रादेशिय की भाषा है) । २ वाक्य सं १११२ गेयाम सुदी १ । पूर्ण । से सं ७१ । क सं २१२ ॥

विशेष-भी मूमबने चट्टारिक पी ब्रानपुगाम पुञ्जिना वार्द कल्याणुमनी बभामावई मिलि ।

3511 प्रति सं ७१ पत्र सं १११२ गेयाम सुदी १ । पूर्ण । से सं ७१ । क सं २१२ ॥

3512 रामप्रहृतिविधानरास-बनारसीशाम । पत्र सं ११ । पा १५४ देव । भाषा-हिन्दी ।

विषय-भाषा । २ वाक्य सं १११२ गेयाम सुदी १ । पूर्ण । से सं ११२० । क सं २१२ ॥

३६८३ चन्द्रनवालारास . पत्र मं० २ । आ० ६३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—सती
चन्द्रनवाला की कथा है । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६५ । अ भण्डार ।

३६८४ चन्द्रलेहारास—मतिकुशल । पत्र स० २६ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
सा (चन्द्रलेखा की कथा है) २० काल म० १७२८ आमोज बुदी १० । ले० काल स० १८२६ आसोज मुदी । पूर्ण ।
० स० २१७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अकवरावाद में प्रतिलिपि की गयी थी । दगा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एव अशुद्ध है ।
प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं ।

सामाजिक मुधा करो, त्रिकरण सुद्ध त्तिकाल ।

मधु मित्र समतागणि, तिमनुटै जग जाल ॥३॥

मरूदेवि भरथादि मुनि, करी समाइक सार ।

केवल कमला त्रिण वरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥

सामाजिक मन सुद्ध करी, पामी द्वाम पकत्त ।

तिय ऊपरिन्दु माभलो, चद्रलेहा चरित्र ॥५॥

वचन कला तेह वनिछै, सरसध रसाल ।

तीरो जारु सक्त पडसो, सोभलता खुस्याल ॥६॥

अन्तिम—

सवत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद आसू दसम विचार ।

श्री पमीयाख में प्रेम सु, एह रच्यौ अधिकार ॥१२॥

खरतर गरापति सुखकरूजी, श्री जिन सूरिद ।

वडवती जिम साखा स्रमनीजी, जो धू रजनीस दिगाद ॥१३॥

सुगुरा श्री सुगुराकीरति गराजी, वाचक पदवी धरत ।

अतयवासी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महत ॥१४॥

प्रयमत सुसी अति प्रेम स्यु जी, मतिकुसल कहै एम ।

सामाजिक मन सुद्ध करो जी, जीव वए भ्रइ लेहा जेम ॥१५॥

रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अभ्यास ।

छसय चौबीस गाहा अछै जी, उगुरातीस ढाल उल्हास ॥१६॥

भरौ गुरौ सुरौ भावस्यु जी, गरुआतण गुरा जेह ।

मन सुध जिनधर्म तैं करै जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ॥१७॥

सर्व गाथा ६२४ । इति चन्द्रलेहारास संपूर्ण ॥

३६८५ अन्नरासरास—ज्ञानभूषण । पत्र सं २ । भा १ १/४३ इ च । माया—हिन्दी गुजरती ।

विषय—रासा । २० कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १२७ । अ मन्थार ।

विशेष—बल खानने की विधि का बर्णन रास के रूप में किया गया है ।

३६८६ चम्पारासिमन्थरास—मिनराजसूरि । पत्र सं २६ । भा ७ १/४३ इ च । माया—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० कास सं १९७२ मासोज सुबी ६ । से कास × । पूर्ण । के सं १२४८ । अ मन्थार ।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयपणि ने गिरपुर नगर में प्रतिमिपि की थी ।

३६८७ चर्मरासा— । पत्र सं २ से २ । भा ११/४ इ च । माया—हिन्दी । विषय—चर्म । २

कास × । से कास × । अपूर्ण । के सं १२४८ । अ मन्थार ।

विशेष—पहिला कड़ा तथा २ से माये के पत्र नहीं हैं ।

३६८८ नवकाररास— । पत्र सं २ । भा १ १/४३ इ च । माया—हिन्दी । विषय—सुमाकार मन्थ

महस्य बर्णन है । २ कास × । से कास सं १८११ फागुण सुबी १२ । पूर्ण । के सं ११२ । अ मन्थार ।

३६८९ नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि । पत्र सं ४ । भा १ १/४३ इ च । माया—हिन्दी । विषय—

रासा (मयनाथ नेमिनाथ का बर्णन है) । २ कास × । से कास सं १८२६ पीप सुबी २ । पूर्ण । के सं

१२६ । अ मन्थार ।

विशेष—जयपुर में साहिबराज ने प्रतिमिपि की थी ।

३६९० नेमिनाथरास—अपि रामचन्द्र । पत्र सं ३ । भा २ १/४ इ च । माया—हिन्दी ।

विषय—रासा । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं २१४ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रादिमान—

दूहा— अर्धित सिध ने प्रापटीया जगन्नाथ मणुषार ।

पविषद तेहूँनमु मठीतर सो बार ॥१॥

मोखनामी बोनु हुवा राजमठी रहू मेम ।

विशैकतर लीया मणी सामन वे चर प्रेम ॥२॥

बल विछेनुए मुनिरासा— ।

मुनकाटी सोरठ देवे राज कीसन रम मन मोहीनाम ।

दीरती ननरी दुवारबाए ॥१॥

तमुद बिजे तिहाभुप सेवा देरी राणी करेए ।

बहाराली मानी जठोए ॥२॥

जाण जन(म)मीया अरिहन्त देव इह चोसट सारे ।

ज्यारी नेव मे बाल ब्रह्मचारी बावा समोए ॥३॥

अन्तिम—

सिल ऊरर पच ढालियो दीठो दोय सुत्रा मे निचोडरे ।

तिण अनुमार माफक है, रिषि रामचंजी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तत् सीपणी द्याटाजीरी चेलीह सतु लीखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि
हुई थी ।

३६६१. नेमीश्वरफागु—ब्रह्मारायमल्ल । पत्र स० ८ से ७० । आ० ६×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—फागु । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८३ । ङ भण्डार ।

३६६२ पचेन्द्रियरास । पत्र स० ३ । आ० ६×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (पाचो

इन्द्रियो के विषय का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५६ । अ भण्डार ।

३६६३ पत्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० ८^३×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४३ । ङ भण्डार ।

विशेष—पत्यविधानव्रत का वर्णन है ।

३३६४ बंकचूलरास—जयकीर्ति । पत्र स० ४ से १७ । आ० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा (कथा) । २० काल स० १६८५ । ले० काल स० १६६३ फागुण बुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० २०६२ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास ।

धीरनि वादी भावसु पुहुत राजग्रह वास ॥१॥

सवत सोल पच्यासीइ गुर्जर देस मभार ।

कल्पचह्नीपुर सोमती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥

नरसिघपुरा वारिणिक वसि दया धर्म सुखकद ।

चैत्यालि श्री वृषभवि आवि भवीयण वृ द ॥३॥

काष्ठासघ विद्यागणे श्री सोमकीर्ति मही सोम ।

विजयसेन विजयाकर यशकीर्ति यशस्तोम ॥४॥

उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्ति विख्यात ।

रत्नभूषण गच्छपती हवा भुवनरयण जेहजात ॥५॥

तस पट्टि मूरीबरमसु जयकीर्ति जयकार ।
 जे मविपण भवि सांमसी ते पानी भवपार ॥६॥
 रूपकुमार रसीया माणु बंकभूम बीधु नाम ।
 तेह रास रण्डु बबडु जयकीर्ति मुखभाम ॥७॥
 मोम भाव निर्मल हुई गुणबने निर्धार ।
 गांमसठा संपद् मलि जे मणि तरतिनार ।८॥
 बाहुधापर नम महीबंध सूर जिनमास ।
 जयकीर्ति कहिता एहु बंकभूमणु रास ॥९॥
 इति बंकभूमरास समाप्त ।

संवत् १९६३ वर्षे काष्ठेण बुधौ १३ पिपसाह प्राप्ते मघाते मट्टारक श्री जयकीर्ति उपाध्याय श्री भीरबंद
 बह्म श्री जसवंत नाह क्यूरा वा बीच रास बह्म श्री जसवंत मघाते ।

३६६४ मविप्यवृत्तरास—मघारासमाह । पत्र सं ३२ । मा १२×८ इञ्च । माया हिन्दी । विपय-
 रासा मविप्यवृत्त श्री कमा है । र काल सं १६३३ कार्तिक बुधौ १४ । से काल × । पूर्ण । के सं १८९ । अ
 मन्डार ।

३६६६ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । से काल सं १७५४ । के सं १९३ । ट मन्डार ।
 विशेष—ग्रामेर में श्री मल्लिनाथ चैरयत्तय में श्री मट्टारक देवैन्द्रकीर्ति के सिष्य वयाराय सोनी ने प्रतिसिधि
 की थी ।

३६६७ प्रति सं ३ । पत्र सं ९ । न काल सं १८१८ । के सं २६९ । क मन्डार ।
 विशेष—यं छाजूराम ने बयपुर में प्रतिसिधि की थी ।
 इनके प्रतिरिक्त स्व मन्डार में १ प्रति (के सं १३२) छ मन्डार में १ प्रति (के सं १६१) तथा
 म्म मन्डार में १ प्रति (के सं १३२) प्रीर है ।

३६६८ रुकमिणीविवाहजेलि (कृष्णरुक्मिणीजेलि)—पूठबीराज राठीब । पत्र सं ५१ के
 १२१ । मा ९×९ इञ्च । माया—हिन्दी । विपय—जेलि । र काल सं १६३५ । से काल सं १७१६ वैश्व बुधौ ३ ।
 मपूर्णे । के सं १६४ । ल मन्डार ।

विशेष—देवनिरी में महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिसिधि की थी । १३ पत्र है । हिन्दी गद्य में टीका भी थी
 हुई है । ११२ पृष्ठ से माने लग्य पठ है ।

३६६६ शीलरासा—विजयदेव सूरि । पत्र स० ४ से ७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी १३ । वै० सं० १९६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीखरतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नसूरि शिष्य प० नदिरग

लिखित । उसवसेसघ वालेचा गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन सु श्राविका नाली पठनार्थ लिखित दारुमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपासचद तगइ सुपसाय,

सीस धरी निज निरमल भाइ ।

नयर जालउरहि जागतु,

नेमि नमउ नित बेकर जोडि ॥

वीनती एह जि वीनवउ,

इक खिरा अन्ह मन वीन विछोडि ।

सील सघातइ जी प्रीतडी,

उत्तराध्ययन बाबीसमु जोइ ॥

वली अने राय थकी अरथ आज्ञा विना जे कहसु होइ ।

विफल हो यो मुक्त पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही ॥

दुरित नइ दुक्ख सहूरइ दूरि, बेगि मनोरथ माहरा पूरि ।

आणसुसयम आपियो, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति शील रासउ समाप्त ॥

३७०० प्रति स० २ । पत्र स० २ से ७ । ले० काल स० १७०५ आसोज सुदी १४ । वै० सं० २०६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१. प्रति स० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० स० २५७ । अ भण्डार ।

३७०२ श्रीपालरास—जिनहर्षगणि । पत्र स० १० । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा (श्रीपाल रासा की कथा है) । २० काल स० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—आदि एव अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनस्य नमः ॥ काम सिपनी ॥

करवीसे प्रणमु शिखरस्य प्रास पसायद् नमनिधि पाम् ।
 सुपदेवा धरि रिदय मकारि, कहिस्तु नमपवगउ धधिकार ॥
 मत्र धन सुइ धनर धनैक पिखि नमकार समउ नही एक ।
 सिद्धचक्र नमपद सुपसायद् मुक्त पाम्या श्रीपाल नररायद् ॥
 प्रांभिल सप नम पव संजोम गमित सटीर नयो नीरोग ।
 तास करिज कहुं हित पाखी सुणिज्यो नरनारी मुक्त बाणी ॥

शक्तिम—

श्रीपाल करिज निहासनह, सिद्धचक्र नमपद धारि ।
 प्यारियह ठउ सुख पाईयई जगमा जस बिस्तार ॥८५॥
 श्री बल्लभरतर पति प्रपठ श्री जिनचन्द्र सरोम ।
 मखि छाति हरप बाचक छेखी कहुं जिनहरप मुसीस ॥९ ॥
 सतरे जेमासीसे समे बरि जेन ठरसि जाण ।
 ए रास पाटण मी रज्यो सुगुण सदा कस्यण ॥८७॥
 इति श्रीपाल रास संपूर्णः । पद्य सं २८० है ।

३७०३ प्रति सं० ३ । पद्य सं १७ । ने काम सं १७७२ भाववा सुवी १३ । के सं ७२२ । अ मण्डार ।

३७०४ पट्नेश्यावेक्षि—साह लोहट । पद्य सं २२ । मा ५३×४३ इंच । मापा—हन्वी । विपय— सिद्धांत । र काम सं १०३ भासोज सुवी ६ । ने काम × । पूर्ण । के सं ५ । अ मण्डार ।

३७०५ सुकुमासस्वामीरास—ब्रह्म जिनवास । पद्य सं ३४ । मा १ ३/४×४३ इंच । मापा— हिन्वी भुजराती । विपय—रासा (सुकुमाल भुनि का वर्णन) । न काम सं १६३५ । पूर्ण । के सं ३१६ । अ मण्डार ।

३७०६ सुदशनरास—ब्रह्म रायमण्ड । पद्य सं १६ । मा १२×६ इंच । मापा—हिन्वी । विपय— रासा (सठ सुवर्ण का वर्णन है) । र काम सं १६२६ । न काम सं १७३६ । पूर्ण । के सं २४६ । अ मण्डार ।

विपय—साह लालचन्द्र कासलीवास ने प्रतिमिपि की थी ।

३७०७ प्रति सं० २ । पद्य सं ३१ । ने काम सं १७६२ भावगु सुवी अ मण्डार ।

३७०८ सुभौमचक्रवर्तिरास—ब्रह्मजिनदास । पत्र न० १३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ । व्य भण्डार ।

३७०९ हमीररासो—महेश कवि । पत्र नं० ८८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रासो ।
(ऐतिहासिक) । २० काल × । ले० काल न० १८८३ आसोज मुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ६०४ । व्य भण्डार ।

विषय- गरिमत-शास्त्र

३७१० गणितनाममाप्ता—हरदत्त । पत्र सं १४ । पृ १२५८ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—

गणितशास्त्र । र नाम X । ले काम X । पूर्ण । के सं ८ । अ मन्डार ।

३७११ गणितशास्त्र— । पत्र सं ११ । पृ १५३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । र

नाम X । ले काम X । पूर्ण । के सं ७६ । अ मन्डार ।

३७१२ गणितसार—हेमराज । पत्र सं २ । पृ १२५८ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।

र नाम X । ले काम X । अपूर्ण । के सं २२२१ । अ मन्डार ।

विषय—हाथिये पर मुम्बर बेमबूटे हैं । पत्र जील हैं तथा जोब से लय पत्र नहीं है ।

३७१३ पट्टी पहाड़ों की पुस्तक— । पत्र सं १७ । पृ ६५६ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—

गणित । र नाम X । ले काम X । अपूर्ण । के सं १६२८ । अ मन्डार ।

विषय—प्रारम्भ के पत्रों में शीतों की डोरी आदि कामकर नारने की विधि की है । पुन पत्र १ में ३ तक

सीमा बर्ग समाप्तावः । आदि की पाँचों मन्धिओं (पाटियों) का वर्णन है । पत्र ४ में १ तक वास्तुविषय नीति के

स्साक है । पत्र १ से १२ तक पहाड़े हैं । बिची २ जगह पहाड़ों पर मुनापित पद्य है । ३१ म ३६ तक तास ना के

मुप विषे हुये हैं । निम्न पाठ घोर है ।

१ हरिनाममाप्ता—रत्नराषाय । संस्कृत पत्र ३७ तक ।

२ गोकुलगाँवकी स्त्रीका— हिन्दी पत्र ४५ तक ।

विषय—कृष्ण ऊषध का वर्णन

३ स्मरशकाकीगीता— पत्र १६ तक ।

४ रनेहस्त्रीका— पत्र ४७ (अपूर्ण)

३७१४ रामप्रमाथ— । पत्र सं २ । पृ ८२५४ इव । भाषा—हिन्दी । विषय गणितशास्त्र ।

र काम X । ले काम X । पूर्ण । के सं १४२७ । अ मन्डार ।

३७१५ स्त्रीसावदीमाया—मोहममिन्न । पत्र सं ८ । पृ ११५६ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—

परिस्तशास्त्र । र काम सं १७१४ । ले काम सं १८३८ फलगुण बुधी ६ । पूर्ण । के सं ६४ । अ मन्डार ।

विषय—नेकक उपस्थित पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र स० ३ । आ० ६×४^३ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७. प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल × । वे० स० १४४ । ख भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र स० १३ । आ० १३×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९. प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४२ । ट भण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । आ० ११^३×५ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है ।

३७२१. प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० स० १७० । ख

भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में माराकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन में प्रति-
लिपि की थी ।

३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १५४ । ले० काल × । वे० स० ३२६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ३२४ से ३२७ तक) और हैं ।

३७२३. प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० सं० २१६ । म भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) और हैं ।

३७२४. प्रति स० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



विषय- इतिहास



३७२५. आचार्यों का ब्यौरा— । पत्र सं १। भा १२३×२३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल सं १७१६। पूर्ण। के सं २६७। छ मण्डार।

विशेष—मुजान्म घोषणी के प्रतिनिधि की की। इसी शैल में १ प्रति मीर है।

३७२६ लखेकवासोत्पत्तिवर्णन— । पत्र सं ८। भा ७×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १५। छ मण्डार।

विशेष—८४ मोनों के नाम भी बिले हुये हैं।

३७२७ शुद्धिबलीवर्णन— । पत्र सं ५। भा ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २१। छ मण्डार।

३७२८ बौरासीशातिखद्— । पत्र सं १। भा १ ×२३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १६३। छ मण्डार।

३७२९ बौरासीबादि की जयमास—बिनासीसाख। पत्र सं २। भा ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल सं १८७३ पोप मुरी ६। पूर्ण। के सं २४१। छ मण्डार।

३७३० छठा आरा का विस्तार— । पत्र सं २। भा १ १×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं २१८६। छ मण्डार।

३७३१ जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक बणन— । पत्र सं १२७। भा १४×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल ×। अपूर्ण। के सं १६८६। छ मण्डार।

विशेष—राममड सवारिनापोपुर आदि बसामे का पूर्ण विवरण है।

३७३२. जैनधत्री मूडधत्री की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं ४। भा १ १×२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं ३। छ मण्डार।

३७३३ तीर्थदूरपरिचय— । पत्र सं ४। भा १२×२३ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले नाम ×। अपूर्ण। के सं ६४। छ मण्डार।

३७३४ तीर्थदूरो का अन्तराल— । पत्र सं १। भा ११×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र नाम ×। ले नाम सं १७२४ पामोज मुरी १२। पूर्ण। के सं २१४२। छ मण्डार।

३७३५ दादूपद्यावली । पत्र सं० १ । आ० १०×३ इत्त । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास ।

० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट गरोव मसकीन ठाट ।

जुगलवाई निराट निराणो बिराज ही ॥

बखर्नास कर पाक जसो चावो प्राग टाक ।

बडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥

सागानेर रजषसु देवल दयाल दास ।

घडमी कडाला बसै धरम कीया जही ॥

ईड वैहू जनदास तेजानन्द जोधपुर ।

मोहन सु भजनीक आसोपनि बाज ही ॥

गूलर मे माधोदास विदाध मे हरिसिंह ।

अतरदास सिंध्यावट कीयो तनकाज ही ॥

विहाणी पिरागदास डोडवाने है प्रसिद्ध ।

सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ॥

बावो बनवारी हरदास दोऊ रतीय में ।

साधु एक माडोडी में नोकै नित्य छाजही ॥

सुंदर प्रह्लाद दास घाटडैसु छोड माहि ।

पूरब चतरभुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥

निराणदास साडाल्यो सडाग माहि ।

इकलौद रणतभवर डाढ चरणदास जानियो ॥

हाडीती गेगाड जामे माखूजी मगन भये ।

जगोजी भडोच मध्य प्रचाधारी मानियो ॥

लालदास नायक सो पीरान पटरदास ।

फोफली मेवाढ माहि टीलोजी प्रमानियो ॥

साधु परमानद इदोखली मे रहे जाय ।

जैमल जुहाण भलो खालड हरगानियो ॥

जैमल जोगो कुछाहो वनमाली चोकन्योस ।

सामर भजन सो वितान तानियो ॥

मोहन बफ्ठपीसु मारोठ बिताई सली ।

बचनाप भेडतैसु भाबकर धानियी ॥

कालेडहरे बजदास टीकोदास नागस में ।

भोटबाई म्भूमाम्भू सपु गोपस धानियी ॥

भाबनासी अगनास राहोरी जमगापाल ।

बाराहरपी संतबास चापकम्सु धानियी ॥

भापी में गरीबदास मसगड भाबन हैं ।

मोहन मेवाका भोग साबन सी रहे हैं ॥

ठहूटई में नागर मिजाम हु मजन कियो ।

दास जम बीबन चौसा हर महे हैं ॥

मोहन बरियापीसो सभ नागरबास मध्य ।

बोकडास संत बृहि मोलगिर मये हैं ॥

बैनराम नाणोवा में बोदेर कपसमुनि ।

स्वामदास झालाणोसू बोड के में ठये हैं ॥

सीनिया साका नरहर प्रमुरे मजन कर ।

महाजन कडेसवाल बाहु पुर गहे हैं ॥

पूरणदास ताराबन्द म्हाजन मुम्हेर बाली ।

भापी में मजन कर काम क्येव रहे हैं ॥

रामदास राखीबाई कंबस्या प्रबट नई ।

म्हाजन डिगाइचसू बाति बोन सहे हैं ॥

बाबन ही बाभा पर बाबन ही मृत घाम ।

बाहुरंपी बजदास तुने जैसे कहे हैं ॥ ३ ॥

जे मनो पुर बाहु परमात्म बाहु सब संतन के हितकारी ।

में बायो सरनि तुम्हारी ॥ टंक ॥

जे मिरालंब निरबाता हम संत तै जाला ।

संतनि को करना दीजे सब साहि धपनू कर सीजे ॥१॥

सबके सतस्वामी पर करो हुपा मोरे स्वामी

धबयति सबनासी देवा दे बरन बचन बी सेवा ॥२॥

जे बाहु रीन दयाला बाडा जम जंजाला ।

सतचित्त धानर में बासा बाई दगनाबरदाला ॥३॥

राग रामगरी—

जैसे पीव क्यूं पाइये, मन चंचल भाई ।
 आख मीच मूनी भया मछी गढ काई ॥टेक॥
 छापा तिलक वनाय करि नाचै अरु गावै ।
 आपण तो समझै नही, औरा समझावै ॥१॥
 भगति करै पाखड की, करणी का काचा ।
 कहै कबीर हरि क्यूं मिलै, हिरदै नही साचा ॥२॥

॥ इति ॥

३७३६ देहली के बादशाहो का ब्यौरा * * * । पत्र स० १६ । आ० ५३×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।

विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । म् भण्डार ।

३७३७ पञ्चाधिकार । पत्र स० ५ । आ० ११×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से आचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली * * * । पत्र स० १२ । आ० ८×६३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । म् भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के संवत् की पट्टावलि है । अन्त में खडेलवाल वशोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३९. पट्टावलि * * * । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—स० ८४० तक होने वाले भट्टारको का नामोल्लेख है ।

३७४० पट्टावलि * * * । पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम हैं । पीछे संवत् १७६६ में नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारको के नाम दिये हुये हैं । स० १५७२ में नागौर से अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२ तक होने वाले भट्टारको के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुकुम्पत्रिका । पत्र स० १ । आ० २५×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—सं १२२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र विपलोल की प्रतिष्ठा का है । पत्र कार्तिक बुद्धी १३ का मिला है । इसके साथ सं १२३२ की कुंकुमपत्रिका छपी हुई शिवर सम्मेल की थीर है ।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि-----। पत्र सं २ । मा २×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १४३ । छ मण्डार ।

३७४३ प्रति स० २ । पत्र सं १५ । से कास × । के सं १४६ । छ मण्डार ।

३७४४ बलात्काराणुर्वावलि-----। पत्र सं ३ । मा ११३×४२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं २६ । छ मण्डार ।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि । पत्र सं १ । मा ११×४२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १८३७ । छ मण्डार ।

विशेष—सं १७७ तक की भट्टारक पट्टावलि की हुई है ।

३७४९. प्रति स० २ । पत्र सं ६ । से कास × । के सं ११८ । छ मण्डार ।

विशेष—संबद् १२५ तक होने वाले भट्टारकों के नाम विसे है ।

३७५०. पात्रावखन-----। पत्र सं २ स २६ मा २×२२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ११४ । छ मण्डार ।

३७५१. रथयात्राप्रभाव—अमोलकचद् । पत्र सं ३ । मा १२×२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १३५ । छ मण्डार ।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है ।

११३ पृष्ठ १— अन्तिम—

एवोमविद्यतिघतवस साहाय्ये मासस्यपञ्चमी विनेयित फागुनस्य भीमजिजनेश्वर मूर्धरत्नमवाश। सिंयायर्षे जयपुर प्रकटे कम्पू ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽयं कथिता दृष्टपूर्वव ।
नाम्ना मौलिन्यचन्द्रेण साहायोर्षे या तंमुवा ॥११३॥
॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ पुनं भूयाद् ॥

३७५२ राजप्रशस्ति-----। पत्र सं २ । मा २×४४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं १८३२ । छ मण्डार ।

विशेष—श्री प्रशस्ति (पद्य) है मजिदा भास्कर बनिता के विरायत विसे हुए है ।

३७५३ विज्ञप्तिपत्र—हसराज । पत्र सं० १ । आ० ८×९ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।

२० काल × । ले० काल म० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ५३ । भ्र भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हमराज ने जयपुर के जैन पंचो के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मी बडी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हसराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमे जयपुर के जैनो का अच्छा वर्णन है । अमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र (आखडी पत्र) भी है जिममे हसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुमा लम्बा पत्र है । स० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४. शिलालेखसंग्रह । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ६९१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखो का संग्रह है ।

- १ चालुक्य वंशोत्पन्न पुलकेयी का शिलालेख ।
- २ भद्रवाहु प्रशस्ति
- ३ मल्लिषेण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन । पत्र सं० १ । आ० ११×२८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १९०८ । अ भण्डार ।

विशेष—चौरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियो का वर्णन है ।

३७५६. श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३१ । अ भण्डार ।

३७५७ श्रावकों की ७२ जातिया । पत्र सं० २ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातियो के नाम निम्न प्रकार है ।

- १ गोलारवाडे २ गोलसिंघाडे ३ गोलापूर्व ४ लवेनु ५ जैसवाल ६ खडेलवाल ७ वधेलवाल ८, अमरवाल, ९ सहलवाल, १० अमरवापोरवाड, ११ वोगवापोरवाड, १२ दुसरवापोरवाड, १३ जागडापोरवाड, १४ परवार, १५ वरहीया, १६. भैसरपोरवाड, १७ मोरठीपोरवाड, १८. पद्मावतीपोरभा, १९ खयड, २०. घुसर

२१ बाहरमन २२ गहाइ २३ अणुमग क्षत्री २४ सडामग २५ मजोम्यापुरी २६ योरबाइ २७ विडलत्वा २८
 क्यजेरा २९ नाम, ३ गुजरपल्लीबास ३१ पीकडा ३२ मागरबाडा ३३ बोरबाइ ३४ खडेरबास ३५ हर
 मुता ३६ नेमडा ३७ सहृयीया ३८ मेबाडा ३९ लरांडा ४ चीतोडा ४१ नरसंभपुरा ४२ नागवा, ४३
 बाइ ४४ हुमड ४५ रायडवाडा ४६ बरनारा ४७ दमणुभाबक ४८ पंचमभाबक ४९ हुसपरभाबक, ५
 साइरभाबक ५१ हुमर, ५२ मन्नर ५३ बबल ५४ बलगारा ५५ कर्मभाबक ५६ बरिक्कर्मभाबक ५७ वेसर
 ५८ मुदबज ५९ बमणीगुल ६ नामडी ६१ गगरबा ६२ गुलपूर, ६३ तुमाभाबक ६४ कर्चमभाबक
 ६५ हेबयाभाबक ६६ सोयाभाबक ६७ सोममभाबक ६८ बाइराभाबक ६९ मंगबमीभाबक ७ पणोसिया
 ७१ बयोरिया ७२ बलनीबास

नाट—हुमड जाति को का बार गिनाम स १ संख्या बड गई है ।

३७५८ सुतरफय—ब्र० हेमबभ्रु । पत्र सं ७ । पा ११' × ४२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—
 इतिहास । र नाम × । म नाम × । पूर्ण । वे स ११ । अ मण्डार ।

३७५९ प्रति स० - । पत्र सं १ । म नाम × । वे स ७२६ । अ मण्डार ।

३७६० प्रति स० ३ । पत्र सं ११ । मे नाम × । वे सं २१६१ । ट मण्डार ।

विषय—पत्र ७ में प्रागे भुतावतार भापर वृत भा है पर पत्रों पर इशर निट मये हैं ।

३७६१ भुतावतार—प० भीषर । पत्र सं १ । पा १ × ४९ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
 इतिहास । र नाम × । मे नाम × । पूर्ण । वे सं ३६ । अ मण्डार ।

३७६२ प्रति स० २ । पत्र सं १ । मे नाम सं १८६१ पोप मुडा १ । वे सं० २ १ । अ
 मण्डार ।

विषय—बनरापल टाप्पा मे प्रतिमिदि की थी ।

३७६३ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । म नाम × । वे सं ७ २ । अ मण्डार ।

७६४ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । म नाम × । पूर्ण । वे स ३११ । अ मण्डार ।

७६५ संपदचामी—धानतराय । पत्र सं १ । पा ८ × २ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।
 र नाम × । मे नाम सं १८८८ । पूर्ण । वे सं २१३ । अ मण्डार ।

विषय—विर्वाग्वार्य बाया भेया भवनीरम वृत भी है ।

२७६६ गवासरबलन— । पत्र सं १ मे ३७ । पा १ १ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
 इतिहास । र नाम × । मे बार × । पूर्ण । वे सं ७११ । अ मण्डार ।

३७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन ... । पत्र स० २ । आ० १०×४ इ'च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११८ । अ भण्डार ।

ईंढर आवा आबली रे ए देसी

सावरा मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास ।
 अरज कहं घरे आवजो रे लाल हू छूं ताहरी दास ।
 चतुर नर आवो हम चर छा रे सुगरा नर तू छ प्राण आवार ॥१॥
 भादवडे पीउ वेगलौ रे लाल हू कीम करू सणगारे ।
 अरज कहं घर आवजो रे लाल मोरा छंछत सार ॥२॥
 आसोजा भासनी चादणी रे लाल फुलतणी वीछाइ सेज ।
 रंग रा मत कीजिय रे लाल आणी हीयडे तेज ॥३॥
 कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास ।
 संदिसा सयण भरा रे लाल अलगायो केम ॥४॥
 चजर निहालो वाल हो रे लाल आवो भोगसर मास ।
 लोक कहावल कह्य करो जी पीउडा परम निवास ॥५॥
 पोस बालम वेगलो रे लाल अवडो मुज दोस ।
 परीत पनोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥
 सीयाले अती घरणो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह ।
 पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह ॥७॥
 लबल गुलाल अवीरमुं रे लाल खेलण लागा लोग ।
 तुज विण मुज नेइहा एकली रे लाल फाणुण जाये फोक ॥८॥
 सुदर पान्न सुहामणो रे लाल कुल तरणो मही मास ।
 चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेहू गाट ॥९॥
 बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल ।
 बेसाले तुम नेम त्रु रे लाल तो वजउ ढोल ॥१०॥
 केहवा दीसे कामो रे लाल काड करावो वेठ ।
 ठीठ वणो हवे कहा करो लाल आवी लागो जेठ ॥११॥

प्रसाओ भरमुमछोरे साल बीच बीच जकुके बीचसी रे साल ।
 तुम बीना मुम नैहारे साल भरम प्रावे बीच ॥१२॥
 रे रे सखी उवाचसी रे साल सखी सोसा सणमार ।
 घेर बसी पंचो मुदरघरे साल ये छोडी मार ॥१३॥
 चार धडी नी धब छकी रे साल धयो मास भरसाड ।
 कामण साला नंत बी रे साल सखी म प्राप्पो प्राज ॥१४॥
 ते उठी उसट भरी रे साल कामम जोवे प्रास ।
 वूमभद्र मुद घादेस पी रे साल ऐह बठयो जोमास ॥१५॥

३७६८ हमीर चौपई-----। पत्र स १३ से २७ । मा ८×९ इञ्च । भाषा—हिंदी । विषय—

इतिहास । र काम × । म काम × । मपूर्णा । वे स १३१६ । ट मञ्जार ।

विषय—रचना में तामोलेख नहीं महीं है । हमीर व प्रतापदीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



विषय-स्तोत्र साहित्य

३७६६ अकलकाष्टक ' ' । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० । ज भण्डार ।

३७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २५ । व्य भण्डार ।

३७७१ अकलकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-

हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६) और हैं ।

३७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

३७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । वे० सं० १८७ । क

भण्डार ।

३७७४ अजितशातिस्तवन । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६९१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है ।

३७७५ अजितशातिस्तवन—नन्दिषेण । पत्र सं० १५ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-प्राकृत ।

विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ भण्डार ।

३७७६ अनाधीऋषिस्वाध्याय ' ' । पत्र सं० १ । आ० ९३×४ इंच । भाषा-हिन्दी गुजराती ।

विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९०८ । ट भण्डार ।

३७७७ अनादिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९१ । व्य भण्डार ।

३७७८. अरहन्तस्तवन । पत्र सं० ९ से २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १९८४ । अ भण्डार ।

३७७९ अवतिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५९ । व्य भण्डार ।

विशेष—७८ पद्य हैं ।

३७८० आत्मनिर्वास्तवण—रजाकर । पत्र सं २ । मा १३×४ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—

१० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७ । क मन्डार ।

विशेष—२१ श्लोक हैं । प्रथम धारणा करने से पूर्व पं० विजयगणेश गणेश को नमस्कार किया गया है । पं

जय विजयगणेश ने प्रतिनिधि की थी ।

३७८१ आराधना— । पत्र सं २ । मा ८×४ इ च । मापा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १ काल

× । से काल × । पूर्ण । वै सं १६ । क मन्डार ।

३७८२ इष्टोपदेश—सूक्तपाद । पत्र सं ३ । मा ११३×४३ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

१० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २५ । अ मन्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है ।

३७८३ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । से काल × । वै सं ७१ । क मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (वै सं ७२) भी है ।

३७८४ प्रति सं ३ । पत्र सं ६ । से काल × । वै सं ७ । अ मन्डार ।

विशेष—बेबीरास की हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है ।

३७८५ प्रति सं ४ । पत्र सं १३ । से काल सं १६४ । वै सं ६ । क मन्डार ।

विशेष—संक्षेप पत्रात्मात्तु नूतनीयते कृत हिन्दी अर्थ सहित है । सं १६३२ में मापा की थी ।

३७८६ प्रति सं ५ । पत्र सं ४ । से काल सं १६७३ पीप बुरी ७ । वै सं ४८ । अ

मन्डार ।

विशेष—बेबीरास ने अगस्त में प्रतिनिधि की थी ।

३७८७ इष्टोपदेशटीका—आराधन । पत्र सं ३६ । मा १२३×३ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ७ । क मन्डार ।

३७८८ प्रति सं २ । पत्र सं २४ । से काल × । वै सं ६१ । क मन्डार ।

३७८९ इष्टोपदेशामापा— । पत्र सं २५ । मा १२×७३ इ च । मापा—हिन्दी पत्र । विषय—

स्तोत्र । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ६२ । क मन्डार ।

विशेष—अर्थ की लिखाणे व अगस्त में १९१७)।। मध्य हुये हैं ।

३७९० उपदेशसम्प्रदाय—श्यामि रामचन्द्र । पत्र सं १ । मा १ ×३ इ च । मापा—हिन्दी । विषय

स्तोत्र । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १८१ । अ मन्डार ।

३७६१ उपदेशसज्जाय—रंगविजय । पत्र स० ४ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८३ । अ भण्डार ।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पत्र नहीं है ।

३७६३ उपदेशसज्जाय—देवादिल । पत्र स० १ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६२ । अ भण्डार ।

३७६४ उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णाचन्द्राचार्य । पत्र स० १४ । आ० ३३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत
प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४१ । च भण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुरादेवसूरि के शिष्य गुरानिधान ने इसकी प्रतिलिपि की थी । प्रति
हत है । निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१ अजितशातिस्तवन— विशेष—आचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है ।	×	प्राकृत संस्कृत	१ से ६	३६ गाथा
२. भयहरस्तोत्र— विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है । इस स्तोत्र की प्रतिलिपि स० १५५३ आसोज सुदी १२ को मेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल में कोठारिया नगर में श्री गुरादेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी ।	×	संस्कृत	६ से १०	
३ भयहरस्तोत्र— विशेष—इसमें पार्श्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतु गाचार्य कृत दी हुई है ।	×	”	११ से १४	

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र स० ७ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

३७६६ ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि । पत्र स० ११ । आ० १२×६ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—८वें पृष्ठ में दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है । दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये
हुये हैं ।

३७६७ अथमस्तुति..... । पत्र सं ३ । मा १ ३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १
काल × । से काल × । मपूर्व । वे सं० ६३१ । अ मन्धार ।

३७६८ अथिमह्यस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं ३ । मा २ ३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
स्तोत्र । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ३४ । अ मन्धार ।

३७६९ प्रति सं० २ । पत्र सं १३ । से काल सं १८३६ । वे सं १३२० । अ मन्धार ।

विशेष—इसी मन्धार में ३ प्रतिष्ठा (वे सं ३३८ १४२६ १९) भी हैं ।

३८०० प्रति सं० ३ । पत्र सं ८ । से काल × । वे सं ६१ । अ मन्धार ।

विशेष—हिन्दी धर्म तथा मन्त्र शास्त्र विधि भी वी हुई है ।

३८०१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । से काल × । वे सं २१ ।

विशेष—इन्द्रमार्ग के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी । अ मन्धार में एक प्रति (वे सं ०६१) भी है ।

३८०२ प्रति सं० ५ । पत्र सं ४ । से काल × । वे सं १३६ । अ मन्धार ।

विशेष—इसी मन्धार में एक प्रति (वे सं २६) भी है ।

३८०३ प्रति सं० ६ । पत्र सं २ । से काल सं १७६८ । वे सं १४ । अ मन्धार ।

३८०४ प्रति सं० ७ । पत्र सं ७९ से ११ । से काल × । वे सं १८३६ । अ मन्धार ।

३८०५ अथिमह्यस्तोत्र..... । पत्र सं ५ । मा २ ३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

१ काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ३४ । अ मन्धार ।

३८०६ एकसूरीस्तोत्र—(तकारासुर)..... । पत्र सं १ । मा ११×३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । १ काल × । से काल सं १८६१ अथसूरी । पूर्ण । वे सं ३३६ । अ मन्धार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । प्रबर्धन मीमांसा है ।

३८०७ एक्रीमावस्तोत्र—वादिराज । पत्र सं ११ । मा १ ×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । १ काल × । से काल सं १८८३ माव कृष्णा ६ । पूर्ण । वे सं २३४ । अ मन्धार ।

विशेष—समोक्तकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिक्रिया की थी ।

इसी मन्धार में एक प्रति (वे सं १३८) भी है ।

३८०८ प्रति सं० २ । पत्र सं २ सं ११ । से काल × । पूर्ण । वे सं २६६ । अ मन्धार ।

३८०९ प्रति सं० ३ । पत्र सं ९ । से काल × । वे सं ६३ । अ मन्धार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति सस्कृत टीका तहित है ।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है ।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । ज्व भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शातिनाथ स्तोत्र और हैं ।

३८१३ एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २२ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३८१४ एकीभावस्तोत्रभाषा । पत्र सं० १० । आ० ७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । म भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका । पत्र सं० ३ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६३६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

३८१७ कल्पसूत्रमहिमा । पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—महात्म्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८ कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तव । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । ड भण्डार ।

विशेष—

पणविवि चउवीसवि तित्ययर,

मुरगर विसहर शुव चलणा ।

पुणु भणमि पत्र कल्याण दिण,

भवियहु रिणुणह इक्कमणा ॥

प्रन्तिम—

करि कल्याणपुत्रं जियशाहो

धरु विरु बित्त प्रविषत् ।

अहम् समुष्ण एण त भविणा

निष्णद् इमणुव भव फत्त ॥

इति श्री समन्तभद्र कृत कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राभाष । पत्र सं १ । भा १ ×४ इ. भा । मापा संस्कृत ।

विषय—पार्श्वनाथ स्तवन । १ कम् × । से कास × । पूर्ण । के सं ३५१ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतियां (के सं ३८४ १२३६, १२६२) भी हैं ।

३८८० प्रति सं २ । पत्र सं १३ । से कास × । के सं २६ । ल मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतियां भी हैं (के सं १ २६४ २८१) ।

३८२१ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । से कास सं १८१७ माप सुदी १ । के सं ६२ । प

मन्थार

३८२२. प्रति सं ४ । पत्र सं ९ । से कास सं १६४६ माह सुदी १५ । अपूर्ण । के सं २३६ ।

ल मन्थार ।

विशेष—इसी पत्र मध्ये है । इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १३४) भी है ।

३८२३ प्रति सं ५ । पत्र सं ५ । से कास सं १७१४ माह सुदी ३ । के सं ७ । अ मन्थार ।

विशेष—साह जोधराज गोडीकाने प्राणवराम से सांगानेर में प्रतिनिधि करवासी थी । यह पुस्तक जोधराज गोडीका की है ।

३८२४ प्रति सं ६ । पत्र सं १८ । से कास सं १७६६ । के सं ७ । अ मन्थार ।

विषय के ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्ति नागपुरीय उपामन्य प्रबाल चन्द्रकीर्ति के

३८२५ प्रति सं ७ । पत्र सं १ । से कास सं १७४६ । के सं १९६८ । ट मन्थार ।

है—

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विजयसागर कृत संस्कृत टीका सहित है । प्रन्तिम प्रथम मित्र प्रकार

इति सकलकुमनकुमरसंबद्धसंबद्धरिमभीकुमुदचन्द्रसूरिद्विद्वित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका अपूर्ण । बमाराम चापि ने स्वहस्तान् हेतु प्रतिनिधि की थी ।

३८२६ प्रति सं ८ । पत्र सं ४ । से कास सं १८६६ । के सं २ १५ । ट मन्थार ।

विशेष—सोटेनाथ ठोलिया मारोठ जाने ने प्रतिनिधि की थी ।

३८२७. कल्याणमदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । अ भण्डार ।

३८२८. कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक । पत्र सं० १५ । आ० ६^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीऋकेशगणान्ध्रिचन्द्रसदृशा विद्वज्जनान्ध्रिदयन्,
प्रवीण्याधनसारपाठकवरा राजन्ति भास्वातर ।
तच्छिष्य कुमुदापिदेवतिलक. सद्बुद्धिवृद्धिप्रदा,
श्रेयोमन्दिरसस्तवस्य मुदितो वृत्ति व्यधादद्भुतं ॥१॥
कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति सौभाग्यमञ्जरी ।
वाच्यमानाज्जनैर्नदाच्चन्द्रावर्कं मुदा ॥२॥

इति श्रेयोमदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका । पत्र सं० ४ से ११ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

३८३० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । अ भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र चौधरी कनेसु सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है ।

३८३१. कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ४७ । आ० १२^३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । क भण्डार ।

३८३२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १०८ । क भण्डार ।

३८३३ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७१ । ट भण्डार ।

३८३४ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० ८ । आ० ६×३^३ इंच । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४० । अ भण्डार ।

३८३५ प्रति सं० ० । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

३८३६. केशवज्ञानीमञ्जुमाय—विनयचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८८ । अ भण्डार ।

३८३० क्षेत्रपालनामावली-----। पत्र सं ३। मा १ ५४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
१ काल X। से काल X। पूर्ण। से सं २४४। छ मण्डार।

३८३८ गीतप्रबन्ध-----। पत्र सं २। मा १ १५३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
काल X। से काल X। पूर्ण। से सं १२४। छ मण्डार।

विशेष—हिन्दी में वसन्तराग में एक मन्त्र है।

३८३६ गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारुकीर्ति। पत्र सं २६। मा १ २५२ इ च।
भाषा संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल X। से काल सं १८८६ ज्येष्ठ बुदा ३३। पूर्ण। से सं २२। छ
मण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री पुत्रीमाय ने प्रतिमिति की थी।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमें २४ प्रबंधों में मिस्र मिस्र राग रागनिर्मो म ममभाव
प्रादिनाथ का पौराणिक भावमान बरिणत है। ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकृत होता है कि वे अपने समय
के विद्विष्ट विद्वान् थे। ग्रन्थ का निर्माण जब हुमा यह रचना से ज्ञात नहीं होता किन्तु वह समय निरवय ही संभव
१८८६ से पूर्व है क्योंकि ज्येष्ठ बुदी अभावस्वा सं ८८६ को जयपुरस्व मण्डर के मन्दिर के पास रहने वाला श्री
पुत्रीमायजी साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिमिति की है प्रति सुंदर अक्षरों में लिखी हुई है तथा सुख है। ग्रन्थकार ने प्र
को मिस्र रागों तथा तालों में संस्कृत गीतों में पूजा है—

राग रानी— मालव गुर्जरी वसंत रामकली कान्हुरा कर्णटक वैशाखराग देवावैराजी तुलसीरानी मालवकौंड
गुर्जराय भैरवी बिराडी विभास कामरो।

ताल— रूपक एकताल प्रतिमण्ड परिमण्ड तिताला मठनाल।

गीतों में स्वामी वसन्तरा संवारी तथा भाषाओं से चारों ही कारण हैं इस सबमें ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार
संस्कृत भाषा के विद्वान् होने के साथ ही साथ पण्डे संगीतज्ञ भी थे।

३८४० प्रति स० २। पत्र सं ३२। से काल सं १८३४ ज्येष्ठ बुदी ८। से सं १२५। छ
मण्डार।

विशेष—सचपति मगरमण्ड के सेवक माण्डिकमण्ड ने मुरंगपत्तन की भाषा के अक्षर पर मानन्दनाथ के
अक्षरानुसार सं १८८४ वाली प्रति से प्रतिमिति की थी।

इसी मण्डार में एक प्रति (से सं १२६) भी है।

३८४१ प्रति स० ३। पत्र सं १४। से काल X। से सं ४२। छ मण्डार।

३८४२ गुणस्तवन । पत्र स० ११ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५८ । ट भण्डार ।

३८४३ गुरुसहस्रनाम । पत्र स० ११ । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल स० १७४६ वैशाख वृषी ६ । पूर्ण । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

३८४४ गोम्मटसारस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३ । ज्य भण्डार ।

३८४५ घटघरनिसाणी—जिनहर्ष । पत्र स० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—पार्वनाथ की स्तुति है ।

आदि—

मुख सपति सुर नायक परतपि पास जिगदा है ।

जाकी छवि काति अनोपम उपमा दीपत जात दिगदा है ।

अन्तिम—

मिद्धा दावा सातहार हासा दे मेवक विलवदा है ।

घघर नीसाणी पास बखानी गुणी जिनहरप बहदा है ।

इति श्री घघर निसाणी सपूर्ण ॥

३८४६ चक्रेश्वरीस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० १०^३/_४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । ख भण्डार ।

३८४७ चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र स० ६ । आ० ८×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८५ । ख भण्डार ।

३८४८ चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल । पत्र स० १ । आ० १०^३/_४×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१४८ । ज्य भण्डार ।

३८४९ चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र स० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६ । ज्य भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वसुधारा स्तोत्र है । प० विजयगणि ने पट्टनमन्थे स्वरपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५० चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र स० ४ । आ० ६^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है । प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं ।

प्रथम पद्य विम्ब प्रकार है—

भम्भ्यांभोजविबोधनैकतरले विस्तारिकम्भविषी
रम्भासामजनमिर्नभनमहागृष्टा परामासुरै ।
मस्त्या भंरितपावपघविदुषा सपावयामोम्भिता ।
रंभासाम जनमिर्नभनमहागृष्टा परामासुरै ॥१॥

३८२१ चतुर्विंशति तीर्थंशूरस्तोत्र—कमलविजयगण्डि । पत्र सं १५ । मा १२३×२ इच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । मे काल × । पूरा । मे सं १४६ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८२२ चतुर्विंशतितीर्थंशूरस्तुति—भावनम्भि । पत्र सं ३ । मा १२×१२ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तवन । र काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं ११८ । अ मन्थार ।

३८२३ चतुर्विंशति तीर्थंशूरस्तुति— । पत्र सं १ । मा १२×४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । र काल × । मे काल × । अपूर्ण । मे सं १२६१ । अ मन्थार ।

३८२४ चतुर्विंशतितीर्थंशूरस्तुति— । पत्र सं ३ । मा १२×३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । र काल × । मे काल × । मे सं २३७ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८२५ चतुर्विंशतितीर्थंशूरस्तोत्र— । पत्र सं ६ । मा ११×४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । र काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १६८२ । अ मन्थार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसफन्नी धामनाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र में है ।

३८२६ चतुष्पदीस्तोत्र— । पत्र सं ११ । मा ८३×२ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

र काल × । मे काल × । पूरा । मे सं १२७२ । अ मन्थार ।

३८२७ चामुण्डस्तोत्र—चुम्बीपराचाय । पत्र सं २ । मा ८×४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । र काल × । मे काल × । पूरा । मे सं १३८१ । अ मन्थार ।

३८२८ चिस्तामशिपारबनाय जयमालस्तवन— । पत्र सं ० ४ । मा ८× इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तवन । र काल × । पूर्ण । मे सं ११३४ । अ मन्थार ।

३८२९ चिस्तामशिपारबनाय स्तोत्रमन्त्रसहित— । पत्र सं १ । मा ११×३ इच । भाषा—

संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । मे काल × । पूर्ण । मे सं १६ । अ मन्थार ।

३८६० प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८३० आसोज सुदी २ । वै० स० १८१ । छ
भण्डार ।

३८६१. चित्रबधस्तोत्र । पत्र स० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २४८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२. चैत्यवदना । पत्र स० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३ चौबीसस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०
काल × । ले० काल स० १६७७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वै० स० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—बख्शीराम ने भरतपुर में राणधीरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छंदसग्रह । पत्र स० ६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद हैं—

नाम छंद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छंद	शुभचन्द	१ पर	×
विजयकीर्ति छंद	”	२ ”	×
गुरु छंद	”	३ ”	×
पार्श्व छंद	ब्र० लेखराज	३ ”	×
गुरु नामावलि छंद	×	४ ”	×
भारती सग्रह	ब्र० जिनदास	४ ”	×
चन्द्रकीर्ति छंद	—	४ ”	×
कृपण छंद	चन्द्रकीर्ति	५ ”	×
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ ”	×

३८६५ जगन्नाथाष्टक—शङ्कराचार्य । पत्र स० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
(जैनैतर साहित्य) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २३३ । छ भण्डार ।

३८६६ दिनवरस्तोत्र पत्र सं ३। मा ११^१/_२ × २ इ. च। माया-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

र काल ×। ले काल सं० १८८१। पूर्ण। वे सं० १ २। अ मण्डार।

विषय—मोमीसाम के प्रतिमिपि की थी।

३८६७ दिनगुणसाक्षा पत्र सं ११। मा ८ × ६ इ. च। माया-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र

काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २४१। अ मण्डार।

३८६८ दिनचैत्यवन्दना पत्र सं २। मा १ × १ इ. च। माया-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ ३१। अ मण्डार।

३८६९ दिनदर्शनाष्टक पत्र सं १। मा १ × ४ इ. च। माया-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र

काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ २९। अ मण्डार।

३८७० दिनपञ्जरस्तोत्र पत्र सं २। मा ६^२/_२ × ३^२/_२ इ. च। माया-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१३४। अ मण्डार।

३८७१ दिनपञ्जरस्तोत्र—कमलप्रभावास। पत्र सं ३। मा ८^२/_२ × ४^२/_२ इ. च। माया-संस्कृत।

विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ३९। अ मण्डार।

विषय—य मन्नासाल के पठमार्च प्रतिमिपि की गई थी।

३८७२ प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल ×। वे सं ३। अ मण्डार।

३८७३ प्रति स० ३। पत्र सं ३। ले काल ×। वे सं २ ५। अ मण्डार।

३८७४ प्रति स० ४। पत्र सं ८। ले काल ×। वे सं २६१। अ मण्डार।

३८७५. दिनवरदर्शन—वृद्धानदि। पत्र सं २। मा १^३/_२ × २ इ. च। माया प्राकृत। विषय-

स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं ३८१४। पूर्ण। वे सं २ ८। अ मण्डार।

३८७६ दिनबाणीस्वयन—जगतराम। पत्र सं २। मा ११ × २ इ. च। माया-हिन्दी। विषय-

स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७३३। अ मण्डार।

३८७७ दिनशतकटीका—शंभुसाधु। पत्र सं २६। मा १^३/_२ × ४^२/_२ इ. च। माया-संस्कृत।

विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १११। अ मण्डार।

विषय—पति-दाम- इति शंभु साधुनिर्दिष्ट दिनशतक पत्रिकामा कामरान्त नाम चतुर्षपरिच्छेद समाप्त।

३८७८ प्रति स० २। पत्र सं ३४। ले काल ×। वे सं ४६८। अ मण्डार।

स्तोत्र साहित्य]

३८७६. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट । पत्र सं० ३३ । आ० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ चैत्र बुदी १४ । वे० स० २६ । व्य भण्डार ।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३८८०. प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५६ पौष बुदी १० । वे० स० २०० । क

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं ।

३८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १६१५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० १०० । छ

भण्डार ।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समतभट्ट । पत्र स० १४ । आ० १३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३० । ज भण्डार ।

३८८३ जिनस्तवनद्वारिंत्रिशिका । पत्र स० ६ । आ० ६३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४ जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र स० ६ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५ जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र स० १७ । आ० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५२१, ११२६, १०७६) और है ।

३८८६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ५७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७) और है ।

३८८७ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० स० ११४ । च

भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी मे तीर्थङ्करो की स्तुति और है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, ११७) और हैं ।

३८८८. प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३३) और है ।

३८८६ प्रति स० ५। पत्र सं ११। मे नाम सं १८६१ मानोज मुदी ५। वे सं २८। अ मन्थार।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त सप्त सामयिक मधु स्वयंभूस्तोत्र सप्तमह्यनाम एवं वैद्यरंजना भी है। संकुरा-
रोपण मंडस का चित्र भी है।

३८८७ प्रति सं० ६। पत्र सं ८६। मे नाम सं १६२३। वे सं ४७। अ मन्थार।

विशेष—मंत्र सोम १६२३ त्रेनावपे श्रीमूतसंवे अ श्री विद्यालम्बि कृत्ये अ श्री मस्त्रिभूयणवत्तट्टे
अ श्री मरमीचंद वत्तट्टे अ श्रीबीरचंद वत्तट्टे अ ज्ञानभूयण वत्तट्टे अ श्री प्रभाकर वत्तट्टे अ बारिचंद्र
तेवामध्ये श्री प्रभाकर बेमी बार तेजमती उरवेगनार्थ बार भद्रोत्तमती मातामण्डाप्रामे इव सहायनाम स्तोत्र निजकर्म
समार्ष सिद्धिर्त।

इसी मन्थार से एक प्रति (वे सं १८६) भी है।

३८८९ त्रिनसहस्रनामस्तोत्र—त्रिनसेनाचार्य। पत्र सं २८। मा० १२×१३ इत्य। भाषा—
संस्कृत। विषय—स्तोत्र। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं ३३६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ४ प्रतिर्षा (वे सं १३२ १४३ १४४ १४५) भी है।

३८८२ प्रति स २। पत्र सं १। मे काल ×। वे सं ३१। ग मन्थार।

३८८३ प्रति स० ३। पत्र सं ६२। मे काल ×। वे सं ११७ क। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिर्षा (वे सं ११६ ११८) भी है।

३८८४ प्रति स० ४। पत्र सं ८। मे काल सं १६०३ मानोज मुदी १३। वे सं १६५। अ
मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १२१) भी है।

३८८५ प्रति स० ५। पत्र सं ३३। मे काल ×। वे सं २६६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं २६७) भी है।

३८८६ प्रति स० ६। पत्र सं ३। मे काल सं १८८४। वे सं ३२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ३१६) भी है।

३८८७ त्रिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन विद्याकर। पत्र सं ४। मा १२३×७ इत्य। भाषा—
संस्कृत। विषय—स्तोत्र। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। वे सं २८। अ मन्थार।

३८८८ प्रति स० २। पत्र सं ३। मे काल सं १७२६ मानोज मुदी १। पूर्ण। वे सं ३।
अ मन्थार।

विशेष—पहले गद्य है तथा अन्त में ३२ श्लोक दिये हैं।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचित श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण । दुवे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने आत्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६ जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० २६ । आ० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८११ । ड भण्डार ।

३६०० जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० ४ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं— घटाकरण मंत्र, जिनपजरस्तोत्र पत्रों के दोनो किनारों पर सुन्दर बेलवूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १८० । आ० १२×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १६५८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १६२ । क भण्डार ।

३६०३. प्रति स० २ । पत्र स० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१० । छ भण्डार ।

३६०४ जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्ति । पत्र स० ८१ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८८४ पीप सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५. प्रति स० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १७२५ । वे० स० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—बघ गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ भण्डार ।

३६०७ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८२२ आश्विन । पूर्ण । वे० स० ३०६ । व्य भण्डार ।

३६०८ जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र स० १६ । आ० ७×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल स० १६५६ । ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २१० । छ भण्डार ।

३६०९ जिनोपकारस्मरण । पत्र स० १३ । आ० १२३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८७ । क भण्डार ।

३६१० प्रति स० २ । पत्र सं १७ । से काल × । के सं २१२ । ऋ मन्थार ।

३६११ प्रति स० ३ । पत्र सं ७ । से काल × । के सं १६ । ऋ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ७ प्रतिमां (के सं १७ से ११३ तक) धीर है ।

३६१२ यामोकारादिपाठ— । पत्र सं ३४ । मा १२×७१ इ च । माया—प्राकृत । विषय—
स्तोत्र । र काल × । से काल सं १८८२ म्येष्ट सुवी ७ । पूरा । के सं २३३ । ऋ मन्थार ।

विशेष—११८८ बार एमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । मन्त्र में धानतराय कृत समाधि मरुत पाठ तथा
२१८ बार घोमश्चुपमादि बर्द्धमानावेम्योगम । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । से काल × । के सं २३४ । ऋ मन्थार ।

३६१४ यामोकारस्तवन— । पत्र सं १ । मा १३×४३ इ च । माया हिन्दी । विषय—स्तवन ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २१६३ । ऋ मन्थार ।

३६१५ तकाराक्षरीस्तोत्र— । पत्र सं २ । मा १२२×३ इ च । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १६ । ऋ मन्थार ।

विशेष—स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी की हुई है । पाठा वादी तरेवां ततति तवता तपति ताटीत
तथा इत्यादि ।

३६१६ तीसबीबीसीस्तवन— । पत्र सं ११ । मा १२×२ इ च । माया संस्कृत । विषय—
स्ताव । र काल × । से काल सं १७३८ । पूर्ण । बीर्ण । के सं २७६ । ऋ मन्थार ।

३६१७ दत्ताक्षीनी सन्धाय— । पत्र सं १ । मा १×४ इ च । माया हिन्दी । विषय—स्ताव ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । बीर्ण । के सं २१३७ । ऋ मन्थार ।

३६१८ देवतास्तुति—पद्यमदि । पत्र सं ३ । मा १×४ इ च । माया—हिन्दी । विषय—स्ताव ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २१६७ । ऋ मन्थार ।

३६१९ देवागमस्तोत्र—भाषाय समन्तभद्र । पत्र सं ४ । मा १२×३ इ च । भाग संस्कृत ।
विषय—स्ताव । र काल × । से काल सं १७११ माय सुवी ६ । पूरा । के सं ३७ । ऋ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ३८) धीर है ।

३६२० प्रति स० २ । पत्र सं २७ । से काल सं १८६६ वैगाय सुवी ४ । पूरा । के सं १६६ ।
ऋ मन्थार ।

विशेष—प्रथमर्ध साष्ट के सर्वात् जदपुर में स्वरुणार्थ प्रतिमिति की का ।

इसी मन्थार के २ प्रतिमां (के सं १६४ १६२) धीर है ।

३६२१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३। वे० सं० १३४। छ
भण्डार।

३६२२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल स० १६२३ वैशाख बुदी ३। वे० सं० ७६। ज
भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २७७) और है।

३६२३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल स० १७२५ फागुन बुदी १०। वे० सं० ६। भ
भण्डार।

विशेष—पाडे दीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी। साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत
दी गई हैं।

३६२४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७। ले० काल X। वे० सं० १८१। व्य भण्डार।

३६२५ देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनन्दि। पत्र सं० २५। आ० १३X५ इ च। भाषा—
संस्कृत। विषय—स्तोत्र (दर्शन)। २० काल X। ले० काल स० १५५६ भाद्रवा सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १२३।
अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकु दाचार्यान्वये
भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्ति-
देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचन्द्र देवास्तदाम्नाये श्रीपथावास्तव्ये खण्डेलचालान्वये बीजुबागोषे सा मदन भार्या हरिसिणी पुत्र
सा परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिद लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं।

३६२६. प्रति सं० ७। पत्र सं० २५। ले० काल स० १६४४ भाद्रवा बुदी १२। वे० सं० १६०। ज
भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोडे गल गये है। यह पुस्तक प० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र सं० १३४। आ० १२X७ इ च। भाषा—
हिन्दी। विषय—न्याय। २० काल स० १८६६ चैत्र बुदी १४। ले० काल स० १६३८ माह सुदी १०। पूर्ण। वे० सं०
३०६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३१०) और है।

३६२८ प्रति सं० २। पत्र सं० ५ से ८। ले० काल स० १८६८। वे० सं० ३०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है।

३६२६ द्वागमस्तोत्रमापा ... । पत्र सं ४ । मा ११×७५ इ च । मापा-ह्रस्वी षष्ठ । विषय-स्तोत्र । १० वाच × । सं वाच × । पूर्ण । (द्वितीय परिच्छेद तत्र) के सं ३७ । क मण्डार ।

विषय—स्वाम प्रकरण दिया हुआ है ।

३६३ द्वाप्रमरस्तोत्रवृत्ति—विश्वयसेनसूरि के शिष्य अणुमा । पत्र सं १ । मा ११×८ इ च । मापा संस्तुत । विषय-स्तोत्र । १ काच × । सं काच ६ १८४ ज्यैष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । के सं १११ । म मण्डार ।

विषय—प्रति संस्तुत टीका सहित है ।

३६३१ धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र । पत्र सं १ । मा ११×४३ इ च । मापा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । १ वाच × । सं काच × । पूर्ण । के सं २७२ । म मण्डार ।

विषय—पूरी प्रति निम्न प्रकार है—

बीठराजायनम । मण्डल छंद—

सर्वगो सर्वं तिस्रसं विसृज्य सर्वस्य बन्धुमदी ।
विस्मयन्नुपरो स वा मविसृज्य त्री ईग माऊ मयो ।
सम्भवंसगणाल्पमविरिषदोर्मो मुणीणां गमो पतन्ता
त चरदुड नविमसा सिद्धो वसं कुण्डपा ॥१॥

विजुबाल छंद—

देवता मेवा कापोर्णं बालीए प्रबाहाऊर्णं ।
पुण्यदेवो माताहीताम्य विजुबाला तोहीप्राणं ॥२॥

मुद्रकप्रपाण छंद—

बरे ब्रूमसंधे बसावारायणो मरभतिपद्य पर्वदीययण्य ।
बरो वाम सिसरो धर्मैदु जीवा कुरी बाह्यपरित्त भ्रुवैवजीयो ॥३॥

पार्श्वीछंद—

कण्ठ वजावणीगा बीगा । परबावमम मयवमि ।
बरीर धर्मण उदारो धर्मपदा मया मुणितो ॥४॥

वाचावगातछंद—

वित्तक सशेण्य धर्मैरेण्य धार्तदुनुष्णाय परममभियाण्य ॥१॥
विष्णाय धामेण्य मयपाल दामेण्य धर्मोवगमेण्य ब्रह्मणरकेण्य ॥२॥
विष्णु— " कालमगुरेण्य दुष्कल पैडेण्य मुष्णमगुरेण्य ॥३॥
महाण्य धामेण्य श्रीपण्य धामेण्य धामेण्य धामेण्य ॥४॥
वजाव गावेण्य वजावगावेण्य इरीवदुरेण्य मोमनरवेण्य ॥५॥

जत्ताचवेजाण भवाज्जरोभारण भत्ताजईभ्राण कत्तासुहभरण ॥१६॥
 धम्मदुकदेण सद्धम्मचदेण एम्मोत्थुकारेण भत्तिव्वभारेण ॥
 त्युउ अरिट्ठेण रोमीवि तित्थेण दासेण वूहेण सकुज्जभत्तेण ॥१७॥

द्वात्रिंशत्यत्र कमलबंध ॥

आर्याच्छद—

कोहो लोहोचत्तो भत्तो अजईण सासरो लीणो ।
 मा अमोहवि खीणो मारत्थी ककणो छेसी ॥१८॥

भुजगप्रयात्तच्छद—

सुचित्तो वित्तित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।
 सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विमाम्मो विचिट्ठो विमोसो ॥१९॥

भार्याच्छद—

सम्मद्द सणणणा सच्चारित्त तहे वसु राणो ।
 चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुण्ण विक्खाओ ॥२०॥

मौक्तिकदामच्छद—

तिलग हिमाचल मालव अग वरव्वर केरल कण्णड वग ।
 तिलात्त कर्लिग कुरगडहाल कराडअ गुज्जर डड तमाल ॥२१॥
 सुपीट अवति किरात अकीर सुत्तुक्क तुरुक्क वराड सुवीर ।
 मस्त्यल दक्खण पूरवदेस सुणागवचाल सुकुभ लसेस ॥२२॥
 चऊड गऊड सुककणलाट, सुवेट सुभोट सुदव्विड राट ।
 सुदेस विदेसह भाचइ राम, विवेक विचक्खण पूजइ पाअ ॥२३॥
 सुचक्कल पीणपओहरि णारि, रणज्जण शेउर पाइ विघारि ।
 सुविव्वभम अंति अहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥२४॥
 सुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ रिम्मल रगिहि वाल ।
 चउक्क विउप्परि धम्मविचद बघाअउ अक्खहि वारु सुभद ॥२५॥

भार्याच्छद—

जइ जणदिसिवर सहिओ, सम्मदिट्ठि साव आइ परि आरिउ ।
 जिणधम्मभवणखमो विस अख अकरो जओ जअइ ॥२६॥

समिखीखर—

बत पतिष्ठु बिबाइ उबारकं सिस्स सत्वाणु बाणुभरो माणुकं ।
 बम्मखी रणुबारा ए मम्मखण्कं बाइसस्त एउ डारणुप्रात्तर् ॥१८॥
 छुहा मम्मकी भावणुमावणु, बस्तपम्मा बरा सम्परा पासए ।
 बाकु बारिताहिं सुसिमी बिगमहो मम्मबंदो जधो जित इदिमाहो ॥१९॥

पद्यसप्त—

सुरणुए बयबलबर बाकु बणि ब्रह्म बिखुवर ।
 बरए कलहिं मपरए सरए पोयम बइ बइवर ।
 पोसिं बरितार बम्म सोसिं मन्कमपबलतर ।
 उडापी कयसमि बम्ममम्म बातक बलवर ।
 बम्मह सप्य हप्य हउसुवर समत्त तारणु तरणु ।
 पय मम्मबुर्धर बम्मबंद सयसर्चव मंपलवरणु ॥२॥

इति बर्मबन्धवर्ष समप्ता ॥

३६३० नित्यपाठसप्तमः—। पद्य सं ७ । मा २२×४३ इत्य । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय

स्तोत्र । र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं २२ । अ मन्डार ।

विशेष—किम्प पाठों का संग्रह है ।

बजा बर्षत—	संस्कृत	—
कोटा बर्षत—	हिन्दी	बुधमन
भूतकाल चौबीसी—	"	×
पंचमैतसपाठ—	"	स्वर्चद (२ मंयल है)
प्रतिपेक विधि—	संस्कृत	×

३६३३ निर्वाणकवचगाथा—। पद्य सं ३ । मा ११×२ इत्य । भाषा—प्रकृत । विषय—स्वयम् ।

र काम × । से काम × । पूर्ण । के सं ११३ । अ मन्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कवचायुक्त पूजा भी है ।

३६३४ प्रति स० २ । पद्य सं ३ । से काम × । के सं १०९ । अ मन्डार ।

३६३५ प्रति स० ३ । पद्य सं २ । से काम सं १००४ । के सं १०७ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (के सं १०८) भी है ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार ३ प्रतिया (वे० स० १३६, २५६ २५६/२) और हैं ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । व्य मण्डार ।

३६३८. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १८६३ । ट मण्डार ।

३६३९. निर्वाणकाण्डटीका * । पत्र स० २५ । आ० १०×५ इअ । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६ । ख मण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति*** । पत्र स० २४ । आ० ११×७ १/२ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क मण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति * * * । पत्र स० ६ । आ० ६ १/२×५ १/२ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तवन । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७५ । ट मण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र*** * * । पत्र स० ६ । आ० ८×४ १/२ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० * * * । ज मण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र * * * । पत्र स० ३ से ५ । आ० १०×४ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१७५ । ट मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र स० ८ । आ० ६ १/२×५ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७०४ भाद्रवा बुद. २ । पूर्ण । वे० स० २३२ । व्य मण्डार ।

विशेष—प० दामोदर ने बोरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र स० १ । आ० ११×५ १/२ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० स० ३४० । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १८३० । ट मण्डार ।

३६४८ नमिस्तवन—अपि शिव । पत्र सं २ । मा १ ३ × ४३ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । १ काल × १ मि काल । पूर्ण । वे सं १२८ । अ म्भार ।

विशेष—बीस सोपकुर स्तवन भी है ।

३६४९ नेमिस्तवन—वितसागरगण्डी । पत्र सं १ । मा १ × ४ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । १ काल × १ मि काल × १ पूर्ण । वे सं १२१३ । अ म्भार ।

विशेष—सूक्त नेमिस्तवन भी है ।

३६५० पञ्च इन्द्रियाण्युपाठ—हरपद । पत्र सं १ । मापा हिन्दी । विषय—स्तवन । १ काल
१०३३ ज्येष्ठ सुदी ७ । से काल × १ पूर्ण । वे सं २३८ । अ म्भार ।

विशेष—आदि अष्ट अक्षर निम्न है—

प्रारम्भ—

कस्याम नामक गमी कुर कुरु कुमकुर ।

कस्याम कुर कस्याम कुर, कुभि कुस कसल किन्द ॥१॥

मंगल नामक बरिचै मंगल पत्र प्रकार ।

बर मंगल मुक्त बीजिये मंगल बरन सार ॥२॥

अन्तिम—अथ छंद—

बहु मंगल माता सब जनविधि है

तिथ सासा गल में घरनी ।

बासा सब तरुन सब जग बी,

मुक्त समूह की है भारनी ॥

मन सब तन भयान करे पुन

तिनके चतुंगति कुल हरनी ॥

तल मविजन पंडि अडि जमते

पंचम मति बामा बरनी ॥१११॥

बीजा—

श्लोक अंगुम न मप्रिये गनिये मचवा भार ।

उदाम भित भू पेटयो त्वो पुन बरने सार ॥११०॥

तीनि तीनि वनु चंड संवत्तर के अंक ।

भेठ गुनन सतम दिवत, पूरन पढी निमक ॥११८॥

॥ इति पंचकम्यण्ड संपूर्ण ॥

३६५१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि । पत्र स० ४ । आ० १०^३×४^३ ड च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७६६ फागुण । पूर्ण । वे० स० ३५ । अ मण्डार ।

३६५२ पञ्चमगलपाठ—रूपचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १२^३×५^३ ड च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८४४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ५०२ ।

विशेष—अन्त मे तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं । प० खुसालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ६५७, ७७१, ६६०) और हैं ।

३६५३ प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ४१४ । क मण्डार ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ३६४ । ड मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति और है ।

३६५५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८६ आसोज सुदी १५ । वे० स० ६१८ । च मण्डार ।

विशेष—पत्र ४ चौथा नहीं है । इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३६) और है ।

३६५६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १४५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० २३६) और है ।

३६५७ पंचस्तोत्रसंग्रह * * । पत्र स० ५३ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१८ । अ मण्डार ।

विशेष—पाचो ही स्तोत्र टीका सहित हैं ।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१ एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३. विषापहार	नागचन्द्रसूरि	"
४ भूपालचतुर्विंशति	आशाघर	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६५८ पंचस्तोत्रसंग्रह । पत्र स० २४ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८०० । अ मण्डार ।

३६५९. पंचस्तोत्रटीका * * । पत्र स० ५० । आ० १२×८ ड च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २००३ । ट मण्डार ।

विशेष—मत्तामर, विपापहार एकीभाव कस्याणमविर, भूपालपतुर्विवाति इम पांच स्तोत्रों की टीका है।

३६६० पद्मावत्यष्टकपूति—पार्वदेव । पत्र सं १५ । मा ११×४३ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—
स्तात्र । १ काल × । म काल सं १८६७ । पूर्ण । वे सं १४४ । छ मन्थार ।

विषय—प्रसिद्ध— प्रस्ययां पार्वदेवविरचितयां पद्मावत्यष्टकानुत्ती मद् किमप्यबंधयति उत्तम सर्वाणिः
क्षंतव्यं देवनाभिरपि । बर्पागां दामघमि क्षतीगितितुत्तरेरियं वृत्ति भेषाले सूर्यदिने समाप्ता शुद्धमंत्रम्यां प्रस्यासत्परणयात्
पंचसप्तानि चातामिद्वाविशवक्षराणि वासवमुष्यसंबसा प्रमः ।

इति पद्मावत्यष्टकपूतिसमाप्ता ।

३६६१ पद्मावतीस्तात्र— पत्र सं १३ । मा ११३×३८ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१ काल × । मे काल × । पूर्ण । वे सं १३२ । छ मन्थार ।

विशेष—पद्मावती पुत्रा तथा क्षान्तिभावस्तोत्र एकीभावस्तोत्र और विषयपहारस्तोत्र भी हैं।

३६६२ पद्मावती की डास— पत्र सं २ । मा ९३×४३ इत्य । माया—हिन्दी । विषय—स्तात्र ।
१ काल × । मे काल × । पूर्ण । वे सं २१८ । छ मन्थार ।

३६६३ पद्मावतीद्वयक— पत्र सं १ । मा ११३×५ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१ काल × । मे काल × । पूर्ण । वे सं २३१ । छ मन्थार ।

३६६४ पद्मावतीसहस्रनाम— पत्र सं १२ । मा १ × ३३ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—
स्तात्र । १ काल × । म काल सं १६२ । पूर्ण । वे सं २६३ । छ मन्थार ।

विशेष—क्षान्तिभावाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी विद्ये हुये हैं।

३६६५ पद्मावतीस्तात्र— पत्र सं १ । मा १३×६ इत्य । माया संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १
काल × । मे काल × । पूर्ण । वे सं २१२३ । छ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमां (वे सं १ ३२ १८६८) और हैं।

३६६६ प्रति सं २ । पत्र सं ८ । मे काल सं १६३३ । वे सं २६४ । छ मन्थार ।

३६६७ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । मे काल × । वे सं २६ । छ मन्थार ।

३६६८ प्रति सं ४ । पत्र सं १६ । मे काल × । वे सं ४२६ । छ मन्थार ।

३६६९ परमव्याप्तिस्तात्र—बनारसीदास । पत्र सं १ । मा १२३×१३ इत्य । माया—हिन्दी ।
विषय—स्तात्र । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । वे सं २२११ । छ मन्थार ।

३६७० परमात्मराजस्तवन—पद्मनदि । पत्र सं २ । मा ९×३३ इत्य । माया—संस्कृत । विषय—
स्तात्र । १ काल × । मे काल × । पूर्ण । वे सं १२३ । छ मन्थार ।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भट्ट भक्तलकीर्ति । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इ च । नापा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ६६५ । अ भण्डार ।

अथ परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यप्यष्टौ, विशुद्धय इहाशु भवन्ति पूर्णा ।
 सर्वार्थसिद्धजनका स्वचिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१॥
 यद्दधानवज्रहननात्महता प्रयाति, कर्माद्रयोति विपमा शतचूर्णता च ।
 अंतातिगावरगुणा प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराज ॥२॥
 यस्त्रावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनतसुखाब्धिमाशु ।
 सत श्रयन्ति परम भुवनार्च्यं वद, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥३॥
 यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याते निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।
 पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥४॥
 यद्भावनादिकरणाद्भावनाशनाच्च, प्रणश्यति कर्मरिपवोभवकोटि जाता ।
 अस्म्यन्तरेऽत्रविधि साकलाद्वयं स्पुर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥५॥
 सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवति
 दत्ता जिनेन्द्रगरामृत्सुपदं लभन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥६॥
 यं स्वान्तरेतु विमल विमलाविवुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसम परमार्थरूप ।
 अर्हत्पद त्रिजगता शरणा श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥७॥
 यद्दधानशुक्लपविनाखिलकर्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदा स्तववदनाच्चा ।
 सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजना स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥८॥
 यस्याप्तये सुगणिनो विधिनाचरति, ह्याचारयन्ति यमिनो धरपञ्चभेदान् ।
 आचारसारजनितां परमार्थबुद्ध्या, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥९॥
 य ज्ञातुमात्मसुविदो यतिपाठकाश्च, सर्वांगपूर्वजलधेर्लघु याति पार ।
 अन्यान्नयतिशिवद परसत्वबीज, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१०॥
 ये साधयति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गानिरतावनपर्वतादौ ।
 श्रीसाधव शिवगते. करम तिरस्थ, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥११॥
 रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वर्जितः ।
 कर्मवानपि कुकर्मदूरगो, निश्चयेन भुवि य स नन्दतु ॥१२॥

१ ममृशुर्कसितो मर्वातक एक इप इह वाप्यनेकभा ।

मक एव यमिमां न राविरणी य अक्षरमक इहस्तुमिम्मास ॥१३॥

यत्तत्त्वं ध्यातगम्यं परपदकर तीर्त्तमावादिसेम्य ।

कर्मधनं ज्ञानवेर्हं मयभयमयमं ज्येष्ठमात्रदमुमं ॥

येतातीतें कुणालं रहितविधियग सिद्धसाहस्यक्यं ।

स्य दे स्वास्मत्तत्त्वं शिवमुजगतये स्तोमि पुक्त्यामवेर्हं ॥१४॥

पठति मित्त्वं परमात्तरात्रमहास्तवं ये विबुधाः किमं मे ।

तेषां शिवात्मनिविरतौगदरो ध्यानी पुणो स्वात्तरमात्तर ॥१५॥

इत्त्वं यो वारवार्तं पुत्रमष्टरत्नैर्बभित संस्तुतोऽस्मिन्

धारे एतौ शिवात्मना समपुण्यत्नविं मास्तुमे व्यक्तक्यं ।

ज्येष्ठ स्वध्यातवाताविमविधियुवा ह्यमय चित्तमुद्धयं

मग्मयेवो जकर्ता प्रकटनियपुणो धेय्यसानी च सुदः ॥१६॥

इति श्री सक्तसक्रीतिमहाराजविरचितं परमात्तरात्रस्तोत्र सम्पूर्णात् ॥

३६७२ परमानन्दपंचविंशति— । पत्र सं १ । भा ६×४ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—स्तात्र ।

२ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १३३ । अ मण्डार ।

३६६३ परमानन्दस्तात्र— । पत्र सं ३ । भा ७×३ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—स्तात्र । २

काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११३ । अ मण्डार ।

३६७४ प्रति स० २ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं २६५ । अ मण्डार ।

३६७५ प्रति स० ३ । पत्र सं २ । ले काल × । वे सं २१२ । अ मण्डार ।

विशेष—पूजकन्द विन्दायकः ये प्रतिमिति श्री श्री । इसी मण्डार मे एक प्रति (वे सं २११) भीर है ।

३६७६ परमानन्दस्तात्र— । पत्र सं १ । भा ११×७ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—स्तात्र ।

२ काल × । ले काल सं ११६७ पापुण बुदी १४ । पूर्ण । वे सं ४३५ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी धर्म भी विद्या हुआ है ।

३६७७ परमायस्तात्र— । पत्र सं ४ । भा ११३×३ इ च । मापा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ८ । अ मण्डार ।

विशेष—मूर्ध्व की स्तुति श्री श्री है । प्रथम पत्र मे कुछ विगतने के रह गया है ।

३६७८ पाठसंग्रह । पत्र स० ३६ । आ० ४३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ हैं— जैन गायत्री उर्फ वज्रपञ्जर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, रामोकारकल्प, न्हावणकल्प

३६७९ पाठसंग्रह । पत्र स० १० । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८० पाठसंग्रह—संग्रहकर्त्ता—जैतराम बाफना । पत्र स० ७० । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१ पात्रकेशरीस्तोत्र । पत्र स० १७ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

३६८२ पार्थिवेश्वरचिन्तामणि । पत्र स० ७ । आ० ८३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८६० भाद्रवा सुदी ८ । वे० स० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि को थी ।

३६८३ पार्थिवेश्वर । पत्र स० ३ । आ० ७३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक

साहित्य । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १५४४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४ पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र स० १ । आ० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । ख भण्डार ।

३६८६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ६२ । म भण्डार ।

३६८७ पार्श्वनाथ एव वर्द्धमानन्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र स० ३ । आ० १०३×१३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३१८८. पार्वनाथस्तोत्र—। पत्र सं १२। मा १०×४ $\frac{1}{2}$ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं २१३। अ मण्डार।

विशेष—मूल सहित स्तोत्र हैं। मकर सुन्दर एवं मोटे हैं।

३१८९. पार्वनाथस्तोत्र—। पत्र सं १। मा १२ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७६६। अ मण्डार।

३१९१. पार्वनाथस्तात्र—। पत्र सं १। मा १ $\frac{1}{2}$ ×८ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ६६३। अ मण्डार।

३१९६. पारवनाथस्तोत्रटीका—। पत्र सं २। मा ११×१ $\frac{1}{2}$ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तात्र। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ३४२। अ मण्डार।

३१९३. पार्वनाथस्तोत्रटीका—। पत्र सं २। मा १×१ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तात्र। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ६५७। अ मण्डार।

३१९४. पार्वनाथस्तोत्रभाषा—धानतराय। पत्र सं १। मा १×१ $\frac{1}{2}$ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तात्र। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं २११। अ मण्डार।

३१९५. पार्वनाथाष्टक—। पत्र सं ४। मा १२×१ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ३१७। अ मण्डार।

विशेष—प्रति मूल सहित है।

३१९६. पार्वमाहित्यस्तोत्र—महामुनि राजसिंह। पत्र सं ४। मा ११ $\frac{1}{2}$ ×६ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। ले काल सं ११५७। पूर्ण। वै सं ७७। अ मण्डार।

३१९७. प्ररनात्तररवात्र—। पत्र सं ७। मा ८×६ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १८९। अ मण्डार।

३१९८. मातरमरकमत्र—। पत्र सं १। मा ८ $\frac{1}{2}$ ×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १४८६। अ मण्डार।

३१९९. भक्तामरपञ्चिका—। पत्र सं ८। मा १३×८ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १ काल ×। ले काल सं १७८१। पूर्ण। वै सं ३२८। अ मण्डार।

विशेष—श्री हीरामन्द के इधुपुर में प्रतिलिपि की थी।

४००० भक्तामरस्तोत्र—मानतुगाचार्य । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १७२० । वे० स० २६ । अ भण्डार ।

४००२ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वे० स० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रोय है । आ० ५×२ इंच है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्टों की जगह हैं । २×१३

इ च चौडे पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति पदर्शन योग्य है ।

४००४ प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वे० स० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५,

११८६, १३६६) और हैं

४००५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८६७ पीप सुदी ८ । वे० स० २५१ । ख

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मथुरादास ने निमखपुर में लिखी तथा उदेंदराम ने

टिप्पण किया । इसी भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० १२८, २८८, १८५६) और हैं ।

४००६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७४ । घ भण्डार ।

४००७ प्रति स० ८ । पत्र स० ६ से ११ । ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ५४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १२ प्रतिया (वे० स० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८ प्रति स० ९ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७३८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में ७ प्रतिया (वे० स० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९) और है ।

४००९ प्रति स० १० । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० १३४ (४) १३६, २२६) और हैं ।

४०१० प्रति स० ११ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १७० । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० २१५) और है ।

४०११ प्रति सं० १२। पत्र सं २। से काम \times । के सं १७२। अ मण्डार।

४०१२ प्रति सं० १३। पत्र सं १३। से काम स १ ७७ पीप सुबी १। के सं २६३। अ
विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां (के सं २६२ ३३२ ५२२) भी हैं।

४०१३ प्रति सं० १४। पत्र सं ३ से ३६। से काम सं १२३२। अपूर्ण। के सं २ १३। अ
मण्डार।

विशेष—इस प्रति में ३२ श्लोक हैं। पत्र १ २ ४ ६ ७ ८ १६ यह पत्र नहीं हैं। प्रति हिन्दी व्या-
ख्या सहित है। इसी मण्डार में ४ प्रतियां (के सं १६३४ १७ ४ १२२२ २ १४) भी हैं।

४०१४ मकामरस्तोत्रवृत्ति—अ० राधम्मल। पत्र सं ३। का २१३ \times ६ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। र काम सं १६६६। से काम सं १७६१। पूर्ण। के सं १ ७२। अ मण्डार।

विशेष—एक श्री टीका श्रीवापुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में भी यही। प्रति कदा सहित है।

४ १५ प्रति सं० २। पत्र सं ४८। से काम सं १७२४ आसोक सुबी २। के सं २८७। अ

मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (के सं १४३) भी है।

४०१६ प्रति सं० ३। पत्र सं ४। से काम सं १२११। के सं २४४। अ मण्डार।

४०१७ प्रति सं० ४। पत्र सं १४६। से काम \times । के सं ६२। ग मण्डार।

विशेष—कठोचन्द्र गंगवास ने मन्मथस्य कासलीबाल से प्रतिक्रिया कराई।

४०१८ प्रति सं० ५। पत्र सं ५२। से काम सं १७२४ पीप सुबी ८। के सं १२७। अ

मण्डार।

४०१९ प्रति सं० ६। पत्र सं ४७। से काम सं १८३२ पीप सुबी २। के सं ६२। अ

मण्डार।

विशेष—मानांतर में वं लखाराम ने मैमिनाथ चैत्यालय में ईसरवास की पुस्तक से प्रतिक्रिया की थी।

४०२० प्रति सं० ७। पत्र सं ४१। से काम सं १८७३ चैत्र सुबी ११। के सं १२। अ

मण्डार।

विशेष—हरिनारायण काशी में वं कामुराम के पठनार्थ आदिनाथ चैत्यालय में प्रति कवि की थी।

४ २१ प्रति सं० ८। पत्र सं ४८। से काम सं १६८८ काशी सुबी ८। के सं २८। अ

मण्डार।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षत्र अनुराध व्यतिपात् नाम जोगे महाराजाविराज श्री महाराजाराव छत्रमालजी वृ दीराज्ये इदपुस्तक लिखाइत । साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री भणराज भाई मनराज गोत्रे पटवोड जाती दधेरवाल इद पुस्तक पुनिरुप दीयते । लिखत जोसी नराइण ।

४०२२. प्रति स० ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७६१ फागुण । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्तिसूरि । पत्र स० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७६ । अ भण्डार ।

४०२४ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६४० । वे० स० १६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है ।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका ... । पत्र सं० १२ । आ० १०×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६१ । अ भण्डार ।

४०२६ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

४०२७ प्रति स० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १८७२ पीष बुदी १ । वे० स० २१०६ । अ

भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ११६८) और है ।

४०२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० स० ५६६ । अ भण्डार ।

४०२९ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६ ।

विशेष—३६वें काव्य तक है ।

४०३० भक्तामरस्तोत्रटीका । पत्र स० ११ । आ० १२३×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १६१८ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथर मोटे हैं । संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है । सगही पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०८२) और है ।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्न सहित । पत्र स० २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २८५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री नयनसागर मे जयपुर में प्रतिमिति की थी। अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र बिना हुआ है। इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १५१) भी है।

४०३२ प्रति स० २। पत्र सं १२। से कागस सं १८२३ बैसाख सुदी ७। के सं १२६। मन्थार।

विशेष—नोबिदपद में पुरुषोत्तमसागर म प्रतिमिति की थी।

४०३३ प्रति स० ३। पत्र सं २१। से कागस ×। के सं १७। मन्थार।

विशेष—मन्त्रों के बिना भी है।

४०३४ प्रति स० ४। पत्र सं ३१। से कागस सं १८२१ बैसाख सुदी ११। के सं १। मन्थार।

विशेष—पं सदाराम के सिष्य गुनाद मे प्रतिमिति की थी।

४०३५ भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचम्पू झाबड़ा। पत्र सं १४। मा १२३×३ इज। भाषा—हिन्दी मद्य। विषय—स्तोत्र। र कागस सं १८७ कार्तिक सुदी १२। पूर्ण। के सं ५४१।

विशेष—क मन्थार मे २ प्रतियां (के सं ५४२ ५४३) भी है।

४०३६ प्रति सं० २। पत्र सं २१। से कागस सं १६६। के सं १३६। क मन्थार।

४०३७ प्रति सं० ३। पत्र सं ५३। से कागस सं १६३। के सं १३४। मन्थार।

४०३८ प्रति स० ४। पत्र सं २२। से कागस सं १६८ बैसाख सुदी ११। के सं १७६। मन्थार।

४०३९ प्रति स० ५। पत्र सं ३२। से कागस ×। के सं २७१। मन्थार।

४०४० भक्तामरस्तोत्रभाषा—हमराम। पत्र सं ७। मा ५_२×६ इज। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र कागस ×। से कागस ×। पूर्ण। के सं ११२५। मन्थार।

४०४१ प्रति स० २। पत्र सं ४। से कागस सं १८८४ भाष सुदी २। के सं ६८। मन्थार।

विशेष—दीवान मजरचम्पू के मन्थार में प्रतिमिति की नयी थी।

४०४२ प्रति स० ३। पत्र सं १ मे १। से कागस ×। अपूर्ण। के सं ५३१। क मन्थार।

४०४३ भक्तामरस्तोत्रभाषा—गंगराम। पत्र सं २ स २७। मा १२_३×३_३ इज। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र कागस ×। से कागस सं १८६७। अपूर्ण। के सं २७। मन्थार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर गगाराम कृत सवैया, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाषा तथा

इसमे आगे ऋद्धि मन्त्र सहित है।

अन्त मे लिखा है— साहजी ज्ञानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलालजी, लघु आता चैनसुखजी ने ऋषि भागचन्द्रजी जती को यह पुस्तक पुण्यार्थ दिया स० १८७२ का साल मे ककोड मे रहे छै।

४०४४ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ६ से १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७८७ । अपूर्ण । वे० स० १२६४ । अ भण्डार ।

४०४२ प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८२८ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २३६ । छ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये सभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४६ प्रति सं० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ६५३ । च भण्डार ।

४०४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १५७ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे पन्नलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८०१ चैत्र बुदी १३ । वे० स० २६० । व भण्डार ।

४०४६ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५२ । च भण्डार ।

४०५० भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र स० ८ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वे० स० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है । अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३२३) और है ।

४०५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

४०५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५७२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० म० ५७३) है ।

४०५३ भूपालचतुर्विंशतिका—आशाधर । पत्र सं० १४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७७८ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ प० आशाधर ने टीका लिखी थी । प० हीराचन्द्र के शिष्य चोखचन्द्र के पठनार्थ मीजमावाद मे प्रतिलिपि कराई गई ।

प्रचलित निम्न प्रकार है— संवत्सरे बसुमुनिस्त्वैतु (१७७८) मिते माघपद कृष्णा द्वादशी तिथौ मौजमाबारनपरे श्रीमूमसचे नंदाग्नाये बभ्रुत्कारगणे सरस्वतीगण्डे कुंबकुंदाचार्यनिके म्हाारकोत्तम श्री श्री १ = वैवेकवीतिर्वा प्रस सासनकारी भुपबी भीहीरानन्दबीरस्य शिष्येन विनम्रता चोसबन्ध गुत्ससयेन स्वपठनार्थं निरुक्तं भूपाल बगुबिसतिका टीका विनम्रबन्धस्वार्थमित्याद्याभरविरचितामुपासपबुबिसते विनम्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

य मन्थार में एक प्रति (के सं ४०) मीर है ।

४०५४ प्रति सु० २ । पत्र सं १६ । से कास सं १३३२ मंगसिर सुबी १ । के सं० २३१ । म मन्थार ।

विशेष— प्रचलित—स० १३३२ वर्षे मार्ग सुबी १ पुस्वासरे श्रीबान्धनपुरमुम्हवाते श्रीबन्धप्रमुर्त्वालय विष्णुते श्रीमूमसचे बभ्रुत्कारगणे सरस्वतीगण्डे कुंबकुंदाचार्यनिके " " ।

४०५५ भूपालबगुबिसतिकास्तोत्रकीका—विनम्रपत्रम् । पत्र सं २ । मा० १२५५ इम । माया- संस्त । विषय—स्तोत्र । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ३२ ।

विशेष—श्री विनम्रबन्ध नरेन्द्र द्वारा भूपाल बगुबिसति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पुष्पिका में लिखा हुआ है । इसका उत्सव २७में पत्र में निम्न प्रकार है ।

य विनम्रबन्धनामास्त्रीवरी जनि समसूत । असितर्थात् । उपधमइवोपक्षेपतैमपुपसम साक्षात्भूतिमात् सः कर्त्तव्यः सन्वकारान्ध संतः पंडितः एक बकोरः तेषां प्रमोदने द्वितीयभन्धः मस्पर्णुषि भरितं भरिबनोः शुचि च तभरितं च तभरण शीर्षं शुचि भरित भरिष्णुः तस्य बाधो बाध्यः बगत्साकाप्रिभन्ति कर्त्तव्यताबाध प्रमृतयर्मा प्रमृतवर्मे मासां तास्तबोक्ताः धाम्प्रसंभर्मेयर्मा साधसणां संवर्धाः विस्ताराः सास्त्रसंभर्मेयर्मे मासां तास्तबोक्ता ॥२७॥ इति विनम्रबन्धनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का संमत्ताकरण नहीं है । मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ कररी गई है ।

४०५६ भूपालचौबीसीभाषा—पद्माक्षत चौधरी । पत्र सं २४ । मा १२३×३ इव । माया- हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २ कास सं १२९ नैब सुबी ४ । से कास सं १२३ । पूर्ण । के सं ३९१ । क मन्थार ।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ३९२) मीर है ।

४०५७ सुस्मुमहोत्सव— । पत्र सं १ । मा ११×३ इव । माया—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २ कास × । से कास × । पूर्ण । के सं ३९३ । क मन्थार ।

४०५८ महस्तिवचन— । पत्र सं ३१ से ७४ । मा ५×३ इव । माया—हिन्दी । विषय स्तोत्र । २ कास × । से कास × । मपूर्ण । के सं ५८८ । क मन्थार ।

४०५६. महर्षिस्तवन ... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त में पूजा भी दी हुई है ।

४०६० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० ६११ । अ

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

४०६१ महामहिम्नस्तोत्र ... । पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । ज भण्डार ।

४०६० प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३१५ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६३ महामहर्षिस्तवनटीका ... । पत्र सं० २ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

४०६४ महालक्ष्मीस्तोत्र ... । पत्र सं० १० । आ० ८३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र ... । पत्र सं० ६ मे ६ । आ० ६×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
वैदिक साहित्य स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८२ ।

४०६६ महावीराष्टक—भागवन्द । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी प्रति में जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं ।

४०६७. महिम्नस्तोत्र ... । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । झ भण्डार ।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ पीष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

४०६९ युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र ... । पत्र सं० २ से १४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं । इसमें आगे महिम्नस्तोत्र हैं ।

४०७० राविकानाममाळा..... पत्र सं १। मा १ ३×४ इ. च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन।

२ कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं १७९१। छ मन्थार।

४०७१ रामचन्द्रस्तवन..... पत्र सं ११। मा १ ×५ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२ कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं ३३। छ मन्थार।

विशेष—प्रथम— श्रीधनकुमारसहितवासी नारदोत्त श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १ पद्य है।

४०७२ रामबतीसी—सगनकवि। पत्र सं ६। मा १ ६×६ इ. च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

२ कास ×। से० कास सं १७३२ प्रथम चैत्र सुदी ७। पूर्ण। वे सं १२१। छ मन्थार।

विशेष—कवि पौहकला (पुष्करला) काठि के वे। नरासदा में बद्ध व्यास ने प्रतिसिपि श्री जी।

४०७३ रामस्तवन..... पत्र सं ११। मा १ ३×५ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०

कास ×। से कास ×। सपूर्ण। वे सं २११२। छ मन्थार।

विशेष—११ से घासे पत्र नहीं है। पत्र नीचे की ओर से फटे हुए हैं।

४०७४ रामस्तोत्र..... पत्र सं १। मा १ ×४ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २

कास ×। से कास सं १७२५ फागुण-सुदी १३। पूर्ण। वे सं १३८। छ मन्थार।

विशेष—जोवरतन मीठीका ने प्रतिसिपि करवासी थी।

४०७५ लपुराम्बिस्तोत्र। पत्र सं १। मा १ ×४२ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २

कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं २१४९। छ मन्थार।

४०७६ लक्ष्मीस्तात्र—पद्यप्रमदेव। पत्र सं २। मा १ ३×६ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२ कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं ११३। छ मन्थार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १ ३६) भी है।

४०७७. प्रति सं २। पत्र सं १। से कास ×। वे सं १४५। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १४४) भी है।

४०७८. प्रति सं ३। पत्र सं १। से कास ×। वे सं १८२५। छ मन्थार।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

४०७९ लक्ष्मीस्तोत्र..... पत्र सं ४। मा १ ६×३ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०

कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं १४२१। छ मन्थार।

विशेष—६ मन्थार में एक सपूर्ण प्रति (वे सं २ १७) भी है।

४०८०. लघुस्तोत्र ' ' । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६६ । व्य भण्डार ।

४०८१. वज्रपजरस्तोत्र ' ' । पत्र सं० १ । आ० ८३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० ६६८ । छ भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० १६१ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र मे होम का मन्त्र है ।

४०८३. बद्धमानद्वारिणिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. बद्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० १४ । ज भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण की राजा श्रेणिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । सग्रहकर्ता श्री फतेहलाल घर्मा है ।

४०८५. बद्धमानस्तोत्र ' ' । पत्र सं० ५ । आ० ७३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी हैं ।

४०८६. वसुधारापाठ ' ' । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६० । छ भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र ' ' । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २७६ । ख भण्डार ।

४०८८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६७१ । छ भण्डार ।

४०८९ विद्यमानधीसतीर्थकरस्तवन—मुनि ढीप । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६३३ ।

४०९० विषापहारस्तोत्र—धनजय । पत्र सं० ४ । आ० १२३×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८१२ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि प० मोहनदासजी ने अपने शिष्य शुभानीरामजी के पठनार्थ क्षेमकरराजी की पुस्तक से बसई (बस्ती) नगर मे गान्तिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१ प्रति स० २ । पत्र सं ४ । म काल × । के सं ६७१ । छ मन्थार ।

४०६२ प्रति स० ३ । पत्र सं १३ । मे काल × । के सं १७२ । छ मन्थार ।

विशेष—सिद्धिमियस्तोत्र भी है ।

४०६३ प्रति स० ४ । पत्र सं १३ । मे काल × । के सं १२११ । ट मन्थार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४ विद्यापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र सं १४ । मा १ × ४^३ इ च । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ५ । छ मन्थार ।

४०६५ प्रति स० २ । पत्र सं ५ से १६ । म काल सं १७७८ भादवा बुधी ६ । के सं ८८९ । छ मन्थार ।

विशेष—मौजनाबार नगर में पं चोकचन्द्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६ विद्यापहारस्तोत्रभाषा—पद्माक्षान्न । पत्र सं ३१ । मा १२३ × ३ इ च । माया—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र काल सं १६३ कापुल पुरी १३ । ले काल × । पूर्ण । के सं ९६४ । छ मन्थार ।

विशेष—ही मन्थार में एक प्रति (के सं ९६३) भी है ।

४०६७ विद्यापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्ति । पत्र सं ९ । मा ६^३ × ३^३ इ च । माया—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १३८३ । ७ मन्थार ।

४०६८ बीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं ६ । मा ६^३ × ४ इ च । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं २३७ । छ मन्थार ।

४०६९ बीरब्रह्मीसी— । पत्र सं २ । मा १ × ४^३ इ च । माया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २१३ । छ मन्थार ।

४१०० बीरस्तवन— । पत्र सं १ । मा ६^३ × ४^३ इ च । माया—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १८७६ । पूर्ण । के सं १२४८ । छ मन्थार ।

४१०१ वैराग्यशीत—महामत । पत्र सं १ । मा ८ × ३^३ इ च । माया—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २१२६ । छ मन्थार ।

विशेष—पुस्तकी ममरा है कोई ममी ११ प्रति है ।

४१०२ पद्मपाठ—मुचबल । पत्र सं १ । मा १ × ६ इ च । माया—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १८३ । पूर्ण । के सं २३३ । छ मन्थार ।

४१०३. षट्पाठ । पत्र सं० ६ । आ० ४×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । म् भण्डार ।

४१०४ शान्तिधोषणास्तुति * । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

४१०५ शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-स्तवन । २० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन और है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन * । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय मे धरे ।

रोग सोग सताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्र संपूर्ण ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । आ० ६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७० । अ भण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य-

नाना विचित्र भवदु खराशि, नाना प्रकारं मोहाग्निपाशं ।

पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथ ॥१॥

संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबध ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥२॥

काम च क्रोध मायाविलोभ, चतु कषायं इह जीव बध ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥३॥

नोद्वाक्यहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवनिदा मनसा च वाचा ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥४॥

चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्न परिपालनीयं ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथ ॥५॥

प्राप्तस्य वरसं युक्तस्य वचनं ही शान्तिजीव बहुजन्मकुर्वन् ।
 ते वचं क्षेमन्ति देवाधिदेव इह जन्मभरणं तव शान्तिनार्थं ॥६॥
 परब्रह्मचोरी परदारसेवा शकादिकशा भजमुत्पन्नं ।
 ते वचं क्षेमन्ति देवाधिदेव इह जन्मभरणं तव शान्तिनार्थं ॥७॥
 पुत्राणि मित्राणि कसिन्नर्षव इहर्षदमभ्ये बहुजीवन्वभा ।
 ते वचं क्षेमन्ति देवाधिदेव इह जन्मभरणं तव शान्तिनार्थं ॥८॥

अथति पठति नित्यं श्री शान्तिनामाविधाति
 स्वभक्तमधुरवाणी पापतापोपहारी ।
 कृतमुनिभद्र सर्वकार्येषु नित्यं
 --- -- --- --- --- --- ॥९॥

इति श्रीशान्तिनामस्ताव संपूर्णं । शुभम् ॥

४१०८ शान्तिनामस्ताव्र----- । पत्र सं २ । पा १५५३ इव । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
 १ वाक्य । १ वाक्य । पूर्ण । वे सं १७१६ । छ मण्डार ।

४१०९ शान्तिपाठ----- । पत्र सं ३ । पा ११५३ इव । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
 १ वाक्य । १ वाक्य । पूर्ण । वे सं ११६ । छ मण्डार ।

४११ शान्तिविधाम----- । पत्र सं ७ । पा ११५५ इव । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
 १ वाक्य । १ वाक्य । पूर्ण । वे सं २११ । छ मण्डार ।

४१११ श्रीपतिस्ताव्र-चैनसुखी । पत्र सं ९ । पा ५५५ इव । भाषा हिन्दी । विषय स्तोत्र ।
 १ वाक्य । १ वाक्य । पूर्ण । वे सं ७१२ । छ मण्डार ।

४११२ श्रीस्ताव्र----- । पत्र सं २ । पा ११५५ इव । भाषा संस्कृत । विषय स्तोत्र ।
 १ वाक्य । १ वाक्य सं १६ । ४ वाक्य कुटी १ । पूर्ण । वे सं १८ । छ मण्डार ।

विषय-प्रति संस्कृत टीका ललित है ।

४११३ मन्त्रनयविचाररत्न----- । पत्र सं ५ । पा १२५३ इव । भाषा-संस्कृत । विषय-
 स्तोत्र । १ वाक्य । १ वाक्य । पूर्ण । वे सं ३१२ ।

विषय-१७ पत्र है ।

स्तोत्र साहित्य]

४११४ समवशरणस्तोत्र * * । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १७६८ फागुन सुदी १५ । पूर्णा । वे० सं० २६६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

ब्रुषभाद्यानभिवद्यान् वदित्वा वीरपश्चिमजितेन्द्रान् ।

भक्त्या नतोत्तमाग स्तोभ्ये तत्समवशरणार्णि ॥२॥

४११५ समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र सं० २ से ६ । आ० ११^१/_२×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

४११६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । अ भण्डार ।

४११७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८५ माघ बुदी ५ । वे० सं० ३०५ । अ

भण्डार ।

विशेष—प० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

४११८. सभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणानदि । पत्र सं० २ । आ० ८^१/_२×४^३/_२ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७६० । अ भण्डार ।

४११९. समुदायस्तोत्र * * । पत्र सं० ५३ । आ० १३×८^३/_२ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८७ । पूर्णा । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्रो का संग्रह है ।

४१२० समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन । पत्र सं० ११ । आ० १०^१/_२×४^३/_२ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत श्लोको पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४१२१ सर्वतोभद्रमंत्र । पत्र सं० २ । आ० ६×३^३/_२ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १८६७ ग्रामोज सुदी ७ । पूर्णा । वे० सं० १४२२ । अ भण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन—लघुकवि । पत्र सं० ३ से ५ । आ० ११^१/_२×५^३/_२ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

वि० तमपुष्पिका— इति भारत्याललघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णातामागतम् ।

४१२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ११५५ । अ भण्डार ।

४१६४ सरस्वतीस्तोत्र—गृह्यसूक्ति । पत्र सं १ । पृ ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र (जैनोत्तर) । र काम × । म काम सं १८५१ । पूर्ण । के सं १५३ । अ मन्थार ।

४१६५ सरस्वतीस्तोत्र—भुतसागर । पत्र सं २६ । पृ १३×४३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम × । म काम × । अपूर्ण । के सं १७०४ । ट मन्थार ।

विषय—बीच के पत्र नहीं हैं ।

४१०६ मरस्वतीस्तोत्र— । पत्र सं ३ । पृ ८×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम × । म काम × । पूर्ण । के सं ८९ । क मन्थार ।

४१७७ प्रति स०० । पत्र सं १ । म काम सं १८६२ । के सं ८३६ । अ मन्थार ।

विषय—रामचन्द्र के प्रतिमूर्ति की थी । मरस्वतीस्तोत्र भी नाम है ।

४१२८ सरस्वतीस्तोत्रमाहा (शारदा-स्तोत्र)— । पत्र सं २ । पृ ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम × । म काम × । पूर्ण । के सं १२६ । अ मन्थार ।

४१२६ सङ्ग्रहमास (मधु)—भाचार्य समस्तभद्र । पत्र सं ४ । पृ ११३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम × । म काम सं १७१४ माध्विन कुटी १ । पूर्ण । के सं ९ । क मन्थार ।

विषय—इसके अतिरिक्त मद्रबाहु विरचित ज्ञानाकुश पाठ भी है । ४३ स्तोत्र है । मानन्दराम ने स्वयं जोधरात्र माहीबा के पठनार्थ प्रतिमूर्ति की थी । श्रीजी जोधरात्र माहीबा की पढिका की छे पत्र ४ मु समावेर ।

४१३० मारुचमुर्धिराति— । पत्र सं ११२ । पृ १२×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम × । म काम सं १८६ पीठ कुटी १३ । पूर्ण । के सं २८८ । अ मन्थार ।

विषय—प्रथम ६३ पृष्ठों में लक्ष्मणीति इत भाष्यबाधार है ।

४१३१ मायमरुवापाठ— । पत्र सं ७ । पृ १४×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम । म काम सं १८२६ । पूर्ण । के सं १०८ । अ मन्थार ।

४१३ मिष्टमदना— । पत्र सं ८ । पृ ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम । म काम सं १८८६ पाम्पुन कुटी ११ । पूर्ण । के सं ६ । अ मन्थार ।

विषय—धीमागिरयर्चन के प्रतिमूर्ति की थी ।

४१३३ मिष्टस्तोत्र— । पत्र सं ८ । पृ १३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काम × । म काम । पूर्ण । के सं १३२२ । ट मन्थार ।

४१३४ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र स० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २००८ । अ भण्डार ।

४१३५ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—हासिये मे कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्षर काफी मोटे हैं ।

मुनि विशालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २६३, २६८) और हैं ।

४१३७ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ८५३ । ङ भण्डार ।

४१३८ प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ४०६ ।

च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर मे अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३८, १०३) और है ।

४१४० प्रति स० ७ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८६८ । वे० स० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१. प्रति स० ८ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १६८ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २४७)
और है ।

४१४२ प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १८२५ । ट भण्डार ।

४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका । पत्र स० ५ । आ० १३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३६ । व्य भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३६ । आ० १२३×५ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल स० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०५ । क भण्डार ।

४१४५ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नयमल । पत्र स० ८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४७ । क भण्डार ।

४१४६ प्रति स० ७ । पत्र सं ३ । से कासं × १ वे० सं ८३१ । छं मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (से सं ८३२) भी है ।

४१४७ सिद्धिप्रियस्तोत्र— । पत्र सं १३ । मा ११३×१५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२ कासं × १ से कासं × १ पूर्ण । से सं ८४ । छ मन्थार ।

४१४८ सुगुरुस्तोत्र— । पत्र सं १ । मा १३×१५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२ कासं × १ से कासं × १ पूर्ण । से सं २३८ । छ मन्थार ।

४१४९ वसुधारास्तात्र— । पत्र सं १ । मा १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२ कासं × १ से कासं × १ पूर्ण । से सं २४१ । छ मन्थार ।

विशेष—ग्रन्थ में लिखा है— अथ बंटाकर्णविरच्य सिद्धयै ।

४१५० सौंदर्यसहस्रीस्तोत्र—महारथ जगद्भूषण । पत्र सं १ । मा १२×१३ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २ कासं × १ से कासं सं १८४४ । पूर्ण । से सं १८२७ । छ मन्थार ।

विशेष—शुद्धासती कर्कट में पार्श्वनाथ चैत्योत्सव में महारथ सुरेश्वरीति धामेर बंसो में सर्वगुण के पठनार्थ
प्रतिलिपि की थी ।

४१५१ सौंदर्यसहस्रीस्तात्र— । पत्र सं ७४ । मा १३×१३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २ कासं × १ से कासं सं १८३७ मन्थारी बुकी २ । पूर्ण । से सं २७४ । छ मन्थार ।

४१५२ स्तुति— । पत्र सं १ । मा १२×१५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवण । २ कासं × १
से कासं × १ पूर्ण । से सं १८६७ । छ मन्थार ।

विशेष—अमबल महावीर की स्तुति है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

जाता जाता महात्रस्ता मर्ता मर्ता जगत्प्रभु

वीरी वीरी महोवीरोत्सवं देवांसि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३ स्तुतिमण्ड— । पत्र सं २ । मा १४×१३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२ कासं × १ से कासं × १ पूर्ण । से सं १२४ । छ मन्थार ।

४१५४ स्तुतिसंग्रह— । पत्र सं २ से १७ । मा ११×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२ कासं × १ से कासं × १ पूर्ण । से सं २१६ । छ मन्थार ।

विशेष—वज्रवर्मेश्वरीस्तवण बीसवीर्षद्वारस्तवण मन्त्रि है ।

४१५५ स्तोत्रसंग्रह * । पत्र स० ६ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	मुन्दरसूर्य	प्राकृत
२. भयहरस्तोत्र	×	"
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४. बृहदशान्तिस्तोत्र	×	"
५. अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२रा पत्र नहीं है । सभी श्वेताम्बर स्तोत्र हैं ।

४१५६ स्तोत्रसंग्रह * * । पत्र स० १० । आ० १२×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१. पद्मावतीस्तोत्र —	×
२. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एव स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४. पार्श्वनाथपूजा —	×
५. लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रभदेव

४१५७ स्तोत्रसंग्रह * * । पत्र स० २३ । आ० ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है— १. एकीभाव, २. विषापहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र ।

४१५८ स्तोत्रसंग्रह * । पत्र स० ४६ । आ० ८३×५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल स० १७७६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२. प्रतियो का मिश्रण है । निम्न संग्रह हैं—

१. निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिन्दी
२. श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३. पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	"

४ लषीभावस्तोत्र ५ श्वात्मामामिनी ६ विनयञ्जस्तोत्र ७ मच्छीस्तोत्र

८ पद्मवर्णापस्तोत्र

९ शीतपागस्तोत्र—

पद्यनेदि

संस्कृत

१ बद्ध मानस्तोत्र

×

॥

संपूर्ण

११ श्रीमद्योगिनीस्ताम

१२ शमिस्तोत्र

१३ धारदाट्टक

१४ विनायकीवीलीनाम

१५ पद्म १६ विनती (अष्टविनदास)

१७ माता के सोमहस्वप्न

१८ परमानन्दस्तोत्र ।

मुमानन्द के विषय में नगुरुक म प्रतिमिदि की थी ।

४१४६ स्तोत्रसंग्रह— । पद्य में २२ । पा ८×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १

नाम × । म नाम × । संपूर्ण । के सं ७६ । अ अष्टार ।

विषय—विनायक है ।

१ त्रिदशमस्तुति

श्रुतिर्मन्त्रस्तोत्र (शीतम मण्डप), ३ संपूर्णातिदमन्त्र

८ उपमर्षदस्ताम

२ निरञ्जस्तोत्र ।

४१६० स्तोत्रसंग्रह— । पद्य में २२१ । पा ११×२ इ च । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—

स्तोत्र । १ नाम × । म नाम × । संपूर्ण । के सं २४ । अ अष्टार ।

विषय—पद्य में १७ १८ १९ नहीं हैं । निरञ्ज नैमित्तिक स्तोत्र पाठों का संग्रह है ।

४१६१ स्तोत्रसंग्रह— । पद्य में २७६ । पा १ × ४ १/२ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

१ नाम । म नाम × । संपूर्ण । के सं ६७ । अ अष्टार ।

विषय—२१८ २४६ का पद्य नहीं है । साधारण पूजासूक्त तथा स्तुति संग्रह है ।

४१६२ स्तोत्रसंग्रह— । पद्य में १२१ । पा १६ २ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १

नाम × । म नाम । संपूर्ण । के सं १ ६७ । अ अष्टार ।

४१६३ स्तोत्रसंग्रह— । पद्य में १७ । पा ७ ८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १

नाम । म नाम । संपूर्ण । के सं १३३ । अ अष्टार ।

४१६४ प्रति १ ४ ८ । पद्य में ११ । म नाम × । के सं १३६ । अ अष्टार ।

४१६५ स्तोत्रसंग्रह— । पद्य में ११ । पा ८×८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १

नाम । म नाम । संपूर्ण । के सं २६ । अ अष्टार ।

विषय—विनायक है ।

स्तोत्र साहित्य]

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६ स्तोत्रसंग्रह . । पत्र सं० ८२ । आ० ११३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है । कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है ।

४१६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३३ । क भण्डार ।

४१६८ स्तोत्रपाठसंग्रह " . । पत्र सं० ५७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३१ । क भण्डार ।

विशेष—पाठों का संग्रह है ।

४१६९ स्तोत्रसंग्रह . । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह	—	प्राकृत
स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	"	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	"
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"
त्रिषाणहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
भूपालचतुर्विंशतिका	भूपालकवि	"
महिम्नस्तवन	जयकीर्ति	"
समवशरण स्तोत्र	विष्णुसेन	"

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
महर्षि उषत	×	संस्कृत
ज्ञानाकुबजस्तोत्र	×	"
चित्रबेबस्तोत्र	×	"
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	"
नीमिनाथ दुर्गाक्षरीस्तोत्र	पं धामि	"
कबु सामायिक	×	"
कपुबिसवित्स्वजन	×	"
यमकावुक	य प्रमदरीति	"
यमकवच	×	"
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"
बद्धमालस्तोत्र	×	"
विजोपकारस्तरुस्तोत्र	×	"
मह श्रीछावुक	प्रभाषा	"
मधुसामायिक	×	"

४१७ प्रति सं० २। पत्र सं० १२५। ले कस ×। वी सं ४२५। क मध्या।

विशेष—प्रबिन्ध उक्त पाठों का ही संग्रह है।

४१८ प्रति सं० ३। पत्र सं ११८। ले कस ×। वी सं ४२६। क मध्या।

विशेष—उक्त पाठों के प्रविष्टि निम्नपाठ घोर हैं।

वीरतापस्तवन × संस्कृत

भीमार्जुनविजयस्तोत्र ×

४१९ स्तोत्रसंग्रह—। पत्र सं ११७। भा १२२×७ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र

कस ×। ले कस ×। पूर्ण। वी सं ४२७। क मध्या।

विशेष—निम्न संग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
प्रतिष्ठास्तु	×	संस्कृत
सामायिक	×	"
जतिगाठसंग्रह	×	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कन्याण्मन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	बनारसीदास	"
चैत्यवदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचकल्याणपूजा	×	"

४१८२. स्तोत्रसंग्रह" । पत्र स० ५१ । आ० ११×७३ इ च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६५ । छ भण्डार ।

विक्षेप—निम्न प्रकार संग्रह है ।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्णा
सामायिकपाठ	प० महाचन्द्र	"	पूर्णा
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्णा
पंचपरमेष्ठीगुण	×	"	पूर्णा
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	×	"	अपूर्णा
निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	पूर्णा
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदहक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्णा
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	संस्कृत	पूर्णा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	धानतराम	"	"
"एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्णा
श्रालोचनापाठ	×	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	"

४१७६ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १४। मा ७५४३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १
काल X। से काल सं १५४४ मास सुदी ९। पूर्ण। वै सं २३७। क मन्थार।

विषय—मिम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

श्वत्थामापीडनी भुगीरवरों की शयमान ऋषिर्मंडमस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र।

४१७७ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं २४। मा ६५४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं २३६। क मन्थार।

विषय—मिम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

पद्मानवीस्तोत्र	X	संस्कृत	१ से १ पत्र
शङ्करवीस्तोत्र	X	"	११ से २ पत्र
स्वर्णाक्षर्यणुविद्या	महीधर	"	२४

४१७८ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ८२। मा ७२५४ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २०
काल X। पूर्ण। वै सं ८२९। क मन्थार।

४१७९ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं २७। मा १३५४२ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २
काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं २९५। क मन्थार।

विषय—मिम्न स्तोत्र है।

मत्स्यभर, एषीभाव विवाहहार, एवं भूगलशुचिस्तिका।

४१८० स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १ से १९। मा ६५६ इ च। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—
स्तोत्र। २ काल X। से काल X। अपूर्ण। वै सं ८९७। क मन्थार।

४१८१ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं २३ से १४१। मा ५५४ इ च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—
स्तोत्र। २ काल X। से काल X। अपूर्ण। वै सं ८९६। क मन्थार।

विषय—मिम्न पाठी का संग्रह है।

नाम स्तोत्र	वर्तु	भाषा	
पंचवैगत	शरद्वंद	हिन्दी	अपूर्ण
नमस्तद्विधि	X	संस्कृत	
देवनिष्कृता	X	"	
वाचिस्तोत्र	X	"	
विदेवशक्तिस्तोत्र	X	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	वनारसीदास	"
चैत्यवदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचकल्याणपूजा	×	"

४१८२. स्तोत्रसंग्रह" । पत्र स० ५१ । आ० ११×७३ इ च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ८६५ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है ।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्णा
सामायिकपाठ	प० महाचन्द्र	"	पूर्णा
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्णा
पंचपरमेष्ठीगुण	×	"	पूर्णा
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	अपूर्णा
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	पूर्णा
चौबीसदण्डक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	"
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	"	अपूर्णा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	संस्कृत	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानचरित्य	हिन्दी	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	"
आलोचनापाठ	—	"	"
त्रिद्विंशति	—	"	"
		संस्कृत	"

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	
विषाणहारस्तोत्रभाषा	X	हिन्दी	पूर्ण
संबोधनवाचिका	X	"	"

४१८३ स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं २१। भा १ २×७ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २
 काल X। मे काल X। पूर्ण। वै सं ५२४। कु मन्थार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

नवग्रहस्तोत्र यो गनीस्तोत्र पद्मावतीस्तोत्र तीर्थङ्करस्तोत्र सामाभिलषाठ भा. है।

४१८४ स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं २३। भा १ ३×४ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
 २ काल X। मे काल X। पूर्ण। वै सं ५२३। कु मन्थार।

विशेष—नवग्रह भादि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१८५ स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं २२। भा २ २×६ इ. च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—स्तोत्र।
 २ काल X। मे काल X। अपूर्ण। वै सं ५२२। कु मन्थार।

४१८६ स्तोत्र—आचार्य असंबंध। पत्र सं १। भा १ २×५ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—
 स्तोत्र। २ काल X। मे काल X। पूर्ण। वै सं ५२१। कु मन्थार।

४१८७ स्तोत्रपूजासंग्रह.....। पत्र सं २। भा १ १×४ इ. च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र पूजा।
 २ काल X। मे काल X। अपूर्ण। वै सं ५२। कु मन्थार।

४१८८ स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं १३। भा १ २×५ इ. च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २
 काल X। मे काल X। अपूर्ण। वै सं ५५२। कु मन्थार।

४१८९ स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं ७ से ४७। भा १ १×४ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र
 २ काल X। मे काल X। अपूर्ण। वै सं ५५५। कु मन्थार।

४१९० स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं २ से १७। भा १ १ २×२ इ. च। भाषा—संस्कृत। विषय—
 स्तोत्र। २ काल X। मे काल X। अपूर्ण। वै सं ४२२। कु मन्थार।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

गनीमावस्तोत्र

कारिदास

११५

अम्बिकावन्दितोत्र

कुमुदचन्द्र

"

अति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित है।

४१६१ स्तोत्रसंग्रह" "। पत्र सं० २ मे ४८। आ० ८×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३०। च भण्डार।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह" "। पत्र सं० १४। आ० ८३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४३१। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

१. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवगुंदि	संस्कृत
२ कल्याणमन्दिर	कुमुदचन्दाचार्य	"
३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१६३ स्तोत्रसंग्रह" "। पत्र सं० ७ मे १७। आ० ११×८३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३२। च भण्डार।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह" "। पत्र सं० २४। आ० १२×७३ इंच। भाषा—हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६३। ट भण्डार।

४१६५ स्तोत्रसंग्रह "। पत्र सं० ५ से ३५। आ० ६×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल सं० १८७५। अपूर्ण। वे० सं० १८७२। ट भण्डार।

४१६६ स्तोत्रसंग्रह "। पत्र सं० १५ से ३४। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

मामायिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
मामायिक लघु	×	"	पूर्ण
सहस्रनाम लघु	×	"	"
सहस्रनाम बडा	×	"	"
श्रृपिमडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
वृद्धनवकार	×	अपभ्रंश	"
वीतरागस्तोत्र	पद्मनिदि	संस्कृत	"
जिनपजरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पद्मावतीचन्द्रस्वीस्तोत्र	X	"
वन्द्यविरस्तोत्र	X	"
हनुमानस्तोत्र	X	हिन्दी
महावर्षाण	X	संस्कृत
पारायणा	X	प्रकृत

४१३७ स्तोत्रसंग्रह— पत्र सं ४। पृ ११×४३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २

काल X। मं काल X। पृष्ठ १। सं १४८। छ मन्थार।

विषय—विष्णुसिद्धि स्तोत्र है।

एकीभाष भूपालश्रीश्री श्री विद्यापहार, मैदिनीय सुपरकृत हिन्दी में है।

४१३८. स्तोत्रसंग्रह— पत्र सं ७। पृ ४३×१३। भाषा—संस्कृत। विषय—महाभ। २

काल X। मं काल X। पृष्ठ १। सं १३४। छ मन्थार।

विष्णुसिद्धि स्तोत्र है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पार्वतीस्तोत्र	X	संस्कृत
श्रीवर्षाणस्तोत्र	X	"

विषय—श्रीवर्षाण शैली में स्थित विष्णुस्तोत्र की स्तुति है।

पार्वतीस्तोत्र	X	संस्कृत
विष्णुस्तोत्र	कमलप्रकाश	"
		पुस्तक

श्री वार्षाणिकवरेण कथ्यः देवप्रभाषार्थपरत्वाहृतः।

बाहीरभूतानिरेय शैली विष्णुस्तोत्र कमलप्रकाशकः॥

४१३९. स्तोत्रसंग्रह— पत्र सं १४। पृ ४३×१३। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २

काल X। मं काल X। पृष्ठ १। सं १३४। छ मन्थार।

कामीस्ताव	कमलप्रकाश	संस्कृत
मैत्रिस्तोत्र	X	"
पद्मावतीस्तोत्र	X	"

४२०० स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० १३ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । ज भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह^५ ... । पत्र सं० १५२ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२ स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० ३२ । आ० ४३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । म् भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३ स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० ११ से २२७ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । म् भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है ।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० १४ । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७७ । व् भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५ स्तोत्रत्रय^{११} ... । पत्र सं० २१ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । व् भण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६. स्वयंभूरस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टप्पा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है ।

४२०७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ४३५ । ज

भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ४३४, ४३६) और हैं ।

७०८. प्रति स० ३। पत्र सं० १४। से० काम X। वे सं २६। अ म्पार।

विषय—संस्कृत टीका सहित है।

४२०६. प्रति स० ४। पत्र सं० २४। से० काम X। मपूर्ण। वे० सं० १२४। अ म्पार।

विषय—संस्कृत में संक्षिप्तार्थ रिये मये हैं।

४२१० स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाकराचार्ये। पत्र सं० ४३। मा ११X६ इज। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। र काम X। से काम सं १८६१ मंसिर सुदी १२। पूर्ण। वे सं० ८४१। अ म्पार।

विषय—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है।

इसी म्पार में ही प्रतियां (वे० सं० ८३२, ८३६) भी हैं।

४२११ प्रति स० २। पत्र सं ११६। से काम सं १२१२ पीप सुदी १९। वे सं ८४। अ

म्पार।

विषय—तनुसुखनाथ पांड्या जीवती बाटसू के मार्फत श्रीनाथ पाटमी से प्रतिस्तिपि कराई।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका—। पत्र सं ३२। मा १ X४३ इज। भाषा—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। र काम X। से० काम X। मपूर्ण। वे० सं ८८४। अ म्पार।



पद भजन गीत आदि

४२१३. अनाधानोचोढाल्या—विम । पत्र सं २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
६० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । अ भण्डार ।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ढालो
में प्रार्थना की गयी है ।

४२१४. अनाथोमुनि सञ्जाय * । पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७३ । अ भण्डार ।

४२१५. अह्नकचौढालियागीत—विमल विनय (विनयरंग) * ... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४३
इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल १६८१ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८४५ । अ
भण्डार ।

विशेष—आदि अन्ते भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

वर्द्धमान चउवीसमउ जिनवदी जगदीस ।

अरहनक मुनिवर चरीय भरिण सुधरीय जमीस ॥१॥

शोपई—

सु जगीसधरी मनमाहे, कहिसि सबध उछाहे ।

अरहनकि जिमन्नत लीषड, जिम ते तारी वसि कीषड ॥२॥

निज मात * राइ उपदेसइ, वलिकत आदरीय विसेसइ ।

पहुतउ ते देव विमानि, सुणिय्यो भवियण तिम कानि ॥३॥

शोहा—

नगरा नगरी जाणीसइ, अलकापुरि अ्रवतार ।

वसइ तिहा विवहाणीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

शोपई—

सुविचार सुभक्षा धरणी * * * * * ।

तसु नंदन रूप निधान, अरहनक नाम प्रधान ॥५॥

प्रन्तिम—

आर सरण चित चोतवइ जी, परिहरि आरि कपाय ।

शोप तजइ व्रत उचरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥५५॥

मसलपाम आरम बसी पी सादिम लेके निहार ।
 ईला भाव ए सवि परिहरी भी मन समरद नबकार ॥१३६॥
 सिमा सवारज मानरमा भी सूर फिरण उमि ताप ।
 सहइ परीसह साइसी भी देइइ भवना पाप ॥१३७॥
 समतारस माहि मीलवज भी मनेधरतज सुख प्याल ।
 काल कटी दिग्धी पामीयज भी सुँवर देव बिभाज ॥१३८॥
 पुरग जखा सुख भोगभी भी परमाएँव जसाज ।
 दिहां भी बधि बमि पागेरयइ भी अनुक्रमि सिवपुर जास ॥१३९॥
 घरहुँनक ि मते बरइ भी अंत समय सुमझाए ।
 बनम सफल करि ते सही भी पामइ परम क्रम्याए ॥१४०॥
 भी अएतर गन्ध बीपता भी, भी जिनचंद मुक्तिव ।
 बयबंता बग बाणीयइ भी बरसख परमाणंद ॥१४१॥
 भी मुणु सैखर गुणु बिकरु भी बाचक भी बयरेव ।
 तासु बीस भावइ मणुइ भी बिसलबिनय अतिरग ॥१४२॥
 ए सर्वथ सुहृत्त भी के पावइ नर मारि ।
 से पामइ सुख संपदा भी बिल दिन बय बयकार ॥१४३॥

इति अर्धनरु अरुणतिमलप्रितम् समप्तम् ॥

संवत् १९८१ वर्षे धनु सुवी १४ दिने बुधवारै संवित भी हर्षितिहृषिकिषिष्यहृषीकीतिसगिणित्पैला
 वधरंरसू मना सिद्धि । भी पुस्तकनपरै ।

४२१६ आदिभिनवरस्तुति—कमलकीर्ति । पत्र सं ३ । पृ १ ३/४ इव । भाषा—कुजराती ।
 विषय—गीत । १ नाम × । मे नाम × । पूर्ण । के सं १८०४ । ट मन्थार ।

विषय—श्री गीत है दोनों ही के कर्ता कमलकीर्ति है ।

४२१७ आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं १ । पृ १ २/४ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—
 गीत । १ नाम सं १६१६ । मे नाम × । के सं २६३ । ट मन्थार ।

बिषय—भाषा पर कुजराती का प्रभाव है ।

४२१८ आदिनाथ सक्मग्रय— । पत्र सं १ । पृ १ ३/४ इव । भाषा हिन्दी । विषय—गीत ।
 १ नाम × । मे नाम । पूर्ण । के सं २१९८ । अ मन्थार ।

४०१६ आदीश्वरविठ्जति . । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
२० काल स० १५६२ । ले० काल स० १७४१ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

अन्तिम पद्य—

पनरवासठि जिनतूर अविचल पद पायो ।

वीनतडी कुलट पूणीया आमुमस वद्धि दशम दिहाडै मनि वैरागे इम भणीया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालविलास—श्री क्रिशनलाल । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तवन—हेमविमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र सं० २ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल स० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८३ । ट भण्डार ।
विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३. चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । आ० १२×८३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चम्पाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में रूग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव से रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल अनीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४. चेलना सज्जाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल स० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । अ भण्डार ।

४२२५. चैत्यपरिपाटी । पत्र सं० १ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५५ । अ भण्डार ।

४२२६. चैत्यवंदना . . । पत्र सं० ३ । आ० ६×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

४२२७. चौबीसी जिनस्तुति—खेमचंद । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । ले० काल स० १७६४ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

४२२८. चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२० । अ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थकुरस्तुति—अद्यदेव । पत्र सं १७ । मा ११२×२३ इंच । मापा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । ८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं १४१ । अ म्पार ।

विशेष—एतदन्तर्गत पाठ्या ने प्रतिमिति की थी ।

४२३० चौबीसीस्तुति— । पत्र सं १३ । मा ९×४ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—स्तवन । ८

कात सं १६ । से कात × । पूर्ण । के सं २३६ । अ म्पार ।

४२३१ चौबीसतीर्थकुरस्तुति— । पत्र सं ११ । मा १२×४ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । ८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं १३३३ । अ म्पार ।

४२३२ चौबीसतीर्थकुरस्तवन—सुणकरस्य सप्तसतीबाह्य । पत्र सं ८ । मा ९×४ इंच । मापा—

हिन्दी । विषय—स्तवन । ८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं ५३७ । अ म्पार ।

४ ३३ अलङ्गी—रामकृष्ण । पत्र सं ५ । मा १२×१२ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं १६८ । अ म्पार ।

४२३४ अम्बुदुमारसम्पन्न— । पत्र सं १ । मा १२×४ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । ८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं २१३२ । अ म्पार ।

४२३५ जवपुर के सहिरो की वदना—स्वरूपचन्द्र । पत्र सं १ । मा ९×४ इंच । मापा—

हिन्दी । विषय—स्तवन । ८ कात सं १६१ । से कात सं १६८० । पूर्ण । के सं २७८ । अ म्पार ।

४२३६ जियामक्ति—हर्षकीर्ति । पत्र सं १ । मा १२×२ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं १८४३ । अ म्पार ।

४२३७ जिनपचीसी व अम्बुसमह— । पत्र सं ४ । मा ८२×६ इंच । मापा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । ८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं २४ । अ म्पार ।

४२३८ ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयमुन्दर । पत्र सं १ । मा १ ×४ इंच । मापा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । ८ कात × । से कात सं १७८३ । मातल मुची २ । पूर्ण । के सं १८८३ । अ म्पार ।

४२३९ मन्दाही भीममिद्रीकी— । पत्र सं ४ । मा ७३×४ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । ८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं २३१ । अ म्पार ।

४२४० म्यांमरियानुचोबास्या— । पत्र सं २ । मा १ ×४ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—गीत ।

८ कात × । से कात × । पूर्ण । के सं २२३१ । अ म्पार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सीता ता मनि संकर ढाल—

रमती चरणौ सीस नमावी, प्रणमी सतगुरु पायो रे ।
 आभरिया ऋषि ना गुण गाता, उलटै आज सवाया रे ॥
 भवियण वदो मुनि आभरिया, ससार समुद्र जे तरियो रे ।
 सबल साह्या परिखा मन सुधै, सील एरण करि भारियो रे ॥२॥
 पइठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे ।
 तस सुत मदन भरम बालुडो, किरत जास कहाणी रे ॥

सीजी ढाल अपूर्ण है । आभरिया मुनि का वर्णन है ।

४२४१ एमोकारपच्चीसी—ऋषि ठाकुरसी । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।
 विषय-स्तोत्र । २० काल सं० १८२८ आषाढ बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७८ । अ भण्डार ।

४२४२ तमाखू की जयमाल—आरांद्मुनि । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।
 विषय-गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७० । अ भण्डार ।

४२४३ दर्शनपाठ—धुधजन । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८८ । अ भण्डार ।

४२४४ दर्शनपाठस्तुति — । पत्र सं० ८ । आ० ८×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २०
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२७ । अ भण्डार ।

४२४५ देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इ च । भाषा-
 हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल सं० १८८५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४६ । अ
 भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रठ नेमा नामे हुवा लखण सरव संजोग ।
 आठ सहस लखण धरो गोमकार गछ जोग ॥१॥
 सहत अठारा साध जी अजायो वालीस हजार ।
 मोठार मुनिवर विचरज्या रा लार ॥२॥

 वसुदेव राजा हाकरा देवाकीण अंगजात ॥३॥
 नन्दन छ देव का तणा सा राखा कै उणहार ।
 बाणी सुण श्री नेम का लाषड संजसार ॥४॥

सापणा सुध भाखरो रैत पद्धती नाम ।

देविरयावण स्वामी जी कपोतो बीज बीज ॥१॥

मध्यभाग—

देव छी तन्माह मंदण बांदवारे उभी भी नेम भिरोसवार ।

मन्बला सामा न देव नर कारवासागा इम मरदीवार ॥

साभ्या साम्हो देवकी देखी नर जमा रहा छ नजर मीहान र ।

कसतो—टाछ नाम बास्तम्योर छुटी छे हुब तणीर बार र ॥२॥

तनमन बास सोहान्बो चमस्यो र फल में फुली छे जेहना कामरे ।

बनाया माझा तो माव रही रे देव ता मोचन छीरत न यम्परे ॥३॥

बीबकी तो सापान छ बिला करी र पाछा माह म् माहीनो माहारे ।

सोच किनर देवकीरे प्यीर मोहतली ए बासरे ॥४॥

सासो तो भाखयो भी नेमकीरे एतो छहु वारा बासरे ।

साभ्या माहो मानु पडेरे जारो मो त्वारे हुवा नासरे ॥५॥

द्वितीय—

नरकी तांज छोडो समसा नपर मझारा

मुहमांमा बीजि बणारे मणि मालक भंडार ।

मखि माणक बहु बीषा बनकी मनरा इछा बाह न राकी ॥

एराकरण ए डाल व मारा तीज बीज इन्ही ए साखी ए ॥६॥

रति भी देवकी की डाल न ॥ ॥ रामजी ॥

रत्नरत्न जूनीसाज धावका बेतरान ठाकरवा केटा छटाका छे बांज पई जमोसु जया बाज बांजम्मा । मितो

विगत दूर १४ मं १७७३ ।

बूबकी की डाल— रत्नरत्नरत्न और है । प्रति पल पर है । बरि घण मट हावये है । पउने के मरी माला है ।

द्वितीय

सुख पाया जी मारवाठ मजार कर जाडि रत्नरत्न भगी ॥१॥

४ ५६ द्वीपायनदाल—गुणसागरसूरि । पत्र सं १ । पृ १ २×४२ इंच । पाला—हिन्दी पुत्र १११ । वनम गणन । र काम × । मे काम × । पूर्ण । ३ मं २१६४ । क मण्डार ।

४ ५७ नमिनाय क नवमदाल—बिन'हीसाज । पत्र सं १ । पृ १६४×६ इंच । पाला—हिन्दी । पत्र १११ । र काम सं १०३४ । मे काम सं १ २२ मर्वातर दुही १ । ३ सं ३४ । क मण्डार ।

विशेष—जोडु के इतिहासि हुई थी । जगजगी की साह जीव भिमदा हुवा है ।

४२४८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिख्या मगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपञ्चीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४९ नागश्री सज्जाय—विनयचंद्र । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ३रा पत्र है ।

अन्तिम—

आपण बाधो आप भोगवै कोण गुरु कुण चेला ।

सजम लेइ गई स्वर्ग पाचमे अजुही नादी न वेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुक्ते जाती मोटी गर्भ वसेरा रे ।

विनयचंद्र जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ॥१६॥

इति नागश्री सज्जाय कुचामणो लिखिते ।

४२५० निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तुति । २० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । म् भण्डार ।

४२५१ नेमिगीत—पासचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १२३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२ नेमिराजमतीकी घोड़ी ... । पत्र सं० १ । आ० ९×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३ नेमिराजमती गीत—छीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ९३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४ नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।

आलइ जन्म महारिड भोरे, काइ करघारे मन माहि विचार ॥१॥

मति राचो रे रमणी ने रंग क सेवोरे जीण वाणी ।

तुम रमड्यो रे सजम न सगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥

अरिहत देब अराधाइयोजी, रे गुर गरुधा श्री साध ।

धर्म केवलानो भाखोउ, ए समकित वे रतन जिम लाद्धक ॥३॥

पहिलो समकित सेवीय रे, जे से धर्मनो मूल ।
 सबम सकित बाहिरो बिसु मास्यो रे तुस बंड्य तुमिक ॥१४॥
 तहत करीत सरबहो रे, से मासो जलनाथ ।
 पांचेइ मात्मन परिहरो, जिन मिसीइ रे मिकपुरबो सत्पथ ॥१५॥
 बीब सहुबी बीबेबा बांछिरे, मरसु न बांछे कोइ ।
 प्रपथ राखा बैसवा तस बाबर रे हसु जो मठ कोइ ॥१६॥
 जोरी नीबे पर तसी रे, तिसु ती घागे पाप ।
 धन कंसु किम बोपीय बिसु बांछइ रे मव मवता संताप न ॥१७॥
 सबस मकीरत ए मव रे, पेरे मव दुख मनेक ।
 कुड कहुवा पामीइ, काइ मास्यो रे मग नाहि विवेक ॥१८॥
 महिसा संग कुइ हर नव लस सम कुव ।
 कुण सुल कारण ए तता किम काये रे हिस्वा मतिवठ ॥१९॥
 पुन कसब बर हट मरि, ममता बाजे फोक ।
 कु परिगइ बाग माहि से ते छाडरे यथा बहुमा लोक ॥२०॥
 मात पिता बंडब सुतरे, पुन कसब परवार ।
 सचार्या सहु बी समा, कोइ पर मव रे नहीं राखणहार ॥२१॥
 संकुस जल मीपरे रे, बिसु रे तुटइ मात ।
 जाइ ते बेला नहीं रे बाहुडि जरा मातरे बीबन ने धांड ॥२२॥
 व्याधि जरा जव जन नहीं रे, तब जन धर्म संमास ।
 धारा हर बंसु बरसते कोइ समरधि रे बाबेगोवास क ॥२३॥
 धमप बीबस को पाहुणा रे, सद्दु कोइसु संघार ।
 एक बिल छठो बाइकउ कससु बाणइ रे कियु हो धमठारक ॥२४॥
 कोप मान माया तमो रे, सोम मेपरब्यो नीपारे ।
 समतारस भवपुरीय बली बीहिमो रे मर धमठारन ॥२५॥
 धारंन छाका धमठमा रे पीउ संजम रसपुरि ।
 किउ मधु से सहु बी बरो इम बोसे तजन बैनपुरक ॥२६॥

पद भजन गीत आदि]

बाल वृमचारही जिरा वाइससमा ॥
समदविजइजी रा नद हो, वैरागी माहरो मन लागो हो नेम जिणद सू
जादव कुल केरा चद हो ॥ बाल० ॥१॥

देव घणा छइ हौ पुभ जीदोवता (देवता)
तेतो न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ॥ बाल० ॥२॥

कैइक दोम करइ नर नारनइ मामइ तेलसिदूर हर हो ।
वाके इक बन वासै वासै वास, कक वनवासो करइ ।
(कष्ट) कसट सहइ भरपुर हो ॥३॥

तु नर मोहो रे नर माया तरौ, तु जग दीनदयाल हो ।
नोजीवनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ॥४॥
राजल के नारिणो उदरी पहुतीउ मुकति मभार ।
हीरानद सवेग सांहिवा, जी वी नव म्हारी वीनतेडा श्रवधारि हो ॥५॥
॥ इति नेमि गीत ॥

४२५५ नेमिराजुलसजभाय पत्र सं० १ । आ० ६×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल सं० १८५१ चैत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६ पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७ पद—ऋषि शिवलाल । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा अंधे ॥या०॥

जैसे पछी वीरछ वसेरा, वीछरै होय सवेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाडा ।

भत समै चलण की वेला, ज्याँ गाडा राहो छाडारे ॥२॥

ऊचा २ महल वणाये, जीव कह इहा रैणा ।

चल गया हस पडी रही काया, लेय कलेवर दगा ॥३॥

मात पिता सु पतनी रे थारी, तीण धन जोवन खाया ।

उड गया हँस काया का मडण, काढो प्रेत पराया ॥४॥

करी कमाइ इछ भो प्रत्या उमटी पूछी लोइ ।
 मेरी २ करकेँ बनम गमावा बसता संक न होइ ॥५॥
 पाव की पोटे कछी छिर सीनी हे मूरन भोरा ।
 इकनरी पोटे करी तु कछै, तो होय कुटुम्बहुं प्यारा ॥६॥
 मात पिता सुत सज्जन मेरा मेरा बन परिवारो ।
 मेरा २ पढा पुकारै बसता, नहीं कछु नारो ॥७॥
 को छिरा छैरे संग न बसता भेद न बाका प्रया ।
 मोह बस पवारन बीराणी हीरा बमम पमत्या ॥८॥
 प्रांस्या देखत कैते बल गए जगमि प्राखर प्रासुही बसएण ।
 प्रौसर बीता बहु पछताबै माखी कु हाव मससखा ॥९॥
 प्राज कर बरम काम कर वाही न नीयत बारै ।
 काम प्रबाणुं बाटी पकवी बच क्या कारण छारै ॥१॥
 ए बीमबाइ पाइ कुहेमी कैर न बाक बारो ।
 हीमत होय तो बीम न कीजे कूब पडो निरधारो ॥११॥
 सीइ मुखे बीम मीरगसो जसो कैर नइ कूख हारो ।
 इण बीसबति मरण मुखे बीम पाव करी निरधारो । १२॥
 सुपर सुदेव भरम कु सेयो सेयो बीम का सरना ।
 पीप सोबसाक कहे भो प्राणी मातम कारण करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसमूह— । पत्र सं ११ । पं १२×१ इज । भावा—हिन्को । विषय—भजन । १
 पत्र × । मै काम × । प्रपूर्णा । वै सं ४२७ । क मण्डार ।

४२५९. पदसमूह— । पत्र सं १ । मै काम × । वै सं १२७३ । अ मण्डार ।

विषय—विजुवन साहब सावसा— ।

इसी मण्डार में २ पदसमूह (वै सं १११७ २१३) भीर हैं ।

४२६० पदसमूह— । पत्र सं ६ । मै काम × । वै सं ४१ । क मण्डार ।

विषय—इसी मण्डार में ११ पदसमूह (वै सं ४४४ ६ मै ४१३) तक भीर हैं ।

४२६१ पदसमूह— । पत्र सं ३ । मै काम × । वै सं ६२३ । अ मण्डार ।

४२६२ पदसंग्रह । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । भू भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ से ३२४) और हैं ।

नोट—वे० सं० ३१८वें में जयपुर की राजवशावलि भी है ।

४२६३ पदसंग्रह । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १७५६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ पदसंग्रह (वे० सं० १७५२, १७५३, १७५८) और हैं ।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दीलतराम आदि कवियों के पद हैं ।

४२६४. पदसंग्रह । पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

- १ मोहि तारौ सामि भव सिधु तै ।
- २ राजुल कहै तुमे वेग सिधावे ।
- ३ सिद्धचक्र वदो रे जयकारी ।
- ४ चरम जिरोसर जिहो साहिवा
चरम धरम उपगार वाल्हेसर ॥

४२६५ पदसंग्रह । पत्र सं० १२ से २५ । आ० १२×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००८ । ट भण्डार ।

विशेष—भागचन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, भूमूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवरादास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियों के पद हैं ।

४२६६. पदसंग्रह—उत्तमचन्द । पत्र सं० १८ । आ० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका संग्रह है । पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं ।

४२६७. पदसंग्रह—ब्र० कपूरचन्द । पत्र सं० १ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४३ । अ भण्डार ।

४२६८. पद—केशरगुलाब । पत्र सं० १ । आ० ७×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्राङ्म-

भीषर मन्दन नयनामन्दन सर्वावेक हमारो जी ।

दिसजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है जिसदिन कबहू न हाजिब प्यारा वा ॥

४०६१ पद्मसमूह—चैतनसुख । पत्र सं० २ । मा० २४×३२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । र
वाच × । म० वाच × । पूर्ण । वै सं० १७२७ । ट मण्डार ।

४०७० पद्मसमूह—अयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० २२ । मा० ११×३२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पद । र काल सं० १५७४ भाषाड सुरी १० । म० काल सं० १५७४ भाषाड सुरी १ । पूर्ण । वै सं० ४३७ । क
मण्डार ।

विशेष—प्रतिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लवभग २ ० पत्रों का संग्रह है ।

४०७१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । म० काल सं० १५७४ । वै सं० ४३५ । क मण्डार ।

४०७२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ मे ४० । म० काल × । मपूर्ण । वै सं० १६२ । ट मण्डार ।

४०७३ पद्मसमूह—देवाप्रसाद । पत्र सं० ४४ । मा० १५×३२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन ।
र वाच × । म० वाच सं० १५६१ । पूर्ण । वै सं० १७२१ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति पुष्पाकार है । विभिन्न राग रागिनियों में पद दिये हुए हैं । प्रथम पत्र पर लिखा है— श्री
देवतामर्या सं० १५६१ वा बेताल सुरी १२ । पुष्पाकार बसरी नैण्डर ।

४०७४ पद्मसमूह—दौलतराम । पत्र सं० २ । मा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।
र वाच × । म० वाच × । मपूर्ण । वै सं० ४२१ । क मण्डार ।

४०७५ पद्मसमूह—बुधबल । पत्र सं० २६ मे ६२ । मा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पद भजन । र वाच × । म० वाच × । मपूर्ण । वै सं० ७६७ । अ मण्डार ।

४०७६ पद्मसमूह—भागचन्द । पत्र सं० २१ । मा० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद
भजन । र वाच × । म० वाच × । पूर्ण । वै सं० ४३१ । क मण्डार ।

४०७७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । म० वाच × । वै सं० ४३२ । क मण्डार ।

विशेष—बोड़े पत्रा का संग्रह है ।

४०७८ पद्म—मन्दबर्द्ध । पत्र सं० १ । मा० ११×३२ इंच । भाषा—हिन्दी । र वाच × । म०
वाच × । पूर्ण । वै सं० २२६२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा ।

समभो स्यु त राज ॥

४२७६. पदसंग्रह—मंगलचन्द । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व

भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माणिकचन्द । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व

भजन । २० काल × । ले० काल सं० १६५५ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३ पदसंग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद है ।

४२८४ पदसंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व

भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियाँ (वे० सं० ४३५, ४३६) और हैं ।

४२८५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६ पद व स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ८८ । आ० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	८
सुगुरुशातक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुरापञ्चीसी	"	"	—
गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	"	—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीमात्रस्तोत्र	सुन्दरदास	हिन्दी	१४
ब्रह्मनामि ब्रह्मसिद्धि की भावना	"	"	—
परसंग्रह	माणिक्यचन्द्र	"	४
तेरहस्यमपबीसी	"	"	११
हृत्वाचसर्पिणीकालबोध	"	"	"
बीबीस बंधक	दीनतराम	"	१२
बसबीसपबीसी	दानतराम	"	१७

४१८० पार्वणिसंगीत—झाजू (समष्पुम्पुन्दर के शिष्य) । पत्र सं १ । मा १ × २ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १८२८ । अ नम्बर ।

४२८८ पार्वनाथ की निशानी—जिनहर्षे । पत्र सं ३ । मा १ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २२४७ । अ नम्बर ।

विशेष—२१ पत्र से—

प्रारम्भ—
मुक्त संपति बामक सुरनर नामक परतिब पस विराषा है ।
बासी छवि कति मपीपम घोपम रिपति बसु विरुवा है ॥

प्रसिद्ध—
तिहा सिबाबाबस तिहा रे बसा रे सेवक बिलबदा है ।
बबर सिबाणी पस बसासी सुस जिनहर्षे नामबा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध नाम मन्मा लोम की सम्झाय की है ।

४२८२ प्रसिद्ध सं० २ । पत्र सं ९ । से काल सं १८२२ । के सं २१३३ । अ नम्बर ।

४२६० पार्वनाथपीपई—प० लालो । पत्र सं १७ । मा १२ × १२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र काल सं १७३४ कार्तिक सुदी । से काल सं १७६३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । के सं १६१८ । अ नम्बर ।

विशेष—अन्व प्रसिद्ध—

संयत् सवरसे बीबीस कालिक पुत्र पस पुत्र बीस ।
नौरंग ठप बिहारी मुनिपल सबे मुपति बहै विरि मास ॥२६१॥
नामर बाल वैद्य गुप्त ठाम नमर बख्खटो जलम नाम ।
सब भालक पुजा बिलधर्म करे कति पानी बहू धर्म ॥२६७॥

कर्मक्षय कारण शुभहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत ।
पडित लाखो लाख सभाव, सेवो धर्म लखो सुभयान ॥२६८॥

आचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्श्वनाथ चौपई सपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पाद दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शासन मे दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी ।

४२६१ पार्श्वनाथ जीरोछन्दसत्तरी ' ' । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १७८१ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १८६५ । अ भण्डार ।

४२६२ पार्श्वनाथस्तवन ' ' ' । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्श्वनाथ स्तवन और है ।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र ' ' ' । पत्र सं० २ । आ० ८३×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६६ । अ भण्डार ।

४२६४. बन्दनाजखड़ी—विहारीदास । पत्र सं० ४ । आ० ८×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१३ । च भण्डार ।

४२६५. प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

४२६६ बन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज भण्डार ।

४२६७. प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । ङ भण्डार ।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद ' ' ' ' । पत्र सं० २२ । आ० ५३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । ञ भण्डार ।

४२६९ बाहुबली सञ्जाय—विमलकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४५ ।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सञ्जाय और है ।

४३००. भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । आ० १२×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तुति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तिया हैं ।

स्वाभ्याषाठ सिद्धमूर्ति, मुंठमूर्ति, बोरिमूर्ति, भाषार्यमूर्ति, भोयमूर्ति, बीरमूर्ति, विर्वासुमूर्ति, प्रीर महीश्वरमूर्ति ।

४३०१ प्रति सं० १ । पत्र सं १ । मे ६ कात्त × । मे सं २४७ । छ मन्थार ।

४३०२ मक्तिपाठ— । पत्र सं १ । मा ११२×७३ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र कात्त × । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं २४६ । छ मन्थार ।

४३०३ मञ्जनसमग्र—नयन कवि । पत्र सं ४१ । मा १४४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-पत्र । र कात्त × । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं २४ । छ मन्थार ।

४३०४ मरुदेवी की सम्झाय—श्रीपि क्षात्रचन्द्र । पत्र सं १ । मा २२×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तवत । र कात्त सं १८ । कार्तिक सुदी ४ । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं २१८७ । छ मन्थार ।

४३०५ महावीरजी का चौडास्या—श्रीपि क्षात्रचन्द्र । पत्र सं ४ । मा १३×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र कात्त × । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं २१८७ । छ मन्थार ।

४३०६ मुनिमुप्रवचिनती—देवश्रद्धा । पत्र सं १ । मा १०३×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तवत । र कात्त × । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं १८१७ । छ मन्थार ।

४३०७ राजारानी सम्झाय— । पत्र सं १ । मा १०४×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र कात्त × । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं १९९१ । छ मन्थार ।

४३०८ राजपुरास्तवने— । पत्र सं १ । मा १४×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तवत । र कात्त × । मे कात्त × । पूर्ण । मे सं १८६३ । छ मन्थार ।

विलेख—राजपुरा ग्राम में स्थित श्रीविंशति की स्तुति है ।

४३०९ विजयकुमार संझाय—श्रीपि क्षात्रचन्द्र । पत्र सं १ । मा १४×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तवत । र कात्त सं १८६१ । मे कात्त सं १८७२ । पूर्ण । मे सं २१६१ । छ मन्थार ।

विलेख—कोटा के रामपुरा में पत्थर रचना हुई । पत्र ४ से आगे स्थानतः सज्जन हिन्दी में प्रीर है । जिसका र कात्त सं १८६४ कार्तिक सुदी १२ है ।

४३१० प्रति सं० २ । पत्र सं ४ । मे कात्त × । मे सं २१८६ । छ मन्थार ।

४३११ विनतीसमग्र— । पत्र सं २ । मा १२×४ इ च । माया-हिन्दी । विषय-स्तवत । र कात्त × । मे कात्त सं १८२१ । पूर्ण । मे सं २१३ । छ मन्थार ।

विलेख—महाराज रामपुरा में सवाई जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

द भजन गीत आदि]

४२१२. विनतीसप्रह—ब्रह्मदेव । पत्र स० ३८ । आ० ७३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अं भण्डार ।

विशेष—सासू बहू का भगडा भी है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिमा (वे० स० ६६३, १०४३) और है ।

४३१३ प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० १७३ । ख भण्डार ।

४३१४ प्रति स० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । छ भण्डार ।

४३१५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । ट भण्डार ।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६७ । क भण्डार ।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र स० १ । आ० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३४ । अं भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुगुण भगवारी ।

रिषलाल जी करि जोडि वीनवै फर सिर चरणीणी ॥

सहर माधोपुर रावत पचावन कातीग सुदी जाणी ।

श्री सीतल जिन गुण गाथा अति उलास आणी ॥ सीतल० ॥१२॥

॥ इति सीतलनाथ स्तवन सपूर्ण ॥

४३१८. श्रेयासस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र स० १ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४१ । अं भण्डार ।

४३१९. सतियोकी सज्जाय—ऋषि खजमल जी । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी

गुजराती । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २२४५ । अं भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न है—

इतीदक सतियारा गुण कहेया थे सुरा सांभलो ।

उत्तम पराणी खजमल जी कहइ ॥३४॥

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है ।

४३२० सज्जाय (चौदह बोल)—ऋषि रायचन्द । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८१ । अं भण्डार ।

४३२१ सर्वायसिद्धिसम्पन्नयम् । पत्र सं १ । पा० १ × ४३ इत्यम् । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
 र० काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १४७ । क मन्डार ।

विशेष—पद्म पण स्तुति की है ।

४३२२ सरस्वतीघण्टकम् । पत्र सं ३ । पा ६ × ७३ इत्यम् । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र
 नाम × । से काल × । पूर्ण । वे सं २११ । क मन्डार ।

४३२३ साधुवदना—सायिकचन्द्र । पत्र सं १ । पा १ ३ × ४३ इत्यम् । भाषा—हिन्दी । विषय—
 स्तवन । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २ १४ । ट मन्डार ।

विशेष—शैलाम्बर धामनाथ की साधुवदना है । कुल २७ पद्य हैं ।

४३२४ साधुवदना—पुण्यसागर । पत्र सं १ । पा १ × ४ इत्यम् । भाषा—पुण्यमी हिन्दी । विषय
 स्तवन । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ८३८ । क मन्डार ।

४३२५ मारबीबीसीभाषा—पारसवास निगोस्वा । पत्र सं ४७ । पा १२३ × ७ इत्यम् । भाषा
 हिन्दी । विषय—स्तुति । र काल सं १११८ कार्तिक सुदी २ । से काल सं ११३१ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वे सं
 ७८५ । क मन्डार ।

४३२६ प्रति सं २ । पत्र सं १ १ । से काल सं ११४८ वैशाख सुदी २ । वे सं ७८६ । क
 मन्डार ।

४३२७ प्रति सं ३ । पत्र सं १७१ । से काल × । वे सं ८११ । क मन्डार ।

४३२८ सीतादालम् । पत्र सं १ । पा १ ३ × ४ इत्यम् । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र
 काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २१६७ । क मन्डार ।

विशेष—पद्मपत्र कुल चतन काम भी है ।

४३२९ मोक्षद्वयतीसम्पन्नयम् । पत्र सं १ । पा १ × ४३ इत्यम् । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
 र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १२१८ । क मन्डार ।

४३३० रघुलभद्रसम्पन्नयम् । पत्र सं १ । पा १ × ४ इत्यम् । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
 र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २१५२ । क मन्डार ।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अकुरोपणविधि—इन्द्रनदि । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।
विशेष—पत्र १४-१५ पर यत्र है ।
- ४३३२ अकुरोपणविधि—प० आशाधर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल १३वी शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।
विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है ।
- ४३३३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।
विशेष—प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नहीं है । संस्कृत मे कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।
४३३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३१९ । ज भण्डार ।
४३३५. अकुरोपणविधि । पत्र सं० २ मे २७ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । ख भण्डार ।
विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।
४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल " । पत्र सं० २६ । आ० १२×७३ इ च । भाषा—
प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १ । च भण्डार ।
४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र सं० २९ । आ० १२×५ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७९४ । पूर्ण । वे० सं० १५५६ । ट भण्डार ।
- ४३३८ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र सं० २१४ । आ० १४×८ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १५७० । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । च भण्डार ।
विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी ।
- ४३३९ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र सं० ४८ । आ० १३×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १९३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । अ भण्डार ।
४३४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । क भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ९) और है ।

४३४१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ७७। से काल सं० १९३३। वै सं० ३३। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं० १०२) भी है।

४३४२ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। से० काल X। वै० सं० २८। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में दो प्रतिमां (वै० सं० २८ में ही) भी हैं।

४३४३ प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। से काल X। वै सं० १९१। क मण्डार।

विशेष—भाषाठ सुदी ३ सं० १९६७ की यह ग्रन्थ रघुनाथ शारदादे ने बढ़ाया।

४३४४ अकृत्रिमचैरयालयपूजा—मनरङ्गलाल। पत्र सं० ३। भा० ११X८ इ च। भाषा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल सं० १९३। मास सुदी १३। से काल X। पूर्ण। वै सं० ७४। अ मण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

नाम 'मनरंज' धर्मरक्षि सौ मी प्रति राजै प्रीति।

चोईसी महाराज को पाठ रख्यो विन रीति ॥

प्रेरकता घटितास की रख्यो पाठ सुमरीत।

ग्राम नय एकीहमा नाम भववती तत ॥

रचना संकट संबंधीपद्य—

विस्तति एक सत सतक वै विघटसंमत ज्ञानि।

मात्र भूक नमोवही पूर्ण पाठ महान ॥

४३४५ अक्षयनिधिपूजा—। पत्र सं० ३। भा० १२X३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय पूजा।

र काल X। से काल X पूर्ण। वै सं० ४। अ मण्डार।

४३४६ अक्षयनिधिपूजा—। पत्र सं० १। भा० ११X३ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र

काल X। से काल C। पूर्ण। वै सं० ३८३। अ मण्डार।

विशेष—कमाल हिन्दी में है।

४३४७ अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण। पत्र सं० २। भा० ११३X३ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल X। से काल सं० १७८३ ताचन सुदी ३। पूर्ण। वै सं० ४। क मण्डार।

विशेष—श्री देव स्वैराम्बर देव से प्रतिनिधि की की।

४३४८ अक्षयनिधिविमान—। पत्र सं० ४। भा० १२X४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा

र काल X। से काल X। पूर्ण। वै सं० १४३। अ मण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं० १९७९) भी है।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४३४६. अढाई (साढ़् द्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ६१ । आ० ११×५३ इच्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० का१ × । अपूर्णा । वे० स० ५५० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०४४) और है ।

४३५०. प्रति सं० २ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १८२४ जरेष्ठ बुदी १२ । वे० स० ७८७ । क

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७८८) और है ।

४३५१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८५ । ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी ३ । वे० सं० ८४० । ड

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्णा प्रतियां (वे० स० ५, ४१) और हैं ।

४३५२ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८८४ भाद्रवा सुदी १ । वे० स० १३१ । छ

भण्डार ।

४३५३ प्रति सं० ५ । पत्र स० १२४ । ले० काल सं० १८६० । वे० स० ४२ । ज भण्डार ।

४३५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वे० स० १२६ । झ भण्डार ।

विशेष—विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ११३ । आ० १०३×७३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्णा । वे० स० २ । च भण्डार ।

४३५६ अढाईद्वीपपूजा । पत्र स० १२३ । आ० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १८६२ पौष सुदी १३ । पूर्णा । वे० स० ५०५ । अ भण्डार ।

विशेष—अंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महूआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३४) और है ।

४३५७ प्रति सं० २ । पत्र स० १२१ । ले० काल स० १८८० । वे० स० २१४ । ख भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी जीवरण ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी ।

४३५८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १८७० कार्तिक सुदी ४ । वे० स० १२३ । घ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति [वे० स० १२२] और है ।

४३५९ अढाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र स० १६३ । आ० १२३×५ इच्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—पूजा । २० काल सं० चैत सुदी ६ । ले० काल सं० १६३६ वैशाख सुदी ४ । पूर्णा । वे० स० ८ । क भण्डार ।

विशेष—अमरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा मे पूजा रचना की ।

४३६० प्रति स० ७। पत्र सं ६८। से काल सं १९५७। के सं ३६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा [के सं ५४५३] भी हैं।

४३६१ प्रति स० ३। पत्र सं १४४। से काल X। के सं २१। अ मन्थार।

४३६२ अनन्तचतुर्दशीपूजा—शाविदास। पत्र सं १६। मा ८३×७ इंच। भाषा संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ४। अ मन्थार।

विशेष—छठोद्यापन विधि सहित है। यह पुस्तक मणोरमणी गणनाथ ने कोरासों के मन्दिर में बढाई थी।

४३६३ प्रति स० ९। पत्र सं १४। से काल X। के सं ३८६। अ मन्थार।

विशेष—पूजा विधि एवं अवकाश हिन्दी मध्य में है।

इसी मन्थार में एक प्रति सं १८२ की [के सं ३६] भी है।

४३६४ अनन्तचतुर्दशीप्रतपूजा—। पत्र सं १३। मा० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ३८८। अ मन्थार।

विशेष—माघिनाथ से अनन्तमाघ तक पूजा है।

४३६५ अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूपण। पत्र सं १८। मा १३×७ इंच। भाषा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ३४। अ मन्थार।

४३६६ प्रति स० २। पत्र सं ८६। से काल सं १८२७। के सं ४२१। अ मन्थार।

विशेष—सवाई जयपुर में व रामचन्द्र ने प्रतिस्तिपि की थी।

४३६७ अनन्तचतुर्दशीपूजा—। पत्र सं २। मा १२×३ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ३। अ मन्थार।

४३६८ अनन्तकालपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं १। मा १३×५ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल X। से काल X। के सं २४२। अ मन्थार।

४३६९ अनन्तनाथपूजा—श्री भूपण। पत्र सं २। मा ७×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं २१३३। अ मन्थार।

४३७० अनन्तनाथपूजा—। पत्र सं १। मा ८३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ८२१। अ मन्थार।

४३७१ अनन्तमाघपूजा—सेवरा। पत्र सं ३। मा ८३×९ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल X। से काल X। पूर्ण। के सं ३३। अ मन्थार।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है ।

४३७२. अनन्तनाथपूजा . . . । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४ । अ भण्डार ।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा . . . । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० स० ५२०, ६६५) और हैं ।

४३७४ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ११७ । छ भण्डार ।

४३७५ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २३० । ज भण्डार ।

४३७६ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है ।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्ति । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

४३७८ अनन्तव्रतपूजा—साह सेवारास । पत्र स० ३ । आ० ८×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६६ । अ भण्डार ।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि . . . । पत्र स० १८ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८५८ भाद्रवा सुदी ९ । पूर्ण । वे० स० १ । ग भण्डार ।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य । पत्र स० ६ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० स० १३६३ । अ भण्डार ।

४३८१ अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र स० १८ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल स० १६३० । ले० काल स० १८४५ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४६७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

सवत् १८४५ का— अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथी च चौथि लिखित पिरागदास मोहा का जाति बाकलीवाल प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक विराजमाने सति प० कल्याणदासतत्सेवक आज्ञाकारी पंडित खुस्यालचन्द्रेण इदं अनन्तव्रतोद्यापनलिखापित ॥१॥

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं २३६) भी है ।

४३८० प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । से काल सं० १६२५ माघीय शुक्ल १३ । के सं० ७ । अ मन्थार ।

४३८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । से काल × । के सं० १२ । अ मन्थार ।

४३८४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । से काल × । के सं० १२६ । अ मन्थार ।

४३८५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । से काल सं० १८१४ । के सं० २७ । अ मन्थार ।

४३८६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । से काल × । के सं० ४३२ । अ मन्थार ।

विशेष—२ विषय मन्थार के हैं । श्री साकमडगपुर बृहस्पति के हर्ष नामक दुर्गा बलिष्ठ ने प्रत्येक रचना कराई थी ।

४३८७ अभिषेकपाठ—। पत्र सं० ४ । मा १२×२३ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—मन्थार के अभिषेक के समय का पाठ । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं० १११ । अ मन्थार ।

४३८८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३७ । से काल × । अपूर्ण । के सं० ३२२ । अ मन्थार ।

विशेष—विधि विधान संश्लिष्ट है ।

४३८९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । से काल × । के सं० ७३२ । अ मन्थार ।

४३९० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । से काल × । के सं० १६२२ । अ मन्थार ।

४३९१ अभिषेकविधि—काशीसेन । पत्र सं० ११ । मा ११×२३ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—मन्थार के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं० ३१ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं० ३१) भी है जिसे मञ्जूराम सखु ने जीवन्तराम सेठी के पञ्जाब प्रतिष्ठानि की थी । चित्तामणि पार्ष्णिनाथ स्त्रीय सामसेन इत्ये भी है ।

४३९२ अभिषेकविधि—। पत्र सं० ८ । मा ११×२३ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—मन्थार के अभिषेक की विधि एवं पाठ । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं० ७५ । अ मन्थार ।

४३९३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । से काल × । के सं० ११६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं० २७) भी है ।

४३९४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । से काल × । अपूर्ण । के सं० १११४ । अ मन्थार ।

४३९५ अभिषेकविधि । पत्र सं० १ । मा ८३×१६ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—मन्थार के अभिषेक की विधि । र काल × । से काल × । पूर्ण । के सं० १६३२ । अ मन्थार ।

४३६६ अष्टाष्टाध्याय * * * * * पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-सल्लेखना विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं— ग्रन्थका नाम रिदुड है । जिसका संस्कृत रूपान्तर अरिष्टाध्याय है । आदि अन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

एणमंत सुरासुरमउ लिरयणवरकिरणकतविछुरिय ।
 षोरजिरणपोयजुयल रामिऊण भरोमि रिदुडाइं ॥१॥
 ससारम्मि भमतो जीवो बहुभेय भिण्ण जोरिणसु ।
 पुरकेण कहवि पावड सुहमणु अत्त ए सदेहो ॥२॥

अन्त—

पुणु विज्जवेज्जहणूणां वारउ एव वीस सामिय्य ।
 सुगीव सुमतेण रइय भणिय मुणि ठीरे वरि देहि ॥२०१॥
 सूई भूमिलें फलए समरे हाहि विराम परिहारो ।
 कहिजइ भूमोए समवरे हातयं वच्छा ॥२०२॥
 अट्टाट्टारह छिणो जे लद्धीह लच्छरेहाउं ।
 पढमोहिरे अंक गविजए याहि एं तच्छ ॥२०३॥

इति अरिष्टाध्यायशास्त्र समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखित ॥श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २४१) और है ।

४३६७ अष्टाहिकाजयमाल * * * * * पत्र सं० ४ । मा० ६३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत मे है ।

४३६८ अष्टाहिकाजयमाल * * * * * पत्र सं० ४ । मा० १३×४ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३१) और है ।

४३६९ अष्टाहिकापूजा * * * * * पत्र सं० ४ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है ।

४४०० अष्टाहिकापूजा * * * * * पत्र सं० ३१ । मा० १०३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १२३३ में इस मन्दिर की प्रतिमिति कराई जाकर मन्दिरक भी रत्नकीर्ति की चैत की रीति की । अथवासा प्राकृत में है ।

४४०१ अष्टाद्विकापूजाकथा—सुरेश्वरकीर्ति । पत्र सं १ । या १ २×२ इत्थ । भाषा—संस्कृत ।
विषय अष्टाद्विका पर्व की पूजा तथा कथा । र काल सं १८३१ । ल काल स १८१८ भाषास मुनी १ । र सं २१९ । अ मन्दार ।

विशेष—य बुधवासवम् ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिमिति की थी ।

मन्दारकोऽभूञ्जनवाकिकीर्ति श्रीमूलसन्धे करसारवासा ।

गण्धेहि तत्पट्टपुराजिराजि देवेश्वरकीर्ति समभूततम् ॥११७॥

तत्पट्टपूर्वाचलमाभुक्त्वा श्रीकुन्दकुदात्मयसम्भुक्त्वा ।

महेश्वरकीर्ति प्रबभूवपट्ट सेवेश्वरकीर्तिः पुकरस्वमैऽसूत ॥११८॥

योऽभूत्सेवेश्वरकीर्तिः भुवि सप्तणमरम्भारुचार्त्विधारी ।

श्रीमन्मन्दारकोर्त्तौ विससदचलमो अम्पसंभे प्रबन्ध ।

तस्य श्रीकार्तिसिध्याममजसधिपट्ट श्रीसुरेश्वरकीर्ति ।

रेनां पुण्याचकार प्रमधुमतिविदां बोधतापार्त्तसम्भैः ॥११९॥

मिति प्रकाशमाने शुद्धरसेवत्समां तिथी संवत् १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीमन्मन्दारकोर्त्तौ के विवाह वं कस्यासुहासस्य सिन्धु कुल्यासत्तर्त्तौ स्वहस्तेन निधीकृतं जोधराज पाटोदी कृत श्रीवासवये ॥ सुमं क्रूमात् ॥

इसका प्रतिरिक्त यह भी सिखा है—

मिति माहनुयी ३ सं १८८८ मुनिराज शोम प्राण । बटा बुधमसेनको लघु बाहुवति मालपुरासुं प्रकाशने प्राणा । सोमनेर मु मन्दारकोर्त्तौ की मसियां सं दिन चर्का अमार चर्का जयपुर में दिन सका पहर पाठे मसियां बर्षन संगड़ी का पाटीवी उमहर (बरीरह) मंदिर १ कीया पठ्य श्रीमन्मन्दाकी मरुतासजी की नीतित्स्वैज की मसिया सवरी विरवाचंदकी प्राणकी हूवैसी में रात्रि १ रत्ना भोजनवरि सप्रीव व रात्रिवात कीयो समेदगिरि माभसभारया परमंडल कोले थी म्भवरवजी सहाय ।

इसी मन्दार म एक प्रति सं १८८८ की (३ स २४२) धीर है ।

४४०२ अष्टाद्विकापूजा—दानतराय । पत्र सं ३ । या ८×१२ इत्थ । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र वाग × । ल काल > । पूजा । ३ सं ७३ । अ मन्दार ।

विशेष—यहाँ का बुध भाग कम मका है ।

४४०३. प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल स० १६३१ । वे० सं० ३२ । क भण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा ... । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका

पर्व की पूजा । र० काल स० १८७६ कार्तिक वृदी ६ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० सं० १० । क भण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इच्च । भाषा-

हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एव पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६ अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन ' ' । पत्र सं० २२ । आ० ११×५३ इच्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।

विषय-अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

४४०७ आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६३ इच्च । भाषा-

हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८ आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इच्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०० । अ भण्डार ।

४४१०. प्रति स० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८३ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ६२ । ङ

भण्डार ।

४४११. प्रति स० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल स० १६०५ आसोज सुदी २ । वे० सं० १८० । झ

भण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा । पत्र सं० ३५ से ४७ । आ० १३×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

रविव्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा ... । पत्र सं० १४ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-रवि

व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२० । च भण्डार ।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा " " " " " । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-रवि

व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । अ भण्डार ।

४४१६. प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५१६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५१७) और है ।

४४१७ प्रति स० ३। पत्र सं ६। से कास ×। वे सं० २३२। अ मन्थार।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के काम तथा लक्ष्मि वर्धन पाठ भी हैं।

४४१८ आदिनामपूजा.....। पत्र सं० ४। मा १२३×४३ इंच। माया-हिन्दी। विषय-पूजा।

६० कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं० ३१४३। अ मन्थार।

४४१९ आदिनामपूजा.....। पत्र सं १। मा १०३×७३ इंच। माया-हिन्दी। विषय-पूजा।

८ कास ×। से कास ×। वे सं० १२२३। अ मन्थार।

विशेष—नेमिनाम पूजाएक भी है।

४४२० आदीशरपूजा.....। पत्र सं० २। मा १३×३ इंच। माया-हिन्दी। विषय-प्राणि

नाम तीर्थक्षुर की पूजा। १० कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं १२२३। अ मन्थार।

विशेष—महाशरीर पूजाएक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१ आराधनाविधान.....। पत्र सं० १७। मा १×४३ इंच। माया-संस्कृत। विषय-

विषय-विधान। ८ कास ×। से कास ×। पूर्ण। वे सं ४१३। अ मन्थार।

विशेष—विक्रम चौबीसी पोषकप्रारम्भ आदि विधान विवेक हुये हैं।

४४२२ इन्द्रसूक्तपूजा—अ० विरवभूषण। पत्र सं १०। मा १२×३ इंच। माया-संस्कृत।

विषय-पूजा। ८ कास ×। से कास सं १०३३ ईसाब्द सुदी ११। पूर्ण। वे सं ४२१। अ मन्थार।

विशेष—विद्यालकीर्त्यात्मक अ विरवभूषण विरचितार्थों ऐसा लिखा है।

४४२३ प्रति स० २। पत्र सं २२। से कास सं १०३ इन्द्र ईसाब्द सुदी ३। वे सं ४०७।

अ मन्थार।

विशेष—कुछ पत्र विपके हुये हैं। अन्य की प्रतिक्रिया बनपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी।

४४२४ प्रति स० ३। पत्र सं २२। से कास ×। वे सं ५५। अ मन्थार।

४४२५ प्रति स० ४। पत्र सं १६। से कास ×। वे सं ३३। अ मन्थार।

विशेष—अ मन्थार में २ अपूर्ण प्रतिमा (वे सं ३३, ४३) भी हैं।

४४२६ इन्द्रसूक्तपूजा.....। पत्र सं २७। मा ११३×३ इंच। माया संस्कृत। विषय-

मेलों एवं उत्सवों आदि के विधान में की जाने वाली पूजा। ८ कास ×। से कास सं १०३३ कुरुण सुदी ३।

पूर्ण। वे सं ११। अ मन्थार।

विशेष—यं पद्मनाभ जोधनेर वाले है स्वामीनाथजी के मन्दिर में प्रतिक्रिया की। मन्थार की सुबो भी

ही हुई है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४४२७. उपवासग्रहणविधि । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—उपवास

विधि । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुणानन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—विभिन्न प्रकार के मुनिमो की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण ।

वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १६१५ वर्षे वैशाख बदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे गुणानदि-
मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावतः । शतमाधिकाशीतिश्लोकाना ग्रन्थ सख्यख्या ॥ग्रन्थाग्रन्थ ३८०॥

इसी भण्डार भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७२) और हैं ।

४४२९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और हैं । ग्रन्थ के दोनो ओर सुन्दर बेल बू टे हैं । श्री

मार्दिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनो ओर स्वर्ण के बेल बू टे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

४४३४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २१० । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४३३) और है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सफसीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८ अग्निमंडलपूजा—पत्र सं १८। मा ११३×५३ इंच। माता—संस्कृत। विषय—पूजा।
१ काल ×। से काल १०२८ चंद्र बुध १२। पूर्ण। वे सं ४८। न मन्थार।

विशेष—महामा मातृजी के आभेद में प्रतिमिति की थी।

४४३९ अग्निमंडलपूजा—पत्र सं ८। मा १३३×१३ इंच। माता—संस्कृत। विषय—पूजा।
१ काल ×। से काल सं १८० कार्तिक बुध १। पूर्ण। वे सं ४२। न मन्थार।

विशेष—प्रति मंत्र एवं वाप्य सहित है।

४४४० अग्निमंडलपूजा—दोलत आसेरी। पत्र सं २। मा १३३×१३ इंच। माता—हिन्दी।
विषय—पूजा। १ काल ×। से काल सं १२३७। पूर्ण। वे सं २२। न मन्थार।

४४४१ कंबिकाप्रतोषापनपूजा—पत्र सं ७। मा ११×१३ इंच। माता—संस्कृत। विषय—
पूजा एवं विधि। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १२। न मन्थार।

विशेष—कंबीकारस का इत मातापुटी १२ की किया जाता है।

४४४२ कंबिकाप्रतोषापन—पत्र सं १। मा ११३×४ इंच। माता—संस्कृत। विषय—पूजा।
१ काल ×। से काल ×। मपूर्ण। वे सं १४। न मन्थार।

विशेष—वयमात्र वयम्र ध में है।

४४४३ कंबिकाप्रतोषापनपूजा—पत्र सं १२। मा १३×१३ इंच। माता—संस्कृत हिन्दी।
विषय—पूजा एवं विधि। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १७। न मन्थार।

विशेष—पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिन्दी में है।

४४४४ कर्मचूरप्रतोषापन—पत्र सं ८। मा ११×१३ इंच। माता—संस्कृत। विषय—पूजा।
१ काल ×। से काल सं १२ ४ मातृजा सुधी १। पूर्ण। वे सं ३२। न मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १) भी है।

४४४५ प्रति सं २। पत्र सं १। मा १२×१३ इंच। माता—संस्कृत। विषय—पूजा। १ काल
×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १४। न मन्थार।

४४४६ कर्मचूरप्रतोषापनपूजा—कस्मीसेन। पत्र सं १। मा १×१३ इंच। माता—संस्कृत।
विषय—पूजा। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं ११७। न मन्थार।

४४४७ प्रति सं २। पत्र सं ८। से काल ×। वे सं ४१३। न मन्थार।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ३० । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० स०
१६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वै० स० ३०) और है ।

४४४९ प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६७२ आसोज । वै० स० २१३ । व्य भण्डार ।

४४५० प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६३५ मगसिर बुदी १० । वै० स० २२५ । व्य
भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० स० २६७) और है ।

४४५१. कर्मदहनपूजा । पत्र स० ११ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कर्मों के
नष्ट करने की पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८३६ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ५२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वै० स० ५१३) और है जिसका ले० काल स० १८२४ भाद्रवा सुदी
१३ है ।

४४५२ प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल सं० १८८८ भाद्र शुक्ला ८ । वै० स० १० । घ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल स० १७०८ श्रावण सुदी २ । वै० स० १०१ । ङ
भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वै० स० १००, १०१) और है ।

४४५४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वै० सं० ६३ । च भण्डार ।

४४५५. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वै० स० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार मे और इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

४४५६ कर्मदहनपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० ११×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कर्मों
को नष्ट करने के लिये पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स ७०६ । अ भण्डार ।

४४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वै० सं० ११ । घ भण्डार ।

४४५८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १८६८ फागुण बुदी ३ । वै० स० ५३२ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वै० सं० ५३१, ५३३) और है ।

४४५६ प्रति सं० ४। पत्र सं० १९। ले काल सं० १८२१। वै सं० १३। ऊ मन्धार।

४४५७ प्रति सं० ५। पत्र सं० २४। ले काल सं० १९२८। वै सं० २२१। छ मन्धार।

विशेष—मन्मेर नामों के बीबारे बम्पुर में प्रतिसिधि हुई थी।

इसी मन्धार में एक प्रति (वै सं० २३९) भी है।

४४६१ कन्नराविधान—मोहन। पत्र सं० ६। मा ११×२३ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—कन्नर

एवं प्रामयेक प्रावि की विधि। र का सं० १९१७। ले काल सं० १९२२। पूर्ण। वै सं० २७। छ मन्धार।

विशेष—मैदवसिंह के शासनकाल में पिबकर (सीकर) नगर में मटब नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया।

अन्तिम प्रदास्ति निम्न प्रकार है—

सिद्धि पं पद्मनाभ मन्मेर नगर में मट्टारकजी महाराज भी १ ८ भी रत्नमूपखी के पाठ मट्टारक भी महाराज भी १ ८ भी अन्तिकर्षिती महाराज पाठ विराज्या वैसाख सुबी ३ री त्योकी विजा में माया बीबनेरनु पं होरातातजी पद्मनाभ जयबंद उतरया बीततरामजी ताडा बीसबास की होली में पबितरतय नोयार्ता का उतरया एक पायली ११ ताई रखा।

४४६२ कन्नराविधान—पत्र सं० ६। मा १३×२३ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—कन्नर एवं अन्तिक प्रावि की विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं० ७९। छ मन्धार।

४४६३ कन्नराविधि—विरममूपख। पत्र सं० १। मा २३×४५ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं० ४४८। छ मन्धार।

४४६४ कन्नरारोपणविधि—आशाधर। पत्र सं० २। मा १२×८ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—मन्मेर के शिखर पर कन्नर बढाने का विधि विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं० १७। ऊ मन्धार।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का संघ है।

४४६५ कन्नरारोपणविधि—पत्र सं० ६। मा ११×२ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—मन्मेर के शिखर पर कन्नर बढाने का विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं० १२२। छ मन्धार।

विशेष—इसी मन्धार में एक प्रति (वै सं० १२२) भी है।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाभर । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×२ द'य । भाषा—संस्कृत । विषय—
 अभिषेक विधि । २० काल × । नि० काल मं० १८३८ भाद्रपदा शुद्धी १० । पूर्ण । वै० सं० १०६ । ५ भण्डार ।

विशेष—प० जन्मसमय न विमलनाथ ग्यासी के चैत्याश्रय से प्रातर्निधि की थी ।

४४६७. कलिकुण्डपाश्र्वनाथपूजा—भ० प्रभावन्द । पत्र सं० ३८ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×२ द'य । भाषा—
 संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । नि० काल सं० १६२६ चैत्र शुद्धी १२ । पूर्ण । वै० सं० ५८१ । ५ भण्डार ।

विशेष—प्रसंगित निम्न प्रकार है—

ममत् १६२६ वर्षे चैत्र शुद्धी १३ शुभ श्रीपूजार्थे नंशास्त्राये वनाकाशगणे मन्मथीमन्त्रे श्रीकुंभकुंदाचार्य-
 चये भ० पलनदिवेवातराष्ट्रं भ० श्रीशुभचन्द्रयातराष्ट्रं भ० श्रीजिगमन्द्रदेवातराष्ट्रं भ० श्रीप्रभावन्देया तत्किञ्चन
 श्रीमदनाथार्यधर्मचन्द्रेया तन्त्रिण्य मडवाचार्यश्रीनाथतर्कीतिवया तदागनाथ मदेवयामान्दये मडनाथार्यश्रीधर्मचन्द्र तन्त्रि-
 ण्यगि वार्ड लानी दक्षं यात्रं विद्यापि मुनि दमचन्द्रायवर्त ।

४४६८. कलिकुण्डपाश्र्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×२ द'य । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—पूजा । २० काल × । नि० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८१८ । ५ भण्डार ।

४४६९. कलिकुण्डपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×२ द'य । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
 २० काल × । नि० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११८३ । ५ भण्डार ।

४४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । नि० काल × । वै० सं० १०८ । ५ भण्डार ।

४४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । नि० काल × । वै० सं० २५६ । ५ भण्डार । श्रीर भी पूजायें हैं ।

४४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । नि० काल × । वै० सं० २२८ । ५ भण्डार ।

४४७३. कुण्डलनिरिपूजा—भ० विश्वसूषणा । पत्र सं० ९ । आ० ११×५ द'य । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—कुण्डलनिरि क्षेत्र की पूजा । २० काल × । नि० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५०३ । ५ भण्डार ।

विशेष—नविकरगिरि, मानुषानरगिरि तथा गृध्रगर्द की पूजायें श्रीर हैं ।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र सं० २ सं० २५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ द'य । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—पूजा । २० काल × । नि० काल सं० १५७८ भाद्रपदा शुद्धी १० । अपूर्ण । वै० सं० १३३ । (क) ५ भण्डार ।

४४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । नि० काल सं० १८३० ज्येष्ठ शुद्धी ८ । वै० सं० १२८ । ५
 भण्डार ।

विशेष—गणेशनाथ पांडवा श्रीधरी घाटसू बालि के लिए प० मन्मथजी ने माधो के मन्दिर में प्रतिनिधि
 की थी ।

४४५६ प्रति सं० ४। पत्र सं १६। ले कास सं १८११। वे सं १३। अ म्पार।

४४६० प्रति सं० ५। पत्र सं २४। ले कास सं १६२८। वे सं २२१। अ म्पार।

विशेष—मजमेर बत्नों के चौबारे जयपुर में प्रतिस्तिरि हुई थी।

इसी म्पार में एक प्रति (वे सं २३६) भी है।

४४६१ कलशाविधान—मोहन। पत्र सं ६। भा ११×१३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कमल
एवं अग्निदेव आदि की विधि। र कास सं १६१७। ले कास सं १६२२। पूर्ण। वे सं २७। अ
म्पार।

विशेष—शेरवसिंह के शासनकाल में चित्तूर (सीकर) नगर में मठक नामक जिन मन्दिर का स्थापित
करने के लिए यह विधान रचा गया।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

निश्चित एवं पद्मनाभ मजमेर नगर में मट्टारकजी महाराज श्री १ = श्री रत्नमूषणजी के पाठ मट्टारक
जी महाराज श्री १ = श्री ललितपीतजी महाराज पाठ विराम्या वैद्यक सुदी ३ नै त्वाकी दिना में प्रामा जोबनेरतुं
वं होरावाणजी पद्मनाभ जयचंद उज्ज्वला दोसतरामजी सोडा घोसबास की हासी में पंडितराज नोयाजी का उतरपा
एक जयर्षा ११ तारी रचा।

४४६२. कलशाविधान—। पत्र सं ६। भा १३×१३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय कमल
एवं अग्निदेव आदि की विधि। र कास ×। ले कास ×। पूर्ण। वे सं ७६। अ म्पार।

४४६३ कलशाविधि—विरममूषण। पत्र सं १। भा १३×१३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
विधि। र कास ×। ले कास ×। पूर्ण। वे सं ४४८। अ म्पार।

४४६४ कलशापणविधि—आशापर। पत्र सं ५। भा १२×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
मन्दिर के शिखर पर कमल चढ़ाने का विधि विधान। र कास ×। ले कास ×। पूर्ण। वे सं १७। अ
म्पार।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंग है।

४४६५ कलशापणविधि—। पत्र सं ६। भा ११×१३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्दिर
के शिखर पर कमल चढ़ाने का विधान। र कास ×। ले कास ×। पूर्ण। वे सं १२२। अ म्पार।

विशेष—इसी म्पार में एक प्रति (वे सं १२२) भी है।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर । पत्र स० ६ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल स० १८३८ भाद्रवा बुदी १० । पूर्णा । वै० स० १०६ । छ मण्डार ।

विशेष—प० शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रातर्लिपि की थी ।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र स० ३४ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्णा । वै० स० ५८१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसधे नद्याम्माये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्या-
न्वये भ० पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य
श्रीमंडलाचार्यधर्मचंद्रदेवा तच्छिष्य मडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये मडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-
शिष्यणि बाई लाली इदं शास्त्र लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त ।

४४६८ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा..... । पत्र स० ७ । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० ४१६ । अ मण्डार ।

४४६९. कलिकुण्डपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० ११८३ । अ मण्डार ।

४४७०. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० स० १०८ । छ मण्डार ।

४४७१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वै० स० २५६ । ज मण्डार । और भी पूजायें हैं ।

४४७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स० २२४ । क मण्डार ।

४४७३ कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र स० ९ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० ५०३ । अ मण्डार ।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्कराद्र की पूजायें और हैं ।

४४७४ क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र स० २ से २८ । आ० १०^३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७४ भाद्रवा बुदी ९ । अपूर्णा । वै० स० १३३ । (क) छ मण्डार ।

४४७५ प्रति स० २ । पत्र स० २० । ले० काल स० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वै० स० १२४ । छ
मण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए प० मनसुखजी ने गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि
की थी ।

४४६६ चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा— । पत्र सं ५१ । मा ११×५ इ च । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ११८ । अ मन्धार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है ।

४४६७ प्रति स० २ । पत्र सं ४६ । से काल सं १६ २ वैशाख सुदी १ । वै सं ११६ । अ

मन्धार ।

४४६८ चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा— । पत्र सं ४६ । मा ११×५ इ च । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १ । अ मन्धार ।

विशेष—इसकी अज मुद्राएँ में बर्तारि पी ।

४४६९ प्रति स० २ । पत्र सं ४१ । से काल सं १६ ६ । वै सं १११ । अ मन्धार ।

४४७० चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा— । पत्र सं ४४ । मा १०२×५ इ च । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ५६७ । अ मन्धार ।

विशेष—इसी २ अममाला हिन्दी में भी है ।

४४७१ प्रति स० २ । पत्र सं ४८ । से काल सं १६ १ । वै सं १५६ । अ मन्धार ।

विशेष—इसी मन्धार में एक अपूर्ण प्रति (वै सं १५२) भी है ।

४४७२ प्रति स० ३ । पत्र सं २८ । से काल × । वै सं ०६६ । अ मन्धार ।

४४७३ चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा—सेवाराम साह (पत्र सं ४३ । मा १२×७ इ च । माया—

हिन्दी । विषय—पूजा । र काल सं १०२४ संमर्षिरे सुदी ६ । से काल सं १०५४ अशोम सुदी १३ । पूर्ण । वै

सं ७१५ । अ मन्धार ।

विशेष—अकारण में प्रतिनिधि की थी । अत्रि में अपने पिता अक्षतराम के बनाये हुए मिथ्या संकेतों की बुद्धिविनास का उल्लेख किया है ।

इसी मन्धार में एक प्रति (वै सं ७१४) भी है ।

४४७४ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । से काल सं १६ २ भाद्रपद सुदी ८ । वै सं ७१४ । अ मन्धार ।

४४७५ प्रति स० ३ । पत्र सं ३२ । से काल सं १६४ आशुग सुदी १३ । वै सं ४६ । अ मन्धार ।

४४७६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४६ । से काल सं १६३ । वै सं २३ । अ मन्धार ।

विशेष—इसी मन्धार में ३ प्रतिमें (वै सं २१ २२)

४५०७ चतुर्विंशतिपूजा..... पत्र सं० २० । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १२० । छ भण्डार ।

४५०८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ९९ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८१९ कार्तिक बुदी ३ । ले० काल स० १९१५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ७१९ ।

अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिष्ठा (वे० स० ७२०, ९२७) और हैं ।

४५०९ प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० १४५ । क भण्डार ।

४५१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ९५ । ले० काल × । वे० स० ४७ । ख भण्डार ।

४५११ प्रति स० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १९५६ कार्तिक सुदी १० । वे० स० २६ । ग

भण्डार ।

४५१२. प्रति स० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २५ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

४५१३. प्रति स० ६ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १९२७ सावन सुदी ३ । वे० स० १६० । ङ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिष्ठा (वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४) और है ।

४५१४ प्रति स० ७ । पत्र स० १०५ । ले० काल × । वे० स० ५४४ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिष्ठा (वे० स० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं ।

४५१५. प्रति स० ८ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० २०२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिष्ठा (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिष्ठा, २०५) और हैं ।

४५१६ प्रति स० ९ । पत्र स० ९७ । ले० काल स० १९४२ चैत्र सुदी १५ । वे० स० २६१ । ज

भण्डार ।

४५१७ प्रति स० १० । पत्र स० ८१ । ले० काल × । वे० स० १८९ । झ भण्डार ।

विशेष—सर्वमुखजी गोधा ने स० १९०० भाद्रवा सुदी ५ को चढाया था ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४५) और है ।

४५१८ प्रति स० ११ । पत्र स० ११५ । ले० काल स० १९४९ सावण सुदी २ । वे० स० ४४५ । ञ

भण्डार ।

४५१९ प्रति स० १२ । पत्र स० १४७ । ले० काल स० १९३७ । वे० स० १७०६ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी ।

४४७६ प्रति सं० ३। पत्र सं २३। से काल सं १२१६ वैशाख बुदी १३। के सं० ११८। अ
मन्थार।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा-----। पत्र सं ६। मा ११३×३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—वैत
माल्यतासुसार भैरव की पूजा। १ काम ×। से काम सं १८२ फागुण बुदी ७। पूर्ण। के सं ७९। अ
मन्थार।

विशेष—भैरवजी भी चंपासामजी टोंप्या करिसवास के पं स्वामसास ब्राह्मण से प्रतिमिपि करवाई थी।

४४७८ प्रति सं० २। पत्र सं ४। से काल सं १८६१ वैश्व सुदी ६। के सं ४८६। अ
मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमां (के सं ८२२ १२२८) भी हैं।

४४७९ प्रति सं० ६। पत्र सं ११। से काल ×। के सं १२४। अ मन्थार।

विशेष—२ प्रतिमां भी हैं।

४४८० कञ्जिकाग्रतोषापनपूजा—मुनि कञ्जितकीर्ति। पत्र सं ३। मा १२×३ इच। भाषा—
संस्कृत। विषय—पूजा। १ काम ×। से काम ×। पूर्ण। के सं ३११। अ मन्थार।

४४८१ प्रति सं० २। पत्र सं ९। से काल ×। के सं० ११०। अ मन्थार।

४४८२ प्रति सं० ३। पत्र सं ४। से काल सं ११९८। के सं ३२। अ मन्थार।

४४८३ कञ्जिकाग्रतोषापन-----। पत्र सं १७ से २१। मा १२×३ इच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। १ काम ×। से काल ×। अपूर्णा। के सं ६८। अ मन्थार।

४४८४ गजपवामडसपूजा—म० सेमेन्द्रकीर्ति (नागौर पट्ट)। पत्र सं ८। मा १२×३ इच।

भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। १ काम ×। से काल सं ११४। पूर्ण। के सं ३६। अ मन्थार।

विशेष—अस्तिम प्रशस्ति—

भुक्तसंभे बलात्कारे नन्दे सारस्वते अबत् ।

कुन्दकुम्भान्वये चातः सुदधामरपारण ॥११॥

नागौरिपट्टेपि धर्मठकीर्ति तत्पट्टेचापे भुक्त इर्षकीर्ति ।

तत्पट्टेविद्याविभुद्वेषात्मकं तत्पट्टेमाविभुकीर्तिमात्मक ॥२॥

हेमकीर्तिमुने पट्ट सेमेन्द्राक्षिसाग्रमु ।

तस्याग्रया विरचितं गजपवामसुपुजन ॥२१॥

विभुया शिवविद्वत्तः नाममेयेन मोहनः ।

सिन्ध्या यात्राप्रसिद्धपर्यं शैकाङ्गिरचितं चिरं ॥२२॥

जीयादिद पूजन च विश्वभूषणवध्रुव ।

तस्यानुसारतो ज्ञेय न च बुद्धिकृत त्विद ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकीर्तिविरचित गजपथमडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. गणधरचरणारविन्दपूजा ' ' । पत्र स० ३ । आ० १०३ × ४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६ गणधरजयमाला । पत्र स० १ । आ० ८ × ५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१०० । अ भण्डार ।

४४८७ गणधरवलयपूजा । पत्र स० ७ । आ० १०३ × ४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४२ । क भण्डार ।

४४८८ प्रति स० २ । पत्र स० २ से ७ । ले० काल × । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

४४८९ प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११९, १२२) और हैं ।

४४९० गणधरवलयपूजा ' ' । पत्र स० २२ । आ० ११ × ४ इ च । भाषा-विषय-पूजा । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२१ । व भण्डार ।

४४९१ गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र स० ११ । आ० ११ × ५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ९१२ । अ भण्डार ।

४४९२. प्रति स० २ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९३ गिरिनारक्षेत्रपूजा ' ' । पत्र स० ४ । आ० ८ × ६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । छ भण्डार ।

४४९४ चतुर्दशीव्रतपूजा..... । पत्र स० १३ । आ० ११३ × ५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । छ भण्डार ।

४४९५. चतुर्विंशतिजयमाल—यति माघनदि । पत्र स० २ । आ० १२ × ५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९८ । ख भण्डार ।

४४१६ चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा— । पत्र सं ३१ । मा ११×५ इ च । माता—संस्कृत । विषय—
पूजा । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं १३८ । अ मन्थार ।

विशेष—कैवल्य अन्तिम पत्र नहीं है ।

४४१७ प्रति स० २ । पत्र सं ४६ । से काल सं ११ २ वैशाख सुदी १ । वे० सं १३९ । अ
मन्थार ।

४४१८ चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा— । पत्र सं ४६ । मा ११×५ इ च । माता—संस्कृत । विषय—
पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १ । अ मन्थार ।

विशेष—इसकी बत्र मुद्राएँ ने बढ़ाई थी ।

४४१९ प्रति स० २ । पत्र सं ४१ । से काल सं ११ ६ । वे सं ३३१ । अ मन्थार ।

४४० चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा— । पत्र सं ४४ । मा १२×३ इ च । माता—संस्कृत । विषय—
पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ५२७ । अ मन्थार ।

विशेष—वही २ जयमाला हिल्सी से भी है ।

४४७१ प्रति स० २ । पत्र सं ४८ । से काल सं ११ १ । वे सं १३६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक अपूर्ण प्रति (वे सं १३३) भी है ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र सं २८ । से काल × । वे सं ८९ । अ मन्थार ।

४४०३ चतुर्विंशतितीर्थहरपूजा—सेवाराज साह । पत्र सं ४३ । मा १२×० इ च । माता—
हिन्दी । विषय—पूजा । र काल सं १०२४ मंगल सुदी ६ । से काल सं १८३४ मंगल सुदी १५ । पूर्ण । वे
सं ७१३ । अ मन्थार ।

विशेष—आकुराम ने प्रतिलिपि भी थी । यदि ने अपने पिता बखतराम के बचाने हुए भिष्महरकंदन
भीर बुद्धिबिनास का उत्प्रेम किया है ।

इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ७१४) भी है ।

४४०४ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । से काल सं ११ २ माघ सुदी ८ । वे सं ७१४ । अ
मन्थार ।

४४०५ प्रति स० ३ । पत्र सं ३२ । से काल सं ११४ फागुन सुदी १३ । वे सं ४६ । अ
मन्थार ।

४४०६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४६ । से काल सं १८८३ । वे सं २३ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रति (वे सं २१ २२) भी हैं ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४५०७ चतुर्विंशतिपूजा.....। पत्र स० २० । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२० । छ भण्डार ।

४५०८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ६६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल म० १८१६ कार्तिक बुदी ३ । ले० काल स० १६१५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७१६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० स० ७२०, ६२७) और हैं ।

४५०९ प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० १४५ । क भण्डार ।

४५१० प्रति सं० ३ । पत्र म० ६५ । ले० काल × । वे० स० ४७ । ख भण्डार ।

४५११ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० २६ । ग

भण्डार ।

४५१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

४५१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६२७ सावन सुदी ३ । वे० स० १६० । ङ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४) और है ।

४५१४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वे० स० ५४४ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिष्ठा (वे० स० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं ।

४५१५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० स० २०२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० स० २०४ में ३ प्रतिष्ठा, २०५) और हैं ।

४५१६ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६४२ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० २६१ । ज

भण्डार ।

४५१७ प्रति सं० १० । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० स० १८६ । झ भण्डार ।

विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने स० १६०० भाद्रवा सुदी ५ को चढाया था ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) और है ।

४५१८ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११५ । ले० काल सं० १६४६ सावण सुदी २ । वे० सं० ४४५ । ञ

भण्डार ।

४५१९ प्रति सं० १२ । पत्र सं० १४७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० स० १७०६ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी ।

४५२० चतुर्विंशतिसीसङ्करपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं ६ । मा ११×२२ इत्थ । भावा हिन्दी
पत्र । विषय—पूजा । र काल सं १८३४ । से काल × । पूर्ण । के सं ३४६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमां (के सं २१३८ २ ८३) भीर है ।

४५२१ प्रति सं २ । पत्र सं ३ । से काल सं १८७१ मासोज सुदी ६ । के सं २४ । अ
मन्थार ।

विशेष—सदायुक्त कावलीबाबु ने प्रतिमिति की थी ।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं २३) भीर है ।

४५२२ प्रति सं ३ । पत्र सं ३१ । से काल सं १६६६ । के सं १७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमां (के सं १६ २४) भीर है ।

४५२३ प्रति सं ४ । पत्र सं ५७ । से काल × । के सं १३७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमां (के सं १३८ १५६ ७८७) भीर है ।

४५२४ प्रति सं ५ । पत्र सं ३६ । से काल सं १६२६ । के सं ३४६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमां (के सं ३४६, ३४७ ३४८) भीर है ।

४५२५ प्रति सं ६ । पत्र सं ५४ । से काल सं १८९१ । के सं २१६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमां (के सं २१७ २१८ २२ / ३) भीर है ।

४५२६ प्रति सं ७ । पत्र सं ६६ । से काल × । के सं २७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं २८) भीर है ।

४५२७ प्रति सं ८ । पत्र सं ११ । से काल सं १८९१ मासोज सुदी ४ । के सं १८ । अ
मन्थार ।

विशेष—वैठराम रावका ने प्रतिमिति कराई एवं माधुराम रावका ने विजेराम पांड्या के मन्दिर में चढाई
की ।

इसी मन्थार में २ प्रतिमां (के सं ३८ १८१) भीर है ।

४५२८ प्रति सं ९ । पत्र सं ७३ । से काल सं १८३२ मासोज सुदी १३ । के सं ६४ । अ
मन्थार ।

विशेष—महामा अवदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिमिति की थी ।

इसी मन्थार में २ प्रतिमां (के सं ३१३ ३२१) भीर है ।

४५२९ चतुर्विंशतिसीसङ्करपूजा—नेमीचन्द्र पाटनी । पत्र सं ६ । मा ११२×२२ इत्थ । भावा-

हिन्दी । विषय—पूजा । र काल सं १८८ भाद्रवा सुदी १ । से काल सं १६१८ मासोज सुदी १९ । के सं

१४४ । अ मन्थार ।

विशेष—अन्त मे कवि का सक्षित परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचद जी के मन्दिर मे कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहा से अमरावती गये ।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल । पत्र सं० ५१ । आ० ११×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । अ भण्डार ।

४५३१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के अन्त मे कवि का परिचय भी है ।

४५३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० २०३ । छ भण्डार ।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वस्तावरलाल । पत्र सं० ५४ । आ० ११^३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८५४ मगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १६०१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५५० । च भण्डार ।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी ।

४५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५ । छ भण्डार ।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द । पत्र सं० ६७ । आ० ११^३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । च भण्डार ।

४५३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ... । पत्र सं० ७७ । आ० ११×५^३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

४५३८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । छ भण्डार ।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ । म भण्डार ।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द । पत्र सं० ८ । आ० १०×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । व भण्डार ।

विशेष—‘चतुर्थ पूजा की जयमाल’ यह नाम दिया हुआ है । जयमाल हिन्दी मे है ।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ८^३×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चन्द्रप्रभ की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१ । क भण्डार ।

४५४२ चन्दनपण्ठीमृतपूजा—पत्र सं० ११। मा० १२×३ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—तीर्थद्वार चन्द्रम्रम की पूजा। र काल ४। ले काल ५। पूर्ण। वे सं १८३। अ मन्थार।

विशेष—निम्न पूजामें श्रीर है— पञ्चमी ब्रतोद्यापन नवग्रहपूजाविधान।

४५४३ चन्दनपण्ठीमृतपूजा—पत्र सं ३। मा १२×३ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—चन्द्रम्रम तीर्थद्वार पूजा। र काल ४। ले काल ५। पूर्ण। वे सं २१२२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं २१२३) श्रीर है।

४५४४ प्रति सं० २। पत्र सं ६। ले काल ५। अपूर्ण। वे सं २२३। अ मन्थार।

४५४५ चन्दनपण्ठीमृतपूजा—पत्र सं २। मा १२×३ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—चन्द्रम्रम तीर्थद्वार पूजा। र काल ५। ले काल ५। अपूर्ण। वे सं २२७। अ मन्थार।

विशेष—शरा पत्र नहीं है।

४५४६ चन्द्रम्रमखिनपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं ७। मा १२×३ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल ५। ले काल सं १८७२ मासीत्र बुदी ४। पूर्ण। वे सं ४२७। अ मन्थार।

विशेष—सबामुक्त बाघमीनाम महामा बाले में प्रतिमिति की थी।

४५४७ चन्द्रम्रमखिनपूजा—बेयेन्द्रकीर्ति। पत्र सं ३। मा १२×३ इंच। मापा संस्कृत। विषय—पूजा। र काल ५। ले काल सं १७२२। पूर्ण। वे सं ३७६। अ मन्थार।

४५४८ प्रति सं० २। पत्र सं ५। ले काल सं १८२३। वे सं ४३। अ मन्थार।

विशेष—माघमें सं १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिमिति की गई थी।

४५४९ चमत्कारअतिशयज्ञेयपूजा—पत्र सं ३। मा ७×३ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल ५। ले काल सं १९२७ बैसाख बुदी १३। पूर्ण। वे सं ६२। अ मन्थार।

४५५० चारित्रशुद्धिविधान—भी मूयस। पत्र सं १७। मा १२×३ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—मुनि बीजा के समय होने वाले विधान एवं पूजामें। र काल ५। ले काल सं १८८८ पीप सुदी ८। पूर्ण। वे सं ४४२। अ मन्थार।

विशेष—इसका दूसरा नाम चारहवीं शतीसात्रत पूजा विधान भी है।

४५५१ प्रति सं० २। पत्र सं ८२। ले काल ५। वे सं १३२। अ मन्थार।

विशेष—नेत्रक प्रपस्ति बटी हुई है।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४४५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म । पत्र सं० ८४ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल स० १६३७ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० १२३ । ख भण्डार ।

४४५३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें । २० काल × । ले० काल स० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २०४ । ज भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउथ तिथौ शुक्रवासरै । घडसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्मनाथ चैत्यालये श्रीमूलसधे सरम्बतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्रा तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्रा तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उद्यापन वारमे चौत्रीसु स्वहस्तेन लिखित ।

४४५४ चिन्तामणिपूजा (वृहत्)—विद्याभूषण सूरि । पत्र सं०, ११ । आ० ६३×४३ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं ।

४४५५ चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा (वृहद्)—शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ११३×५ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७४ । अ भण्डार ।

४४५६ प्रति स- २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल स० १६६१ पौष बुदी ११ । वे० स० ४१७ । अ

भण्डार ।

४४५७ चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा " । पत्र सं० ३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ११८४ । अ भण्डार ।

४४५८ प्रति स० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० स० २८ । ग भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलि कुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा ।

४४५९ प्रति स० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० स० ६६ । च भण्डार ।

४४६० चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा " । पत्र सं० ११ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८३ । च भण्डार ।

४५६१ चिन्तामणिपार्ष्णनायपूजा..... पत्र सं ५। मा १११×५३ इच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल ×। ति काल ×। पूर्ण। वै सं २२१४। अ मण्डार।

विशेष—यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं १८४) भी है।

४५६२ चौदहपूजा..... पत्र सं ११। मा १×७ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र

काल ×। ति काल ×। पूर्ण। वै सं २३१। अ मण्डार।

विशेष—श्रवणमास से लेकर धनंतगत्य तक पूजमें है।

४५६३ चौसठशक्तिपूजा—स्वरूपपत्रम्। पत्र सं ३५। मा ११३×३ इच। भाषा—हिन्दी।

विषय—१४ प्रकार की शक्ति पारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। र काल सं १११ सावन सुदी ७। ति काल सं ११५१। पूर्ण। वै सं १९४। अ मण्डार।

विशेष—इसका पूरवा नाम बृहद्गुणविनि पूजा भी है।

इसी मण्डार में ४ प्रतियां (वै सं ७१६, ७१७, ७१८, ७१७) भी हैं।

४५६४ प्रति सं० २। पत्र सं १। ति काल सं १११। वै सं १७। क मण्डार।

४५६५ प्रति सं० ३। पत्र सं ३२। ति काल सं ११५२। वै सं २१। ग मण्डार।

४५६६ प्रति सं० ४। पत्र सं २६। ति काल सं ११२१ काण्ड सुदी १२। वै सं ७९। अ मण्डार।

४५६७ प्रति सं० ५। पत्र सं २५। ति काल ×। वै सं ११३। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं ११४) भी है।

४५६८ प्रति सं० ६। पत्र सं ८। ति काल ×। वै सं ७३४। अ मण्डार।

४५६९ प्रति सं० ७। पत्र सं ४८। ति काल सं ११२२। वै सं २१६। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतियां (वै सं १४३, २१६/३) भी हैं।

४५७० प्रति सं० ८। पत्र सं ४५। ति काल ×। वै सं २६। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वै सं २६२/२, २६५) भी हैं।

४५७१ प्रति सं० ९। पत्र सं ४१। ति काल ×। वै सं ५३४। अ मण्डार।

४५७२ प्रति सं० १०। पत्र सं ४३। ति काल ×। वै सं १११३। ट मण्डार।

४५७३ द्वाविनिवारशक्ति..... पत्र सं ३। मा ११×४ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—

विधान। र काल ×। ति काल ×। पूर्ण। वै सं १८७८। अ मण्डार।

४५७४ जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास । पत्र स० १६ । आ० १०१×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२२ मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १८३ । क
भण्डार ।

विशेष—प्रति अकृत्रिम जिनालय तथा भून, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है । प० चोखचन्द ने
माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५७५ प्रति स० २ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० स० ६८ । च
भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द भावासा भिनाय वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा । पत्र स० १० । आ० ८×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-अन्तिम
केवली जम्बूस्वामी की पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

४५७७ जयमाल—रायचन्द्र । पत्र स० १ । आ० ८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०
काल स० १८५५ फागुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३२ । अ भण्डार ।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ़ में प्रतिलिपि की थी ।

४५७८ जलहरतेलाविधान । पत्र स० ४ । आ० ११ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-
विधान । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ३२३ । ज भण्डार ।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है । इसका दूसरा नाम भरतेला व्रत भी है ।

४५७९ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान । पत्र स० २ । आ० ११×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६३ । ज भण्डार ।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४५८१ जलयात्राविधान—महा प० आशाधर । पत्र स० ४ । आ० ११ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६६ । अ
भण्डार ।

४५८२ जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) । पत्र स० २ । आ० ११ इ च । भाषा-
संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—जलयात्रा के मन्त्र भी दिये हैं ।

४५८३ जिनगुणसप्तपूजा—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ६ । आ० ११ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२ । ड भण्डार ।

४४८४ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । से काल स० १९८३ । वै स० १७१ । अ मन्थार ।

विशेष—श्रीपति जोषी ने प्रतिनिधि की थी ।

४४८५ त्रिनगुणसप्तपतिपूजा । पत्र स० ११ । मा १२×२२ इ च । मापा-संस्कृत । विषय

पूजा । १ काल × । से काल × । अपूर्णा । वै स० २१२७ । अ मन्थार ।

विशेष—१वां पत्र नहीं है ।

४४८६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । से काल स० १२२१ । वै स० २६३ । अ मन्थार ।

४४८७ त्रिनगुणसप्तपतिपूजा । पत्र स० २ । मा ७ $\frac{१}{२}$ ×९ $\frac{१}{२}$ इ च । मापा-संस्कृत प्रकृत ।

विषय—पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्णा । वै स० २१२ । अ मन्थार ।

४४८८ त्रिनपुरम्बरप्रतपूजा । पत्र स० १४ । मा १२×२ $\frac{३}{४}$ इ च । मापा-संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । से काल × । पूर्णा । वै स० २९ । अ मन्थार ।

४४८९ त्रिनगुणसप्तपतिपूजा । पत्र स० २ । मा १२×२ $\frac{३}{४}$ इ च । मापा संस्कृत । विषय—

पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वै स० ४८३ । अ मन्थार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४४९० त्रिनगुणसप्तपतिपूजा (प्रतिष्ठासार)—महा प० आशाधर । पत्र स० १२ । मा १२×४

इ च । मापा-संस्कृत । विषय मूर्ति शैली प्रतिष्ठादि विधानों की विधि । १ काल स० १२८२ घण्टीय बुरी ८ । से काल स० १४६२ माघ बुरी ८ (अक्ष स० १३९) पूर्णा । वै स० २८ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रस्तुति निम्न प्रकार है—

संवत् १४६२ शके १३९ वर्षे माघ वदि ८ पुस्वाघरे (अपूर्णा)

४४९१ प्रति स० २ । पत्र स० ७७ । से काल स० १९३३ । वै स० ४२९ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रस्तुति— संवत् १९३३ वर्षे ।

४४९२ प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । से काल स० १८८२ माघवा बुरी १३ । वै स० २७ । अ

मन्थार ।

विशेष—मथुरा में श्रीरङ्गदेव के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंज्ञेयु सरस्वतीपी नन्दे वनाकारणे प्रसिद्धे ।

सिंहस्तनी श्रीमलमस्य शैटे पुरभिष्ठाया विषये विस्तीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गा ।
 दुर्वादिवागुन्मथनेकसज्ज विद्यामुनदीश्वरसूरिमुख्य ॥
 तदन्वये योऽमरकोत्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभशत्रु ।
 तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगाया ॥
 पुर्यां शुभाया पट्टपशश्रुवत्या सुवर्णाकाराप्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६५६ भाद्रवा सुदी १२ । वे० सं० २२३ ।

ऋ भण्डार ।

विशेष—वगाल मे अकबरा नगर मे राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल मे आचार्य कुन्दकुन्द के बला-
 त्कारगण सरस्वतीगच्छ मे भट्टारक पद्मनि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्त्ति की ग्राम्नाय मे खडेल-
 वाल बंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज बलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि मे से कपूरा ने षोडशकारण व्रतीद्या-
 पन मे ५० श्री जयव्रत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ऋ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यात् खडिल्लवशोत्थ केल्हणोन्यासवित्तर ।

लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तक ॥२०॥

४५६५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भाद्रवा बुदी २ । वे० सं० ४२५ । ऋ भण्डार ।

विशेष—सत्रत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भीमे अद्येह राजपुरनगरवास्तव्यं आभ्यासरनागरज्ञाती
 पचोली त्यात्नाभाट्टसुत नरसिंहेन लिखित ।

ऋ भण्डार मे एक अपूर्णा प्रति (वे० सं० २०७) च भण्डार मे २ अपूर्णा प्रतिया (वे० सं० १२०,
 १०५) तथा ऋ भण्डार मे एक अपूर्णा प्रति (वे० सं० २०७) और है ।

४५६६ जिनयज्ञविधान * * । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७ जिनस्नपन (अभिषेक पाठ) * * * * । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसहिता * * । पत्र सं० ४६ । आ० १३×८३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रति-
 ष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

४४६६. त्रिनसहिता—मद्रबाहु। पत्र सं १३। मा ११×३२ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे सं १२६। क मन्थार।

४६०० त्रिनसहिता—भ० एकसधि। पत्र सं ८४। मा ११×५ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र काल ×। से काल सं १२३७ चैत्र सुदी ११। पूर्ण। वे सं १२७। क मन्थार।

विशेष—१७ २८ ८१ ८२ तथा ८३ पत्र जाती हैं।

४६०१ प्रति स ०। पत्र सं ८३। से काल सं १८३३। वे सं १२८। क मन्थार।

४६०२ प्रति स० ३। पत्र सं १११। से काल ×। वे सं ३२। क मन्थार।

४६०३ त्रिनसहिता—। पत्र सं० १०२। मा १२×६ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र काल ×। से काल सं १८३६ भाद्रपद सुदी ३। पूर्ण। वे सं १२३। क मन्थार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है। यह एक संपन्न ग्रन्थ है जिसका विषय भीरसेन त्रिनसेन पुण्यपात्र तथा कुलुभद्रादि प्राचार्यों के ग्रन्थों से संबंध किया गया है। १६ पृष्ठों के प्रतिरिक्त १ पत्रों में ग्रन्थ से सम्बन्धित ४३ मन्त्र दे रखे हैं।

४६०४ त्रिनसहस्रनामपूजा—वर्मभूषण। पत्र सं १२६। मा १ × ४२ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र काल ×। से काल सं १२ ६ वैशाख सुदी २। पूर्ण। वे सं ४३८। क मन्थार।

विशेष—लिखमणसेन के पं मुक्तसामजी के पञ्चार्थ हीरासासजी रैणपाल तथा पञ्चैवर बत्तों ने कला मन्थार में प्रतिक्रिया करवाई थी।

प्रसिद्ध प्रचलित— या पुस्तक लिखाई किताब मन्थारि के कौटिलिराम्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंवर फतेहसिंहजी बुलाया रैण बालसू बेवनी निमित्त श्रीसहस्रनाम की मंत्रसूची संकलित करायो। श्री श्यामदेवजी की मन्थार में भाषा भियो बरोगा बलसूत्रजी बासी बगरू का पीठ पठणो ४ (३) साहजी मणोसनालजी साइ श्यात्री सहाय सू हुंषो।

४६०५ प्रति सं० ०। पत्र सं ८७। से काल ×। वे सं १२४। क मन्थार।

४६०६ त्रिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपपद्मविद्याला। पत्र सं २५। मा ११×३२ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल सं १२१६ भाद्रपद सुदी २। से काल ×। पूर्ण। वे सं ८७१३। क मन्थार।

४६०७ त्रिनसहस्रनामपूजा—चैतनसुक्त छुहादिषा। पत्र सं २६। मा १२×६ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल ×। से काल सं १२३६ भाद्रपद सुदी ३। पूर्ण। वे सं ७७२। क मन्थार।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा ... । पत्र स० १८ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२४ । अ मण्डार ।

४६०९ प्रति स० २ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ७२४ । च मण्डार ।

४६१० जिनाभिषेकनिर्णय ... । पत्र स० १० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अभिषेक
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११ । छ मण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड मे सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११ जैनप्रतिष्ठापाठ ... । पत्र स० २ से ३५ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११९ । च मण्डार ।

४६१२. जैनाववाहपद्धति । पत्र सं० ३४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विवाह
विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५ । क मण्डार ।

विशेष—ग्राचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार सग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० १७ । ज मण्डार ।

४६१४ ज्ञानपंचविंशतिकात्रनोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ९ । ले० काल सं० १८९३ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण ।
वे० स० १२२ । च मण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा ... । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७२३) और है ।

४६१६ ज्येष्ठजिनवरपूजा ... । पत्र स० १२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१९ । क मण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९२१ । वे० स० २९३ । ख मण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा ... । पत्र स० १ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८९० आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २२१२ । अ मण्डार ।

विशेष—विद्वान् खुशाल ने जोधराज के वनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । खरडो सुरेन्द्र-
कीर्तिजी को रच्यो ।

४६१६. खमोकारपैतीसपूजा—अक्षयराम । पत्र सं ३ । मा १२×२१ इच । माया संस्कृत ।

विषय—खमोकार मन्त्र पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ४६६ । अ मन्थार ।

विशेष—महाराजा जयसिंह के सामनकाल में प्रत्य रचना की गई थी ।

इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ५७८) भी है ।

४६२० प्रति सं० २ । पत्र सं ३ । से काल सं० १७६३ प्र मासोज बुदी १ । वे सं ३६५ । अ मन्थार ।

४६२१ खमाकारपैतीसीप्रवविधान—भा० श्री कनककीर्ति । पत्र स ५ । मा १२×५ इच ।

माया—संस्कृत । विषय—पूजा एवं विधान । र काल × । से काल स १८२३ । पूर्ण । वे सं २३६ । अ मन्थार ।

विशेष—डू गरसी कालसौवास में प्रतिमिति की थी ।

४६२२ प्रति सं० २ । पत्र सं २ । से काल × । अपूर्ण । वे सं १७४ । अ मन्थार ।

४६२३ तस्वार्थसूत्रवराभ्यायपूजा—दयाचन्द्र । पत्र सं १ । मा ११×४ इच । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ५६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति वे सं २६१ । भी है ।

४६२४ तस्वार्थसूत्रवराभ्यायपूजा—। पत्र सं २ । मा ११½×३ । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २६२ । अ मन्थार ।

विशेष—केवल १ में ध्यान की पूजा है ।

४६२५ तीनचौबीसीपूजा—। पत्र सं ३८ । मा १२×५ इच । माया—संस्कृत । विषय सूत्र

प्रविष्यन् तथा वर्तमान काल के चौबीसों तीर्थद्वारों की पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २७४ । अ मन्थार ।

४६२६ तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा—। पत्र सं २ । मा ११½×५ इच । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १८६ । अ मन्थार ।

४६२७ तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द्र पाटमी । पत्र सं ६७ । मा ११½×५ इच । माया—

हिन्दी । विषय—पूजा । र काल सं १८६४ कार्तिक बुदी १४ । से काल सं १६२८ माघार बुदी ७ । पूर्ण । वे सं २७५ । अ मन्थार ।

४६२८ तीनचौबीसीपूजा—। पत्र सं ६७ । मा ११×५ इच । माया—हिन्दी । विषय पूजा ।

र काल सं १८८२ । से काल सं १८२ । पूर्ण । वे सं २७३ । अ मन्थार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४६२६. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा । पत्र सं० २० । आ० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

४६३०. तीनलोकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ४१० । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल सं० १८२८ । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने मे ३७।।।-) लगे थे ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५७६, ५७७) और है ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५० । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेमीचन्द । पत्र सं० ८५१ । आ० १३×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एव त्रिलोकपूजा भी है ।

४६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८८ । ले० काल × । वे० सं० २७० । क भण्डार ।

४६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६८७ । ले० काल सं० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० २२६ । छ भण्डार ।

विशेष—दो वेष्टनो मे है ।

४६३५. तीसचौबीसीनाम..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७८ । च भण्डार ।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ११६ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८० । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस मे गङ्गातट पर हुई थी ।

४६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६०१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० ५७ । झ भण्डार ।

भण्डार ।

४६३८. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा .. । पत्र सं० ६ । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल सं० १८०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—अठारहद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७६) और है ।

४६३९. तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र । पत्र सं० १५४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ख भण्डार ।

४६४०. तेरहवीं पूजा—भ० विश्वमूपय । पत्र स १०२ । मा० ११×३ इच । मापा—संस्कृत ।

विषय—जैन मान्यतासुमार १३ द्वीपों की पूजा । र काल × । से काल स १५५७ भाद्रवा सुदी २ । के स १२७ । अ मन्वार ।

विशेष—विजैरामजी पांड्या ने बलदेव ब्राह्मण से मिलवाई की ।

४६४१. तेरहवीं पूजा— । पत्र स २४ । मा ११ $\frac{१}{२}$ ×१ $\frac{१}{२}$ इच । मापा—संस्कृत । विषय—जैन

मान्यतासुमार १३ द्वीपों की पूजा । र काल × । से काल स १५६१ । पूर्ण । के स ४३ । अ मन्वार ।

विशेष—इसी मन्वार में एक मपूर्णा प्रति (के स ५) भी है ।

४६४२. तेरहवीं पूजा— । पत्र स २५ । मा ११×३ इच । मापा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

र काल × । से काल स १६२४ । पूर्ण । के स २३३ । अ मन्वार ।

४६४३. तेरहवीं पूजा—साखवीठ । पत्र स २३२ । मा १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इच । मापा—हिन्दी । विषय—

पूजा । र काल स १५७७ कार्तिक सुदी १२ । से काल स १६६२ भाद्रवा सुदी ३ । पूर्ण । के स २७७ । अ मन्वार ।

विशेष—बोबिन्दराम ने प्रतिमिति की थी ।

४६४४. तेरहवीं पूजा— । पत्र स १७६ । मा ११×७ इच । मापा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

र काल × । से काल × । के स ३८१ । अ मन्वार ।

४६४५. तेरहवीं पूजा— । पत्र स २६४ । मा ११×७ $\frac{१}{२}$ इच । मापा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

र काल × । से काल स १६४६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । के स ३४३ । अ मन्वार ।

४६४६. तेरहवीं पूजाविधान— । पत्र स ५६ । मा ११×३ इच । मापा—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । मपूर्णा । के स १९१ । अ मन्वार ।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिसुबमचन्द्र । पत्र स १३ । मा ११ $\frac{१}{२}$ ×३ इच । मापा—संस्कृत ।

विषय—तीनों काल में हाके काल तीर्थरूपों की पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । के स २७२ । अ मन्वार ।

विशेष—शिवलाल ने नेचटा में प्रतिमिति की थी ।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा— । पत्र स ६ । मा १×१ $\frac{१}{२}$ इच । मापा—संस्कृत । विषय—

पूजा । र का × । से काल × । पूर्ण । के स २७५ । अ मन्वार ।

४६४९. प्रति स० ७ । पत्र स १७ । से काल स १७४ पीव सुदी ६ । के स २७६ । अ

मन्वार ।

विशेष—बसवा में प्राचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार दिनों के साथ में प्रतिमिति की थी ।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६६१ भाद्रवा सुदी ३ । वै० सं० २२२ । छ

भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती अर्जिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वै० सं० ४११ । व

भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० १७५) और है ।

४६५२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वै० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा..... । पत्र सं० १६ । आ० ११X४३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०

काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषी की पूजा है ।

४६५४ त्रिलोकक्षेत्रपूजा... । पत्र सं० ५१ । आ० ११X५ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालंयपूजा . । पत्र सं० ६ । आ० ११X७३ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६ त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३३X७ इ'च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वै० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा . । पत्र सं० २६० । आ० ११X५ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल X । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा .. . । पत्र सं० ६ । आ० १२X५३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल X । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वै० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा... . । पत्र सं० ५ । आ० ११३X५३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल सं० १६०४ । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११३X५३ इ'च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १८२६ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१ त्रैलोक्यसारमहापूजा—पत्र स १४३। मा १ × ३ इ च। माया-संस्कृत। विषय-

पूजा। २० काल ×। से० काल स ११११। पूर्ण। वै० स० ७१। अ मन्थार।

४६६२. दशरूपस्यजयमाला—पं० रङ्गू। मा १ × ३ इ च। माया-प्रपत्र स। विषय-धर्म के दस

मेरों की पूजा। ८ काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वै० स० २६८। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है।

४६६३ प्रति स० २। पत्र स ६। से० काल स १७११। वै० सं० १०१। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी हुई है। इसी मन्थार में एक प्रति (वै० स ३२) भी है।

४६६४ प्रति स० ३। पत्र स ११। से० काल ×। वै० स २१७। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। इसी मन्थार में एक प्रति (वै० स २१६) भी है।

४६६५. प्रति स० ४। पत्र स ७। से० काल स १८१। वै० स ८६। अ मन्थार।

विशेष—बोधी बुधालीपम के टोंक में प्रतिसिद्धि की थी।

इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (वै० सं० ८२ ८६/१) भी हैं।

४६६६. प्रति स० ५। पत्र स ११। से० काल ×। वै० स २१४। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में संज्ञित दिये हुये हैं। इसी मन्थार में एक अपूर्ण प्रति (वै० स २१२) भी है।

४६६७ प्रति स० ६। पत्र स ११। से० काल ×। वै० स १२६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै० स १३) भी है।

४६६८ प्रति स० ७। पत्र स ११। से० काल स १७८२ फागुण सुदी १२। वै० स १२६। अ

मन्थार।

४६६९ प्रति स० ८। पत्र स ११। से० काल स १८१८। वै० सं ७३। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (वै० सं ११८ २२) भी हैं।

४६७० प्रति स० ९। पत्र स ४। से० काल स १७४६। वै० सं १७। अ मन्थार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (वै० सं २६८ २८३) भी हैं।

४६७१ प्रति स० १। पत्र स १। से० काल ×। वै० सं १७८६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतियाँ (वै० सं १७८७ १७८८ १७१४) भी हैं।

४६७२ दशरूपस्यजयमाला—पं० भाव शर्मा। पत्र स ८। मा १२ × ३ इ च। माया-प्रसक्त

विषय—पूजा। ८ काल ×। से० काल स १८११ भाद्रपदा सुदी ११। अपूर्ण। वै० सं २१८। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी हुई है। इसी मन्थार में एक प्रति (वै० सं ४८१) भी है।

४६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पोष सुदी १२ । वे० सं० ३०२ । क

भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले मे समरपुर नामक नगर मे आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०१) और है ।

४६७४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० १५१ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोधनेर के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १५६२ भाद्रवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० २०५ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है ।

४६७८ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । वे० सं० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४) और हैं ।

४६७९ दशलक्षराज्यमाल । पत्र सं० ८ । आ० १०X५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा ।

२० काल X । ले० काल सं० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ङ भण्डार ।

४६८० प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल X । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार ।

४६८१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० ७२६ । अ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २६७, २६८) और हैं ।

४६८३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० १५३ । च

भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १५२, १५४) और हैं ।

४६८४. दशलक्षराज्यमाल । पत्र सं० ५ । आ० ११३X५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २११५ । अ भण्डार ।

४६८५ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं ६ । भा १३ × ४३ इ च । माता—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१ काल × । ले काल स १७१६ मासोत्र बुकी ७ । पूर्ण । के स ८४ । अ म्बार ।

विशेष—नापीर में प्रतिक्रिया हुई थी ।

४६८६ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं ७ । भा ११ × ३ इ च । माता—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१ काल × । ले काल × । पूर्ण । के स ७१३ । अ म्बार ।

४६८७ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं ८ । भा १३ × ३३ इ च । माता—संस्कृत । विषय—

पूजा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के स १८२ । अ म्बार ।

४६८८ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं १२ । भा १२ × ६ इ च । माता—संस्कृत । विषय—

पूजा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के स २२६ । अ म्बार ।

४६८९ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं २ । भा ११ × ३३ इ च । माता—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१ काल × । ले काल × । पूर्ण । के स १६७ । अ म्बार ।

विशेष—इसी म्बार में एक प्रति (के स १२४) भी है ।

४६९० प्रति सं २ । पत्र सं १८ । ले काल स १७४० कानुण बुकी ४ । के स ३३ । अ

म्बार ।

विशेष—सांगानेर में विद्याविनोद ने वी निरमर के बालनार्थ प्रतिक्रिया की थी ।

इसी म्बार में एक प्रति (के स २६८) भी है ।

४६९१ प्रति सं ३ । पत्र सं ६ । ले काल × । के स १७०३ । अ म्बार ।

विशेष—इसी म्बार में एक प्रति (के स १७२१) भी है ।

४६९२ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं ३७ । भा ११ × ४३ इ च । माता—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१ काल × । ले काल सं १८६३ । पूर्ण । के स १२३ । अ म्बार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६९३ दशरथपुत्रयमाहात्म्यम् । पत्र सं १ । भा १३ × ३३ इ च । माता—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले काल × । पूर्ण । के स ७२३ । अ म्बार ।

विशेष—पत्र स ७ तक रत्नमयपूजा भी हुई है ।

४६९४ प्रति सं २ । पत्र सं ४ । ले काल स १६७७ कानुण बुकी २ । के स ३ । अ

म्बार ।

४६९५ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । ले काल × । के स ३ । अ म्बार ।

४६६६. दशलक्षणपूजा * * । पत्र न० ३५ । आ० १२३×७३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वै० स० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० स० ५८६) श्रीर है ।

४६६७ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल सं० १६३७ । वै० स० ३१७ । च भण्डार ।

४६६८ दशलक्षणपूजा * * * । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना दानतराय वृत्त पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६६९ दशलक्षणमण्डलपूजा * * । पत्र स० ६३ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३०३ । क भण्डार ।

४७०० प्रति स० २ । पत्र न० ५२ । ले० काल × । वै० सं० ३०१ । ड भण्डार ।

४७०१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १६३७ भादवा सुदी १० । वै० स० ३०० । ड

भण्डार ।

४७०२ दशलक्षणव्रतपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

४७०३. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८२६ । वै० स० ४६८ । अ भण्डार ।

४७०४ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ५ । वै० सं० १४६ । च.

भण्डार ।

विशेष—सदासुख वाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५ दशलक्षणव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि । पत्र सं० १६ - २५ । आ० १०३×५ इ च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २६१ । ड भण्डार ।

४७०६ दशलक्षणव्रतोद्यापन—मञ्जिभूषण । पत्र स० १४ । आ० १२३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२६ । छ भण्डार ।

४७०७ प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वै० स० ७५ । झ भण्डार ।

४७०८. दशलक्षणव्रतोद्यापन । पत्र सं० ४३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । वै० स० ७० । झ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४००६. दशसप्तत्यविधानपूजा—। पत्र सं० १ । मा १२३×२२ इ. च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के स २७ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां इसी वैष्टन में घोर है ।

४०१०. देवपूजा—इन्द्रनमि धागीम् । पत्र सं० २ । मा १५×२२ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के स १९० । अ मण्डार ।

४०११. देवपूजा—। पत्र सं ११ । मा २३×४३ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के स १०२३ । अ मण्डार ।

४०१२. प्रति सं० २ । पत्र सं ४ से १२ । से काल × । अपूर्ण । के स ४६ । अ मण्डार ।

४०१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं २ । से काल × । के स ३५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (के स ३९) घोर है ।

४०१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं ३ । से काल × । के स १९१ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां (के स १९२ १९३) घोर है ।

४०१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं ६ । से काल सं १०८३ पीप सुबी न । के सं १९३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां (के स १९४ १७५) घोर है ।

४०१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं ९ । से काल सं १६२ मापल सुबी १२ । के स २१४२ । अ मण्डार ।

विशेष—घीतरमस बाह्यण के प्रतिनिधि की थी ।

४०१७. देवपूजाटीका—। पत्र सं ८ । मा १२×२३ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १ काल × । से काल सं १०८६ । पूर्ण । के स ११२ । अ मण्डार ।

४०१८. देवपूजाभाषा—अथर्वम् भाषाया । पत्र सं १७ । मा १२×२३ इ. च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । से काल सं १०४३ कार्तिक सुबी न । पूर्ण । के स २१२ । अ मण्डार ।

४०१९. देवसिद्धपूजा—। पत्र सं १२ । मा १२×२३ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं १२६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी वैष्टन में एक प्रति घोर है ।

४०२०. द्वादशसप्तपूजा—१० अथर्वदेव । पत्र सं ७ । मा ११×२२ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १ काल × । से काल × । पूर्ण । के सं २०४ । अ मण्डार ।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल स० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । छ भण्डार ।

४७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । आ० ७३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । च भण्डार ।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन " । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष—गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डाल्दूराम । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १६३० आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२८. द्वादशांगपूजा । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी वेष्टन मे २ प्रतिया और हैं ।

४७२९. द्वादशांगपूजा " । पत्र सं० ६ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३२७) और है ।

४७३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । छ भण्डार ।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ फागुण सुदी १० । वे० सं० ८६ । ख

भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४७३३ धर्मचक्रपूजा—साधु रणमङ्ग । पत्र सं ८ । मा ११×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २ काल × । से काल सं १८८१ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वै सं ३२८ । अ मण्डार ।

विशेष—यं कुशासत्रम् नै जाधराज पाटाशी के मन्दिर में प्रतिमिति की थी ।

४७३४ धर्मचक्रपूजा— । पत्र सं १ । मा १२×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ५६ । अ मण्डार ।

४७३५ ध्वजारोपण— । पत्र सं ११ । मा ११×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधान । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२२ । छ मण्डार ।

४७३६ ध्वजारोपणमंत्र— । पत्र सं ४ । मा ११×३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ३२३ । अ मण्डार ।

४७३७ ध्वजारोपणविधि—प० आशाधर । पत्र सं २७ । मा १ × ४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २ काल × । से काल × । अपूर्ण । अ मण्डार ।

४७३८ ध्वजारोपणविधि— । पत्र सं १३ । मा १३×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां (वै सं ४३४ ४८८) भी हैं ।

४७३९ प्रति सं० २ । पत्र सं ८ । से काल सं १६१६ । वै सं ३१८ । अ मण्डार ।

४७४० ध्वजाराहणविधि— । पत्र सं ८ । मा १३×७२ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २ काल × । से काल सं १६२७ । पूर्ण । वै सं २७३ । छ मण्डार ।

४७४१ प्रति सं० २ । पत्र सं २-४ । से काल × । अपूर्ण । वै सं १८२२ । छ मण्डार ।

४७४२ नन्दीश्वरत्रयमाला— । पत्र सं २ । मा १३×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७७६ । छ मण्डार ।

४७४३ नन्दीश्वरत्रयमाला— । पत्र सं ३ । मा ११×३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १८७ । छ मण्डार ।

४७४४ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रामनन्दि । पत्र सं १ । मा ११×३३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७३३ घसचक्रपूजा—साधु रणमङ्ग । पत्र सं ८ । मा ११×३३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-
जा । र काल × । से काल सं १८८१ बीच सुदी ५ । पूर्ण । वै सं ५२८ । अ मन्थार ।

विशेष—यं कुशलचन्द्र ने ओबराज पाणोदी के मन्दिर में प्रतिमिति की थी ।

४७३४ घर्मचक्रपूजा— । पत्र सं १ । मा १२×३३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-पूजा ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ५२९ । अ मन्थार ।

४७३५ ध्वजारोपणम्— । पत्र सं ११ । मा ११×३३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-पूजाविधान ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२२ । अ मन्थार ।

४७३६ ध्वजारोपणमन्त्र— । पत्र सं ४ । मा ११३×३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-पूजा
विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ५२३ । अ मन्थार ।

४७३७ ध्वजारोपणविधि—प० आशाधर । पत्र सं २७ । मा १ × ४३ इ च । माया-संस्कृत ।
विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । र काल × । से काल × । अपूर्ण । अ मन्थार ।

४७३८ ध्वजारोपणविधि— । पत्र सं १३ । मा १ ३×३३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-
विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमां (वै० सं ४३४ ४८८) भी हैं ।

४७३९ प्रति सं० २ । पत्र सं ८ । से काल सं १८१६ । वै सं ३१८ । अ मन्थार ।

४७४० ध्वजाराह्यविधि— । पत्र सं ८ । मा १ ३×७३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-
विधान । र काल × । से काल सं १८२७ । पूर्ण । वै सं २७३ । अ मन्थार ।

४७४१ प्रति सं० २ । पत्र सं २-४ । से काल × । अपूर्ण । वै सं १८२९ । अ मन्थार ।

४७४२ नन्दीश्वरजयमास— । पत्र सं २ । मा १३×४ इ च । माया-प्रपत्र सं । विषय-पूजा ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७७६ । अ मन्थार ।

४७४३ नन्दीश्वरजयमास— । पत्र सं ३ । मा ११×३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-पूजा ।
र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १८७ । अ मन्थार ।

४७४४ नन्दीश्वरहीनपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं १ । मा ११३×३३ इ च । माया-संस्कृत ।
विषय-पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १८९ । अ मन्थार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८६१ आपाठ बुदी ३ । वे० स० १११ । च

भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रखे हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा... । पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७६७) और है ।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

४७४८ नन्दीश्वरपंक्तिपूजा । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५७) और है ।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० स० ३६३ । क भण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा । पत्र सं० ३ । आ० १० इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल स० १८२४) और हैं ।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ४ । आ० ८ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० ३४८ । क भण्डार ।

४७५४ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ४ । आ० ६×७ इंच । भाषा—प्रपञ्च श । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । अ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ३१ । आ० ६ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ३० । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । क भण्डार ।

४७५७ नन्दीश्वरमक्तिमापा—पञ्जासाल। पत्र स २६। मा ११३×७ इच। मापा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल स १६२१। से काल स १६२६। पूर्ण। वे स ३६४। क मण्डार।

४७५८ नन्दीश्वरविधान—मिनश्वरवास। पत्र स १११। मा १३×७ इच। मापा हिन्दी।

विषय पूजा। र काल स १६६। ल काल स १६६२। पूर्ण। वे स ३५। क मण्डार।

विशेष—निसाई एक बाणम में केवल १२) ए वर्ष हुये थे।

४७५९ नन्दीश्वरप्रतोद्यापनपूजा—नन्दिपण। पत्र स २। मा १२३×३ इच। मापा—संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे स १६२। क मण्डार।

४७६० नन्दीश्वरप्रताद्यापनपूजा—धनतकीर्ति। पत्र स १३। मा ८३×४ इच। मापा—

संस्कृत। विषय—पूजा। र काल ×। से काल स १८२७। माता मुदी ६। पूर्ण। वे स २१७। क मण्डार।

विशेष—दुमरा पत्र नहीं है। तारापुर में प्रतिमिति हुई थी।

४७६१ नन्दीश्वरप्रतोद्यापनपूजा—। पत्र स २। मा १२३×३ इच। मापा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे स ११७। क मण्डार।

४७६२. नन्दीश्वरप्रताद्यापनपूजा—। पत्र स ३। मा ८×६ इच। मापा—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल स १८८६। माता मुदी ७। पूर्ण। वे स ३२१। क मण्डार।

विशेष—स्योमीराम भक्ति के प्रतिमिति की थी।

४७६३ नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द। पत्र स ४६। मा ८३×६ इच। मापा—हिन्दी।

विषय पूजा। र काल ×। से काल स १८८३। माता मुदी १। पूर्ण। वे स १७७। क मण्डार।

विशेष—कैरामण पाण्डेय के जन्मदिन के समान पहाड़िया के प्रतिमिति कराई थी।

४७६४ मन्मथसमीप्रताद्यापनपूजा—। पत्र स १। मा ८×४ इच। मापा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल स १६८७। पूर्ण। वे स ३६२। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार के एक प्रति (वे स ३३) मीर है।

४७६५ नवमहपूजाविधान—मन्मथ। पत्र स ८। मा १३×३ इच। मापा संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वे स २२। क मण्डार।

४७६६ प्रति म ३। पत्र स १। से काल ×। वे स २३। क मण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवमहपूजा के हेतु का विवरण पृ १११ के लिए किये गये हैं। पूजा करने की

विधि पृ १११ के लिए है।

४७६७. नवग्रहपूजा " " " । पत्र सं० ७ । आ० ११३×६३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वै० सं० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) और हैं ।

४७६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३ । वै० सं० १२७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वै० सं० १२७) और हैं ।

४७६९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६८८ कार्तिक बुदी ७ । वै० सं० । २०३ ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वै० सं० १८५, १६३, २८०) और हैं ।

४७७० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वै० सं० २०१५ । ट भण्डार ।

४७७१ नवग्रहपूजा " " " । पत्र सं० २६ । आ० ६×६३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १११६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० ७१३) और है ।

४७७२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वै० सं० २२१ । छ भण्डार ।

४७७३ नित्यकृत्यवर्णन " " " । पत्र सं० १० । आ० १०३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका पृष्ठ नहीं है ।

४७७४ नित्यक्रिया " " " । पत्र सं० ६८ । आ० ८३×६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है । ५४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

४७७५ नित्यनियमपूजा " " " । पत्र सं० २६ । आ० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वै० सं० ३७०, ३७१) और हैं ।

४७७६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० ३६७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वै० सं० ३६० से ३६३) और हैं ।

४७७७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६३ । वै० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

४७७८. नित्यनियमपूजा— पत्र सं १३। मा १ × ७ इ. च। माता—संस्कृत हिन्दी। विषय—

पूजा। २० कात् × १। से कात् × १। पूर्ण। वे सं ७१२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमा (वे सं ७ ८ १११४) और हैं।

४७७९ प्रति सं २। पत्र सं २१। से कात् सं ११४ कार्तिक सुदी १२। वे० सं ३९८। अ

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ३९९) और है।

४७८० प्रति सं ३। पत्र सं ७। से कात् सं ११३४। वे सं २२२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ४ प्रतिमा (वे सं १२१/२ २२२/२) और हैं।

४७८१ नित्यनियमपूजा—पं० सवासुख अंसखीवाला। पत्र सं ४१। मा १२ × १२ इ. च। माता—

हिन्दी गद्य। विषय—पूजा। २ कात् सं ११२१ माघ सुदी २। से कात् सं ११२३। पूर्ण। वे सं ४ १। अ मन्थार।

४७८२ प्रति सं २। पत्र सं १३। से कात् सं ११२८ सावन सुदी १। वे सं ३७७। अ

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ३७९) और है।

४७८३ प्रति सं ३। पत्र सं २९। से कात् सं ११२१ माघ सुदी २। वे सं ३७१। अ

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ३७) और है।

४७८४ प्रति सं ४। पत्र सं ३५। से कात् सं ११३३ ज्येष्ठ सुदी ७। वे सं २१४। अ

मन्थार।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं बीर्ण हैं।

४७८५ प्रति सं ५। पत्र सं ४४। से कात् ×। वे सं १३। अ मन्थार।

विशेष—इसका पुद्गा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

४७८६ प्रति सं ६। पत्र सं ४२। से कात् सं ११३३। वे सं १८११। अ मन्थार।

४७८७ नित्यनियमपूजाभाषा—। पत्र सं १९। मा ८२ × ७ इ. च। माता—हिन्दी। विषय—

पूजा। २ कात् ×। से कात् सं ११३३ सावन सुदी ११। पूर्ण। वे सं ७ ७। अ मन्थार।

विशेष—ईस्वरनाम बारबाड ने प्रतिमिति की थी।

४७८८ प्रति सं २। पत्र सं २८। से कात् ×। पूर्ण। वे सं ४७। अ मन्थार।

विशेष—जयपुर में सुकनार की सहेली (संपीत सहेली) सं ११३३ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना

के समय का बताया हुआ मजल है।

४७८६ प्रति स० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६६६ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० २६२ । झ भण्डार ।

४७९१. प्रति स० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर मे चढाई ।

४७९२ नित्यनैमित्तिकपूजापाठसंग्रह " " । पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७९३. नित्यपूजासंग्रह " " । पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९४. नित्यपूजासंग्रह " " । पत्र सं० ५ । आ० ९३×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । च भण्डार ।

४७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

४७९६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६६५, २०६३) और हैं ।

४७९७ नित्यपूजासंग्रह । पत्र सं० २-३० । आ० ७३×२३ इच्च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १८३, १८४) और है ।

४७९८. नित्यपूजासंग्रह " " । पत्र सं० ३६ । आ० १०३×७ इच्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । झ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २७, २८ तथा ३५ नहीं है कुछ पत्र भीग गये हैं । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३२२) और है ।

४७९९. प्रति स० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति स० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति स० ४ । पत्र सं० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठो का भी संग्रह है ।

४८०२ नित्यपूजा— । पत्र सं० १३। मा० १२×२३ इंच। मापा—हिन्दी। विषय पूजा। १० काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं० ३७८। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिमां (के सं० ३७२ ३७३ ३७४ ३७५) और हैं।

४८०३ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। से काल ×। के सं० ३६६। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां (के सं० ३६४ ३६५) और हैं।

४८०४ प्रति सं० ३। पत्र सं० १७। से काल ×। के सं० ६३। क मण्डार।

४८०५ प्रति सं० ४। पत्र सं० २ से १०। से काल ×। मसूर। के सं० १६३८। ट मण्डार।

विशेष—पश्चिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमद्भिन्नवचन प्रबन्धक— संग्रहीतभिन्नवचनके कृतीमकाण्डे पूजनवर्णनो नाम अष्टोत्सास समाप्त ।

४८०६ निर्वाणकल्याणकपूजा— । पत्र सं० २। मा० १२×२ इंच। मापा—संस्कृत। विषय—पूजा। १० काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं० ४२८। क मण्डार।

४८०७ निर्वाणकांडपूजा— । पत्र सं० ३। मा० ८×७ इंच। मापा—संस्कृत प्रकृत। विषय—पूजा। १० काल ×। से काल सं० १६६८ सावण मुदी ४। पूर्ण। के सं० ११११। क मण्डार।

विशेष—इसकी प्रतिमिषि कोवसचन्द्र पंतारी व ईश्वरलाल कांडवाड़ से कराई थी।

४८०८ निर्वाणसुत्रमंडलपूजा—त्वत्पचम्पू। पत्र सं० १६। मा० १३×७ इंच। मापा—हिन्दी।

विषय—पूजा। १० काल में १६१६ कालिक मुदी १३। से काल ×। पूर्ण। के सं० ४६। क मण्डार।

४८०९ प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। से काल सं० १६२७। के सं० ३७६। क मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिमां (के सं० ३७७ ३७८) और हैं।

४८१० प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। से काल सं० १६३५ पौष मुदी ३। के सं० ६४। क मण्डार।

विशेष—जवाहरलाल पानी के प्रतिमिषि की थी। इन्द्राज बोहरा के पुस्तक निरालार मेवराज मुहा-
दिया के कमिटर में बनायी। इसी मण्डार में २ प्रतिमां (के सं० ६३ ६४) और हैं।

४८११ प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। से काल सं० १६४३। के सं० २११। क मण्डार।

विशेष—मुद्ररत्नार बाड़े चौधरी बाबनू बाब के प्रतिमिषि की थी।

४८१२ प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। से काल ×। के सं० ३३३। क मण्डार।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा... । पत्र सं० ११ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल स० १८७१ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वे० सं० १३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिष्ठा (वे० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६९) और हैं ।

४८१४ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल सं० १८७१ भाद्रवा बुदी ७ । वे० स० २६६ । ज

भण्डार । [गुटका साइज]

४८१५ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० १८७ । भ

भण्डार ।

४८१६. प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है ।

४८१७. निर्वाणपूजा... । पत्र स० १ । आ० १२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७१८ । अ भण्डार ।

४८१८ निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल । पत्र सं० ३३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८४२ भाद्रवा बुदी २ । ले० काल स० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ८२ । भ

भण्डार ।

४८१९ नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० ६×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५६५ । अ भण्डार ।

४८२० नेमिनाथपूजा... । पत्र स० १ । आ० ७×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम । पत्र स० १ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८४२ । अ भण्डार ।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक... । पत्र स० १ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२२४ । अ भण्डार ।

४८२३ पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५७६ । क भण्डार ।

४८२४ प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८७६ । वे० स० १०३७ । अ भण्डार ।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र स० १२६ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५५६ । अ भण्डार ।

४८२६ पञ्चकन्यायकपूजा—अरुणसिद्धि । पत्र सं ३६ । मा १२×५ इ च । माया संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल सं १२२६ । से० काल × । पूर्ण । वे० सं २५ । अ मन्थार ।

४८२७ पञ्चकन्यायकपूजा—गुणकीर्ति । पत्र सं २२ । मा० १२×५ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल १२११ । पूर्ण । वे सं ३४ । अ मन्थार ।

४८२८ पञ्चकन्यायकपूजा—बावीमर्तिह । पत्र सं १८ । मा ११×५ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे० सं ५८६ । अ मन्थार ।

४८२९ पञ्चकन्यायकपूजा—सुयशकीर्ति । पत्र सं ७-२६ । मा ११३×५ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं ५८३ । अ मन्थार ।

४८३० पञ्चकन्यायकपूजा—सुभासागर । पत्र सं १६ । मा ११×४२ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ८६ । अ मन्थार ।

४८३१ पञ्चकन्यायकपूजा— । पत्र सं १६ । मा १०२×४२ इ च । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल सं १६ न भावना सुदी १ । पूर्ण । वे सं १७ । अ मन्थार ।

४८३२ प्रति सं २ । पत्र सं १ । से काल सं १८१८ । वे सं ११ । अ मन्थार ।

४८३३ प्रति सं ३ । पत्र सं ७ । से काल × । वे सं ३८४ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ३८५) भी है ।

४८३४ प्रति सं ४ । पत्र सं २२ । से काल सं १६३६ भासोज सुदी १ । अपूर्ण । वे सं १२३

अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (वे सं १३७ १८) भी हैं ।

४८३५ प्रति सं ५ । पत्र सं १४ । से काल सं १८५२ । वे सं १६१ । अ मन्थार ।

४८३६ प्रति सं ६ । पत्र सं १५ । से काल सं १८२१ । वे सं २३६ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १५३) भी है ।

४८३७ पञ्चकन्यायकपूजा—छाटेलास मिच्छा । पत्र सं १६ । मा ११×५ इ च । माया—हिन्दी ।

विषय—पूजा । र काल सं १६१ भावना सुदी १३ । से काल सं १६३२ । पूर्ण । वे सं ७९ । अ मन्थार ।

विषय—छाटेलास बनारस के रहने वाले थे । इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (वे सं ९७१, ९७२)

भी हैं ।

४८३८ पञ्चकन्यायकपूजा—रूपचन्द्र । पत्र सं १४ । मा १२×५ । माया—हिन्दी । विषय—

पूजा । र काल × । से काल सं १८६२ । पूर्ण । वे सं ३३७ । अ मन्थार ।

४८३६. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिष्ठा (वे० सं० १०८०, ११२०) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ५० । ग

भण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १९५४ माह बुदी ११ । वे० सं० ६७ । घ

भण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७)

और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल स० १९६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० ६१२ । च

भण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० २९८ । ज भण्डार ।

४८४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

४८४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल स० १९२८ । वे० सं० ५३९ । ख भण्डार ।

४८४७ पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल सं० १९२२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । ङ भण्डार ।

विशेष—नीले कागजो पर है ।

४८४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—सधीजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । आ० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १९१० भादवा सुदी १३ । ले० काल स० १९१९ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । च भण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा..... । पत्र सं० २५ । आ० ९×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९ । ख भण्डार ।

४८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल स० १९३९ । वे० सं० १०० । ख भण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और हैं ।

४८२३ प्रति स० ४ । पत्र सं १२ । से० काल X । वै सं ११३ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ११४) भी है ।

४८२४ पद्मकुमारपूजा— । पत्र सं० ७ । मा ८३ X ७ इच । माया—हिन्दी । विषय—पूजा । १०

काल X । से० काल X । पूर्ण । वै सं ७२ । अ मन्थार ।

४८२५ पद्मक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं १४ । मा १ X २३ इच । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १ काल X । से० काल X । पूर्ण । वै सं १६४ । अ मन्थार ।

४८२६ प्रति स० २ । पत्र सं १० । से० काल सं ११२१ । वै सं २१२ । अ मन्थार ।

४८२७ पद्मगुरुकल्पयापूजा—म० शुभचन्द्र । पत्र सं २३ । मा ११ X २ इच । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १ काल X । से० काल सं ११३२ मंसिर सुदी ६ । पूर्ण । वै सं ४२० । अ मन्थार ।

विशेष—माया में मेलिचक्र के चिह्न पाड़े हुए के पठनात् प्रतिष्ठिति हुई थी ।

४८२८ पद्मपरमेष्ठीवद्यापस— । पत्र सं ११ । मा १२ X २ इच । माया—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१ काल सं १८१२ । से० काल X । पूर्ण । वै सं ४१ । अ मन्थार ।

४८२९ पद्मपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा— । पत्र सं ४ । मा ८३ X १३ इच । माया हिन्दी । विषय—

पूजा । १ काल X । से० काल X । पूर्ण । वै सं १६२३ । अ मन्थार ।

४८३० पद्मपरमेष्ठीपूजा—म० शुभचन्द्र । पत्र सं २४ । मा ११ X २ इच । माया संस्कृत । विषय—

पूजा । १ काल X । से० काल X । पूर्ण । वै सं ४७७ । अ मन्थार ।

४८३१ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । से० काल X । वै सं ११६ । अ मन्थार ।

४८३२ प्रति सं० ३ । पत्र सं २३ । से० काल X । वै सं १४ । अ मन्थार ।

४८३३ पद्मपरमेष्ठीपूजा—परानन्द । पत्र सं ३२ । मा १२ X २३ इच । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । १ काल X । से० काल सं १७११ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वै सं २३८ । अ मन्थार ।

विशेष—पत्र की प्रतिष्ठिति सातबहामादार में जयसिंहपुरा में पं मनीहरदास के पठनात् हुई थी ।

४८३४ प्रति स० २ । पत्र सं २६ । से० काल सं १८२१ । वै सं ४११ । अ मन्थार ।

विशेष—बुक ग्राम में ब्रह्मकीर्तन ने प्रतिष्ठिति की थी ।

४८३५ प्रति स० ३ । पत्र सं २४ । से० काल सं १८०३ मंसिर सुदी १ । वै सं ११६ । अ

मन्थार ।

४८३६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४१ । से० काल सं १८११ । वै सं ११७ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ११२) भी है ।

४८६७ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । वे० सं० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा " " । पत्र सं० १५ । आ० १२X५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६२ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० ३६२ । ड भण्डार ।

४८७० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० १५ । आ० १२X५ १/२ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सं० ३५ । आ० १० १/२ X ५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १८६२ मगसिर बुदी ६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०८६) और है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६८७ । वे० सं० ३८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३६०) और है ।

४८७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल X । वे० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ५१ । व्य भण्डार ।

विशेष—धनलाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६१३ । वे० सं० १८७६ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा " " " " । पत्र सं० ३६ । आ० १३X५ १/२ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । ङ भण्डार ।

४८७९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । वे० सं० ६१७ । च भण्डार ।

४८८० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । वे० सं० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० ३१६ । व्य भण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—ध्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३ पञ्चमाक्षयिणीपूजा— । पत्र सं ६ । मा १५० इ. स. । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र
काल × । ति काल × । पूर्ण । वै सं २२२ । अ मन्थार ।

४८८४ पञ्चमङ्गलपूजा— । पत्र सं २३ । मा ८५४ इ. स. । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र
काल × । ति काल × । पूर्ण । वै सं २२४ । अ मन्थार ।

४८८५ पञ्चमाक्षयसुव्रतीप्रतोषापनपूजा—म० सुरेश्वरीति । पत्र सं ४ । मा ११५३ इ. स. ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल सं १८२८ भाद्रपद सुदी १ । ति काल × । पूर्ण । वै सं ७४ । अ
मन्थार ।

४८८६ प्रति सं २ । पत्र सं ४ । ति काल × । वै सं ३१७ । अ मन्थार ।

४८८७ प्रति सं ३ । पत्र सं ५ । ति काल सं १८८३ भाद्रपद सुदी ७ । वै सं ११८ । अ
मन्थार ।

विशेष—महात्मा सम्भुताज ने सवाई जयपुर में प्रतिष्ठित की थी । इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं०
११६) भी है ।

४८८८ प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । ति काल × । वै सं ११७ । अ मन्थार ।

४८८९ प्रति सं ५ । पत्र सं २ । ति काल सं १८६२ भाद्रपद सुदी ३ । वै सं १७ । अ
मन्थार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री विमलनाथ भैरवात्मक में गुरु हीरालाल ने प्रतिष्ठित की थी ।

४८९० पञ्चमीप्रतपूजा—शेखरेश्वरीति । पत्र सं ३ । मा १२५३ इ. स. । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । र काल × । ति काल × । पूर्ण । वै सं ५१ । अ मन्थार ।

४८९१ पञ्चमीप्रतोषापन—श्री हर्षकीर्ति । पत्र सं ७ । मा ११५३ इ. स. । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । र काल × । ति काल सं १८८८ भाद्रपद सुदी ४ । पूर्ण । वै सं ३१८ । अ मन्थार ।

विशेष—सम्भूराम ने प्रतिष्ठित की थी ।

४८९२ प्रति सं २ । पत्र सं ८ । ति काल सं १११३ भाद्रपद सुदी ५ । वै सं २ । अ
मन्थार ।

४८९३ प्रति सं ३ । पत्र सं ७ । मा १२५३ इ. स. । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र
काल × । ति काल सं १११२ कर्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वै सं ३१७ । अ मन्थार ।

४८९४ पञ्चमीप्रतोषापनपूजा— । पत्र सं १ । मा ८३५४ इ. स. । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । र काल × । ति काल × । पूर्ण । वै सं २३३ । अ मन्थार ।

विशेष—गामी नारायण शर्मा ने प्रतिष्ठित की थी ।

४८६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६०५ आसोज बुदी १२ । वे० स० ६४ । म्

भण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० ३८८ । भण्डार ।

४८६७ पञ्चमेरूपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३३ । आ० १२×८ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३२ । अ भण्डार ।

४८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८३ । वे० स० ६१६ । च भण्डार ।

४८६९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० स० २१३ । छ भण्डार ।

विशेष—मजमेर वालो के चौबारे जयपुर मे लिखा गया । कीमत ४ ।।।)

४८००. पञ्चमेरूपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३६५ । ङ भण्डार ।

४८०२. पञ्चमेरूपूजा—भूधरदास । पत्र सं० ८ । आ० ८३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त मे सस्वृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५६८) और है ।

४८०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४८०४ पञ्चमेरूपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० स० ४१५ । क भण्डार ।

४८०५ पञ्चमेरूपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ङ भण्डार ।

४८०६. पञ्चमेरूपूजा । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय- पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६६ । अ भण्डार ।

४८०७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४८७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ४७६) और है ।

४८०८ पञ्चमेरुव्यापनपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १० इच्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । च भण्डार ।

४८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० स० ७४ । च भण्डार ।

४६१० पद्मावतीपूजा..... पत्र सं० ५। मा १ १/२ × ५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

१ काल ×। से काल स १५१६। पूर्ण। वै सं० ११८२। अ मन्थार।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है।

४६११ प्रति सं० २। पत्र सं १६। से काल ×। वै सं० १२७। अ मन्थार।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र पद्मावतीकवच पद्मावतीपटल एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है। अस्त में २ मंत्र

भी दिये हुये हैं। मष्टपत्र सिद्धने की विधि भी दी हुई है। इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं २२) भी है।

४६१२. प्रति सं० ३। पत्र सं १। से काल ×। अपूर्ण। वै सं० १५। अ मन्थार।

४६१३ प्रति सं० ४। पत्र सं ७। से काल ×। वै सं १४४। अ मन्थार।

४६१४ प्रति सं० ५। पत्र सं २। से काल ×। वै सं २। अ मन्थार।

४६१५. पद्मावतीमहलपूजा..... पत्र सं ३। मा ११ × ५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

१ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ११७९। अ मन्थार।

विशेष—सतिमंडल पूजा भी है।

४६१६ पद्मावतिशाम्भिक..... पत्र सं १७। मा १ २ × ५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

१ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १९३। अ मन्थार।

विशेष—प्रति मन्थार सहित है।

४६१७ पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा..... पत्र सं १४। मा १० × ७ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ४३। अ मन्थार।

४६१८. परम्यविधानपूजा—सप्तिसकीर्ति। पत्र सं ७। मा ११ × ५ १/२ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं २११। अ मन्थार।

विशेष—मुद्रालक्षण के प्रतिविधि की भी।

४६१९. परम्यविधानपूजा—रत्नमणि। पत्र सं १४। मा ११ × ५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। १ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १९२। अ मन्थार।

विशेष—नरसिंहदास के प्रतिविधि की भी।

४६२० प्रति सं० २। पत्र सं २। से काल ×। वै सं २१२। अ मन्थार।

४६२१ प्रति सं० ३। पत्र सं ६। से काल सं १७६ अथवा कुरी ९। वै सं १९२। अ

मन्थार।

विशेष—नासी नगर (दू की प्रान्त) में याचार्थ की बातकीर्ति के उपदेश से प्रतिविधि हुई थी।

४६२२. पत्न्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५३ । क मण्डार ।

४६२३. पत्न्यविधानपूजा..... । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७५ । अ मण्डार ।

४६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण । वे० सं० १०५४ । अ

मण्डार ।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५. पत्न्यव्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १० इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ५८२, ६०७) और हैं ।

४६२६. पत्न्योपमोपवासविधि । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा एवं उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । अ मण्डार ।

४६२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र सं० २ । आ० १० इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । अ मण्डार ।

४६२८. पार्श्वनाथपूजा । पत्र सं० ४ । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३२ । अ मण्डार ।

४६२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । क मण्डार ।

४६३०. पुण्याहवाचन । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—शान्ति

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० ५५६, १३६१, १८०३) और हैं ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । अ मण्डार ।

४६३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० २७ । अ

मण्डार ।

विशेष—पं० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० सं० २००६ । अ

मण्डार ।

४६३४ पुरदरप्रतोषापन—पत्र सं ६। मा ११×३२ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

२ काल ×। से काल सं ११११ भाषा सुदी १। पूर्ण। वै सं ७२। अ मन्थार।

४६३५ पुष्पाक्षुक्षिप्रतपूजा—म० रतनचन्द्र। पत्र सं ३। मा १२×७२ इच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। २ काल सं १९८१। से० काल ×। पूर्ण। वै सं २२३। अ मन्थार।

बिसेव—यह रचना सातवाहपुर में भावको की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द्र ने सं १९८१ में लिखी थी।

४६३६ प्रति स० २। पत्र सं १३। से काल सं १६२४ भासोज सुदी १। वै सं ११७। अ

मन्थार।

बिसेव—इसी मन्थार में एक प्रति इसी शैल में भी है।

४६३७ प्रति स० ३। पत्र सं ७। से काल ×। वै सं ३५७। अ मन्थार।

४६३८ पुष्पाक्षुक्षिप्रतपूजा—म० शुभचन्द्र। पत्र सं ६। मा १×३ इच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं २२३। अ मन्थार।

४६३९ पुष्पाक्षुक्षिप्रतपूजा—पत्र सं ८। मा १×४ इच। भाषा—संस्कृत प्राकृत। १०

काल ×। से काल सं १०९३ डि भासण सुदी ३। पूर्ण। वै सं २२२। अ मन्थार।

४६४० पुष्पाक्षुक्षिप्रतोषापन—प० रागादास। पत्र सं ८। मा ८×३ इच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। २ काल ×। से काल सं १५६६। पूर्ण। वै सं ४५। अ मन्थार।

बिसेव—रागादास भट्टारक वर्मचन्द्र के शिष्य थे। इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ३१६) भी है।

४६४१ प्रति स० २। पत्र सं ६। से काल सं १८५२ भासोज सुदी १४। वै सं ७५। अ

मन्थार।

४६४२ पूजाक्रिया—पत्र सं २। मा ११२×३ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा करने की

विधि का विधान। २ काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १२३। अ मन्थार।

४६४३ पूजापाठसंग्रह—पत्र सं २ से ४। मा ११×६ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। २ काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वै सं २२३। अ मन्थार।

बिसेव—इसी मन्थार में एक मसूदा प्रति (वै सं २७८) भी है।

४६४४ पूजापाठसंग्रह—पत्र सं ३५। मा ७×२ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

१० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १३१६। अ मन्थार।

बिसेव—पूजा पाठ के साथ प्रायः एक में है। पञ्चिकाएँ प्रथम में के ही पूजाओं मिलती हैं फिर भी जिनका

बिसेव कर में उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहाँ दिया जा रहा है।

४६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

- | | | |
|---------------------------|---------|------------------|
| १. पुष्पदन्त जिनपूजा | — | संस्कृत |
| २. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा | ” | ” |
| ३. चन्द्रप्रभपूजा | ” | ” |
| ४. शान्तिनाथपूजा | ” | ” |
| ५. मुनिमुद्रतनाथपूजा | ” | ” |
| ६. दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि | प्राकृत | ले० काल सं० १६३७ |
| ७. ऋषभदेवस्तोत्र | ” | ” |

४६४६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८६६ द्वि० चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिर्या (वे० सं० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) मौजूद हैं ।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क

भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४६४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० सं० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्दशोदशकारणपूजा	—	”
जेष्ठजिनवररुद्रापनपूजा	—	”
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	”
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	”
अक्षयनिधिपूजा	—	”
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	—	”

४६४६. प्रति स० ६। पत्र सं १ से ११६। न काल ×। मपूर्णा। वै० सं ४६७। अ मन्थार।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

बिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
पोष्यकारणपूजा	धृतसमार	"
बिनगुणसंपत्तिपूजा	म रत्नचन्द्र	"
एककारपत्रविद्युतिकपूजा	—	"
सारस्वतमन्त्रपूजा	—	"
धर्मचक्रपूजा	—	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाषण	"

इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (वै० सं० ४७६ ४७६) भी हैं।

४६४० प्रति स० ७। पत्र सं २७ से ३७। न० काल ×। मपूर्णा। वै सं २२६। अ मन्थार।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है।

४६४१ प्रति स० ८। पत्र सं १४। न० काल ×। वै सं १४। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं १३६) भी है।

४६४२. प्रति सं० ६। पत्र सं० १३३। न० काल सं १५८४ मासोत्तर सुदी ४। वै सं ४३६। अ

मन्थार।

विशेष—निरम नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६४३ पूजापाठसंग्रह.....। पत्र सं २२। मा० १२×८ इ च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा

पाठ। र काल ×। न० काल ×। पूर्णा। वै सं ७२८। अ मन्थार।

विशेष—ब्रह्मरत तत्कार्यसूत्र भाषि पाठों का संग्रह है। सामान्य पूजा पाठोंकी इसी मन्थार में ३ प्रतिष्ठा (वै० सं० ५८२, ६६४ १) भी हैं।

४६४४ प्रति स० २। पत्र सं ८६। न० काल सं १६२३ मासोत्तर सुदी १४। वै सं ४६८। अ

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ६ प्रतिष्ठा (वै सं ४७४ ४७४ ४५ ४५१ ४५२, ४८३ ४५४ ४६१,

४६२) भी हैं।

४६४५. प्रति स० ३। पत्र सं ४२ से ६१। न० काल ×। मपूर्णा। वै सं १६५४। अ मन्थार।

४६५६. पूजापाठसंग्रह..... १। पत्र सं० ४०। मा० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।

१० काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३५। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदशिखरपूजा	—	”
विद्यमानबीसतीर्थद्वारों की पूजा	—	२० काल सं० १६४५
अनुभव विलान		से० ” १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७ प्रति स० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ७५६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतिया (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) और हैं।

४६५८ प्रति स० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० २४१। क भण्डार।

विशेष—निम्न पूजा पाठ हैं—

चौबीसदण्डक	—	दोलतराम
विनती गुरुओं की	—	भूधरदास
बीस तीर्थद्वार जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	धानतराय

भण्डार।

४६५९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८६० फागुण सुदी २। वे० सं० २२०। ज

४६६०. प्रति स० ५। पत्र सं० ६ से २२२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७०। क भण्डार।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचंद्र। पत्र सं० । मा० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। २० काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयों की वदना	स्वरूपचन्द्र	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	”	”
महावीरस्तोत्र	”	”
जिनपञ्जरस्तोत्र	”	”
त्रिलोकसार चौपई	”	”
चमत्कारजिनेश्वरपूजा	”	”
सुगधीदशमीपूजा	”	”

४१६७ पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं० २ । भा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधान । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२२ । अ मन्थार ।

विशेष—पूजक प्रादि के लक्षण दिये हुये हैं । अन्तिम पुस्तिका निर्मल प्रदीर्घ है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४१६३ पूजामहात्म्यविधि— । पत्र सं ३ । भा ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा

विधि । १ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं २२४ । अ मन्थार ।

४१६४ पूजाकण्डविधि— । पत्र सं ६ । भा ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधि ।

१ काल × । से काल सं १८२६ । पूर्ण । वै सं १४८७ । अ मन्थार ।

४१६५ पूजापाठ— । पत्र सं १४ । भा १३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी मध । विषय—पूजा ।

१ काल × । से काल सं १८३६ वेद्याल पुषी ११ । पूर्ण । वै सं ११२ । अ मन्थार ।

विशेष—माणकान्त ने प्रतिविधि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४१६६ पूजाविधि— । पत्र सं १ । भा १×४३ इंच । भाषा—माहठ । विषय—विधान ।

१ काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं १७८६ । अ मन्थार ।

४१६७ पूजाविधि— । पत्र सं ४ । भा १×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । १

काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं ११७ । अ मन्थार ।

४१६८ पूजाष्टक—आशानम् । पत्र सं १ । भा १३×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२११ । अ मन्थार ।

४१६९ पूजाष्टक—आहूट । पत्र सं० १ । भा १३×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १०

काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२२ । अ मन्थार ।

४१७० पूजाष्टक—असेयबन्धु । पत्र सं० १ । भा १३×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२१ । अ मन्थार ।

४१७१ पूजाष्टक— । पत्र सं १ । भा १३×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १

काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १२१३ । अ मन्थार ।

४१७२ पूजाष्टक— । पत्र सं ११ । भा ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १

काल × । से काल × । अपूर्ण । वै सं १८७८ । अ मन्थार ।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । अ भण्डार ।

४६७४. पूजासंग्रह " " । पत्र सं० ३३१ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० मे ४७४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१ काजीव्रतोद्यापनमडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७४
२ श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३ रोहिणीव्रतपूजा	महलाचार्य केशवमेन	संस्कृत	१२	४७२
४. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५ लम्बिविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६. ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६९
७. रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८ अनन्त्रतोद्यापनपूजा	आ० गुराचन्द्र	"	३०	४६७
९ रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१० श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११ शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	"	२०	४६४
१२ गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३ त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४ पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५ त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० न० ११२६, २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें है ।

४६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० ४७५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
त्रिपञ्चाशत्तत्रतोद्यापन	—	संस्कृत

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चरमेष्टीपूजा	—	संस्कृत
पञ्चकन्याएकपूजा	—	"
शौचठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	नसितकीर्ति	"
मणुवरचरनपूजा	—	"
सुमंभदसमीकषा	भुवसागर	"
चरनचट्टिकषा	"	"
शोचसकारणविधानकषा	भवनकीर्ति	"
मन्दीअरविधानकषा	हरिवैण	"
मेघमाताप्रतकषा	भुवसागर	"

४१७६ प्रति सं० ३। पत्र स ८। ले कल स ११२६। के सं ४८१। क बन्धार।

विशेष—निम्न प्रकार समूह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुकर्षपतिप्रतीष्ठापनपूजा	×	संस्कृत
मन्दीअरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाकर	"
प्रतिमासाठकपुरेष्टीप्रतीष्ठापनपूजा	×	"

विशेष—ताराचन्द्र [जयसिंह के मन्त्री] के प्रतिमिपि की भी।

सपुत्रकन्याए	×	संस्कृत
सकसीकरणविधान	×	"

इसी मन्धार में २ प्रतिमा (के सं ४७७ ४७८) भी हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं।

४१७७ प्रति सं० ४। पत्र स ६। सं काल ८। के सं १११। क बन्धार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, नसिकुण्डमन्त्रपूजा भानव स्तवन एवं बलवचरनप

नयमान। प्रति प्राचीन तपस मन्त्र विधि सहित है।

४१७८ प्रति सं० ३। पत्र सं १२। ले कल ×। के सं ४१४। क बन्धार।

विशेष—इसी मन्धार में २ प्रतिमा (के सं ४१ ४१४) भी हैं।

४६७६. प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० सं० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एव इक्ष्वाकार पूजा का संग्रह है ।

४६८० प्रति स० ७ । पत्र स० ५५ मे ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति स० ८ । पत्र स० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२ प्रति स० ९ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १८०० आषाढ सुदी १ । वे० सं० ६६ । ञ

डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	१-१९
नन्दीश्वरपूजा	—	”	१९-२४
सकलीकरणविधि	—	”	२४-२५
लघुस्वयम्भूपाठ	समन्तभद्र	”	२५-२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	”	२६-३३
भक्तामरमृतोन्नपूजा	केशवसेन	”	३३-३९

आचार्य विश्वकीर्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चमीव्रतपूजा केशवसेन ” ३९-४५

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४६९, ४७०) और हैं जिनमे नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३ प्रति स० १० । पत्र स० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४ पूजासंग्रह । पत्र स० ३४ । आ० १०३ X ५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २०

काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, गुर्वावलीपूजा, बीसतीर्थङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडश

रणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एव शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५ पूजासंग्रह । पत्र स० २ से ४५ । आ० ७३ X ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २२८) और है ।

४६८६ पूजासंग्रह । पत्र स० ४६७ । आ० १२ X ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी ।

विषय—संग्रह । २० काल X । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	१० काण्ड	३० काण्ड	पत्र
१ मत्तानरपूजा	—	संस्कृत			
२ सिद्धकूटपूजा	विष्णुपरा	"		स १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३ बीसतीर्थकूटपूजा	—	"		×	अपूर्ण
४ नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५ धनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६ वरुणविशेषरासपूजा	विष्णुमेत	"	×	स १८८६	पूर्व
७ ज्येष्ठजिनवरपूजा	दुरेभवीति	"			
८ नन्दीश्वरजपमाल	वनकवीति	मरघ रा			
९ पुण्याजतिपठपूजा	पद्मादास	संस्कृत	[मंडल चित्र सहित]		
१० रत्नचक्रपूजा	—	"			
११ प्रतिमासम्बत चतुर्दशीपूजा	मन्मथरास	"	१ काण्ड १८०	से काण्ड १८२०	
१२ रत्नचक्रजपमाल	श्यामरास बुधवास	"		" " १८२१	
१३ बाह्यवतो का श्योरा	—	हिन्दी			
१४ पद्ममेरुपूजा	देवी-श्रीतीति	संस्कृत		से काण्ड १८२०	
१५ पद्मकल्याणकूपपूजा	दुर्वासापर	"			
१६ पुण्याजतिपठपूजा	पद्मादास	"		से काण्ड १८६२	
१७ देवाधिकार	—	"			
१८ पुराणपूजा	—	"			
१९ महाशिवराजपूजा	—	"			
२० वरमस्तस्यानकपूजा	दुर्वासापर	"			
२१ वत्सविधानपूजा	रत्नचन्द्र	"			
२२ रोहिणीपठपूजा मंडल चित्र सहित	केदारमेत	"			
२३ जिनगुणपतिपूजा	—	"			
। तृप्यप्रतीदारण	धर्मवरास	"			

२५. कर्मचूरप्रतीघापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६. सोलहकारण प्रतीघापन	केशवसेन	"	
२७. द्विपंचकल्याणकपूजा	—	"	से० काल स० १८३१
२८. गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९. कर्मदहनपूजा	—	"	से० काल स० १८२८
३०. कर्मदहनपूजा	—	"	
३१. दशलक्षणापूजा	—	"	
३२. षोडशकारणजयमाल	रहधू	अपभ्रंश	अपूर्णा
३३. दशलक्षणाजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४. त्रिकालचौबीसीपूजा	—	संस्कृत	से० काल १८५०
३५. लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६. अक्रुरारोपणविधि	भाशाधर	"	
३७. रामोकारपैतीसी	कनककीर्ति	"	
३८. मोनप्रतीघापन	—	"	
३९. शांतिचक्रपूजा	—	"	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१. सुखसपत्तिपूजा	—	"	
४२. क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	से० काल १८३०
४४. चन्दनपट्टीप्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५. रामोकारपैतीसीपूजा	प्रक्षयराम	"	से० काल १८२७
४६. पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७. निपञ्चाशत्क्रिया	—	"	
४८. फलिकाप्रतीघापन	—	"	
४९. मेघमालाप्रतीघापन	—	"	
५०. पञ्चमीप्रतपूजा	—	"	से० काल १८२७

विशेष—निम्न पठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	१० काश	ले० काश	पत्र
१ मत्स्यपुरा	—	संस्कृत			
२ सिद्धकूटपुरा	विश्वसुपरा	"	५	१८८६	उद्वेह मुकी ११
३ बीसवीं शतकपुरा	—	"		५	सपूर्णा
४ नित्यनियमपुरा	—	संस्कृत हिन्दी			
५ अमृतपुरा	—	संस्कृत			
६ पद्यकवितेजसासपुरा	विश्वसम	"	५	१८८६	पूर्णा
७ उद्वेहजिनकरपुरा	दुरेन्द्रकीर्ति	"			
८ मन्दीश्वरजयमाला	कनककीर्ति	अन्यत्र च			
९ पुष्पाङ्गलिपत्रपुरा	पद्मादास	संस्कृत [मंडल चित्र सहित]			
१० एतिसपुरा	—	"			
११ प्रतिमासान्त चतुर्विंशतीपुरा	अक्षयपरास	"	१ काश १८	मे काश १८२७	
१२ अक्षयपरासमाला	अक्षयपरास बुधरास	"		" "	१८२६
१३ बाह्यपर्वों का श्योरा	—	हिन्दी			
१४ पञ्चमेकपुरा	रेकेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		५ काश १८२	
१५ पञ्चमव्यासपुरा	मुखासागर	"			
१६ पुष्पाङ्गलिपत्रपुरा	पद्मादास	"		मे काश १८६२	
१७ पञ्चाधिकार	—	"			
१८ पुराणपुरा	—	"			
१९ अष्टाङ्गिधारापुरा	—	"			
२० परमसत्त्वस्वानन्दपुरा	मुखासागर	"			
२१ अक्षयविद्यापुरा	रत्नमन्दि	"			
२२ रोहिणीपत्रपुरा मंडल चित्र सहित	वेदावसेन	"			
२३ त्रिपुराणमपत्तिपुरा	—	"			
२४ श्रीसुखात्मरतोषारन	अक्षयपरास	"			

२५	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६	सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७	द्विपत्रकल्याणकपूजा	—	"	ले० कल स० १८३१
२८	गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९	कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल स० १८२८
३०	कर्मदहनपूजा	—	"	
३१	दशलक्षणापूजा	—	"	
३२	षोडशकारणजयमाल	रङ्ग	अपभ्रंश	अपूर्ण
३३	दशलक्षणाजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४	त्रिकालचौवीसीपूजा	—	संस्कृत	ले० कल १८५०
३५	लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६	अकुरारोपणविधि	भाशाधर	"	
३७	णमोकारपैतीसी	कनककीर्ति	"	
३८	मौनव्रतोद्यापन	—	"	
३९	शांतिवक्रपूजा	—	"	
४०	सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१	सुखमपत्तिपूजा	—	"	
४२	क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३	षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	ले० कल १८३०
४४	चन्दनपट्टीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५	णमोकारपैतीसीपूजा	अक्षयराम	"	ले० कल १८२७
४६	पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७	त्रिपञ्चाशत्क्रिया	—	"	
४८	कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९	मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५०	पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

११ नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	
१२ यन्त्रपूजा	—	"	से काल १५१७
१३ ब्रह्मलक्षणवचनास	१३५	मगध व	

उम्मा टीका सहित है।

४१८० पूजासंग्रह... पत्र सं० १११। भा ११२×२२ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वै स ११। ४ नम्बर।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

भ्रमन्तवदपूजा	×	हिन्दी	२ काल स० १५१८
सम्मोहविचारपूजा	×	"	
निर्वासुसौत्रपूजा	×	"	२० काल सं १५१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२० काल सं १५१७
विरनाथोत्रपूजा	×	"	
वासुपूजाविधि	×	संस्कृत	
श्रीश्रीमंत्रपूजा	×	"	
सुविधान	वैश्वदेवोक्ति	"	

४१८१ प्रति स० ३। पत्र सं ४। से काल ×। वै सं १४२। ४ नम्बर।

४१८२ प्रति स० ३। पत्र सं ५२। से काल ×। वै स० १६। ४ नम्बर।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पञ्चपरमेश्वरकर्मफल	कर्मफल	हिन्दी	पत्र १-१
पञ्चपरमेश्वरपूजा	×	संस्कृत	" ४ १२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	कर्मफल	हिन्दी	" ११-२६
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	कर्मफल	संस्कृत	" २७-४६
कर्मफलपूजा	कर्मफल	हिन्दी	" १-११
कर्मफलपूजाविधान	"	"	" १२-२६

४१६० प्रति सं० ४। से काल ×। मसुरी। वै सं १५६। ४ नम्बर।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४६६१ पूजा एव कथा संग्रह—खुशालचन्द । पत्र सं० ५० । आ० ८×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७३ पीप बुदी १२ । पूर्णा । वे० सं० ५६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

चन्दनपेठीपूजा, दशलक्षणापूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप लक्षणाकथा, मेरुपत्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४६६२. पूजासंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० ५१ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४८२ । क मण्डार ।

४६६३. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ६ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७२७ । अ मण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एव रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी मण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ग मण्डार ।

४६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । क मण्डार ।

४६६६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल स० १६५५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ७३ । घ

मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षणा पूजा ध्यानतराय कृत ।

अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४८६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ५ प्रतियाँ (वे० सं० ४८७, ४८८, ४८९, ४८५, ४९३) और हैं जो सभी अपूर्ण हैं ।

४६६८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० ६३७ । च मण्डार ।

४६६९ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

५००० प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३८ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । ज मण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एव नित्य पूजायें हैं ।

५००१ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६३५ । ट मण्डार ।

५००२ पूजासमूह—रामचन्द्र । पत्र सं० २० । मा ११३×१३ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा ।

काल × । से० काम × । पूर्ण । वै० सं० ४२३ । क मन्डार ।

बिंबीय—घादिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं ।

५००३ पूजासार— । पत्र सं० ८१ । मा० १०×१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं

वि विधान । र काम × । से काम सं० ११० । माववा मुठी १४ । पूर्ण । वै सं० ४५४ । क मन्डार ।

५००४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । से काम × । वै सं० २२१ । क मन्डार ।

बिंबीय—इसी मन्डार में एक प्रति (वै सं० २३) भी है ।

५००५ प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतीषापनपूजा—अक्षयराज । पत्र सं० १४ । मा १ × २ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काम × । से काम सं० ११० । माववा मुठी १४ । पूर्ण । वै सं० ३८७ । क मन्डार ।

बिंबीय—दीवान ताराचन्द्र ने अक्षुर में प्रतिनिधि की थी ।

५००६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । से काम सं० १८ । माववा मुठी १ । वै सं० ४५४ । क

मन्डार ।

५००७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । से काम सं० १८ । माववा मुठी ५ । वै सं० ३८३ । क

मन्डार ।

५ ८८ प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतीषापनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० १२ । मा १२×२ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काम × । से काम सं० १८ । माववा मुठी १४ । पूर्ण । वै सं० ३८६ । क मन्डार ।

बिंबीय—श्री अर्जुन महाराज के दीवान ताराचन्द्र मातक ने रचना कराई थी ।

५००८ प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतीषापनपूजा— । पत्र सं० १३ । मा १ × ० इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । र काम × । से काम सं० १८ । पूर्ण । वै सं० ५ । क मन्डार ।

५०१० प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । से काम सं० १८७१ । माववा मुठी १ । वै सं० २३१ । क

मन्डार ।

बिंबीय—सदामुख बाल्मीकाल मोहा का ने अक्षुर में प्रतिनिधि की थी । दीवान अक्षयचन्द्र श्री संगही ने

प्रतिनिधि करवाई थी ।

५०११ प्रतिष्ठाहरा—म० श्री राजकीर्ति । पत्र सं० २१ । मा १२×१ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—प्रतिष्ठा (विधान) । र काम × । से काम × । पूर्ण । वै सं० १०१ क मन्डार ।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र स० १४ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल स० १८६१ चैत्र बुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ५०२ । ङ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन) । पत्र स० १३६ । आ० ११३×८६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय विधान । २० काल × । ले० काल स० १६४६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ४८५ । क भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है ।

५०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल स० १६४६ । वे० स० ४८७ । क भण्डार ।

विशेष—३६ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल स० १६४६ । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—बालावल्हा व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्त में एक अतिरिक्त पत्र पर ब्रह्मस्थापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमें ब्रह्म लिखे हुये हैं ।

५०१६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७१ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुदकुदाचार्य पट्टोदयभूषणरदिवामणि श्रीवसुविद्वाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचित । प्रतिष्ठा-सार पूर्णमगमत ।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र स० ११६ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५ । ले० काल स० १८८४ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १२ । ज भण्डार ।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ... । पत्र सं० १ । आ० ३३ गज लबा १० इ च चौड़ा । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४० । व्य भण्डार ।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इ च चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धि ॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सवतु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीहृष्टकापये श्रीसर्वज्ञचेत्यालये श्रीमूलसधे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति देवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवा ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ॥

५०१६ प्रति स० २ । पत्र सं० ३१ । से काल स० १५११ बैश क्रुती ४ । मपूर्णा । वै स० १ ४ ।

क मन्थार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ पद्य में प्रतिष्ठा में काम धामे बस्ती सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२० प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा तुलसीदा । पत्र सं २६ । भा० ११३×२२ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विधान । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै स० ४५६ । क मन्थार ।

विशेष—मूलकर्ता भाचार्य बसुबिन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । बलिष्ठ में कुङ्कुल

नामके देव सहस्राक्षस के समीप एलगिरि पर जालाह नामक राजाका मनवासा हुआ विधान बरदात्मक है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त भन्व एवा मया ऐसा सिद्धा है ।

इसी मन्थार में एक प्रति (वै स ४६) भी है ।

५०२१ प्रतिष्ठाविधि— । पत्र सं० १७६ से १९६ । भा ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २ काल × । से काल × । मपूर्णा । वै स २ ३ । क मन्थार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—प० शिवजीशास्त्र । पत्र सं २६ । भा १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

विधि विधान । २ काल × । से काल स १६३१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्णा । वै स ४६१ । क मन्थार ।

५०२३ प्रतिष्ठासार— । पत्र सं ८२ । भा १२३×२२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । २ काल × । से काल स १६३७ भाद्रपद सुदी १ । वै सं २५६ । क मन्थार ।

विशेष—प० पृथ्वीनाथ ने प्रतिमिति की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से भरे हुये हैं ।

५०२४ प्रतिष्ठासारसमूह—भा० बसुनन्दि । पत्र सं २१ । भा १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २ काल × । से काल × । पूर्णा । वै सं १२१ । क मन्थार ।

५०२५. प्रति स० २ । पत्र सं ३४ । से काल सं १५६ । वै सं ४२६ । क मन्थार ।

५०२६ प्रति स० ३ । पत्र सं २७ । से० काल सं १६७७ । वै सं ४६२ । क मन्थार ।

५०२७ प्रति स० ४ । पत्र सं ३६ । से काल स १७३६ वैशाख सुदी १३ । मपूर्णा । वै सं ६५ ।

क मन्थार ।

विशेष—टीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्यार— । पत्र सं ७६ । भा १३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान । २ काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं० २३४ । क मन्थार ।

५०२९ प्रतिष्ठासूक्तिप्रसंग— । पत्र सं २१ । भा १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधान । २ काल × । से काल सं १६३१ । पूर्ण । वै स ४६३ । क मन्थार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा ... । पत्र सं० ३ । आ० ६३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । ज भण्डार ।

५०३१. बाल्यकालवर्णन ... । पत्र सं० ४ से २३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमे म्राने के प्रथम मास से लेकर दशवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है ।

५०३२ बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा । पत्र सं० ५८ । आ० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करो की पूजा । २० काल सं० १६३४ भासोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी षष्टन मे एक प्रति और है ।

५०३३ बीसतीर्थङ्करपूजा ... । पत्र सं० ५३ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १६४५ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३२२ । ज भण्डार ।

५०३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

✓ ५०३५ भक्तामरपूजा—श्री ह्यानभूषण । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । छ भण्डार ।

५०३६ भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । च भण्डार ।

विशेष—१०, ११, १२वां पत्र नहीं है ।

५०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में हरबशलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५०३८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ आशुष सुदी ५ । वे० सं० १२० । ज भण्डार ।

५०३९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९११ भासोज बुदी १२ । वे० सं० ५० । क भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी मे है ।

५०४० भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १६६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । छ भण्डार ।

विशेष— निधि निधि रस चंद्रोसंख्य सवत्सरेहि
 विद्यमानमसिमासे सप्तमी मन्वारे ।
 मन्वारेवरदुर्गे चन्द्रोसंख्य भैत्ये
 विरचितमिंत मन्वारे वैश्वानरसेन ॥

५०४१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । मे० काल × । मे० सं० ११० । ४ मन्वारे ।

५०४२ महाभरतस्तोत्रपूजा— । पत्र सं० ८ । मा० ११×१ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । मे० काल × । पूर्ण । मे० सं० ११० । ४ मन्वारे ।

५०४३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । मे० काल × । मे० सं० २११ । ४ मन्वारे ।

५०४४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । मे० काल × । मे० सं० ४४४ । ४ मन्वारे ।

५०४५ भाद्रपदपूजासमूह—द्यासधराय । पत्र सं० २६ से ३६ । मा० १२×७ इच । भाषा—

हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । मे० काल × । अपूर्ण । मे० सं० २२२ । ४ मन्वारे ।

५०४६ भाद्रपदपूजासमूह— । पत्र सं० २४ से ३६ । मा० १२×७ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल × । मे० काल × । अपूर्ण । मे० सं० २२२ । ४ मन्वारे ।

५०४७ भाद्रपदपूजा— । पत्र सं० १ । मा० ११×१ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१ काल × । मे० काल × । पूर्ण । मे० सं० २ । ४ मन्वारे ।

५०४८ भाद्रपदपूजासमूह— । पत्र सं० १ । मा० १२×१ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १ काल × । मे० काल × । पूर्ण । मे० सं० १ । २ । ४ मन्वारे ।

५०४९ महाभरत के चित्र— । पत्र सं० १४ । मा० ११×१ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा

सम्बन्धी मन्वारे का चित्र । मे० काल × । मे० सं० ११० । ४ मन्वारे ।

विशेष—विषय सं० १२ है । निम्नलिखित मन्वारे के चित्र हैं—

१ भुक्तकर्म	(कोष्ठ २)	७ अष्टमिर्दत्त	(" ५९)
२ वैश्वानर	(कोष्ठ २१)	८ सप्तमिर्दत्त	(" ७)
३ बृहस्पति	(" १६)	९ सोमह्वारण	(" २५६)
४ जिनपुण्यगति	(" १६)	१० श्रीश्रीसोमह्वारण	(" १२)
५ मित्रदत्त	(" १६)	११ वातिचक्र	(" २४)
६ विद्यामणिपार्लनाथ	(" १६)	१२ महाभरतस्तोत्र	(" ४०)

१३. बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६६)	३२. भ्रुकुरारोपण (कोष्ठ)
१४. पाचमाह की चौदस (,, २५)	३३. गणपरवल्लभ (,, ४८)
१५. अणतका मंडल (,, १६६)	३४. नवग्रह (,, ६)
१६. भेषमालाप्रत (,, १५०)	३५. सुगन्धदशमी (,, ६०)
१७. रोहिणीप्रत (कोष्ठ ६१)	३६. सारमुतयंत्रमंडल (,, २८)
१८. लब्धिविमान (,, ८१)	३७. शास्त्रजी का मंडल (,, १२)
१९. रत्नत्रय (,, २६)	३८. अक्षयनिधिमंडल (,, १५०)
२०. पञ्चकल्याणक (,, १२०)	३९. अठारह का मंडल (,, ५२)
२१. पञ्चपरमेष्ठी (,, १६३)	४०. भ्रुकुरारोपण (,, —)
२२. रविवारप्रत (,, ८१)	४१. कलिकुडपार्वनाय (,, ८)
२३. मुक्तावली (,, ८१)	४२. विमानशुद्धिशाक्तिक (,, १०८)
२४. कर्मदेहन (,, १४८)	४३. वासठकुमार (,, ५२)
२५. फाजीनारस (,, ६४)	४४. धर्मचक्र (,, १५७)
२६. कर्मचूर (,, ६४)	४५. लघुसान्तिक (,, —)
२७. ज्येष्ठजिनवर (,, ४६)	४६. विमानशुद्धिशाक्तिक (,, ८१)
२८. बारहमाहकी पञ्चमी (,, ६५)	४७. छिनवै क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्कर (,, २४)
२९. चारमाह की पञ्चमी (,, २५)	४८. श्रुतज्ञान (,, १५८)
३०. फलफादल [पञ्चमेरु] (,, २५)	४९. दशलक्षणा (,, १००)
३१. पाचवासो का मंडल (,, २५)	

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० १३८ क । छ मण्डार ।

५०५१. महपविधि । पत्र सं० ४ । प्रा० ६X४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान ।
२० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ मण्डार ।

५०५२. महपविधि..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११३X५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि
विधान । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८८ । म मण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा..... । पत्र सं० ५६ । प्रा० ११३X४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ मण्डार ।

२०२४ महावीरनिर्वाणपूजा— । पत्र सं ३ । मा ११×२३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । ले काल सं १८२१ । पूर्ण । के सं २१ । अ मन्थार ।

विशेष—मिथिलाकाष्ठ गाथा प्राकृत में प्रीर है ।

२०२५ महावीरनिर्वाणकस्याणपूजा— । पत्र सं १ । मा ११×२ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १२१६) प्रीर है ।

२०२६ महावीरपूजा—पुन्दावन । पत्र सं २ । मा ८×२२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २२२ । अ मन्थार ।

२०२७ सांगीसुद्धीगिरिसङ्कपूजा—विरवभूषण । पत्र सं १३ । मा १२×२३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । र काल सं १७२६ । ले काल सं १६४ बैशाख बुध १४ । पूर्ण । के सं १४२ । अ मन्थार ।

विशेष—भारत के १५ वर्षों में विरवभूषण इत सतनाम स्तौत्र है ।

अश्विभक्त प्रकृति निम्न प्रकार है—

श्रीसुतसमे विमङ्गलिभाति श्रीसुतसुखास्यसुनीद्वयम् ।

अहद्वयमात्कारणत्वादिगण्यं तन्वप्रतिष्ठा किमर्पणमात्रम् ॥१॥

अतोऽगौ किमधर्मवीतिरमस बाधीम साद्रु तवत्

साहित्यसामतर्कपाठनपटुचारित्र्यमारोहह ।

तत्पटुं मुनिधीमभूषणगणि श्रीसांवरवैष्टितः

तत्पटुं मुनि ज्ञानसूषणमहात् घोषस्तप्ता केवली

श्रीमज्जमभूषणवैद्यसूषणीयायिकाचापविचारवशा ।

अधीद्वयत्रोरिव कर्मिबास्यपटु तधीमे रमवत्प्रदायी ॥३॥

तत्पटुं प्रकटो जात विश्वभूषण योगिनः ।

तेनेर्द रचितो यत्न अन्वयमात्सुत हेतवै ॥४॥

अन्वयि विविधव्यवसायै मायमायकै

एवावस्थापयामस्युणैमिवात्मसिधपुरै ॥५॥

२०२८ प्रति सं ० । पत्र सं १ । ले काल सं १८१६ । के सं १६७६ । अ मन्थार ।

विशेष—जगत् तु दी की बमलावार मन्थन रचना भी है । वर्षों का कुछ हिस्सा चूड़ोने जाट रखा है ।

ॡ०ॡॢ. ढुकुठसतुतढीतुरतुतुठलधलतन । तुरतु स० २ । ढुरल० १२३×ॢ इ तुर । ढलतल ससुकृत । वलतुत-तुरल । २० कलल × । ले० कलल स० १ॢ२ॢ । तुरल । वे० स० ३०२ । ख ढणुडलर ।

ॡ०ॢ० ढुकुठलवलीतुरतुतुठलधलतन । तुरतु स० २ । ढुरल० १२×ॡ३ इ तुर । ढलतल-ससुकृत । वलतुत-तुरल । २० कलल × । ले० कलल × । तुरल । वे० स० २७ॡ । तुर ढणुडलर ।

ॡ०ॢ१. ढुकुठलवलीतुरतुतुठलधलतनतुरलधलतन" । तुरतु स० १ॢ । ढुरल० ११३×ॢ इ तुर । ढलतल-ससुकृत । वलतुत-तुरल । २० कलल × । ले० कलल स० १ॢॢॢ । तुरल । वे० स० २७ॢ । तुर ढणुडलर ।

वलशुत-ढुहलतुढल कुशुी तुरतुललल ने कुतुतुर ढे तुरतुललतलतल कली थुी ।

ॡ०ॢ२ ढुकुठलवलीतुरतुतुठलधलतन । तुरतु स० २ॡ । ढुरल० ॢ३×ॢ इ तुर । ढलतल-ससुकृत । वलतुत-तुरल ँव वलधन । २० कलल × । ले० कलल स० १ॢ२ॡ । तुरल । वे० स० २ॡॢ । ख ढणुडलर ।

ॡ०ॢ३. ढुकुठलवलीतुरलधलतन-वुरलुी सुखसलगर । तुरतु स० ३ । ढुरल० ११×ॡ इ तुर । ढलतल-ससुकृत । वलतुत-तुरल । २० कलल × । ले० कलल × । तुरल । वे० स० ॡॢॡ । ङ ढणुडलर ।

ॡ०ॢॡ तुरतु स० २ । तुरतु स० ३ । ले० कलल × । वे० स० ॡॢॢ । ङ ढणुडलर ।

ॡ०ॢॡ. ढेघढलललवलधल । तुरतु स० ॢ । ढुरल० १०×ॡ३ इ तुर । ढलतल ससुकृत । वलतुत-तुरल वलधलन । २० कलल × । ले० कलल × । तुरल । वे० स० ॢॢॢ । ञ ढणुडलर ।

ॡ०ॢॢ. ढेघढलललतुरतुतुठलधलतनतुरलधलतन । तुरतु स० ३ । ढुरल० १०३×ॡ इ तुर । ढलतल-ससुकृत । वलतुत-तुरल तुरल । २० कलल × । ले० कलल स० १ॢॢ२ । तुरल । वे० स० ॡॢ० । ञ ढणुडलर ।

ॡ०ॢॣ रतुनतुरतुतुठलधलतनतुरलधलतन । तुरतु स० २ॢ । ढुरल० ११३×ॡ३ इ तुर । ढलतल-ससुकृत । वलतुत-तुरल । २० कलल × । ले० कलल स० १ॢ२ॢ । तुरल । वे० स० ११ॢ । ङ ढणुडलर ।

वलशुत-१ ढुरतुरल तुरतु ढुरल हे ।

ॡ०ॢॢ तुरतु स० २ । तुरतु स० ३० । ले० कलल × । वे० स० ॢॢ । ढु ढणुडलर ।

ॡ०ॢॢ रतुनतुरतुतुठलधलतनढलल । तुरतु स० ॡ । ढुरल० १०३×ॡ इ तुर । ढलतल-तुरलकृत । वलतुत-तुरल । २० कलल × । ले० कलल × । तुरल । वे० स० २ॢ७ । ञ ढणुडलर ।

वलशुत-हलनुदी ढे ढुरतु दलतुल हुढुरल हे । इसुी ढणुडलर ढे ँक तुरतु (वे० स० २७१) ढुरल हे ।

ॡ०७० तुरतु स० २ । तुरतु स० ॡ । ले० कलल स० १ॢ१२ ढलदवल सुदी १ । तुरल । वे० स० १ॡॢ । ख ढणुडलर ।

वलशुत-इसुी ढणुडलर ढे ँक तुरतु (वे० स० १ॡॢ) ढुरल हे ।

५०७१ प्रति स० ३। पत्र सं० १। ले० काल X। वे० सं० ६४३। क मन्थार।

५०७२ प्रति स० ४। पत्र सं ५। ले० काल सं १८६२ माघमा सुदी १२। वे सं २१७। क मन्थार।

५०७३ प्रति स० ५। पत्र सं २। ले काल X। वे स २ । म् मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे स २ १) भी है।

५०७४ रत्नप्रयत्नयमात्र—। पत्र स १। मा १ X७ ६५। माघा-सप्तम्य। विषय-पूजा।

२ काल X। ले काल सं० १८३३। वे सं १२६। छ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं। पत्र ३ से घनस्तपतकथा भुक्तनागर हृत्त तथा घनस्त मन्थ पूजा भी हुई है।

५०७५ प्रति सं० २। पत्र स ५। ले काल स० १८१९ सप्तम सुदी १३। वे सं १२६। छ मन्थार।

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियां इसी शैली में भी हैं।

५०७६ रत्नप्रयत्नयमात्र—। पत्र सं० १। मा १ २X४२ ६५। माघा-संस्कृत। विषय-पूजा।

२ काल X। ले काल स १८२७ माघमा सुदी १३। पूर्ण। वे सं० १८२। क मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे० सं ७४१) भी है।

५०७७ प्रति स० २। पत्र सं ३। ले काल X। वे० सं ७४४। क मन्थार।

५०७८ प्रति स० ३। पत्र स० ३। ले काल X। वे सं २ १। म् मन्थार।

५०७९ रत्नप्रयत्नयमात्रामाघा-नयमत्र। पत्र सं० ५। मा १२X७२ ६५। माघा-शुक्ली।

विषय-पूजा। २ काल सं ११२२ फल्गुन सुदी ८। ले काल X। पूर्ण। वे० स ११३। क मन्थार।

५०८० प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल सं ११३७। वे स १३१। क मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियां (वे सं १२१, १३ १२७ १२८ १२९) भी हैं।

५०८१ प्रति स० ३। पत्र सं १। ले काल X। वे सं ८२। क मन्थार।

५०८२ प्रति स० ४। पत्र सं ४। ले काल स ११२८ कर्तिक सुदी १। वे सं १४४। क मन्थार।

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियां (वे सं १४४ १४५) भी हैं।

५०८३ प्रति स० ५। पत्र सं ७। ले काल X। वे सं ११। छ मन्थार।

५०८४. रत्नत्रयजयमाल । पत्र सं० ३ । आ० १३३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५०८५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

५०८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६०७ द्वि० आसोज बुदी १ । वे० सं० १८५ ।
क भण्डार ।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० ८३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११० । अ भण्डार ।

५०८८ रत्नत्रयपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

५०८९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ब भण्डार ।

५०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १३ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । च भण्डार ।

५०९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३०५ । च
भण्डार ।

५०९२. रत्नत्रयपूजा । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं ।

५०९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५०९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । घ भण्डार ।

५०९५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । सं० वे० ६४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—छोटलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५०९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३०१ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं ।

५०९७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ब भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४८२, ५२६) और हैं ।

५०९८ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७५ । ट भण्डार ।

५०९९ रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ से ५ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । क भण्डार ।

५१०० प्रति सं० २ । पत्र सं १ । से० काल × । वै० सं० ३०१ । अ नम्बर ।

५१०१ रत्नत्रयपूजा—अपमदास । पत्र सं १७ । मा० १२×५३ इ च । भाषा—हिन्दी (पुरानी)

विषय पूजा । २ काल × । से० काल सं० १८४६ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ४१६ । अ नम्बर ।

५१०२ प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । मा० १३३×५३ इ च । से० काल × । पूर्ण । वै० सं ३८५ ।

अ नम्बर ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों ही भाषा के शब्द हैं ।

प्रशिक्षण—
 सिद्धि टिप्पिक्रिती मुहूर्त्तीसै
 रिसह बास बुहदास मणीसै ।
 इय वैरह पयार चारितउ,
 संक्षेपे मानिय उपबिस्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा..... । पत्र सं ५ । मा १२×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २

काल × । से० काल × । पूर्ण । वै० सं ७४२ । अ नम्बर ।

५१०४ प्रति सं० ७ । पत्र सं ४३ । से० काल × । वै० सं १२२ । अ नम्बर ।

५१०५ प्रति सं० ३ । पत्र सं ३३ । से० काल सं १११४ पौष सुदी २ । वै० सं १४१ । अ

नम्बर ।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वै० सं १४७) भी है ।

५१०६ प्रति सं० ४ । पत्र सं १ । से० काल × । वै० सं ११ । अ नम्बर ।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वै० सं ११) भी है ।

५१०७ प्रति सं० ५ । पत्र सं ३६ । से० काल सं ११७७ । वै० सं २१० । अ नम्बर ।

५१०८ प्रति सं० ६ । पत्र सं २३ । से० काल × । वै० सं ११७ । अ नम्बर ।

५१०९. रत्नत्रयमहाविधान..... । पत्र सं ३६ । मा १ × ९ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२ काल × । से० काल × । वै० सं १७ । अ नम्बर ।

५११० रत्नत्रयविधानपूजा—प० रत्नकीर्ति । पत्र सं ८ । मा० १ × ४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा एवं विधि विधान । २ काल × । से० काल × । पूर्ण । वै० सं १५१ । अ नम्बर ।

५१११ रत्नत्रयविधान..... । पत्र सं १२ । मा १ ३ × ४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा

एवं विधि विधान । २० काल × । से० काल सं १८७२ पौष सुदी ३ । वै० सं १११ । अ नम्बर ।

५११२ रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० १६ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । झ भण्डार ।

५११४ रत्नत्रयत्रयोद्यापन " " " । पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६५३) और है ।

५११५ रत्नावलीव्रतविधान—ब्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—विधि विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्री वृषभदेवस्य श्रीसरस्वत्यै नम ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद ।

तत्त्व सिंधु सागर ललित योजन एक निनाद ॥

सारद गुरु चरणो नमो नम्रु निरञ्जन हस ।

रत्नावलि सप विधि कहु तिम वाधि सुख वश ॥२॥

चुपई—

जंबूद्वीप भरत उदार, चहु बड़ी धरणीघर सार ।

तेह मध्य एक आर्य सुखड, पञ्चम्लेक्षधर्माति अखड ॥

चद्रपुरी नयरी उदाम, स्वर्गलोक सम दीसिधाम ।

उर्व्वेस्तर जिनवर प्रासाद, भल्लर डोल पटहशत नाद ॥

मन्तिम—

अनुक्रमि सुतनि देईराज, दिक्षा लेई करि आतम काज ।

शुक्ति काम नृप हुउ प्रमाण, ए अह्य प्रमल्लह वाण ॥१८॥

हहा—

रत्नावलि विधि आदर, भावि सूं नरनारि ।

तिम मन वद्धित फल लहु, आमु भव विस्तारि ॥१९॥

मनह मपौरम सपजि होई, नारी वेद विछेद ।

पाप पङ्क सवि कुभाभि, रत्नावलि बहु भेद ।

जे कसिसुणसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।

हर्ष सुत नकुल कमल रवि, कहि अह्य कृष्ण उल्लास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरूपण श्री पास भवातर सम्बन्ध समाप्त ॥

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे व० कृष्णबास मूरजमङ्गली तत्त्वित्य व वर्द्धमान लिखितं ॥

५११६ रविप्रतोद्यापनपूजा—बेधेन्द्रकीर्ति । पत्र सं ९ । मा १२×५ १/२ इ च । माया—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से० काल × । वै० सं० ५०१ । अ मन्थार ।

५११७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । से० काल स १८ ८ । वै सं १०१० । अ मन्थार ।

५११८ रेवानदीपूजा—बिम्बभूपय्य । पत्र सं ९ । मा० १२ १/२ × ६ इ च । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल सं १७३६ । से काल सं १२४ । पूर्ण । वै० सं ३०३ । अ मन्थार ।

विशेष—मन्त्रिम—

सरस्तमेपेटचित्तत्वचन्त्रे फाङ्गुपमाठे विल कृष्णपसे ।

मन्थरगग्रामे परिपूर्णातास्तुः मन्था बगला प्रववास्तु सिद्धिः ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम घण्टुड कोटि पूजा भी है ।

५११९ रैद्धव्रत—गगारास । पत्र सं ४ । मा १३×३ इ च । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । से काल × । वै सं ४३६ । अ मन्थार ।

५१२० रोहिणीव्रतमहाविधात—केराबसेन । पत्र सं १४ । मा १३ १/२ × ४ १/२ इ च । माया—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । र काल × । से काल सं १८७८ । पूर्ण । वै सं ७३५ । अ मन्थार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा वै सं ७३६ १ १४) भीर है ।

५१२१ प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । से० काल सं १८६२ वीच सुदी १३ । वै सं १३४ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (वै सं २२ २२२) भीर है ।

५१२२ प्रति सं० ३ । पत्र सं २ । से काल सं १२७२ । वै सं ६१ । अ मन्थार ।

५१२३ राक्षसीव्रतोद्यापन— । पत्र सं ३ । मा ११×९ इ च । माया—संस्कृत । विषय पूजा । र काल × । से काल × । सपूर्णा । वै सं ३३८ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ७४) भीर है ।

५१२४ प्रति सं० २ । पत्र सं १ । से काल स १२२२ । वै सं २२२ । अ मन्थार ।

५१२५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । से काल × । वै सं ६६६ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ६६२) भीर है ।

५१२६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । से० काल × । वै सं ३३४ । अ मन्थार ।

५१२७ लघुअभिषेकविधान * * * । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
भगवान् के अभिषेक की पूजा व विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं०
१७७ । ज भण्डार ।

५१२८. लघुकल्याण * * * । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३७ । क भण्डार ।

५१२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८२९ । ट भण्डार ।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा * * * । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८५७ । ट भण्डार ।

५१३१ लघुशांतिकपूजाविधान * * * । पत्र सं० १५ । आ० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । अ भण्डार ।

५१३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वे० सं० ८८३ । अ भण्डार ।

५१३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६७१ । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—राजूलाल भौसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५१३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

५१३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । ज भण्डार ।

५१३६ लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है ।

५१३७ लघुस्नपनटीका—पं० भावशर्मा । पत्र सं० २२ । आ० १२×१५ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-अभिषेक विधि । २० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १८१५ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । अ
भण्डार ।

५१३८ लघुस्नपन * * * । पत्र सं० ५ । आ० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ग भण्डार ।

५१३९ लघुविधानपूजा—हर्षकीर्ति । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४६) और है ।

२१४० प्रति स० २ । पत्र सं ३ । से काल × । वै स ११४ । अ मण्डार ।

२१४१ प्रति स० ३ । पत्र सं ३ । से० काल । वै० सं० ७७ । मू मण्डार ।

२१४२ सखिविधानपूजा— । पत्र सं ६ । मा ११×३ इ च । माया-संस्कृत । विषय-पूजा ।

१० काल × । से काल × । मयूरा । वै सं ४७६ । अ मण्डार ।

विवेच—इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वै सं ४६४ २ २) भीर है ।

२१४३ प्रति स० २ । पत्र सं १६ । से० काल × । वै स ११५ । अ मण्डार ।

२१४४ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । से काल × । वै स ५७ । अ मण्डार ।

२१४५ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । से काल सं ११२ । वै सं ११३ । अ मण्डार ।

२१४६ प्रति स० ५ । पत्र सं ६ । से काल × । वै सं ११५ । अ मण्डार ।

विवेच—इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वै सं ३१६ ३२) भीर है ।

२१४७ प्रति स० ६ । पत्र सं ७ । से काल × । वै सं ११७ । अ मण्डार ।

२१४८ प्रति स० ७ । पत्र सं २ से ८ । से काल सं १६ । माया सुवी १ । मयूरा । वै सं

११७ । अ मण्डार ।

विवेच—इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं ११७) भीर है ।

२१४९ प्रति स० ८ । पत्र सं १४ । से काल सं १११२ । वै सं २१४ । मू मण्डार ।

२१५० प्रति स० ९ । पत्र सं ७ । से काल सं १५५७ माह सुवी १ । वै स २३ । अ मण्डार ।

विवेच—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है ।

२१५१ सखिविधानत्रतोद्यापमपूजा— । पत्र सं ६ । मा ११×३ इ च । माया-संस्कृत ।

विषय-पूजा । १० काल × । से काल सं माया सुवी ३ । पूर्ण । वै सं ७४ । अ मण्डार ।

विवेच—ममालाल काठजीवाल ने प्रतिनिधि करने जीपरिको के मन्दिर में जलाई ।

२१५२ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । से काल × । वै सं १७६ । मू मण्डार ।

२१५३ सखिविधानपूजा—ज्ञानचन्द्र । पत्र सं २१ । मा ११×५ इ च । माया-हिन्दी । विषय-

पूजा । १० काल सं ११२३ । से काल सं १११२ । पूर्ण । वै सं ७४४ । अ मण्डार ।

विवेच—इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वै सं ७४३ ७४४/१) भीर है ।

२१५४ सखिविधानपूजा— । पत्र सं १२ । मा १२×३ इ च । माया हिन्दी । विषय-पूजा ।

१० काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७ । अ मण्डार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य] .

५१५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा पत्र स० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वे० स० ६६२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ६६१) और है ।

५१५६. प्रति स० २ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० २२७ । ज भण्डार ।

५१५७. वास्तुपूजा पत्र स० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—गृह प्रवेश

पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२४ । अ भण्डार ।

५१५८. प्रति सं० २ । पत्र स० ११ । ले० काल सं० १६३१ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० ११६ । छ

भण्डार ।

विशेष—उद्धवलाल पाठ्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९. प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १६१६ वैशाख सुदी ८ । वे० स० २० । ज

भण्डार ।

५१६०. विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । अ भण्डार ।

५१६१. विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा—जौहरीलाल बिलाला । पत्र स० ४२ । आ० १२×७३ इंच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६४६ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । अ

भण्डार ।

५१६२. प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ६७५ । छ भण्डार ।

५१६३. प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २ । वे० स० ६७८ । ज

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६७६) और है ।

५१६४. प्रति स० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । अ भण्डार ।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी में भोग गये हैं ।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा-----। पत्र सं १२। भा १२ × ७ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल सं० १२२०। पूर्ण। वै सं ७४१। अ मन्धार।

विशेष—इसी मन्धार में एक प्रति (वै सं १२२) भी है।

५१६८ प्रति सं० १। पत्र सं० १०। से काल ×। वै सं० १६०। अ मन्धार।

विशेष—साम्निपाठ भी दिया है।

५१६९ विवाहपद्धति—सोमसेन। पत्र सं २३। भा १२ × ७ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—जैन

विवाह विधि। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ६६२। अ मन्धार।

५१७० विवाहविधि-----। पत्र सं ८। भा १२ × ७ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—जैन विवाह

विधि। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वै सं ११३६। अ मन्धार।

५१७१ प्रति सं० २। पत्र सं ४। से काल ×। वै सं १७४। अ मन्धार।

५१७२ प्रति सं० ३। पत्र सं ३। से काल ×। वै सं १४४। अ मन्धार।

५१७३ प्रति सं० ४। पत्र सं० १। से काल सं १७१८ स्पेष्ट सूची १२। वै सं १२२। अ मन्धार।

५१७४ प्रति सं० ५। पत्र सं० ५। से काल ×। वै सं ३४१। अ मन्धार।

विशेष—इसी मन्धार में एक प्रति (वै सं ३४१) भी है।

५१७५ विष्णुकुमार मुनिपूजा—बापूकाका। पत्र सं ८। भा ११ × ७ इ च। भाषा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ७४२। अ मन्धार।

५१७६ विहार प्रकरण-----। पत्र सं० ७। भा ८ × १२ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १७५३। अ मन्धार।

५१७७ प्रवर्तनार्थ—मोहन। पत्र सं ३४। भा १३ × ६ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि

विधान। र काल सं १६३२। से काल सं १६४५। पूर्ण। वै सं १८३। अ मन्धार।

विशेष—पञ्चदशमें में एही नामे विधान ने इस मन्ध की रचना की थी। पञ्चमेर में प्रतिलिपि हुई।

५१७८ प्रवर्तनास-----। पत्र सं १। भा १३ × ६ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—पठों के नाम।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १८३७। अ मन्धार।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त २ पत्रों पर पञ्जा माला तथा अथ धारि के विषय है। कुल ६ पत्र है।

५१७९ प्रवर्तनास-----। पत्र सं ३६८। भा १२ × २ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। वै सं १३८। अ मन्धार।

विशेष—निम्न प्रजामों का नया है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
वानरमी श्रीतीनप्रतपूजा	श्रीभूतगण	संस्कृत	ने० काल नं० १८०० षोडश वृत्ती ४
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदाग	"	ने० काल १८०० षोडश वृत्ती ६
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " षोडश वृत्ती ६
वीमतीर्षणपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदान	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
पोरयकारण	—	"	
दशसंक्षणपूजाजयमाल	रक्षु	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभून्तोष	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	ने० काल सं० १८००
समवधारणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिमण्डलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	
घर्मचक्रपूजा	—	"	
जिनगुणसप्तपत्तिपूजा	केशवसेन	"	२० काल १६६५
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	
नवकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	"	
रविवारपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

२१८० प्रतविधान— । पत्र सं ४ । मा ११३×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २७९ । अ म्पार ।

विशेष—इसी म्पार में १ प्रतिष्ठा (वे सं ४२४ २६२, २ १७) मीर है ।

२१८१ प्रति स० २ । पत्र सं १ । से काल × । वे० सं १० । क म्पार ।

२१८२ प्रति स० ३ । पत्र सं ११ । से काल × । वे० सं १७९ । क म्पार ।

२१८३ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । से काल × । वे सं १७० । अ म्पार ।

विशेष—बीबीस तीर्थद्वारों के पंचकस्थानक की तिथियां भी दी हुई हैं ।

२१८४ प्रतविधानरासो—दौलतरामसधी । पत्र सं ३२ । मा ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र काल सं १७१७ मासोज सुबी १ । से काल सं १८३२ प्र भाषा सुबी १ । पूर्ण । वे सं १९९ । अ म्पार ।

२१८५ प्रतविवरण— । पत्र सं ४ । मा १ २×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रत विधि । र काल × । से काल × । मपूर्णा । वे सं १०१ । अ म्पार ।

विशेष—इसी म्पार में एक प्रति (वे सं १२४६) मीर है ।

२१८६ प्रति स० २ । पत्र सं १ से १२ । से काल × । मपूर्णा वे सं १८२३ । ट म्पार ।

२१८७ प्रतविवरण— । पत्र सं ११ । मा० १ ×२ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रत विधि । र काल × । से काल × । मपूर्णा । वे सं १८३९ । ट म्पार ।

२१८८ प्रतसार—ध्या० शिवकोटि । पत्र सं १ । मा ११×४२ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रत विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १७१४ । ट म्पार ।

२१८९ प्रताद्यापनसमूह— । पत्र सं ४२९ । मा ११×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-वस्तुपूजा । र काल × । से काल सं १८१७ । मपूर्णा । वे सं ४३२ । अ म्पार ।

विशेष—निम्न पद्यों का संग्रह है—

नाम	कृती	भाषा
पत्न्यमङ्गलविधान	धुनधर	संस्कृत
मन्त्रमन्त्रमीविधान	—	"
मीनिप्रतोषारन	—	"
मीनिप्रतोषारन	—	"

पञ्चमेरुजयमाला	भूषरदास	हिन्दी
ऋषिमण्डलपूजा	गुरानन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	”
पञ्चमेरुपूजा	—	
अनन्तव्रतपूजा	—	
मुक्तावलिपूजा	—	
शास्त्रपूजा	—	
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	
भेषमालाव्रतोद्यापन	—	
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	
दशलक्षणपूजा	—	
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [वृहद्]	—	
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	
अनन्तव्रतोद्यापन	गुराचन्द्रसूरि	
द्वादशमासात्चतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	
अष्टाङ्गिकाव्रतोद्यापन	—	
अक्षयनिधिपूजा	—	
सौख्यव्रतोद्यापन	—	
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	
रामोकार्पेतीसीपूजा	—	
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	
जिनगुणसंपत्तिपूजा		
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन		

५१८० व्रतविधान— । पत्र सं ४ । मा ११३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि

विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १७१ । अ म्बार ।

विशेष—इसी म्बार में ३ प्रतिमा (वे सं ४२४ १६२, २ ३७) धीर हैं ।

५१८१ प्रति स० २ । पत्र सं ३ । से काल × । वे सं १५ । अ म्बार ।

५१८२ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । से काल × । वे सं १७१ । अ म्बार ।

५१८३ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । से काल × । वे सं १७८ । अ म्बार ।

विशेष—बीबीस तीर्थद्वारों के पंचकल्याणक की तिथियाँ भी यी हुई हैं ।

५१८४ व्रतविधानरासी—श्रीसुन्दरामसधी । पत्र सं ३२ । मा ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विधान । र काल स १७१७ मासोज सुधी १ । से काल सं १८३२ प्र अथवा सुधी १ । पूर्ण । वे० सं १११ । अ म्बार ।

५१८५ व्रतविधान— । पत्र सं ४ । मा १३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—व्रत विधि ।

र काल × । से काल × । अ पूर्ण । वे सं ५५१ । अ म्बार ।

विशेष—इसी म्बार में एक प्रति (वे सं १२४६) धीर हैं ।

५१८६ प्रति स० २ । पत्र सं १ से १२ । से काल × । अ पूर्ण वे सं १८२३ । अ म्बार ।

५१८७ व्रतविधान— । पत्र सं ११ । मा० १ ×३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्रत विधि ।

र काल × । से काल × । अ पूर्ण । वे सं १८३१ । अ म्बार ।

५१८८ व्रतसार—भा० शिवकोटि । पत्र सं ६ । मा ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्रत विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं १७६४ । अ म्बार ।

५१८९ व्रताष्टापनसमूह— । पत्र सं ४३१ । मा ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्रतपूजा । र काल × । से काल सं १८६७ । अ पूर्ण । वे सं ४३२ । अ म्बार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम	कर्ता	भाषा
पञ्चमहाव्रतविधान	गुणचन्द्र	संस्कृत
अष्टमहासमीविधान	—	"
मीनिब्रतोष्टापन	—	"
मीनिब्रतोष्टापन	—	"

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

पञ्चमेरुजयमाला	भूषरदास	हिन्दी
ऋषिमण्डलपूजा	गुणानन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
अनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा [वृहद्]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासात्चतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	"
मक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
रामोकारपैतीसीपूजा	—	"
रत्नावलिब्रतोद्यापन	—	"
जिनगुणसप्तपत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

५१८० प्रतविधान..... । पत्र सं ४ । मा ११५×४५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि
विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७१ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिमां (वै सं ४९४ १९९, २०३७) मीर हैं ।

५१८१ प्रति स० २ । पत्र सं ३ । से काल × । वै सं १५ । छ मण्डार ।

५१८२ प्रति स० ३ । पत्र सं १९ । से काल × । वै सं १७१ । छ मण्डार ।

५१८३ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । से काल × । वै सं १७८ । छ मण्डार ।

विशेष—बीबीस तीर्थहूतों के पंचमस्यासुक की तिथियां भी दी हुई हैं ।

५१८४ प्रतविधानरासो—द्वौखतरामसधी । पत्र सं ३२ । मा ११×४५ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-विधान । र काल स १७१७ भासोब सुदी १ । से काल सं १८३२ प्र भासवा सुदी १ । पूर्ण । वै सं १११ । छ मण्डार ।

५१८५ प्रतविचरण्य..... । पत्र सं ४० मा १२×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रत विधि ।

र काल × । से काल × । मपूर्ण । वै सं ८८१ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै सं १९४६) मीर हैं ।

५१८६ प्रति स० २ । पत्र सं ६ से १२ । से काल × । मपूर्ण वै सं १८२३ । छ मण्डार ।

५१८७ प्रतविचरण्य..... । पत्र सं ११ । मा० १ ×३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत विधि ।

र काल × । से काल × । मपूर्ण । वै सं १८३१ । छ मण्डार ।

५१८८ प्रतसार—आ० शिवकोटि । पत्र सं ९ । मा ११×४५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

व्रत विधान । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै सं १७१४ । छ मण्डार ।

५१८९ प्रतोष्यापनसमह..... । पत्र सं ४११ । मा ११×४५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

व्रतपूजा । र काल × । से काल स १८९७ । मपूर्ण । वै सं ४२२ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न पानों का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पत्न्यमङ्गलविधान	सुनचन्द्र	संस्कृत
प्रश्नप्रश्नमीविधान	—	—
मीनिब्रतोषापन	—	—
मीनिब्रतोषापन	—	—

५१६२ बृहद्गुरावलीशांतिमडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद्र । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दो । विषय—पूजा । २० काल स० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वै० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वै० स० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८६ । ङ भण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०^१×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासधे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।

गच्छे नदोतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥

५ ख्यातोसौविश्वमेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।

सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल " । पत्र स० १८ । आ० ११^३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा बुदी १३ । वै० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिमा (वै० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वै० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वै० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वै० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वै० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६०२ मगसिर सुदी १० । वै० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० ३५६) और है ।

त्रैपलत्रियसतोषापन	—	संस्तुत
आदित्यसतोषापन	—	"
रोहिणीसतोषापन	—	"
कर्मभूतसतोषापन	—	"

५१६२ बृहद्गुरावलीशातिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद्र । पत्र सं० ५६ । आ०

११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । छ भण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासधे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।

गच्छे नदोतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥

६ ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्यनयज्ञ चकार्षीत् ।

सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २. । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल । पत्र सं० १८ । आ० ११^३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९ प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२०० प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६०२ मगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

ବିକାଶକାରୀମାନଙ୍କ	—	ନିମ୍ନ
କର୍ମଚାରୀମାନଙ୍କ	—	"
ଫିଲଡିଂମାନଙ୍କ	—	"
କର୍ମଚାରୀମାନଙ୍କ	—	"
କର୍ମଚାରୀମାନଙ୍କ	କିମ୍ବଦନ୍ତୀ	"
କର୍ମଚାରୀମାନଙ୍କ	କାହାଣୀ	"
କର୍ମଚାରୀମାନଙ୍କ	—	"
କର୍ମଚାରୀମାନଙ୍କ	—	"

५१६२ बृहद्गुरावलीशांतिमङ्गलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद्र । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वै० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वै० स० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्णा । वै० सं० ६८६ । छ भण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासधे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।

गच्छे नदीतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥

३ ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।

सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति स० २. पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्णा । वै० स० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल " । पत्र स० १८ । आ० ११^३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा बुदी १३ । वै० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार में ५ प्रतिया (वै० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९ प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वै० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वै० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वै० स० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वै० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६०२ मंगसिर सुदी १० । वै० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्णा प्रति (वै० सं० ३५६) और है ।

वैरनक्ष्त्रापठोपासन	—	संस्कृत
साक्षिपत्रोपासन	—	"
रोहिणीप्रदोपासन	—	"
कर्मचूडोपासन	—	"
भक्तामरतोपूजा	श्री भूपाण	"
त्रिनयनहृत्नामस्तवन	सायाधर	"
दादशवतर्कमोपासन	—	"
सन्धिबिधानपूजा	—	"

३१६० प्रति सं० २। पत्र म २३६। ति कात् X। वै सं १८४। अ मप्यार।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सन्धिबिधानोपासन	—	संस्कृत
रोहिणीप्रदोपासन	—	हिन्दी
भक्तामरतोपासन	वेद्यभक्त	संस्कृत
दशमहाप्रदोपासन	मुमुक्षुसागर	"
रत्नमण्डलोपासन	—	"
पद्मस्तवोपासन	कुलचरसूरि	"
पुष्पाञ्जलिप्रदोपासन	—	"
सुकुण्डलीप्रदपूजा	—	"
पञ्चमाहात्म्यपुरीषीपूजा	श्री सुरेश्वरीति	"
प्रतिमासाधनपुरीषीप्रदोपासन	—	"
कर्मचूडपूजा	—	"
साक्षिपत्रोपासन	—	"

३१६१ बृहस्पतिविधानम्—। पत्र सं १। भा २५४। अ। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान।
२ कात् X। ति कात् X। पूर्ण। वै सं १८८७। अ मप्यार।

५१६२ वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । छ भण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०^३/_५×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासधे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।

गच्छे नदोतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मांमुनीन्द्र ॥

ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।

सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल " । पत्र स० १८ । आ० ११^३/_५×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा बुदी १३ । वे० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिमा (वे० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२०० प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० स० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६०२ मगसिर सुदी १० । वे० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

५२०६ प्रति स० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० स २०८ । अ मन्थार ।

५२०७ प्रति स० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०२ मंगलित बुध ११ । वे० स २०८ । अ मन्थार ।

५२०८ षोडशकारणस्य मन्थार—रश्मू । पत्र सं० २१ । मा० ११ X ५ इ च । भाषा—मन्थार ।

विषय—पूजा । र काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स ७५० । अ मन्थार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी मन्थार में एक प्रति (वे० सं० ८८९) भी है ।

५२०९ षोडशकारणस्य मन्थार—रश्मू । पत्र सं० १३ । मा० १३ X ५ इ च । भाषा—मन्थार । विषय—पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ मन्थार ।

५२०७ प्रति स० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० १२६ । अ मन्थार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण किया हुआ है । इसी मन्थार में एक प्रति (वे० सं० १२६) भी है ।

५२०८ षोडशकारणस्य मन्थार—रश्मू । पत्र सं० १५ । मा० १२ X ५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल X । ले० काल सं० १७६१ भाषा सं० बुध १३ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । अ मन्थार ।

विशेष—शोधों के अन्तर्गत में पं० सधाराज के भावनायें प्रतिबिम्बित हुई थीं ।

५२०९ षोडशकारणस्य मन्थार—रश्मू । पत्र सं० १ । मा० ११ X ५ इ च । भाषा—प्राकृत संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । अ मन्थार ।

५२१० प्रति स० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० ७१७ । अ मन्थार ।

५२११ षोडशकारणस्य मन्थार—रश्मू । पत्र सं० ३२ । मा० १२ X ५ इ च । भाषा—हिन्दी मन्थार ।

विषय पूजा । र काल X । ले० काल सं० १६३५ भाषा सं० बुध ५ । पूर्ण । वे० सं० १६९ । अ मन्थार ।

५२१२ षोडशकारणस्य मन्थार—रश्मू । पत्र सं० ३३ । मा० १ X ७ इ च । भाषा—मन्थार । विषय—पूजा । र काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ मन्थार ।

५२१३ षोडशकारणस्य पूजा—केशवसेन । पत्र सं० १३ । मा० १२ X ५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । र काल सं० १६१४ भाषा सं० बुध ७ । ले० काल सं० १८२३ भाषा सं० बुध १ । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे० सं० ३५) भी है ।

५२१४ प्रति स० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० सं० ३ । अ मन्थार ।

५२१५ षोडशकारणस्य पूजा—रश्मू । पत्र सं० २ । मा० ११ X ५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११८ । अ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे० सं० ६२३) भी है ।

५२१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ७५१ । ऋ भण्डार ।

५२१७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ४२४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमावाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६३ सावण बुदी ११ । वे० सं० ४२५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४२६) और है ।

५२१९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वे० सं० ७२ । ऋ भण्डार ।

५२२० षोडशकारणपूजा (वृहद्) । पत्र सं० २६ । मा० ११३ X ५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

५२२१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ४२६ । ज भण्डार ।

५२२२ षोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्ति । पत्र सं० ३७ । मा० १२ X ५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १७९९ मासोज सुदी १० । पूर्णा । वे० सं० ५०७ । अ भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २१ । मा० १२ X ५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ५१४ । अ भण्डार ।

५२२४ शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ९ । मा० ११३ X ५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० १०६७ । अ भण्डार ।

५२२५ शरदुत्सवदीपिका, मङ्गल विधान पूजा) —सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ । मा० ६ X ४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—मारम्भ— श्रीवीर शिरसा नत्वा वीरनदिमहागुरु ।

सिंहनदिह वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥

अथात्र-भारते क्षेत्रे जवूद्धीपमनोहरे ।

रम्भदेशेस्ति विख्याता मिथिलानाम्त पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ— एव महप्रभाव च दृष्ट्वा लग्नास्तथा जना ।

कतुं प्रभावनाग च ततोऽत्रैव प्रवर्त्तते ॥२३॥

तदाप्रमृत्यारम्येद प्रसिद्ध जगतीतले ।

दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहीत च वैष्णवादिकशैवकैः ॥२४॥

बसो नागपुरे मुनिवत्तरः श्रीमूससंबोधतः ।
 सूर्य श्रीवरपूज्यपाद समलः श्रीवीरर्नणाङ्गव ॥
 तन्विष्यो वर सिचनंविपुनिवस्तेनेयमाविष्कृता ।
 सोकोद्वोचनहेतवे मुनिवरः कुर्वतु श्री सग्जनाः ॥२३॥
 इति श्री शरदुत्तबक्या समप्ताः ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा भी हुई है ।

३२२६ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । से कास स १२२२ । से स ३१ । अ मन्थार ।

३२२७ शांतिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग)— । पत्र सं ३२ । पा १२३×२३

इच । मावा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २ कास × । से कास सं १६३२ फागुन सुदी १ । श्री सं० २३७ । अ मन्थार ।

बिसेव— प्रतिष्ठा में काम माने वाली सामग्री वा बर्तन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गृहका महत्त्व पूर्ण है । मन्थारमाचार्य श्रीचम्पूश्रीति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि भी गई थी । १४वें पत्र में कथन किये हुये हैं जिनकी संख्या १८ है । प्रकृति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो श्रीवराहनायनम । परिमेष्टिने नम । श्री गुरुनमः ॥ सं १६३२ वर्षे फागुन सुदी १ बुदी श्री भूर्गसंभे न श्रीपद्मनिबिदेवास्तत्पट्टे म श्रीसुमन्त्रदेवा तत्पट्टे म श्रीजिनभन्त्रदेवा तत्पट्टे न श्रीप्रसाधदेवा तत्पट्टे मन्त्रसाधार्थश्रीचर्मन्त्रदेवा तत् मन्त्रसाधार्थ जसितकीर्तिदेवा तन्विष्यमन्त्रसाधार्थ श्रीचम्पूश्रीति उपदेशात् ।

इसी मन्थार में २ प्रतिमां (से सं ३२२ ३३४) भीर है ।

३२२८ शांतिकविधान (बुद्ध)— । पत्र सं ७४ । पा १२×३३ इच । मावा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २ कास × । से कास सं १६२६ माघ सुदी ३३ । पूर्ण । से सं १७७ । अ मन्थार ।

बिसेव—यं पञ्चालाश्री ने विषय अथवा के पठनार्थ प्रतिलिपि भी की ।

३२२९ प्रति सं० २ । पत्र सं १६ । से कास × । अपूर्ण । से सं ३३८ । अ मन्थार ।

३२३० शांतिकविधि—अर्द्धदेव । पत्र सं ३१ । पा ११३×३३ इच । मावा—संस्कृत । विषय—

संस्कृत । विषय विधि विधान । २ कास × । से कास स १८६८ माघ सुदी ३ । पूर्ण । से सं १८६ । अ मन्थार ।

३२३१ शांतिकविधि— । पत्र स ३ । पा १ × ४ इच । मावा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । २ कास × । से कास × । अपूर्ण । से स १८३ । अ मन्थार ।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

५२३२ शान्तिपाठ (बृहद्) पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि

विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा ... पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्णा । वे० सं० १३६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) और है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७०५ । छ भण्डार ।

५२३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

५२३७ शांतिमंडलपूजा ... पत्र सं० ३८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७०६ । छ भण्डार ।

५२३८. शांतिपाठ ... पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त

में पढा जाने वाला पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १२२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची ... पत्र सं० ३ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १६६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७४७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाला पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । च भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाला—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६८८ । क भण्डार ।

२२४३ शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि-----। पत्र सं १। मा० १२×४३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-विधान। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १८८४। अ मन्थार।

२२४४ शासमदेवतार्चनविधान-----। पत्र सं २१ से २५। मा० ११×३३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा विधि विधान। र० काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ७७। अ मन्थार।

२२४५ शिखरविज्ञासपूजा-----। पत्र सं ७३। मा० ११×३३ ईच। माया-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ३८६। अ मन्थार।

२२४६ श्रीसखनामपूजा—वर्ममूषण। पत्र सं १। मा १०२×३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। से काल सं ११२१। पूर्ण। वै सं २१३। अ मन्थार।

२२४७ प्रति सं २। पत्र सं १। से काल सं ११३१ प्र० भाषाङ्ग सुधी १४। वै सं १२३। अ मन्थार।

२२४८ शुक्रपञ्चमीव्रतपूजा-----। पत्र सं ७। मा १२×३३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल सं १८। से काल ×। पूर्ण। वै सं ३८४। अ मन्थार।

विशेष—रचना सं विन्न प्रकार है— शब्दे रंभ ममत्तं वसु चन्द्र।

२२४९ शुक्रपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा-----। पत्र सं ५। मा ११×३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ३१७। अ मन्थार।

२२५० मुक्तज्ञानपूजा-----। पत्र सं ५। मा ११×३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। से काल सं १८९१ भाषाङ्ग सुधी १२। पूर्ण। वै सं ७२३। अ मन्थार।

२२५१ प्रति सं २। पत्र सं १। से काल ×। वै सं १८७। अ मन्थार।

२२५२ प्रति सं ३। पत्र सं १३। से काल ×। वै सं ११७। अ मन्थार।

२२५३ मुक्तज्ञानव्रतपूजा-----। पत्र सं १। मा० ११×३३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १९९। अ मन्थार।

२२५४ मुक्तज्ञानव्रतोद्यापनपूजा-----। पत्र सं ११। मा ११×३३ ईच। माया-संस्कृत। विषय पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं ७२४। अ मन्थार।

२ २५. मुक्तज्ञानव्रतोद्यापन-----। पत्र सं ७। मा० १०२×३ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। से काल सं ११२२। पूर्ण। वै सं ३६। अ मन्थार।

२२५६ भुक्तपूजा-----। पत्र सं ४। मा १२×९ ईच। माया-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। से काल सं ज्येष्ठ सुधी ३। पूर्ण। वै सं १७५। अ मन्थार।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० २ से १३ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ७०५ । क भण्डार ।

५२५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३६९ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५०) और है ।

५२५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । ज भण्डार ।

५२६० श्रुतस्कंधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इ च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५२२ । अ भण्डार ।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था मे किया था ।

५२६१ श्रुतस्कंधपूजा ' ' ' । पत्र सं० ५ । आ० ८३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७०२ । अ भण्डार ।

५२६२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २९२ । ख भण्डार ।

५२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८८ । ज भण्डार ।

५२६४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४९० । च भण्डार ।

५२६५ श्रुतस्कंधपूजाकथा ' ' ' । पत्र सं० २८ । आ० १२३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा तथा कथा । २० काल × । ले० काल वीर सं० २४३४ । पूर्णा । वे० सं० ७२८ । छ भण्डार ।

विशेष—चावली (आगरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर सं० २४५७ को पन्नालालजी गोधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर मे लिखवाया । जौहरीलाल फिरोजपुर जि० गुडगावा ।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है ।

५२६६ सकलीकरणविधि ' ' ' । पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ८०, ५७१, ९६१) और हैं ।

५२६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७२३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७२४) और है ।

५२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३९८ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।

५२६६ सकलीकरण— । पत्र सं० २१। मा० ११×१ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—विभि

विधान। र काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वै सं १७१। अ मन्थार।

५२७० प्रति सं० २। पत्र सं० ३। से काल ×। वै सं ७५७। अ मन्थार।

५२७१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। से काल ×। वै सं० १२२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ११९) भी है।

५२७२ प्रति सं० ४। पत्र सं ७। से काल ×। वै सं ११४। अ मन्थार।

५२७३ प्रति सं० ५। पत्र सं ३। से काल ×। वै सं ४२४। अ मन्थार।

विशेष—हासिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है। इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ४४९) भी है।

५२७४ सधाराविधि— । पत्र सं० १। मा १ ×४२ इ च। भाषा—प्रकृत, संस्कृत। विषय—

विधान। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १२१६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं १२३१) भी है।

५२७५ सप्तपदी— । पत्र सं २ से १६। मा ७२×५ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १६६६। अ मन्थार।

५२७६ सप्तपरमस्थानपूजा— । पत्र सं ३। मा १ २×५ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १६६। अ मन्थार।

५२७७ प्रति सं० २। पत्र सं १२। से काल ×। वै सं ७६२। अ मन्थार।

५२७८ सप्तर्षिपूजा—विशुदास। पत्र सं ७। मा ८×४२ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं २२२। अ मन्थार।

५२७९ सप्तर्षिपूजा—सहमीसेन। पत्र सं ६। मा ११×५ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। वै सं १२७। अ मन्थार।

५२८० प्रति सं० २। पत्र सं ८। से काल सं १८२ कार्तिक सुदी २। वै सं ४१। अ

मन्थार।

५२८१ प्रति सं० ३। पत्र सं ७। से काल ×। वै सं २१९। अ मन्थार।

विशेष—मदुराक नुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित बाँदमपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

५२८२ सप्तर्षिपूजा—विश्वमूपस्य। पत्र सं १६। मा १ २×५ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल सं १९१७। पूर्ण। वै सं ३१। अ मन्थार।

५२८३. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल मं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० स० १२७ । छ
भण्डार ।

५२८४. सप्तषिपूजा . . . । पत्र सं० १३ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६१ । अ भण्डार ।

५२८५ समवशरणपूजा—ललितकीर्त्ति । पत्र स० ४७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४५१ । अ भण्डार ।

विशेष—खुसालजी ने जयपुर नगर मे महात्मा शम्भुराम मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६ समवशरणपूजा (वृहद्)—रूपचन्द्र । पत्र स० ६४ । आ० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । २० काल स० १५६२ । ले० काल स० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेहगनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षे च मामे ॥

५२८७ प्रति स० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० स० २०६ । ख
भण्डार ।

विशेष—प० पन्नालालजी जोबनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

५२८९ समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति । पत्र स० २८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८०७ वैशाख सुदी १ । वे० स० ३८४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक—

व्याजस्तुत्यार्चा गुणवीतराग ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमान ।

श्रीसोमकीर्त्तिविकासमान रत्नेषरत्नाकरचार्ककीर्त्ति ॥

जयपुर मे सदानन्द सौगारी के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४०५) और है ।

५२९० समवशरणपूजा । पत्र स० ७ । आ० ११×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७७४ । छ भण्डार ।

५२९१. सम्भेदशिखरपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १० । आ० ११३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २०११ । अ भण्डार ।

विशेष—गंगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५०६) और है ।

५२९२. प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १६२१ मगसिर बुदी ११ । वे० सं० २१० । ख
भण्डार ।

५०६३ प्रति स० ३। पत्र सं ७। ले काल स० १८६३ वैशाख सुदी ३। वै सं ४३६। अ
मन्थार।

५०६४ सम्मोदशिखरपूजा—प० अनाहरलाख। पत्र सं १२। मा० १२×८ इंच। मापा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७४८। अ मन्थार।

५२६५ प्रति स० २। पत्र सं १९। र काल सं १८६१। ले काल स १९१२। वै सं ११९।
अ मन्थार।

५२६६ प्रति स० ३। पत्र सं १८। ले काल सं १९५२ मासोत्र सुदी १। वै सं २४। अ
मन्थार।

५२६७ सम्मोदशिखरपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं ८। मा ११२×२ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। ले काल स १९५५ भावण सुदी ६। पूर्ण। वै सं ३६३। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ११२३) भी है।

५२६८ प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल सं १९५८ मास सुदी १४। वै सं ७१। अ
मन्थार।

५२६९ प्रति स० ३। पत्र सं १३। ले काल ×। वै सं ७९३। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ७९४) भी है।

५३०० प्रति स० ४। पत्र सं ७। ले काल ×। वै सं २२२। अ मन्थार।

५३०१ सम्मोदशिखरपूजा—भागवत्। पत्र सं १। मा १३६×४ इंच। मापा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल सं १९२९। ले काल स १९३। पूर्ण। वै सं ७६७। अ मन्थार।

विशेष—पूजा के पश्चात् पर भी किये हुये हैं।

५३०२ प्रति स० २। पत्र सं ८। ले काल ×। वै सं १४७। अ मन्थार।

विशेष—सिद्धोत्था की स्तुति भी है।

५३०३ सम्मोदशिखरपूजा—म० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं २१। मा ११×२ इंच। मापा हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल ×। ले काल स १९१२। पूर्ण। वै सं ३९१। अ मन्थार।

विशेष—१ वै पत्र से मागे पद्यमेक पूजा की हुई है।

५३०४ सम्मोदशिखरपूजा—। पत्र सं ३। मा ११×४ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—पूजा।

र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १२३१। अ मन्थार।

५३०५ प्रति स० २। पत्र सं २। मा १×२ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल ×।

ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७९१। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वै सं ७९२) भी है।

५३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा " । पत्र सं० ५ । आ० ६×३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

५३०८ सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ६८६, १३११, ११०८, -१०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा " " । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११ सरस्वतीपूजा—रुधी पन्नालाल । पत्र सं० १७ । आ० १२×८ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । २० काल सं० १६२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

५३१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द्र बख्शी । पत्र सं० ८ से १७ । आ० ११×५ इ च । भाषा-

हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ७७१ । अ भण्डार ।

५३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ८०४ । अ भण्डार ।

५३१४ सरस्वतीपूजा—पं० धुधजनजी । पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपूजा । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा " । पत्र सं० १११ । आ० ११३×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१७ सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं ६६ । भा १२३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल सं १०११ प्रायाण्ड बुदी २ । पूर्ण । वे सं ५३६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं ५३९) भी है ।

५३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं ८२ । से काल सं ११२२ । वे सं० २४१ । अ मण्डार ।

५३१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं १२२ । से काल सं १११ । वे सं० ८१ । अ मण्डार ।

५३२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं ६१ । से काल × । वे० सं ६३ । अ मण्डार ।

५३२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं ६४ । से काल × । वे सं ६६ । अ मण्डार ।

विशेष—भाचार्य हर्षकृति ने जिहानाबाद में प्रतिलिपि कराई थी ।

५३२२ सहस्रगुणितपूजा— । पत्र सं १३ । भा १ ×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं ११७ । अ मण्डार ।

५३२३. प्रति सं० २ । पत्र सं ८८ । से काल × । अपूर्ण । वे सं० ३४ । अ मण्डार ।

५३२४ सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं ६१ । भा १ ३/४×३/४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वे सं ३८३ । अ मण्डार ।

५३२५. प्रति सं० २ । पत्र सं ३१ से ६६ । से काल सं १८८४ ज्येष्ठ बुदी १ । अपूर्ण । वे सं

३८३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ अपूर्ण प्रतिमां (वे सं ३८४ ३८६) भी हैं ।

५३२६ सहस्रनामपूजा— । पत्र सं १३६ से १३८ । भा १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ३८२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे सं ३८७) भी है ।

५३२७ सहस्रनामपूजा—चैनसुख । पत्र सं २२ । भा १२३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं २२१ । अ मण्डार ।

५३२८. सहस्रनामपूजा— । पत्र सं १० । भा ११×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ७७ । अ मण्डार ।

५३२९. सारस्वतपद्मपूजा— । पत्र सं ४ । भा १ ३/४×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वे सं ५७० । अ मण्डार ।

५३३०. प्रति सं० २ । पत्र सं १ । से काल × । वे० सं १२२ । अ मण्डार ।

५३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ६३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६१० । ट भण्डार ।

५३३२. सिद्धक्षेत्रपूजा (वृहद् —स्वरूपचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल सं० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—अन्त मे मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे सुगनचन्द्र गगवाल ने चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

५३३३ सिद्धक्षेत्रपूजा... । पत्र सं० १३ । आ० १३×८३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वै० सं० २०४ । छ भण्डार ।

५३३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वै० सं० २६४ । ज भण्डार ।

५३३५. सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा . । पत्र सं० १२६ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—अतिशयक्षेत्र पूजा भी है ।

५३३६ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० भानुकीर्त्ति । पत्र सं० १४३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ । वै० सं० १७८ । ख भण्डार ।

५३३७. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वै० सं० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० ७५१) और है ।

५३३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वै० सं० ८४५ । छ भण्डार ।

५३३९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वै० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १६६६ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द्र अजमेरा ने सशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० २१२) और ।

५३४० सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३० से ६० । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८४४ । छ भण्डार ।

५३४१ सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६२ । क भण्डार ।

५३४२ सिद्धचक्रपूजा (पूद्द)। पत्र सं ३४। मा १२×३३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं १८७। क्र मन्डार।

५३४३ सिद्धचक्रपूजा। पत्र सं ३। मा ११×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ५२१। क्र मन्डार।

५३४४ प्रति सं० २। पत्र सं ३। से काल ×। के सं ४१। क्र मन्डार।

५३४५ प्रति सं० ३। पत्र सं १७। से काल सं १८१। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

क्र मन्डार।

५३४६ सिद्धचक्रपूजा (पूद्द)—सतलास। पत्र सं १०८। मा १२×८ इंच। भाषा—हिन्दी।

विषय—पूजा। र काल ×। से काल सं ११८१। पूर्ण। के सं ७४१। क्र मन्डार।

विशेष—ईश्वरमातृ कादंबाई ने प्रतिनिधि की थी।

५३४७ सिद्धचक्रपूजा। पत्र सं ११३। मा १२×३३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं ८११। क्र मन्डार।

५३४८ सिद्धपूजा—रत्नभूषण। पत्र सं २। मा १३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

२० काल ×। से काल सं १७१। पूर्ण। के सं २६। क्र मन्डार।

विशेष—मोरङ्गनेर के वास्तुमन्त्र में संयामपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

५३४९ प्रति सं० २। पत्र सं ३। मा ८३×९ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र काल ×।

से काल ×। पूर्ण। के सं ७११। क्र मन्डार।

५३५० सिद्धपूजा—महा प० आशाधर। पत्र सं २। मा ११३×९ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल ×। से काल सं १८२२। पूर्ण। के सं ७११। क्र मन्डार।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (के सं ७११) भीर है।

५३५१ प्रति सं० २। पत्र सं ३। से काल सं १८२३ मंसिर सुदी ८। के सं २११। क्र

मन्डार।

विशेष—पूजा के प्राण्य में स्थापना नहीं है किन्तु प्राण्य में ही बल बहाने का मन्त्र है।

५३५२ सिद्धपूजा। पत्र सं ४। मा १३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। से काल ×। पूर्ण। के सं १९१। क्र मन्डार।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (के सं १९२४) भीर है।

५३५३ सिद्धपूजा ... । पत्र सं० ४४ । आ० ६५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । च भण्डार ।

५३५४ सीमंधरस्वामीपूजा ... । पत्र सं० ७ । आ० ८५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५८ । छ भण्डार ।

५३५५ सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ८५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६ सुखसंपत्तिव्रतपूजा—अखयराम । पत्र सं० ६ । आ० १२५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । २० काल सं० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७ सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन ... । पत्र सं० १३ । आ० ८५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) और हैं ।

५३५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । छ भण्डार ।

५३६० प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ आसोज बुदी ७ । वे० सं० २०३४ । ट भण्डार ।

५३६१ सुपार्श्वनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १२५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२ सूतकनिर्णय ... । पत्र सं० २१ । आ० ८५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । म भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी हैं ।

५३६३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । म भण्डार ।

५३६४ सूतकवर्णन ... । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । अ भण्डार ।

५३६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४५ । वे० सं० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०३२) और है ।

५३६६ सोनागिरपूजा—आशा । पत्र सं० ८ । आ० ५३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३८ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । छ भण्डार ।

विशेष—यं गगावर सोनागिरि वासी मे प्रतिमिपि क्षी भी ।

५३६७ सोनागिरिपूजा—पत्र स ८ । घा ८३×४३ इंच । माया—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ८८३ । अ मन्डार ।

५३६८ सोनाहकारणपूजा—द्यानवराय । पत्र स २ । घा ८×३३ इंच । माया—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १३२९ । अ मन्डार ।

५३६९ प्रति स० २ । पत्र सं २ । ले काल स १६३७ । के सं २३ । अ मन्डार ।

५३७० प्रति स० ३ । पत्र स ५ । ले काल × । के सं ६३ । अ मन्डार ।

५३७१ प्रति स० ४ । पत्र सं ५ । ले काल × । के सं ३२ । अ मन्डार ।

विषय—इसके प्रतिरिक्त पद्ममेव माया तथा सोनाहकारण संस्कृत पूजायें भी हैं ।

इसी मन्डार में एक प्रति (के सं १६४) भी है ।

५३७२ सोनाहकारणपूजा—पत्र सं १४ । घा ८×३ इंच । माया—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ७३२ । अ मन्डार ।

५३७३ सोनाहकारणमहलविधान—डेकनम् । पत्र सं ४८ । घा १९×८ इंच । माया—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ८८७ । अ मन्डार ।

५३७४ प्रति स० २ । पत्र सं १९ । ले काल × । के सं ७२४ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (के सं ७२५) भी है ।

५३७५ प्रति स० ३ । पत्र स ४३ । ले काल × । के सं २६ । अ मन्डार ।

५३७६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४३ । ले काल × । के सं २६४ । अ मन्डार ।

५३७७ सौख्यप्रदायापनपूजा—अक्षयराज । पत्र स १९ । घा ११×४३ इंच । माया—संस्कृत ।

विषय पूजा । १० काल सं १८२ । ले काल × । पूर्ण । के सं ३८६ । अ मन्डार ।

५३७८ प्रति स० २ । पत्र सं १३ । ले काल सं १८६३ वीं वुरी ६ । के सं ४२७ । अ

मन्डार ।

५३७९ स्नपनविधान—पत्र सं ८ । घा १ × ४ इंच । माया—हिन्दी । विषय—विधान ।

१० काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ४२९ । अ मन्डार ।

५३८० स्नपनविधि (बुहदु)—पत्र सं २३ । घा १ × ३ इंच । माया—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले काल × । के सं ३७ । अ मन्डार ।

विशेष—अंतिम २ पृष्ठों में त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है ।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाठों की, जयपुर)

५३८१ गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । आ० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय-संग्रह ।

१० काल म० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६ । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१. भट्टाभिषेक	×	सस्कृत	पूर्ण
२. रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३. पञ्चमेरूपूजा	×	"	"
४. अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	"
५. षोडशकारणपूजा	मुमतिमागर	सस्कृत	"
६. दशलक्षणउद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यधृतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिमुद्रतच्छन्द	भ० प्रभाचन्द्र	सस्कृत हिन्दी	"

मुनिमुद्रत छन्द लिख्यते—

पृष्ठ

१२०-१२४

पुष्पापुष्पनिर्मुक्तं गुणनिधि मुद्रप्रत मुद्रतं

स्याद्वादाभृततपिताखिलजनं दुःखाग्निपाराधर ।

शोषारणधनेजयं धनकरं प्रच्यस्तकर्मादिगं

यदे तद्गुणसिद्धये त्रिभुवनं मोमान्मजं सौम्यदं ॥१॥

जनधिममगभौरं प्राप्सज्जात्तितीर

प्रबनमदनवीर पचधामुक्तचौर.

गतिविषयविनार मत्ततप्रवार

म त्रयति गुणधार मुद्रतो निष्कार ॥२॥

प्राया—

त्रिसुवनजनहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवत्सलम्प्याः ।
 कन्दर्पवर्षहर्ता सुव्रतदेवो जयति गुणाधर्ता ॥१॥
 वो बन्धमीसिद्धमत्तमुद्दमहाएलरक्तजबमिक्कर ।
 प्रतिपामित्तवरचरणं कैवलयीषे मञ्जितमुभगं ॥२॥
 तं सुमिसुव्रतनाथ मत्वा कल्पयामि तस्य धन्वीह ।
 भृशन्तु सकलभम्प्याः जितधमपरा मीनसंगुक्ता ॥३॥

मञ्जितसुव—

प्रथम कल्पयन्त कर्तुं ममयोहन ममय सुद्वेष बने पति सोहन ।
 राजभेद नयति भर सुम्बर सुमित्र भूप तिहा जितो पुरधर ॥१॥
 अत्रमुखीमृगजपनी बासा तस्य राणी सोमा सुविद्याता ।
 पश्चिमरमणी अलिङ्गनबासा स्वप्न सोम रेकं पुणमावा ॥२॥
 इन्द्रादे तं पति सु विचक्षण अग्रज कुमारि सेनं सुमन्मरण ।
 एतन्नृष्टि करं जनक मनोहर एम क्षमास्त गया सुम सुबकर ॥३॥
 हरिचर्मा भूपति भुवि मगस प्राकृत स्वर्न ह्यो भावस्थल ।
 धावणवदि बीजं पुणधारी जगमी वर्म रही सुबकारी ॥४॥

सुवङ्गप्रपति—

वरति मनेसे परं गर्भमारं न देवालय मममात्यम्वार ।
 तथा भावता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रासुरोदायनामा न सुक्ता सुभगा ॥१॥
 पुरं विपरित्याजितविषसमा कर्तुं प्राप्त घोमित्र कथ यथा या ।
 स्थित वर्मबासे जिन निककतकं प्रसुम्भाधरादे गताहृत्स्वनात् ॥२॥
 कुमार्यो हि सेनां प्रकुर्वन्ति नाह किमयोऽजसदीपसुहृत्स्वनात् ।
 नरं पत्रपुत्रं वदानसुपुत्र्यं मकीलीं सितसुवर्कं कुर्वं सुपुत्र्यं ॥३॥
 सुरप्रैरवमार्त्तर्षसत्पवित्र लसदरत्नवृष्टि सुम पुष्पयानं ।
 जिनं वर्मबासा विनिर्मुक्तदेहं परं स्तौमि सीमाद्वयं सौख्यगेहं ॥४॥

मञ्जितसुव—

भीजिनवर प्रवत्तप । महि त्रिसुवन विङ्ग ह्यो गुणता महि ।
 बन्ध तिहं संख परहारक सुपति वाहता करं जय जवरक ॥१॥
 बीषाक बरी वसमी जिन जायो सुरनरवृ ब पैरो तव धामी ।
 देदारण भाव्य पुरंवर, सजीसहित सोहं गुणमीधर ॥२॥

मोतीरेणुछन्द—

तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख आणद भरी ।
जस कोटी सतावीस छे अमरी, करे गीत नृत्य वलीदे भमरी ॥३॥
गज काने सोहे सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सहू भरी ।
आखण्डलअंकुशवेसेधरी, उछवमगल गया जिन नयरी ॥
राजगरो मलया इन्द्रसहू, वाजे वाजित्र सुरंग बहु ।
शक्रे कहुं जिनवर लावे सही, इन्द्राणी तव घर मभे गई ॥
जिन बालक दीठो निज नयरो, इन्द्राणी बोले वर वयरो ।
माया मेसि सुतहि एक कीयो, जिनवर युगते जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आवे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छन्दों के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, बभ्राण छन्दों का और प्रयोग हुआ है । अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बीस धनुष जस देह जहे जिन कछप लाछन ।
थीस सहस्र वर वर्ष आयु सज्जन मन रञ्जन ॥
हरवशी गुणवीमल, भक्त दारिद्र विहडन ।
मनवाछितदातार, नयरवालोडसु मडन ॥
श्री मूलसध सधद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टाभरण ।
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर वहे, मुनिसुन्नतमगलकरण ॥

इति मुनिसुन्नत छन्द सम्पूर्णोऽय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

संवत् १८१८ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-
गणे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रवीरि तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री
मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे
भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजेनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य
ब्रह्मनेमसागर पठनार्थं । पुण्यार्थं पुस्तक लिखायित श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्ता	भाषा	विशेष
६ मातापद्मावतीसुन्दर	महीचन्द्र मट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२१-२८
१ पारवतापूजा	×	संस्कृत	
११ कर्मवहनपूजा	बाबिचन्द्र	॥	
१० घनस्तवत्रयास	ब्रह्मचिन्मयास	हिन्दी	
१३ अष्टक पूजा]	नेमिबल	संस्कृत	१ रावण की प्ररक्षा में
१३ अष्टक	×	हिन्दी	बलि पूर्वक भी गई
१५ अन्तरिक्ष पारवताप अष्टक	×	संस्कृत	
१६ मिथ्यपूजा	×	॥	

विषय—पत्र न १६८ पर मिथ्य सेक लिखा हुआ है—

मट्टारक भी १ ८ थी विद्यालक्ष्मी से १८२१ ता वर्ष सन्के १९२६ प्रवर्त्तमाने नातिक्रमासे दृष्टपणे प्रतिपदादिभ्यः रात्रि पहर पाठनौह बेवनाक बना खेयी ।

५३=२ गुटका स० ७ । पत्र न ६३ । भा ८२×५३ इ ब । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । ८ कात् म १८२ । ले कास म १८३१ । पूर्ण । बसा—सामान्य ।

विशेष—इस अष्टक में बलतराम साह इत मिथ्यात्मक लक्ष्मण नाटक है । यह प्रति स्वयं मैकव द्वारा लिखी हुई है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यालक्ष्मण नाटक सम्पूर्ण । लिखत बलतराम साह । म १८३५ ।

५३=३ गुटका स० ३ । पत्र म ७३ । भा ४४×४ इ ब । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—× । ले कात् म १६ ४ । पूण । बसा—सामान्य ।

विशेष—छोड़कराम कीरीका में लना था ।

१ रामायणविधि	×	हिन्दी	१-३
२ परमज्योति	बनारसीराम	॥	३-१२
३ रामचमपाठविधि	×	संस्कृत	१३-४३
४ धनरायकाण्ड	×	हिन्दी	४३-४४
५ मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५-४६
६ पूजा	पद्यनि	॥	५-२४

७ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	”	५५-५६
८. पूजा व जयमाल	×	”	५६-७५

५३८४ गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । आ० ३×२ इच्छ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
दशा—सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, पट्लेश्यावर्णन, जैनसख्यामन्त्र आदि-
पाठों का संग्रह है ।

५३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ८×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—भट्टहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ । भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

५३८७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । आ० ६×७ इच्छ । ले० काल १८५८ आसोज सुदी ४
शनिवार । पूर्ण ।

१. नाटकसमयसार	वनारसीदास	हिन्दी	१-६७
२. पद—होजी म्हारो कथ			
चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	”	६७
३. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	”	६८-११६

५३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इच्छ । ले० काल सं० १७६८ । दशा—सामान्य ।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३५ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । आ० ६×५ इच्छ । ले० काल सं० १९५४ श्रावण सुदी
१३ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. पद—जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दौलतराम	”	
३. आलोचनापाठ	जौहरीलाल	”	
४. दशलक्षणपूजा	मूधरदास	”	

५. पञ्चमेद एव नंदीश्वरपूजा	छानतराम	हिन्दी	२-१५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७ परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	"	१
८ सखीस्तोत्र	छानतराम	"	६
९ निर्वाणनाथभाषा	नगवतीदास	"	२-६
१० सत्पार्थसूत्र	जमास्वामी	"	
११ देवसासनपुस्तक	×	हिन्दी	
१२ चौबीस तीर्थक्षेत्रों की पूजा	×	"	१२३ तक

५३६१ गुटका सं० ११ । पत्र ४० २२२ । प्रा १ ६/९ इत्य । भाषा—हिन्दी । से काल ४०

१०४६ ।

विषय—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नों का उत्तर है]	×	हिन्दी मद्य	१ १५
२ कर्मचूरप्रवचन	मुनि सक्कभीति	"	१२-१५

मद्य कर्म निरूपणे—

बोहा—

कर्मचूर प्रवचन, नीलबारी तंतसार ।

नरनारि मद्य संबन्ध धरे, उतर चौबसी मु पार ॥

कीर्ती कुनौ कुण प्रारंभ्यो सक्कभीति नाम,

कर्म सद्य श्रीशो, पुणी कोसंबी बसि नाम ॥

नमणी गुरु निरर्षभ मे सारव बसगुण पुरे ।

कहो बरत कर्म उदयु करनसेण कर्मचुरे ॥

मालाकर्ण बर्न साता बैदनी मोह संबराई ।

मरुई भीतने बेठि होसी कहाहु कर बकस मुहारी ॥

नाम कर्म पांचमीय कुणो मसु धेरो ।

सोच नीच गति पोहो जाई, मरुटाई मय सेरो ॥

चितामणि मुचित प्रबिनाजी कर्मसेण पुण्यवाई ॥१॥

शुद्धा-संग्रह]

दोहा—

एक कर्म को वेदना, भुजै है सब लोइ ।
नरनारी करि उधरे, चरण गुणसस्थान सजोई ॥१॥

अन्तिमपाठ— कवित्त—

सकलकीर्ति मुनि आप सुनत मिटे संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर पद पाइये ॥
जूनी पोथी भई अक्षर दीसै नही फेर उतारी बध छुद कवित्त वेली बनाई कगाईये ॥
चंग नेरी चाटसू केते मट्टारक भये साधा पार अडसठि जेहि कर्मचूर बरत कह्यो है वराई ध्याइये ॥
सवत् १७४६ सोमवार ७ करकौबु कर्मचूर व्रत वैठगौ अमर पद चुरी सीर सीधातम जाइये ॥

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है । लोपि भी विकृत है ।

२. ऋषिमण्डलमन्त्र	×	संस्कृत	ले० काल १७३६ १७-१६
४. जितामणि पार्वनाचस्तोत्र	×	”	मयूरगी २०
५. अजना की राय	धर्मभूषण	हिन्दी	२१-३४

प्रारम्भ—

पहिली रे अर्हंत पाय नमै ।

हरे भव दुख भजन त्व भगवंत कर्म कामातना का पसी ।

पाप ना प्रभव अति सी अत ती रास भयो इति अजना

तै ती नयम माधि न गई हवर लीक ती सती न सरोमणि बदीये ॥१॥

धर्म विधाधर उवती मय, नामै तीन वनधि सपजे ।

भार गन्ता ही भवदुख जाय, मनो न सरोमणि बंदये ॥२॥

ब्राह्मी नै मुंबरी बंदये, राजा ही रत्न तरौ घर ह्यै ।

बात पगो तव वन गई पाप ना भोगन बदीय जे हनी ॥ गनी न ... ३ ॥

केप मजातति नै अनादि अजना नो नदातसा ।

गदरे न कौमै सीयात पदगार तो ॥ गनी न ... ४ ॥

पदमे विनाय दुकारिमा, इति पाप गुनारी वगो नै सारे ।

गदर नै गनी करि, अरिका काय मुनि तव पाप ।

तारी नै अजना बदीय विने मार हनी नै नै धरणी ब्रह्मता ॥ ... ५ ॥

प्रतिमपाठ—

बस विद्यावरे कपनि मात नामे नबनिधि पावसो ।
 मान करता हो भव हुस जायतो साठी न सरोमणि बंदीये ॥ ५८ ॥
 इस भावै बर्मगुण रास रत्नमास पु षो रवि रास ।
 सर्व प बमिनि मंगल बयो कहे ता रास अयवै रस विनास ॥
 हास भवन केटी इस भरो कठ विना राग किम होई ।
 बुधि विना ज्ञान नबिसीई, गुह विना मारम कीम पानी सी ।
 दीपक विना मंदर अमकार देवमति मान विना सब द्वार दो ॥५९॥
 रस विना स्वाद न अयवै तिम तिम अति बर्मे देव हुस पसाव ।
 जिमा विन सीस करे कुस हाणि निर्मल मान राखो सवा ।
 केवम कलक मानि कुल बाम कुमति विनास निर्मल मानसू ।
 ते समझो सबही नरनादि, महुँत विना कुर्मन सरावक भवतार ।
 बुहि समता भावसू स्योपुरवास, एइ कवी सब मंगल करी॥
 इति श्री प्रबन्धारास सती सु बटी हनुमंत प्रसादात् संपुरस ॥

स्वस्ति श्री मूकंदेवै सरस्वतीगण्डे बसास्कारमणे श्रीगुरुकुण्डाचार्यात्म्ये मद्भारक श्रीजपत्कीर्ति वत्सु म
 धीवेनेत्रकीर्ति वत्सु म श्रीमहेन्द्रकीर्ति वत्सु म श्रीसेनेत्रकीर्ति वत्सोपवेश गुणकीर्तिना इत्यादि वत्सु म्भ्ये वंदित
 कुस्वस्ति सिद्धादि बोराव भवरे सुवाने श्रीमहावीरवैद्यात्म्ये समुक्त भावके सर्व बवेरवाल छाठ बुधिति समपाठ एव
 श्रीगुणवनाथ याथा निमित्त गहन उपवेश मासोत्तममासे शुभे शुद्धपक्षे मासोज बधी ३ बीतवार सवत् १८२ कातिबद्धने
 १९७९ सुममस्तु ।

१	नृवणनिधि	×	संस्कृत	से काल १८२	मासोज बधी ३
७	सिमासीसपुण	×	हिन्दी		
८		×	"	१९	से पर बीबीसवें तीर्थद्वारके दिन
९	बीबीस तीर्थद्वार पटिपम	×	हिन्दी		१९-३

विशेष—पत्र ४ के पर भी एक बिज है स १८२ में वं बुधालचन्द्र से बीराठ में प्रतिनिधि की की ।

१	भविष्यवतपद्ममीकवा	ब	रायमल	हिन्दी	४९-८९
	रचनाकाल स १९११	१	पर रेखाबिज से काल सं १८२१	बोराव (बोराव) में बुधालचन्द्र	
				के प्रतिनिधि की की । पत्र ४२ पर तीर्थद्वारों के ३ बिज है ।	

गुटका-सग्रह]

११ हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दा	८३-१०६
१२ बीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्ति	"	११०
१३ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदाम	"	१११
१४ सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५ अभिषेकपाठ	×	"	११२
१६ रविमृतकथा	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७. चिन्तामणिलग्न	×	संस्कृत	ले० काल १८२१ १२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
			२० काल १६२८ ले० काल १८११
१९. श्रुतपूजा	×	संस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	घनञ्जय	"	१५३-१५६
२१ सिन्दूरप्रकरण	वनारमीदाम	हिन्दी	१५७-१६६
२२ पूजासग्रह	×	"	१६७-१७२
२३ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१८४-२१७
२५ पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द्र	"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों ओर मुन्दर बेलें हैं ।

५२६२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०६ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है ।

१. यज्ञ की सामग्री का व्यौरा × हिन्दी १

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया में प्र० देवाराम ने ताकी सामा आई सख्या १७६७ माह बुदी पूर्णिमा-पुरानी पोथी में से उतारी । पोथी जीरण होगई तब उतरी । सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है ।

२ यज्ञमहिमा × हिन्दी २

विशेष—मौजे सिमरिया में माह बुदी १५ सं० १७६७ में यज्ञ किया उसका परिचय है । सिमरिया में चौहान वंश के राजा श्रीराव थे । मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे । यज्ञाचार्य मोरेना के प० टेकचन्द्र थे । यह यज्ञ सात दिन तक चला था ।

प्रतिमपाठ—

नस विद्याधरे वपनि भाठ नामे नवमिधि पावसो ।
 माव करता हो भव कुस भावतो साठी न सरोमण् बंदीये ॥ १८ ॥
 हम गावे धर्मसूयण रास रत्नमान्नु मु षो रवि रास ।
 सर्व पंचमिति भंसस बोधो कहे ता रास ऊपने रस विनास ॥
 बाल भवन कैरी हम भणे कठ बिना राम क्रिम हौरि ।
 बुधि बिना ज्ञान नबिसोई गुन बिना मारय धीम पत्नी सी ।
 बीपक बिना मंदर भयकार, देवमति भाव बिना सब द्वार तो ॥१९॥
 रस बिना स्वाह न ऊपने तिम तिम भति बसै देव गुरु पसाव ।
 विना बिन सीस करै कुस हृग्रिण निर्मस भाव रासो सबा ।
 केतन कसक धानि कुस भास कुमति बिनास निर्मस मात्रपू ।
 ते समझो सबही नरनारि महंत बिना दुर्भस सरावक भवतार ।
 बुद्धि समजा मात्रसु त्योपुरवास, एह कवी सब भंसस करी॥
 इति श्री वंजनारास सती सु बरी हनुमंत प्रसावाद् संपुरण ॥

स्वस्ति श्री गुरुसंज्ञे चरस्वतीगण्डे बसवतारण्ये श्रीकुरुकुन्दवापान्त्यये भृष्टारक भीमवकीर्ति तस्मै न
 श्रीदेवकीर्ति तस्मै न श्रीमेन्द्रकीर्ति तस्मै न श्रीमेन्द्रकीर्ति तस्मीपदेश गुणकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंक्ति
 कुस्वामि सिद्धामि चोरान् नगरे सुपाने श्रीमहावीरवैत्यास्ये प्रमुक भावके सर्व कबेरवास ज्ञात बुधिति समपाठ एह
 श्रीबुपममात्र मात्रा निमित्त भवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुभसमे प्राप्तोत्र बरी ३ कीर्तनार सवद् १८२ धासिवाहने
 १९७६ सुभमस्तु ।

१. नवमिधि	×	संस्कृत के काल १८२ प्राप्तोत्र बरी ३
७. क्षिप्रतीचक्रसु	×	हिन्दी
८.	×	" १९वें पर श्रीवीरसर्वो वीर्यकुरोंके दिन
९. श्रीवीरस वीर्यकुर परिचय	×	हिन्दी १९-३

विशेष—पत्र ४ वें पर भी एक विच है स १८२ में प बुवासचन्द्र के चेरळ में प्रतिनिति की थी ।

१. मदिप्यस्तपद्धमीकवा	न रायमह	हिन्दी	४१-८१
-----------------------	---------	--------	-------

एवमात्सव स १९३३ छठ ३ पर रखाचित्र के काल सं १८२१ चोरान् (चोपत्र) में बुवालचन्द्र
 में प्रतिनिति थी थी । पत्र ८२ पर वीर्यकुरों के ३ विच है ।

सुभ आसन दिढ जोग ध्यान, बद्धमान भयो केवल ज्ञान ।
समोसरण रचना अति वनी, परम धरम महिमा अति तरणी ॥४॥

अन्तिमभाग—

चल्यो नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ ।
समोसरणय पूरण मयौ, सुनत पढित पातिग गलि गयौ ॥६५॥

दोहरा—

सौरह सै अठसठि समै, माघ दमै सित पक्ष ।
गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनंदि पद सिक्ष ॥६६॥
सूरदेस हथि कतपुर, राजा वक्रम साहि ।
गुलालब्रह्म जिन धर्मु जय, उपमा दीजे काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत सपूर्णा ॥

६ नेमिजी को मगल

जगतभूषण के शिष्य
विश्वभूषण

हिन्दी

१६-१७

रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८

।।।भाग—

प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ ।
सस्वती करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ॥
सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति वनी ।
रची इन्द्र नै आइ सुरनि मनि बहुकनी ॥
बहु कनीय मदिर चैत्य खीयो, देखि सुरनर हरषीयो ।
समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयो ॥
प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप अमरो ऊढसा ।
राति सुदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ॥१॥

अन्तिम भाग—

रुवत् सौलह सै अठानूवा जाणायी ।
सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मानियौ ॥
गाऊ सिकदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।
श्रावण क्रीया सुजान धर्म्म सौ नेहरे ॥
धरे धर्म्म सौ नेहु अति ही देही सबको दान जू ।
स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पढित मान जू ॥

३ कर्मविपाक	×	संस्कृत	१-११
विषेय—इह्या नारक सवाय म से मिया गया है । तीन प्राम्पाय हैं ।			
४ श्रीशिवर वा समबसरण	×	हिन्दी १९९७ कार्तिक सुदी	१२-१४

श्रीशिवर की समोसरण—प्रादिभाग—

पुर गणपति मग ध्याऊँ चित करन सरन त्याग ।
 मति मांनि सैठ सैठी मुनि मांनि सैहि जैठी ॥१॥
 श्रीशिवर गुण भाऊँ कर धाम सगु (र) पारुँ ।
 चारिज विनेस सोया, भरन के राखु बीया ॥२॥
 तत्रि राज होइ निन्हाठी बिन मीन बरत पाटी ।
 तब प्रापनी कमाई मई उदय प्रसरति ॥३॥
 मुनि मीन काज बाबइ कहि जागु हाज भाबइ ।
 वैइ कथा सक्या कोई रतन मति प्रमूपा ॥४॥

पश्चिमभाग—

रिनि सहस्र गुन गाबइ, फल बोधि बीसु पाबइ ।
 नर जोड़इ मुक्त नासइ प्रभु करन सरन राखइ ॥७१॥

दोहरा—

समोसरण जिनराजी की, गाबहि के तरनारि ।
 मनबंझिन फल भागवई तिरि पदुबहि भवपार ॥७२॥
 मोलसह सङ्गसठि बरप कार्तिक सुदी बलिराज ।
 सासकोट मुन बालबट, जबर सिध जिनराज ॥७३॥
 इति श्री श्रीशिवरजी की समोसरण समाप्त ॥

१. त्रितीय समोसरण

ब्रह्मगुणान्त

हिन्दी

१४-१६

प्रादिभाग—

प्रथम सुमिरि जिनराज धनंत मुक्त निबाम मंगस सिध सैठ
 बिनबाणी सुमिरत सगु बडे ज्यो गुनठोम विनक सिद्धु बडे ॥१॥
 पुनपर सेबहु ब्रह्म गुणान्त देवसासन पुर मंगस मान ।
 इमाहि मुर्मार बरणी मुक्तसार, समबसरण जैसे बिसवार ॥२॥
 बीठ बुधि मन असो करै मूरिब पर धाम पामी करै ।
 सुनहु भय्य मेरे परवान समोसरण की करी बखान ॥३॥

सुभ आसन दिढ जोग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान ।
समोसरण रचना अति वनी परम धरम महिमा अति तरणी ॥४॥

अन्तिमभाग—

चल्यो नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ ।
समोसरणय पूरण भयो, सुनत पदित पातिग गलि गयो ॥६५॥

दोहरा—

सौरह सैं अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।
गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनंदि पद सिक्ष ॥६६॥
सूरदेस हथि कंतपुर, राजा वक्रम साहि ।
गुलालब्रह्म जिन धर्मु जय, उपमा दीजै काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत संपूर्ण ॥

६ नेमिजी को मंगल

जगतभूषण के शिष्य
विश्वभूषण

हिन्दी

१६-१७

रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८

।दिभाग—

प्रथम जपौ परमेष्ठि तो गुर हीयौ धरौ ।
सस्वती करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ॥
सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति वनी ।
रचौ इन्द्र नै आइ सुरनि मनि बहुकनी ॥
बहु कनीय मदिर चैत्य खीयौ, देखि सुरनर हरखीयौ ।
समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ ॥
प्रिया जा सिव देवि जानी, रूप अमरी ऊडसा ।
राति सुदरि सैन सूती, देखि सुपने षोडशा ॥१॥

अन्तिम भाग—

रुवत् सौलह सै अठानूवा जाणीयौ ।
सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मानियौ ॥
गाऊ सिकदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।
श्रावण क्रीया मुजान घर्म्म सौ नेहरे ॥
धरे धर्म्म सौ नेहु अति ही देही सबकौ दान जू ।
स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पढित मान जू ॥

जगतसूयण भट्टारक जै विश्वसूयण मुनिवर ।

नर नारी मनमन्थार माने पढत पातिय निस्तर ॥

इति नैमिताय जू की भगवत समग्रता ॥

७ पार्श्वनाथचरित्र

विश्वसूयण

हिन्दी

१७-१९

भारिमाल राहुनट—

पारस जिनदेव की कुनहु चरितु मनु सारै ॥ टेक ॥

मनत सारवा भाइ, भजी गनवर चितुनारै ।

पारस कया सबंध कही भाषा सुनवारै ॥

बहु बलिग भरप मी नगर पोरना मान्द ।

राजा की चरित्रिब जू, जुगयै सुन भवान्द ॥ पारस जिन ॥

विप्र तहाँ एकु बसै पुत्र ठी राज सुभारा ।

कमठु बडी बिपरीत किसत सेबे जू अपारा ॥

मधु मैया भरसूति सी बसुपरि बई टा भास ।

रति क्रीडा मेजवा रण्यो हो कमठ भास के पास ॥ पारस जिन ॥

कोपु भीयी भरसूति कही मंजी सो राण्यो ।

सीक बई कहीं गहरो काम रस प्रंतर सण्यो ॥

कमठ बिदे रस कारने भरसूति बांजी जाई ।

सो मरि बन हाजी नयी हूपिनि भई बिप भाइ ॥ पारस जिन ॥

प्रतिमपाठ—

प्रबधि हेत करि बस्त सही देवनि तब जानी ।

पबमावति परतेश्वर जन्म मस्तिन पर तानी ॥

सब उपसनु निर्बारिकै पार्श्वनाथ निर्मब ।

सकल करम बर पारिकै मने मुक्ति निबन्ध ॥ पारस जिन ॥

मूलसंब पट्ट विश्वसूयण मुनि सारै ।

उत्तर देखि पुरासु रधि या बई मुनारै ॥

बसे महाजन लोम जू, राज बनुबिधि वा पैठ ।

पार्श्वनाथ निहने मुनी हो मोदि प्राति फल सेठ ॥

पारस जिनदेव को कुनहु चरितु मन भाइ ॥२५॥

इति भी पार्श्वनाथजी की चरितु संपूर्ण ॥

८ वीरजिण्णदगीत	भगोतीदास	हिन्दी	१६-२०
९. सम्पन्नानी धमाल	”	”	२०-२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	”	२१-२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	२२-२३
१२ ”	दानतराय	”	२३
१३ ”	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजमेन	”	२४
१५ ”	पद्मनन्दि	”	२४
१६. हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	२० काल १६१६ २५-७५ ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा ७७-१०६

५३६३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ३७ । आ० ७३×१० इञ्च । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी-

७ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का संग्रह है—

१ कल्याणन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	”
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	”	”
४ भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतु ग	”	”
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	”
६. सिद्धपूजा	×	”	”
७ दशलक्षणापूजा जयमाल	×	संस्कृत	”
८. षोडशकारणपूजा	×	”	”
९. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	”
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	”
११. सहस्रनामस्तोत्र	प० आशाधर	”	”
१२. पञ्चमेरुपूजा	भूधरयति	हिन्दी	”

१३	महाह्निकमुखा	×	संस्कृत	"
१४	अभिवेकविधि	×	"	"
१५	निर्वाणकावमावा	ममवतीबात	हिन्दी	"
१६	पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"	"
१७	मन्यतपूजा	×	संस्कृत	"

विशेष—यह पुस्तक मुकनासनी बज के पुत्र मलमुक्त के पढ़ने के लिए लिखी गई थी ।

४३६४ गुटका न० १४ । पत्र सं १३ । पृ ४×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । पद्या—सामान्य ।

विशेष—आराण्यक (हिन्दी) तथा २४ भाषाबन्धों के नाम हैं ।

४३६५ गुटका न० १५ । पत्र सं ४३ । पृ ५×३^१ इंच । भाषा—हिन्दी । से कास १५६ । पूर्ण

विशेष—पछ प्रमुद है—

१२	१. कृष्ण्योत्री नेमिजीसू	जाम म्हेतो बाही संव बाता	×	हिन्दी	१	
	२	हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	मामचन्द्र	"	१-२	
	३	ध्यावाला हो प्रमु मावसोत्री	×	"	२-५	
	४	प्रमु बाकीजी मूरत मनको मोहियो	बहाकपूर	"	५-६	
	५	परज गरब गई नवरसै देखी भाई	×	"	६	
	६	मान लीज्यो म्हारी परब रिचन बिनजी	×	"	१	
	७	तुम सी रमा विचारी तबि	×	"	११	
	८	कृष्ण्योत्री नेमिजीसू	जाम म्हे तो	×	"	१२
	९	मुझे तारीजी साईं सावण	×	"	१३	
	१०	संबोधनवासिकानावा	बुधजन	"	१३-२	
	११	कृष्ण्योत्री नेमिजीसू	जाम म्हेतो बाकीजी संवबाला पत्रचन्द्र	"	२१-२३	
	१२	मान लीज्यो म्हारी परब रिचन बिनजी	×	"	२३	
	१३	तबिके गये दीया हमके तुमसी रमा विचारी	×	"	२३-२४	
	१४	म्हे ध्यावाला हो प्रमु मावसु	×	"	२४	
	१५	साधु दिगबर नवन चर पद संबर मूयणपीठी	×	"	२५	

गुटका-संग्रह]

१६ म्हे निशिदिन ध्यावाला	बुधजन	"	२६
१७. दर्शनपाठ	×	"	२६-२७
१८. कवित्त	×	"	२८-२९
१९ वारहभावना	नवल	"	३३-३५
२०. विनती	×	"	३६-३७
२१. वारहभावना	दलजी	"	३८-३९

५३६६. गुटका स० १६ । पत्र स० २२६ । आ० ५३×५ इच्छ । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ ।

पूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाम्रो को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१ बृहदकल्याण	×	हिन्दी	३-१२
२ मुक्तावलिव्रत की तिथिया	×	"	१२
३ भाडा देने का मन्त्र	×	"	१२-१६
४ राजा प्रजाको वशमे व रनेका मन्त्र	×	"	१७-१८
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	"	२३-२४
६ दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५-२६
७ सूतकवर्णन (यशस्तिजक मे)	सोमदेव	"	३०-३१
८ गृहप्रवेशविचार	×	"	३२
९. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी सम्बृत	३३-३५
१०. देपावतारमन्त्र	×	"	३६
११ काले विच्युके उद्ध उतारने का मन्त्र	×	हिन्दी	३८

नोट—यहा मे फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२ व्याघ्याय	×	सम्बृत	४-३
१३ तत्पार्श्वमृग	वमान्वानि	.	४ ३
१४ प्रतिप्रमणपाठ	×	.	१६-३७
१५ भक्तिपाठ (नाम)	×	"	३७-३८

१६ बुद्धत्ववर्षं श्रुतौ च	समस्तत्रयवाक्य	"	७३-८६
१७ बभूवुःश्रुतौ च	×	"	८६-९३
१८ धातुप्रतिबन्ध	×	प्राकृत संस्कृत	९४-१००
१९ भुक्तस्य	अथ हेमचन्द्र	प्राकृत	१००-११५
२० भुक्तवत्	धीवर	संस्कृत गद्य	११५-१२३
२१ भासाधना	×	प्राकृत	१२३-१३२
२२ सप्तु प्रतिबन्ध	×	प्राकृत संस्कृत	१३२-१४६
२३ मन्त्रावरणम्	मानतु गाथार्थं	"	१४६-१५३
२४ ब्रह्मं च नी जयमाना	×	संस्कृत	१५३-१५६
२५ धारापनायक	देवसेन	प्राकृत	१५६-१६०
२६ गङ्गाधरचरितम्	×	"	१६०-१७२
२७ सिद्धिप्रियस्योप	देवस्य	संस्कृत	१७२-१७६
२८ भूतान्नीचीनी	भूतान्तर्वि	"	१७६-१८५
२९ एहीवायस्योप	वाहिराम	"	१८५-१८८
३० विगायद्वाण्ठीक	धनञ्जय	"	१८८-१८९
३१ बभूवुःश्रुतौ च	व० रघु	प्राकृत वा	१८९-१९३
३२ बभूवुःश्रुतौ च	भुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९३-२०३
३३ लक्ष्मीस्योप	वपयचन्द्र	"	२०३-२०४
३४ स चरितम्	×	"	२०४-२१६

५. सदृष्टि	×	नरकृत	६-११
६. मन्त्र	×	"	१४
७. उपवात के दशभेद	×	"	१५
८. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	"	१५
९. अठारई का ध्यौरा	×	"	१८
१०. फुटकर पाठ	×	"	१८-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१-२८

गोमट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि में संगृहीत पाठ हैं ।

१२. प्रभोत्तररत्नमाला	श्रीमोघवर्य	संस्कृत	२४-२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिपेणाचार्य	"	२६-२८
१४. गुणस्थानव्याख्या	×	"	२९-३१

प्ररचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत

१५. छातीसुख की श्रीपथि का नुसला	×	हिन्दी	३२
१६. जयमाल (मालारोहरण)	×	अपभ्रंश	३२-३५
१७. उपवासविधान	×	हिन्दी	३५-३६
१८. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	३६-३७
१९. अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वयशिक्षा	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत	मन्त्र आदि भी हैं ३८-४०
२०. गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तिया	×	हिन्दी	४१
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनमेनाचार्य	संस्कृत	४२-४६
२२. मत्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"	४६-५२
२३. यतिभावनाष्टक	आ० कुदकुद	"	५२
२४. भावनाद्वात्रिंशतिका	आ० अमितगति	"	५३-५४
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५५-५८
२६. सबोधपचासिका	×	अपभ्रंश	५९-६०
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६१-६७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६७-८८
२९. भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	८९-१०७

११	बृहत्स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७१-८२
१७	बसन्तकारण कुर्वाबलि	×	"	८१-८३
१८	भाष्यप्रतिबन्ध	×	प्राकृत संस्कृत	१४-१७
१९	भुवस्त्वय	प्रद्य हेमचन्द्र	प्राकृत	१७-११८
२	भुवावतार	श्रीमर	संस्कृत गद्य	११८-१२३
२१	भक्तोचना	×	प्राकृत	१२३-१२२
२२	सद्यु प्रतिबन्ध	×	प्राकृत संस्कृत	१२२-१४९
२३	भक्तामरस्तोत्र	मानसु पाचार्य	"	१४९-१५३
२४	बभेता न की क्यमासा	×	संस्कृत	१५३-१५६
२५	भारामनासार	द्वैतेन	प्राकृत	१५६-१६७
२६	सर्वोत्पत्तिप्रसिद्धा	×	"	१६८-१७२
२७	सिद्धिमियस्तोत्र	द्वैतेन	संस्कृत	१७२-१७६
२८	भूतनाथश्रीश्री	सुपाणकवि	"	१७७-१८०
२९	एकीभावस्तोत्र	बादिराम	"	१८०-१८४
३	विषाणुस्तोत्र	बनज्जय	"	१८४-१८९
३१	व्यासधरसुब्रह्मण्य	वं रघु	अपभ्रंश	१८९-१९३
३२	वसुधासुमतिस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९३-२०३
३३	वसुधैव कुटुम्बकम्	पद्मप्रसन्न	"	२०३-२०४
३४	वसुधैव कुटुम्बकम्	×	"	२०४-२२६

प्रसिद्धि—सबद् १७२१ वर्षे शके १९१६ प्रवर्तमाने कर्तव्यमासे शुद्धशुक्ल प्रतिपदा १ तिथी मङ्गलवारि
भाषार्य श्री बादरीति वं मंगाराम पठनार्थ बाबुभाष्य ।

२३३७ गुटक स० १७ । पत्र स ४ ७ । भा ७४२ इत्य ।

१	मद्यमसमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १-३
२	मद्यमस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत	४
३	मद्यमसिद्धि	×	"	भूताचार से उद्धृत २-६
४	मद्यमविचार	×	"	७

५६. औपधियो के नुसखे	×	हिन्दी	२११
५७ संग्रहसूक्ति	×	संस्कृत	२१२
५८ दीक्षापटल	×	"	२१३
५९. पार्श्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१४
६०. दीक्षा पटल	×	"	२१८
६१ सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२२३
६२ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३-१२४
६३ सुभाषितसंग्रह	×	"	२२५-२२८
६४ तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६५ योगसार	योगचन्द्र	संस्कृत	२३१-२३५
६६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६७ श्रावकप्रतिक्रमण	×	संस्कृत	२३७-२४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
६९ रत्नत्रयपूजा	"	"	२४८-२५९
७० कल्याणमाला	प० आशाधर	"	२५९-२६०
७१ एकीभात्रस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
७२ समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२८५
७३ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	२८६-३०३
७४ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-२०६
७५ परमेष्ठियो के गुण व अतिशय	×	प्राकृत	३०७
७६ स्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
७७ प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
७८ देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
७९. अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	"	३२८-३२९
८० सुभाषित	×	"	३३०-३३१
८१. जिनगुणस्तवन	×	"	३३१-३३२

१० स्वयंभूस्तोत्र	या समस्तभद्र	संस्कृत	१ ६-११८
११ सखमीस्तोत्र	पद्मप्रभवेव	"	११८
१२ वरुणस्तोत्र	सकम्पचन्द्र	"	११९
१३ सुप्रभातस्तोत्र	×	"	११९-१२१
१४ वरुणस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
१५ बलात्कार दुरात्मनी	×	संस्कृत	१२१-२४
१६ परमानन्दस्तोत्र	'पूज्यराज	"	१२४-२५
१७ नाममाता	बनकम	"	१२५-१३७
१८ शीतरामस्तोत्र	पद्मनिधि	"	१३८
१९ करुणाष्टकस्तोत्र	"	"	१३९
४ सिद्धिप्रियस्तोत्र	बेबलनिधि	"	१४१-१४१
४१ समवसारगाथा	या कुन्तकुम्भ	"	१४१
४२ मर्हंभूक्तिविधान	×	"	१४१-१४१
४३ स्वस्थयनविधान	×	"	१४४-१४६
४४ एतन्नयभूजा	×	"	१४६-१६२
४५ विनयनपत्र	×	"	१६२-१६८
४६ कलिपुष्कपूजा	×	"	१६८-१७१
४७ पीडनकारणपूजा	×	"	१७२-१७३
४८ वसन्तभस्त्रपूजा	×	"	१७३-१७३
४९ तिष्ठस्तुति	×	"	१७३-१७६
५ सिद्धपूजा	×	"	१७६-१८
५१ सुभ्रमात्मिका	भीषर	"	१८९-१९२
५२ सारसमुच्चय	कुन्तभद्र	"	१९२-२१
५३ कातिवर्ग	×	" ५८ पत्र ७७ भाति	२ ७-२ ८
५४ पुनर्वरवर्णन	×	"	२ ९
५५ पीडनकारणपूजा	×	"	२१

गुटका-संग्रह

- ५६. औपनिषद् विज्ञान
- ५७. मंत्रसंग्रह
- ५८. दीक्षासंग्रह
- ५९. पाठ्यसंग्रह
- ६०. दीक्षासंग्रह
- ६१. मंत्रसंग्रह
- ६२. दीक्षासंग्रह
- ६३. मंत्रसंग्रह
- ६४. दीक्षासंग्रह
- ६५. मंत्रसंग्रह
- ६६. दीक्षासंग्रह
- ६७. मंत्रसंग्रह
- ६८. दीक्षासंग्रह
- ६९. मंत्रसंग्रह
- ७०. दीक्षासंग्रह
- ७१. मंत्रसंग्रह
- ७२. दीक्षासंग्रह
- ७३. मंत्रसंग्रह
- ७४. दीक्षासंग्रह
- ७५. मंत्रसंग्रह
- ७६. दीक्षासंग्रह
- ७७. मंत्रसंग्रह
- ७८. दीक्षासंग्रह
- ७९. मंत्रसंग्रह
- ८०. दीक्षासंग्रह

॥१००॥

भाग ।

॥१०१॥

सुजान ।

सति निदान ॥१०२॥

सभा रक्षण समस्या प्रवध प्रभाव । श्री मिली सावरण वदि १२
वान तारावन्दजी को पोथी लिखत माणिकचन्द्र वज बाचै जीहेने

३६ । भाषा । १९३७ श्रापाढ सुदी १५ ।

कवि

१५ ज्येष्ठ बुदी १२ ।

८२	क्रियाकलाप	×	"	११२-११४
८३	समवनापपद्धती	×	अपभ्र वा	११४-११७
८४	स्तोत्र	सर्वभोगन्देव	प्राकृत	११५-११८
८५	स्त्रीशुद्धारवर्षन	×	संस्कृत	११६-१४१
८६	चतुर्विंशतिस्तोत्र	माकलम्बि	"	१४२-१४३
८७	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	ज्मास्वामि	"	१४४
८८	मृत्युमहोत्सव	×	"	१४५
८९	मन्त्रपर्यंठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	"	१४६-१४८
९०	आमुर्ख के मुसले	×	"	१४९
९१	पाठसंग्रह	×	"	१५०-१५४
९२	आमुर्ख के मुसला संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी योगसत वेद्यक से संग्रहीत	१५७-१५८
९३	अप्य पाठ	×	"	१८८-४ ७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस पुस्तके में भी हैं ।

- १ कल्याण वक्रा २ मुनिभरौकी जयमाला (बहु जिनवास)
- ३ बसप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणोपु कथित)
- ४ सूतकथिनि (महास्तिसक चम्पू से)
- ५ बृहद्विजयलक्षण
- ६ शीपावतारमन्त्र

५३६८ गुटका स० १८ । पत्र सं ५३ । भा ७×३ इञ्च । बाया-हिन्दी । ले फल सं १५ ४ भाषण बुकी १२ । पूर्ण । बचा-सामान्य ।

१	जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१-३
२	सप्तसई	विहारीमाला	" ले फल १७७४ फागुण बुकी १	१-४८
३	रसकौतुक रास समा रञ्जन	मङ्गलमाला	" " १५ ४ भाषण बुकी १२	४९-५३

बीहू-

अप्य रस कौतुक विचरती—
 गंगाधर सेवक सदा याहक रसिक प्रवीन ।
 राज समा रजन कहत मन हुलास रस सीम ॥१॥
 रसपति रति नैरोज जन विधा मुषम सुगेह ।
 जो दिन प्राय मनैर ही बीतन जो फल देह ॥२॥

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
 सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
 हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
 ज्या हाथा रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥
 तरसै हू परसै नही, नौढा रहत उदास ।
 जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै आस ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नाहुरि मिलै विनु नेह ।
 औसरि चुक्यो मेहरा, काई वरसि करेह ॥६८॥
 मुदरी लै छलस्यो कह्यै, औ हौं फिर ना पैद ।
 काम सरै दुख वीसरै, बैरी हवो वैद ॥६९॥
 मानवतो निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।
 नदी किनारै रूखडो, जब तब होइ विनास ॥७०॥
 सिव सुखदायक प्रानपति, जरो आन कौ भोग ।
 नासै देसी रूखडो, ना परदेसी लोग ॥७१॥
 गता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
 राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥७२॥

इति श्री गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबध प्रभाव । श्री मितो सावरण वदि १२
 बुधवार सबत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत मारिकचन्द बज बाचै जीहने
 जिसा माफिक वच्यो ।

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १६३० आषाढ सुदी १५ ।
 पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की चौपई—नखरू कवि कृत है ।

५४०० गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ ।
 पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महीदधि है ।

८२	त्रिपापमग्न	×	"	११२-११४
८३	समवगापपद्धति	×	अपम स	११४-११७
८४	स्तोत्र	सहमाचन्द्रबेध	प्रकृत	११५-११८
८५	स्त्रीशुक्लारवर्णन	×	सकृत	११६-११९
८६	चतुर्विधतिस्तोत्र	माफनन्दि	"	१४२-१४३
८७	पञ्चमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	"	१४४
८८	मुसुमहोत्सव	×	"	१४५
८९	अनन्तर्गटीवर्षत (मग्न सङ्घित)	×	"	१४६-१४८
९०	आयुर्वेद के मुखे	×	"	१४९
९१	पाठसंग्रह	×	"	१५०-१५४
९२	आयुर्वेद मुखका संग्रह एक संवाचि संग्रह	×	सकृत हिन्दी योग्यत वैद्यक से संगृहीत	१५७-१६०
९३	अम्य पाठ	×	"	१८८-४ ७

इनके प्रतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और हैं ।

- १ कल्पमण बजा २ मुनिशरोंकी वयमास (बड़ा जिनबास) ३ बचप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणोपु कथिते)
 ४ सूतकविधि (यमस्तिकक चम्पू से) ५ इहविद्यमहाण ६ बीपापतारमन्त्र

५३६८ गुटका सं० १८ । पत्र स ५५ । मा ७×३ इका । भाषा—हिन्दी । से काल सं १८ ४ भाषण बुधी १२ । पूर्ण । बला—धामस्य ।

१	जिनराज अहिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१-३
२	रत्नसर्प	विहारीलाल	" से काल १७७४ फागुण बुधी १	१-४८
३	रत्नकीतुक रत्न समा उज्ज्वल	नङ्गाबाब	" " १८ ४ सावण बुधी १२	४९-५३

दीहा—

मय रस कीतुक सिद्धते—

नभापर सेबहु सवा नाइक रसिक प्रवीन ।

राज समा रजन कहत मन हुलास रस जीन ॥१॥

रूपति रति मीरोग तन विषा मुपन सुगेह ।

जो विम नाम मर्नह सी पीठय की फल देह ॥२॥

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
 सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
 हिल सो राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
 ज्या हाया रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥
 तरसै हू परसै नही, नौढा रहत उदास ।
 जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै आस ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नही, नाहुरि मिलै विनु नेह ।
 श्रीसरि चुक्यौ मेहरा, काई वरसि करैह ॥६८॥
 मुदरो लै छलस्यौ कह्यै, श्री हौं फिर ना पैद ।
 काम सरै दुख वीसरै, वैरी हूवो वैद ॥६९॥
 मानवती निस दिन हरै, बोलत खरीवदाम ।
 नदी किनारै रूखडौ, जव तव होइ विनास ॥१००॥
 सिव सुखदायक प्रानपति, जरो आन कौ भोग ।
 नासै देसी रूखडौ, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
 गता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
 राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रवध प्रभाव । श्री मित्ती सावरा वदि १२ बुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत मारिकचन्द वज वाचं जीहेने जिसा माफिक वच्चा ।

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १६३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुवर की चौपई—नखरू कवि कृत है ।

५४०० गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महौदधि है ।

५५ १ गुटका सं० २१ । पत्र सं ११६ । प्रा १५३ इत्य । पूर्ण । श्या-सामान्य ।

१ सामाधिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१-२४
२ सिद्ध भक्ति प्रादि सग्रह	×	प्राकृत	२३-७
३ समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४ सामाधिकपाठ	×	प्राकृत	७३-५१
५ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवतान्त्रि	संस्कृत	८२-८६
६ पार्ष्णिनाथ का स्तोत्र	×	"	९७-१
७ चतुर्विंशतिविनाहक	सुमन्त्र	"	१ १ १४६
८ पञ्चस्तोत्र	×	"	१४७-१७
९ विमलरस्तोत्र	×	"	१७ २
१० मुनीश्वर की वचनास	×	"	२ १-२३
११ सकलीकरणविधान	×	"	२५१-१
१२ जिनश्रीश्रीसमवात्तररास	विमलेश्वरीति	हिन्दी पद्य पद्य सं ४५	१ १-८

भावभाग—

विमलर बुद्धिसद्व जयि भाग्य पाव समी बहु भवहं विचार ।

भाविह सुख ये सत ॥१॥

यज्ञज्ञय राजा पाख मखीह, मग भूमि प्राह पयि मुणीह ।

भीमर ईशामि देव ॥२॥

मुक्तिराज सातयह भवि जाणु मन्त्रुतेम सीमम बजाणु ।

बधनामि बन्नेम ॥३॥

तप करि सबाँरज सिद्धि पासी भव मम्पारम मृपमह स्वामी ।

मुगितई म्या जगमाह ॥४॥

विमलबाहना राजा ब र जाणु पंचामुत्तरि महमिन्त्र सुभाणु ।

इयं बधनिन परमपद पास्तू ॥५॥

विमल बाहून राजा धरि जाणु पंचामुत्तरि महमिन्त्र बजाणु ।

मजिठ मगर बर मास्तू ॥६॥

विमल वाहन राजा धरि मुराण्ड, प्रथमग्रीवि अहमिद्र नुभणीइ ।

शभव जिन अवतार ॥७॥

अन्तिमभाग—

आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

नमिनाथ भवदशा तम्हे जाणु , पार्श्वनाथ भव दसइ बखाणुं ।

महावीर भव तेन्नीसइ ॥४६॥

प्रजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ॥४७॥

जिन चुवीस भवातर सारो, भगता सुगता पुण्य अपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्त्ति इम वोलइ ॥४८॥

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३. मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८-३१०
१४ नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११-३३
१५ पद-जीवारे जिणवर नाम भजै	×	हिन्दी	३१४-३५
१६ पद-जीया प्रभु न सुमरघो रे	×	"	३१६

५४०२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५४ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ नेमि गुण गाऊ वाछित पाऊ	महीचन्द्र सूरि	हिन्दी	१
		बाय नगर मे सं० १८८२ मे प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।	
२ पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१-६
३ रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४ सुख कारण सुमरो	×	"	७
५ कर जोर रे जीवा जिनजी	प० फतेहचन्द	"	८
६ चरण शरण अत्र आइयो	"	"	८
७ रुत फिरघो भनादिहो रे जीवा	"	"	९

क्र	विवरण	फोटोहस्ताक्षर	दिनांक	र	काल सं० १८४	₹
८	आदम बापन बरगाय	फोटोहस्ताक्षर	हिन्दी			
९	दयम कुहेसो पी	"	"			१
१०	उपसेन कर कारणो पी	"	"			११
११	बारीजी जिर्नबबी बारी	"	"			१२
१२	आमन मरण का	"	"			१३
१३	तुम बाप मनासो	"	"			१३
१४	भव स्तू मेमि जिर्नबा	"	"			१४
१५	राज आपन बरला नित बबिये	"	"			१५
१६	कर्म भरमाये	"	"			१६
१७	प्रबुबी बांके घरणी ममा	"	"			१७
१८	पार उठारा जिमबी	"	"			१७
१९	पांकी बांबरी मूर्ति छवि प्यारी	"	"			१८
२०	तुम बाप मनासो	"	"		मपूर्ख	१८
२१	जिन बरणां बित्तमासो	"	"			१९
२२	म्हारो मन साधोबी	"	"			१९
२३	बसम पीब वरे	मेमीबन्ध	"			२०
२४	मो मनरा प्यारा	सुखबन्ध	"			२१
२५	मठ मर्बारी बाहलो	मेमबन्ध	"			२२
२६	समदबिजयजीरी बापुराम	"	"			२३
२७	नाबिबी के मन्धन	मनसाराम	"			२३
२८	जिसुवन कुक स्पामी	भूपरराम	"			२४
२९	नामिदम मोरां शैबी	बिजयशीति	"			२५
३०	बारि २ ही बीमांजी	बीबणराम	"			२६
३१	बी म्पबैनुन प्रल्लू पाप	सबामानर	"			२७
३२	परक महा उल्लुट छदि मार	छबीराम	"			२७
३३	बी कुच मेरे उर बसो	भूपरराम	"			२८
३४	बरी निज गुमनां बिमबम	बिपीरशीति	"			३

३५. श्रीजिनराय की प्रतिमा वदी जाय	धिलोककीर्त्ति	हिन्दी	३१
३६. होजी थाकी सावली सूरत	प० फत्तेहचन्द	"	३२
३७. कवही मिलसी हो मुनिवर	×	"	३३
३८. नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	" २० काल स० १७८४	३३
३९. श्री जिन तुमसै वीनऊं	अजयराज	"	३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"	३५
४१. शम्भुजारो वासी प्यारो	नथविमल	"	३६
४२. मन्दिर आखाला	×	"	३६
४३. ध्यान धरघाजी मुनिवर	जिनदास	"	३७
४४. ज्यारे सोभें राजि	निर्मल	"	३८
४५. केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"	३९
४६. समकित धारी सहलडीजी	पुरुपोत्तम	"	४०
४७. अरवगति मुक्ति नही छै रे	रामचन्द्र	"	४१
४८. वधावा	"	"	४२
४९. श्रीमदरजी सुराज्यो मोरी वीनती	गुराचन्द्र	"	४३
५०. करकसारी वीनती	भगोसाह	"	४४-४५
सूआ नगर मे स० १८२६ मे रचना हुई थी ।			
५१. उपदेशवावनी	×	हिन्दी	४५-६१
५२. जैनवद्री देशकी पत्री	मजलसराय	" स० १८२१	६२-६६
५३. ८५ प्रकार के मूर्खों के भेद	×	"	६७-६९
५४. रागमाला	×	" ३६ रागनियो के नाम हैं	७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	" राग भेरू	७०
५६. चलि २ हो भवि दर्शन काजै	"	"	७१
५७. देवो जिनराज देव सेव	"	"	७२
५८. महाबीर जिन मुक्ति पधारै	"	"	७२
५९. हमरैतो प्रभु सुरति	"	"	७३

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठा	पृष्ठा
१	श्रीशिव जी का ध्यान पत्र	ब्रह्मचर्याय शारीका	१०	१०
२	मान प्रथम की प्रथा	"	"	११
३	मान का वैदिकबुद्धि	"	"	१२
४	मनु के दर्शन का दी मान	"	"	१३
५	पुण्यी प्रथम राय विचार	"	"	१४
६	मृत करती वैदिक प्रथा	"	"	१५
७	निरा मू जागत क्या बर्तनी	"	"	१६
८	उना मेरे प्रथम का विचार	"	"	१७
९	राज्यामी विनयाय मरुत	"	"	१८
१०	विद्वन्नी के मेरी लगन मनी	"	"	१९
११	मूर्ति ही घरक तरे बाव यो	"	"	२०
१२	मेरी बीन मनि प्रानी	"	"	२१
१३	देवारी केम बीनी रिद्वि पाई	"	"	२२
१४	प्रायि बपार्ई रासा मर्दिन व	"	"	२३
१५	भीतराग नाम मुमदि	मुनि विद्वयवर्णि	"	२४
१६	या मरुत सब बुद्धि मई	बनारसागम	"	२५
१७	हम मरुती मे निरा विध रूमा	बनारसी राम	"	२६
१८	मे पावे मुक विद्वयन राम	हरीशिव	"	२७
१९	शुद्धव्ययित संभव हरणा	म विद्वयवर्णि	"	२८
२०	उठी तेरी कुल रेणु	धर्मगुरु	"	२९
२१	बेनीनी पार्ईपरस्वामी बीना प्याम मनाया है	गुणानन्द	"	३०
२२	बी बी बी बी विनयाय	सामन्त	"	३१
२३	महुडी विहायी कथा	हरीशिव	"	३२
२४	बनकि २ मुम लोचक वि बी म्रा	रामचन्द्र	"	३३
२५	विपक त्याग मृत कारक मानी	मन्मथ	"	३४
२६	छदि विम देवी देवनी	करीशिव	"	३५

८६ देखि प्रभु दरस कौरा	फतेहच द	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बखतराम	"	८३
८८ आजि उदै घर सपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनद	शोभाचन्द	"	८४
९० मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुव्रत जिनराज को	भानुकीर्ति	"	८४
९२. मारे प्रभु सू प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३ शीतल मगादिक जल	विजयकीर्ति	"	८५
९४ तुम आत्म गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५ सब स्वारथ के मीत्र है	×	"	८५
९६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहा रे अज्ञानी जीवकूँ	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	ज्ञानतराय	"	८६
९९ सहस राम रस पीजिये	रामदास	"	८६
१०० सुनि मेरी मचसा मालणी	×	"	८६
१०१ वो साधु ससार मे	×	"	८७
१०२ जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इणविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजे	×	"	८७
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी लालचद		"	८८
१०५ काया बाडी काठकी सीचत सूके आप मुनिपद्मतिलक		"	८८
१०६ ऐसे क्यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७ ऐसे यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८ ऐसे यो प्रभु पाइये सुनि पडित प्राणी	×	"	९०
१०९ मेटो विथा हमारी	नयनसुख	"	९०
११० प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	९०
१११ रे मन विषया भूलियो	भानुकीर्ति	"	९१

६	शौर्य नदी को ध्यान धरा	जयतराम मोदीदा	हिन्दी	५१
६१	प्रातः प्रथम ही बपो	"	"	७४
६२	जागे श्री मेमिफुमार	"	"	राज रामकली ७४
६३	प्रभु के दर्शन को मैं प्राया	"	"	७१
६४	गुल्ही धम रोक पिटाजे	"	"	७१
६५	भूम कंबरी मेमि पकामै	"	"	७१
६६	निधा तू कामत क्यों नहिरे	"	"	७६
६७	उठो मेरे प्रणव को पियारो	"	"	७६
६	राखोजी जितराज सरन	"	"	७६
६८	जिनकी त मेरी समन सगी	"	"	७६
७	सुनि ही मरज तेरे पाम परी	"	"	७७
७१	मेरी क्रीत गति होधी	"	"	७७
७२	बेखोरी मेम कौसी पिठि पार्ई	"	"	७७
७३	याभि बबाई राजा नामि क	"	"	७७
७४	धीतराम नाम सुमरि	सुमि विजयकैति	"	७८
७५	या जतम सब भुक्ति गई	बनारसीदास	"	७८
७६	इस नपरी में किस बिष रजना	बनारसीदास	"	७८
७७	मैं पाये तुम विभुवन राम	हरीसिंह	"	७
७८	अधममजिद सभ्य हरणा	स विजयकैति	"	७
७९	उठो तेरो मुक वजू	बहुटोडर	"	८
८	बेखोरी प्राशुभरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	जुघानकर	"	८१
८१	जे जे जे बी जितराज	सत्सनाथ	"	८१
८२	प्रभुजी तिहारी कृपा	हरीसिंह	"	८१
८३	कमकि २ भुम तामिड बि बा ना	राममगत	"	८१
८४	विषय त्याग भुम काटव लागी	नवल	"	८२
८५	सुनि जिन बेसी बेवकी	पदोहराथ	"	८२

८६. देखि प्रभु दरस कौरा	फतेहच द	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बखतराम	"	८३
८८. आजि उदै घर सपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनद	शोभाचन्द	"	८४
९०. मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुव्रत जिनराज को	भानुकीर्ति	"	८४
९२. मारे प्रभु सू प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३. शीतल गगादिक जल	विजयकीर्ति	"	८५
९४. तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५. सब स्वारथ के मीत है	×	"	८५
९६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहां रे अज्ञानी जीवकू'	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	ज्ञानतराय	"	८६
९९. सहस राम रस पीजिये	रामदास	"	८६
१००. सुनि मेरी मनसा मालणी	×	"	८६
१०१. वो साधु ससार मे	×	"	८७
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इराविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजे	×	"	८७
१०४. विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचद	"	८८
१०५. काया बाडी काठकी सीचत सूके आप मुनिपदातिलक		"	८८
१०६. ऐसे क्यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७. ऐसे यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८. ऐसे यो प्रभु पाइये सुनि पढित प्राणी	×	"	९०
१०९. मेटो बिथा हमारी	नयनसुख	"	९०
११०. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	९०
१११. रे मन विपया मूलियो	भानुकीर्ति	"	९१

११२	सुमरन ही में त्वारि	धानतराम	हिन्दी	११
११३	भब में जैनधर्म की सराहों	×	"	११
११४	बैठे बज्जकृत रूपान्त	धानतराम	"	११
११५	बद्ध सुंदर मूरत पार्श्व की	×	"	१२
११६	उठि संभारें कौबिये बरलगा	×	"	१२
११७	कौन कुमार परी रे मना ठैरी	×	"	१२
११८	राम भरप सी कहे सुभाम	धानतराम	"	१३
११९	कहे मरुतनी सुसि हो राम	"	"	१३
१२०	मूरति कहे राजें	बगतराम	"	१३
१२१	बेको सलि कौन है नेम कुमार	बिजयकोति	"	१३
१२२	बिनबदनीसू प्रीति करी री	"	"	१४
१२३	भोर ही भाये प्रभु दर्शन को	हरकचम्ब	"	१४
१२४	बिनैमुरबेब भाये करण तुम तेव	बगतराम	"	१४
१२५	ज्यों बने त्यों तारि मोझ	दुलाबकृष्ण	"	१४
१२६	हमारी बारि भी नेमिकुमार	×	"	१४
१२७	भाबे रङ्ग राके जनी बई	×	"	१५
१२८	एरी बको प्रभुको बरि कर	बगतराम	"	१५
१२९	नेना मेरे बसन है सुभाम	×	"	१५
१३०	भाकी साम्नी प्रीति तू सामे	×	"	१५
१३१	तैं तो मेरी सुबि हू न सई	×	"	१५
१३२	मानों मैं तो बिब सिधि सई	×	"	१६
१३३	जानीये तो जानी तेरे मनकी बहानी	बिजयकोति	"	१६
१३४	नयन लके केरे नयन लके	×	"	१६
१३५	मुझई महारि करी महाराज	बिजयकोति	"	१६
१३६	बेतन बेत निज बट माहि	"	"	१७
१३७	पिब बिन बल धिय बरन बिहाय	"	"	१७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	मानुकीर्ति	हिन्दी	६७
१३९. तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	"	६७
१४०. अथिर नरभव जागिरे	विजयकीर्ति	"	६८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	"	"	६८
१४२. भलैभल आसकली मुझ आज	"	"	६८
१४३. कहा लो दाम तेरी पूज करे	"	"	६८
१४४. आज ऋषभ घरि जावे	"	"	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊ	"	"	६९
१४६. जागो जागोजी जागो	"	"	६९
१४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	"	६९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विललायो	अनन्तकीर्ति	"	१००
१४९. आयो सरण तुम्हारी	×	"	"
१५०. सरण तिहारी आयो प्रभु में	अखयराम	"	"
१५१. वीस तीर्थङ्कर प्रात सभारो	विजयकीर्ति	"	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	"	"
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	वनारसीदास	"	"
१५४. हू सरणगत तोरी रे	×	"	"
१५५. प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगतराम	"	१०२
१५६. जीवडा तू जागिर्नै प्यारा समकित महलमे	हरीसिंह	"	"
१५७. घोर घटाकरि आयोरी जलधर	जयकीर्ति	"	"
१५८. कौन दिबासू आयो रे वनचर	×	"	"
१५९. सुमति जिनद गुणमाला	गुणचन्द	"	१०३
१६०. जिन बादल चढि आयो हो जगमें	"	"	"
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	"	"
१६२. दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	"	"
१६३. सुगुरु मेरे वरसत ज्ञान झरी	हरखचन्द	"	१०४

१९४	क्या सोचत भति भारी रे मन	द्यानतरंग	हिन्दी	१०४
१९५	समकित्त उत्तम भाई जगतमें	"	"	"
१९६	रे मेरे षट्ज्ञान बनागम छायो	"	"	१ ३
१९७	ज्ञान सगवर सोइ ह्यो भविजन	"	"	"
१९८	ह्य परमगुरु बरसत ज्ञानभरी	"	"	"
१९९	उप १। १ दिन दर्शन को मेम	देवसेन	"	"
२००	मेरे भव गुरु है प्रभु ते बख्सी	हृषकीर्ति	"	१ ६
२०१	बनिहारी कुडा क बन्दे	पानि मोहनब	"	"
२०२	मैं तो तैरी आज महिमा जानो	भूपरदास	"	"
२०३	देवारी आज नेमीपुर मुनि	×	"	"
२०४	कहारी बहुत कष्ट कहत न मारे	द्यानतरंग	"	१ ७
२०५	रे मन बरि सदा सतोप	बनारसीदास	"	"
२०६	मेरी २ करता कमल मया रे	बनचन्द	"	"
२०७	बेह बुझानी रे मे जानी	विजयकीर्ति	"	"
२०८	साषी स ज्या मुमति भवैसी	बनारसीदास	"	१ ८
२०९	तनिक जिया बल	विजयकीर्ति	"	"
२१०	तम धन जावन मान जगन म	×	"	"
२११	पेदा बन मे ठाडा बीर	भूपरदास	"	१ ९
२१२	जनन मैनु न ताहि नकार	बनारसीदास	"	"

गुटका-रूपह]

१६० जगत मे सो देवन को देव	वनारसीदास	हिन्दी	१११
१६१. मन लागो श्री नवकारसू	गुणचन्द्र	"	"
१६२. चेतन भव खोजिये	"	" राग सरङ्ग	११२
१६३ आये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"	"
१६४ करो नाभि कवरजी को आरती	लालचन्द	"	"
१६५ री भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	"	११३
१६६ तैं चरभव पाय कहा कियो	रूपचन्द	"	"
१६७. अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	"	"
१६८. बलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	"	"
१६९ सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	"	११४
२००. मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"	"

स० १८२१ मे विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी ।

२०१ उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नद चरण रज वदौं	विसनदास	"	"
२०३. लाग्यो आतमराम सो नेह	ज्ञानतराय	"	"
२०४ धनि मेरी आजकी घरी	×	"	११५
२०५ मेरो मन बस कीनो जिनराज	चन्द	"	"
२०६ धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	"	"
२०७ आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	"	"
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"	११६
२०९. कलिजुग मे ऐमे ही दिन जाये	हर्षकीर्ति	"	"
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	"	"
२११ नेमि कवर वर कीद विराजै	×	"	११७
२१२ तेइ बढभागी तेइ बढभागी	सुदरभूषण	"	"
२१३ अरे मन के के वर समभायो	×	"	"
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"	"

१६४ क्या सोचत प्रति भारी है मन	धामतराय	हिम्नो	१ ४
१६५ समकित्त उत्तम मारि जगतमें	"	"	"
१६६ रे मेरे बटनाम घनागम छापो	"	"	१ ५
१६७ आन सराकर छोड़ हो भविजन	"	"	"
१६८ हा परमगुरु बरसत ज्ञानभरी	"	"	"
१६९ जग ११ । जिन दर्शन का नाम	देवसेन	"	"
१७० मरे सब कुछ है प्रभु मैं बरसां	हृषीकेश	"	१०६
१७१ बनिहारी बुझा कं बन्दे	बालि मोहना	"	"
१७२ मैं ता तेरी धाम महिमा जानो	भूपरदास	"	"
१७३ देखोरी धाम मेरीमुर मुनि	×	"	"
१७४ कहारी बहु कछु कहत न प्रावी	धामतराय	"	१ ७
१७५ रे मन बरि सबा सतोष	बनारसीदास	"	"
१७६ मेरी २ करता जनम मया रे	बनारदास	"	"
१७७ वैह बुझानी रे मैं जानी	बिजयकीर्ति	"	"
१७८ माबा स गया मुमति प्रकसी	बनारसीदास	"	१ ८
१७९ ठनिक जिया जाल	बिजयकीर्ति	"	"
१८० तन घन जावन मान जगत म	×	"	"
१८१ देखा बम म ठाडो बीर	भूपरदास	"	१ ९
१८२ बनन मेरु न ताहि सभार	बनारसीदास	"	"
१८३ लागि रह्योरे परै	बलतराय	"	"
१ ४ सामि रह्यो जीब परमाज म	×	"	"
१८५ इम लागे घातमराम ता	धामतराय	"	१९
१८६ फिरलर व्याऊ मेमि जिनब	बिजयकीर्ति	"	"
१८७ फिट मयोरे पंपी बीस लो	भूपरदास	"	"
१८८ इम बैठे घानी मौम सं	बनारसीदास	"	"
१८९ बुझवा कम जीहणी	×	"	१११

१६० जगत मे सो देवन को देव	बनारसीदास	हिन्दी	१११
१६१. मन लागो श्री चवकारसू	गुणचन्द्र	"	"
१६२. चेतन अच खोजिये	"	" राग सरङ्ग	११२
१६३ आये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"	"
१६४ करो नाभि कवरजी को आरती	लालचन्द्र	"	"
१६५ रो भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	"	११३
१६६ तैं नरभव पाय कहा किमो	रूपचन्द्र	"	"
१६७ अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	"	"
१६८. बलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	"	"
१६९ सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	"	११४
२००. मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"	"

स० १८२१ मे विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी ।

२०१. उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नद चरण रज वदीं	विसनदास	"	"
२०३. लाग्यो आतमराम सो नेह	धानतराय	"	"
२०४ धनि मेरी आजको घरी	×	"	११५
२०५ मेरो मन बस कीनो जिनराज	चन्द्र	"	"
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	"	"
२०७ आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द्र	"	"
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"	११६
२०९ कलिजुग मे ऐमे ही दिन जाये	हर्षकीर्ति	"	"
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	"	"
२११ नेमि कवर वर वीद विराजै	×	"	११७
२१२ तेइ बडभागी तेइ बडभागी	सुंदरभूषण	"	"
२१३ अरे मन के के वर समभायो	×	"	"
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"	"

क्र.सं.	विषय	लेखक	हिस्से	पृ.सं.
२१५	नेमिचिन्द बलम का	सदस्यस्थिति	हिस्से	११८
२१६	सब छात्रों को पान बन्दो है भ्रष्टों की भ्रष्टता	×	"	"
२१७	रे मन बापमा फिस्त ठौर	×	"	"
२१८	मिथ्य होणहार सो होम	×	"	"
२१९	समस्त नर जीवन बोरो	रूपबन्ध	"	"
२२०	सग भई समय हमारी	जगताराम	"	११९
२२१	घरे को को कोमे २ बरु समयको	शैल बिक्रम	"	"
२२२	माधुरी जीवनवाणी	जगताराम	"	"
२२३	हम पाये हैं जिनराज तोरे बन्दन की	दानतराम	"	"
२२४	मन घटकों रं घटकों	धर्मपाल	"	"
२२५	जैन बम नहीं कीता बँरन देखी पापी	शुद्धजिनवास	"	१२०
२२६	इन मैनों का मही सुभाष	"	"	"
२२७	मैना सफल क्यों जिन बरभन पयो	रामबन्ध	"	"
२२८	सब परि करम है परमान	रूपबन्ध	"	"
२२९	सब परि बल शैल ज्ञान	हृषीकेश	"	"
२३०	रे मन बापमा फिस्त ठौर	जगताराम	"	१२१
२३१	मुनि मन मैमरी के बँन	दानतराम	"	"
२३२	सक ताहि है टी ताहि मानो बरस	जगताराम	"	"
२३३	बलत प्राण बयो रीवेरी बाया	×	"	"
२३४	बाबल रण मृदग रसाना	जयकीर्ति	"	"
२३५	सब तुम पायो शैलतराम	शुद्धबन्ध	"	१२२
२३६	मैना प्यास बरपा है	जगताराम	"	"
२३७	वरि रं स तन हित वरि न	दानतराम	"	"
२३८	नाहक मनन है बीमान	नरराम	"	"
२३९	देव बोरा हा बचनकी	धर्मकृष्ण	"	१२३
२४०	बंदी बंदी हा गिया मै	दानतराम	"	"

२४१. मैं बदा तेरा हो स्वामी	द्यानतराय	हिन्दी	१२३
२४२. जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द्र	"	"
२४३. तुम ज्ञान विभो फूली वसत	द्यानतराय	"	१२४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगताराम	"	"
२४५. लागि लौ नाभिनदन स्यौ	भूधरदास	"	"
२४६. हम आत्म को पहिचाना है	द्यानतराय	"	"
२४७. कौन सयानपन कीन्होरे जीव	जगताराम	"	"
२४८. निपट ही कठिन हेरी	विजयकीर्ति	"	"
२४९. हो जी प्रभु दीनदयाल मैं बदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५०. जिनवासी दरयाव मन मेरा ताहि मे भूले	गुणचन्द्र	"	"
२५१. मनहु महामज राज प्रभु	"	"	"
२५२. इन्द्रिय ऊपर असवार चेतन	"	"	"
२५३. आरसी देखत मोहि आरसी लागी	समयसुन्दर	"	१२६
२५४. काके गढ फौज चढी है	×	"	"
२५५. दरवाजे बेडा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६. चैति रे हित चैति चैति	द्यानतराय	"	"
२५७. चिंतामणि स्वामी सोचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	"
२५८. सुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी खाया	भूधरदास	"	१२७
२५९. चलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	"	"
२६०. जिन गुण गावो री	×	"	"
२६१. वीतराग तेरी मोहिनी मूरत	विजयकीर्ति	"	"
२६२. प्रभु सुमरन की या विरिया	"	"	१२८
२६३. किये आराधना तेरी	नवल	"	"
२६४. घडो घन आजकी ये ही	नवल	"	"
२६५. मैथ्या अपराध क्या किया	विजयकीर्ति	"	"
२६६. तजिके गये पीव हमको तकसीर क्या विचारी, नवल	"	"	१२९

२६७	मैया री गिरि जानेवै मोहि नेमजीसू काम है श्रीराम	"	१२६
२६८	नेम व्याहमकू प्राया नेम सेहरा बंधाय्या	बिनाबीसल	१३
२६९	धन्य तुम धन्य तुम पतित पावन	×	१३१
२७०	चेतन माडी भूसिये	नवन	"
२७१	स्पारी श्री महावीर मोकू पीत बागिक	सवाईराम	"
२७२	मेरो मन बस कीम्हा महावीर (बाबनपुरने)	हर्षकीर्ति	"
२७३	राफो सीता कमहु गेह	छातराम	"
२७४	कहे सीताजी मुमि रामकण्ठ	"	१३२
२७५	माह छांडा हो जिनराज नाम	हर्षकीर्ति	"
२७६	देवमुद पहिचान बंधे	×	"
२७७	मेमि जिनब गिरनेरयो	बीबराम	१३३
२७८	क्य परबडी को पतियारो	हर्षकीर्ति	हिन्दी १३३
२७९	चेतन माम न सखी तियो	छातराम	"
२८०	सावरी मूरत मेरे मन बसी है माई	नवन	"
२८१	भाको रे बुडापा बैरी	भूबरवास	"
२८२	साहिबो वा बीबरका म्हारो	जिनहर्ष	" १३४
२८३	पथ महाप्रथपारा	किशनसिंह	"
२८४	मेरी बनिहारी हा जिनराज	×	"
२८५	पक्ष्या दुनिया बिब बे कोई प्रजब तमारा	भूबरवास	" १३५
२८६	घटके मैना नही बहैडा	नवन	"
२८७	बला जिनबदिये एरी सखी	छातराम	"
२८८	जमतकबल गग मामक बाडी-पति	×	"
२८९	माखिन गदिय मानु नेमजी प्यारी बलिया	राजाराम	" १३६
२९०	हानी इक ध्यान सतजी का भरना	हैमराज	"
२९१	भगना हा पाडे साइ हो	×	"
२९२	तू बहू तूना तू बहू भूली प्रतापी र प्राणी	बनासीराज	"

२६३	होजी हो सुधातम एह निज पद भूलि रह्या	×	हिन्दी	१३६
२६४	मुनि कनक कीर्ति की जकडी	मोतीराम	"	१३७
रचना काल स० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर मे पं० रामचन्द्र ने लिपि की ।				
२६५	छोक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७ १३७
२६६	सावरिया अरज सुनो मुझ दीन की हो	प० खेमचंद	हिन्दी	१३८
२६७	चादखेडी मे प्रभुजी राजिया	"	"	"
२६८	ज्यो जानत प्रभु जोग धरचो है	चन्द्रभान	"	"
२६९	आदिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	"	२० काल १८५६ १३९-४०
३००	पार्श्वनाथ की आरती	"	"	१४०
३०१	नगरो की वसापत का सवत्वार विवरण	"	"	१४१

संवत् ११११ नागौर मढारणो आखा तीज रै दिन ।

- ” ६०९ दिली बसाई अनगपाल तु वर वैसाख सुदी १२ भौम ।
- ” १६१२ अकबर पातशाह आगरो बसायो ।
- ” ७३१ राजा भोज उजणी बसाई ।
- ” १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई ।
- ” १५१५ राजा जौधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११ ।
- ” १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई ।
- ” १५०० उदयपुर राणै उदयसिंह बसाई ।
- ” १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई ।
- ” १०७७ राजा भोज रै वेटै वीर नारायण सेवाणो बसायो ।
- ” १५९६ रावल वीदै महेवो बसायो ।
- ” १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर बसायो सा (वन) बुदी १२ रवो ।
- ” ११०० पवार नाहरराव मडोवर बसायो ।
- ” १६११ राव मालदे माल कोट करायो ।
- ” १५१८ राव जोधावत मेडतो बसायो ।
- ” १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछावै ।

- संख्या १३० बालीर सोमवार बसाई ।
- ॥ १७१४ श्रीरमसाह पातसाह श्रीरंगनाथ बसायो ।
- ॥ १३३७ पातसाह प्रतापहीन सोबी श्रीरमरे काम धाम्यो ।
- ॥ १ २ प्रसहल गुवांस पाटखु बसाई बैसाह सुदी ३ ।
- ॥ २ २ (१२ २) ? राव प्रबैपास पवार प्रबमेर बसाई ।
- ॥ ११४८ सिधराव जैसिहू देही पाटखा में ।
- ॥ १४२२ देवडो सिरोही बसाई ।
- ॥ १९११ पातसाह प्रबवर मुसतान लीयो ।
- ॥ १२१६ रावजी तीतवो नवर बसायो ।
- ॥ ११५१ फलोपी पारसनाथजी ।
- ॥ १६२१ पातसाह प्रबवर प्रहमबावार लोपी ।
- ॥ १२११ राव मासरे बीकानेर लोपी मास २ रही राव जैतसी ग्राम धाम्यो ।
- ॥ १९९१ राव किवनसिहू किवानमड बसायो ।
- ॥ १९११ मासपुरी बसायो ।
- ॥ १४२३ रैखपुरी बेहुरो पापना ।
- ॥ १ २ बीतोड बिर्गवर मोडीये बसाई ।
- ॥ १२४३ विमल मन्नीस्वर हूवो विमल बसाई ।
- ॥ १९ १ पातसिहू प्रबवर बीतोड लोपी के सुदी १२ ।
- ॥ १९३६ पातसाह प्रबवर रावा जरीसिहूजी नु म्हापाजा रो कितार लीयो ।
- ॥ १९३४ पातसाह प्रबवर नखोबिबा लोपी ।

३ २	देवताम्बर मठ के बीरावी बोल		हिन्दी	१४३-४१
३ ३	जैन मठ का संरक्ष	×	संस्कृत	प्रपुण
३ ४	बाहर माटोड की पत्नी	×	हिन्दी पद्य	१५१

स १८५८ अमास वरी १४

सबकजिन प्रणामि हित मुकपान पनावा की लिखित ।

मुमुनी महीशम्भरि को चिदय मवर्तद हुकम मुग्गा तवय ॥१॥

किरपा फुरिण मोहन जीवणाय, अपरंपुर भारोठ थानकर्यं ।
 सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देख सु आगम भक्ति यजै ॥२॥
 तीर्थङ्कर ईस भक्ति धरै, जिन पूज पुरदर जेम करै ।
 चतुसध सुभार घुरघरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकय ॥३॥
 अत द्वादस पालस सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुथरा ।
 बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
 धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिसा, सद्गन्धेयास दानपति जु तिसा ।
 निज वस जु व्योम दिवाकरय, गुण सौख्य कलानिधि बोधमय ॥५॥
 सु इत्यादिक वोयम योगि बहु, लिखियो जु कहा लग वोय सहू ।
 दयुडा गोठि जु श्रावण पच लसै, शुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसै ॥६॥
 तिह योगि लिखै ध्रम वृद्धि सदा, लहियो मुख सपति भोग मुदा ।
 ॥७॥

इह थानक आनन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कूपै ।
 अपरंच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परमन तितै ॥८॥
 सहू वात जु लाय ध्रमकरं, ध्रम देव गुरु पसि भक्ति भरं ।
 मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥९॥
 यशधत विनैवत दातृ गहो, गुणशील दयाध्रम पालक हो ।
 इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
 लिखियो लघु को विघमान यहू, सुख पत्र जु बाहुडता लिखि हू ।
 वसूँ वाणवसूँ पुनि चन्द्र किय, वदि मास असाढ चतुर्दिशिय ॥११॥
 इह ओटक छद सुचाल मही, लिखदी पतरी हित रीति वही ।
 ॥१२॥

तुम भेजि हू यैक सकर नै, समाचार कह्या मुख तै सुइनै ।
 इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवान सबै सुखतै ॥१३॥

॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती नु ॥

५४०३ गुटका सं० २३ । पत्र सं १८२ । मा ८×५३ इ. च । पूर्ण । बघा-सामान्य ।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में से विविध पाठों का संग्रह है ।

५४०४ गुटका सं० २४ । पत्र सं ८१ । मा ७×६ इ. च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय पूजा ।

पूर्ण । बघा-सामान्य ।

१	चतुर्विधासि शोचकुराष्टक	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१-१२
२	त्रिनक्षत्रसप्तम जयमाल	रत्नसूषण	हिन्दी	११-१२
३	समस्त ऋत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	"	७-७१
४	शान्तिनावाष्टक	×	"	७३-७४
५	मणिलेखनाकर जयमाल	×	"	७३-७७
६	मालीश्वर भारती	×	"	८१

५४०५ गुटका सं० २५ । पत्र सं १५७ । मा ९×३ इ. च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले. काल सं

१७५३ आस्तात्र सुखी १३ ।

१	पद्यसहायपूजा	×	संस्कृत	१-३
२	तद्युत्सवसु स्ताव	×	"	११-१८
३	सास्त्रपूजा	×	"	१२-१४
४	पाठमानाएणपूजा	×	"	२४-२७
५	त्रिनक्षत्रसप्तम (मधु)	×	"	२७-३२
६	सोमनाएणपद्य	मुनि सफलकीर्ति	हिन्दी	३३-३८
७	देवपूजा	×	संस्कृत	४०-६६
८	सिद्धपूजा	×	"	६७-७३
९	पञ्चमेणपूजा	×	"	७४-७५
१०	पटा सृजावति	×	"	७६-८६
११	तन्त्रार्थसूत्र	उमास्वामी	"	८-१५
१२	रत्नसूत्र	वंशिताबाध नरेन्द्रसेन	"	११९-१३०
१३	धनाधर्मीपूजा	ब्रह्मसेन	"	१३८-१४२
१४	गोवहृद्दिशरण	×	हिन्दी	१४६

गुटका-संग्रह]

१५. बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-५४
१६ शास्त्रजयमाल	×	प्राकृत	१५५-५१

५१०६ गुटका सं० २६ । पत्र सं० १४३ । आ० ५×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ वृदी २ ।

पूर्णा । दशा-जीर्णा ।

१ विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२ भूपालस्तोत्र	भूपान	"	५-९
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	९-१३
४ सामयिक पाठ	×	"	१३-३२
५ भक्तिगठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३-७०
६ स्वयंभूस्तोत्र	समन्त गद्राज	"	७१-८७
७ वन्देतान की जयमाला	×	"	८८-८९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	८९-१०७
९. श्रावकप्रतिक्रमण	×	"	१०८-२३
१० गुर्वावलि	×	"	१२४-३३
११ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४-१३९
१२ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३९-१४३

सवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ वृदी द्वितीया रवौदिने अर्द्धह श्री वनौघेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसधे सरस्वतोगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयनन्दपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्र ब्रह्मा श्री अभयसागर सहायेनेद क्रियाकलापपुस्तक लिखित श्रीमदधनौघेन्द्रगच्छ हुंबज्जातीय लघुशाखाया समुत्पन्नस्य परिवारविदासस्य भार्या वाई कीकी तयो संभवा सुता अताइनाम्ने प्रदत्तं पठनार्थं च ।

५४०७ गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ । पूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—प० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१ शास्त्र पूजा	×	संस्कृत	१-२
२ स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

३	संगल पाठ	×	संस्कृत	८-९
४	मत्स्यपुराण	×	"	९-११
५	सीतली नीलीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६	कर्मनपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७	भैरवनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
८	पद्ममेखला	शुभरदास	हिन्दी	१५-२
९	महाहिकामुजा	×	संस्कृत	२१-२५
१०	बोकाकारणमुजा	×	"	२५-२७
११	बसवकारणमुजा	×	"	२७-२९
१२	पद्मपरमेष्ठीपुजा	×	"	२९-३१
१३	मनसुखतपुजा	×	हिन्दी	३१-३३
१४	जिनसहस्रनाम	प्राशापर	संस्कृत	३४-४६
१५	मत्तारस्तोत्र	मालगु भाचार्य	संस्कृत	४७-५३
१६	सखीस्तोत्र	पद्मप्रमद	"	५२-५३
१७	पद्मस्तोत्र	×	"	५६-६
१८	पद्मस्तोत्रसहस्रनाम	×	"	६१-७१
१९	सत्त्वार्थसुत्र	उमास्वामि	"	७२-८७
२०	सम्पन्न विचार निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८-९१
२१	सुखसम्पन्नस्तोत्र	×	संस्कृत	९२-९७
२२	सत्त्वार्थसुत्र (१-३ अध्याय)	उमास्वामि	"	९९-१००
२३	सत्त्वस्तोत्रनामा	हेमराज	हिन्दी	१ - १६
२४	सत्त्वस्तोत्रनामा	बनारसीदास	"	१७-१११
२५	निर्वाणसम्पन्ननामा	मगधतीदास	"	११२-११
२६	स्वरोत्पत्तिविचार	×	"	११४-११
२७	बाईसपरिपह	×	"	१२ - १२५
२८	सायामिकपाठ लघु	×	"	१२६-२६

२६ श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३० क्षेत्रपालपूजा	×	”	१२८-३२
३१. चिंतामणीपार्श्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२. कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३९
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	”	१४३-४६
३५. ज्योतिष चर्चा	×	”	१४७-१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । आ० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । आ० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर मुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१० गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनसुख सोनी ने अलवर में साहू दुलोचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । आ० ५×६ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनों का संग्रह है ।

५४१४ गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१ ज्योतिषसार

कुमाराम

हिन्दी

१-१०

र काम सं० १७१२ कार्तिक सुदी १ ।

प्रावित्राग बाहा—

सकल ज्योतिष सार प्रसुर नर, परसत गणपति पाम ।
 सो गणपति मुनि बोधिये बन प्रपनों चित्तवाम ॥
 परस परसों चरनन क्रमस मुगत राधिका स्वाम ।
 भरत ध्यान दिन चरन को सुर न (१) मुनि प्राठों काम ॥
 हरि राधा राधा हरि, बुधस एक्या प्रम ।
 जगत प्रारसी में नमों बुद्धो प्रतिबिम्ब बन ॥
 सोमति मोठे मत पर एकहि बुधस निखोर ।
 मनो लस बन मोठे सति दामिनी चार घोर ॥
 परसे प्रति जय चित्त के चरन राधिका स्वाम ।
 नमस्कार कर बोरि के आचर किरपाराम ॥
 साहिबहापुर सहर में काम्य राजाराम ।
 कुमाराम विहि बंस में ता सुठ किरपायाम ॥१॥
 लघु ज्योतिष का ग्रन्थ यह मुनो पठितन पास ।
 ताके सबै स्लोक के बोधा करे प्रकास ॥७॥
 श्री प्रबहु जे सुनी लयो बु प्ररन निकारि ।
 ताको बहुविधि हेत ली, कसो ग्रन्थ विस्वार ॥८॥
 संवत् सत्तरहें चरस घोर बाण्ये जानि ।
 कार्तिक सुदी दशमी बुद रज्यो बन्ध पहचानि ॥९॥
 सब ज्योतिष को सार यह, सिमो बु प्ररन निकारि ।
 नाम चरघो या ग्रन्थ को तासैं ज्योतिष सार ॥१॥
 ज्योतिष सार बु ग्रन्थ की कल्प ब्रह्म मनु लेखि ।
 ताको नम सात्वा लघुत बुद्धो बुद्धो ज्योतिष ॥११॥

अन्तिम—

अथ वरस फल लिखते—

सवत् महै हीन करि, जनम वर (ष) ली मित्त ।
 रहै सेष सो गत वरष, आवरदा मै वित्त ॥६०॥
 भये वरष गत अङ्क अरु, लिख घर वाहू ईस ।
 प्रथम येक मन्दर है, ईह वही इकतीस ॥६१॥
 अरतीस पहलै घूरवा, अक को दिन अपनै मन जानि ।
 दूजै घर फल तीसरो, चौथे अ अखिर ज ठान ॥६२॥
 भये वरष गत अक को, गुन घरवावो चित्त ।
 गुणाकार के अक मै, भाग सात हरि मित्त ॥६३॥
 भाग हरै तै सात कौ, लबध अक सो जानि ।
 जो मिलै य पल मै बहुरि, फल तै घटी बखानि ॥६४॥
 घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो अक ।
 तामे भाग जु सप्त को, हरि ये मित्त न सं ॥६५॥
 भाग रहै जो सेष सो, बचै अक पहिचानि ।
 तिन मै फल घटीका दसा, जन्म मिलावो अनि ॥६६॥
 जन्मकाल के अत रवि, जितने बीते जानि ।
 उतनै वातै अस रवि, वरस लिख्यौ पहिचानि ॥६७॥
 वरस लग्यौ जा अत मै, सोइ देत चित्त धारि ।
 वादिन इतनी घडी जु, पल बीते लगुन वीचारि ॥६८॥
 लगन लिखै तै गोरह जो, जा घर बैठी जाइ ।
 ता घर के फल सुफल को, दीजे मित्त बनाइ ॥६९॥
 इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार सपूर्णम्

१ पाशाकेवली

×

हिन्दी

३१-३६

२ शुभमुहूर्त्त

×

”

३६-४१

३४१३ गुटका सं० ३३। पत्र सं० १८। मा १३×५३ इञ्च। मापा-×। विषय-२ प्रह। से काम १८६३ माह बुकी ३। पूर्ण। हिन्दु। बधा-सामान्य।

विषय—बकुर में प्रतिनिधि की गई थी।

१	भूमिगायत्री के दश मंत्र	×	हिन्दी पद्य	१ ३
२	निर्वाण काष्ण मत्या	मगबसीवास	" १ काम १७४१	३ ७
३	बर्धन पाठ	×	संस्कृत	८
४	पार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	६-१
५	बर्धन पाठ	×	"	, ११
६	राजुलपत्नीसी	सामान्य विनासीवास	"	१२-१८

३४१६ गुटका सं० ३६। पत्र सं १ ६। मा ८।१ इञ्च। मापा-हिन्दी। विषय-संस्कृत। से काम १७८२ माह बुकी ८। पूर्ण। समुद्र। बधा-भीर्षा।

विषय—गुटका भीर्षा है। किपि विद्वत् एवं विमकुल समुद्र है।

१	डोसा मारणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं ४१५	१-२४
२	बहरीमायत्री के छन्द	×	"	२६-३
				से काम १७८२ माह बुकी ८
३	राम कीना	×	हिन्दी	३ -३१
४	प्रह्लाद चरित	×	"	३१-३४
५	माहम्मद राजा की कथा	×	"	३१-४२

११३ पद्य। पौराणिक कथा के आधार पर।

६	मगतवस्तावलि	×	हिन्दी	४२-४४
				में १७८२ माह बुकी १३।
७	अनार गीत	×	"	१२१ पद्य ४४-५३
८	पुनीता	×	"	५३-५५
९	एत्र भीष कथा	×	"	५३-५६
१	पुनीता	×	"	पद्य सं ५४ ५६-६

११. वारहखडी	×	हिन्दी	६०-६२
१२. विरहमञ्जरी	×	"	६२-६८
१३. हरि वोला चित्रावली	×	" पद्य स० २६	६८-७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	"	७०-७४
१५. रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५-७७
१६. हरिरस	×	हिन्दी	७८-८५

विशेष—गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था । लेखक रामजी मीणा था ।

५४१७ गुटका स० ३७ । पत्र स० २४० । आ० ७३×५३ इञ्च ।

१. नमस्कार मंत्र सटीक	×	हिन्दी	३
२. मानवावनी	मानकवि	"	५३ पद्य है ४-२८
३. चौबीस तोरुङ्कर स्तुति	×	"	३२
४. आयुर्वेद के नुसखे	×	"	३५
५. स्तुति	कनककीर्ति	"	३७

लिपि स० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत	४१
------------------------	---	---------	----

कुशला सौगारणी ने स० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के श्रोत्र्ये से लिखी ।

७. तत्त्वार्थसूत्र	उमान्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक ६१
८. नेमीश्वररास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२० स० १६१५ १७२
९. जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि स० १७१० १७६
१०. पद	×	"	"
११. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	२०४
१२. दानशीलतापभावना	×	"	२०५-२३६
१३. चतुर्विंशति छप्पय	गुणकीर्ति	"	२० स० १७७७ असाढ़ वदी १४

आदि भाग—

आदि अत जिन देव, सेव सुर नर नुभू करता ।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि अघ हरता ॥

सरसुति तनद पगाइ ज्ञान समशीलिन पूरइ ।
 गारइ तागी पाइ जेमि दुग दानिइ भरइ ॥
 गुरु निरङ्गप प्रणम्य कर त्रिन जउसीसो मन धरउ ।
 शुनकीति हम उषरइ मुम बगाइ र देगा तरउ ॥१॥
 नाभिराव मुसबन्ध न- मरैति जानउ ।
 बाइ धनुष शत पञ्च मुपम साणन पु बरानउ ॥
 हेम बर्ष बहि बागु, घागु मरम पु सोरामी ।
 पूरव गनती एहु जगम धयोप्या वासी ॥
 भरपहि रागु मु मोनि कर धरटाइ रीपउ ताग ।
 शुनकीति हम उषरइ, मुमबिण साठ बन्दहु गरा ॥१॥

अन्तिम भाग—

धीमूनसंम विन्यावगल सरसुतिय बगानउ ।
 तिहि महि त्रिन जउसीस ऐहु सिखा मन जानउ ॥
 पराव छइ प्रसादु, जतग मूनबन्ध प्रमुजानी ।
 साहिजिहा पतिसाहि, रागु दिनीपति घानी ॥
 मतरहुसइइ सवातरा बनि मसाइ पडमि करमा ।
 शुनकीति हम उषरइ, मु सवम संप त्रिनकर सरना ॥

॥ इति श्री चतुर्विंशततीर्थंकर धरैवा सन्मूर्ग ॥

१३ सीतारास गुरुकीति हिन्दी रचना स १७१३ २४

५२१८ गुटका सं० ३८—वसंतस्था—२२६ । —भा १ × ७॥ तथा—बीर्ष ।

विशेष—३४ पृष्ठ तक धामुर्वेव के प्रश्ने मुसजे है ।

- | | | | |
|-----------------|---|---------|---------------------------|
| १ प्रभावती बलय | × | हिन्दी | कई रोगों का एक मुसबा है । |
| २ नाड़ी परीक्षा | × | संस्कृत | |

करीब ७२ राशियों को चिकित्सा का विस्तृत बर्णन है ।

३ श्रील सुदर्शन रासो × हिन्दी ३७-४२

४ पृष्ठ सख्या ५२ तक निम्न अवतारो क सम्मान्य रगीन चित्र है जो प्रदर्शनी के योग्य हैं ।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार
(६) वराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्कावतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा
(११) पार्श्वनाथ चैत्यनय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५ ञाकुनावली × सस्कृत ५६

६ पाशकेवली { दोष परीक्षा } × हिन्दी ६६

जन्म कुण्डली विचार

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के गणित करने का पत्र है ।

८. भक्तामरस्तोत्र मानसु ग सस्कृत ७३

९. वेद्यमनोत्सव (भाषा) नयन सुख हिन्दी ७४-८१

१०. राम विनाद (आयुर्वेद) × " ८२-९८

११ सामुद्रिक शास्त्र (भाषा) × " ९९-११२

लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पञ्चोली

१२ शोघ्रबोध काशीनाथ सस्कृत

१३ पूजा सग्रह × " १९४

१४ योगीरायो जिनदास हिन्दी १९७

१५ तत्वार्थसूत्र १ उमा स्वामि सस्कृत २०७

१६ कल्याणमन्दिर (भाषा) बनारसीदास हिन्दी २१०

१७ रविवारव्रत कथा × " २२१

१८ व्रतो का व्योरा × " "

अन्त मे ६४ योगिनी आदि के यत्र हैं ।

५४१६ गुटका स० ३६—पत्र स० ६४ । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१४२० गुटका सं० ४०—पत्र सं १३ । मा० ८॥५६ इत्य । भाषा—हिन्दी । मे० सं० १८८० पूरा । सामान्य गुड ।

विलय—मूत्राशौ का संग्रह तथा गुड ८ से गरज स्वर्ण एवं पृथ्वी प्रादि का परिष्कृत किया हुआ है ।

१४२१ गुटका सं० ४१—पत्र संख्या—२२७ । मा०—८५१॥ इत्य । मेकन काल—संवत् १८७२ माह बुध ७ । पूर्ण । यथा उत्तम ।

१	समयमारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	एव० सं १६९३	आलो मु ११ १-२१
२	मालिन्धमामा	संग्रह वर्ता	हिन्दी	संस्कृत	प्राकृत सुभाषित ५२-१११
	३ पत्रभोसरी	बहुत मानसागर			
३	बेबागमस्तोत्र	भाचार्य समस्तभद्र	संस्कृत		निधि संवत् १८९६

द्वारा रामसौगमनी के करोनी चन्द्रा के पठनार्थ हाथीसी भाष में प्रति लिपि की । छ १११से ११२ ।

४	अनादिनिधनस्तोत्र	×	"	निधि सं १८९६	११५-११६
५	परमार्थस्तोत्र	×	संस्कृत		११६-११७
६	सामाधिक्याठ	अमितपति	"		११७-११८
७	पंडितमण्ड	×	"		११९
८	श्रीश्रीश्रीर्षदूरभक्ति	×	"		११९-२

मेकन सं ११७ बेबाग मुटी १

९	तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी		१२
१०	वर्तमान	×	संस्कृत		१२३
११	बंकराज	बंकराज	हिन्दी		१२४-१२५
१२	कल्पलुभंहर भाषा	बनारसीदास	"		१२५-३
१३	विगतवहाणतोत्र भाषा	अचलजीति	"		१२ -३२

रचना काल १७१५ ।

१४	बनारस लोच भाषा	हराराज	हिन्दी		१३२-३४
१५	बसनादि बसनादि की भाषना	मुचरदास	"		१३५-३६

गुटका-समग्र]

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	”	१३-३७
१७ श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७-३८
१८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८-४५
१९. सामायिक बढा	×	”	१४५-५२
२०. लघु सामायिक	×	”	१५२-५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३-५४
२२. बाईस परिषद्	भूधरदास	”	१५४-५७
२३. जिनदर्शन	”	”	१५७-५८
२४. सवोधपंचासिका	द्यानतराय	”	१५८-६०
२५. बीसतीर्थकर की जकडी	×	”	१६०-६१
२६. नेमिनाथ मंगल	लाल	हिन्दी	१६१ १६७
र० सं० १७४४ सावरण सु० ६			
२७. दान बावनी	द्यानतराय	”	१६७-७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैरव्या भगवतीदास	”	१७१-१८३
र० १७३६ जेठ वदी ७			
२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४-८९
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	”	१८९-९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९२-९४
३२. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	”	१९४-९६
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	”	१९६-९८
३४. एकीभावस्तोत्र	बादिराज	”	१९८-२००
३५. भूपालचौबीसी	भूपाल कवि	”	२००-२०२
३६. देवपूजा	×	”	२०२-२०५
३७. विरहमान पूजा	×	”	२०५-२०६
३८. सिद्धपूजा	×	”	२०६-२०७

३६	सोमहकारणपूजा	×	"	२ ७-२०८
४०	वज्रसदाणुपूजा	×	"	२०८-२०९
४१	रत्नमयपूजा	×	"	२ ९-१४
४२	कर्मिभुक्त्वास्वमापस्तोत्र	×	"	२१४-२२५
४३	विदामणि पार्वनाथपूजा	×	"	२२५-२६
४४	घातिभाषस्तोत्र	×	"	२२६
४५	पार्वनाथपूजा	×	"	मपूर्व २२६-२७
४६	बीबीस तीर्थचक्र स्तवन	देवनागि	"	२२८-३७
४७	नवग्रहमिष पार्वनाथ स्तवन	×	"	२३७-४
४८	कर्मिभुक्त्वास्वमापस्तोत्र	×	"	२४०-४१
मिलान काल १८६३ माघ सुदी ३				
४९	परमानन्दस्तोत्र	×	"	२४१-४३
५	सच्चिदानन्दस्तोत्र	×	"	२४३-४६
मिलान काल १८७० वैशाख सुदी ३				
५१	सूक्तिमुक्तामिस्ताम	×	"	२४६-५१
५२	जिनेन्द्रस्तोत्र	×	"	२५२-५४
५३	बहुराज्यमा पुस्तक	×	हिन्दी गद्य	२५७
५४	बीसठ कथा स्त्री	×	"	"

५५२ गुटका स ४२ । पत्र स ३२९ । मा ७५४ दृष्ट । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भूमरवास की का वर्ण समाप्त है ।

५५२३ गुटका स० ४३—पत्र स ५८ । मा ९२×५२ दृष्ट । भाषा—संस्कृत । स काल १७८७
 वातिक शुद्ध १३ । पूर्ण एवं सुद ।

विशेष—य वेदशास्त्रमें साह्य की व्यवस्था के पठनाई भट्टारक की देवचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी । प्रति
 संस्कृत टीका सहित है । सामायिक पाठ या द का संस्कृत है ।

५५२४ गुटका स० ४४ । पत्र स ८३ । मा १ × ५ दृष्ट । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । बसा वीर्ण ।

विशेष—वर्णियों का संस्कृत है ।

गुटका-समह]

४४२५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १४० । आ० ६३×५ इञ्च । पूर्ण ।

१	देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	१-७
२	कमलाष्टक	×	"	८-१०
३	गुरुस्तुति	×	"	१०-११
४	सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५	कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१६
६	षोडशकारणपूजा	×	"	१६-२२
७	दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८	नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
९	पचमेरूपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६-४५
१०	अनन्तचतुर्दशीपूजा	" मेरुचन्द्र	"	४५-५७
११	ऋषिमण्डलपूजा	गौतमस्वामी	"	५७-६५
१२	जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६-७४
१३	महाभिषेक पाठ	×	"	७४-८६
१४	रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	८७-१२१
१५	ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२-२५
१६	क्षेत्रपाल की आरती	×	"	१२६-२७
१७	गणधरबलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८	आदित्यत्रारकथा	वादीचन्द्र	हिन्दी	१२९-३१
१९	गीत	विद्याभूषण	"	१३१-३३
२०	लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१	पद्मवतीछन्द	भ० महीचन्द्र	"	१३४-१४०

४४२६ गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६ । आ० ७३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पूर्ण एवं प्रसुद्ध ।

विशेष—वत्सतराज वृत्त यकुन शान्त्र है ।

मूलसंघे वलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदपठाने वद्ये वृंदारकादिति ॥ ४ ॥
नदिसघोभवत्तत्र नदितामरनायकः ।
कु दकुंदार्यसज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महाम् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।
हमीर-भूपसेव्योय धर्मचद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्र थविशारद ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामव्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।
प्रभाचद्रो जगद्धंद्यो परवादिभयकर. ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेघावी शान्तमुद्रक ।
पचनदी जिताक्षोभूतत्पट्टे यतिनायक ॥ ९ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजिताह्लिविशुद्धधी ।
श्रुतचद्रो महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १० ॥
प्रामाणिक प्रमाणेऽमूदरगमाध्यात्मविश्रद्धी ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवित ॥ ११ ॥
भर्हत्प्रणीततत्त्वार्थजाद पति निशापति ।
हृतपचेषुरस्तारिजिनचद्रो विचक्षण ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमाकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
तत्रास्ति भारत क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम ।
धनधान्यसमाकीर्णग्रासैर्देवहितिसमै ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखकर ।
मनोगतमहाभोग दाता दातृसमन्वित ॥ १५ ॥
तोडास्थोभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य श्रियापर ।
तच्छाखानगर योपि विश्वमूर्तिविधाययत् ॥ १६ ॥

२४२७ गुटका सं० ४७ । पत्र स ३४० । मा ८५४ इक्ष पूर्ण । बसा-सामाग्य ।

१	सूर्य के दस नाम	×	सम्पुत	१
२	बन्दी मोक्ष स्तोत्र	×	"	१-२
३	निर्वाणविधि	×	"	२-३
४	मार्कण्डेयपुराण	×	"	४-५६
५	कानीसहरानाम	×	"	५८-१३२
६	सुसिहपूजा	×	"	१३३-१५
७	देवीसूक्त	×	"	१३६-१५
८	ब्रह्म-संहिता	×	सम्पुत	१६९-२३३
९	अनातापतिनी स्तोत्र	×	"	२३३-३६
१०	हरगौरी लपार	×	"	२३६-७३
११	मातमण्डल कवच एवं महक	×	"	२७३-७६
१२	बामुण्डोलनिबन्ध	×	"	२७६-२८१
१३	पीठ पूजा	×	"	२८२-८७
१४	शोमिणी कवच	×	"	२८८-३१०
१५	मार्गदशहारी स्तोत्र	रांकराचार्य	"	३११-२४

२४६८ गुटका सं० ४८ । पत्र स०—२२२ । मा —६॥२॥ इक्ष पूर्ण । बसा-सामाग्य ।

१	विजयलक्ष्मण	वं० माताधर	सम्पुत	१-१४१
२	ब्रह्मसिद्धि	ब्रह्म बाबोबर	"	१४१-४३

बोधा—

ॐ नमः सरस्वत्यै । मन्त्र ब्रह्मसिद्धि ।

भीमंतं सम्मतिर्भू, निःकर्णान् चपस्सुत्तम् ।

नक्षत्रा प्रणम्य ब्रह्मदेव्यं ब्रह्मसिद्धिं वा सुखोत्तमं ॥ १ ॥

स्वप्नादिनी वाग्नी ब्रह्मसिद्धिं ब्रह्मसिद्धिनी ।

सम्पुतारविधिं वापि ब्रह्मसिद्धिं सत्यं करो ॥ २ ॥

ब्रह्मसिद्धिं मोक्षमाप्नुयुः संतारार्थं ब्रह्मसिद्धिः ।

ब्रह्मसिद्धिं-ब्रह्मसिद्धिं-ब्रह्मसिद्धिं-ब्रह्मसिद्धिः ॥ ३ ॥

मूलसधे वलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदष्ठाने वद्ये वृन्दारकादिति ॥ ४ ॥
नदिसधोभवत्तत्र नदितामरनायकः ।
कुदकुन्दार्यसज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।
हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्त्वज्ञो नानाग्रथविशारद ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।
प्रभाचद्रो जगद्धधो परवादिभयकर ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तमुद्रक ।
पद्मनदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायक ॥ ९ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजिताह्निविशुद्धधी ।
श्रुतचद्रो महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १० ॥
प्रामाणिक प्रमारोऽमूदरगमाध्यात्मविश्वधी ।
लक्षणो लक्षणार्थज्ञो भूपालवृन्दसेवित ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्त्वार्थजाद पति निशापति ।
हतपचेष्टुरन्तारिर्जिनचद्री विचक्षण ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमाकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
तत्रास्ति भारतं क्षेत्र सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम ।
धनधान्यसमाकीर्णग्राहैर्देवहितिसमै ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखकर ।
मनोगतमहाभोग दाता दातृसमन्वित ॥ १५ ॥
तोडाह्योभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य श्रियापर ।
तच्छाखानगरं योषि विश्वभूतिविधाययत् ॥ १६ ॥

स्वच्छपानीयसंपुरो वापिकूप्यादिभिर्महत् ।
 भीमद्वगहृदानामहृद्व्यापारसूपितं ॥ १७ ॥
 महत्तुषेत्सामने रेणे जगद्वर्नवकारकै ।
 विचित्रमठयदोहे कलिस्त्रयनसुमोदितो ॥ १८ ॥
 प्रजन्त्यामिपतिस्तस्य प्रजापतिो तस्यसुरस्य ।
 कल्प्यात्तदो विभक्त्येव तैः प्रजापतयोषव ॥ १९ ॥
 सिध्यस्य पासकी जातो बुष्टमिग्रहकारकः ।
 पंचायमत्रविष्णुरो विद्यायास्तत्रविष्णुरव ॥ २० ॥
 सौम्योर्वाभ्युद्योपेतो राजनीतिविदांश्वरः ।
 रामसिंहो विदुर्भीमात् भूषयैत्रो महायथीः ॥ २१ ॥
 प्रासाद्वर्णिकम्बरस्तत्र धेनवर्मपरस्यणः ।
 पात्रबालावर श्रेष्ठो हृत्विचन्द्रोद्युयाप्रखीः ॥ २२ ॥
 भावकाचारसंपत्ता ब्रह्माहारादिबालका ।
 भीतसूमिरसूतस्य भूजपिप्रियवादिनी ॥ २३ ॥
 पुत्रस्तयोरसूतसापुष्यकार्हात्सुमृत्किल ।
 परोपकरणास्मातो विमार्चनक्रियोद्यत ॥ २४ ॥
 भीवकाचारतस्वज्ञो बुकास्व्यवादिभः ।
 वेस्हा साधु ब्रह्माचारी यज्वरतप्रविह्वलः ॥ २५ ॥
 तस्य भर्त्या महासाध्वी भीमन्दीरत्तरपिणी ।
 प्रियवदा ह्रितावातावामी सोम्यचारिणी ॥ २६ ॥
 तयोः क्रमेण संवापी पुत्रो तामप्यसम्पुरी ।
 प्रयप्यपुष्यसस्वानी रामसामणकचिद ॥ २७ ॥
 विमयसोरमचानन्दचारिणी ब्रह्मचारिणी ।
 महतीर्षमहाबाबासपकर्त्तप्रविधामिनी ॥ २८ ॥
 रामसिंहमहामुग्गयानपुष्पो पुत्रो ।
 समुद्र तमिनामाटी धर्मानाबुनहोतमी ॥ २९ ॥

तथ्यादरोभवद्धीरो नायकै खचन्द्रमा ।
 लोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
 तत्कामिनी महच्छीलधारिणी शिवकारिणी ।
 चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापञ्चान्तापहारिणी ॥ ३१ ॥
 कुलद्वयविशुद्धासीत् सधभक्तिसुरषणा ।
 धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ भाक्तिका ॥ ३२ ॥
 पुत्रावाप्नान्तयो स्वीयरूपनिजितमन्मथौ ।
 लक्षणाक्षूणसद्गात्री योषिन्मानसवल्लभौ ॥ ३३ ॥
 अर्हद्देवसुसिद्धान्तगुरुभक्तिसमुद्यतौ ।
 विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥ ३४ ॥
 तुषारद्विष्ठीरसमानकीर्ति कुटुम्बनिवहिकरो यशस्वी ।
 प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकजभानु ॥ ३५ ॥
 भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्येन्दुसकासमुखोवरिष्ठ ।
 श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥ ३६ ॥
 हस्तद्वये यस्य जिनार्चन वैजैनो वरावाग्मुखपकजे च ।
 हृद्यक्षर वार्हत्तमक्षय वा करोतु राज्यपुरुषोत्तमोय ॥ ३७ ॥
 तत्प्राणवल्लमाजाता जैनव्रतविधाग्निनी ।
 सती मत्तल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥ ३८ ॥
 चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।
 नैनश्रो सुधावात्कव्योकोशाभोजसन्मुखी ॥ ३९ ॥
 हर्षमदे सहर्षात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
 दानमानोन्सवानन्दवर्द्धिताशेषचेतस ॥ ४० ॥
 श्रीरामसिंहेन नृपेण मान्यश्रुतुर्विधश्रीवरसधभक्त ।
 प्रद्योतितशेषपुराणलोको नाथू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥ ४१ ॥
 आहारशास्त्रीषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधु ।
 कल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्नाथुमुसाधुर्जयतात्वरिव्या ॥ ४२ ॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परंप्रसस्यं श्रीशास्त्रवदन्तहृतसाम्यमात्र ।
 स्वर्गापवर्गैकविस्रुतिपार्श्वं समस्तशास्त्रार्थविधानवर्णं ॥४१॥
 बालेषु सारं मुनिघास्त्रवार्तनं यथा त्रिसोक्त्या जितपुगबोज्य ।
 मूर्ध्नि पुर्या परमवकार्णं व्यसीमित्तास्त्राभूतमां प्रतिष्ठां ॥४२॥
 सक्तवा शुभाभानं प्रतिष्ठास्मारमुत्तम ।
 ब्राह्मणामोदरायापि वत्तवात् ज्ञानहेतवे ॥४३॥
 भस्पाभ्रवाणसूपाके राज्येतीतेति कुम्भरे ।
 विष्णुमर्षित्यमूपस्य मूमिपासगिरोमखे ॥४४॥
 ज्यन्ते माषे सिते पक्षे सोमवारि हि सीम्यकै ।
 प्रतिष्ठासार एवासी समाप्तिमगमत्पद्यं ॥४५॥
 मूर्ध्निस्त्रमांजीजनयावर्तगी सर्वभूषणाकुम्भकृष्टसर्वपात्र ।
 पद्मान्तो घासनदेवता सा नाम्नु सुषामु विरमेव पातम् ॥४६॥
 म्युषोदितता पर येन प्रमणुपुष्यारते ।
 श्रीमत्संविद्भ्रंशोस्त्र नाम्नु सामुः सन्त्यतु ॥४६ ।

॥ इति प्रसस्त्यावली ॥

३	वर्णपिशाचिनीमत्र	×	संस्कृत	१४५
४	मन्त्रास्तोत्रिकविविधि	×	"	१४६
५	नवग्रहस्वारनाविधि	×	"	"
६	पूजार्थी सामग्री वी मूर्ची	×	हिन्दी	१४२-१४३
७	समाधिमरण	×	संस्कृत	१६-१४
८	कर्मविधि	×	"	१०३-११२
९	भैरवाष्टक	×	"	११६
१०	भावापररत्नोक्त संक्षसहित	×	"	११५-२१४
११	वशावात्पञ्चानिवा पूजा	×	"	२१८

४४२६ गुटका सं० ४६—वक्र सं -१८ । पा -२५४ इत्य । मेलन काव सं —१८२४ पुण ।

१. सयोगवतीसी	मानकवि	हिन्दी	१-२५
२ फुटकर रचनाएं	X	"	२६-५८

५४३० गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । आ० ८X५ इञ्च । ले० काल १८६४ मगसरसुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गगाराम वैद्य ने सिरोज में ब्रह्मजी सतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१ राजुल पञ्चीसी	विनोदीलाल लालचद	हिन्दी	१-५
२ चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	"	६-२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	"	२७-३२

नेमीश्वर राजुल को भगडो लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोडी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठारो ।
 सेज विचित्र तु लाई अनोपम सु दर नारि को सग न जानू ॥
 सूक तनु सुख छोडि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो अनजानू ।
 राजुल पूछत नेमि कुंवर कू योग विचार काहा मन आनू ॥ १ ॥

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मति मुठ न जान जानत हो भव भोग तन जोर घटें हैं ।
 पाप बढे खटकर्म धके परमारथ को सब पेट फटे हैं ॥
 इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
 नेमि कुंवर कहे सुनि राजुल योग बिना नहि कर्म कटे हैं ॥ २ ॥

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरवार भये व्रतधार श्लोक गोसाई ।
 घूप अन्नप घनावन धार तुवाट सहो ७ काई के तोई ॥
 भूख पियास अनेक परिसह पावन हो कछु सिद्धन आई ।
 राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार सुनु मन लाई ॥ १७ ॥

नेमीश्वरोवाच

काहे को वहूत करो तुम स्थापनप येक सुनो उपदेस हमारो ।
 भोगहि भोग किये भव हूवत काज न येक सरे जु तुम्हारी ॥

मानव जन्म बड़ी अगमान के फल बिना मनु कूप में डारो ।

मेरी कहे सुन राहुन तू सब मोह लजि के फल सवारो ॥ १८ ॥

अन्तिम भाग—राहुलीबाब—

भावक धर्म त्रिया सुम पैपल शाब कि सगत बेग सुनाइ ।

भोग लजि मन सुष करि जिन मेम लयी अब सगत पाइ ॥

भेद धर्मक करी हड़टा जिन माण फी सब बल सुनाई ।

भोग करी मन भाव करी करी राहुन नार भई तब जाई ॥ १९ ॥

कलस—

आदि रचमहा विवेक सफल मुक्ती समकाम्यो ।

मेमिनाब हड बिल बबहु राहुन कु समासाम्यो ॥

राजमति प्रबोध के सुष भाव संयम सीयो ।

बहु ज्ञानसागर कहे बार मेमि राहुन क्योयो ॥ २० ॥

॥ नति मेमीदकर राहुन विबाद सपूर्णम् ॥

४	मष्टाङ्गिबाबत कथा	बिनयकति	हिन्दी	३२-३३
५	पाठ्यनापस्ताब	पद्यप्रबोध	संस्कृत	३५
६	द्यानिनापस्ताब	मुनिपुण्यभद्र	"	"
७	वर्षमानपस्ताब	×	"	३६
८	बितामण्डितनापस्ताब	×	"	३७
९	निर्वाणबाबत भाषा	भववतीनास	हिन्दी	३८
१०	यात्रिनापस्ताब	द्यानतराय	"	३९
११	गुरुबिनी	भूपरदास	४	४
१२	माताभेदी	बनारसीबहा	"	४१-४२
१३	प्रबाली पत्रराजदर धर	×	"	४२
१४	ना करीब तू गालब तादीरी	मुनाबिदल	"	"
१५	पत्र मेरा मुन दगु	दीडर	"	४४
१६	भाव दूषा मुनर दग	भूपरदास	"	४५

१७. ऋषभजिनन्दजुहार क्यारिया	भानुशोति	हिन्दी	४५
१८. वरुं अराधना तेरी	नवल	"	"
१९. भूल भ्रमाणा कर्तुं भर्षे	×	"	४६
२०. श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर भाषा	×	"	४८-५२
२२. सावरिया तेरे वार वार वारि जाऊ	जगताराम	"	५२
२३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो गडे इ	×	"	५३
२४. जिनजी धाकी सूरत मनडो माह्यो	बहुरूपूर	"	"
२५. पार्ष्णनाथ तोन	शानतराम	"	५५
२६. त्रिभुवन गुन स्वामी	जिनदाम	"	२० सं० १७५५, ५४
२७. अहो जगतगुन देव	भूधरदास	"	५६
२८. चितामणि स्वामी सात्रा माहव मेरा	वनारामोदाम	"	५६-५७
२९. कव्याणमन्दिरस्तात्र	कुभुद	"	५७-६०
३०. कलियुग श्री विनती	ग्रहादेव	"	६१-६३
३१. शीलव्रत के भेद	×	"	६३-६४
३२. पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	"	६५-६८

५४५१ गुटका सं० ५१। पत्र सं० १०६। आ० ८५६ इ च। विषय-संग्रह। ले० काल १७६६ फागुण सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर में लिपि की गई थी।

१ भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	संस्कृत	१-९०
२ भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	"	सं० १८०० ६१-१०६

५४३०. गुटका सं० ५१ क। पत्र सं० १४२। आ० ८५६ इ च। ले० काल १७६३ माघ सुदी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत क्रियाकोश भाषा है।

५४३३ गुटका सं० ५२। पत्र सं० १६४+६८+६६। आ० ८५७ इ च।

विशेष—तीन भ्रू ए गुटकों का मिश्रण है ।

१	पञ्चमण्डल	×	प्राकृत
२	पञ्चमण्डल	×	"
३	बन्धे नू सूत्र	×	"
४	पञ्चमण्डलार्चनास्तवन (शुद्ध)	मुनिप्रभयवेद	पुरानी हिंदी
५	प्रवृत्तार्चनास्तवन	×	"
६	"	×	"
७	मन्त्रस्तोत्र	×	"
८	सर्वाष्टिनिवारणस्तोत्र	अनन्तपुरि	"
९	पुष्पारंभक एक सप्तस्मरण	"	"
१०	मन्त्रस्तोत्र	भावायमानतु ग	संस्कृत
११	कल्याणमन्त्रस्तोत्र	कृतुद्वय	"
१२	वृत्तिस्तवन	देवपुरि	"
१३	सप्तविंशतिस्तवन	×	प्राकृत

मिथि संघत् १७५ मामोक सुधी ४ को सीभाम्य इर्ष ने प्रतिमिथि की थी ।

१४	वीनविचार	वीमानदेवपुरि	प्राकृत
१५	नवतत्त्वविचार	×	"
१६	प्रवृत्तार्चनास्तवन	मेरुमन्त्र	पुरानी हिन्दी
१७	सीमंभरस्वामोस्तवन	×	"
१८	वीतलनाथस्तवन	समस्तुन्वर मरिचि	राजस्थानी
१९	पञ्चमण्डलार्चनास्तवन मण्डु	×	"
२०	"	×	"
२१	प्रादिनाथस्तवन	समस्तुन्वर	"
२२	बहुविद्युति विनस्तवन	जयसगर	हिन्दी
२३	वीवीद्युति मत्त पिता नामस्तवन	प्रादिनाथपुरि	" रचना सं १।
२४	पञ्चमण्डलार्चनास्तवन	समस्तुन्वरगण्डि	राजस्थानी

२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी
२६. " "	" "	" "
२७. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	" "	" "
२८. " "	जोधराज	" "
२९. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचंद	" "
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१. " "	समयसुन्दर	" "
३२. वीसविरहमानजकडी	" "	" "
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	" "
३४. गौतमस्वामीरास	×	" "
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	" "
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	" "

जोधराज ने खीवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा ।

३७. साधुवदना	आनंद सूरि	" "
३८. दानतपशीलसवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौढालिया	कनकसोम	हिन्दी

२० काल १६३८ । लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५ ।

४०. आद्रकुमार धमाल	" "	" "
--------------------	-----	-----

रचना सवत् १६४४ । अमरसर मे रचना हुई थी ।

४१. मेघकुमार चौढालिया	" "	हिन्दी
-----------------------	-----	--------

४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	" "
------------------	-----------	-----

लिपि संवत् १७५० कार्तिक सुदी १३ । अमरगवादा ।

४३. कर्मवत्तीसी	राजसमुद्र	हिन्दी
-----------------	-----------	--------

४४. बारहभावना	जबसोमगणि	" "
---------------	----------	-----

४५. पद्मावतीरानीभाराधना	समयसुन्दर	" "
-------------------------	-----------	-----

४६. शत्रुञ्जयरास	" "	" "
------------------	-----	-----

४७	नेमिचित्रस्तवण	बोधराज मुनि	हिन्दी	
४८	महोपाख्यानस्तवण	"	"	
४९.	पञ्चकस्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५	पंचमीस्तुति	×	संस्कृत	
५१	संकीर्तनचरित्रस्तुति	×	हिन्दी	
५२	त्रिनास्तुति	×	"	सिपि सं० १७५
५३	नवकारमहिमास्तवण	त्रिनक्षत्रस्तुति	"	
५४	नवकारसंग्रह	पद्मराजगण्ड	"	
५५	"	सुखप्रदस्तुति	"	
५६	गीतमन्त्राभिसंग्रह	सम्पु दूर	"	
५७	"	×	"	
५८	त्रिनक्षत्रस्तुति	सुन्दरगण्ड	"	
५९	त्रिनक्षत्रस्तुति चौ० १६	षडशोपनिषद्	"	र संवत् १४८१
६०	त्रिनक्षत्रस्तुतिस्तवण	×	"	
६१	नेमिराजुनबाणमाहा	धान्यस्तुति	"	र सं १९८५
६२	नेमिराजुन गीत	सुवनगीति	"	
६३	"	त्रिनक्षत्रस्तुति	"	
६४	"	×	"	
६५	सूनिबद्ध गीत	×	"	
६६	नाबरा वि संग्रह	सम्पुन्दर	"	
६७	संग्रह	"	"	
६८	दाशमसंग्रह	"	"	
६९	नेमिबुमारसंग्रह	"	"	
७०	धनपीठ संग्रह	"	"	
७१	श्रीशरीरी संग्रह		हिन्दी	

गुटका-संग्रह]

७२. चेलना री सज्जाय	×	हिन्दी
७३. जीवकाया ”	भुवनकीर्ति	”
७४. ” ”	राजसमुद्र	”
७५. आतमशिक्षा ”	”	”
७६. ” ”	पद्मकुमार	”
७७. ” ”	सालम	”
७८. ” ”	प्रसन्नचन्द्र	”
७९. स्वार्थवीसी	मुनिश्रोसार	”
८०. शत्रुंजयभास	राजसमुद्र	”
८१. सोलह सतियो के नाम	”	”
८२. बलदेव महामुनि सज्जाय	समयसुन्दर	”
८३. श्रेणिकराजासज्जाय	”	हिन्दी
८४. बाहुवलि ”	”	”
८५. शालिमद्र महामुनि ”	×	”
८६. वंभणवाडी स्तवन	कमलकलश	”
८७. शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद्र	”
८८. राणपुर का स्तवन	समयसुन्दर	”
८९. गौतमपृच्छा	”	”
९०. नेभिराजमति का चौमासिया	×	”
९१. स्पूलिभद्र सज्जाय	×	”
९२. कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	”
९३. पुण्यछत्तीसी	”	”
९४. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	”	”
९५. पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	”
९६. नन्दधेरामहामुनिसज्जाय	×	”
९७. शीलब्रतीसी	×	”

६४ मीनएकाएकी स्तवन

समयमुम्बर

हिंदी

रचना सं० १६८१ । प्रथममेर में रची गई । तिथि सं० १७२१ ।

५४३४ गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २३६ । पा० ८३×४३ इंच । मीनकाम १७७२ । पूर्ण ।

रथा-सामान्य ।

१	ताजाचक्रपुत की बीपई	बहुराजक	हिन्दी
२	निर्वाणिकाए ताया	भैया जगवतीदास	"
बच्चे—			
३	प्रभुजी जो तुम ताएक माम पराबो	हर्षक-प्र	"
४	भाब नाबि के द्वार भीर	हरिचिह्न	"
५	तुम घेवामें जाम सो ही सफ्त परी	बनाराम	"
६	बरन कमल उठि प्रस्य देस में	"	"
७	सोही सल्ल शिरोमनि बिनबर पुन नाई	"	"
८	मगत घाएवी कीजे जोर	"	"
९	घाएवी कीजे की नेमकंवरकी	"	"
१०	बंकी बिपान्बर गुरु बरन बय तरन छारन बाल	सुभरदास	"
११	बिजुबन स्वामीजी कस्तहा निबि मामीजी	"	"
१२	बाबा बबिया महटा जहाँ जम्बा ही नयन पुनार	"	"
१३	नेम कंवरकी मे सबि मय्या	बर्षदास	"
१४	मद्वारक महेशभैरवजी की बकरी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५	महो जगजुब बबपति परमानंद विद्याल	सुभरदास	"
१६	देखा बुनिया के बीच से कोई मजब तमासा	"	"
१७	बिनवी-बंकी की परतुवेव बाएक नित्य सुमरए शिरी बरु	"	"

	विश्वभूषण	हिन्दी
राजमती बौनवै नेमजी भजी तुम क्यों चढ़ा गिरनारि (विनती)		
१६. नेमोश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	" २० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"
२१. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत
२२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी
२३. पाच परवीव्रत की कथा	वेणीदास	" लेखन संवत् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	"
२५. मुनिश्वरो की अयमाल	×	"
२६. आरती	खानतराय	"
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	"
२८. विनति-(बदहु श्री जिनराय मनवच काब करोजी)	कनककीर्ति	"
२९. जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"
३०. प्राणी रो गीत (प्राणीडा रेतू काई सोवै रैन चित्त)	×	"
३१. जकडी (रिपभ जिनेश्वर ब्रदस्यौ)	देवेन्द्रकीर्ति	"
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव नव भास रह्यो गर्भ वासा)	×	"
३३. लुहरि (नेमि नगीना नाथ था परि वारी म्हारालाल)	×	"
३४. मोरडो (म्हारो रे मन मोरडा तूतो उडि गिरनारि जाइ रे)	×	"
३५. बटोई (तू तोजिन भजि विलम न लाय बटोई मारग भूलो रे)	×	हिन्दी
३६. पंचम गति की बेलि	हर्षकीर्ति	" २० सं० १६८३

१७	करम हिम्बोलखा	×	हिन्दी	
१८	पद—(ज्ञान सरोवर माहि सुखे रे हंसा)	सुरेन्द्रविरति	"	
१९	पद—(चौबीसों तीर्थकर करो कवि बचन)	नेमिचन्द्र	"	
४	करमा की गति ग्यापी हो	प्रह्लादापु	"	
४१	प्राप्ती (कटी मानि कंवरजी की प्राप्ती)	सत्यचन्द्र	"	
४२.	प्राप्ती	धनतराम	"	
४३	पद—(बीबड़ा पुजे की पारस विनेन्द्र रे)	"	"	
४४	गीत (डोरी के सगाबी हो नेमबी का नाम स्यो)	पाँडे नाचूराम	"	३
४५.	सुहरि—(यो सघार घनादि को सोही बान बप्पो री लो)	नेमिचन्द्र	"	
४६	सुहरि—(नेमि कुंवर ग्याहन बहपौ रखुल करे इ सिवार)	"	"	
४७.	बोमोपसो	पाँडे जिनबास	"	
४८	कचिदुम की कथा	केदार	"	४४ पद्य । के सं १७७९
४९	पञ्चमपबीसी	सत्यचन्द्र विनोबीसाल	"	"
५	सहस्रिका वर कथा	"	हिन्दी	
५१	मुनिबचनों की जयमास	सहस्रिकावस	"	
५२.	कल्याणसुमन्विरहस्तोत्रभाषा	बनारसीबास	"	
५३	तीर्थङ्कर जकड़ी	हर्षकीर्ति	"	
५४	जगत में सो बेवन को देव	बनारसीबास	"	
५५.	हम बैठे अपने मीन से	"	"	
५६	उहा झरानी बीपको डुर ज्ञान बरानी	"	"	

गुटका-संग्रह]

५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी
५८. स्फुट दोहे	"	"
५९. गुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	"	"
६०. श्रीपालस्तवन	"	"
६१. तीन मियाँ की जकडी	घनराज	"
६२. सुखघडी	"	"
६३. कक्का चीनती (बारहखडी)	"	"
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	"
६५. अठारह नाता का ब्यौरा	×	"
६६. आदित्यवार कथा	×	" १५४ पद्य
६७. धर्मरासो	×	"
६८. पद-देखो भाई आज रिपभ घरि आवे	×	"
६९. क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"
७०. गुरुओं की स्तुति	—	संस्कृत
७१. सुभाषित पद्य	×	हिन्दी
७२. पार्श्वनाथपूजा	×	"
७३. पद—उठो तेरो मुख देखू नाभिजी के नन्द टोडर		"
७४ जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"
७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	"
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"
७७. नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"
७८. चौबीस तीर्थङ्गरो के चिह्न	×	"
७९. दोहासंग्रह	नानिगनास	"
८०. धार्मिक चर्चा	×	"
८१. दूरि गयो जग चेली	घनश्याम	"
८२. देखो माइ आज रिपभ घर मावे	×	"

८३	बरणकमल को ध्यान मेरे	×	हिन्दी
८४	जिनजी वांकीजी मूरत मनबो मोहियो	×	"
८५.	मारी मुक्यति पंख बट पारी मारी	"	"
८६	समन्धि सर बीबन बोरो	कम्बलन्द	"
८७	मैमजी वे कई हूठ मारपी महात्म	हर्वकीति	"
८८	देखरी कर्तु मैमि कुमार	"	"
८९	प्रभु तेरी मूरत रूप बभी	कम्बलन्द	"
९०	बिचामखी स्वामी सांच्य सख्य मेरा	"	"
९१	सुखबड़ी कब मालेयी	हर्वकीति	"
९२	चेतन तू तिरुं काल मकेमा	"	"
९३	पख संयज्ञ	कम्बलन्द	"
९४	प्रभुजी पांका बरतए सु सुख पाचां	ब्रह्म कभूरकन्द	"
९५.	तपु मयल	कम्बलन्द	"
९६	सम्मेद शिखर बली रै बीकड़ा	×	"
९७	हम माये हू जिनराज तुम्हारे बन्दन को	धानतराय	"
९८	ज्ञानपथीसी	बनारसीबास	"
९९	तू भ्रम भूलि म रै प्रप्ली सज्जानी	×	"
१००	हुजिये बपाल प्रभु हुजिये बबाल	×	"
१०१	मेरा मन की बल कसु कहिये	सबसहिह	"
१०२	मूरत तेरी मुबर सोही	×	"
१०३	प्यारे हो मास प्रभु का बरस की बलिहारी	×	"
१०४	प्रभुजी त्बारियां प्रभु माप कप्रिएमै त्परियां	×	"
१०५	ज्यौं बरौ ज्यौं त्पायेजी बपानिधि	बुधालबन्द	"
१०६	बोहि सदा भी जिक प्यारा	हठमसबस	"
१०७	तुबरन ही में त्पारे प्रभुजी तुम		"
	तुबरन ही में त्पारे	धानतराय	"

१०८ पार्श्वनाथ के दर्शन

वृन्दावन

हिन्दी

२० सं० १७६८

१०९ प्रभुजी मैं तुम चरणाशरणा गह्यो

बालबन्द

”

५४३५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । श्रा० ८×६ इच्छ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विवेक—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महागातिक पूजा विधान है । ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा मन्वन्धी पूजाएं एव विधान हैं । पत्र ८२ पर अपत्र श में चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहू चरणजिनन्द' नामक एक वरदा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥६॥

जह पठावहि तिहुवण इद ॥ रे मन० ॥

यहु ससार असार मुणो घिरु करु जिय धम्मु दयाल ।

परगय तच्छु मुणहि परमेठिहि सुमरोह अप्पु गुणाल ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ अजीउ दुविहु पुरा आसव वन्धु मुणहि चउभेय ।

सवरु निजरु भोखु वियारणहि पुण्णपाप सुवियोय ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त ससारो मुक्त सिद्ध सुवियारो ।

वसु गुण जुत्त कलङ्क विवजिद भासिये केवलणारो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे ससारि भमहि जिय सबुल लख जोरिण चउरासी ।

षावर वियलिदिय सयलिदिय, ते पुग्गल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पच अजीव पढयमु तहि पुग्गलु, धम्मु अधम्मु आगास ।

कालु अकाउ पच कायासी, ऐच्छह दव्व पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसउ दुविहु दव्वभावह, पुरा पच पयार जिणुत्त ।

मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्त ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

चारि पयार वन्धु पयडिय ह्दिदि तह अणुभाव पसूस ।

जोगा पयडि पयूसठिदायणु भाव कसाय विसेस ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियारो ।

सुह परिणामु करहु हो भवियहु, जिम सुहु होय वियारो ॥ रे मन० ॥ ८ ॥

सबब करहि बीब जग सुन्दर भासव बार निरोह ।

मरह सिध समु प्रापु विमलसुह, सोह सोह सोह ॥ रे मन ॥ १ ॥

खिबर बाहू बिरामसुह कारणु जिम जिखुबयणु समाते ।

बारह बिह तप बमबिह सजमु, पंच महाबन पाले ॥ रे मन ॥ १ ॥

प्रबबिहि कम्मबिसुक्कु परमपठ परमव्यकुत्ति बसो ।

खिबरतु सुक्कुत्ति प्खनु तहिपुत्ति, ईबिक्कु ईबिक्कु बसो ॥ रे मन ॥ ११ ॥

आखि बसरणु क्कु बया करणा पंजितु मनह बिबारह ।

खिबरर सासणु तम्मु पयासणु, सो हिय बुइ बिर बारह ॥ रे मन ॥ १२ ॥

५५३६ गुटका सं० ५५ । पत्र सं २४ । पृ १×१३ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले मल

। १९८० ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र भाषि का संग्रह है ।

५५३७ गुटका सं० ५६ । पत्र सं १५ । पृ १३×४३ इञ्च । पूर्ण एक बीछी । धर्मिकी पाठ पद्य है । लिपि विहृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

१	कर्मतोषर्ष बर्षन	×	प्राञ्च	१-३
२	प्याह बग एवं बीरह पूजा का विवरण	×	हिन्दी	१-१२
३	देवतामन्दो के ८४ भाव	×	"	१२-१३
४	संहतन नाम	×	"	१३
५	गणनाति बचन	×	"	१४

ॐ नमः श्री गणेशाय नमो बुद्धभीतिम् ~~स्वापितम्~~ ~~स्वापितम्~~ ॥ १ ॥

संस्कृत १३३ बच पाठबाहुधियेणु ~~स्वापितम्~~ ॥ २ ॥

श्री गोपलतीपद्मरत्ने श्रीरघुवन्वा ~~स्वापितम्~~ ॥ ३ ॥

सर्वशीर्षद्वारणं कामे

श्रीगणेशाय नमः ~~स्वापितम्~~ ॥ ४ ॥

संस्कृत ५२५ बु

संस्कृत ५२

चतुः सप्तोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रवाहुशिष्येण श्रीमूलसधमडितेन अर्हद्वलिगुप्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसध, सिंहसध, सेनसध, देवसंघ इति चत्वार संघा स्थापिता । तेभ्यो यथाक्रम बलात्कारगणादयो गग्गा सरस्वत्पादयो गच्छाश्च जातानि तेषा प्राज्ञज्यादिषु कर्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे विनयमेनस्य शिष्येण सन्यासभगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसध स्थापित ॥ ९ ॥

सवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि पिच्छत्व स्थापितं ॥ १० ॥

सवत् १८०० वर्षे अतीते वीरचन्द्रमुने सकाशात् भिल्लसघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पचमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गृहस्थाना शिष्याणा विनाशो भविष्यत्येक जिनमतं कियत्काल स्थाप्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६ गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०
७ जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१-२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४-२७
९ स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२-३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८-५३
१२ चउवीस ठाणा चर्चा	×	"	५४-८६
१३. अन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०-१५०

५४३८ गुटका सं० ५७—पत्र सं० ४-१२१ । आ० ६×६ इञ्च । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१ त्रिकालदेववदना	×	संस्कृत	५-१२
२ सिद्धभक्ति	×	"	१२-१४
३ नदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४ चौतीस अतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१९
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९-२१
६ दर्शन भक्ति	×	"	२१-२२
७ ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८ चरित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२-२४
९. अनागार भक्ति	×	"	२४-२६

संबद्ध करीह जीव भग सुन्दर पासव बार तिरोह ।

प्रकृ सिध समु प्रापु विमाणह सोह सोह सोह ॥ रे मन ॥ ९ ॥

शिखर भरह बिण्णसह कारणु, जिय बिण्णवयण समाले ।

बारह बिह तव बसबिह सबसु, पंथ महावव पासे ॥ रे मन ॥ १० ॥

प्रबबिहि कम्मबिमुक्कु परमपठ परमप्यकुम्पि बासी ।

शिखरु मुबुत्ति प्पणु तहिपुरि, बिम्भसु बिम्भर बासी ॥ रे मन ॥ ११ ॥

जाणि प्रसरणु कहु वमा करणा पंडितु मतह बिचारह ।

बिण्णर सासणु प्पणु पमासणु, सी हिय बुव भिर बारह ॥ रे मन ॥ १२ ॥

४४३६ गुटका स ३५ । पत्र स २४ । प्रा ९×६३ इत्त । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले काल

(१६८८ ।

बिबोध—पूजा पाठ एवं स्तोत्र प्रादि का संग्रह है ।

४४३७ गुटका स० ३६ । पत्र स १३ । प्रा १३×४३ इत्त । पूर्ण एक जीर्ण । अधिकांश पाठ मण्डल है । सिधि विद्वत है ।

बिबोध—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ कर्मलोकर्म वर्णन	×	महाज	१-३
२ म्याह भग एवं जीवह पुत्रों का विवरण	×	हिन्दी	१-१२
३ बवेताम्बरों के २४ वाक	×	"	१२-१३
४ संहसन नाम	×	"	१३
५ सञ्चोत्पत्ति कथन	×	"	१४

ॐ नम श्री पार्वतीनाम काले बुद्धधीरिता एकलस निष्पत्तबोध स्वापित ॥ १ ॥

संबद् १३६ वप नववाहुबिम्बेण बिजकन्द्रेण सहायनिष्पत्तर्त्त स्वेतपटमत्त स्वापित ॥ २ ॥

भा शीतलतीमङ्कुरकाले श्रीरत्नम्बाचार्यपुत्रेण पञ्चविंश विपरीतमत निष्पत्तव स्वापित ॥ ३ ॥

सर्वतीर्थङ्कुरसुता काले बिजयनिष्पत्तर्त्त ॥ ४ ॥

श्रीपार्वतीनाममणि बिम्बेण मस्करिपूर्णेनाम्नामनिष्पत्तर्त्त श्री महावीर काले स्वापित ॥ ५ ॥

संबद् ५२६ वये श्री पूज्यपादबिम्बेण प्रामुत्तकनेरिता बच्चनेरिता पद्मचक्रकसककेण ब्राह्मिबस्य स्वापित ।

संबद् २ ३ वये ब्रह्मपदाद् श्रीकलपाद् प्रायसाक संभारगतिगीता । ७ ॥

चतु सघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसघमडितेन अर्हद्वलियुतिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसघ, सिंहसघ, सेनसघ, देवसघ इति चत्वार सघा स्थापिता । तेभ्यो यथाक्रमं बलात्कारगणादयो गणा सरस्वत्यादयो गद्याश्च जातानि तेषां प्राब्रज्यादिषु कर्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे विनयमेनस्य शिष्येण सन्यासभगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसघ स्थापित ॥ ९ ॥

सवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि पिच्छत्व स्थापित ॥ १० ॥

सवत् १८०० वर्षे श्रुतीते वीरचन्द्रमुने सकाशात् भिल्लसघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पञ्चमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गृहस्थानां शिष्याणां विनाशो भविष्यत्येक जिनमतं कियत्कालं स्थाप्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६ गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०
७ जिनान्तरं	वीरचन्द्र	हिन्दी	२१-२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	”	२४-२७
९ स्वर्गनरक वर्णन	×	”	३२-३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	”	३७
११ लोक वर्णन	×	”	३८-५३
१२ चउवीस ठाणा चर्चा	×	”	५४-८६
१३. अन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	”	९०-१५०

५४३८ गुटका सं० ५७—पत्र सं० ४-१२१ । आ० ६×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ त्रिकालदेववदना	×	संस्कृत	५-१२
२ सिद्धभक्ति	×	”	१२-१४
३ नदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४ चौतीस अतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१९
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	”	१९-२१
६ दर्शन भक्ति	×	”	२१-२२
७ ज्ञान भक्ति	×	”	२२
८ चरित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२-२४
९. अनागार भक्ति	×	”	२४-२६

१	योग मक्ति	×	"	२६-२७
११	निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	२७-३
१२	बृहत्स्वयम्भु स्तोत्र	समस्तभद्राच ५	संस्कृत	३-४१
१३	गुरावली (कतु माचार्य मक्ति)	×	"	४१-४४
१४	कतुविशक्ति तीर्थकर स्तुति	×	"	४४-४६
१५	स्तोत्र सप्तह	×	"	४६-५०
१६	माता बतीसी	×	"	५१-५२
१७	भारावताघार	बैजसेन	प्राकृत	५३-६
१८	संबोधन भासिका	×	"	६१-६७
१९	इन्द्र ६ ब्रह्म	कैमिच ३	"	६७-७१
२	भक्तामरस्तोत्र	माततु गाचार्य	संस्कृत	७१-७२
२१	दाससी भाषा	×	"	७२-८३
२२	परमार्जुन स्तोत्र	×	"	८३-८४
२३	अस्तमिति सप्त	हरिवचन	प्राकृत	८५-८९
२४	ब्रह्मदीपस्त	विजयचन्द्र	"	९-९४
२५	समाधिभरण	×	धरम ४	९४-८९
२६	निर्मलपत्रमी विधान	यं विजयचन्द्र	"	९९-१०३
२७	सुप्यबोहा	×	"	१०३-१११
२८	दासपालुमेता	×	"	१११-११२
२९	"	बल्लभ	"	११२-११४
३	योधि चर्चा	महामा ज्ञानच ५	"	११४-११६

१४३९ गुटका सं० ३८ । पत्र सं १३-११ । मा ९×६ । अपूर्ण ।
 विसेव—गुटका प्राचीन है ।

१ विजयविद्यालयका परसेन मद्रम ४ अपूर्ण १३ २
 अन्तिम भाग—
 अन्तिम किन्तु अउरुसि रतिहि, गउ सम्मह विगु पचम अतिहि ।
 इय सम्मह कहित सप्तममजो विमरति हि फजु अविप्यु मंगसो ।

अवरुवि जोरारत्ति करेसइ, सो मरद्वयरुउ लहेसइ ।
 सारउ सुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाण कुल उत्तरमेसइ ॥
 पुणु सोहम्म सगी जाएसइ, सहु कीलेसइ । रिणु -सुकुमालिहि ।
 मराणुवसुखु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पावेसइ ।
 इय जिणारत्ति विहाणु पयोसिउं, जहजिणसासणि गराहरि भासिउ ।
 जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, त बुहारण मठु खमहु रिणुत्तउ ।
 एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
 जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ ।

धत्ता—

सिरि एरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तित्थकर ।
 जइ माणिउ देइ करण करेइ देउ सुवोहि लाहु परमेसर ॥ २७ ॥
 इय सिरि बड्ढमाणकहापूराणे सिघादिभवभावावण्णणो जिणाराइविहाणफलसपत्ती ॥
 सिरि एरसेण विरइए सुभवासण्णणाणिमित्ते पढम परिछेह सम्मतो ।

॥ इति जिणारात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२ रोहिरिणविधान

मुरियाणुभद्र

अपत्र ३

२१-२५

१ प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयञ्जुलु ।
 सिवमगासहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमखु
 परमेद्धि पच पणविवि महत्त, भवजलहि पोय विहडिय कयत्त ।
 सारभ सारस ससि जोह्ण जेम, रिणम्मल वरिणज्ज केणकेम ।
 जिहि गोयमए विरिणव वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स ।
 तिह रोहिरणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणच्च ।
 इय जवूदीव हो भरड खेत्ति, कुंरु जगल ए सिवि गए जरोत्ति ।
 हवियणउरु पुरजण पवररिद्धु, जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु ।
 तहि वीयसोउ गयसोउ भूउ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूउ ।
 तहा एदणु कुलणन्दण असोउ, जमिल्लवि गउ अइ पूरि सोउ ।

बह प्रम विसद जस कुदह विसए जपाठरि पयउ गुणुद विसए ।
 मट्टइ गामिणी उणाइवतु, सिरिमइ पियसकिठ रिउ वयन्तु ।
 सुय मट्ट तामु प्ररि जणिय तामु, रोहिणी कम्पण्यं कामपामु ।
 क्खितिय मट्टाहिण सोरवास गमपुण बहि जिण वसु पुण्णवास ।
 जिणु म्भविदि मुण्णि बरिदि म्भसेस सिरि वासुपुण्ण पयमबिसेस ।
 मह मग्गिण्णि सण्णहो णिवह वैह गोहिणी जसएणमा म्भजतइ ।
 पवमोइवि मुव पुम्भएण समेय परिणमएण बिउ हयमण्णि म्भमेय ।
 गियमति मंतु गिग्गिदि म्भमेउ णिय मुदि विमाटीवि विहिंससेउ ।

पत्ता—

ता पुरवउ बहिरि कि परिउ साहि, रिबउ मंभ चउ पासाहि ।
 क्खयमयमु बंभिय एयण करंभिय मंभिय म्भज पासाहि ॥ १ ॥

अधिस भाग—

निमुण्णइ विस्सवण्णि सावहण्णु विवतएणं करनसु मानमालु ।
 बग्गा पान्ना) जइ सरणुण्णवि मय सावहो वीवहो सइणसवि ।
 मणु हवइ मुहामुह एक्कजीउ तणु विष्णु मेइ मण्णउ मीउ ।
 मसार सहुक्कसु पुरकर समुवउ, मंभुवि वाउ विहहउ कुमुवउ ।
 पःसवइ वन्नु वो एहि विव, तही वितवं संवइ होइ क्ख ।
 समं भावि सहिंसइ क्खुमाउ परिममिउ लोहु वीविउ सपाउ ।
 बुद्धं जिण मन्नु समुत्ति मन्नु, एणि सगाहिंसउ क्ख्मेव म्भमाउ ।
 इउ कुण्णिवि सविदि जिण विक्ख विक्ख, इउ वणुहइ एउ मसीउ विक्ख ।
 म्भविण्य सवःप्यापउ म्भममत्तएणु, केवसु वउ मोक्कसु सुइ विहामु ।
 एहि तसुउ बरिदि पक्कणसमि वन्नु, एणिवि विदि वी सिणु मन्नी ।
 पीयउ विसमि संपत्त म्भज वज्जटी विविस्सय सुवहु सज्ज ।
 हुव के वमोक्क पय्हणि विक्कम्भ मणु हवहि णिरतर मुत्ति म्भम् ।
 वउवरिय म्भजएणुवी बरि सुवमिइ, एा प्णसिरि नाम इन्दी वलमिइ ।
 रो हवउ विहिउ वाइएउ रोहिण्णि क्खविउवय तामु हेउ ।

धत्ता—

सिरि गुराभद्गुणीसरेण विहिय कहा बुधी भरेण ।
 सिरि मलयकित्ति पयल जुयलणाविवि, सावयलओ यह मगुछविवि ।
 रादउ सिरि जिणसख, रादउ तहभूमि बालुणि विग्घ ।
 रादउ लक्खणु लक्खं, दिनु सया कप्पतरु वजइ भिक्ख ।

॥ इति श्री रोहिणी विधान समाप्त ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२६-२६
४. दशलक्षणकथा	मुनि गुराभद्र	"	३०-३३
५. चदनषष्ठीव्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिन प्रणम्य चद्राभ कर्मोघध्वान्तभास्कर ।
 विधान चदनषष्ठ्यत्र भव्याना कथमिहा ॥ १ ॥
 द्वीपे जम्बूद्रुम केम्बिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।
 काशी देशोस्ति विख्यातो वर्ज्जितो बहुधावुधै ॥ २ ॥
 आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशत ।
 कृत्वा चदनषष्ठीय कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥
 यो भव्य कुस्ते विधानममल स्वर्गापवर्गप्रदां ।
 योन्य कार्यते करोति भविन व्याख्याय सबोधन ॥
 भूत्वासौ नरदेवयोर्व्वरसुख सच्छत्रसेनाव्रता ।
 यास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैन श्रीया ॥ ७८ ॥

॥ इति चदनषष्ठी समाप्त ॥

६. मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८
------------------	---	---------	-------

आरम्भ—

आदि देव प्रणम्योक्त मुक्तात्मान विमुक्तिद ।
 प्रथ सक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिविधि ॥ १ ॥

७ सुरगंधसमी कथा

रामकीर्ति के विष्णु

प्रपत्र ४

३८-४१

बिमल कीर्ति

आदि भाग

पणुवैष्णवु सम्मद जिखेसरहो वा पुष्पसूरि प्रामम भगिण्या ।
रिगुणैण्यवह भविष्यु इकम्भना क्हकम्भमि सुमभरसमी हितधरिण्या ॥

अन्तिम पाठ

बसमिहि सुमंष बिहासगुकरैबिरणु तद्व्य कष्य उप्यष्ण मरैबिरणु ।
बजबह माहुरेहि पसाहिय समी सुहृद मु बह भविरोटिय ॥
गुहबी मष्यणु पुद सुद कुञ्जह राउ पयाउ दयात्वरण बल्लह ।
मानस सु बरि गति उप्यष्णी मक्याबलि सामि उषुष्णी ॥
बिणु बिणु कुमरि बियाबहु मती मयसीय मारणस मोहती ।
सामबष्ण मष्युबि सुपहि ठणु बिणुबह सामिउ पज्जह धरणु बिणु ॥
बरणु बजबिह बिति ख त्वकह ठह न छल का बष्ण ख सजह ।
बम्मबठ पेनि छारणहि पोमाह्मह धम्म पसगहि ।
राम सापरिभाबिय बामहि पुत कम्मलहि बहियतामहि ॥
रामकीर्ति गुसबिणुउ करैबियु बिणु बिमल कीर्ति महिपमि पदेबिरणु ।
पछह पुणु ठव परणु करैबियु सह धरणुक्मेण सोमबकुलहेसह ॥

पत्ता

बो करह करतकह एहबिहि बषकाणिय बिम्बियह बाबैह ।
सो बिणुष्णह भासियहु समु मोनकु फव पत्तह ॥ ८ ॥

इति सुरगंधसमीकथा समाप्ता

८ पुष्पांजलि कथा

×

प्रपत्र ४

४१-४२

आरम्भ

बज जय धरह जिखेसर ह्यबम्भीसर मुतिसिरीबल्लणबरण ।
धम्मसय पणुभासुर सहबमहीसर पुठि गिरापर समकरण ॥ ९ ॥

अन्तिम पत्ता

बमबलरिगणि रक्याबिति मुणि सिस्स बुहिर्ब दिग्गह ।
मारकीर्ति कुउ धनठरितिपुठ पुणु अनि बिहि निज्जह ॥ ११ ॥

पुष्पांजलि कथा समाप्ता

६ मनतविधान कथा × अथश ४६-५१

५४४० गुटका सं० ५६—पत्र सख्या—१८३ । आ०-७॥×६ । वशा-सामान्यजीर्ण ।

१. नित्यवदना सामायिक	×	संस्कृत प्राकृत	१-१२
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	१५
३. श्रुतभक्ति	×	"	१५
४. चारित्रभक्ति	×	"	१६
५. आचार्यभक्ति	×	"	२१
६. निर्वाणभक्ति	×	"	२३
७. योगभक्ति	×	"	"
८. नदीश्वरभक्ति	×	"	२६
९. स्वयंभूस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	"	४३
१०. गुर्वावलि	×	"	४५
११. स्वाध्यायपाठ	×	प्राकृत संस्कृत	५७
१२. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६७
१३. सुप्रभाताष्टक	मतिनेमिचन्द्र	"	पद्य सं० ८
१४. सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	"	" २५
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनदि	"	" २१
१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	"	"	" २५
१७. भूपालस्तवन	भूपाल कवि	"	" २५
१८. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	" २६
१९. विषाणहार स्तोत्र	धनञ्जय	"	" ४०
२०. पार्श्वनाथस्तवन	देवचन्द्र सूरि	"	" ४४
२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्रसूरि	संस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	- ×	"	
२३. करुणाष्टक	पद्मनदी	"	
२४. वीतराग गाथा	×	प्राकृत	

२७ मंगसाष्टक	×	संस्कृत
२९ मातृजा बीतीसो	म पपनीदि	" १२-१३

आरम्भ

पुत्रप्रदाक्षमहिमास्वसप्तमोहं, निद्रातिरेक्यसमावभमस्वभाय ।
 धार्लवर्कंशुश्रवास्तबसानमित्र स्वार्थश्रुत बबतु भाम सतां सिबाय ॥ १ ॥
 श्रीगीतमश्रुतयोनि विमोर्महिम्न प्राय क्षमालयनय स्वधर्म विधातु ।
 यय विचार्यं पाहृतस्तत्पुत्रलोके सौख्याप्तये विभ नविष्य त मे किमन्यद् ॥ २ ॥

अन्तिम

श्रीमत्प्रमेत्पुत्रमुवाक्यपरिम विनासिषेत् कुमवा प्रमोवत् ।
 श्रीमातृजाप्यति मातृसुख्य श्रीपधर्मबी स्वयं नकार ॥ ३४ ॥
 इति श्री षट्कारक पद्यनखिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशत् मातृजा समाप्तमिति ।

२७ मध्यामस्तोत्र	धाचार्य मलालु य	संस्कृत
२८ शीतरामस्तोत्र	म पपनीदि	"

आरम्भ

स्वाश्रमावबोधविचरं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमयावद्यदुरीकपात्र ।
 मास्वाश्रिताश्रममुक्ताश्रमसत्पाठ्यं पश्यति पुष्यसहिता बुधि शीतरामं ॥ १ ॥
 उद्यतपस्तपरात्रोजितपावपंकं चैतन्मविन्दमबलं विमलं विरलं ।
 देवैश्रुतसहितं कल्याणतानं पश्यति पुष्य सहिता बुधि शीतराम ॥ २ ॥
 वासुदेविमुद्रिमहिमाबधिमस्तसोढं बभोपदेषविधिभेदितमप्यसोढं ।
 माचारबन्धुरमति अनतापुरामं पश्यन्ति पुष्य सहिता बुधि शीतरामं ॥ ३ ॥
 कल्प्ये सप्ये मवमास्रननेतैयं या पाप ह्योरजगदुत्तमनामधेयं ।
 ससार्धतभु परिमबन महराम पश्यन्ति पुष्य सहिता बुधि शीतरामं ॥ ४ ॥
 शिष्याकुलमुकमलापसिकं विरलं बद्धिष्णु सत्पठनर्थाभूतपूर्णाङ्गुलं ।
 बसाद्रिमोहृतप्लवङ्गनचण्डनं पश्यन्ति पुष्य सहिता बुधि शीतरामं ॥ ५ ॥
 पारारुकर सररीवृत्तधर्मपंच ध्यामिदन्निद्रिसोऽतवर्मवचं ।
 ध्यान्नात्रवर्जि मणुबाल विपाय जीवं पश्यन्ति पुष्य सहिता बुधि शीतरामं ॥ ६ ॥

स्वच्छोच्छलव्यरिणविरिणज्जितमेघन द, स्याद्वादवादितमयाकृतसद्विपादं ।

नि.सीमसजमसुधारसतत्तहाग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ ७ ॥

सम्पक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मागल्यकारणमनतशुणं वितन्द्रं ।

इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभाग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवीतरागस्तोत्रं,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

य कोमलेन वचसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमल वृणीत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ॥

२९. आराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	२० सं० १०८६
३० हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	” स्वयंभू रामकरण का एक अंश	११९
३१. कालावलीपद्धती	×	”	११९
३२. ज्ञानपिण्ड की विशति पद्धतिका	×	”	१३१
३३. ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४, इष्टोपदेश	पूज्यपाद	”	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	”	१४६
३६. श्रावकाचार	महापंडित आशाधर	” ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । आ० ८५६ इच्छ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२-२७
२. पचमेरु की पूजा	×	”	२७-३१
३ लघुसामायिक	×	संस्कृत	३२-३३
४ आरती	×	”	३४-३५
५ निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	३६-३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । आ० ८६५ इच्छ । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

५४४३ गुटका सं० ६२ । पत्र स १२८ । मा १×६ इच्च । भाषा—हिन्दी । पत्राण सं १८२८
अपूर्णा ।

विशेष—प्रति जीर्णोद्धारिण्यं प्रवक्ष्यामि है । मधुमासती भी कथा है ।

५४४४ गुटका सं० ६३ । पत्र स १२३ । मा १×३ इच्च । भाषा—संस्कृत । पूर्णा । पद्या—नाममय

१	सीर्षोदकविमान	×	संस्कृत	१-११
२	त्रिनसहस्रनाम	भाषांतर	"	१२-२२
३	दशसास्त्रपुस्तुजा	"	"	२२-३६
४	त्रिनयनकल्प	"	"	३७-१२५

५४४५ गुटका सं० ६४ । पत्र स ४ । मा ७×७ इच्च । भाषा—हिन्दी । पूर्णा ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या—८९-४११ । मा -८×६॥ । मेखनकास—१६६१ । अपूर्णा ।

पद्या—बीर्ष ।

१	सहस्रनाम	५ भाषांतर	संस्कृत	अपूर्णा । ८६-८७
२	एतन्नयपूजा	पद्यनिधि	अपभ्रंश	" ८७-११
३	नदीश्वरपंक्तिपूजा	"	संस्कृत	" ११-१७
४	बड़ीसिद्धपूजा (कर्मरहल पूजा)	सोमरत्न	"	१८-१९
५.	सारस्वतवर्णन पूजा	×	"	१७
६	बृहस्पतिपुष्पपूजा	×	"	१७-१११
७	पराशरवैशम्पयनपूजा	×	"	१११-११५
८	संदीश्वरवर्णनमास	×	प्राकृत	११६
९.	बृहस्पतीक्याकारणपूजा	×	संस्कृत	११६-१२५
१०	त्रिभिर्मंडनपूजा	ज्ञान सूचका	"	१२८-३६
११	वार्तिकरूपपूजा	×	"	१३७-३८
१२	पद्मनेत्रपूजा (कुण्डलालि)	×	अपभ्रंश	१३९-४१
१३	पराशरवैशम्पयन	×	"	१४२
१४	बाण्ड्य अगुप्रेक्षा	×	"	१४३-४७

१५. मुनीश्वरो की जयमाल	×	अपत्र श	१४७
१६. रामोकार पाण्डी जयमाल	×	"	१४६
१७. चौबीस जिनद जयमाल	×	"	१५०-१५२
१८. दशलक्षरा जयमाल	रदधु	"	१५३-१५५
१९. भक्तामरस्तोत्र	मानसुङ्गाचार्य	संस्कृत	१५५-१५७
२०. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	१५७-१५८
२१. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५८-१६०
२२. अकलंकाष्टक	स्वामी अकलंक	"	१६०
२३. भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	"	१६१-६२
२४. स्वयंभूस्तोत्र (इष्टोपदेश)	पूज्यपाद	"	१६२-६४
२५. लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनदि	"	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	"	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत संस्कृत ले० सं०	१६७५, १६५-७०
२८. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवभदि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वाविशिका	×	"	१७१-७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७२-७४
३१. तत्त्वार्थसूत्र	उमात्वामि	"	१७४-७८
३२. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपत्र श	१७६-८८
३३. सुष्यदोहा	×	ले० सं० १६६१ वैशाख सुदी ५ ।	×
३४. परमानंदस्तोत्र	×	"	१८८-९०
३५. यतिभावनाष्टक	×	संस्कृत	१९१
३६. कर्णाष्टक	पद्मनदि	"	"
३७. तत्त्वसार	देवसेम	"	१९२
३८. दुर्लभाष्टक	×	प्राकृत	१९४
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	"	"
४०. मुनिसुब्रतनाथस्तुति	×	हिन्दी	१९५
		अपत्र श	अपत्र श १-१

४१ सिद्धबाभूजा	×	संस्कृत	११९-१७
४२ शिवशामनमूर्ति	×	प्रकृत मयूर	१११-२
४३ धर्मदुःखा बीनी का (चैपमक्रिया)	×	हिन्दी	२ २-१७

विशेष—सिद्धि १७१ १९१६ । भा सुमन्त्र ने मुठके की प्रतिनिधि करायी तथा भी माधवसिंहजी के शासनकाल में मङ्गलोट्टा ग्राममें हरजी चौधी ने प्रतिनिधि की ।

४४ नैमिषिर्षद व्याहृती	सेतुषी	हिन्दी	२१७-४२
४५ पराधरबलमयमममम (कोठे)	×	"	२४२
४६ कर्मबहुत का मन्त्र	×	"	२४३
४७ बसन्तकण्ठतोषापनपूजा	सुमतिसागर	हिन्दी	२४३-१४
४८ पंचमीव्रतोषापनपूजा	कैसबसेन	"	२४४-७४
४९ रोहिणीव्रत पूजा	×	"	२७३
५० चैपनक्रियोषापन	देवेन्द्रपति	संस्कृत	२७३-८६
५१ शिवपुराणधारन	×	हिन्दी मयूर	२८९-१४
५२ पंचेन्द्रपति	सीहल	हिन्दी मयूर	१ ७
५३ मैमीसुर कवित्त (मैमासुर राजमतीवैशि)	नधि ठनकुरसी (कवियेत्त का पुत्र)	"	१ ७- १
५४ विज्जुम्बर की बसमाल	×	"	१ १-११
५५ हनुमन्तकुमार बसमाल	×	मयूर वा	१११-१४
५६ निर्वाणसाम्भवा	×	ब्राह्मण	११४
५७ कृष्णसम्भ	ठनकुरसी	हिन्दी	११४-१७
५८ मानसबुबावती	मनासाह	"	११५-२१
५९ मान की बड़ी बावती	"	"	१२२-२५
६० मैमीम्बर की रास	ब्रातकवि	"	१२१-१३
६१ "	ब्रह्मरामसम्भ	" ए स	१११, ११३-४१
६२ मैमिम्बररास	रत्नपति	"	१४१-१४३
६३ धीवासरासो	ब्रह्मरामसम्भ	" ए स	१११ १४३-४३

६४. सुदर्शनरासो

ब्रह्म रायमल्ल

हिन्दी र सं. १६२६ ३५६-६६

संवत् १६६१ में महाराजाधिराज बाधोसिंहजी के शासन काल में मालपुर में श्रीलाला भावसा ने आत्म

पठनार्थ लिखवाया ।

६५. जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७-६८
६६. सोलहकारगुरास	स० सकलकीर्ति	"	३६८-६९
६७. प्रद्युम्नकुमाररास	ब्रह्मरायमल्ल	"	३६९-८३

रचना संवत् १६२८ । गढ हरसौर में रचना की गई थी ।

६८. सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३-६५
६९. बीसविरहमाणपूजा	×	"	३६५-६७
७०. पकल्यणकपूजा	×	"	अपूर्णा ३६८-४११

५४४७ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३७ । आ० ७×५ इञ्च । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

१. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-२६
२. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६-२७

५४४८. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७० । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इञ्च । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१ नवकारमंत्र आदि	×	प्राकृत	१
२ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८-२१

हिन्दी अर्थ सहित । अपूर्णा

३ जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा
४. चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द्र	"	र सं. १७०८ । अपूर्णा
५ श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्णा
६ स्तुति	"	"	अपूर्णा

५४४९. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । अपूर्णा । ले० काल सं० १७८० चैत्र वदी १३ ।

विशेष—प्रारम्भ में वैद्य मनोत्सव एष बाद में आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५४५० गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ११८ । आ० ६×६ इंच । हिन्दी । पूर्णा ।

विशेष—बनारसीदास त समयसार नाटक है ।

३४३१ गुटका सं० ५०। पत्र सं० ६४। मा० ८२×६ इंच। भाषा संस्कृत हिन्दी। विषय-विज्ञान

अपूर्ण एवं अमुद्रित। कथा-वीर्य।

विषय—इस पुटके में उमास्वामि द्वारा रचितसूत्र की (हिन्दी) टीका की हुई है। टीका सुन्दर एवं विस्तृत

है तथा पाठ्य रूपबन्धनी कृत है।

३४३२ गुटका सं० ७१। पत्र सं० ३२-२२२। मा० ८५×६ इंच। अपूर्ण। कथा-सामान्य।

१ स्वरोप्य	×	हिन्दी	३२-४१
२ सूर्यकवच	×	संस्कृत	४२
३ रावनीविद्यात्मक	चारुण्य	"	४३-३०
४ वेदसिद्धपूजा	×	"	३८-६३
५ कस्तूरकणपूजा	×	"	६४ ६५
६ अस्त्रमपूजा	×	"	६६-७३
७ सोमहकारणपूजा	×	"	७३-७५
८ पार्वतीनामपूजा	×	"	७६-७७
९ कलिपूजा	×	"	७८-७९
१० शिवपामपूजा	×	"	७९-८३
११ लक्ष्मणविधि	×	"	८२-८५
१२ सप्तमीस्तोत्र	×	"	८६
१३ उत्सवार्चसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८६-८७
१४ शक्तिपाठ	×	"	८८
१५ राजविजय कथा	राजनीति	हिन्दी	८९-११३

३४३३ गुटका सं० ७२। पत्र सं० १ ४। मा० १३×६ इंच। पूर्ण। कथा-सामान्य।

१ नाटक समयसार	बनारसीराम	हिन्दी	१-१११
२ बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३ श्रीमूर्तिप्रणव	×	" अपूर्ण पत्र सं०	११-७

कथा सन् १९१३ मिति सं० १७०६।

५४५४. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५२ । श्रा० ७×६ इंच । अपूर्ण । दया-जीर्ण शीर्ष ।

१ राघु ग्रामावरी रूपचन्द अपभ्रंश १
प्रारम्भ—

वित्तउरामेरा कुरुजंगले तहि यरु वाउ जीउ राजे ।

धराकण्णायर पूरियउ कण्णय्यहु धराउ जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है ।

२ पदढी (कौमुदीमध्यात्) सहणपाल अपभ्रंश २-७

प्रारम्भ—

हाहउ धम्मभुउ हिडिउ ससारि असारइ ।

कोडपए सुणउ, गुणदिठ्ठु सल्ल विणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ ।

परिहरि विणेहु सिरि सतियत सधि सुमइ साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पदढी छन्द लिखितं ॥

३ कल्याणकविधि मुनि विनयचन्द अपभ्रंश ७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहकरसिद्धियहु

पणविधि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणुणामिहउं ।

सथलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयमत्तु एककु जि कल्लाणउ विहिरिण्वियडि अहवइ गणणउ ।

अहवासय लहखवणविहि, विणयचदि सुणि कहिउ समत्यह ॥

सिद्धि सुहकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृतं कल्याणकविधि समाप्ता ॥

४. चूनढी (विणय वदिवि पच ग्रुह)

यति विनयचन्द

अपभ्रंश

१३-१७

क्र.	ग्रन्थनाम	लेखक	प्रकाशक	पृष्ठ-संख्या
५.	अष्टाश्रमिणी संघ	हरिश्चन्द्र प्रसाद	मदन मोहन	१७-१४
६	सम्भाषि	×	"	२४-२०
७	मण्डुपसंधि	×	"	२७-३१
८	गाण्डोपिठ	×	"	३१-४२
विशेष—२ कठक है।				
९	आकाशवाट बोद्धा	रामसेन	"	४२-४९
१०	ब्रह्मसंहारणिकराम	×	"	४३-६
११	श्रुतपञ्चमोक्तवा	स्वयंभू	"	४१-६७
(हरिश्चन्द्र मध्याह्न विदुर बेराम्य कथानके)				
१२	पञ्चमी	महाश्रीति	"	१७-७
(महाश्रीति विरचित चंद्रप्रमथरिक्तसंभाष्य)				
१३	विदुलेमिचरिण (१७-१८ संघ)	स्वयंभू	" (कथनाभित)	७७-८६
१४	वीरचरिण (कुरुप्रिया नाय)	रघु	"	८६-८९
१५	चतुर्गति की पञ्चमी	×	"	८९-९१
१६	सम्यक्त्वकीमुक्ती (भाग १)	सहृणपास	"	९१-९४
१७	मायना उच्छ्वसी	×	"	९४-९६
१८	वीरसपुञ्जा	×	"	९
१९	वाचिपुराण (कुच नाय)	गुणकण्ठ	"	
२०	वसोपरचरिण (कुच नाय)	"	"	
४४४४ गुटका सं ७५ । पृष्ठ सं २३ से १२३ ।				
१	कुचकर पद्य	×	"	

गुटका-संग्रह]

७ जकडी	द्यानतराय	हिन्दी	५१
८. मगन ग्हो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"	५२
९ हम आये हैं जिनराज तोरे वदन को	द्यानतराय	" ले० काल सं० १७९६	"
१०. राजुलपञ्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द्र	"	५३-६०

विशेष—ले० काल सं० १७९६ । दयाचन्द्र लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल

ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१-६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३-६४
१३ मना रे प्रभु चरणा ल बुलाय	हरीसिंह	"	६४
१४ हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"	६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त] केशवदास		"	६६-६८
१६ कवित्त	जयकिशन सुंदरदास आदि	"	६९-७२
१७. गुणवेत्ति	×	हिन्दी	७५
१८ पद-धारा देश मे हो लाल गढ बडो गिरनार	×	"	७७
१९. कवका	गुलावचन्द	"	७८-८२

२० काल सं० १७९० ले० काल सं० १८००

२०. पचवधावा	×	हिन्दी	८४
२१ मोक्षपैडी	×	"	८६
२२. भजन संग्रह	×	"	९२
२३ दानकीवीनती	जतीदास	संस्कृत	९३

निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की सवत् १८१४ ।

२४ शकुनावली	×	हिन्दी लिपिकाल १७९७	९९-१०५
२५. फुटकर पद एवं कवित्त	×	"	१२३

५४५६ गुटका सं० ७५—१त्र सख्या—११६ । आ०-४३×४३ इ च । ले० काल सं० १८४८ । दशा सामान्य । अपूर्ण ।

१ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२ कल्याणमदिरभाषा	बनारसीदास	"

३. भण्डमिति संधि	हरिश्चन्द्र प्रवचाम	मपत्र ४	१७-२४
६ सम्भाषि	×	"	२४-२७
७ माणुषसंधि	×	"	२७-३१
८. खण्डपिंड	×	"	३१-४४
विशेष—२ कटक है।			
९ अक्षकाचार दोहा	रामसेन	"	४४-४९
१० बपालासुरलीकरास	×	"	४९-६१
११ भुवपद्मगीकथा	स्वयंभु	"	६१-६७
(हरिबंस मम्माम् विदुर बौराम्य कथानके)			
१२ पदड़ी	मल-कीर्ति	"	६७-७०
(मल-कीर्ति विरचित बंदरप्रवचनिकाभ्याम्)			
१३ विदुलेभिवरिच (१७-१८ संधि)	स्वयंभु	" (पदसाधित)	७०-७६
१४ वीरचरित्र (प्रतुष्टा भाग)	रघु	"	७६-८९
१५. तनुपति की पदड़ी	×	"	८९-९१
१६ सम्यकस्वकीमुदी (भाग १)	सहस्रनाम	"	९१-९४
१७ भावना जलतीसी	×	"	९४-९९
१८ मोतकपूजा	×	माकल	१ ०-०२
१९ भाविपुराण (कुछ भाग)	पुनरन्त	मपत्र ४	१ २-३१
२ यमोपरचरित्र (कुछ भाग)	"	"	११२-४६

४४४४ गुटका स ७९। पत्र सं २३ से १२३। मा १५२ इका। अपूर्ण।

१ पुनर पत्र	×	हिन्दी	२३-३१
२ पदपद्म	करचन्द्र	"	३२-४३
३ बरकाट्ट	×	"	४४
४ पावनतापत्रमभाष	गोहट	"	४९
५ बिनती	भूपरदास	"	५०
६ ते पुन मेरे उर बसा	"	" से नाम सं १७९६	४९

७	जकडी	द्यानतराय	हिन्दी	५१
८.	भगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"	५२
९	हम आये हैं जिनराज तोरे बदन को	द्यानतराय	"	ले० काल सं० १७६६ "
१०.	राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द	"	५३-६०

विशेष—ले० काल सं० १७६६ । क्याचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी । प० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११	निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१-६३
१२.	श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३-६४
१३	मना रे प्रभु चरण ल बुलाय	हरीसिंह	"	६४
१४	हमारी कल्या ल्यो जिनराज	पद्मचन्द्र	"	६४
१५.	पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त] केशवदास		"	६६-६८
१६	कवित्त	जयकिशन सुदरदास आदि	"	६९-७२
१७.	गुणवैलि	×	हिन्दी	७५
१८.	पद-पारा देश मे हो लाल गढ बढो गिरनार	×	"	७७
१९.	कक्कम	गुलाबचन्द	"	७८-८२
				२० काल सं० १७६० ले० काल सं० १८००
२०.	पचवधावा	×	हिन्दी	८४
२१	मोक्षपैडी	×	"	८६
२२.	भजन संग्रह	×	"	९२
२३.	दानकीधौनती	जतीदास	संस्कृत	९३
				निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की सचत् १८१४ ।
२४	शक्रुनावली	×	हिन्दी	लिपिकाल १७६७ ९९-१०५
२५.	फुटकर पद एव कवित्त	×	"	१२३

५४५६ गुटका सं० ७५—पत्र सख्या—११६ । आ०-४३×४३ इ च । ले० काल सं० १८४८ । दशर सामान्य । अपूर्ण ।

१	निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२.	कल्याणमदिरभाषा	बनारसीदास	"

३	अग्नीस्तोत्र	पद्यप्रयोग	संस्कृत	
४	श्रीपासनी की स्तुति	×	हिन्दी	
५	शाशुबचना	बतारसीवास	"	
६	श्रीसतीर्षकूर्तों की बकरी	हर्षकीर्ति	"	
७	बाह्यभावना	×	"	
८	वर्धताहृदय	×	हिन्दी	सब दर्पणों का वर्णन है।
९	पद-वरण केवल को ध्यान	हृषीसिंह	"	"
१०	भक्तप्रस्तोत्रभाषा	×	"	"

१४२७ गुटका सं० ७६ । पद संख्या—१८ । भा —१॥५॥५॥ लेखक सं १७८२ । बीछे ।

१	तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
२	निरूपणा व भाष्यव पूजा	×	"	
३	मंथीस्वरपूजा	×	"	
				पंडित नगपत्र ने हिरण्योदा में प्रतिनिधि की।
४	श्रीश्रीमंथरजी की बकरी	×	हिन्दी	प्रतिनिधि मुद्रा में भी गई।
५	विद्विक्लिप्तस्तोत्र	देवमणि	संस्कृत	
६	एकैश्वरस्तोत्र	बाहिराज	"	
७	विद्वज्जिहित जपि श्रीबरा	×	हिन्दी	
८	विद्वज्जिहित की बबभाल	मनरप	"	श्रीबनेरमें मयराजने प्रतिनिधि की थी।
९	क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१०	भक्तप्रस्तोत्र	भाषार्थमाला व	"	

१४२८ गुटका सं० ७७ । पद सं १२१ । भा १५४ व व । भाषा—संस्कृत । सं सं फल १७१६

माह सुदी १२ ।

१	देवसिद्धपूजा	×	संस्कृत	१-१५
२	मंथीस्वरपूजा	×	"	१२-४४
३	श्रीनृकारण पूजा	×	"	४४-१
४	व्यक्तप्राणपूजा	×	"	१-११

५ रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६ पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७ ज्ञातिपाठ	×	"	६७-६६
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

५४५६. गुटका स० ७८ । पत्र मत्स्या १६० । आ० ६×६ ड च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है ।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२ चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८-३१
३. चिंतामणिस्तोत्र	×	"	३६
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३६-४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७ चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१० चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१-८६
११. गणधरवल्लय पूजा	×	"	८६-११४
१२ अष्टाह्निका कथा	यश कीर्ति	"	१०४-११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्ति	"	११२-११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८-१२७
१५. षोडशकारण कथा	"	"	१२७-१३६
१६ रत्नत्रय कथा	"	"	१३६-१४१
१७ जिनचरित्र कथा	"	"	१४१-१४७
१८. आकाशपचमी कथा	"	"	१४७-१५३
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	अपूर्ण १५४-१५७

२	ज्वालामानिमीस्तोत्र	×	संस्कृत	१२८-१२९	
२१	क्षेत्रपामस्तोत्र	×	"	१६२-१६३	
२२	शांतिशक होम विधि	×	"	१७४-७६	
२३	जीवीसी विजती	म	रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६-८८

४४६० गुटका सं० ७६ । पत्र सं १३ । मा ७×४३ इ च । अपूर्ण ।

१	राजमोचिसास्त्र	वाणेश्वर	संस्कृत	१-२०
२	एन्द्रेस्तोक रामायण	×	"	२६
३	एन्द्रेस्तोक महाभारत	×	"	"
४	गणेशहाराधनाम	×	"	३०-३३
५	नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३२-३३

४४६१ गुटका सं० ८० । पत्र सं १०-४४ । मा ६×४३ इ च । भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी ।

अपूर्ण ।

बिसेब- पञ्चमगत बार्हस्पतिपरिवह, देवायुजा एवं उत्तारार्धसूत्र का संग्रह है ।

४४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं २-२६ । मा ३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । बसा-

सामान्य ।

बिसेब-मित्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

४४६३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं ३ । मा० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत । ले फाल सं १८५३ ।

बिसेब-पद्मावती स्तोत्र एवं विजयसहस्रनाम (पं माध्याह्न) का संग्रह है ।

४४६४ गुटका सं० ८४ । पत्र सं १०-२१ । मा ७×४३ इ च ।

१	स्वस्वयम्बिभि	×	संस्कृत	१५-२
२	सिद्धपूजा	×	"	२१-२३
३	वाङ्मयाकारणपूजा	×	"	२४-२५
४	दशमपञ्चमपूजा	×	"	२६-२७
५	रत्नचन्द्रपूजा	×	"	२८-३०
६	सुन्दरनाटक	×	"	३५-३६

गुटका-सग्रह ।

७. त्रितामणिपूजा	×	संस्कृत	३६-४१
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२-५१

५४६५. गुटका स० ८५ । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—पत्र ३-४ नहीं है । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५४६६ गुटका स० ८६ । पत्र स० ५ से २५ । आ० ६×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ में ८७ सवैयो का सग्रह है किन्तु किस ग्रंथ के हैं यह अज्ञात है ।

५४६७ गुटका स० ८७ । पत्र स० ३३ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१ जैतरक्षास्तोत्र	×	संस्कृत	१-३
२ जिनपिंजरस्तोत्र	×	"	४-१
३ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	६
४ चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	७
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	७-१५
६ ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	१५-१८
७. ऋषि मंडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८-२४
८. सरस्वतीस्तुति	भाशाधर	"	२४-२६
९ शीतलाष्टक	×	"	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	३२-३३

५४६८ गुटका स० ८८ । पत्र सं० २१ । आ० ७×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा फेवलो हे ।

५४६९. गुटका स० ८९ । पत्र स० ११४ । आ० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजाग्रो का सग्रह है तथा अन्त में ग्रचलकीर्ति कृत मंत्र नवकाररास है ।

५४७० गुटका स० ९० । पत्र न० ५० से १२० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—अन्ति पाठ तथा चतुर्विधति तीर्थद्वार स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है ।

५४७१ गुटका स० ९१ । पत्र स० ७ से २० । आ० ६×६ इ च । विषय—स्तोत्र । अपूर्ण । दशा—

१	संबोध पंचासिकाभाषा	घानशराम	हिन्दी	७-८
२	मत्कामरभाषा	हेमराज	"	१-१४
३	अस्थाय मविरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	१३-२२

५४७० गुटका सं० १ । पत्र सं १३ -२ ३ । प्रा ८×८ इ. च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । से कास १८३३ । अपूर्ण । कथा सामान्य ।

१	मविष्मत्तरास	राधमल्ल	हिन्दी	११०-८५
२	जिनपञ्चरस्तोत्र	×	संस्कृत	१८३ ८७
३	पार्वतीपस्तोत्र	×	"	१८८
४	स्वयम (मण्डित संत का)	×	हिन्दी	१८१-१३
५	वैतनचरित्र	×	"	११३-२ ३

५४७३ गुटका सं० ६३ । पत्र सं २५-१ ८ । प्रा ५×३ इ. च । अपूर्ण ।
विशेष—प्राग्म के २४ पत्र नहीं हैं ।

१	पार्वतीपञ्चिका	×	हिन्दी	२५
२	मत्कामरस्तोत्र	मानसु भाषार्थ	संस्कृत	३४
३	कर्मस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	"	१२
४	सप्त बहू का भ्रमडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी	१५
५	पिया बने मिरकर कू	×	"	१७
६	नामि नरेन्द्र के नंदन कू कम बंरन	×	"	१८
७	सीताजी की जिनती	×	"	७१
८	हस्ताक्षरसूत्र	जगन्नाथ	संस्कृत	७२-१४
९	पद- मरन करां छा जिनराजकी राम शरंष	×	हिन्दी	अपूर्ण १६
१०	" की परि करोजी गुमाल के के जिनका महमाल बुधजग		"	१७
११	" लपनि मोरी मयी ऐसी	×	"	११
१२	" गुम पति पावन याही चित्त धारोजी	नमन	"	११
१३	" बालकी सति मेम बंवार	×	"	१
१४	" दुक नजर महर की करला	सुधरदास	"	१ २

१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६ देखो करमा सूं फुन्द रही अजरी	किशनदास	"	१०३
१७. संखी नेमीजीसू मोहे मिलावोरी (रागहोरी) चानतराय		"	"
१८. दुरमति दूरि खडी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी	खेमचन्द्र	"	१०६
२०. जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	×	"	अपूर्णा १०८

५४७४ गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्णा ।

विशेष—पत्र सख्या २९ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकातरा आदि के मंत्र हैं । सं० १८२१ मे श्री हरलाल ने पावटा मे प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १८७ । आ० ४×३ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११९-१३७
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	×	"	१३८-१४४
५. मुनीश्वरो की जयमाल	×	"	१४५-१४६
६. शांतिनाथस्तोत्र	×	"	१४७-१४८
७. जिनपजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९-१५१
८. भैरवाष्टक	×	"	१५१-१५६
९. अकलंकाष्टक	अकलंक	"	१५६-१५९
१०. पूजापाठ	×	"	१६०-१६७

५४७६ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १६० । आ० ३×३ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	

३	बितामरिष्ठपात्रमापस्तोत्र	×	संस्कृत	
४	सस्त्रीस्तोत्र	×	"	
५	चैत्यवचना	×	"	
६	ज्ञानपञ्चोत्ती	बनारसीबास	हिन्दी	२०-२४
७	धीपासस्तुति	×	"	२२-२५
८	विनायहारस्तोत्रभाषा	मथनकीर्ति	"	२२-२३
९	श्रीश्रीसतीर्षकुरस्तोत्र	×	"	३३-३७
१०	पंचमंगल	स्वर्णद	"	३५-४०
११	तत्पार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४६-५९
१२	पद्म-मेरी रे सगावो जिनजी का नामसु	×	हिन्दी	९
१३	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीबास	"	११-७
१४	श्रीश्रीवन्दन की स्तुति	सुबरबास	हिन्दी	७१-७२
१५	बकली	स्वर्णद	"	७३-७४
१६	"	सुबरबास	"	७५-७६
१७	पद्म- सीवो बास छो सीवो रे मन्त्री जिनजी को नाम सब बनो	×	"	८४-८५
१८	निर्वाणकाण्डभाषा	मथनकीर्ति	"	८५-८६
१९	अष्टावर्गमंत्र	×	"	९०-९१
२०	श्रीश्रीकुरादि चरित्र	×	"	९७-११९
२१	वर्धनपाठ	×	संस्कृत	११३-११४
२२	पारसनाथजी की विद्याली	×	हिन्दी	११६-७७
२३	स्तुति	कनककीर्ति	"	१५ ५२
२४	पद्म-(श्रीश्रीजिनराज मन्मथ काम करानी)	×	"	

२४५७ गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७२ । मा० १५२६ इ.स. । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । बड़ा सामान्य ।

विशेष-गुटकाजीर्ण शीर्ष हो चुका है । धातु मिट चुके हैं ।

१ तत्पार्थसूत्र उमास्वामि संस्कृत

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"	
३. एकीभावस्तोत्र	चादिराज	"	
४. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	
६. वर्धमानस्तोत्र	×	"	
७. स्तोत्र संग्रह	×	"	५६-७३

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० १३-११५ । आ० २३×२३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

दशा सामान्य ।

विशेष-नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओं का संग्रह है ।

५४७९. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ४-१०५ । आ० ४×३ इञ्च ।

१. कृष्णकावतीसी	×	हिन्दी	४-१३
२. त्रिकालचीवीसी	×	"	१४-१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"	१७-२०
४. तीसचीवीसी	×	"	२१-२३
५. पहेलिया	मारू	"	२४-६३
६. तीनचीवीसीरास	×	"	६४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	६७-७३
८. श्रीपाल वीनती	×	"	७४-७८
९. भजन	×	"	७९-८०
१०. नवकार बड़ी वीनती	ब्रह्मदेव	"	सं० १८४३ ८१-८२
११. राजुल पञ्चीसी	विनोदीलाल	"	८३-१०१
१२. नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द	"	अपूर्ण १०१-१०५

५४८०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० २-८० । आ० १०×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. जिनपञ्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचंद्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४-५

४	एकीमवस्तीष	बादिराज	संस्कृत	२-६
५	विनपुषाविधान (केवपुषा)	×	हिन्दी	७-१३
६	बहुव्यसा	पालतराज	"	१६-१७
७	मच्छमरस्तोत्र	मानसु पाचार्य	संस्कृत	१३-१५
८	उत्थार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५-१९
९	सीताहृकारणपुषा	×	"	२२-२४
१०	बसवप्रणपुषा	×	"	२५-३२
११	एकत्रयपुषा	×	"	३३-३६
१२	पञ्चपरमेष्ठीपुषा	×	हिन्दी	३७
१३	संकीर्णरुद्धीपुषा	×	संस्कृत	३७-३८
१४	सात्मपुषा	×	"	४०
१५	सरस्वतीपुषा	×	हिन्दी	४१
१६	तीर्थकुरपरिचय	×	"	४२
१७	नरक-स्वर्ग के संन पुष्पी प्रादि का वर्णन	×	"	४३-४
१८	जैनछठक	सुवरवाक	"	४१-४८
१९	एकीमवस्तीषमाका	×	"	५-६१
२०	द्राव्यानुमेसा	×	"	६१-६३
२१	वर्त्मस्तुति	×	"	६३-६४
२२	साधुवचना	बनारसीबास	"	६४-६५
२३	पंचमङ्गल	बपबन्ध	हिन्दी	६५-६८
२४	बोयीरातो	बिनवास	"	६८-७०
२५	बचमि	×	"	७०-७५

४४८१ गुटका सं० १०१। पत्र सं २-२१। पृ ३१×३१ इ. व। भाषा-माकृत। विषय-वर्णा।
 मयूर। बसव-वामन्य। बीबीस छण का पठ है।

४४८२ गुटका सं० १०२। पत्र सं २-२३। पृ ३४×४ इ. व। भाषा-हिन्दी। मयूर। बसव-
 वामन्य। निम्न बचमि के पदों का संग्रह है।

गुटका-संग्रह

१. भूल क्यों गया जी म्हाँ	×	हिन्दी	२
२ जिन छवि पर जाऊँ मैं वारी	राम	"	२
३. अखिया लगी तैडे	×	"	२
४ हगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६. जिनजी का ध्यान मे मन लगि रह्यो	×	"	३
७ प्रभु मिल्या दीवानी विछीवा कैसे किया सइया	×	"	४
८. नहीं ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९ आनन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०. जिनराज भजो सोही जीत्यो	नवलराम	"	५
११. सुभ पथ लगी ज्यो होय भला	"	"	५
१२. छाडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	५
१३ सवन मे दया है धर्म को मूल	"	"	६
१४. दुख काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५ मारण लाग्यो	नवलराम	"	६
१६ जिन चरणा चित लगाय मन	"	"	७
१७ हे मा जा मिलिये श्री नेमकवार	"	"	७
१८. म्हारो लाग्यो प्रभु सू नेह	"	"	८
१९ था ही सग नेह लग्यो है	"	"	९
२० था पर वारी हो जिनराय	"	"	९
२१. मो मन था ही सग लाग्यो	"	"	९
२२. घनि घडी ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	९
२३ वीर री पीर मोरी कासो कहिये	"	"	१०
२४ जिनराय घ्यावो भवि भाव से	"	"	१०
२५. समी जाय जादो पति को समझावो	"	"	११
२६. प्रभुजी म्हारी विनती अवधारो हो राज	"	"	११

१७ ईं दिक् क्षीणिये हो चतुर मर	नवलराम	हिन्दी	१२
२५ प्रभु पुन मावो मविक बन	"	"	१२
२६ वो मन म्हारो जिनजी सु माम्पो	"	"	११
३ प्रभु बूक तकसीर मेरी माफ करो कै	"	"	११
३१ बरसन करत मय सब नसे	"	"	११
३२. ऐ मन सोझिया ऐ	"	"	१४
३३ भलत रुप बेराये बित भीमो	"	"	१३
३४ देव बीन को बपाल कानि बरस्य करण माम्पो	"	"	"
३५ गावो हे वी बिन विकसप ब्यारि	"	"	"
३६ प्रभुजी म्हारो मरज सुनो बितलम	"	"	१६
३७ ये शिखा बित नार्ई	"	"	११-१७
३८ मैं पूबा फल बात सुमौ	"	"	१८
३९. बिन सुमरन की बार	"	"	"
४ सामाविक स्तुति बंदन करि के	"	"	१९
४१ बिनबजी की एक एक मीन काय	संतबास	"	"
४२ बेतो बमों न कानी जिमा	"	"	२
४३ एक मरज सुनो साहब मोरी	दानतराम	"	"
४४ मी से मपना कर बवार रिखन बीन ठेरा	गुपचम	"	२
४५. मपना रंम मे टय ब्योभी साहब	×	"	"
४६ मेरा मन मनुकर मरनको	×	"	२१
४७ भेया पुन बोरी त्यबोमी	पारबदास	"	"
४८ ब्यी २ पन २ दिन २	दीनतराम	"	"
४९. फट फट मरबट	×	"	२२
५ मारन मपनी बोब गुकानी डोरै	×	"	"
५१ सुनि जीय्य ऐ बिरबाम ऐ खोवी	×	"	"
५२. जग बसिया ऐ नार्ई	गुपचम	"	"

५३. आई सोही सुगुह बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो मन जितजी न क्यो नही रटे	"	"	"
५५. की परि इतनी मगरूरी करी	"	"	अपूर्णा

५४८३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३-२० । आ० ६×५ इञ्च । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५४८४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १७२८ कार्तिक

सुदी १५ । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	"	३३-४७
३. स्तपनविधि	×	संस्कृत	४८-६०
४. क्षेत्रपालपूजा	×	"	६०-६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	"	६४-६५
६. वन्देतान की जयमाला	×	"	६५-६९
७. पार्श्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	७०-७३
९. पूजा घमाल	×	संस्कृत	७४
१०. चित्तामरिण की जयमाल	ब्रह्मराममल्ल	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६-७८
१२. विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	८२
१३. पद्मावतीपूजा	"	"	८५
१४. रत्नावली व्रतों की तिथियों के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५. ढाल मगल की	"	"	८८-८९
१६. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	८९-१०२
१७. जिनयज्ञादिविधान	×	"	१०२-१२१
१८. व्रतों की तिथियों का व्यौरा	×	हिन्दी	१२१-१३६

५४८५. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११७ । आ० ६×६ इ च ।

१ पटञ्जलपुराण बाह्य भासा	जनराज	हिन्दी	अपूर्ण	२४-४३
२ कवित्त सप्तह	×	"		४३-६१
निम्न कवियों के नायक नामिका सबन्धी कवित्त हैं ।				
३ उपरोक्त पञ्चीसों	×	हिन्दी	अपूर्ण	६२-६३
४ कवित्त	मुक्तनाम	"		६६-६७

१४८६ गुटका सं० १०६ । पत्र सं २४ । मा ६×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । पूर्ण । बीर्सा ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वापसूत्र है

१४८७ गुटका सं० १०७ । पत्र सं २ -६४ । मा ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । से कास सं० १७४८

बैशाख सुदी १४ । अपूर्ण । दशा—शामास्य ।

१ कृष्णवदनशैलिसि हिन्दी गद्य टीका सहित पूम्पौराज हिन्दी २ -३४

सेकास कास सं १७४८ बैशाख सुदी १४ । र कास सं १६३७ । अपूर्ण ।

अन्तिम पाठ—

रमठां जगदीश्वरतणीं पृथ्वीं रस मित्पावचन न ता सम है ।

सरसति स्फुरिणी तण्डि सहचरि कहि या सुप्रेतियक नई ॥ १ ॥

टीका—रूति एकलतई स्फुरणी भावइ धीपुल्लजो तइ रमठा क्रीडतां जे रस ते हृदि बीजा सरीक कही । पर ते बचन माही कूडड तैमते मानत साच मानिग्यो । स्फुरणी सरस्वतीको सहचरी । सरस्वती तण्डि पुत बात नही मुम्नइ मानणई जाखी ॥ जाणी सचबात नही तेहना मुब नकी सुणी तिमही न कही ॥ १ ॥

रुप सधण गुण तरास सभाणि अहिबा समरधीक कुण ।

आणिया जिबा सातिसामे जनिया गोविंद राणि तणां कुण ॥ ११ ॥

टीका—रुमरिस नड रूप सराण गुण कहेवा भणि समर्थ कुण समर्थ तर छइ अणितु की नहि परमइ । माहरि मतिइ अनुमार जिबा ज्यावा तिस्या अन्व माहि पू ज्या कहा तण कारण हु तण्डर बासक छु मी परि हुवा करिज्यो ॥ ११ ॥

जमु दिव जयन रस तामि बरुबर बिजयवतमि रवि रिय बरणीत ।

(जयन रुमरणी बैति कटावड कोषी कयच न कस्याण प्रत ॥ १२ ॥)

टीका—सबल पत्रत तत्त्व रजु तब कुण ३ प्रम ६ तदित्यग्रमा १ तत्रत् १६३७ वर अचत कुण रवि मक्षि संवि तात बीमड बन ॥ वरि बी भरतार भबले विन रात बंठ वरि धीपुत्र जयति अदार विपइ भी सग्यी मड आरि रुमणी कृष्णवठ की कनकां जस नरी पावना बीधी ए बैनी अहू जगती अचले लोचनित राठ दिन मसइ वरड भी नामी नर जम पावइ ।

वेद बीज जल वयरा सुकवि जउ मडीस धर ।

पत्र दूहा गुण पुहपवास भोगी लिखमी वर ॥

पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।

मनसुजेणति अब फल पामिइ अबर ॥

विसतार कोध जुचि जुगी विमल धणी किसन कहणहार धन ।

अमृत बेलि पोथल अतइ रोपी कलियाण तनुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूल वेद पाठ तीको बीज जल पाणी तिको कवियण तिये वयरो करि जडमाडीस दृढ परिण्डं ॥
दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भमर श्रीकृष्णजी बेलिइ माकहइ करो विस्तरी जगत्र नइ विषै दीप प्रदीप ।
व दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पामइ । अबर कहिता स्वर्ग
ना सुख पाये । विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धणी नइ कहण हार धन्य
तिको पिरा अमृत रूपणो बेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई कविराज श्री कल्याण तम बेटा पृथ्वीराजइ कह्या ।

इति पृथ्वीराज कृत कृपण रुकमणी बेलि सपूर्णा । मुणिए जग विमल वाचणार्थ । सवत् १७४८ वर्ष वैशाख
मासे कीष्ण पक्षे तिथि १४ अशुवासरे लिखतं उणियरा नग्रे ॥ श्री ॥ रस्तु ॥ इति मगल ॥

२. कोकमजरी	×	हिन्दी	५४
३. बिरहमजरी	नददास	"	५५-६१
४ बावनी	हेमराज	" ४९ पद्य हैं	६१-६७
५ नेमिराजमति बारहमासा	×	"	६७
६. पृच्छाबलि	×	"	६९-८७
७ नाटक समयसार	वनारसीदास	"	८८-११४

५४८८ गुटका सं० १०७ क । पत्र सं० २३५ । आ० ५×४ इञ्च । विषय-पूजा एव स्तोत्र ।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१-४
२ सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४-६
३. श्रुताष्टक	×	"	६-७
४. गुरुस्तवन	शांतिदास	"	८
५. गुर्वाष्टक	वादिराज	"	९

१ सरस्वती जयमाला	ब्रह्मविनयास	हिन्दी	१-१२
७ शुक्लयजुसामा	"	"	१३-१५
८ लघुमहापत्रविधि	×	संस्कृत	१६-२३
९ सिद्धचक्रपूजा	×	"	२४-३
१ कर्मलक्षणपार्षनापपूजा	यसोविजय	"	३१-३५
११ पीठसकारणपूजा	×	"	३५-३६
१२ बसमभरणपूजा	×	"	३६-४२
१३ गन्दीश्वरपूजा	×	"	४३-४५
१४ जितसहस्रनाम	प्रासाद	"	४६-४८
१५ अर्हद्भक्तिविधान	×	"	४९-५२
१६ सम्यकरसनिपूजा	×	"	५२-५४
१७ सरस्वतीस्तुति	प्रासाद	संस्कृत	५४-५५
१८ ज्ञानपूजा	×	"	५७-७१
१९ महामिष्ठान	×	"	७१-७३
२ स्वस्वयम्भविधान	×	"	७३-७६
२१ चारित्र्यपूजा	×	"	७६-८१
२२ रत्नत्रयजयमाला तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	८१-८१
२३ बृहत्स्तोत्रविधि	×	संस्कृत	८१-११६
२४ अविमर्शस्तोत्रपूजा	×	"	११६-११८
२५ अष्टाङ्गिकापूजा	×	"	१२६-२१
२६ विरवावली	×	"	१५९-६
२७ कर्त्तव्यस्तुति	×	"	१९१-१२
२८ आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१९३-१९६

॥ ॐ नमो सिद्धाय ॥

भी विद्याभारदारिण सुखैवि कुर्वन्निष्क प्रणमेवी ।

कुरु माराधना मुनिचार संक्षेपे सारो धीर ॥ १ ॥

हो क्षपक वयण अवधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि ।
 हो सुभट कहू तुम्ह भेउ, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥
 हवि जिनवरदेव आराहि, तू सिध समरि मन माहि ।
 सुणि जीव दया घुरि धर्म, हवि छाडि अनुए कम्म ॥ ३ ॥
 मिथ्यात कु सका टालो, गणगुरु वचनि पालो ।
 हवि भान धरे मन धीर, ल्यो सजम दीहोलो वीर ॥ ४ ॥
 उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।
 तू क्रोध मान माया छाडि, आपुण सू सिलि माडि ॥ ५ ॥
 हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।
 तु मत्र समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥
 हवि सवे परिसह जिपि, अभतर ध्यानै दीपि ।
 वैराग्य धरे मन माहि, मन माकड गाडु साहि ॥ ७ ॥
 सुणि देह भोग सार, भवलघो वयण मा हार ।
 हवि भोजन पाणि छाडि, मन लेई भुगति माडि ॥ ८ ॥
 हवि छुराक्षण पुटि आयु, मनासि छाडो काय ।
 इ द्वीय वस करि धीर, कुटब मोह मेल्ले वीर ॥ ९ ॥
 हवि मन गन गाठु वाधे, तू मरण समाधि साधि ।
 जे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग भुगतिय भरोय ॥ १० ॥

×

×

×

×

अन्तिम भाग

हवि हडि जाणि विचार, घणु कहिइ किहि सु अपार ।
 लिआ अणसण दीख्या जाण, सन्यास छाडो प्राण ॥ ५३ ॥
 सन्यास तरा फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फलि सुखु होइ ।
 वलि श्रावक कोल तू पामीइ, लही निर्वाण भुगती गामीइ ॥ ५४ ॥
 जे भणि सुणिन नरनारी, ते जाइ भववि पारि ।
 थो विमलेन्द्रकीर्ति कह्यो विचार, आराधना प्रतिबोधसार ॥ ५५ ॥

इति श्री आराधना प्रतिबोध समाप्त

	शैवैककीति	संस्कृत	१७ -१८
३ अमस्तपूजा	ब्रह्मशांतिवास	हिन्दी	१८ -२२
३१ फणुवरनसफुषा	सुमनत्र	संस्कृत	२२२-२२१
३२ पञ्चकन्यास्यकौचापन पूजा	म ज्ञानसुपण	"	अपूर्णा २२१-२५

५४८३. गुटफा सं० १०८ । पत्र नं १२ । मा ५५५ इ. ज्ञान-हिन्दी । पूर्ण । रसा-वीर्य ।

२ अमस्तपूजा	बनारसीवास	हिन्दी	१-२१
२ लघुसङ्गमनाम	×	संस्कृत	२२-२७
३ स्तनम	×	अपभ्रंश	अपूर्णा २८
४ पद	मनराम	हिन्दी	२९

मि कस १७३५ मासोज बुधी ९

बैतन इह कर नाही तेरो ।

बटपटादि नैनन गोबर जो नाटक पुरान केरी ॥ टेक ॥

तास मास कामनि गुठ बंधु, करम बध को बेरो ।

बरि है गौन अमस्तपि की अब कोई मही आबत तेरी ॥ १ ॥

अमस्त अमस्त ससार गहन बन कीमी अमि बसेरी ।

मिथ्या मोहु जरी हैं समझो इह सबन है मेरी ॥ २ ॥

सबपुत्र बचन बोह बट बीपक मिटे अमिदि अनेरी ।

अमस्तप्यास परसेस म्यान मय, जयी बालऊ निज डेरी ॥ ३ ॥

नाना विक्रमप त्यागि आपकी मास भाप महि हेरी ।

जौ मनराम अचेतन परसी सहरें होइ निबेरी ।

५ पद-मी पिय बिरानह परबीन	मनराम	हिन्दी	३
६ बैतन लमकि बैखि परमाहि	"	"	अपूर्णा ३१
७ डे बरमेरुटी बी अरबा बिधि	"	"	३२
८ जयति अग्रिदास मिमदेव म्यान गाऊ	×	"	३३
९ मय्यरुद अणुबिदि तिरिपान ही	"	"	३४-३५

१०. पचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	स० १६८३ श्रावण अपूर्ण
११ पच सषावा	×	”	”
१२. मेघकुमारगीत	पूनी	हिन्दी	४०-४५
१३ भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	”	४६
१४ पद-अव मोहे कळूत उपाय	रूपचद	”	४७
१५. पंचपरमेष्ठीस्तवन	×	प्राकृत	४७-४९
१६ शातिपाठ	×	सस्कृत	५०-५२
१७ स्तवन	आशाधर	”	५२
१८ वारह भावना	कविआलु	हिन्दी	
१९. पचमगल	रूपचद	”	
२०. जकडी	”	”	
२१ ”	”	”	
२२. ”	”	”	
२३. ”	दरिगह	”	

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे ।

तू तजि परपरवारे चेतसि सहज सुभाव रे ॥

चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्यौं मिलि क्या राच रहे ।

अप्पा पर जाण्या पर अप्पाणा चउगइ दुख्य अणाइ सहे ॥

अवसो गुण कीजै कर्म ह छीळ्जै सुगाहु न एक उपाव रे ।

दसण राण चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे ॥ १ ॥

करमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ विभाव रे ।

मिथ्या मद नडिया रे मोह्या मोहि अणाइ रे ॥

मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित माचि रह्या ।

पढ पढिहार खडग मदिरावत ज्ञानावरणी आदि कह्या ॥

हडि चित्त कुलाल भड्यारौण अष्टाउदीग्र चताई रे ।

रे जीवडे करमनि वसि पडिया प्रणया मूढ विभाव रे ॥ २ ॥

तू मति सोबहि न बीटा रे बैरिन धे नग्रा बास रे ।
 भवभव बुद्धबास करे तिनका करे बिसास रे ॥
 तिनका करहि बिसास रे बिबडे तू मुका नहि मियपु करे ।
 जम्मसु मरण बरा बुद्धबासक तिनस्वी तू नित नेह करे ॥
 प्राये स्याता प्राये क्षिप्ता कहि समझाऊ कास रे ।
 रे बीठ तू मति सोबहि न बीटा बैरिन में काह्नास रे ॥
 ते जगमाहि जाते रे रहे पत्तरत्पनसाह रे ।
 केवस निगत भयारे प्रमटी जोति सुमाह रे ॥
 प्रमटी जोति सुमाह रे बीबडे मिय्या रेखि निहाणी ।
 स्वपरमेव काससु जिन्हु मिलिया ते जम हुवा बाणी ॥
 सुगुह सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै सागी पाल रे ।
 कही बरिनहु जिन जिमुवन सेवे रहे प्रंतः स्मनसाह रे ॥ ४ ॥

२४ कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीबास	हिन्दी	से कास १७३२ मासोज सुबी ६
२१ निर्वाणकाण्ड भाषा	×	प्राकृत	
२६ पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

५४६० गुटका सं० १०६ । पत्र सं १३२ । भा १५४ इका । से कास १७३६ सावण सुबी ९ ।
 मपूर्णा । बटा-बीर्णशीर्ष ।

विषय-विषय विद्युत एक अनुकूल है ।

१ अदिभारतेय की कथा	×	हिन्दी	११४
२ कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीबास	"	१५-२४
३ मेमिनाब का बाह्यमत्सा	×	"	मपूर्णा २५-२६
४ ककड़ी	मेमिनाब	"	२७
५ सबैया (मुल हीत बरीरको बामिब भाषि बाह) ×		"	२८
६ कवित्त (भी जिनराय के प्यान को उछाह मोहे सागे		"	२९
७ निर्वाणकाण्डभाषा	भनवतीबास	"	३०-३३

८	स्तुति (आगम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४-३६
९.	वारहमासा	×	"	३७-३९
१०.	पद व भजन	×	"	४०-४७
११.	पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	"	४८-४९
१२.	आम नीवू का भगडा	×	"	५०-५१
१३.	पद-काइ समुद विजयसुत सार	×	"	५२-५७
१४.	गुरुओ की स्तुति	भूधरदास	"	५८-५९
१५.	दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०-६३
१६.	विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४-६६
१७.	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७-६८
१८.	पद-मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९.	मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्ति	"	७१
२०.	पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरसण पाय)	रामदास	"	७२
२१	चलो जिनन्द वदस्या	×	"	७२-७३
२२	पद-प्रभुजी तुम में चरण शरण गहो	×	"	७४
२३.	आमेर के राजाओ के नाम	×	"	७५
२४	" "	×	"	७६
२५.	विनती-बोल २ भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	"	७८-७९
२६.	पद-चेतन मानि ले बात	×	"	७९
२७.	मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	"	८०
२८.	विनती-बडू श्री अरहन्तदेव	हरिसिंह	"	८१-८२
२९.	पद-सेवक हू महाराज तुम्हारो	दुलीचन्द्र	"	८२-८४
३०.	मन घरी वे होत उछावा	×	"	८४-८६
३१	घरम का ढोल बजाये सूणी	×	"	८७
३२	अब मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराम	"	८८
३३	लागो दौर लागो दौर प्रभुजी का ध्यानमे मन । पूरणदेव		"	८८
३४	आसरा जिनराज तेरा	×	"	८८

३८. तु जाणे ज्यों तारोची	×	हिन्दी	८६
३९ तुम्हारे बस देखत ही	जोधराज	"	९
३७ सुनि २ १ बीन मेरा	मनसाराज	"	१०-११
३८ भरमत्त २ संघार बतुर्वति तुल सहा	×	"	११-१२
३९ श्रीमैमकुबार हमको क्यों न उतारो पार	×	"	१२
४ भारती	×	"	१९-२०
४१ पर—बिनती कराखा प्रभु मानो बी	क्रिष्णगुनाज	"	१५
४२ ये बी प्रभु तुम ही उठाओगे पार	"	"	१६
४३ प्रभुकी मोह्या बी तन मन माण	×	"	१६
४४ बंधू श्रीबिनराज	कनकजीति	"	१ -१ १
४५ बाबा बरम्या प्यारा २	×	"	१ २
४६ सफल कबी हो प्रभुकी	जुसालबाब	"	१ ३
४७ पर	देवसिंह	"	१ ४-१ ५
४८ बरका बसता नाही २	जुमरबाब	"	१ ६
४९ अकामरस्तोम	मालजुझाबाब	संस्कृत	१ ७-१ ७
१ बीबीस तीर्कर सुवि	"	हिन्दी	११९-११
११ मेकनुमावार्ता	"	"	१२१-२४
१२ बनिस्वर की कथा	"	"	१२५-४१
१३ कर्मपुत्र की बिनती	"	"	१४२-४३
१४ पर—मरक कर्क तु बीतराज	"	"	१४६-४७
१५ स्फुट पाठ	"	"	१४८-४९

३४६१ गुटका स० ११०। पत्र सं १४३। भा १४४ इ च। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

१ बिरपूजा	×	संस्कृत	१-२६
२ मोराजसभ	उमास्वामि	"	२६-४६
३ अकामरस्तोम	भा मानु ग	"	५ -३५
४ संवर्षवत्त	रघुबाब	"	३८-१५

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	६८-७५
६. पूजासंग्रह	×	"	७५-१०२
७. विनतीसंग्रह	देवाग्रह	"	१०२-१४३

५४६२. गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११
३. चरवा	×	प्राकृतहिन्दी	११-२६

विशेष—“पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाला की छै । मिति चैत सुदी ६ संवत् १९५४ का मे मिली मार्फत राज श्री राठोडजी की सूँ पचासू-।” यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३ गुटका सं० ११२ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । अर्धपूर्ण ।

विशेष—पूजाग्रो का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६-२२ । आ० ६३×५ इंच । अर्धपूर्ण । दशा-सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८-२० ।

डोकरी ने राजा भोज कही डोकरी हे राम राम । वीरा राम राम । डोकरी यो मारग कटा जाय छै । वीरा ईं मारग परथी आई अर परथी गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ । ना वीरा थे बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार माही दोय और ही छै ॥ एक तो चाद अर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना वीरा थे तो राजा नाही । राजा तो ससार मे दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चोर ना । चोर तो ससार मे दोय और ही छै । एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना वीरा थे तो हलवा नाही ॥ हलवा तो संसार मे दोय और ही छै । कोई पराये घर बसत मागिवा जाइ उका घर मे छै पणि नट जाय सो हलवा ॥ ५ ॥ डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना वीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर माही सूँ काढे सो माता । दूसरी घाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे तें हारघा हे हरघा । ना वीरा थे क्या ने हारघो । हारघो तो ससार मे तोन और ही छै । एक तो मारग चालतो हारघो । दूसरो वेटी जाई सो हारघो तीसरी जैकी भोडी अस्त्री होइ सो हारघो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे वापडा हे वापडा । ना वीरा थे वापडा नाही । वापडा तो च्यारा और छै । एक तो गऊ को जायो वापडो । दूसरो छयाली को जायो वापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो वापडो । चौथा वामण वाण्या की बेटी विधवा हो जाय सो वापडो ॥ ८ ॥ डोकरी आपा मिला हे

मिता । बीरा मिसबा नामा तो ससार में थ्यारि घोर ही छै । जैको बाप बिरथा होसी सो ना मिससी । घर बे को बेटा परदेश सू मामो होसी सो ना मिससी । दूसरो सबण भाबबा को मेह बरस सी सो समन्दर सू । तीसरो भायोज को भात पैराबा आसी सो को मिससी । चौथा स्त्री पुस्य मिससी । डोकरी पाप्मा हे बाप्पा । भरिया कहे म उजमेठ भनसी घामा । पुरवा भाई वारया बीमार साधा ॥ १ ॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्ण ॥

५४६५ गुटका सं ११४ । पत्र सं १-७२ । मा १३×३३ इच ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

५४६६ गुटका सं० ११५ । पत्र सं ११८ । मा १×३ इच । भाषा—हिन्दी । प्रपूर्ण । रचा—सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, विनयप्रकरण (प्रासापर) एवं स्वयम्स्तोत्र का संग्रह है ।

५४६७ गुटका सं० ११६ । पत्र सं ११९ । मा १×३ इच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । रचा भीर्ण ।

विशेष—कुटके में निम्न पाठ उत्सेहनीय है ।

४ भुवनकीर्ति गीत

दूबराज

हिन्दी

१२-१४

भाजि बडाज सुराह सहैसी यह मनु बिबसह जि महनीए ।

पोहि भनल मित कीटिहि सारिहि मुह कुह मुह कुह बैरहि मुकरि रलीए ॥

करि रली बन्ध सखी मुह कुह लखि मोहम सम सरै ।

पसु बैधि बरठणु टसहि भन्नुख होइ मित लखनिधि बरै ॥

कू र बन्धन भगर केसरि प्राणि भावन भाव ए ।

भीभुवनकीर्ति बरण प्रखमोह सखी भाज बडाज हो ॥ १ ॥

तेरु बिधि बारिह प्रजिपालह बिनकर बिनकर बिम तपि सोहइ ए ।

सर्वाभि माधिन भम सुराबै बासी हो बासी भनु मन मोहइ ए ।

मोहमि बासी सबा भवि सुनु प्रन्ध प्रागम माहए ।

पट इभ्य सब पद्मास्तिकामा सततल पयातए ॥

बाबीस परिग्रह सहइ अंगिह गक्य मति मित प्रणमियो ।

भीभुवनकीर्ति बरण पणमि सु बारिहु वनु तेरु बिने ॥ २ ॥

मून कुण्डल पठाइसइ बारइए मोहए मोह महामनु ताबियो ए ।

रतिवति तिलु बति ह महिइठ पुणु बीबहुए बीबहुपरि तिहि रस्तीयो ए ॥

रालियो जिमि क बँड करिहि वनउ करि इम बीलइ ।
 गुरु सियाल मेरह जिउअ जगमु पवण भइ किम डोलए ।
 जो पच विषय विरतु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तरु ।
 श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणामइ धरइ अठाइस मूलगुणा ॥ ३ ॥
 दस लाक्षणा धर्म निष्ठु धारि कुं सजमु सजमु भसणु वनिए ।
 सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगथु महा मुनीए ॥
 निरगथु गुरु मद अद्दु परिहरि सवय जिय प्रतिपालए ।
 मिय्यात तम निद्धंण दिन म जैणधर्म उजालए ॥
 तेरअप्रतह अखल चिअह कियउ सकयो जम ।
 श्री भुवनकीर्ति चरण पणामउ धरइ दशलक्षिण धम्मु ॥ ४ ॥
 सुर तरु सध कलिउ चितामणि दुहिए दुहि ।
 महो धरि धरि ए पच सवद वाजहि उछरगि हिए ॥
 गावहि ए कामणि मधुर सरे अति मधुर सरि गावति कामणि ।
 जिणह मन्दिर अवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढावहि ॥
 बुचराज भणि श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।
 श्री भुवनकीर्ति आसीरवादहि सधु कलियो सुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ॥

५. नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५-१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१६-१०६
७. पार्वनायस्तवन	समयराज	”	१०७

सुन्दर सोहण गुण निलउ, जग जीवण जिण चन्दोजी ।
 मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनदी जी ॥ १ ॥
 जेसलमेरु जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
 पास जिरोसुर जग धणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥
 मणि मारिणक मोती जङ्घठ कचणरूप रसालो जी ।
 सिरवर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

निरमल टिकक सोहमण्डल जिन मुक्त बन्धन रिसासोबी ।
 जानों कुण्डल बीपती मिक मिय म्हाज म्हासोबी ॥ ४ ॥ वे ॥
 कंठि मनीहर कंठिमंड उरि कारि मब सिर हारीबी ।
 बहिर बबहि मना करता म्हाज म्हाज कारोबी ॥ ५ ॥ वे ॥
 मरकत मणि तनु बीपती मोहन सूरति साठोबी ।
 मुक्त सोहण संपद मिमइ बिरसुबर नाम म्हासोबी ॥ ६ ॥ वे ॥
 इन परि पासु बिरसुबर भेटमंड कुल-विणुगारोबी ।
 त्रिणुबर सूरि पसाठ मइ समबराब मुक्तकारोबी ॥ ७ ॥ वे ॥
 ॥ इति श्री पद्मर्चनापस्तकन समसोऽयं ॥

२५६८ गुटका सं० ११७। पद सं १३ । या ११×२ इञ्च। मापा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

इमा सामान्य।

बिचोप- विविध पाठों का संग्रह है। बर्षाएँ पुस्तकें एवं प्रतिष्ठादि विषयों से संबंधित पाठ हैं।

२५६९ गुटका सं० ११८। पद सं १२३। या १×४ इंच।

१	चिराता बगुच्छ	नबमराम	हिन्दी	२
२	श्री त्रिणुबर पद बन्धि के श्री	बलतराम	"	२-७
३	मरहंत बरनचित साईं	रामविद्या	"	२-१
४	वेतन हो कैरे परम निपण	त्रिभक्त	"	११-१२
५	बैरवबंधना	मबमबन्ध	मरहट	१२ १३
६	करणष्टव	पचनेरि	"	२१
७	पद-प्रात्रि रिबमि पवि मेम केलवा	रामबग	हिन्दी	१७
८	पद-प्राणबयो मुमरि देव	पगराम	"	२३
९	पद-मुचमपदीत्री प्रबु	गुणमिबग	"	७२
१०	निर्वाणमूर्ति बंधन	बिरबमुपण	"	८१-८

सबन् १७२६ म मुमाकर सं ब केतरीमिह ने लिखा।

११ पञ्चमपतिरेनि हर्षरीति हिन्दी ११२-१८

रचना सं १९८३ प्रति निजि सं १८३

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ बुदी
८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर मे ऋषभ देव चैत्यालय मे रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।
इसमे कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमे २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।
पूर्णा । दशा-सामान्य ।

१. रविव्रतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पौष मृ० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊ ।

सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊ ॥ १ ॥

व गारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।

सात पुत्र सुहामया दीठे टाले दाह ॥ २ ॥

मुनिवादि सेठे लीयो रविनोव्रत सार ।

साभालि कहूँ बहासा कीया व्रत नद्यो अपार ॥ ३ ॥

नेह थी धन करण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।

सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनो व्रत कर सी ।

त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी राधरत्न सुभूषण ।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासघ गति द्वेषण ॥ २१ ॥

इति रविव्रत कथा सपूर्णा । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।

ले० काल सं० १७६३ पौष सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

२ धर्मसार चौपई

पं० शिरोमणि

हिन्दी

३-७३

२० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अवन्तिका पुरी मे श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

निरमल तिसक सोहमखुठ जिन मुक्त कल्पन रिसाजोबी ।
 कानों कुण्डल बीपतां मिक मिंग कानक ममासीबी ॥ ४ ॥ बे ॥
 कंठि मनोहर कंठिमठ चरि बारि नख सिर हारोबी ।
 बहिर बबहि मला करता म्म म्म कारोबी ॥ ५ ॥ बे ॥
 मरकठ मणि तनु बीपती मोहन सूरति साटोबी ।
 मुक्त सोहग संपद मिकइ जिरखर नाम मपारोबी ॥ ६ ॥ बे ॥
 इन परि पम् जियोसद भेटयठ कुन-सिणमारोबी ।
 जियाबन्ध सूरि पसाउ नइ समवराज मुक्तकारोबी ॥ ७ ॥ बे ॥
 ॥ इति श्री पद्मर्षनाथस्तवन समप्तोऽर्थ ॥

५४१८ गुटका सं० ११७ । पत्र सं ३२ । पृ ११×३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

रसा सामान्य ।

विषय— विविध पाठों का संग्रह है । बर्बाद पुस्तकें एवं प्रतिष्ठित विषयों से संबंधित पाठ हैं ।

५४१९ गुटका सं० ११८ । पत्र सं १२३ । पृ ६×४ इंच ।

१	विद्या चतुष्क	नबसराम	हिन्दी	३
२	श्री जितवर पर बन्धि की जी	बसतराम	"	५-७
३	अरुहत चरमभित साईं	रामविद्याम	"	६-१
४	केतन ह्री ठेरे परम विद्याम	जिनबात	"	११-१२
५	बैतपंचना	मकलचन्द्र	संस्कृत	१२ १३
६	कल्याणक	पपनरि	"	२१
७	पर—सावि विबलि पनि मेरो सिलवा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८	पर—ब्रह्मचर्यो मुमरि देव	धनराम	"	२३
९	पर—मुक्तामकीजी प्रभु	मुमानचन्द्र	"	७२
१०	विद्यामूत्रि संनन	विद्यामूत्रि	"	८६-९०
११	ब्रह्मपतिधर्म	हर्यवीरि	हिन्दी	११५-१८

सन् १७२९ म पुष्पावर से व केतरीसिंह ने लिखा ।

रचना सं १९८३ प्रति मिति सं १७३

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल स० १८३० असाह बुदो

८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विषय—पुराने घाट जयपुर मे ऋषभ देव चैत्यालय मे रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि कां थी । इसमे कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रविन्नतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल स० १७६३ पौष मृ० =

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊ ।

सद्गुरु चरण कमल नमि रविन्नत गुरु गाऊ ॥ १ ॥

व खारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।

सात पुत्र सुहामरणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥

मुनिवादि सेठे लीयो रविन्नोन्नत सार ।

साभालि कहू बहासा कीया व्रत नद्यो अपार ॥ ३ ॥

नेह भी धन करण सद्गुरयो दुरजीयो थयो सेठ ।

सात पुत्र चाल्या परदेश भजीध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविन्नो व्रत कर सी ।

त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुभूषण ।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासघ गति दूषण ॥ २१ ॥

इति रविन्नत कथा संपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।

ले० काल स० १७६३ पौष सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

३ विवाहहार स्तोत्रभाषा	मचलकीर्ति	हिन्दी	८२-८८
४ दससूत्र प्रष्टक	×	संस्कृत	८२-८२

बयाराम ने सूरत में प्रतिसिधि की थी। स १७१४। पूजा है।

५ त्रिचण्डिकाकाण्ड	भीषण	संस्कृत	८१-८३
६ पद—वेई वेई वेई मुर्यति ममरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	८७
७ पद—प्रष्ट समै सुमरो जिनदेव	भीषण	"	८७
८ पार्वतीनटी	ब्रह्मनाथ	"	८५-८६
९ कवित्त	महासुभास	"	१२३

निरनार की माता के समस्त सूरत में सिधि किया गया।

३३०२ गुटका सं० १२१। पत्र सं ३३। मा ६३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

३३०३ गुटका सं० १२२। पत्र सं १३। मा० ३३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—तीन बीबीसी नाम दर्शनस्तोत्र (संस्कृत) कल्याणसंभिरस्तोत्र भाषा (बनारसीबास) भक्तान्तर स्तोत्र (मानतु पाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (संस्कृत) त्रिर्वाणिकाण्ड, पंचममल देवपूजा छिन्नपूजा सोमहृत्कारण पूजा पञ्चीसो (मवल) पार्वतीनाथस्तोत्र सूरत की बीरहूबली बार्सि परीबहू बैनरायक (भूबरबास) सामाजिक टीका (हिन्दी) आदि पाठों का संग्रह है।

३३०४ गुटका सं० १२३। पत्र सं २६। मा ६×६ इंच भाषा—संस्कृत हिन्दी। रक्षा—बीर्णसर्ण।

१ मत्तमरस्तोत्र ऋषि मत्र सहित	×	संस्कृत	२-१८
२ पत्यविधि	×	"	१५-२२
३ बीनपञ्चीसी	मवलराम	हिन्दी	२२-२६

३३०५ गुटका सं० १२४। पत्र सं १९। मा ७×९ इंच।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

३३०६ गुटका सं० १२५। पत्र सं ३९। मा १२×४ इंच। पुर्य। सामान्य बुद्ध। रक्षा—सामान्य।

१ कर्म प्रहृति चर्चा	×	हिन्दी	
२ बीबीसठाणु चर्चा	×	"	

३ चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४ द्वीप समुद्री के नाम	×	"
५ देशो (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अगदेश । २ वगदेश । ३ कर्लिगदेश । ४ तिलंगदेश । ५. राट्टदेश । ६. लाट्टदेश ।
 ७. कर्णाटदेश । ८ भेदपाटदेश । ९ वैराटदेश । १०. गौरुदेश । ११ चौरुदेश । १२ द्राविरुदेश । १३. महाराष्ट्र-
 देश । १४ सौराष्ट्रदेश । १५ कासमीरदेश । १६ कीरदेश । १७ महाकीरदेश । १८. मगधदेश । १९ सूरसेनुदेश ।
 २०. कावेरदेश । २१. कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३ उत्करदेश । २४ करहाटदेश । २५ कुरुदेश ।
 २६. क्ल्वाणदेश । २७ कच्छदेश । २८ कौसिकदेश । २९ सकदेश । ३० भयानकदेश । ३१ कौसिकदेश । ३२. " ❀
 " ३३. कारुतदेश । ३४ कापूतदेश । ३५ कच्छदेश । ३६ महाकच्छदेश । ३७ भोटदेश । ३८. महाभोटदेश ।
 ३९. कीटकदेश । ४० केकिदेश । ४१ कोल्लगिरिदेश । ४२ कामरूगदेश । ४३ कुण्कुगदेश । ४४ कुंतलदेश ।
 ४५. कलकूटदेश । ४६ करकटदेश । ४७ केरलदेश । ४८ खशदेश । ४९ खर्परदेश । ५० खेटदेश । ५१ विल्लर-
 देश । ५२. वेदिदेश । ५३ जालधरदेश । ५४. टकरण टक्क । ५५. मोडियागदेश । ५६ नहालदेश । ५७. तुङ्गदेश ।
 ५८ लायकदेश । ५९. कौसलदेश । ६० दशार्णदेश । ६१ दण्डकदेश । ६२ देशसभदेश । ६३ नेपालदेश । ६४. नर्तक-
 देश । ६५. पञ्चालदेश । ६६ पल्लकदेश । ६७ पूडदेश । ६८. पाण्ड्यदेश । ६९ प्रत्यग्रदेश । ७० अंबुददेश । ७१. वसु-
 देश । ७२. गभीरदेश । ७३ महिष्मकदेश । ७४ महोदयदेश । ७५ मुरण्डदेश । ७६ मुरलदेश । ७७ मरुस्थलदेश ।
 ७८. मुद्गरदेश । ७९ मगनदेश । ८० मल्लवर्तदेश । ८१. पवनदेश । ८२ आरामदेश । ८३. राढकदेश । ८४.
 ब्रह्मोत्तरदेश । ८५. ब्रह्मावर्तदेश । ८६ ब्रह्माणदेश । ८७ वाहकदेश । विदेहदेश । ८९ वनवासदेश । ९०. वनायुक्त-
 देश । ९१ वालहाकदेश । ९२ वल्लवदेश । ९३ अवन्तिदेश । ९४ वहिहदेश । ९५ सिंहलदेश । ९६ सुह्यदेश ।
 ९७. सूपरदेश । ९८ सुहृडदेश । ९९. अस्मकदेश । १०० हूणदेश । १०१ हूर्म्मकदेश । १०२ हूर्म्मजदेश ।
 १०३ हसदेश । १०४ हूहकदेश । १०५ हेरकदेश । १०६ वीणदेश । १०७ महावीणदेश । १०८ भट्टीयदेश ।
 १०९. गोप्यदेश । ११० गाढाकदेश । १११ गुजरातदेश । ११२ पारसकुलदेश । ११३. शवालक्षदेश ।
 ११४. कोलवदेश । ११५ शाकभरिदेश । ११६ कनउजदेश । ११७ आदनदेश । ११८ उचीविसदेश । ११९ नीला-
 वरदेश । १२० गगापारदेश । १२१ सजाणदेश । १२२. कनकगिरिदेश । १२३ नवसारिदेश । १२४ भाभरिदेश ।

६ क्रियावादियो के ३६३ भेद × हिन्दी

❀नोट— यह नाम गुटके मे खाली छोडा हुआ है ।

७ स्फुट क्रवित एव पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत
८ हाथसालुप्रेक्षा	×	संस्कृत
९ सूक्तमणि	×	से काम १८३६ भावण मुक्ता १
१ स्फुट पद्य एवं मंत्र प्रादि	×	हिन्दी

११०७ गुटका सं० १२६। पत्र स ४१। प्रा १ १×४३ इत्य। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-वर्षा विशेष-वर्षाओं का संग्रह है।

११०८ गुटका सं० १२७। पत्र स ३३। प्रा ७×३ इत्य।

विषय-बुका पाठ संग्रह है।

११०९ गुटका सं० १ ७ क। पत्र सं ३३। प्रा ७५×६ इत्य।

१ क्षीप्रबोध	×	संस्कृत	१-१६
२ लघुवाचयणी	×	"	१७-१८
विषय-वीरशूराचर्म। से काम स १८ ७			
३ ज्योतिष्म्यटसमाप्ता	भाषादि	संस्कृत	४०-४१
४ सारणी	×	हिन्दी	४१-४५

यहाँ की देवकर वर्षा होने का योग

१११० गुटका सं १२८। पत्र स १-६। प्रा ७१×६ इत्य। भाषा-संस्कृत।

विषय-सामान्य पाठों का संग्रह है।

११११ गुटका सं० १२९। पत्र सं ५-२४। प्रा ७×५ इत्य। भाषा-संस्कृत।

विषय-शैवपालस्तोत्र लक्ष्मीस्तोत्र (स) एवं पञ्चमङ्गलपाठ हैं।

१११२ गुटका सं० १३०। पत्र सं ६५। प्रा ६×४ इत्य। से काम १७३२ भाषाङ्ग बुकी १।

१ चतुर्विंशतीर्विक्रमपूजा	×	संस्कृत	१-२४
२ बीबीसबन्धक	बीजवचन	हिन्दी	२५-२७
३ पीठप्रस्तावना	×	संस्कृत	२८

१११३ गुटका सं० १३१। पत्र सं १४। प्रा ७×३ इत्य। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विषय-सामान्य पाठों का संग्रह।

१११४ गुटका सं० १३२। पत्र सं १४-४१। प्रा ६×४ इत्य। भाषा-हिन्दी।

१. पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	हिन्दी	ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	”		२३-२३
३. दोहाशतक	रूपचन्द्र	”		२५-३८
४. स्फुटदोहे	×	”		३४-४१

५५१५ गुटका सं० १३३ । पत्र सं० १२१ । आ० ५३×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—छहढाला (धानतराय), पंचमङ्गल (रूपचन्द्र), पूजायें एवं तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि वा संग्रह है ।

५५१६. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ५३×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—शातिनाथस्तोत्र, स्कन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११ ।

५५१७. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० १३-१३४ । आ० ३३×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण

विशेष—पंचमङ्गल, तत्त्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५१८ गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ४-१०८ । आ० ८३×२ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं ।

५५१९. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० १६ । आ० ६×४३ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

१ मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त घर्मदास, कपोत, विचित्र देव हिन्दी ३ कवित्त हैं ।

२ वाजिदजी के अडिहल वाजिद ”

वाजिद के कवित्तों के ६ अंग हैं । जिनमे ६० पद्य हैं । इनमे से विरह के अंग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं ।

वाजीद विपति वेहद कहो कहां तुझ सो । सर कमान की प्रीत करी पीव मुझ सौं ।

पहले अपनी मोर तीर को तान ही, परि हा पीछे डारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

बिन बालम वेहाल रह्यो क्यो जीव रे । जरद हरद सी भई बिना तोहि पीवरे ।

रधिर मास के सास है क चाम है । परि हां जब जीव लागा पीव और क्यो देखना ॥२५॥

कहिये सुनिये राम और न चित रे । हरि ठाकुर को ध्यान स धरिये नित रे ।

जीव विलम्ब्या पीव दुहाई राम की । परि हा सुख सपति वाजिद कहो क्यो काम की । २६॥

५५२०. गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ६ । आ० ७×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण

एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भाषा ।

५५२१ गुटका सं० १४० । पत्र सं० ८ । पृ० १५×४५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । से
काल सं० १९३२ भाषा सं० सुदी १३ । पूर्ण एवं मुद्रा बजा-सामान्य ।

विशेष—श्रीनामिदि पूजा है ।

५५२२ गुटका सं० १४१ । पत्र सं० १७ । पृ० ३×३ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३ गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ९ । पृ० १×४ इ च । भाषा-हिन्दी । से काल सं० १९३८
भाषा सं० सुदी १४ ।

विशेष—इसके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१ सहस्रनाम	दानवराज	हिन्दी	१-९
२ सहस्रनाम	विषय	"	१ १२

५५२४ गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १७४ । पृ० ३२×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । से काल
१९३७ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२५ गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ११ । पृ० ४×९ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूजा ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६ गुटका सं० १४५ । पत्र सं० ११ । पृ० ६×३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पत्नीपूजन ।

से काल १९७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

व्यसङ्गस्यमहर्षेर्बं दुःखं सास्त्रविद्यारण ।
 अविध्यरत्नबीजस्य ब्रह्मते पञ्चमसिद्धि ॥१॥
 अथैव सास्त्रसारेणु साके कासत्रयं मति ।
 कलाकल मिपुत्र्यन्ते सबकस्येवु निमित्त ॥२॥

५५२७ गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २३ । पृ० ७×३ इ च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । भाषा-सामान्य

विशेष—शांतिनाम पूजा (वैष्णवराज) मजन एवं तैमिनाम श्री भाषना (वैष्णवराज) का संग्रह है ।

पृष्ठी पृष्ठांशु जी विशेषे मने हैं । अविद्यांशु पत्र बाली हैं ।

५५२८. गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३-५७। मा० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।

दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—शीघ्रबोध है।

५५२९. गुटका सं० १४८। पत्र सं० ५५। मा० ७×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र संग्रह है।

५५३०. गुटका सं० १४९। पत्र सं० ८६। मा० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४९

कार्तिक सुदी ९। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. विहारीसतसई	विहारीलाल	हिन्दी	१-३५
२ वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०
			७०८ पद्य हैं। ले० काल सं० १८४९ चैत सुदी १०।
३ कावेत्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका सं० १५०। पत्र सं० १३५। मा० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल

सं० १८४५। दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—लिपि विकृत है। कक्का बत्तीसी, राग चीतण का ढूहा, फूल भीतरणी का ढूहा, मादि पाठ है।

अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५३२. गुटका सं० १५१। पत्र सं० १८। मा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—पदो तथा विनतियो का संग्रह है तथा जैन पञ्चीसी (नवलराम) बारह भावना (दीलतराम)

निर्वाणकाण्ड है।

५५३३ गुटका सं० १५२। पत्र सं० १०७। मा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्ण

शीर्ष।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थो मे से छोटे २ पाठो का संग्रह है। पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है।

५५३४. गुटका सं० १५३। पत्र सं० ६०। मा० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह

संपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाए एव पञ्चमंगल पाठ है।

५५३५ गुटका सं० १५४। पत्र सं० ८९। मा० ६×४ इंच। ले० काल १८७९।

१. भागवत	×	संस्कृत	१-८
२ मंत्र अदि संग्रह	×	"	९-१२

३. अतुल्लोभी गीता	×	७	२३-२४
४. भगवत महिमा	×	हिन्दी	२५-२९
			तीनों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र हैं।
५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	३२-३६
			३३३६ गुटक सं० १३३। पत्र सं ६७। मा ६×६ इ. च। भाषा-संस्कृत। पूर्ण।
१. योकेत्र पूजा	×	संस्कृत	१-३
२. पार्वतीनाथ वचनमाला	×	"	४-१३
३. सिद्धपूजा	×	"	१-२
४. पार्वतीनाथष्टक	×	"	३-६
५. पौड्यकारणपूजा	सात्त्विक कैद्य	"	१-३४
६. सोनहकारण वचनमाला	×	अपभ्रंश	१६-२
७. बसंतभरण वचनमाला	×	"	२१-२३
८. हारबसंतपूजा वचनमाला	×	संस्कृत	१४-८
९. खनोकार पीठीसी	×	"	७१-७३

३३३७ गुटका सं० १३६। पत्र सं १७। मा ३×३ इ. च। तै. काल १७७६ ज्येष्ठ सुदी २। भाषा-हिन्दी। पत्र सं ७६।

विशेष—पारव वंशजति वर्तमान है।

३३३८ गुटका सं० १३७। पत्र सं ३२। मा ६×३ इ. च। तै. काल १७३२।

विशेष—ब्रह्मरसस्तोत्र अक्षर बाबरी (पालतराम) एवं पंचमंत्र के पाठ हैं। एवं सवाईराम तै. भेमिनाथ चौधरीसय में सं १७३२ में प्रति लिपि की।

३३३९ गुटका सं० १३७ (क) पत्र सं १४१। मा ६×४ इ. च। भाषा-हिन्दी। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

३३४० गुटका सं० १३८। पत्र सं ६७। मा ३×६ इ. च। भाषा-हिन्दी। तै. काल १७१। भाषा-कीर्ति।

विशेष—सामान्य कर्त्तव्यों पर पाठ है।

३३४१ गुटका सं० १३९। पत्र सं ३२। मा ७×४। तै. काल-अ। भाषा-कीर्ति। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

गुटका-संग्रह]

५५४२ गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५४३ गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ है ।

५५४४ गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाग्रो का संग्रह है ।

५५४५ गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-मकामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६ गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९३४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण मे से गीता महात्म्य लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पत्रो मे संस्कृत मे भगवत गीता माला दी हुई है ।

५५४७ गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×५३ इञ्च । त्रिपय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष-आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५५४८ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । आ० ४×२३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२. कर्मप्रकृतिविधान	वनारसीदास	”	४१-६८

५५४९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । आ० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८० श्रावण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ धर्मरासौ	×	हिन्दी	१-१८
------------	---	--------	------

अथ धर्म रासो लिख्यते—

पहली वदो जियावर राइ, तिहि वद्या दुख दालिद्र जाइ ।

रोग कलेस न सचरै, पाप करम सब जाइ पुलाई ॥

निश्चै मुक्ति पद सचरै, ताको जिन धर्म होई सहाई ॥ १ ॥

धर्म दुहेली जैन को छह बरसन वै ठी परमान ।
 भावम भन सुणिये दे कान मध्यमीव बिठ संभलो ॥
 पढउ बिल सुन होई निधान धर्म दुहेली जैन का ॥ २ ॥
 बूना बरीं सारव माई भूमो भाकर भाणो हाइ ॥
 कुमति कसेस न उरमे, महा कुमति बरौं भविनाइ ॥
 बिएधर्म रासो बरसंड तिहि पढठ मन होइ जसाइ ॥
 धर्म दुहेली जैन को ॥ ४ ॥

प्रस्थिप—

ऊमी श्रीमण भाबे सही भात्मन बाध बिणेशुर कही ।
 कर पावा भाहार सै ये मठारिस भूमगुण बाणि ॥
 बन बती वै पामही, तै धनुज्ज पडुचे निरबाणि ।
 धर्म दुहेली जैन को ॥१३२॥
 मुठ बैव गुस्साएव बबाणि जू पट प्रतापतन बाणि ।
 पाठ बोय कबूटा भादि वै पाठ भर सी लमे पबोस ॥
 तै निरबे सम्पत्त फमे ऐसी निधि मासै पगरीव ।
 धर्म दुहेली जैन का ॥१३३॥

इति श्री धर्मराषी समापवा ॥१॥ ७ १७३ भावण सुबी २ सांगनायर मध्ये ।

४४४० गुटका सं० १५ । पत्र स २ । पा २×६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

४४४३ गुटका सं० १०१ । पत्र स० २ । पा० २×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

विशेष—सन्तोषसिद्धर पूजा है ।

४४४४ गुटका सं० १७ । पत्र स १३ इ । पा ३×३ इ च । भाषा संस्कृत हिन्दी । के

काल स १७२७ । सांगण सुबी १ ।

विशेष—पूजा पर एवं बिलदिवों का सप्रह है ।

४४४५ गुटका सं १७३ । पत्र स १३ । पा ६×८ इ च । प्रवर्गी । भाषा औरी ।

विशेष—सामुद्रिक के मुसली मन्त्र ठग्यादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नहीं है ।

गुटका-संग्रह]

५५५६. गुटका सं० १७१ । पत्र स० ४-६३ । आ० ६×४^१ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार

रस । ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १ ।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है ।

५५५७. गुटका सं० १८५ । पत्र स० २४ । आ० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

५५५८. गुटका सं० १७६ । पत्र स० ८ । आ० ५×३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले०

काल स० १८०२ । पूर्ण ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है ।

५५५९. गुटका सं० १७७ । पत्र स० २१ । आ० ५'×३^१ इ च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—पद एव विनती संग्रह है ।

५५६०. गुटका सं० १७८ । पत्र स० १७ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—प्रारम्भ मे बादशाह जहागीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है । स० १६८४ मंगसिर सुदी १२ । तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी ।

५५६१. गुटका सं० १७९ । पत्र स० १४ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

५५६२. गुटका सं० १८० । पत्र स० २१ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), आदित्यवरकथा के पाठ का मुख्यत संग्रह है ।

५५६३. गुटका सं० १८१ । पत्र स० २१-४९ ।

१ चन्द्रवरदाई की वार्ता	×	हिन्दी	२३-२६
			पद्य स० ११९ । ले० काल स० १७१६
२ मुगुरुसीख	×	हिन्दी	२८-३०
३ कक्काबत्तीसी	ब्रह्मगुलाल	”	२० काल स० १७९५ ३०-३४
४ अन्यपाठ	×	”	३४-४९

विशेष—अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५६४. गुटका सं० १८२ । पत्र स० १६ । आ० ६×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा हैं ।

५५६३. गुटका सं० १८३। पत्र सं २०। मा० १ X ६ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। प्रपूर्णा।

बसा-जै एा सीर्षा ।

विशेष-प्रथम ३ पत्रों पर धृष्यम्ये हैं। तथा पत्र १०-२ तक धनुनसारण है। हिन्दी गद्य में है।

५५६६ गुटका सं० १८४। पत्र सं २४। मा ६२ X ६ इ च। भाषा-हिन्दी। प्रपूर्णा।

विषय-धृष्य विनोद छतसई के प्रथम पद्य से २३ पद्य तक है।

५५६७ गुटका सं० १८५। पत्र सं ७-८८। मा १ X १२ इ च। भाषा-हिन्दी। सं० फल ७०

१५२३ मयास मुबी ८।

विशेष-बीकानेर में प्रतिष्ठिति की गई थी।

१	समयसारनाटक	बनारसीवास	हिन्दी	७-७६
२	मनायीसाध बीडासिया	विमल विनमपण्डि	"	७६-७७
३	धर्ममन मीठ	X	हिन्दी	७८-७९
				इस धर्म्याय में अंशम प्रसंग मीठ हैं। अन्त में बुलिका मीठ है।
४	स्फुट पर	X	हिन्दी	८४-८८

५५६८ गुटका सं० १८६। पत्र सं ३२। मा ८ X ६ इ च भाषा-हिन्दी। विषय पर छन्द।

विशेष-१४२ पत्रों का संग्रह है मुख्यत छन्दमय के पद्य हैं।

५५६९. गुटका सं० १८७। पत्र सं ७७। पूर्ण।

विशेष-गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१	चौरसी मीठ	X	हिन्दी	१-२
२	बटवारा बंध के राजाओं के नाम	X	"	२-४
३	देहली राजाओं की बसावती	X	"	५-१६
४	देहली के बादशाहों के परगनों के नाम	X	"	१७-१८
५	सीस सतरी	X	"	१९-२०
६	३६ बादशाहों के नाम	X	"	२१
७	चौबीस ठाला बर्षा	X	"	२२-४३

५५७० गुटका सं० १८८। पत्र सं ११-७३। मा ६ X ६ इ च। भाषा-हिन्दी संस्कृत।

विशेष-गुटके में महाभारतोंन बसाणवन्दिरस्तोत्र हैं।

१ पार्श्वनाथस्तवन एव अन्य स्तवन

यतिसागर के शिष्य जगरूप हिन्दी

२० स० १८००

आगे पत्र जुड़े हुए हैं एव विकृत लिपि में लिखे हुये हैं ।

५५७१. गुटका सं० १८६ । पत्र स० ६-७८ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

इतिहास ।

विशेष—अकबर बादशाह एव वीरवल आदि की वार्ताएँ हैं । बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं ।

५५७२. गुटका सं० १६० । पत्र स० १७ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—रूपचन्द कृत पञ्चमगल पाठ है ।

५५७३. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सवैये एव अन्य पद्य है । अपूर्ण है ।

५५७४ गुटका सं० १६२ । पत्र स० ४५ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल-

१८०० ।

१. कवित्त	×	हिन्दी	१-४
२. भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५-६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है ।	
३. शातिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७-९
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	९-१२
५. अजितशातिस्तवन	नन्दिषेण	"	१३-२२
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	२३-३०
७. कल्याणमदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१-३६	हिन्दी गद्य टीका सहित है ।
८. शातिपाठ	×	प्राकृत ४०-४५	"

५५७५ गुटका सं० १६३ । पत्र स० १७-३२ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८६७ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र है ।

५५७६. गुटका सं० १६४ । पत्र स० १३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र ।

अपूर्ण । दशा-नामान्य । कोकसार है ।

५५७७. गुटका सं० १६५ । पत्र स० ७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है । ४९ पद्य हैं ।

४४७८ गुटका सं० १३६। पत्र सं० २२। मा २×६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विषय - नाटकसमग्र है।

४४७९ गुटका सं० १३७। पत्र सं० ३०। मा ८×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले. काल १८९४ भावस्थ

बुकी १४। बुधवार के पत्रों का संग्रह है।

४४८० गुटका सं० १३८। पत्र सं० ३३। मा ८½×६½ इंच। मयूर। पूजा पाठ संग्रह है।

४४८१ गुटका सं० १३९। पत्र सं० २-३९। मा ८×२ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी मयूर।

बसा-वीर।

विषय-पूजा पाठ संग्रह है।

४४८२ गुटका सं० २००। पत्र सं० ३४। मा ६½×८ इंच। मूर। बसा-सामान्य

१ कितवत खोर्द रसुफरि प्राचीन हिन्दी

रचना समय १३२४ भावस्थ बुकी २। ले. काल संवत् १७२२। पामक निवासी महानन्द ने प्रतिनिधि की थी।

२ भावीपर ऐकता सहस्रश्लोति प्राचीन हिन्दी मयूर

२ काल सं० १९९७। रचना स्थान सारनकोट। ले. काल सं० १७४३ मयूर बुकी ७। महानन्द ने

प्रतिनिधि की थी। १२ पत्र से ४२ वें तक ९१ पत्र के पत्र हैं।

३ पंचवधावी × राजस्वामी शेरमठ की "

४ कवित बुधवारवाच हिन्दी

५ पद-रेमन रेमन दिनदिन कत्रु न विचार भवमीसामर " रीषमसहार

६ तूही तू ही मेरे साहिब " " राजकाशी

७ तूती तूही २ तूती बोल " ×

८ कवित ब्रह्म दुलाल एवं बुधवार " पत्र १३

ले. काल सं० १७३३। कावण बुकी १४। फरीदपुर जैत ल ने प्रतिनिधि की थी। बँनास का काशी पाठ ऐसा।

९ जैत पूखिमा क्वा। × हिन्दी मूर

१ कवित ब्रह्म दुलाल " "

११ " × " "

गुटका-संग्रह]

१२. समुय विजय सुत सावरे रग भीने हो	×	”
		ले० काल १७७२ मोतीहटका देहरा दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी ।
१३. पक्षकल्याणकपूजा मष्टक	×	संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ज्येष्ठकृ० १० ।
१४. पट्टरस कथा	×	संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ।

५५८३. गुटका सं० २०१ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—भादित्यवारकथा (भाऊ) सुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचन्द कृत राजुल पश्चीसी के पाठ और है ।

५५८४. गुटका सं० २०२ । पत्र सं० २८ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७५० ।

विशेष पूजा पाठ संग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है ।

५५८५ गुटका सं० २०३ । पत्र सं० २०-२६, १८५ से २०३ । आ० ६×५ इंच । भाषा संस्कृत

हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यत निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रनाम	भाशाधर	संस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	”	३०-३६
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	”	१६२-१६६
४ गुरुओं की जयमाल	”	हिन्दी	१६६-१६७
५. एमोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	”	१६७-२२०

५५८६. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० १४० । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी । मुख्यत समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथ) का संग्रह है ।

५५८७ गुटका सं० २०५ । नित्य नियम पूजा संग्रह । पत्र सं० ६७ । आ० ८५×५ इंच । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

५५८८ गुटका सं० २०६ । पत्र सं० ४७ । आ० ८५×७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य । पत्र सं० २ नहीं है ।

१ सुदर श्रृंगार	महाकविराय	हिन्दी	पत्र सं० ८३१
-----------------	-----------	--------	--------------

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल मे आमेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२ स्वामिबत्तीसी

मन्दरास

७

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा के प्रतिमिपि भी । मासीराम बत्ताने सं १८३२ में प्रतिमिपि कराई भी ।

अन्तिम भाग—

बोहा—बृह्मण ध्यात करामु मठ प्रबनहि सुत प्रबोम ।

कहत स्वाम कलमस कसू रहत न रंज समान ॥ ३९ ॥

ब्रह्म सत्त्वगयन्द्—

स्वो सन राधिक मारदस्मेर ब्रह्म कैस महेस कु पार न पायी ।

सी सुस ध्यास विरंजि बत्तानत मियम कु सीवि भयम बतयो ॥

सैक माम् नहि माय असोमति नन्दलता बुम धानि क्हायो ।

सो क्वि पा क्वि क्हाय्य कटी कु कस्याम कु त्याम भरी गुलवायी ॥ ३७ ॥

इति श्री मन्दरास ब्रह्म स्वाम बत्तीसी संपूर्ण ॥ मिर्कट महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का । शिकारबु
मसीराम बामा संवत् १८३२ मिसी भादवा सुबी १४ ।

४४८२ गुटका सं० २८७ । पत्र सं २० । प्रा० ७×३ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । सै काल
सं १९८९ ।

विषय—सामान्य पूजा पाठ पर एवं मंत्रों का संग्रह है ।

४४६० गुटका सं० २८८ । पत्र सं १७ । प्रा ६३ ९ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—बाणभय नीतिसार तथा नागुराम ब्रह्म वास्तवसार है ।

४४६१ गुटका सं० २८६ । पत्र सं १९-२४ । प्रा ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—मूरदास परमानन्द प्रादि कवियों के पदों का संग्रह है । विषय—बृह्मण धक्ति है ।

४४६२ गुटका सं० २९० । पत्र सं २५ । प्रा ६३×३३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—बनुरीय पुण्यस्थान कर्षा है ।

४४६३ गुटका सं० २९१ । पत्र सं ४६-५० । प्रा ६×९ इंच । भाषा—हिन्दी । सै० काल १९३० ।

विषय—ब्रह्मराजब्रह्म ब्रह्म भीतालराठ का संग्रह है ।

४४६४ गुटका सं० २९२ । पत्र सं ९-१३ । प्रा ६×९ इंच ।

विषय—सटीक पूजा एवं पर संग्रह है ।

५५६५. गुटका स० २१३। पत्र स० ११७। आ० ६×५ इ च। भाषा—हिन्दी। ले० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपत्रासिका (द्यानतराय) वृजलाल की वारह भावना, वैराग्य पञ्चीसी (भगवतोदास) आलोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयमुन्दर) राजुल पञ्चीसी (विनोदोलाल) आदित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६ गुटका स० २१४। पत्र स० ८४। आ० ६×६ इ च।

विशेष—सुन्दर शृ गार का संग्रह है।

५५६७. गुटका स० २१५। पत्र स० १३२। आ० ६×६ इ च। भाषा—हिन्दी।

१ कलियुग की विनती	देवाग्रह	हिन्दी	५-७
२ सीताजी की विनती	×	"	७-८
३ हस की ढाल तथा विनती ढाल	×	"	६-१२
४ जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"	१२
५. होली कथा	छीतरठोलिया	"	२० स० १६६० १३-१८
६ विनतिया, ज्ञानपञ्चीसी, वारह भावना			
राजुल पञ्चीसी आदि	×	"	१६-४०
७ पाच परवी कथा	ब्रह्मवेणु (भ जयकीर्ति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं ४१-४०
८ चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	"	४५-६७
९ बधावा एव विनती	×	"	६७-६६
१०. नव मंगल	विनोदोलाल	"	६६-७७
११. कक्का बतीसी	×	"	७७-८१
१२ वडा कक्का	गुलावराय	"	८०-८१
१३ विनतिया	×	"	८१-१३२

५५६८ गुटका स० २१६। पत्र स० १६४। आ० ११×६ इ च। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१ जिनवरश्रत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१-२
			भट्टारक पट्टावली दी गई है।
२. आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३-१५

१ मुक्तावलि गीत	शकनकीति	हिन्दी	१३
४ चौबीस गणभरस्थवन	गुणकीति	"	९
५ अष्टाङ्गिकागीत	म सुभवा	"	२१
६ मिथ्या बुधका	प्रह्लादिनदास	"	२२
७ क्षेत्रपालपूजा	मणिमह	संस्कृत	१७-१८
८ जिनसमहनाम	भावापर	"	१०९-११९
९ महाराज विजयकीर्ति महक	X	"	१३

५५६६ गुटका सं० २१७। पत्र स १७१। मा ८३×९३ इंच। भाषा संस्कृत।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

५६०० गुटका सं० २१८। पत्र स ११९। मा ९×१३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है।

५६०१ गुटका सं० २१९। पत्र स १८४। मा ९×८ इंच। भाषा—हिन्दी।

विशेष—कठगयेन कृत भित्तोर्यर्पणकथा है। से काल १७१९ ग्रेगोरियुकी ७ बुधवार।

५६०२ गुटका सं० २२०। पत्र स ८। मा ७३×१६ इंच। भाषा—मगध वा संस्कृत।

१ त्रिशतत्रिंशत्तन्त्री	महेशसिंह	मगध वा	१-७
-------------------------	----------	--------	-----

२ नाममासा	बनारस	संस्कृत	७-८
-----------	-------	---------	-----

विशेष—गुटके के अधिकांश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है।

५६०३ गुटका सं० २२१। पत्र स ११-१२। मा ८३×९ इंच। भाषा—हिन्दी।

विशेष—जोयराज गोरीका की सम्पत्त बौद्धी (मयूरी) श्रीरामचन्द्रिका एवं नयनक की हिन्दी

पत्र टीका अपूर्ण है।

५६० गुटका सं० २२२। पत्र स ११९। मा ९×९ इंच। भाषा—संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६०५ गुटका सं० २२३। पत्र स १२। मा ७×४ इंच। भाषा—हिन्दी।

विशेष—एक पृष्ठाएँ एवं उनके उत्तर विसे हुए हैं।

५६०६ गुटका सं० २२४। पत्र स १४। मा ७×१३ इंच। भाषा संस्कृत प्राकृत। बघा-

नीर्ण जीर्ण एवं अपूर्ण।

विशेष—गुटावली (पपूर्णा) भक्तिनाथ स्वयम्भूस्वोत्र तत्कार्यसूत्र एवं सामाजिक पाठ आदि हैं।

५६०८. गुटका सं० २०५ । पत्र सं० ११-१७७ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी ।

१ विहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पत्र सं० ११ से १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि हे सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेश ।

पोये ठौर कुठौर के लरमे होत विशेष ॥७१॥

इस पर ७१५ सख्या है । वे सातसौ से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहों के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

सालग्रामी सरजु जह मिली गगसो आय ।

अन्तराल मे देस सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥

लिखे दूहा भूषन बहुत अनवर के अनुसार ।

कहु औरे कहु और हू निकलेंगे लङ्कार ॥२॥

सेवी जुगल कस्तोर के प्राननाथ जी नाव ।

सप्तसती तिनसो पढी बसि सिंगार बट ठाव ॥३॥

जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेश ।

सेवत सत महत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥

पुरोहित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान ।

हम हैं ताके गीत मे मोहन मो जजमान ॥५॥

मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि ।

सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नही जाहि ॥६॥

गहि अक सुमनु तात तैं विधि को बस लखाय ।

राधा नाम कहैं सुनैं आनन कान बढाय ॥७॥

सवत् अठारहसौ बिते ता परि तीसरु चारि ।

जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरिहरदास इत्यादि विहारी रचित सप्तशती टीका हरिप्रकाशनायिका सम्पूर्णा । संवत् १८३२ यावत् कृष्ण

७ रविवासरे सुममस्तु ।

० कविवल्लभ—प्रथकार हरिहरदास । पत्र सं १३१-१७७ । भाषा—हिन्दी पद्य
विसेप—१८७ तक पद्य है । प्रागे के पद्य नहीं है ।

पारम्भ— मोहन करन पयोग में है तुमसी को वास ।
ताहि सुमरि हरि भक्त सब करत विघ्न को वास ॥१॥

कवित्त— भानन्द को कल्प रूपमान जाको मुकलन्द
भीमा ही से मोहन के भास को कीर है ।
बुझी तैसो रचिबै को काहुत विरधि निधि
समि को बनाने भयो मन कौन मोरे है ।
फेरत है सान भासमान पी बडाय फेरि
पानि वे बडाय के की बारिधि में बोरे है ।
राधिका के प्राजन के खोट न बिभोके विधि
द्रुम द्रुम तोरे पुनि द्रुम द्रुम बोरे है ॥

प्रथम श्लोक सङ्गण बोहा—

रम भानन्द प्रथम को कुर्ये ते है श्लोक ।
पारमा को ओ प्रबता और बजिरवा श्लोक ॥३॥

प्रथम भाग—

श्रीहा— साझा सत्तरह सी पुनी सबत् पैंतीस बाल ।
अठारह सो वेठ बुधि ने ससि रचि बिन प्रस ॥२५॥

इति श्री हरिहरदासी विरचित कविवल्लभो प्रथम सम्पूर्णा । सं १८३२ यावत् कृष्ण १४ रविवासरे ।

२६०६ शुटका सं० २०६ । पत्र सं १ । प्रा २२×१६ इत्त । भाषा हिन्दी । ले कास १८२३

वेठ बुध १३ । पूर्ण ।

१ सप्तशतीसङ्गण	भनवतीदास	हिन्दी	१
२ समयमारनाटक	बनारसीदास		१-१

२६१० शुटका सं २२७ । पत्र सं २६ । प्रा १८×२२ । भाषा हिन्दी । विषय—प्रायुर्वेद । ले

कास १८४७ प्रपाठ बुरी ६ ।

गुटका-संग्रह]

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित इंगरसी की

से देख लिखी—द्वि० असाठ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा ।

५६११. गुटका सं० २२८ । पत्र स० ४६ से ६२ । आ० ६५७ इ० । भाषा—प्राकृत हिन्दी । ले० काल १६५४ । द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है ।

५६१२. गुटका सं० २२६ । पत्र स० १८ । आ० ६५७ इ० । भाषा हिन्दी ।

१. पंचपाल पैंतीसो	×	हिन्दी	१-६
२. अकपनाचार्यपूजा	×	”	७-१२
३. त्रिपणुकुमारपूजा	×	”	१३-१८

५६१३ गुटका सं० २३० । पत्र स० ४२ । आ० ७५६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

५६१४. गुटका सं० २३१ । पत्र सं० २५-४७ । आ० ६५६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है ।

५६१५. गुटका सं० २३२ । पत्र स० १४-१५७ । आ० ७५५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पच्चीसी, बारह भावना, शत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास) दान दावनी (ध्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्मछत्तीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का संग्रह है ।

५६१६. गुटका सं० २३३ । पत्र सख्या ४२ । आ० १०५४ इ० भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६१७. गुटका सं० २३४ । पत्र स० २०३ । आ० १०५७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है ।

५६१८ गुटका सं० २३५ । पत्र सं० १६८ । आ० १०५६ इ० । भाषा—हिन्दी ।

१. तत्त्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित) हिन्दी संस्कृत ३-६०

६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है ।

२ चौबीसठाणाचर्चा × हिन्दी ६१-१६८

५६१९. गुटका सं० २३६ । पत्र स० १४० । आ० ६५७ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

३६२० गुटका सं० २३८ । पत्र सं० २३ । मा० १×१२ इ० । भाषा-हिन्दी ।। से काल सं १७४८ भासोज बुरी १३ ।

१ कुम्भसिया	मपरदास एक धर्म कथियण	हिन्दी	निपिकार विजवराम	१-३१
२ पर	सुन्दरदास	"	"	३३-३४
				से काल १७०१ भासोज बुरी १
३ तिसोकरपुस्तका	कर्मसेन	हिन्दी	"	३४-३५

३६२१ गुटका सं० २३९ । पत्र सं १६८ । मा १३३×१ इ० । भाषा-हिन्दी ।।

१ मासुर्बिक मुसले	X	हिन्दी	"	१-१४
२ कपलनेप	X	"	"	१४-८४
३ तिसोक कर्ण	X	"	"	८४-११८

३६२२ गुटका सं० २४० । पत्र सं० ४८ । मा० १२३×८ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—सहिते अक्षरस्वरोप टीका सहित तथा बार में मूल मंत्र सहित दिया हुआ है ।

३६२३ गुटका सं० २४१ । पत्र सं १-१७७ । मा ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । से काल १८२७

बेदास बुरी मनामस्या ।

विशेष—निर्दिष्ट महत्तया समुदाय । बालवीपक नामक ग्रन्थ है ।

३६२४ गुटका सं० २४२ । पत्र सं० १-२ , ४ = ३६३, १ २ से ७६४ । मा ४×३ इ० ।

भाषा-हिन्दी पत्र ।

विशेष—बाबरीपक नामक ग्रन्थ है ।

३६२५ गुटका सं० २४३ । पत्र सं ३४ । मा १×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

३६२६ गुटका सं० २४४ । पत्र सं २२ । मा १×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

१ तिसोकर भोगल कथ	रायमल	संस्कृत	से० काल १७११	४
२ बलाणामूर्तिस्तोत्र	राकराजस्य	"	"	५-७
३ मपरसोवीर्यस्तोत्र	X	"	"	७-८
४ इतिहासाचारिस्तोत्र	X	"	"	८-१
५ इन्द्रपदाति पत्र	X	"	"	१-१२

६. बृहस्पति विचार	X	”	ले० काल १७६२	१२-१४
७ अन्यस्तोत्र	X	”		१५-२२

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र सं० २-४६ । आ० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । आ० ७×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ समग्र है ।

५६३०. गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । आ० ८३×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करो के पंचकल्याण आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । आ० ८३×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पद समग्र है ।

५६३२. गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । आ० ८३×७ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—बृहत्स्त्रयभूस्तोत्र है ।

५६३३ गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४ गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १९३३ ।

विशेष—अकलङ्काष्टक स्तोत्र है ।

५६३५ गुटका सं० २५३ । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९३३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । आ० ८×५ इ० । भाषा, हिन्दी ।

विशेष—बिम्ब निर्वाण विधि है ।

५६३७ गुटका सं० २५५ । पत्र सं० १९ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत इष्ट छत्तीसी पंचमंगल एवं पूजा आदि हैं ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । आ० ८३×७ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—वधीचन्द्र कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

२६३६ गुटका सं० २२७। पत्र सं ८। मा ८×२६। भाषा—हिन्दी। बसा—बीर्वादीर्ण।
विशेष—सत्तरास वृत्त बभित संग्रह है।

२६४० गुटका सं० २२८। पत्र सं ९। मा २×४६। भाषा—संस्कृत। अपूर्ण।
विशेष—ऋषिमण्डसतोत्र है।

२६४१ गुटका सं० २२९। पत्र सं ९। मा ९×४६। भाषा—हिन्दी। से काल १८३०।
विशेष—हिन्दी पर एक नामू वृत्त मङ्करी है।

२६४२ गुटका सं० २३०। पत्र सं० ४। मा ९×४६०। भाषा—हिन्दी।
विशेष—नवम वृत्त बीहा स्तुति एवं वर्तन गठ है।

२६४३ गुटका सं० २३१। पत्र सं ६। मा ७×२६०। भाषा—हिन्दी। ९ काल १८६१।
विशेष—सीताभिरि पचीसी है।

२६४४ गुटका सं० २३२। पत्र सं १। मा ९×४२६। भाषा—संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।
विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं।

२६४५ गुटका सं० २३३। पत्र सं १६। मा ९३×४६। भाषा—संस्कृत।
विशेष—वक्ताचार्य विरचित शरराषमुद्रसतोत्र है।

२६४६ गुटका सं० २३४। पत्र सं २। मा ९×४६। भाषा—हिन्दी।
विशेष—वतसनीची पीठा है।

२६४७ गुटका सं० २३५। पत्र सं ४। मा २३×४६। भाषा—संस्कृत।
विशेष—बराहपुराण में से सूर्यस्तोत्र है।

२६४८ गुटका सं० २३६। पत्र सं० १। मा ९×४६। भाषा संस्कृत। से काल १८८७ पीप
गुरी २।

विशेष— पत्र १-७ तक महाभारत विषयक है।

२६४९ गुटका सं० २३७। पत्र सं ७। मा ९×४६। भाषा—हिन्दी।
विशेष—बृषरत्न वृत्त एनीमाव स्तोत्र भाषा है।

२६५० गुटका सं० २३८। पत्र सं ३२। मा० २,४६। भाषा—संस्कृत। से काल १८८२

पत्र गुरी २।

विशेष—ब्रह्माणा नवरात्र के प्रतिभिरि भी दी। पद्यावली पुत्रा अनुगुठी स्तोत्र एवं विमलहृदयमात्र
गद्यावली) है।

५६५१. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० २७ । आ० ७२×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६५२. गुटका सं० २७० । पत्र सं० ८ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं०

१६३२ । पूर्ण ।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है ।

५६५३. गुटका सं० २७१ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं ।

५६५४. गुटका सं० २७२ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है ।

५६५५. गुटका सं० २७३ । पत्र सं० ४ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द्र कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८६ में भादवा सुदी २ को प्रकट हुवा था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६५६. गुटका सं० २७४ । पत्र सं० १६ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । पूर्ण

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र ८ से आगे खाली पडा है ।

५६५७. गुटका सं० २७५ । पत्र सं० ६३ । आ० ५३×५ इ० । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपञ्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सबोधपञ्चासिका (धानतराय) ।

५६५८. गुटका सं० २७६ । पत्र सं० १० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बडा कवका (हिन्दी) आदि पाठ हैं ।

५६५९. गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २-२३ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद ।

अपूर्ण ।

विशेष—हरखचन्द्र के पदों का संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० २७८ । पत्र सं० १-८० । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं । योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है ।

५६६१. गुटका सं० २७९ । पत्र सं० ६-३४ । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है ।

२६६२. गुटका सं० २८०। पत्र सं २-४१। मा २३×४४ इ। माया-हिन्दी पत्र। अपूर्ण।

विशेष—क्यालों का संग्रह है।

२६६३. गुटका सं० २८१। पत्र सं १२। मा० १×१६ इ०। माया-×। पूर्ण।

विशेष—बाणेश्वरी पूजासंग्रह, दण्डमन्त्र सोमहकारण पञ्चमेस्त्रुजा एतन्नभपूजा वत्सार्थसूत्र प्रादि पाठों का संग्रह है।

२६६४. गुटका सं० २८२। पत्र सं ११-८४। मा १३×४३ इ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है— वैतपथीषी पत्र (सुपरदास) भक्तामरमाया परमश्रीतिमाया विद्यापहारमाया (भक्तकीर्ति) निर्वाणिकाण्ड एकीनाथ महामिमर्षेयामय भयमाल (भयवतीदास) सहस्रनाम शानुपदना, विनती (सुपरदास) नित्यपूजा।

२६६५. गुटका सं० २८३। पत्र सं ३३। मा ७ $\frac{१}{२}$ ×३ इ। माया-हिन्दी पत्र। विषय-प्रथम।

अपूर्ण।

विशेष—३३ से प्रागे के पत्र आती हैं। बजारघीराय हस्त समवधार है।

२६६६. गुटका सं० २८४। पत्र सं २-३२। मा ८×१ $\frac{१}{२}$ इ। माया-हिन्दी संस्कृत। अपूर्ण।

विशेष—बर्षासतक (दानतराम) मुत्तबीज (कमिषास) से ही रचनायें हैं।

२६६७. गुटका सं० २८५। पत्र सं १-४६। मा ८×१ $\frac{१}{२}$ इ। माया-संस्कृत प्राकृत। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजा स्वाध्यायपाठ शीषीसठम्याबर्षा से रचनायें हैं।

२६६८. गुटका सं० २८६। पत्र सं ११। मा ८×१ इ। पूर्ण।

विशेष—अम्पसंहार संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित।

२६६९. गुटका सं० २८७। पत्र सं १२। मा ७ $\frac{१}{२}$ ×३ इ। माया-संस्कृत। पूर्ण।

विशेष—वत्सार्थसूत्र नित्यपूजा है।

२६७०. गुटका सं० २८८। पत्र सं २-४२। मा १×४ इ। विषय-संग्रह। अपूर्ण।

विशेष—एक पत्र प्रादि दिया हुआ है।

२६७१. गुटका सं० २८९। पत्र सं २। मा १×४ इ०। माया-हिन्दी। विषय-शृङ्गार। पूर्ण।

विशेष—रघुकराम हस्त स्नेहलीला में से उद्धृत गोपी संवाद दिया है।

प्रारम्भ—

एक समय ब्रह्मवास की मूर्ति गई हरिराज।

निर नर अथवा जगि के ऊंचे निचो कुमार ॥

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम सुनि ले ।
नन्द जसोदा प्रादि दे ब्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥
ब्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।
ताने नीमष न बीसरूँ मीहे नन्दराय की आन ॥

अन्तिम—

यह लीला ब्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥
जो गाव सीष सुर गमन तुम वचन सहेत ।
रसिक राय पूरन कीया मन वाञ्छित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—प्रागे नाग लीला का पाठ भी दिया हुआ है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	५-१३
२. दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"	१३-१७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	"	"	१७-१९
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"	१९-२३
५. अक्षयशमीकथा	"	"	२३-२६
६. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	"	"	२७
७. वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्णा ३१-५२

विशेष—लाखेरी ग्राम मे दीवान श्री बुर्घासिंहजी के राज्य मे मुनि मेवविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहो के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३. गुटका सं० २६१ । पत्र स० ११७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत मे समयसार कल्याण मपूजा भी है ।

५६७४. गुटका सं० २६२ । पत्र स० ८८ ।

१. ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत	१९-३६
२. फुटकर दोहे	×	हिन्दी	३१ दोहा है ३६-३७

३ पचकोप

गोवर्धन

संस्कृत

१७-४५

के काम से १७११ संत हरिवंशदास ने सबाण में प्रतिनिधि की थी।

२६७५ गुटका सं० २६३। संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी। पत्र सं० ७६। मा० ५×६ इंच। ले०

काम से १७११। अपूर्ण। बसा-जीर्ण।

विशेष—मासुर्बेद के गुसले एवं मंत्रों का संग्रह है।

२६७६ गुटका सं० २६४। पत्र सं० ७७। मा ६×४ इंच। ले काम १७५५ वीप बुकी ६। पूर्ण।

सामान्य सुख। बसा-जीर्ण।

विशेष—यं मोवर्धन ने प्रतिनिधि की थी। पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

२६७७ गुटका सं० २६५। पत्र सं० ७८। मा ४×३ इंच। मापा संस्कृत हिन्दी। ले काम

सं० १६२५ धान बुकी ३।

विशेष—गुप्पाइवाचन एवं अक्षामरस्तोत्र मापा है।

२६७८ गुटका सं० २६६। पत्र सं० ७९। मा ३×३ इंच। मापा संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

अपूर्ण। बसा-सामान्य।

विशेष—अक्षामरस्तोत्र एवं तत्पार्य सुत्र है।

२६७९ गुटका सं० २६७। पत्र सं० ८०। मा ६×४ इंच। मापा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—मासुर्बेद के गुसले हैं।

२६८० गुटका सं० २६८। पत्र सं० ८१। मा ६×३ इंच। मापा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र जाती हैं। ३१ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १ तक शृङ्गार के कवित्त हैं।

१ बारह भागा—पत्र १०-२१ तक। चतुर कवि का है। १२ पद हैं। बर्तन सुन्दर है। कविता में पत्र निककर बचसा बना है। १७ पत्र है।

२ बारह भागा—मोचिन्द का—पत्र २६-३१ तक।

२६८१ गुटका सं० २६९। पत्र सं० ८२। मा ७×४ इंच। मापा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार।

विशेष—कोषसार है।

२६८२ गुटका सं० ३००। पत्र सं० १२। मा ६×३ इंच। मापा-हिन्दी। विषय-मन्त्रघातन।

विशेष—मन्त्रघातन मासुर्बेद के गुसले। पत्र ७ से आगे जाती है।

५६८३ गुटका सं० ३०१ । पत्र सं० १८ । आ० ४३×३३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह ।

ले० काल १९१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावणी मागीतु गी की— हर्षकीर्ति ने सं० १९०० ज्येष्ठ सुदी ५ को यात्रा की थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र सं० ४२ । आ० ४×३३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५. गुटका सं० ३०३ । पत्र सं० १०५ । आ० ४३×४३ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० यन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मत्रो सं० १८१७ की जगतराम के पौत्र माणकचन्द के पुत्र को आयुर्वेद के नुमले दिये हुये है ।

५६८६ गुटका सं० ३०३ क । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तवध रामचरित्र है । इसमें छप्पय छन्दो का प्रयोग हुआ है । १-२० पद्य तक सख्या ठीक है । इसमें आगे ३५९ सख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७ गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । आ० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ९ तक पत्र नहीं हैं । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगतराम एवं विजयकीर्ति के पदो का संग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा पाठ ।

पूर्ण । विशेष—शांतिपाठ है ।

५६९० गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१ गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । आ० ५×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तामरऋद्धिमन्त्र सहित है ।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२. गुटका सं० १। पत्र सं २७१। मा १३×० $\frac{१}{२}$ इंच। बे० सं ८१७। पूर्ण।

१	भाषामूषण	धीरबसिंह पठीब	हिन्दी	१-८
२	मठीसरा सनाथ विधि	×	" से० काल सं १७११	१३

मौरंगजेब के समय में वं समयसुन्दर ने जयपुरी में प्रतिलिपि की थी।

३	जैनसातक	भुवरवास	हिन्दी	१४
४	समयसार सादक	बनारसीवास	"	११७

बनारसाह शाहजहाँ के शासन काल में सं १७ व में काहीर में प्रतिलिपि हुई थी।

५.	बनारसी विमास	×	"	१२६
----	--------------	---	---	-----

विशेष—बनारसाह शाहजहाँ के शासनकाल सं १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

५६६३ गुटका सं० २। पत्र सं २२२। मा ८×१ $\frac{१}{२}$ इंच। अपूर्ण। बे सं० ८१८।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पत्र संग्रह है।

५६६४ गुटका सं० ३। पत्र सं २४। मा १३×१ $\frac{१}{२}$ इ। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। बे सं ८१९।

१	सांतिस्नान	×	हिन्दी	१
२	महाभियेक सामग्री	×	"	१-८
३	प्रतिष्ठा में काम करने वाले ६६ लोगों के चित्र	×	"	१-२४

५६६५ गुटका सं० ४। पत्र सं १३। मा १३×० $\frac{१}{२}$ इ। पूर्ण। बे सं ८२०।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५६६६ गुटका सं० ५। पत्र सं १६। मा १×४ इ। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। बे सं ८२१।

विशेष—सुभाषित पत्रों का संग्रह है।

५६६७ गुटका सं० ६। पत्र सं ११४। मा १×४ इ। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। बे सं ८२२।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

५६६८ गुटका सं० ७। पत्र सं ४१९। मा १ $\frac{१}{२}$ ×१ इ। से काल सं १८१ मयात्र सुदी ५ पूर्ण। बे सं ८२३।

१ पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	”
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भाद्रवा सुदी १०

५६६६. गुटका स० ८ । पत्र स० ३१७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८६४ ।

विशेष—पूजा एव प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है ।

५७०० गुटका स० ६ । पत्र स० १४ । आ० ४×४ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८६५ ।

विशेष—जगतगम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है ।

ख भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

५७०१ गुटका स० १ । पत्र स० २१२ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. होडाचक्र	×	संस्कृत	अपूर्ण	८
२. नाममाला	धनञ्जय	”	”	६-३२
३. श्रुतपूजा	×	”		३३-३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	”	ले० काल १७८३	३६-६५
५. मुक्तावलीपूजा	×	”		६५-६६
६. द्वादशव्रतोद्यापन	×	”		६६-८६
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	”	ले० काल सं० १७८३	८६-१०२
८. नवकारपैंतीसी	×	”		
९. आदित्यवारकथा	×	”		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	”		१०३-२१२
११. नन्दीश्वरपूजा	×	”		
१२. पञ्चकल्याणकपाठ	×	”		
१३. पञ्चमेरुपूजा	×	”		

३७०२ गुटका सं० २। पत्र सं १९६। मा० २×६३ इ। से काल X। कथा-बीर्ण बीर्ण।

१	त्रिलोकवर्णन	X	संस्कृत हिन्दी	१-१०
२	कामचक्रवर्णन	X	हिन्दी	११-१४
३	विद्यारत्याम्बा	X	प्राकृत	१३-१६
४	बीबीसतीर्षङ्कर परिचय	X	हिन्दी	१६-११
५	बज्जीसठश्लोकार्थ	X	"	१९-७८
६	मायक विमर्शनी	X	प्राकृत	७२-११२
७	भावसंग्रह (मायविमर्शनी)	X	"	११३-१३३
८	वैपनक्रिया भावकाचार टिप्पण	X	संस्कृत	१३४-१३४
९	तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१३४-१६८

३७०३ गुटका सं० ३। पत्र सं २१३। मा ६×६ इ। से काल X। पूर्ण।

विशेष—निरमपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है। इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है।

१	शङ्खपटीर्षदमा	समयसुन्दर	हिन्दी	११
२	बाह्यदानना	वित्तचन्द्रसूत्रि	" २ काल १९१५	१३-४
३	कनकैकामिकपीठ	जैतसिंह	"	४१-४२
४	दासिभद्र चौपई	वित्तसिंहसूत्रि	" २ काल १९ ८	४२-२४
५	शुभिव्यति विनराजस्तुति	"	"	२४-१ ६
६	बीसतीर्षङ्करविनस्तुति	"	"	१ ६-११७
७	महापीरस्तवन	वित्तचन्द्र	"	११७-११६
८	मापीरस्तवन	"	"	१२०
९	पादपीरस्तवन	"	"	१२ - १२१
१०	विनती पाठ व स्तुति	"	"	१२२-१४१

३७०४ गुटका सं० ४। पत्र सं ७१। मा २३×१ इ। माय-हिन्दी। से काल सं १२ ४। पूर्ण।

विशेष—निरमपूजा व पूजाओं का संग्रह है। सरस्वर में अतिमित्रि हुई थी।

५७०५ गुटका सं० ५ । पत्र स० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र स० ८० । आ० ८३×६६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२. आदिपुराणविनती	गङ्गादास	"		१७-४३

विशेष—सूरत में नरसीपुरा (नरसिंहपुरा) जाति वाले वणिक पर्वत के पुत्र गङ्गादाम ने विनती रचना की थी ।

३. पद-जिरा जपि जिरा जपि जिवडा	हर्षकीर्ति	हिन्दी		४४-४५
४. अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	५१
५. समकित्तविरावोधर्म	ब्र० जिनदास	"	"	५८

५७०७ गुटका सं० ७ । पत्र स० ५० । आ० ५३×४३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रों का मन्त्र सहित संग्रह है । अन्त में कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं ।

५७०८ गुटका सं० ८ । पत्र स० × । आ० ५×२३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासो का व्यौरा, मृभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९. गुटका सं० ९ । पत्र स० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल स० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं ।

५७१०. गुटका सं० १० । पत्र स० ८५ । आ० ६×३३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा अशुद्ध भी है ।

५७११. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५०१२ गुटका सं० १२। पत्र सं २२३। मा० १×४ इ०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। से काम सं १२०२ वैशाख शुदी १४। पूर्ण।

विषय—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५०१३ गुटका सं० १३। पत्र सं १२६। मा ३×३ इ०। से काम ×। पूर्ण।

विषय—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५०१४ गुटका सं० १४। पत्र सं ४२। मा ८३×३ इ०। भाषा-हिन्दी। से काम ×। अपूर्ण।

१ त्रिसोमवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१८
२ लंबेला की वरणा	×	"	"	१९-२६
३ भैरव समाका पुस्तकवर्णन	×	"	"	२६-४२

५०१५ गुटका सं० १५। पत्र सं ७६। मा ६×३ इ०। से काम ×। पूर्ण।

विषय—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५०१६ गुटका सं० १६। पत्र सं १२। मा ६×३ इ०। से काम सं १७२३ वैशाख शुदी १। पूर्ण।

१ समयसारनाटक	बनारसीबास	हिन्दी		१-१६
२ पार्श्वनाथजीकी मिसाली	×	"		११-११४
३ धार्मिकनायकस्तवन	दुसुसागर	"		११५-११६
४ गुरुदेवकीविनती	×	"		११७-१२

५०१७ गुटका सं० १७। पत्र सं ११३। मा ६×३ इ०। से काम ×। अपूर्ण।

विषय—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

५०१८ गुटका सं० १८। पत्र सं १२४। मा ३ इ०×३ इ०। भाषा-संस्कृत। से काम ×। अपूर्ण।

विषय—निरय नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

५०१९ गुटका सं० १९। पत्र सं २१३। मा ३×३ इ०। से काम ×। पूर्ण।

विषय—निरय पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा प्रायुर्वेद के मुसवे भी विद्ये हुये हैं।

५०० गुटका सं० २०। पत्र सं १३२। मा ७×६ इ०। से काम सं १८२२। अपूर्ण।

विषय—निरयपूजागाठ पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मभद्र) त्रिनस्तुति (स्वल्प हिन्दी) पर (गुरु मंत्र एवं वरणादि) गुरुदेवकी वरणादि तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

५७२१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ५-६२ । आ० ५७×५३ इ० । ले० काल X । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयसार गाथा, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२ गुटका सं० २२ । पत्र सं० २१६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र सुदी १४ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रो एव स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७२३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । मा० ६×५ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

१. पद- (वह पानी मुलतान गये)	X	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद-कौन खतामेरीमै न जानी तजि के चले गिरनारि)	X	"	"	"
३. पद-(प्रभू तेरे दरसन की बलिहारी)	X	"	"	"
४. आदित्यवारकथा	X	"	"	६६-१२५
५. पद-(चलो विय पूजन श्री बीर जिनद)	X	"	"	१७८-१७९
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०-१६२
७. पञ्चेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	"	१६२-१६५
८. जैनविद्वीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४ गुटका सं० १ । आ० ८×५ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ पद- सावरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. ,, मुझे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	X	"
३ दर्शनपाठ	X	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	X	हिन्दी
५ कल्याणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

७	वेवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
८	मङ्गलदिन जिन शैव्यालय जयमाल	×	हिन्दी
९	चिख पूजा	×	संस्कृत
११	सोसहकारणपूजा	×	"
१२	क्यासजणपूजा	×	"
१३	बान्तिपाठ	×	"
१४	पार्श्वनामपूजा	×	"
१५	पंचमेखुजा	धूमरबास	हिन्दी
१६	मन्वीरवरपूजा	×	संस्कृत
१७	उत्पार्श्वसूत्र	उमास्वामि	मपूर्णा "
१८	उत्पार्श्वपूजा	×	"
१९	मङ्गलदिन शैव्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२	निर्वाणकाम्य नावा	शैवा भावतीबास	"
२१	कुम्भों की बिनती	×	"
२२	बिनपुष्पीसी	नवरात्म	"
२३	उत्पार्श्वसूत्र	उमास्वामि	पूर्णा संस्कृत
२४	पञ्चकर्म्याहारमपन	कल्पवृक्ष	हिन्दी
२५	पद- बिन देखा बिन रहो न भाव	किष्कनसिंह	"
२६	" कीबी हो जेवन सो प्यार	पालतराय	"
२७	" प्रभु महु धरज सुगहो मेरी	नन्द कवि	"
२८	" भकी मुच करन बैरुत ही	"	"
२९	" प्रभु मेरी सुनो बिनती	"	"
३	" परपो संसार श्री बारा बिनको बार नहीं बारा	"	"
३१	" कला बीबार प्रभु तेरा भया कर्मन सगुर हेरा	"	"
३२	स्तुति	धुपवन	"
३३	नेमिनाम के द्य कव	×	"
३४	पद- जैन मठ परतो र मारि	×	"

५७२५ गुटका सं० २ । पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३×३ इ० । अपूर्णा । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ कल्याणमन्दिर भाषा	वनारसीदास	हिन्दी	अपूर्णा ८३-६३
२ देवसिद्धपूजा	×	”	६३-११५
३ सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश	११५-१२२
४. दशलक्षणापूजा	×	अपभ्रंश सस्कृत	१२३-१२६
५ रत्नत्रयपूजा	×	सस्कृत	१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत	१६८-१८१
७ शान्तिपाठ	×	सस्कृत	१८१-१८६
८ पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	१८७-२१२
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	अपूर्णा २१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	”	२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एव हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत हिन्दी	२६९-४०३

५७२६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० १०×६ इ० । विषय—संग्रह । ने० काल सं० १८७६
श्रावण सुदी १५ । पूर्णा । वे० सं० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. चौबीसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाह्निकापूजा	”	”
३. षोडशकारणपूजा	”	”
४. दशलक्षणापूजा	”	”
५. रत्नत्रयपूजा	”	”
६ पञ्चमेरूपूजा	”	”
७ सिद्धक्षेत्रपूजा	”	”
८. दर्शनपाठ	×	”
९. पद-अरज हमारी मृग	×	”

१	भक्तमरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	×	”
११	भक्तमरस्तोत्रमन्त्रिमंत्रसहित	×	संस्कृत हिन्दी

नयनस ह्य हिन्दी प्रर्ष सहित ।

५७२७ गुटका सं० ४ । पत्र सं० ३३ । मा ८×३६ । भाषा—हिन्दी । से कास स १९५४ ।

पूर्ण । से स १३ ।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है । इनमें बीसतराम घानतराय जोषराज मवल बुभन

शैव्या भायशरीवास के नाम उल्लेखनीय है ।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

५७८८ गुटक्य सं० १ । पत्र सं १ । मा १२×१६ । से कास × । पूर्ण । से सं० १४० ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है—

१	भक्तमरस्तोत्र	मानसु गाथाय	संस्कृत	१-६
२	भक्तमरस्तोत्र	×	”	६
३	बनारसीविनायक	बनारसीवास	हिन्दी	७-१११
४	कविता	”	”	११७
५	परमार्थदीप्ता	रूपचन्द्र	”	११८-१७४
६	नाममाताभाषा	बनारसीवास	”	१७३-१८६
७	प्रनेकावनाममाता	नन्दकवि	”	१८०-१८७
८	विनयिगसप्तश्लोस	×	”	१८७-२१६
९	विनयसप्तश्लो	×	”	मपुर्ष २७-२११
१०	विनयभाषा	रूपदीप	”	२११-२२१
११	देवपूजा	×	”	२२२-२६२
१२	जैनपाठक	भूषणवास	”	२६२-२६३
१३	भक्तमरस्तोत्र (पद्य)	×	”	२८४-३

विशेष—श्री देवयचन्द्र ने प्रतिक्रिया की थी ।

५७२६. गुटका स० २ । पत्र स० २३३ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१०६
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है ।			
२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०-१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१-१६२
४. पंचलब्धिविचार	×	"	१६३-१६४
५. अठावीस मूलगुरुंरस	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१६४-१६६
६. दानकथा	"	"	१६७-२१५
७. वारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५-२१७
८. हसतिलकरास	ब्र० अजित	हिन्दी	२१७-२१३
९. चिद्रूपभास	×	"	२२०-२१७
१०. आदिनाथकल्याणकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८-२३३

५७३०. गुटका स० ३ । पत्र स० ६८ । आ० ५३×४ इ० । ले० काल स० १६२१ पूर्ण । वे० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-३५
२. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६-६०
भाषाकार-सुरेन्द्रकीर्ति २० काल १७४१			
३. पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन	×	"	६१-६८

५७३१. गुटका स० ४ । पत्र स० ७० । आ० ७३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४३

१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५-२५
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६-३२
३. जिनस्तवन	दोलतराम	"	३२-३३
४. छहडाला	"	"	३४-५६
५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुं गाधार्थ	संस्कृत	६०-६७
६. रविनारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८-७०

५०३२ गुटका सं० ५। पत्र सं ३९। मा ५३×७७ इ। भाषा-हिन्दी। से० काल ×। पूर्ण।
वे सं १४४।

विषय—पूजाओं का संग्रह है।

५०३३ गुटका सं० ६। पत्र सं ९३२। मा ६३×४६ इ। भाषा हिन्दी। से काल ×। अपूर्ण।
वे सं १४७।

विषय—पूजाओं का संग्रह है।

५०३४ गुटका सं० ७। पत्र सं २३३। मा ६३×४२ इ। भाषा हिन्दी संस्कृत। विषय—पूजा।
से काल ×। अपूर्ण। वे सं १४८।

५०३५ गुटका सं० ८। पत्र सं १७-४८। मा ६३×३ इ। भाषा—हिन्दी। से काल ×।
अपूर्ण। वे० सं १४९।

विषय—ब्रह्मण्यीविनास तथा कुछ पदों का संग्रह है।

५०३६ गुटका सं० ९। पत्र सं ३२। मा ६×४३ इ। से काल सं १५१ काष्ठ।
पूर्ण। वे सं १४९।

विषय—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५०३७ गुटका सं० १०। पत्र सं ४। मा ६×४३ इ। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा पाठ संग्रह।
से काल ×। पूर्ण। वे सं १५१।

५०३८ गुटका सं० ११। पत्र सं २५। मा ७×३ इ। भाषा हिन्दी। विषय—पूजा पाठ संग्रह
से काल ×। अपूर्ण। वे सं १५१।

५०३९ गुटका सं० १२। पत्र सं ३४-४६। मा ८३×६३ इ। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा
पाठ संग्रह। से काल ×। अपूर्ण। वे सं १५१।

विषय—स्कृत पाठों का संग्रह है।

५०४० गुटका सं० १३। पत्र सं ४८। मा ८×६ इ। भाषा हिन्दी। विषय—पूजा पाठ संग्रह।
से काल × अपूर्ण। वे सं १५२।

४ भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर सधीजी]

५०४१ गुटका सं० १। पत्र सं १७। मा ८३×३३ इ। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से काल ×।
अपूर्ण।

विषय—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७४२ गुटका सं० २ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—चि० रामसुखजी हू गरसीजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मढा नगर मे प्रतिलिपि की थी । पूजाओ का संग्रह है ।

५७४३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६६ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा मुभापितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं ।

५७४४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । आ० ७×८ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७४५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है ।

५७४६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २७६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल सं० १६६ माह बुदी ११ । अपूर्ण ।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । पूजा स्तोत्रो के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है —

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२. संबोधपञ्चासिका	×	"
३. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १०४ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं ।

५७४८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३४ । आ० ४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

५७४९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७८ । आ० ७ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा एव स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

१७१० गुटका सं० १० । पत्र सं० १ । मा ७१×११ इ० । से काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मानस्यजन एव सुन्दरवास के पत्रों का संग्रह है ।

१७११ गुटका सं० ११ । पत्र सं० २ । मा ६३×४१ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—भूवरवास प्रादि कवियों की स्तुतियों का संग्रह है ।

१७१२ गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५ । मा ९×४२ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × । अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपवन्त कृत वधाया एव विनयियों का संग्रह है ।

१७१३ गुटका सं० १३ । पत्र सं० १० । मा ८×११ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × । पूर्ण ।

१ धर्मविज्ञास

मानस्यजन

हिन्दी

२ जैनशास्त्र

भूवरवास

०

१७१४ गुटका सं० १४ । पत्र सं० १२ से १२४ । मा १०×१३ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—वर्षा संग्रह है ।

१७१५ गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४ । मा ७×१३ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पत्रों का संग्रह है ।

१७१६ गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । मा ९×४३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । से काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

१७१७ गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८१ । मा ९×४ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मङ्गल विहारी प्रादि कवियों के पत्रों का संग्रह है ।

१७१८ गुटका सं० १८ । पत्र सं० १२ । मा १०×९ इ० । भाषा—संस्कृत । से काल × । अपूर्ण ।

पूर्ण ।

विशेष—उत्तरार्धसूत्र एवं पूजायें हैं ।

१७१९ गुटका सं० १९ । पत्र सं० १७१ । मा १०×७ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल × । अपूर्ण

१ सित्पुत्रप्रकरण

बनारसीवास

हिन्दी

अपूर्ण

२ अम्बस्वामी चौरई

ब राममल्ल

०

पूर्ण

३ धर्मपरीक्षावाचा

×

०

अपूर्ण

४ समाधिप्रकरणवाचा

×

०

०

५७६०. शुद्धा सं० २० । पत्र सं० ५३ । आ० नं० ५३६६ ३० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० क्रम X ।

अथवा ।

विशेष—गुणानोरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५७५० गुटका सं० १०। पत्र स १०। मा० ७^३×२६। से० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—मानन्दचत एव सुन्दरदास के पदों का संग्रह है।

५७५१ गुटका सं० ११। पत्र स २। मा २३×४^३। माया-हिन्दी। से० काल ×।

अपूर्ण।

विशेष—सुन्दरदास प्रायः कवियों की कृतियों का संग्रह है।

५७५२ गुटका सं० १२। पत्र सं ३। मा १×४^३। माया-हिन्दी। से० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पद्ममङ्गल कथनव्य कृत कथावा एव विमलियों का संग्रह है।

५७५३ गुटका सं० १३। पत्र सं २०। मा ८×६-६। माया-हिन्दी। से० काल ×। पूर्ण।

१	बर्मबिसास	धानतराय	हिन्दी
२	वेगप्रतक	सुन्दरदास	"

५७५४ गुटका सं० १४। पत्र सं १३ से १३४। मा २×१^३। माया-हिन्दी। से० काल ×।

पूर्ण।

विशेष—बर्मा संग्रह है।

५७५५ गुटका सं० १५। पत्र स ४। मा ७^३×१^३। माया-हिन्दी। से० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५७५६ गुटका सं० १६। पत्र सं ११४। मा १×४^३। माया-हिन्दी संस्कृत। से० काल ×।

अपूर्ण।

विशेष—पूजपाठ एवं स्तीर्णों का संग्रह है।

५७५७ गुटका सं० १७। पत्र सं ३६। मा १×४। माया-हिन्दी। से० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—मङ्गल विहारी प्रायः कवियों के पदों का संग्रह है।

५७५८ गुटका सं० १८। पत्र सं ५२। मा २×६। माया-संस्कृत। से० काल ×। अपूर्ण।

अपूर्ण।

विशेष—नरधर्मसूत्र एवं पूजायें हैं।

५७५९ गुटका सं० १९। पत्र सं १०१। मा २×७^३। माया-हिन्दी। से० काल ×। अपूर्ण।

१	तिनूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२	जम्बूवर्मा शीर	ब राममङ्गल	"	पूर्ण
३	पमारीभावावा	×	"	अपूर्ण
४	समाधिप्रकरण	×	"	"

५७६०. गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा ।

विशेष—गुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१. वसंतराजशकुनावनी × संस्कृत हिन्दी २० काल सं० १८२५
सावन सुदी ५ ।

२ नाममाला धनञ्जय संस्कृत ×

५७६१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८-७४ । आ० ८×५ $\frac{१}{२}$ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी

६ । अपूर्णा ।

१. ढोलामारणी की वार्ता × हिन्दी

२. शनिश्चरकथा × ”

३. चन्द्रकु वर की वार्ता × ”

५७६२ गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्णा ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इ० । ले० काल × ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×५ $\frac{१}{२}$

१. यशोधरकथा खुशालचन्द्र काला

२. पद व स्तुति ×

२ प्रद्युम्नरास	शङ्करात्ममल्ल	हिन्दी
३ सुदर्शनरास	"	"
४ श्रीपातरास	"	"
५ साहित्यभारकथा	"	"

५०६८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । मा ७×४^१/_२ इ । ले कास X । पूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ बल्लेशरीय है ।

१ नाममासा	धनञ्जय	संस्कृत
२ अक्षयकाष्टक	अक्षयकरदेव	"
३ त्रिलोकप्रतिमकरतोष	मट्टारक महीचन्द्र	"
४ चित्तसङ्ग्रहनाम	साधुधर	"
५ श्रीश्रीरासो	जिनदास	हिन्दी

५०६९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २३ । मा ७×४^१/_२ इ । ले कास सं १८७४ बैशाख इत्या

६ । पूर्ण ।

१ नित्यनियमपूजासंग्रह	X	हिन्दी	
२ श्रीश्रीस तीर्थकर पूजा	रामचन्द्र	"	
३ कर्मसङ्ग्रहपूजा	टेकचन्द्र	"	
४ पंचपरमेष्ठिपूजा	X	"	१ कास सं १८९२

ले कास सं १८७६

श्रीश्रीराम भावसा के प्रतिलिपि की भी ।

५ पंचकल्याणकपूजा	X	हिन्दी
६ इन्द्रस्यपह भावा	धानतराम	"

५०७० गुटका सं० ३० । पत्र सं १ । मा ६×३ इ । ले कास X । अपूर्ण ।

१ पूजापाठसंग्रह	X	संस्कृत
२ सिद्धोत्तररत्न	बनारसीदास	हिन्दी
३ लघुशास्त्रमयराजगीति	बाणभय	"
४ कुर्य " "	"	"

५७०१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६०-११० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०

काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७०२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५^३×५^३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ कक्कावत्तीसी	×	हिन्दी
२. पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४ शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७०३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४^३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ पाशाकेवली (अवजद)	×	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशवत्तीसी	हरिदास	"
३ स्यामवत्तीसी	×	"
४ पाशाकेवली	×	"

५७०४ गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७०५ गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४^३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९४० ।

पूर्ण ।

विशेष—पूजाग्रो का संग्रह है । बचलाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७०६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाग्रो एव पद संग्रह है ।

५७०७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
२. संबोधपचासिका	द्यानतराय	"
३. पद-संग्रह	"	"

पूर्व । १७७८. गुटका सं ३८ । पत्र सं ११ । भा० ३३×३३ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । से काल X ।
विषय—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

१७७९. गुटका सं ३९ । पत्र सं ११८ । भा ३३×३६ इ० । भाषा—हिन्दी । से० काल ८
१८११ । पूर्ण ।

विषय—मातृ योधा ने माता के बाला में प्रतिक्रिया की थी ।

१ कुसुमाक्षरी	प्रद्युम्नास	हिन्दी	
२ बह्मसूक्त	हर्षकवि	"	४ र का सं १७०८ से का सं १८११
३ मोहविदेकपुत्र	बनारसीदास	"	
४ भारमसुतोपन	दानवराज	"	
५ पूजासंग्रह	X	"	
६ बस्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	X	संस्कृत	से० का सं १८११
७ धारिण्यवार कथा	X	हिन्दी	से का सं १८११

१ १७८०. गुटका सं ४० । पत्र सं ८२ । भा ३३×४४ इ । से काल X । पूर्ण ।

२ बह्मविद्यावर्णन
 X | हिन्दी | |

३. मातुरेदिकपुत्रके
 X | " | |

१७८१. गुटका सं ४१ । पत्र सं २० । भा ३३×४३ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । से०
काल X । पूर्ण ।

विषय—श्रीमद्वैद्य संस्कृति साहित्य है ।

१७८२. गुटका सं ४२ । पत्र सं १३८ । भा० ८×३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा
पाठ । से काल X । अपूर्ण ।

विषय—मनीहुरजाल इत बालविद्यामणि है ।

१७८३. गुटका सं ४३ । पत्र सं ८ । भा० ६×३ इ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ५ पर ।
से काल X । अपूर्ण ।

विषय—रामेश्वर एवं धारिण्यवार कथाओं तथा-पत्रों का संग्रह है ।

१७८४. गुटका सं ४४ । पत्र सं ६ । भा ६×३ इ । से० काल सं १९३६—काष्ठमन्त्री
१४ । पूर्ण ।

विषय—स्तोत्रसंग्रह है ।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । आ० ८५३ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

१. नित्यपूजा	X	हिन्दी सस्कृत
२ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	सस्कृत

५७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । आ० ४X३ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत । ले० काल X ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजामो तथा स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । आ० ६X४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा

७ । पूर्ण ।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	सस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्मराज	"
३ सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य	ले० काल सं० १७३१ "

विशेष—जयपुर मे गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । आ० ६X४ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

१. बारहखड़ी	सूरत	हिन्दी
२. कवकावतीसी	X	"
३. बारहखड़ी	रामचन्द्र	"
४. पद. व. विनती	X	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । आ० ८३X६ इ० । भाषा हिन्दी सस्कृत । ले० काल सं०

१९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । आ० १०३X७ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. ज्ञातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सस्कृत
२ स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

१	एकीभास्तीवभाषा	भूपरदास	हिन्दी
४	सबोधवञ्चासिवाभाषा	घान्तराम	"
५	निर्वाणघाण्डगाथा	×	प्राकृत
६	जैनपानन	भूपरदास	हिन्दी
७	विद्यपूजा	महाशय	संस्कृत
८	सधुवामाधिर म पा	महाशय	"
९	सास्वतीपूजा	मुनिरघनन्दि	"

५७६१ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १४ । मा १३×४३ इ । से नाम सं० १९१७ येन मुनी १

पुण्य ।

विशेष—विमानसास मांथमा के प्रतनिधि की थी ।

१	विपारहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी
२	रवमात्रासर्गनि	×	"
३	सांभलात्री के मंदिर की रवमात्रा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रवमात्रा सं १९२० कागुण मुनी = मंसलवार को हुई थी ।

५७६२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं १३२ मा १×२३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । से० नाम सं १८१८ । पुर्ण ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पर सप्त है ।

५७६३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं ७ । मा १ × ७ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । से० नाम × ।

पुण्य ।

विशेष—पूजा वाद सप्त है ।

५७६४ गुटका सं० ३४ । पत्र सं २ । मा २×२३ इ । भाषा—हिन्दी । से नाम सं १७४४ नामा मुनी १ । पुर्ण । तीर्ण तीर्ण ।

विशेष—भैरवाष्ट रामा (बल्लरायमल्ल) एक भाग साबलम पा है ।

५७६५ गुटका सं० ३५ । पत्र सं ७-१२३ । मा २×२३ इ । से नाम × । पुर्ण ।

विशेष—एके व मुग्धन तसपगाध नामक (बनारसीवास) तथा बनारसीधा भाषा (मनाहरन न)

१३ है ।

५७६६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

५७६५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर वस्तराम के पठनार्थ पं० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२. नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३. कवित्त	×	”

५७६७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६३×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७६९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×८ इ० । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओ का संग्रह है ।

५८००. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ९×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मरायभक्त कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है । पृष्ठो के दोनो ओर गणेशजी एव हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

५८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३३×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदो का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

३८०७ गुटका सं० १। पत्र सं ११२। भा ६२×४३ इ। माया-हिन्दी संस्कृत। से० काल सं १७१२ पौष। पूर्ण। वै सं ७४७।

विशेष—प्राग्भ में मासुर्बंद के मुससे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

३८०८ गुटका सं० २। सप्तहस्तार्त्ता पं० फतेहबाद नागौर। पत्र सं २४८। भा ४×१ इ। माया-हिन्दी संस्कृत। से० काल X। पूर्ण। वै सं ७४८।

विशेष—शारदाबाई के पुत्र सेवारावजी पाटण्डी के परमार्थ लिखा गया था—

१ नित्यमिमम के शोहे	X	हिन्दी	से काल सं १८३७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	X	" संस्कृत	से काल सं १८३६
३ धुनसीस	X	हिन्दी	१ व धिनाये हैं।
४ ज्ञानपदवी	मतोहरदास	"	
५. शैल्यंबदमा	X	संस्कृत	
६ जन्मगुण के १६ स्वप्न	X	हिन्दी	
७ प्राकृत्यभार की कथा	X	"	
८ नवकार मंत्र चर्चा	X	"	
९. कर्म प्रकृति का म्पीरा	X	"	
१० जपुसामयिक	X	"	
११ पाषाण्यवली	X	"	से काल सं १८६६
१२ जैन शरीरवेद्य की पथी	X	"	"

३८०९ गुटका सं० ३। पत्र सं ३७। भा ६×४३ इ। माया संस्कृत हिन्दी। विषय-भूजा स्तोत्र। से काल X। पूर्ण। वै सं ७४९।

३८१० गुटका सं० ४। पत्र सं २०९। भा० १४×३३ इ। माया हिन्दी। विषय-पद चरन। से० काल X। पूर्ण। वै सं ७५०।

३८११ गुटका सं ५। पत्र सं १२३। भा ६३×३३ इ। माया-हिन्दी संस्कृत। से० काल X। पूर्ण। वै सं ७५१।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ संग्रह है

५८१२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १५१ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी सरकृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ मे आयुर्वेदिक नुसखे भी है ।

५८१३ गुटका सं० ७ । आ० ६×६३ इ० भाषा-हिन्दी सरकृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ ।

५८१४ गुटका सं० ८ । पत्र सं० १३७ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

५८१५ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७२ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३५७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

५८१७ गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५७ ।

५८१८. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १४६-७१२ । आ० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठो का संग्रह है—

१. दर्शनपञ्चोत्सी	×	हिन्दी
२ पञ्चास्तिकायभाषा	×	"
३. मोक्षपैठी	बनारसीदास	"
४. पञ्चमेरुजयमाल	×	"
५. साधुवदना	बनारसीदास	"
६. जखड़ी	भूधरदास	"
७ गुणमञ्जरी	×	"
८. लघुमंगल	रूपचन्द	"
९. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	"

१	सङ्घनिमित्तैस्त्वामय जयमास	शैवा भगवतीवास	"	र सं १७४६
११	बाईस परिपह	सूपरदास	"	
१२	निर्वाणभाष्य भाषा	शैवा भगवतीवास	"	र सं० १७११
१३	बारह मावना	"	"	
१४	एकीमावस्तोत्र	सूपरदास	"	
१५	ममल	विनोबीसाल	"	र सं १७४४
१६	पञ्चमंगल	रूपबन्ध	"	
१७	सक्तामरस्तोत्र भाषा	नभमल	"	
१८	स्वर्गसुख वर्णन	×	"	
१९	कुरेवस्वरूप वर्णन	×	"	
२०	समयसारनाटक भाषा	बनारसीवास	"	ले सं १८११
२१	बघनभाणपुत्रा	×	"	
२२	एकीमावस्तोत्र	बादिराज	संस्कृत	
२३	स्वर्गसूक्तोत्र	समंतब्राह्मण्य	"	
२४	त्रिनसहस्रनाम	मास्तावर	"	
२५	देवायमस्तोत्र	समंतब्राह्मण्य	"	
२६	बतुविष्णुतिर्बहुत स्तुति	बन्ध	हिन्दी	
२७	चौबीसठण्ठा	मेमिबन्ध्याचार्य	प्राकृत	
२८	कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

५८१६ गुटका सं० १३। पत्र सं ५९। भा १२×४२ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले काल × पूर्ण। ले सं ७५१।

विलेप—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु वाणमय राजनीति भी है।

५८२० गुटका सं १४। पत्र सं ×। भा १×९२ इ। भाषा-हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। ले सं ७६।

विलेप—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका संक्षिप्त है।

५८२१ गुटका सं० १५। पत्र सं ३-१५४। भा १२×४२ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विलेप—पूजा पाठ। ले काल ×। अपूर्ण। ले सं ७६१।

५८२२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । आ० ८३×७३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०

१७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी प० दौलतरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारसराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्णा १-८१
२. बनारसीविलास	"	"	८२-१०३
४. तीर्थङ्करों के ६२ स्थान	×	"	१६४-२२०
४. खुबेलवालों की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	×	"	२२५-२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५-३१५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा
पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४७ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-स्तोत्र
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा
स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×३३ इ० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

१८२६ गुटका सं० १। पत्र सं १७। मा ५×३ इ। भाषा हिन्दी संस्कृत। से कास X।

प्रपूर्णा। से सं० २१२।

विषय—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। बीच के प्राधिकरण पत्र जैसे एवं पटे हुए हैं। मुख्य पाठों का संग्रह

निम्न प्रकार है।

१. मेमीभररास	मुनिपवनकीर्ति	हिन्दी	१५ पत्र हैं।
२. मेमीभर की बेति	ठगपुरती	"	४४-६२
३. पवित्रिमवेति	"	"	६९-१०१
४. श्रीश्रीसतीर्यकररास	X	"	१०१-१०६
५. विवेकजगदी	जिनबास	"	१२६-१३३
६. मेमकुमारनीत	पुनो	"	१४८-१५१
७. टंडाणानीत	कविपूजा	"	१५१-१५९
८. बाटहमनुपेसा	ममपु	"	१५९-१६०
से कास सं १६६२ पेट्ट पुटी १२			
९. धाम्निनापस्तोत्र	पुणमत्रस्वामी	संस्कृत	१६०-१६३
१०. मेमीभर का हिंडोसना	मुनिपवनकीर्ति	हिन्दी	१६३-१६४

१८२७ गुटका सं० २। पत्र सं २२। मा ६×६ इ। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। से

कास X। पूजा। से सं २३२।

१. मेमिनाभर्मम	नामचम	हिन्दी	२ कास १०४४ १-११
२. राहुनरन्पीसी	X	"	१२-२२

१८२८ गुटका सं० ३। पत्र सं ४-१४। मा ४×६ इ। भाषा—हिन्दी। से कास X। प्रपूर्णा।

से सं २३३।

१. प्रद्युम्नरास	इप्परास	हिन्दी	४-२७
२. धामिनाभविमती	ममकीर्ति	"	३२
३. श्रीम तीवरो की जयम म	हर्षकीर्ति	"	३२-३६

४. चन्द्रग्रहण के सोहलस्वप्न

X

हिन्दी

५२-५४

इनके अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है ।

५८३२. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७४ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X ।

अपूर्णा । वे० सं० २३४ ।

विशेष-आयुर्वेदिक नुसखो का संग्रह है ।

५८३३. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३०-७५ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०

१७६१ माह सुदी ५ । अपूर्णा । वे० सं० २३४ ।

१. आदित्यवार कथा

भाऊ

हिन्दी

अपूर्णा

३०-३२

२. सप्तव्यसनकवित्त

X

"

३. पार्श्वनाथस्तुति

बनारसीदास

"

४. अठारहनाते का चौढाला

लोहट

"

५८३४ गुटका सं० ६ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले०

काल X । अपूर्णा । वे० सं० २३४ ।

विशेष-शनिश्चरजी की कथा है ।

५८३५. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १२-६५ । आ० १०३×५३ इ० । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० २३५ ।

१. चारणक्यनीति

चारणक्य

संस्कृत

अपूर्णा

१३

२. साखी

कबीर

हिन्दी

१३-१६

३. ऋद्धिमन्त्र

X

संस्कृत

१९-२१

४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं ऋतो का चित्र सहित वर्णन

हिन्दी

६५

५८३६. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २-५९ । आ० ६×५ इ० । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० २९७ ।

१. बलभद्रगीत

X

हिन्दी

अपूर्णा

२-६

२. जोगीरासा

पांडे जिनदास

"

७-११

३. कक्काबत्तीसी

X

"

११-१४

४. "

मनराम

"

१४-१८

५. पद-साधो छोडो कुमति अकेली

विनोदीलाल

"

१८

६. " रे जीव जगत सुनो जान

धीहल

"

२०

७	१) मरुत मूय कपड़ी में बरामी	कनकप्रति	"	२-२१
८	कुहरी- हो सुन बीन मरुत हमारी या	वधावन्द	"	२१-२२
९	परमारण कुहरी	X	"	२२-२३
१०	पद- मरिषी वीरविकि से वाग्दस्वामी	कनकवन्द	"	२७
११	" वीर सिव देवद से पकारी	कुन्दर	"	२७
१२	" वीर मेरि चित्तार नाम बनो	X	"	२९
१३	" मोगी या पु धामसे इण कैम	X	"	२९
१४	" वरद्वैत कुच गली भासी नन पत्नी	मनकराम	"	२९-३१
१५	" गिर देवत वामिद नाम्ना	X	"	३१
१६	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदवन्द	मरुत	३२-३३
१७	पद- अट पटपदि नैमलि घोचर को	मनराम	विष्णु	३५
मादिक पुस्तक कींरो				
१८	" विषु ठै गरमन मोही लोभी	मनराम	"	३२
१९	" मरिषीया धाम पवित्र करै	"	"	
२०	" बनो बनो ई धामि लेनी मेरीपुर विम वीचीयो	मनराम	"	४०
२१	" मनो नमी बँ वी मरिहल	"	"	४१
२२	" भापुरी जिनबानी कुन है भापुरी	"	"	४२-४४
२३	सिव वीची मरुता को धामिनी	मुनि कुमचन्द्र	"	४४-४६
२४	पद-	"	"	४६-४८
२५	"	"	"	४८-४९
२६	" हमारी बहीनी ठैल बहोबनी कवन कुमारि का	"	"	४९-५१
२७	" कै बरि साइलि स्वायी मोही बोड़ीया	"	"	५१-५३
२८	मय पद	"	"	५३-५९

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र स० ४ । आ० ८३×६ इ० । विषय संग्रह । ले० काल X । वे० स०

२६६ ।

१. जिनपञ्चीसी	नवल	हिन्दी	१-२
२. सर्वोधपचासिका	द्यानतराय	"	२-४

५८३९. गुटका सं० ११ । पत्र स० १०-६० । आ० ५३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X ।

वे० स० ३०० ।

विशेष—पूजाश्री का संग्रह है ।

५८४० गुटका सं० ११ । पत्र स० ११५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० काल X । वे० स० ३०१ ।

५८४१. गुटका सं० १२ । पत्र स० १३० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३०२ ।

५८४२. गुटका सं० १३ । पत्र स० ६-१७ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० स० X । अपूर्ण । वे० स० ३०३ ।

५८४३. गुटका सं० १४ । पत्र स० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३०४

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५८४४ गुटका सं० १५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल

स० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३०५ ।

विशेष—इखलाक मह सनोन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है ।

छोटी २ कहानियां हैं ।

५८४५ गुटका सं० १६ । पत्र स० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०६

विशेष—रामचन्द्र (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका सं० १७ । पत्र स० ३-२६ । आ० ४/० इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X ।

अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	संस्कृत	
२. धूलभद्रजी का रासो	हिन्दी	अपूर्ण
३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	"	१०-२१
		२१-६६

२८४७ गुटका सं० १८। पत्र सं १६०। मा ८३×६६०। ले० काल X। प्रपूर्ण। वे० सं ३ प
विशेष—पत्र सं १ से ३५ तक सामान्य गार्डों का संग्रह है।

१ सुन्दर शृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पत्र है	३६-८
२ बिहारोसतसई टीका सहित	X	"	प्रपूर्ण	८१-८२
			७४ पत्रों की ही टीका है।	
३ बसंत विलास	X	"		८९-९०
४ बृहत्संटाकर्णिकाव्य	कवि भोपीलाल	"		१४-६६

विशेष—प्रारम्भ के ५ पत्र नहीं हैं प्राये के पत्र भी नहीं हैं।

इति श्री कछवाहा कुममबननरकासी राउटराजो बस्तावरसिंह प्रामान्य कृते कवि भोपीलाल विरचिते बसंत
विलासे विभाव बर्णानो नाम तृतीय विलासः।

पत्र ८-२६ मासक मासिका बरान।

इति श्री कछवाहा कुमसूपननरकासी राउटराजो बस्तावर सिंह प्रामान्य कृते भोपीलाल कवि विरचिते
बसंतविलासनामकवर्णानो नामाष्टको विलासः।

२८४८ गुटका सं० १६। पत्र सं १४। मा ८×६६। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण।
वे० सं ३६।

विशेष—बृहत्संख्य कृत कम्पकुमार भरित है पत्र पीछे है किन्तु नहीं है।

२८४९ गुटका सं० २०। पत्र सं २१। मा ८×६६। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण।
वे० सं ३१।

१ ऋषिमंडलपूजा	सबसुख	हि०		१-१
२ प्रकम्पनाचार्योक्ति मुनियों की पूजा	X	"		१९
३ प्रतिहानामावलि	X	"		२१

२८५० गुटका सं० २० (क)। पत्र सं १२। मा ८×६६। भाषा-हिन्दी। ले० काल X।
पूर्ण। वे० सं ३११।

२८५१ गुटका सं० २१। पत्र सं २५। मा ८३×६६। ले० काल सं १९१७ मासक बुध
१। पूर्ण। वे० सं ३११।

विशेष—मंडलाचार्य केवलसेन कृष्णसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है।

गुटका-संग्रह

५८५२. गुटका सं० २२ । पत्र स० १६ । आ० ११×३ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१४ ।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का वारहमासा X हिन्दी ६

२. सीताजी का वारहमासा X " ६-१२

३. मुनिराज का वारहमासा X " १३-१६

५८५३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० २३ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा ।

ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१५ ।

विशेष—गुटके मे अष्टाह्निकाव्रतकथा दी हुई है ।

५८५४. गुटका सं० २४ । पत्र स० १५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । ले० काल

स० १६८३ पौष बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ ।

विशेष—गुटके मे ऋषिमडलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थकर पूजादि पाठो का संग्रह है ।

५८५५. गुटका सं० २५ । पत्र स० ३५ । आ० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल

X । पूर्ण । वे० सं० ३१७ ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है ।

५८५६. गुटका सं० २६ । पत्र स० ५६ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल

सं० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१८ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थकर पूजा है ।

५८५७. गुटका सं० २७ । पत्र स० ५३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे० सं० ३१९ ।

विशेष—गुटके मे निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं ।

१. धर्मचाह X हिन्दी २

२. वदनाजखडी विहारीदास " ३-४

३ सम्मेशिखरपूजा गंगादास संस्कृत ५-२०

५८५८ गुटका सं० २८ । पत्र स० १६ । आ० ८×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है ।

५८५९ गुटका सं० २९ । पत्र स० १७९ । आ० ९×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२१ ।

विशेष—विहारीदास कृत सतसई है । दोहा सं० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनों मे ही अर्थ है टीका-

काल सं० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । आदि अन्तभाग निम्न है—

प्रारम्भः—

मम बिहारी सससई यीका कवित बंभ सिक्कटे —

मेरी मम बाबा हरी राबा भाबरी सोइ ।

बाउन की म्झई परै स्वाम हरित पुति होइ ॥

गीका—यह ममभावरन है तहां भी राबा हू की स्तुति म ब कता कवि करतु है । तहां राबा धीर बटे

मांते बा उन की म्झई परै स्वाम हरित पुति होइ या पर तें श्री बुवमान मुठा की प्रतीति हुई —

कवित—

बाकीप्रभा ममसोक्त ही तिहु लोक की सुन्दरता बहि बारि ।

कृष्ण क्झे धरसी खे सैननि की तामु म्हा सुब मगस कारो ॥

बाउन की म्झके म्झके हरित पुति स्वाम की होउ निहारी ।

भी बुवमान कु माटि कृपा कैं सुरामा हरी मम बाभा हमारी ॥ १ ॥

प्रथम पाठ—

माधुर बिभु क्कोर कुन क्झो कृष्ण कवि मार ।

सेबकु हौं सब कविनु की बसनु मधुपुटी मांउ ॥ २४ ॥

राबा मस्त कवि कृष्ण पर डरपी कृपा के डार ।

म्झति मांति बिपसा हरी बीनी बरधि मवार ॥ २५ ॥

एक बिना कवि सी दुपति क्झी क्झी कों जात ।

बोहा बोहा प्रति करी कवित बुझि मववात ॥ २६ ॥

पहले हू मेरे यह हिय में हु ती बिचार ।

करो नाइका भेर की म य बुझि मगुत्तार ॥ २७ ॥

के श्रीने पूरव कविनु सरस म य सुबधार ।

तिनहि म्झकि मेरे कवित को पठि है मगुत्तार ॥ २८ ॥

बागिय है मपने हिये किन्ही न म य प्रकास ।

गुप की भाइस पाइके हिय में मये हुतास ॥ २९ ॥

करे सत्त सी बीहरा सु कवि बिहारीदास ।

सब कीऊ तिनकी पडे हुने पुने सविमास ॥ ३० ॥

बडी बरीसों बागि मी पाइती भासरो माइ ।

पारै इन बीहानु संभ बीने कवित नमाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन ।
करै सातसौ कवित मे सीखै सकल प्रवीन ॥ ३२ ॥
मै अत ही दीख्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ ।
भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि वनाइ ॥ ३३ ॥
सत्रह सतसै आगरे असी वरस रविवार ।
कातिक वदि चोथि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥
इति श्री विहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण ।

सतसै अथ लिख्यौ श्री राणा श्री राजा साहिवजी श्रीराजामल्लजी कौ । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी
मौजे अजनगीई के प्रगनै पछोर के । मिति माह सुदी ७ बुद्धवार सवत् १७९० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

५८६०. गुटका स० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल X । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

- | | | | |
|------------------------|-------------------------------|------------------|--------|
| १. तत्त्वार्थसूत्रभाषा | कनककीर्ति | हिन्दी ग० | अपूर्ण |
| २. शालिभद्रचोपई | जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर | ” ५० २० काल १६७८ | ” |
- ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४ । अजमेर प्रतिलिपि हुई थी ।

स्फुट पाठ

X

”

५८६१. गुटका स० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । ले०
काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष-पूजाओं का संग्रह है ।

५८६२. गुटका स० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले०
काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन्द) के हैं ।

५८६३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ९×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० ३२५ ।

विशेष-रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४. गुटका स० ३४ । पत्र सं० ८६ । आ० ९×६ इ० । विषय-पूजा । ले० काल स० १८६१
श्रावण सुदी ११ । वे० सं० ३२६ ।

विशेष-चौबीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है । हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि
की थी ।

१८५६ गुटका सं० ४६ । पत्र सं ४१ । मा० ५५५ इ० । माया—हिन्दी संस्कृत । ले काल X । पूर्ण । वे सं ३४१ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१	वीनपाठक	भूधरदास	हिन्दी	१-११
२	शुद्धिमाध्यासस्तोत्र	जीठमन्वाषी	संस्कृत	१४-२०
३	अन्कावलीषी	नन्दादास	" ले० काल १८८८	१४-४३

१८५७ गुटका सं० ४० । पत्र सं २३४ । मा० ५५५ इ० । माया—संस्कृत हिन्दी । विद्यम—पूजा पाठ ले० काल X । पूर्ण । वे सं ३४२

१८५८ गुटका सं० ४१ । पत्र सं १६३ । मा० ७३५४२ इ । माया—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं १८८२ । पूर्ण । वे सं ३४३ ।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं ।

१	नवग्रहमन्त्रपार्ष्णीस्तोत्र	X	संस्कृत	१-२
२	वीनविचार	मा भैमिचन्द्र	"	१-८
३	नवतत्त्वप्रकरण	X	"	१-१४
४	वीनोपदेशविचार	X	हिन्दी	११-१८
५	देवदेव शीत विवरण	X	"	११-१५

विशेष—

बत्ता की कछोटी दुर्गमिच परे काल जाइ ।

दूर की कछोटी बोई मनी दुरे रग में ॥

विन की कछोटी मामती प्रपट होय ।

हीरा की कछोटी है जोहरी के पग में ॥

कुस की कछोटी पाकर बनमान जायि ।

— की कछोटी सराधन के जल में ॥

सैरी कीकहि सौ ।

इएन के बीच में ॥

हिन्दी

२. द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	”	११७-१४१
	२० काल स० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ९ ।		
३. गोविदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४. पार्वनाथस्तोत्र	×	” ले० काल १८८१	१४६-१४७
५. कृपरापञ्चोसी	विनोदीलाल	” ” ” १८८२	१४७-१५४
६. तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	”	१५५-१६३

१८८२ गुटका स० ५२ । पत्र स० ३५ । आ० ७३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८६

कार्तिक वृदी १३ । वे० स० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१८८३. गुटका स० ५३ । पत्र स० ८० । आ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

१८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र स० ४४ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वे० स० ३४६

विशेष—भूषरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है ।

१८८५ गुटका स० ५५ । पत्र स० २० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

१८८६ गुटका स० ५६ । पत्र स० ६८ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ३४८ ।

१८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र स० १७ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय अतविधि एव कथा दी हुई हैं ।

१८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र स० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१८८९ गुटका स० ५९ । पत्र स० १२९ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—रुग्निनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

१८६३. गुटका सं० ३३। पत्र सं० १७। मा ६×७ इ। माया हिन्दी। से काल ×। पूर्ण।

दि० सं० ३२७।

विषय—वावापरि सोलाभिर पूजा है।

१८६६ गुटका सं० ३६। पत्र सं० ७। मा ८×२३ इ०। माया—संस्कृत। विषय पूजा पाठ एवं

ज्योतिषपाठ। से काल ×। प्रपूर्ण। दि० सं० ३२८।

१ बुद्धपोषणकारण पूजा × संस्कृत

२ बालमन्त्रीति घातुन बासुनय " "

३ सावित्रीन × संस्कृत प्रपूर्ण

१८६७ गुटका सं० ३७। पत्र सं० १। मा ७×९ इ। माया—संस्कृत। से काल ×। प्रपूर्ण।

दि० सं० ३२९।

१८६८ गुटका सं० ३८। पत्र सं० २४। मा ९×४ इ। माया—संस्कृत। से काल ×। पूर्ण।

दि० सं० ३३०।

विषय—पूजाओं का संघर्ष है। इसी में प्रकाशित पुस्तकों की बन्धी हुई है।

१८६९ गुटका सं० ३९। पत्र सं० ४४। मा ९×४ इ। माया—संस्कृत। से काल ×। पूर्ण।

दि० सं० ३३१।

विषय—देवसिद्धपूजा प्रादि की हुई है।

१८७० गुटका सं० ४०। पत्र सं० ८। मा ४×१३ इ। माया—हिन्दी। विषय प्रासुर्देव। से

काल ×। प्रपूर्ण। दि० सं० ३३२।

विषय—प्रासुर्देव के मुखे दिये हुये हैं पराशरों के ग्रन्थों का वर्णन भी है।

१८७१ गुटका सं० ४१। पत्र सं० ७१। मा ७×२३ इ। माया—संस्कृत हिन्दी। से काल ×।

पूर्ण। दि० सं० ३३३।

विषय—पूजा पाठ संघर्ष है।

१८७२. गुटका सं० ४२। पत्र सं० ८९। मा ७×२३ इ। माया—हिन्दी संस्कृत। से काल सं० १८४९। प्रपूर्ण। दि० सं० ३३४।

स तीर्थकरों की पूजा एवं प्रकार की पूजा का संघर्ष है। दोनों ही प्रपूर्ण हैं।

गुटका सग्रह]

५८७३ गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । ले०

काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

५८७४ गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा सग्रह है ।

५८७५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १०८ । आ० ८३×३३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्त्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण
आदि का सग्रह है ।

५८७६ गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा पाठ

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्व्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाएं हैं ।

५८७७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ६६ । आ० ७×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय—कथा । ले० काल

× । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१-६
			२० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ९
२ आदित्यव्रतकथा	"	हिन्दी	६१-१९
३ सप्तपरमस्थान	"	"	१९-२६
४ मुकुटसप्तमीव्रतकथा	"	"	२६-३०
५ दशलक्षणव्रतकथा	"	"	३०-३४
६ पुण्ड्राक्षलिखितकथा	"	"	३४-४०
७ रक्षाविधानकथा	"	संस्कृत	४१-४५
८ उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६-६६

५८७८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २०

काल सं० १६९३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० ।

विशेष—बनारसीदास वृत्त समयसार नाटक है ।

१८७३ गुटका स० ४६। पत्र सं ४६। मा १×१६। भाषा-हिन्दी संस्कृत। मि० काल X। पूर्ण। वै सं ३४१।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१	पंचसतक	भूपरदास	हिन्दी	१-११
२	शुद्धिमन्त्रस्तोत्र	गीतमन्त्राधी	संस्कृत	१४-२०
३	शुद्धिवाणी	गणेशदास	" से काम १८८८	१४-४२

१८८८ गुटका स० १०। पत्र सं ११४। मा० १×१६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-गुणा पाठ मि० काल X। पूर्ण। वै सं ३४२

१८८९ गुटका स० ११। पत्र सं ११३। मा ७३×४२। भाषा-हिन्दी संस्कृत। मि० काल सं १८८२। पूर्ण। वै सं ३४३।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः चलेखनीय हैं।

१	नवग्रहमन्त्रस्तोत्र	X	प्रकृत	१-२
२	शुद्धिवाणी	मा मेमिन्त्र	"	१-४
३	नवग्रहमन्त्रस्तोत्र	X	"	१-१४
४	शुद्धिवाणी	X	हिन्दी	११-१८
५	तेईस श्लोक विवरण	X	"	१६-१९

विशेष—

बाला की कसौटी दुर्गमिन्त्र परे बाल बाद।

सूर की कसौटी दोई धनी बुरे रत में ॥

विज की कसौटी सामने प्रकट होय।

हीरा की कसौटी है बौद्धी के बल में ॥

जुल की कसौटी मात्रर सममल जाति।

सोने की कसौटी सराफन के बल में ॥

कड़े किलनाम बेसी बस्त तेसी कीमति सी।

सामु की कसौटी है दुष्ट के बीच में ॥

२. द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	”	११७-१४१
	२० काल सं० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ६ ।		
३. गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४. पार्वनाथस्तोत्र	×	” ले० काल १८८१	१४६-१४७
५. कृपणपञ्चीसी	विनोदीलाल	” ” ” १८८२	१४७-१५४
६. तेरापन्थ वीसपन्थ भेद—	×	”	१५५-१६३

५८८२ गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । आ० ७३×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८८६

कार्तिक वृदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है ।

५८८५ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । आ० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एव कथा दी हुई हैं ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२६ । आ० ६३×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—रुग्निविनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

५८६० गुटका सं० ६० । पत्र सं० ११३ । मा ४×३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । से कास × । पूर्ण । वे सं० ३२२ ।

विशेष—पूज स्वीन एव बनारसी विनास के कुछ पद एव पाठ हैं ।

५८६१ गुटका सं० ६१ । पत्र सं २२३ । मा ४×३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । से कास × । पूर्ण । वे सं ३२३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२ गुटका सं० ६२ । पत्र सं २८ । मा ३×४ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । से कास × । पूर्ण । वे सं ३२४ ।

विशेष—सामान्य स्वीन एव पूजा पाठों का संग्रह है —

५८६३ गुटका सं० ६३ । पत्र सं २६३ । मा ३×३ इ । भाषा—हिन्दी से कास × । अपूर्ण । वे सं ३२५ ।

विशेष—मिन्न पाठों का संग्रह है ।

१ हनुमतरास	प्रहारममल्ल	हिन्दी	२४-२७
		से कास सं १५६	फागुण बुधी ७ ।
२ घासिमहसगम्याय	×	हिन्दी	२५-२६
३ बसानबाहाणी की बार्ता	×	"	११-१४७
		से कास १५२६	माह बुधी ३

विशेष—कोठवासी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्ये ।

४ संनसार	×	"	पत्र सं ४५ १४५-१२२
५ बन्धुंवर की बार्ता	×	"	१२२-१९४
६ बन्धरनिशांखी	विनाहृत	"	१९५-१९६
७ मुदयबधसामिया री बार्ता	×	"	वपूर्ण १७ -२६३

५८६४ गुटका सं० ६४ । पत्र सं २७ । मा ३×४ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । से कास × । वे सं ३२६ ।

विशेष—नवमङ्गल बिनोरीसाम इत एव पर स्तुति एव पूजा संग्रह है ।

५८६५ गुटका स० ६१ । पत्र स० ६३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० स० ३५७ ।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एव पद्मावती स्तोत्र है ।

५८६६ गुटका स० ६६ । पत्र स० ४५ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा ।

ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३५८ ।

५८६७. गुटका स० ६७ । पत्र स० ४६ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० स० ३५९ ।

विशेष—भक्ताभरस्तोत्र, पंचमंगल, देवपूजा आदि का सग्रह है ।

५८६८ गुटका स० ६८ । पत्र स० ६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र सग्रह

ले० काल × । वे० स० ३६० ।

५८६९ गुटका स० ६९ । पत्र स० १५१ । आ० ७ ४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० स० ३६१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है ।

१, सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी	१-१४
२ महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	"	१४-१६
३ धर्मरक्षा भाषा	त्रिशालकीर्ति	"	ले० काल १८६४ ३०-१५१

विशेष—नागपुर मे प० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी ।

५९०० गुटका स० ७० । पत्र स० ५६ । आ० ५३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०२

पूर्णा । वे० स० ३६२ ।

१ महादण्डक	×	हिन्दी	३-५३
------------	---	--------	------

ले० काल स० १८०२ पौष बुदी १३ ।

विशेष -उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी । शिवपुरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२ बोल	×	"	५४-५६
-------	---	---	-------

५९०१ गुटका स० ७१ । पत्र स० १२३ । आ० ६३×४ इ० भाषा संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्रसग्रह

ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३६३ ।

५६०० गुटका सं० ७२ । पत्र सं १५७ । मा ४×३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले काल X ।
 पूर्ण । के सं ३९४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५६०१ गुटका सं० ७३ । पत्र सं २९ । मा ४×३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले काल X ।
 पूर्ण । के सं ३९५ ।

१ पूजा पाठ संग्रह	X	संस्कृत हिन्दी	१-४४
२ धाम्युनेतिक नुसखे	X	हिन्दी	४२-६९

५६०४ गुटका सं० ७४ । पत्र सं ५ । मा २२×२२ इ । भाषा—हिन्दी । ले काल X । अपूर्ण
 के सं ३९६ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पन्नों में संवत् १ ३३ से भारत
 के राजाओं का परिचय दिया हुआ है ।

५६०५ गुटका सं० ७५ । पत्र सं ९ । मा २२×२२ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले काल X ।
 अपूर्ण । के सं ३९७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०६ गुटका सं० ७६ । पत्र सं १८-१३७ । मा ७×३ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले
 काल X । अपूर्ण । के सं ३९८ ।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर धाम्युनेतिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५६०७ गुटका सं० ७७ । पत्र सं १७ । मा १२×४ इ । भाषा—हिन्दी । ले काल X । अपूर्ण
 के सं ३९९ ।

१ ज्ञानविज्ञानमणि	मनोहरदास	हिन्दी	१२९ पत्र हैं	१-१६
२ बख्त मिचकनती की भावना	सुखरदास	"		१६-२३
३ सत्येदगिरिपूजा	X	"	अपूर्ण	२२-२७

५६ ८ गुटका सं० ७८ । पत्र सं १२ । मा ९×३ इ । भाषा—संस्कृत । ले काल X । अपूर्ण
 के सं ४०१ ।

विशेष—नाममाता तथा लम्बिदार आदि में से पाठ है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०

१८१ । पूर्ण । वे० सं० ३७१ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है ।

५६१०. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ५४-१३६ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७६
२. मूलसध की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०-८३
३. गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	"		८४-९०
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		९०-१०५

एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं ।

५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६. पार्श्वनावस्तवचन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०८
८. सामायिक पाठ	अभित्तिगति	"		११०-११३
९. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११६
१०. आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७३०
भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है ।

५६१२. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है । अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वी शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है ।

५६१३. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । जीर्ण । पूर्ण । वे० सं० ३७५ ।

१	हृन्मणुरास	×	हिन्दी	पद्य सं ७९ है	१-१९
महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।					
२	कस्तीनागरमल कथा	×	"		१९-२१
३	हृन्मणुप्रेताष्टक	×	"		२१-२८

५६१४ गुटका सं० ८४। पद्य सं १२२-२४१। मा १३×२३। भाषा-संस्कृत। ले कास ×।

अपूर्ण। पद्य सं ३७१।

विशेष—बीचकसार एवं बीचकलम ग्रन्थों का संग्रह है।

५६१५. गुटका सं० ८५। पद्य सं ३०२। मा ८×२३। भाषा-हिन्दी। ले कास ×। अपूर्ण।

पद्य सं ३७७।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर लिया है। मिला पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१	चिन्तामणिप्रथमास	छन्दुरघी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२-२९
२	वेसि	वीहल	"		२२-२३
३	टङ्कस्यागति	बुधा	"		२५-२८
४	वेतनगीत	मुनिसिंहलम्बि	"		२८-३१
५	चिन्तामणू	ब्रह्मराममल्ल	"		३-३१
६	मेमीस्वरबीमासा	सिंहलम्बि	"		३२-३३
७	पत्नीपीठ	वीहल	"		४१-४२
८	मेमीस्वर के १ मय	ब्रह्मपर्मलम्बि	"		४३-४७
९	बीठ	कवि पसह	"		४७-४८
१०	सीमेश्वरस्तवन	छन्दुरघी	"		४९-५१
११	आदिनाथस्तवन	कवि पसह	"		४९-५१
१२	स्तोत्र	म निगलम्ब देव	"		५१-५१
१३	पुण्डर बीरई	ब मासदेव	"		५२-८७
ले कास सं ११ ७ अक्षर गुणो २।					
१४	मैपडुमार पीठ	पुनो	"		१२-१५
१५	बगदुत के ११ स्तवन	ब्रह्मराममल्ल	"		२१-२९

गुटका-संग्रह

१६. बलिभद्र गीत	अभयचन्द्र	”	३०-३६
१७. भविष्यदत्त कथा	प्रहारायमल्ल	”	४०-६५
१८. निर्दोषसप्तमीप्रत कथा	”	”	ले० काल १६४३ आसोज १३ ।
१९. हनुमन्तरास	”	”	अपूर्ण

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भाद्रवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७ गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त रुचन्द, बनारसोदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दी पाठ हैं ।

५६१८ गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६१९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ पञ्चमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२ वारह अनुप्रेक्षा	×	प्राकृत	४७ गायत्री हैं । २१-२५
३. भावनावतुविशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी	

५६२० गुटका सं० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

१	कृष्णराज	×	हिन्दी	पद्य सं ७९ है	१-१९
महापुराण के इसमें स्कन्ध में से लिया गया है ।					
२	बासीनाथरामन कथा	×	"		१९-२१
३	कृष्णप्रैमाटक	×	"		२१-२८

२६१४ गुटका सं० ८४ । पद्य सं १२२-२४१ । भा ११×२ ६० । भाषा-संस्कृत । से काल × ।

संपूर्ण । सं ३०१ ।

विशेष—वेपथुसार एवं वेपथुसैन्य प्रयोगों का समूह है ।

२६१५ गुटका सं० ८५ । पद्य सं० ३०२ । भा ८×२ ६ । भाषा-हिन्दी । से काल × । संपूर्ण ।

सं ३०७ ।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है । निम्न पाठ मुख्यतः उत्सवनीय है ।

१	विश्वामण्डिप्रयत्न	ठण्डुरसी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२ - २२
२	बलि	धीहल	"		२२-२३
३	दंडकण्ठापीठ	बुधा	"		२३-२८
४	पैतृमपीठ	मुनिशिहलम्भि	"		२८-३१
५	जिनताड	बहुपारम्यसल	"		३०-३१
६	श्रीमदीश्वरपीमाता	शिहलम्भि	"		३२-३३
७	पवीपीठ	धीहल	"		४१-४२
८	श्रीमदीश्वर के १० मंत्र	बहुपारम्यसल	"		४३-४७
९	पीठ	बदि पम्ह	"		४७-४८
१०	श्रीमदीश्वरस्तवन	ठण्डुरसी	"		४९-५०
११	शारिणापस्तवन	बदि पम्ह	"		४९-५०
१२	श्रीमदीश्वर	म निमबन्ध देव	"		५०-५१
१३	गुरुदेव शोभा	ब मानदेव	"		५२-५७
से काल सं ११ ७ कस्युण्ड बुरी ६ ।					
१४	श्रीकृष्णार मंत्र	बुधा	"		१२-१३
१५	श्रीकृष्ण के ११ मंत्र	बहुपारम्यसल	"		२६-२८

गुटका-संग्रह

१६. कलिभद्र गीत	अभयचन्द्र	”	३०-३६
१७ भविष्यदत्त कथा	प्रहारायमल्ल	”	४०-८५
१८ निर्दोषसप्तमीव्रत कथा	”	”	ले० काल १६४३ आसोज १३ ।
१९ हनुमन्तरास	”	”	अपूर्णा

५६१६. गुटका स० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भाद्रपद सुदा १ । पूर्णा । वे० सं० ३७८ ।

५६१७ गुटका स० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३७९ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो के अतिरिक्त रूपचन्द्र, बनारसदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दो पाठ हैं ।

५६१८ गुटका स० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदो का संग्रह है ।

५६१९. गुटका स० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२ वारह अनुप्रेक्षा	×	प्राकृत	४७ गायत्री हैं । २१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. अन्य स्फुट पाठ एव पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी	

५६२० गुटका स० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदो का संग्रह है ।

५६२१ गुटका स० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एव पाठो का संग्रह है ।

४६२० गुटका सं० ६२ । पत्र सं २६ । मा० ६×२ इ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । से

नाम × । पूर्ण । के सं ३८४ ।

विषय—सम्मन्त्रिणिरि पूजा है ।

४६२३ गुटका सं० ६३ । पत्र सं २२१ । मा ६×२ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । से नाम × ।

पूर्ण । के सं ३८५ ।

विषय—सुपन विष्णु पाठों का संग्रह है ।

१	पानचरित	भेषा मगवतीदास	हिन्दी	१-१
२	त्रिसहस्रनाम	भागापर	संस्कृत	११-१५
३	सप्तशतार्थसूत्र	×	"	११-१४
४	चौरागी जाति की व्यवसाय	×	हिन्दी	१६-४
५.	सौमन्वहारपुस्तिका	ब्रह्ममालासागर	हिन्दी	७१-७४
६	सप्तशतिका	"	"	७४-७६
७	सौमन्वहारपुस्तिका	भाऊबाबि	"	७६-८६
८	साहाय्य	हरदास	"	८४-८६
९.	नेत्रविद्या	ब्रह्मसूत्राण	"	८७-८८
१०	सहायिका कथा	ब्रह्ममालासागर	"	१ - १ ४
११	सप्तशत	×	"	१ २-१२३

४६२४ गुटका सं० ६४ । पत्र सं ७-७६ । मा २×१२ इ । भाषा-हिन्दी । से नाम × ।

पूर्ण । के सं ३८६ ।

विषय—सप्तशत के पत्रों का संग्रह है ।

४६२५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं ३-२६ । मा २×२, इ । भाषा हिन्दी से नाम × । पूर्ण ।

के सं ३८७ ।

१	सप्तशतिका	ब्रह्मसूत्राण	हिन्दी	पूर्ण	३-७०
			से नाम सं	१०६०	कारिका सुती १२
२	सप्तशतिका	"	"		७१-८६

४६२६ गुटका सं० ६६ । पत्र सं ८६ । मा २×२ इ । भाषा-संस्कृत । विषय-सप्तशत ।

के सं ३८८ । पूर्ण । के सं ३८८ ।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्रयत्रसहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-४३
२. पद्मावतीकवच	×	"	४३-५२
३ पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	५२-६३
४ पद्मावतीस्तोत्र बीजमत्र एव साधन विधि	×	"	६३-८६
५ पद्मावतीपटल	×	"	८६-८७
६. पद्मावतीदंडक	×	"	८७-८८

५६२७ गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० ३८६ ।

१. स्फुटवार्ता	×	हिन्दी	अपूर्णा	६-२२
२. हरिचन्द्रशतक	×	"		२३-६६
३ श्रीघूचरित	×	"		६७-८३
४ मल्हारचरित	×	"	अपूर्णा	८३-११३

५६२८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्णा । वे० सं० ३९० ।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६२९ गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ६-१२६ । आ० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३९१ ।

५६३० गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० ३९२ ।

१. आदित्यवारकथा	×	हिन्दी		१४-३४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"		३५
३ सकट चौपई कथा	×	"		३८-४३
४. कक्का वत्तीसी	×	"		४५-४७
५. निरजन शतक	×	"		५१-८४

विशेष—लिपि विकृत है पठने में नहीं आती ।

५६३१ गुटका सं० १०१। पत्र सं २३। मा १ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इ०। मापा-हिन्दी। से काग ५।

अपूर्ण। सं १६३।

विषय—कवि सुन्दर कृत नायिका सलण दिया हुमा है। ४२ से १५ पद्य तक है।

५६३२. गुटका सं० १०२। पत्र सं ७८-१ १। मा ८×७ इ। मापा-हिन्दी। विषय-संग्रह।

से काग ५। अपूर्ण। सं १६४।

१ चतुर्विंशती कथा

बामुत्तम

हिन्दी २ काग १७६३ अ बैठ सुवी १

से काग सं० १७६३ बैठ सुवी १४। अपूर्ण।

विषय—२१ पद्य से २३ पद्य तक है।

अध्य भाग—

माता एँसी हूँ मति करी संजम बिना बीब न निस्तरे।

कान्ही माता कको बाप घातमराम मकेसी माव ॥ १७६ ॥

बोधा—

माप देखि पर देखिने कुल सुख बोट पैर।

मायम ऐक बिचारिये, भरमन कहु न छेव ॥ १७७ ॥

संयत्ताचार कंवर को कीयो विख्या कैण कंवर जब मयो।

सुबानी माय कौख्या हाप बीक्य बीह मुनीसुर नाव ॥ १७८ ॥

अन्तिसपाठ—

बुधि साह कथा कही राजबन्दी मुनताम।

करम कटक में बैहरी बेंठो पचे सु जाण ॥ २२८ ॥

सतरासे पचावनी प्रथम बैठ बुधि जानि।

सोमवार बसमी माली पूरण कथा कथानि ॥ २२९ ॥

कठेसबस्त बीहरा पोव सांवापसी में नास।

बाहु कही मति मो हसी हूं सबन की बस्त ॥ २३ ॥

महाराजा बीसनविहारी माया साहा मात की नार।

को या कथा पई सुली सो पुरिय में सार ॥ २३१ ॥

बीरवा की कथा अपूर्ण। मिठी प्रथम बैठ सुवी १४ संवत् १७६३

२ बीरवाकीप्रथमपाल

×

हिन्दी

६३-६४

३ तारावर्षोत्सवी कथा

×

।

६४-६५

४. नवरत्न कवित्त	वनारसीदास	”	६७-६६
५. ज्ञानरञ्चीसी	”	”	६८-१००
६. पद	×	”	अपूर्णा १००-१०१

५६३३. गुटका स० १०३ । पत्र स० १०-५५ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका स० १०४ । पत्र स० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० सं० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५ गुटका सं० १ । पत्र स० १४० । आ० ७३×५३ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. देहली के बादशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी	१-१६
२ कवित्तसंग्रह	×	ले० काल स० १८५२ जेठ बुदी ५ ।	
३ शनिश्चर की कथा	×	”	२०-४४
४ कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	” गद्य	४५-६७
५ द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	”	६८-६४

विशेष—रणायम्भोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६ गुटका स० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४३ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका स० ३ । पत्र स० ३-१५३ । आ० ६×५३ इ० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४
(जिगवर ध्याइयडावे, मनि वित्या फलु पाया)			
२ गीत-(जिगवर हो स्वामी चरण मनाय, सरसति स्वामिणि वीनऊ हो)			

१ पुष्पाञ्जलिचयमाल	×	प्रपन्न स	७-२४
२ लघुव्याख्यानपाठ	×	हिन्दी	२४-२५
३ उत्तरसार	देवसेन	प्राकृत	४१-५
४ भारवनासार	"	"	५३-१
५ द्वावसानुप्रेक्षा	सम्मीसेन	"	१ -१११
६ पार्ष्णिनामस्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	१११-११२
७ इन्द्रसंग्रह	मा देविकान्त	प्राकृत	१४१-१४२

११३८. गुटका स० ४। पत्र स० १५६। मा १५५६। भाषा-हिन्दी। नि काल सं १८४२

भाषा सं १५।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१ पार्ष्णिपुत्रण	सूकरबाध	हिन्दी	१-१२
२ एकसोपुनहत्तरबीज वर्णम	×	" १८४२	१४
३ हनुमन्त बीपार्दि	ब राममल	" १८२२ भाषा सं १५	"

११३९ गुटका स० ५। पत्र सं १४। मा ७२५४६। भाषा-संस्कृत।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

११४० गुटका सं० ६। पत्र सं २१३। मा १५५६। भाषा-संस्कृत। नि काल ×।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

११४१ गुटका स० ७। पत्र सं २२। मा १५७२६। भाषा हिन्दी। नि काल ×। पूर्ण।

विशेष—य देवीचन्द्रवृत्त हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें प्रथम किया हुआ है। भाषा पद्य और पद्य दोनों में है। देवीचन्द्र ने अपना कोई परिचय नहीं लिखा है। जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी। भाषा साधारण है —

यब तेरी सेवा में रहि हों। जैसे कहि समयत कुवा भहि ते लीकरो।

बोहा—छूटी काल के काल में यब कही काठ न पाय।

दो मर घरघट भासरी नयो जगम ठग पाय ॥

वार्त्ता—छाँप की बाह में से छूटी यब कही नयो जगम पत्यो। कूड़े में से बाहरि भाव यो नही नही छाँप कितनेक बेर तो काट बेसी। न पायी यब घासुर मयो। तब यो नही में कहा कीयो। जबकि कुवा के मेंडक सब सायो वे यब लग मगावत वो न लायो तब लग रछ नहु जायो नहीं।

५६४२. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १६६-४३० । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा ।

विशेष—बुलाकीदास कृत पाडवपुराण भाषा है ।

५६४३. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १०१ । आ० ७ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्णा ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६४४. गुटका सं० १० । पत्र सं० ११८ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह ।

ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५ । पूर्णा ।

१ सुन्दरविलास

सुन्दरदास

हिन्दी

१ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खड्गलवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२ वारहखडी

दत्तलाल

”

विशेष—६ पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४२ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल सं०

१९०८ चैत बुदी ६ । पूर्णा ।

विशेष—वृं दसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं । दसकत चीमनलाल कालख हाला का ।

५६४६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २० । आ० ८×६ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६०

आसोज बुदी ९ । पूर्णा ।

विशेष—पचमेरु तथा रत्नत्रय एव पार्श्वनाथस्तुति है ।

५६४७. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १५५ । आ० ८×६ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१७६० ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्णा ।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पंचपरमेष्ठी गुरुमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं । पीछे काटे गये मालूम होते हैं ।

श्री भगदार [शास्त्र भगदार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाख्या जयपुर]

३६४८ गुटका स० १। पत्र सं २। मा ३३×४३। भाषा-हिन्दी। विषय संग्रह। ले काल

सं १९२८। पूर्ण। पृ सं २७।

विशेष—मालोचनापाठ सामायिकपाठ सहस्रनामा (दीनचराम) कर्मप्रवृत्तिविधान (बनारसीबास)

प्रकृतिम चैत्मासय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है।

३६४९ गुटका स० २। पत्र सं २९। मा ३२×४३। भाषा-हिन्दी पद्य। ले काल ×।

पूरा। पृ सं २९।

विशेष—बीररस के कवितों का संग्रह है।

३६५० गुटका स० ३। पत्र सं ९। मा २×९३। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल ×।

पूर्ण। बीरसं बीरसं। पृ सं ९।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

३६५१ गुटका स० ४। पत्र सं ११। मा २२×३३। भाषा हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण।

पृ सं ११।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१	वितसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीबास	हिन्दी	१-११
२	कहुरी नेमीश्वरकी	विश्वरूपस्य	"	१९-२१
३	पद-घातम कव सुहस्रनामा	जानसप्यम	"	२२
४	विमती	×	"	२३-२४

विशेष—इपचन्य ने कामरे में स्वपठनार्थ लिखी थी।

५	मुक्कचड़ी	हृयकीति	"	२४-२५
६	सिन्धुप्रकरण	बनारसीबास	"	२५-४७
७	घण्टासमदीहा	इपचन्य	"	४७-५३
८	साधुचरमा	बनारसीबास	"	५३-५८
९	मोक्षपेठी	"	"	५८-६१
१०	कर्मप्रवृत्तिविधान	"	"	७६-८१

११. विनती एव पदसंग्रह

×

हिन्दी

६१-१०१

५६५२. गुटका स० ५ । पत्र स० ६-२६ । आ० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० स० ३२ ।

विशेष—नेमिराजुलपच्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का भगडा आदि पाठो का

संग्रह है ।

५६५३. गुटका स० ६ । पत्र स० १६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० सं० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठ है—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन ।

५६५४. गुटका स० ७ । पत्र स० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६४३

चैशाख सुदी १ । अपूर्णा । वे० स० ४२ ।

विशेष—विषापहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणकाण्ड भाषा है ।

५६५५. गुटका स० ८ । पत्र स० १८४ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ४३ ।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२. छहडाला (अक्षरवावनी)	"	"	३५-३६
३. धर्मपच्चीसी	"	"	३६-४२
४. तत्त्वसारभाषा	"	"	४२-४६
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४६-१७५
६. जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१-१२

ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १०

५६५६ गुटका स० ९ । पत्र स० १३ । आ० ६ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल स०

१६१८ । पूर्णा । वे० स० ४४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६५७ गुटका स० १० । पत्र स० १०५ । आ० ८×७ इ० । ले० काल × ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१६
२. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४

३ बाह्यमहरी	×	संस्कृत	२४-२७
४ समाभिरस	×	पुरानी हिन्दी	२७-२९

विशेष—पं० डान्दुराम ने अपने पठने के लिए लिखा था।

५ हावसाभुमेषा	×	पुरानी हिन्दी	२९-३१
६ योमोरासी	योगीन्द्रदेव	मध्यम श	३२-३३
७ भाषकाचार बोहा	रामसिंह	"	३३-३३
८ पट्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	महात्त	८४-१ ४
९ पटसेस्या बरान	×	संस्कृत	१ ४-१ ५

५६७८ गुटका सं० ११। पत्र सं ३५। (कुन्दे हुये पास्वानार) मा ७३×३३। भाषा—हिन्दी

से काज ×। पूरा। के स ८४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६७९ गुटका सं० १२। पत्र सं ३। मा ६×३३। भाषा हिन्दी। से काज ×। अपूर्ण।

के सं १।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६८० गुटका सं० १३। पत्र सं ४। मा ६×६३। भाषा—हिन्दी। से काज ×। अपूर्ण।

के स ११।

१ बन्धकमा	सदमण	हिन्दी	१-२१
-----------	------	--------	------

विशेष—६७ पद्य से २६२ पद्य तक ग्रामाभेरी के राजा बन्ध की कथा है।

२ पुष्कर कबिता	अपररत्न	"	२२-४
----------------	---------	---	------

विशेष—बन्धन मसिमागिरि कथा है।

५६८१ गुटका सं० १४। पत्र सं ७६६। मा ७×६३। भाषा—संस्कृत हिन्दी। से काज सं

१६३३। पूर्ण। के स १०२।

१ शोराली जयति मैत्र	×	हिन्दी	१-१६
---------------------	---	--------	------

२ मैत्रिनाथ काण्ड	पुष्परत्न	"	२-२५
-------------------	-----------	---	------

विशेष—पश्चिम पाठ :—

समुद्र विजय तन पुण्ड्र निरुद्ध मैत्र करद जनु मुर नर बुध ।

पुष्परत्न मुनिवर भण्डर भीसब मुद्रयम मैत्रि विण्ड ॥ ६४ ॥

कुल ६४ पद्य हैं।

॥ इति श्री मैत्रिनाथ काण्ड समाप्त ॥

३. प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	२६-५०
४. सुदर्शनरास	"	"	५१-५०
५. श्रीपालरास	"	"	११६
			ले० काल स० १६५३ जेठ बुदी २
६. शीलरास	"	"	१३३
७. भेषकुमारगीत	पूनी	"	१३५
८. पद- चेतन हो परम निधान	जिनदास	"	२३६
९. " चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित न विचारि ।	रूपचन्द	"	२३८
१०. " चेतन तारक हो चतुर सयाने वे निर्मल दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने ।	"	"	"
११. " वादि अनादि गवायो जीव विधिवस बहु दुख पायो चेतन ।	"	"	"
१२. " - दास	"	"	२४०
१३. " चेतन तेरो दानो वानो चेतन तेरी जाति । रूपचन्द	"	"	"
१. " जीव मिथ्यात उदै चिरु भ्रम आयो । वा रत्नत्रय परम धरम न भायो ॥	"	"	"
५. " सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे दरिगह	"	"	"
६. " हा हा भूता मेरा पद मना जिनवर धरम न वेये ।	"	"	"
१७. " जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा ।	रूपचन्द	"	२४७
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत	२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५ २५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	"	ले० काल १७३५ २५७
२१. जकडी	दयालदास	"	२३२

२२	पद्म-वासु बोध रं मन्त्र बुद्ध बोधराणी न भावे ।	हर्षकीर्ति	"	२३२
२३	रविप्रत कथा	मानुषीति	"	२३६
(माठ साठ सोमह के मक बर्ण रवे सु कथा विमल)				
२४	पद्म जो बनीया का थोरा माहीं भी जिख कान म ध्यावे रं ।	सिद्धसुन्दर	"	२४१
२५	धौमबत्तीसी	मन्मथ	"	२४८
२६	टंडमणु गोत	ब्रूचराज	"	२६२
२७	भ्रमर मीठ	मन्मथ	"	२६६

(बाकी पूजा प्रति भनी-सुन भ्रमरा रे)

५६६२ गुटका स० १५। पत्र सं २०१। मा १५४२ इ । से कुल स १७२७। पूर्ण। के

सं १३।

१	माटन रामयमार	बनारसीदास	हिन्दी	१६३
				२ काल स १६६३। से काल सं १७६३
२	मैथुमार गोत	पुनी	"	१६३-१६६
३	तेरनाठिया	बनारसीदास	"	१८८
४	बिदेवबरी	जिनदास	"	२६
५	गुणागरमत्सा	मनराज	"	
६	मुनादररा की जयमाथ	जिनदास	"	
७	बावनी	बनारसीदास	"	२४३
८	मगर खारना का खण्ड	×	"	२५४
९	पञ्चमणि का कवि	हर्षकीर्ति	"	२६६

५६६३ गुटका स० १६। पत्र सं २१२। मा १५६६ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । से काल × ।

के सं १४।

दिल्ली-सामान्य वा । का सं १६६६ इ ।

५६६४ गुटका सं १७। पत्र सं २१२। मा १५६६ इ । भाषा-हिन्दी । से काल × । पूर्ण।

के सं १५।

१. भविष्यदत्त चौपई	ब० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२ चौबोस तीर्थद्वार परिचय	×	”	१४२

५६६५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल

× । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुरुस्थान चर्चा है ।

५६६६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ६८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ ।

पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१ लगनचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सौगानी	हिन्दी	१-४३
---------------------	------------------	--------	------

प्रारम्भ—आदि मन्त्र कू सुमरिह, जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बरगाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा करू बरगाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आवावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचंद पंडित तरौ, नाती चेला नेह ।

फलेचंद के सिष तिनै, मौकू हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगाणौ गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कवरपाल को नंद ते, स्योजीराम बखारिण ॥ ६ ॥

ठारासै के साल परि, वरप सात चालीस ।

माघ सुकल की पंचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

अंतम—

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही छु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

वृन्दसत्सई

वृन्दकवि

हिन्दी ५० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य है ।

२२	पद- कामु बाह रं भव बुद्ध कोसली म प्रादे ।	हर्षकीर्ति	७		२१२
२३	रविप्रथ कथा	मानुकीर्ति	७	र काम १६८७	३१६

(बाठ साठ सोसह के अक वर्ण रने सु कथा विमल)

२४	पद जो बनीया का पारा माही भी जिए कोन न प्यावी रं ।	सिबसुन्दर	७		३४१
२५	छीमबत्तीसी	मकुमल	७		३४८
२६	टंटाणु गोत	कूबराम	७		३६२
२७	अमर गीत	मनसिब	७	११ पद हूँ	३६५

(बाकी फुली प्रति मली-मुल अमरा रे)

३६६२ गुटका सं० १५। पत्र सं २७५। पा ३५५३ ह । से कुस स १७२७। पूर्ण। ने

सं १३।

१	नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी		१६३
				र काम स १६२१। से काम सं १७६१	
२	मेषकुमार गोत	पुनी	७		१६३-१६८
३	लेखनाटिया	बनारसीदास	७		१८८
४	बिदेवन्दबडी	बिनदास	७		२६
५	गुणागरम सा	मनराम	७		
६	मुना ररा की जयमान	बिनदास	७		
७	बापनी	बनारसीदास	७		२४१
८	ममर स्थानता का स्वरण	×	७		२५४
९	पञ्चमर्गि का शैवि	हर्षकीर्ति	७		२६८

३६६२ गुटका सं० १६। पत्र सं २१२। पा ८५६ ह । भाषा-संस्कृत हिन्दी। त काम ×।

१ सं १८।

विलेप-साधन्य पाठ का संसद है।

३६६७ गुटका सं० १७। पत्र सं १४२। पा ६५३ ह । भाषा-हिन्दी। त काम ×। पूर्ण।

१ सं १८।

१. भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२ चौबोस तीर्थङ्कर परिचय	×	”	१४२

५६६५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल

× । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुरास्थान चर्चा है ।

५६६६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ६८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ ।

पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१. लगनचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सोगानी	हिन्दी	१-४३
----------------------	------------------	--------	------

प्रारम्भ—आदि मत्र कू सुमरिइ, जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बरणाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दर्ई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा करू बरणाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आबावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पडित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचन्द पडित तणे, नाती चेला नेह ।

फतेचद के सिष तिनै, मौकू हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगानी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कवरपाल को नद ते, स्थोजीराम वखारिण ॥ ६ ॥

ठारासै के साल परि, वरप सात चालीस ।

माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही जु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

अन्तिस—

२. वृन्दसतसई

वृन्दकवि

हिन्दी ५० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

१ राजनीति कवित्त द्वीवास " × १२२ पद्य हैं ।

५६६७ गुटका सं० १६ । पत्र स ३ । मा ८×६६० । भाषा-हिन्दी । विषय पद्य । से० काल × ।

पूर्वा । से सं ११२ ।

विषय—विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है । गुटका समुद्र सिखा गया है ।

५६६८ गुटका सं० २० । पत्र स २ १ । मा ६×२६ । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ।

से काल सं १७८३ । पूर्वा । से सं ११४ ।

विषय—प्राणिनाय की बीनठी श्रीपातस्तुति, मुनिवरों की कपमाल बड़ा कनका भक्तामर स्तोत्र संग्रह है ।

५६६९ गुटका सं० २१ । पत्र स २७६ । मा ७×४२२ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । से

काल × । पूर्वा से सं ११५ । अक्षरस्यमल्ल इत्य मन्त्रिभ्यश्चरत्त मेमिरास तथा हनुमत् चौर्य है ।

५६७० गुटका सं० २२ । पत्र स २६३३ । मा ६×२६ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । से

काल × । पूर्वा । से सं ११६ ।

५६७१ गुटका सं० २३ । पत्र स ८१ । मा ६×२६ । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा पाठ ।

से काल × । पूर्वा । से सं ११७ ।

विषय—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५६७२ गुटका सं० २४ । पत्र स २ १ । मा ६×२६ । भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय-पूजा

पाठ । से काल × । पूर्वा । से सं ११८ ।

विषय—विनयसूक्तनाम (आश्विन) पद्यमलि पाठ एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५६७३ गुटका सं० २५ । पत्र स ६-८ । मा ६×२६ । भाषा-संस्कृत संस्कृत । विषय-पूजा

पाठ । से काल × । पूर्वा । से सं ११९ ।

५६७४ गुटका सं० २६ । पत्र स ८३ । मा ६×२६ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजापाठ । से

काल × । पूर्वा । से सं १२० ।

५६७५ गुटका सं० २७ । पत्र स १ १ । मा ६×६६ । भाषा हिन्दी । से काल × । पूर्वा ।

से सं १२२ ।

विषय—अनारसीविभास के कुछ पाठ कल्पत्र की कठड़ी इत्य संग्रह एवं पूजायें हैं ।

५६७६ गुटका सं० २८ । पत्र स १३३ । मा ६×७६ । भाषा-हिन्दी । से काल स १८ २ ।

पूर्वा । से सं १२३ ।

विशेष—ममयसार नाटक, अक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं ।

७६७७ गुटका सं० २६ । पत्र सं० ११६ । आ० १×६ इ० । भाषा-हिन्दी सशुद्ध । विषय-संग्रह
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है ।

७६७८ गुटका सं० ३० । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५ ।

विशेष—महन्ननाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं ।

७६७९ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४० । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—रविग्रत कथा है ।

७६८० गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ४४ । आ० ४३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७६ ।

विशेष—बीच २ में पत्र खाली है १. बुलाग्नीदाय यत्री की वरान जो सं० १६८४ मित्ती मंगलिर गुदी ३
की आगरे में अहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है । इसके अनतिरिक्त पद, गणेशपद, लहरियाजी की पूजा आदि हैं ।

७६८१ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३२ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १९३ ।

१. राजुलपञ्चमी	विनोदीनान जालचद	हिन्दी
२. नेमिनाथ का वारहमासा	”	”
३. राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ—

तुम नीकम भवन गुदादे, जब कमरी भई वरागी ।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहै दिन रात ।

अन्तिम—

आपा दानु ही मुकती मिलाना, तहा फेर न होय आनागना ।

राजुन अटन मुनई नीहाइ, तिहा राणी नहीं छै कोई,

सोथे राजुन मंगल गावत, मन बँधित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुन मंगल सपूर्ण ।

३६८० गुटका सं० ३४। पत्र स १९। भा० १५४ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से काल X।

पूर्णा। के सं २३३।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं टीकम को अनुपवी कथा है।

३६८३ गुटका सं० ३५। पत्र स ४। भा० १५४ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से काल X।

पूर्णा। के सं २३४।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ है।

३६८४ गुटका सं० ३६। पत्र सं २४। भा० १५४ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से काल स

१७७६ फागुण बुध ६। पूषा। के सं २३५।

विशेष—भक्तान्न स्तोत्र एवं कस्यान्न मन्त्रि संस्कृत और भाषा है।

३६८५ गुटका सं ३७। पत्र सं० २१३। भा० १५७ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से काल X।

पूर्णा।

विशेष—पूजा स्तोत्र और घण्टक तथा पदों का संग्रह है।

३६८६ गुटका सं० ३८। पत्र स १९। भा० ७५४ इ। भाषा-हिन्दी। विशेष—पूजा स्तोत्र।

से काल X। पूर्णा। के सं २४२।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

३६८७ गुटका सं० ३९। पत्र सं ५। भा० ७५४ इ। से काल X। पूर्णा। के सं २४३।

१ धारणप्रतिग्रहण	X	भाइठ	१-१४
२ जयतिहुण्णस्तोत्र	प्रमथवेमसूरि	"	१५-१६
३ मन्त्रिसाम्प्रि जनस्तोत्र	X	"	१७-२५
४ धीर्बतवस्तोत्र	X	-	२६-३२

अन्य स्तोत्र एवं गीतमराठा भाषि पाठ है।

३६८८ गुटका सं० ४०। पत्र स २१। भा० १५४ इ। भाषा-हिन्दी। से काल X। पूर्णा।

के सं २४४

विशेष—सामान्य पाठ है।

३६८९ गुटका सं० ४१। पत्र स १। भा० १५४ इ। भाषा-हिन्दी। से काल X। पूर्णा।

के सं २४५।

विशेष—हिन्दी पाठ संग्रह है।

गुटका-संग्रह]

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र न० २०। आ० ५×८ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, बल्याणमन्त्रस्तोत्र एव गिनचकीती है।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×४ २०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×४ २०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय—तुल्यपित। ले०

काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं०

२५१।

१ भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१-३४
२ इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४-५२
३. सन्वोधपचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३-७१
४. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	७२-९२
५. चरचा	×	"	९२-१०३
६ योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४-१११
७ द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
८ अनित्यपचासिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४-१४७
९ जकडी	रूपचन्द	"	१४८-१५४
१० "	दरिगह	"	१५५-५६
११ "	रूपचन्द	"	१५७-१६३
१२. पद	"	"	१६४-१६९
१३ आत्मसबोध जयमाल आदि	×	"	१७०-१७७

५६६५ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० २५४।

४६८० गुटका सं० ३४। पत्र स १९। भा ६५४ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से नाम X। पूर्ण। वै सं २३३।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं टीकाम की बतुदनी ब्या है।

४६८३ गुटका सं० ३५। पत्र स ४। भा ६५४ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से नाम X। पूजा। वै सं २३४।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ है।

४६८४ गुटका सं० ३६। पत्र सं २४। भा ६५४ इ। भाषा हिन्दी संस्कृत। से नाम स १७७६ पाण्डुपुत्री इ। पूजा। वै स २३५।

विशेष—मत्स्यपुर स्तोत्र एवं बस्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है।

४६८५ गुटका सं ३७। पत्र सं २१३। भा ६५७ इ। भाषा हिन्दी संस्कृत। से नाम X। पूर्ण। वै सं २३६।

विशेष—पूजा स्तोत्र जैन पाठक तथा पदों का संग्रह है।

४६८६ गुटका सं० ३८। पत्र स ६९। भा ७५४ इ। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। से नाम X। पूर्ण। वै सं २४२।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

४६८७ गुटका सं० ३९। पत्र सं २। भा ७५४ इ। से नाम X। पूर्ण। वै सं २४३।

१	पद्मवर्णितदण्ड	X	मार्क	१-१४
२	जपनिदुरात्मगोत्र	समवेतगूरि	"	१५-१६
३	संज्ञकवर्णित जपगोत्र	X	"	२०-२३
४	धीरजपगोत्र	X	"	२५-२७

पत्र (नीच एवं गीतमयना मंदिर पाठ है।

४६८८ गुटका सं० ४०। पत्र स २१। भा ६५४ इ। भाषा-हिन्दी। से नाम X। पूर्ण। वै सं २४४।

विशेष—सामान्य पाठ है।

४६८९ गुटका सं० ४१। पत्र स २। भा ६५४ इ। भाषा-हिन्दी। से नाम X। पूर्ण। वै सं २४५।

विशेष—पुस्तक का संग्रह है।

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एव जिनपञ्चवीसी हैं।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३ गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय—पु. णित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१ भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१-३४
२ इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४-५२
३. सम्बोधन चासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३-७१
४. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	७२-९२
५ चरचा	×	"	९२-१०३
६ योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४-१११
७ द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
८ अनित्यप चासिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४-१४७
९ जकडी	रूपचन्द	"	१४८-१५४
१० "	दरिगह	"	१५५-५६
११ "	रूपचन्द	"	१५७-१६३
१२ पद	"	"	१६४-१६६
१३ आत्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०-१७७

५६६५ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५४।

५६६६ गुटका सं० ४८ । पत्र सं १ । भा ५×४ इ । भाषा-हिन्दी । ले कास सं० १७ ५ पूर्ण । के सं २५५ ।

विशेष—आविष्कारक्या (भाऊ) बिरहमबरी (मन्दास) एक मास्युर्बिक मुसले हैं ।

५६६७ गुटका सं० ४९ । पत्र सं ४-११६ । भा ५×४ इ । भाषा-संस्कृत । ले कास × । पूर्ण । के सं २५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६८ गुटका सं० ५० । पत्र सं १८ । भा ५×५ इ । भाषा-संस्कृत । ले कास × । पूर्ण । के सं २५८ ।

विशेष—पूर्वो एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६९ गुटका सं० ५१ । पत्र सं ४७ । भा ८×५ इ । भाषा-संस्कृत । ले कास × । पूर्ण । के सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

६००० गुटका सं० ५२ । पत्र सं ६५ । भा ८×५ इ । भाषा-हिन्दी । ले सं १७२५ भाषा कुटी २ । पूर्ण । के सं २६१ ।

विशेष—समसवार माटक तथा बनारसीविभास के पाठ हैं ।

६०१ गुटका सं० ५३ । पत्र सं २२८ । भा ६×७ इ । भाषा-हिन्दी । ले कास सं० १७२२ । पूर्ण के सं २६१ ।

१	समसवार माटक	बनारसीवास	हिन्दी	१-६१
---	-------------	-----------	--------	------

विशेष—बिहारीवास के पुत्र मैसरी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।

१	तीवार्थ	रामदास (भासक)	हिन्दी	१-१३७
---	---------	-----------------	--------	-------

१	पत्र	शशि संदीवास	"	
---	------	-------------	---	--

६	शामसूरान्य	चरणदास	"	
---	------------	--------	---	--

५	पटपंथासिका	×	"	
---	------------	---	---	--

६००२ गुटका सं० ५४ । पत्र सं १८ । भा ४×५ इ । भाषा-हिन्दी । ले कास सं १८२७ के सं २६१ । पूर्ण । के सं २६२ ।

१	रत्नोत्प	हिन्दी	१-२७
---	----------	--------	------

विशेष—उमा मठेय सबाद में है ।

२. पंचाध्यायी

”

२८-५८

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२६ । आ० ५३×३३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल

× । पूर्ण । वे० सं० २७२ ।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिन्दी	१४-२०
२. पद	विनोदीलाल	”	’
३. पद	जगताराम	”	’

(नेमि रगीलो छवीलो हटीलो चटकीले मुगति वधु संग मिलो)

४ सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	”	
५ पद- प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन वाछित सीके काम ।	कुमुदचन्द	हिन्दी	
५. जीव वेलडी (सतगुर कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)	देवीबास	”	२१ पद्य हैं ।
७ नारीरासो	×	”	३१ पद्य हैं ।
८. चेतावनी गीत	नाथू	”	
९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिगाचन्द्र	सस्कृत	
१०. महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	”	
११. नेमिनाथ स्तोत्र	५० शालि	”	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	”	
१३. षट्मत् चरचा	×	”	
१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	५९ पद्य हैं ।
१५. विनती	”	”	२० पद्य हैं ।
१६. राजुल की सज्भाय	”	”	३७ पद्य हैं ।
१७ भूजना	गगादास	”	१२ पद्य हैं ।
१८. ज्ञानपैडी	मतोहरदास	”	
१९. श्रावकाक्रिया	×	”	

विशेष—विभिन्न कवित एव भीतरतय स्तोत्र आदि हैं ।

६००४ गुटका सं० ५६ । पत्र सं १२ । भा० ४३×४४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । से० काल × प्रथम । के सं २७३ ।

विशेष—सामान्य वाओं का संग्रह है ।

६००५ गुटका सं० ५७ । पत्र सं ३-८८ । भा ३३×४३ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । से काल सं १८४३ चैत बुदी १४ । प्रपूर्णा । के सं २७४ ।

विशेष—मत्तारस्तोत्र स्तुति कल्याणमन्त्रिण भाषा काठिपाठ, तीन बीबीसी के नाम एवं सेवा पूजा आदि है

६००६ गुटका सं० ५८ । पत्र सं ३६ । भा ३×४४ इ । भाषा—हिन्दी । से काल × । पूर्ण । के सं २७६ ।

१ तीसबीबीसी	×	हिन्दी	
२ तीसबीबीसी बीपई	स्याम	"	२ काल १७४६ चैत बुदी ३
			से० काल सं १७४६ कार्तिक बुदी ५

अभिलेख—नाम बीपई प्रन्व यद्, बीरि करी कवि स्याम ।

वैसरज सुठ ठोमिया जोवनपुर लस धाम ॥२१६॥

सतरसी जगवास में पुरन प्रन्व सुनाम ।

जैन उवासी पचमी बिजे स्कन्ध गुपरज ॥२१७॥

एक बार वे सरबहुँ, भवना करिसि पाठ ।

गरक तीव गति कै बिदे गाहे बडे कपट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस बीरसो जी की बीपई ॥

६००७ गुटका सं० ५९ । पत्र सं ३२ । भा ३×४३ इ । भाषा—संस्कृत प्रकृत । से काल × । पूर्ण । के सं २९३ ।

विशेष—तीनबीबीसी के नाम मत्तार स्तोत्र पंचरत्न परीक्षा की गाथा उपवेश एतमत्ता की गाथा आदि है ।

६००८ गुटका सं० ६० । पत्र सं ३४ । भा ३×४८ इ । भाषा—हिन्दी । से काल सं १९४३ पूर्ण । के सं २९३ ।

१ समस्तत्रयभाषा जोवरज हिन्दी २० काल १७२९ चैत बुदी ७

गुटका-संग्रह

२. श्रावको की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	×	हिन्दी
३ सामुद्रिक पाठ	×	"

अन्तिम—सगुन छलन सुमत सुभ सब जनकू सुख देत ।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेल ॥

६००६. गुटका सं० ६१ । पत्र सा० ११-५८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले०

काल सा० १९१६ । अपूर्ण । वे० सा० २६६ ।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षणा, रत्नत्रय पूजा (संस्कृत) पचमेरू पूजा (भूधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१९१६), पचकुमार पूजा आदि हैं ।

६०१०. गुटका सं० ६० । पत्र सं० १६ । आ० ८३×६ इ० । ले० काल× । पूर्ण । वे० सा० २६७ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

६०११. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सा० ३०८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह एव ज्ञानस्वरोदय है ।

६०१२ गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सा० ३२५ ।

विशेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा अन्य कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओं को वशावधी, (४) मनोहरपुरा की पीढियों का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेलवालो के गोत्र, (७) कारखानो के नाम, (८) आमेर राजाओं का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहो पर कवित्त आदि है ।

६०१३ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६०१४ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १३-३२ । आ० ७×४ इ० भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सा० ३२७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६०१५ गुटका सं० ६७। पत्र सं ३२। भा १×४ इ। माया-हिन्दी संस्कृत। से० काल X। पूर्ण। से सं ३२५।

विशेष—नवित एव प्रातुर्वेद के गुसलों का संग्रह है।

६०१६ गुटका सं० ६८। पत्र सं २६। भा १२×४ इ। माया-हिन्दी। विषय-संग्रह। से काल X। पूर्ण। से सं ३३।

विशेष—पदों एव कविताओं का संग्रह है।

६०१७ गुटका सं० ६९। पत्र सं ८४। भा १×४ इ। माया-हिन्दी। से काल X। पूर्ण। से सं ३३२।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६०१८ गुटका सं० ७०। पत्र सं ४। भा १२×३ इ। माया-हिन्दी। से काल X। पूर्ण। से सं ३३३।

विशेष—पदों एव पूजाओं का संग्रह है।

६०१९ गुटका सं० ७१। पत्र सं १८। भा ४ इ×३ इ। माया-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। से काल X। पूर्ण। से सं ३३४।

६०२० गुटका सं० ७२। पत्र सं ३३९।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ, इष्टदत्तीसी एवं जोधराज पचीसी का संग्रह है।

६०२१ गुटका सं० ७३। पत्र सं २८। भा ८ इ×३ इ। माया-हिन्दी। से काल X। पूर्ण। से सं ३३७।

विशेष—ब्रह्मविमास चौबीसवर्षक मार्गणादिबाल, मन्मथकृष्ण तथा सम्पत्कपचीसी का संग्रह है।

६०२२ गुटका सं० ७४। पत्र सं ३६। भा ८ इ×३ इ। माया-हिन्दी। विषय-संग्रह। से काल X। पूर्ण। से सं ३३८।

विशेष—विगतियों पर एव अन्य पाठों का संग्रह है। पाठों की संख्या १९ है।

६०२३ गुटका सं० ७५। पत्र सं १४। भा ३×४ इ। माया-हिन्दी। से काल सं० १९३९। पूर्ण। से सं ३३९।

विशेष—नरक कुल बर्तान एव कैलियाप के १२ मथा का बरान है।

६०२४ गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० ३४२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखो का संग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०

काल × । वे० स० ३४१ ।

विशेष—जोगीरसा, पद एवं विनतियो का संग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की वालावबोध टीका

है । टीका हिन्दी गद्य में है ।

६०२७. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद-संग्रह । ले०

काल × । पूर्ण । वे० स० ३५२ ।

ज भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८ गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चित्तमणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९. गुटका सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर वलय पूजा, ऋषि महल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

२	मूढता जनांकुष इत्यादि	×	"
३	वैपमत्रिया	×	"
४	समयभार	भा० कुन्बकुम्भ	प्राकृत
५.	माक्सियवारकथा	भाऊ	हिन्दी
६	पोषहरास	ज्ञानभूषण	"
७	धमतरङ्गीत	जिनदास	"
८	बहुगतिचौपई	×	"
९	संसारघटनी	×	"
१	वैतलपीठ	जिनदास	"

सं १६२६ में धंवावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३७ गुटका सं० ५ । पत्र स ७३ । भा १×५ इ । भाषा—संस्कृत । ले काल सं० १६८२ । पूर्ण ।

विशेष—रत्नों का संग्रह है ।

सं १६८२ में नागीर में बाई ने लिखा थी उसका प्रतिमा पत्र भी है ।

६०३३ गुटका सं० ६ । पत्र सं २२ । भा १×३ इ । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले काल × के सं ६ ।

१	नेमीश्वर का बाह्यमासा	बेतरसिंह	हिन्दी	५
२	मारीश्वर के इशान	गुणचर	"	
३	शीरहीर	×	"	

६० ४ गुटका सं० ७ । पत्र स १७७ । भा १×५ इ । भाषा—हिन्दी । ले काल × । पूर्ण ।

विशेष—मित्यनीमितक पाठ सुमावित (मूषरवास) तथा नाटक समयभार (बनारसीवास) हैं ।

६०३५ गुटका सं० ८ । पत्र सं १४६ । भा १×३ इ । भाषा—संस्कृत धर्म स ।

ले काल × । पूर्ण ।

१	विश्वामणितार्विषाय जयजान	सीम	धर्म स
२	शुनिमडमपुत्रा	बुनि टुणनरि	संस्कृत

विशेष—विषय पुत्रा पाठ तपर भी है ।

गुटका-संग्रह]

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृषिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारों गतियों की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं ।

६०३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमदिर स्तोत्र एव सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १९६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	×	संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्ति	×	”
		(जिण जिण जप जीवडा तीन भवन मे सारोजी)
३. पंचगुरु की जयमाल	ग्र० रायमल्ल	” ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	×	”
५. हितोपदेश टीका	×	”
६. पद—तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी
७. जकडी	×	”
८. पद—मोहिनी वहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	”

६०३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ है —

क्षेत्रपाल पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (सं०) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नदीश्वरपत्तिपूजा अनन्तचतुर्वशीपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्श्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओं के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

१. जिनस्तुति	सुमनिकीर्ति	हिन्दी
२. गुणस्थानकगीत	ग्र० श्री वरुण	”

प्रतिम-मण्डि भी बर्द्धन ग्रह एह बाजी मन्मिण सुख करे

३ सम्मन्त्र जन्मनाल	×	पपन्न स
४ परमार्थगीत	स्वचन्द	हिन्दी
५ पद- ग्रहो मेरे बीय तू कत भरमायो तू		
भेदन यह अह परम है यामै कथा सुभायो । मनपम		”
६ मेककुमारगीत	पूनी	”
७ मनोरपमात्वा	मन्मन्कीर्ति	”
मन्मन्ना तिहि तखा पुण बाइस्यो		
८ सहेलीगीत	मुन्बर	हिन्दी
सहेस्यो हे यो संसार मसार मो बिच में या अपनी जी सहेस्यो हे		
स्यो रानी सो मबार तन बन जोबन बिर नही ।		
९ पद-	मोहन	हिन्दी
जा बिन हूँत जसै बर जोडि कोई न साथ कड़ा है गोडि ॥		
अण अण के मुक ऐसी बरणी बरो बैपि मिसो मन परणी ॥		
अण बिडहूँ उनमै सरीर, जोसि जोसि मे तक नीर ।		
बारि बणा बज्जस मे बाहि, बर में बडी रहण बै नाहि ।		
जबठा बूक बिडा में बास यो मन मेरा मया उबास ।		
कामा मया सूझी बाणि मोहन होक जजन परमाण ॥१॥		
१० पद-	हर्षकीर्ति	हिन्दी
नहिं छोकी हो जिनटाब नाम मोहि और मिप्पात सै क्या बने काम ।		
११ ”	मनोहर	हिन्दी
सेब ली जिन साहिब की कीर्ति मरनक साही सीबै		
१२ पद-	बिरुबास	हिन्दी
१३ ”	स्यामदास	”
१४ मोहनिवैक्युय	बनारसीदास	”
१५ हावधामुमेसा	पुरण	”

गुटका-संग्रह]

१६ द्वादशानुप्रेक्षा	×	”
१७. विनती	रूपचन्द	”

जे जे जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा ।

१८. पचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	२० काल सं० १५८५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्ति	”	” ” ” १८९३
२०. परमार्थ हिंदोलना	रूपचन्द	”	
२१. पथीगीत	झीहल	”	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	”	
२३. पद-अव मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द	”	
२४ पदसंग्रह	वनारसीदास	”	

६०४१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १०९-२३७ । आ० १०×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एव उसकी विधि दी हुई है ।

६०४२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४३ गुटका सं० १५ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सामान्य पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १६६ । आ० १३×३ इ० । ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदो । पूर्ण ।

१. छियालीस ठाणा ब्र० रायमल्ल संस्कृत १९

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पञ्चकल्याणको की तिथि आदि विवरण है ।

२ चौबीस ठाणा चर्चा × ” २८

३. जीवसमाप्त × प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ ५९

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी ।

४. सुप्पय दोहा × हिन्दी ८०

५. परमात्म प्रकाश भाषा प्रभुदास ” ९२

६. रत्नकरणश्रावकाचार समंतभद्र संस्कृत ९४

६०४५ गुटका सं० १८ । पत्र सं० १५० । आ० ७×२३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

४ भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

५०४६ गुटका सं० १ । पत्र सं ३० । माषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ने कास X । पूर्ण । ने सं १५ १ ।

१ मनोहरमञ्जरी मनोहर मिथ हिन्दी १-२८

प्रारम्भ—
 प्रथम मनोहर मञ्जरी प्रथम नव बीचना लक्षण ।
 माके योषनु प्रकुरमो प्रथम प्रथम छवि प्रोद ।
 सुनि सुखान नव बीचना कृत मेव ई ठोर ॥

प्रन्तिमः—
 महलहाति प्रति रसमसी बहु सुखानु मपाठ (?)
 मिरलि मनोहर मञ्जरी, रतिके भूङ्ग मञ्जरात् ॥
 सुनि सुखनि प्रथिमाल छवि मम विचारि कुम बोय ।
 नहा बिरह किन्त प्रेम रसु, तहीं होत दुख मोख ॥
 बंद प्रथ ई बीप के प्रक बीप माकास ।
 करी मनोहर मञ्जरी मकर बाबनी प्यास ॥
 मानुर का हो मञ्जुरी बसत महोमी पीरि ।
 करी मनोहर मञ्जरी धनुष रस सोरि ॥

इति भं सकलमोक्षकृतमण्डिमण्डिचिन्मञ्जरीनिकलोराजियपथ्य बहुव्याख्यानविहारकारिणमाकटाङ्कमञ्जरीपाठक
 मनोहर मिथ बिरचिता मनोहरमञ्जरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य हैं । सं ७२ एक ही विदे हुये हैं । नायिक मेव बर्षन है ।

२ पुस्तकर बीहा X हिन्दी १-३६

विशेष— ७ बीहे हैं ।

३ प्रामुर्बेरिक वृत्तले X " १७

६०४७ गुटका सं० २ । पत्र सं २१८ । माषा-हिन्दी । ने कास सं १७६४ । प्रपूर्ण । ने सं १५ २ ।

४ नाममञ्जरी मंढपास हिन्दी पद्य सं २११ २-२७

५ धनेकार्यमञ्जरी " " १८-४

लामी बीमदास ने प्रचिनित्ति की थी ।

३ कवित्त	×	”	४१-४३
४ भोजरासो	उदयभानु	”	४३-४५

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नम । दोहरा ।

कु जर कर कु जर करन कुजर आनंद देव ।

सिद्धि समपन सत्त सुव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥

जगत जननि जग उद्धरन जगत ईस भरधग ।

मीन विचित्र विराजकर हंसासन सरवग ॥ २ ॥

सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरै नहि धान ।

जहा तहा सुवन सुष जिये तहा भूपति भोज वखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मित्ती फागुण बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमे कुल १४ पद्य हैं जिनमे भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त टोहर हिन्दी कवित्त हैं ४१-४

विशेष—ये महाराज टोहरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं०

१५०३ ।

१ मायाब्रह्म का विचार × हिन्दी गद्य अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

“माया काहे तै कहिये अ भस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तै कहिये पिंड ब्रह्मांड का आदि आकार है तातै आकास कहिये । सुनी (शून्य) काहे तै कहिये—जड है तातै सुनी कहिये । सकती काहे तै कहिये सकल ससार को जीति रही है तातै सकती कहिये ।”

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान ब्रंम जगोस संपूर्ण समाता । श्रीशक्राचारीज वीरच्यते । मित्ती असोड सुदी १० सं० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस बोड देईदान चारण की पोथीस्थे उतारी पोथी सा . . . म ठोल्या साह नेवली का वेटा . कर महाराज श्री रघनाथस्यधजी ।

२ गोरखपदावली गोरखनाथ हिन्दी अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रें बैरायी बोभी बोगलि संय न छाईं जी ।

मान सरोवर मनस झुमटी घाबै गयन मड मंड मारैजी ॥

३ सतसई बिहाटीनास हिन्दी अपूर्ण १-६३
से काल सं १७२३ मास सुदी २ ।

बिसेय—प्रारम्भ के १२ बोहे नहीं हैं । कुल ७१ बोहे हैं ।

४ वैद्यमनोरसव नवनसुख ७ अपूर्ण १७-११५
६०५३ गुटका सं० ४ । पत्र सं २३ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । से काल सं० १८३१ पीप
सुदी ७ । पूर्ण । से स १३ ४ ।

बिसेय—वाल्मिकी नीति का वर्णन है । श्रीचन्द्रजी पबवाल के पठनार्थ जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

६०५० गुटका सं० ५ । पत्र सं ४ । भाषा—हिन्दी । से काल सं १८३१ । अपूर्ण । से सं०
१५ ३ ।

बिसेय—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के झूठे कवित्त है ।

६०५१ गुटका सं० ६ । पत्र सं ३६ । भा ६×४६ । भाषा—हिन्दी । से काल सं १९८८ ।
से काल सं १७१८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । से सं १३ ६ ।

बिसेय—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है । भेषदास गोपा मालपुरा वाले से प्रतिनिधि की थी ।

६०५२ गुटका सं० ७ । पत्र सं ४३ । भा ६×७३६ । भाषा—हिन्दी । से काल सं १८३१
वैशाख सुदी ८ । अपूर्ण । से स १३ ७ ।

१ कवित्त धनर (धयदास) हिन्दी अपूर्ण १-१

बिसेय—कुल १३ पद्य हैं पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । इनका अन्त कुम्भनिया सा समता है एक अन्त

निम्न प्रकार है—

भांघो बाँटे बैवरी पाई बझरा कास ।

पाई बझरा कास कह्य कुब छीरु न मानी ।

प्यान पुरान मखान छिनक में बरम जुमाने ॥

करो बिप्रसो रीत मुवम बन सेत न लाजे ।

भीक न समझी मीच परत बिपया के काजे ।

धनर जीब प्रादि ती यइ बंधीस करे जगाम ।

भांघो बाँटे बैवरी पाई बझरा कास ॥१॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त मे १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभे भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मितो वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम प्रा तोर पच महावरत धरूँ जपू चौवीस जियादा ।

अरहत ध्यान लैव चहूँ साह लीयण वदा ॥

प्रकृति पच्यासी जागि कौ करम पचीसी जान ।

सूदर भारेमल . . . स्योपुर थान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी संपूर्ण ॥

५. पद—(वासुरी दीजिये ब्रज नारि)

सूरदास

”

२६

६ पद—हम तो ब्रज को बसिवो ही तज्यो

”

”

२७-२८

ब्रज मे बसि वैरिणि तू बंसुरी

७ श्याम बत्तीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमे ३४ सवैये तथा १ दोहा है—

अन्तिम—

कृष्ण ध्यान चतु अष्ट मे श्रवन्न सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहु रहत न रञ्जक नाम ॥

८ पद—बिन माली जो लगावै वाग

मनराम

हिन्दी

४०

९. दोहा—कवीर औगुन एक ही गुण है

कवीर

”

”

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त

×

”

४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन

×

”

अपूर्णा

४१-४५

म्हारा रं बैरानी बोवी बोमखि संम न घाई बी ।
 मान सरोवर भनस मुकती घाई मगन मड मंड नारंभी ॥

३ सतसई बिहारीनास हिन्दी मपूर्णा ३-६३
 से काल सं १७२३ माघ सुदी २ ।

बिसेव—प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं । कुल ७१ दोहे हैं ।

४ बीरमसोस्तब मदनसुख " मपूर्णा २७-११५
 ६०४३ गुटका सं० ४ । पत्र सं २३ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । से काल स १८३६ पीप
 सुदी ७ । पूर्ण । से स १३ ४ ।

बिसेव—बाणभक्त्य नीति का बर्णन है । श्रीकृष्णजी गगनाल के पठनार्थ जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

६०४० गुटका सं० ५ । पत्र सं ४ । भाषा—हिन्दी । से काल स १८३१ । मपूर्णा । से स
 १५ ३ ।

बिसेव—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के मधुठे कविता है ।

६०४१ गुटका सं० ६ । पत्र सं ८६ । भा ६×४६ । भाषा हिन्दी । र काल सं १९८८ ।
 से काल सं १७६८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । से सं १३ ६ ।

बिसेव—सुन्दरवास इत सुन्दरशृङ्गार है । भेषवास गोवा मालपुरा बने से प्रतिनिधि की थी ।

६०४२ गुटका सं० ७ । पत्र सं ४३ । भा ६×७३ । भाषा—हिन्दी । से काल स १८३१
 बैशाख सुदी ८ । मपूर्णा । से स १३ ७ ।

१ कविता मन्दर (मधुवास) हिन्दी मपूर्णा १-१

बिसेव—कुल ६३ पद्य हैं पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । इनका कव्य कुम्भसिखा का मतता है एक कव्य

निम्न प्रकार है—

भांभी बाँटे बैबरी पाई बछरा काम ।
 पाई बछरा काम नहुत गुद चीख न माने ।
 म्पान पुरान मसाल छिनक में परम कुलाने ॥
 करो बिप्रतो रीठ मूखन बन नैत न साजे ।
 नीच न समझै मीच परत विपवा के काजे ।
 मन्दर जीव मारि है यह बंभोस करे जपाय ।
 भांभी बाँटे बैबरी पाई बछरा काम ॥१ ॥

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया केशवदेव हिन्दी अपूर्ण १-४८
ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४

२. कवित्त × " ४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला जनमोहन हिन्दी ६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाञ्छित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला सपूर्णा ॥

विशेष—ग्रन्थ मे कृष्ण ऊधव एव ऊधव गोपी सवाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × ।
पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१. रागमाला श्याम मिश्र हिन्दी १-१२

२० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि मे कासिमखा का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—सवत् सौरह से वरण ऊपर बीतै द्योय ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर श्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ श्याम मिश्र कृत सपूर्णा । सवत् १७४६ वर्षे सावन सुदी १५ सोववार पोथी सेरगढ
प्रगई हिंडीण का मे साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी थे लिखी लिखत मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा) महाकविराइसुन्दर हिन्दी

६०५३ गुटका सं० ८। पत्र सं ८६। प्रा० ६X८६। ले काल सं १७७९ माघ शुक्र ६।

पूरण। वे सं १२ व।

१ कृष्णसप्तमणि वैमि	पुष्पोत्तम राठीर	राजस्थानी डिगल	१ ८६
			२ काल सं १९१७।

बिसेय—य व हिन्दी गद्य टीका सहित है। पहिले हिन्दी पद्य है फिर गद्य टीका वी मई है।

२ विश्वगु पंजर रक्षा	X	संस्कृत	८९
३ मजग (मठ बंका कंसे मीजे १ भाई)	X	हिन्दी	८७-८८
४ पद्य—(बैठे नव निकु व कुटीर)	अनुसुब्ब	"	८६
५ " (भुनिसुनि मुरसी वन बाबै)	हरीदास	"	"
६ " (मुन्दर सांवरौ भाबै जस्यो सली)	मंददास	"	"
७ " (बालमोपम छैमन मेरे)	परमानन्द	"	"
८ " (वन ते भावत पावत मीरी)	X	"	"

६०५४ गुटका सं० ३। पत्र सं ८३। प्रा ६X७६। भाषा—हिन्दी। ले काल X। पूर्ण।

वे सं १२ ६।

बिसेय—केवल कृष्णसप्तमणी वैमि पुष्पोत्तम राठीर कृत है। प्रति हिन्दी टीका सहित है। टीकाकार मजग है। गुटका सं ८ में भाई हुई टीका से मिल है। टीका काल नहीं दिया है।

६०५५ गुटका सं० १०। पत्र सं १७-२२। प्रा ६X७६। भाषा—हिन्दी। ले काल X।

अपूर्ण। वे सं १५११।

१ कवित्त	राजस्थानी डिगल	१७१-७९
----------	----------------	--------

बिसेय—गुज्जार रस के मुन्दर कवित्त है। दिरहिनी का बर्यान है। इसमें एक कवित्त सीहस का भी है।

२ श्रीराममणि कृष्णजी को राखी	तिरदास	राजस्थानी पद्य	१७१-१८६
------------------------------	--------	----------------	---------

बिसेय—इति श्री रामणी कृष्णजी की राखी तिरदास कृत संपूर्ण ॥ सवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे पुन मुसम पद्ये तिनी रसाम्नां कुपवामरे श्री मुकन्दपुर मध्ये भिरापितं साह सजन कोष्ठ साह कृष्णजी वस्तुन सजन साह श्री छान्दोजी वाचनाय । निराठं श्याम वट्टना माम्ना ।

३ कवित्त	X	हिन्दी	१८१-२०२
----------	---	--------	---------

बिसेय—कूपरदास मुनरदास बिहारो तथा केचनदास के कवित्तों का संग्रह है। ४७ कवित्त है।

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया	केशवदेव	हिन्दी	अपूर्णा	१-४८
			ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४	
२. कवित्त	×	"		४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला	जनमोहन	हिन्दी		६-१५
--------------	--------	--------	--	------

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावे सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाञ्छित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला सपूर्णा ॥

विशेष—ग्रन्थ मे कृष्ण ऊधव एव ऊधव गोपी सवाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१. रागमाला	श्याम मिश्र	हिन्दी		१-१२
------------	-------------	--------	--	------

२० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि मे कासिमखा का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—सवत् सौरह सै वरण ऊपर वीते दोय ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत सपूर्णा । सवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोववार पोथी सेरगढ प्रगने हिंडोण का मे साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी मे लिखी लिखत मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा)

महाकविराजसुन्दर

हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का बिरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर सम्बन्ध हैं। सम्मन्य है रचना सुन्दर कवि की है।

१ मसकिसवर्णन केसवदास हिन्दी १४-२५

विशेष—सेरबह में प्रसिद्धि हुई थी।

से कास सं १७४२ माह बुध १४।

४ कवित्त— मिरपर, मोहन सेवय मरिच के हिन्दी

६०५६ गुटका सं० १४। पत्र सं ३६। मा ३०३६। भाषा—हिन्दी। से कास ×। पूर्ण।

के सं १३२३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६० गुटका सं० १५। पत्र सं १३५। मा ५०६६। भाषा—हिन्दी। विषय—पद एवं पूजा।

से कास सं १८३३ मासोज बुध १३। पूर्ण। के सं १३२४।

१ परसंग्रह हिन्दी १-५५

विशेष—जिनबास हरीसिंह, बनारसीबास एवं रामबास के पर हैं। राग रगनियों के नाम भी दिये हुये हैं।

२ बीबीसतीर्षकुरपूजा रामचन्द्र हिन्दी ३५-१२५

६०६१ गुटका सं० १६। पत्र सं १७१। मा ७०६६। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से कास सं०

१९४७। अपूर्ण। के सं १३२३।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१ बिरबामनी × संस्कृत

विशेष—पूरी मद्दारक पट्टावनी की हुई है।

२. जालबामनी मतिसेखर हिन्दी ६५-१२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पदों में कवि ने प्रसदों की बामनी लिखी है। मतिसेखर की लिखी हुई

बामा बरुपई है जिसका रचनाकाल सं १३७४ है।

३ त्रिभुवन की बिगती मङ्गादास

विशेष—इसमें १ १ पद हैं जिसमें ६३ श्लोकाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा पुष्करती विधि हिन्दी है।

६०६२. गुटका सं० १७। पत्र सं ३२-७। मा ३०६६। भाषा—हिन्दी। से कास सं

१८४७। अपूर्ण। के सं १३२९।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४

ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी र० काल सं० १७१२
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास ”
विशेष—पंचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदोलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानो
विशेष—इसमे ३१ पद्यो मे कवि ने नायिका को अलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर
पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४ गुटका सं० १९ । पत्र सं० ५७-३०५ । आ० ९३×६३ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय—
संग्रह । ले० काल सं० १६९० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रकाशित मे है । अकबर के शासन काल मे रचना की गई थी ।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) × ” २८३-२९८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । आ० ९×६३ इ० । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८३९ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एव पाठो का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण
निम्न है —

कपडा की रौस जाणै हैबर की हीस जाणै ।

न्याय भी नवेरि जाणै राज रौस माणिवी ॥

राग ती छत्तीस जाणै लपिए बत्तीस जाणै ।

चूँप चतुराई जाणै महल मे माणिवी ॥

बात जाणै सबाद जाणै खूबी खसवोई जाणै ।

सगपग साधि जाणै अर्थ को जाणिवी ।

कहत बनारसीदास एक जिन नाव बिना ।

.... .. बूझी सब जाणिवी ॥

६०५ गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२४। भा० १५४ ६०। भाषा-हिन्दी। से० बज्र सं० १७२६

द्विभाज गुटी ३। पूर्ण। से० सं० १३४३।

विभाग—सामान्य पाठों का संघर्ष है।

६०६ गुटका सं० ३४। पत्र सं० १३८। भा० १५६ ६। भाषा-हिन्दी। से० बज्र X। पूर्ण।

से० सं० १५४६।

विभाग—सुन्दर भाषण समझाने की प्रति है।

६०७ गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। भा० १५७ ६। भाषा-हिन्दी। विषय-नद संघर्ष। से०

बज्र X। पूर्ण। से० सं० १३४३।

६०८ गुटका सं० ३७। पत्र सं० १३। भा० १५४ ६। भाषा-हिन्दी गद्य। से० बज्र X।

पूर्ण। से० सं० १३४३।

विभाग—विषय का संघर्ष है।

६०९ गुटका सं० ३८। पत्र सं० १४। भा० १५४ ६। भाषा-हिन्दी गद्य। से० बज्र १५४३

पूर्ण। से० सं० १३४३।

विभाग—सुन्दर विषय पाठों का संघर्ष है।

१	परिचय	कमलाम एक उपलक्षण	हिन्दी
२	गुण	हृदय	"
३	परिचय का लक्षण	सोना	"
४	पर- (लक्षण लक्षण) के लक्षण	दिल	"
५	भाषा	सुन्दर	"

(विभाग—इस गुटका-सं० की भाषा हिन्दी भाषा में सुन्दर रूप में बज्र सं० १५४३।)

६१० पर- (लक्षण लक्षण का लक्षण) के लक्षण

७ लक्षण

(विभाग—इस गुटका-सं० की भाषा हिन्दी भाषा में सुन्दर रूप में बज्र सं० १५४३।)

८ पर- (लक्षण लक्षण का लक्षण) के लक्षण

९ लक्षण

१० लक्षण

११ लक्षण

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ ड० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४

ज्येष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी २० काल सं० १७१२
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास ”
विशेष—पंचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी
विशेष—इसमे ३१ पद्यो मे कवि ने नायिका को अलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर
पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४ गुटका सं० १९ । पत्र सं० ५७-३०५ । आ० ६½×६½ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय—
सम्रह । ले० काल सं० १९६० । द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति मे है । अकबर के शासन काल मे रचना की गई थी ।

३. धर्मरास (श्रावकाचाररास) × ” २८३-२९८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । आ० ६×६ इ० । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८३९ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एव पाठो का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण
निम्न है --

कपडा की रौस जाणै हैवर की हौस जाणै ।

न्याय भी नवेरि जाणै राज रौस माणिवी ॥

राग तौ छत्तीस जाणै लपिण वत्तीस जाणै ।

चू प चतुराई जाणै महल मे माणिवी ॥

बात जाणै सवाद जाणै खूवी खसवोई जाणै ।

सगपग साधि जाणै अर्थ को जाणिवी ।

कहत बणारसीदास एक जिन नाव विना ।

” वृद्धो सब जाणिवी ॥

६०७८ गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२४। मा० २४४ इ०। भाषा—हिन्दी। से० काल सं १७२९

वीरसाह सुबी ३। मपूर्णा। से सं १२४२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०७९. गुटका सं० ३३। पत्र सं० १३८। मा० २४६ इ०। भाषा—हिन्दी। से काल X। पूर्णा।

से सं १२४९।

विशेष—मुद्रणतः ग्राहक समयसार की प्रति है।

६०८० गुटका सं० ३६। पत्र सं २४। मा २४२ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पत्र संग्रह। से

काल X। पूर्णा। से सं १२४७।

६०८१ गुटका सं० ३७। पत्र सं १७। मा २४४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से काल X।

पूर्णा। से सं १२४६।

विशेष—निरूपणा पाठ संग्रह है।

६०८२ गुटका सं० ३८। पत्र सं २४। मा २४४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। से काल १७४२

पूर्णा। से सं १२४८।

विशेष—मुद्रणतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१ पत्रसंग्रह	मनराम एवं भूवरदास	हिन्दी
२ स्तुति	हरीसिंह	"
३ पार्श्वनाथ की कुसुमाला	कोहट	"
४ पत्र—(बर्धम बीरबोधी नेमकुमार	मैत्रीराम	"
५ भारती	सुबचन्व	"

विशेष—प्रथिम—भारती करता भारति भान्ने सुबचन्व नाम मयत्त में साजे ॥८।

६ पत्र—(मैं तो भारी मात्र महिमा बाली) मेला

७ भारवाष्टक बनारसीबास " से० काल १८१

विशेष—जयपुर में कालीबास के मकल में लालाराम ने प्रतिनिधि की की।

८ पत्र—मोह नीर में छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी
९ " छठि ठैरी मुज रेखू नामि हू के नंबा	टोबर	"
१ अतुविषयिस्तुति	विनीवीनास	"
११ विगतती	मजैराज	"

६०८३ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

वे० सं० १५५० । मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है.—

	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतिया है)
१. आरती संग्रह			
२. आरती-किह विधि आरती करो प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३. आरती-इहविधि आरती करो प्रभु तेरी	दोपबन्द	"	
४. आरती-करो आरती आत्म देवा	विहारोदास	"	३
५. पद संग्रह	द्यानतराय	"	१७
६. पद-संसार अथिरे भाई	मानसिंह	"	४०
७. पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	५३
८. पद-संग्रह	भूधरदास	"	६७
९. पद-जाग पिपारो अन्न क्या सोवै	कवीर	"	७७
१०. पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	"	७७
११ सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	८०
१२. आरती सिद्धो की	दुशालचन्द	"	८१
१३. गुरुमष्टक	द्यानतराय	"	८३
१४ साधु की आरती	हेमराज	"	८५
१५ वारीण अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	"
१६ पार्वर्नायाष्टक	मुनि सकलकीर्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीर्तिमुनि काज मुदा ॥

१७ नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८ पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९. पद-उठ तेरो मुख देखू नाभिजो के नवा	टोडर	"	१४५
२०. पद-देखो भाई आज रिषम धरि आवे	साहकोरत	"	"
२१ पद-संग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनन्द	"	१४६
२२ न्हवण मंगल	वसी	"	१४७
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४९

२४ लुहरण प्रारती पिरुवात हिन्दी १३

प्रसिद्ध— केसवनबन करहिहु सेब, बिरुवात मरी बिरु चरण सब ॥

२५. प्रारती धरस्वती प्र जिनबास " १३३

६०८४ गुटका सं० ४० । पत्र सं ७-१८ । मा ५५१ इ । भाषा-हिन्दी । से काल सं १८५४ ।
 अपूर्ण । से सं १३३१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०८५ गुटका सं० ४१ । पत्र सं २२३ । मा ८५३ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । से काल सं १७४२ । अपूर्ण । से सं १३३२ ।

पूजा एक स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६ गुटका सं० ४२ । पत्र सं १३१ । मा ५५३ इ । से काल १७२९ अंत सुदी १ ।
 अपूर्ण । से सं १३३३ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न हैं—

१ चतुर्विधति स्तुति × प्राकृत ९

२ सखिबिधान चौपई भीषम कवि हिन्दी ३

२ काल सं १६१७ फाल्गुण सुदी १३ । से काल सं १७३२ वैशाख सुदी ३ ।

विशेष—संक्षेप सोमसी सतरी फाल्गुण मास कई ऊपरी ।

अत्रतथापि तेरस तिथि जाणि ताबिन कना बही परबाणि ॥१६१॥

बरते निवासी माहि बिस्मात भीम धर्म उमु पोबा जाणि ।

बहु कना भीषम कवि बही जिनपुरण माहि बैसी सही ॥१६७॥

× × × × ×

बडा बन्ध चौपई जाणि । पूरा हुमा बीइसै प्रमाणि ।

जिनबली का मण न मस मनि भीम के महे मुखवास ॥

इति भी सखि बिधान चौपई सपूर्ण । निजिन चौका निजासि सहा भी मोगीवास पठनार्थ । सं

१७३२ वैशाख सुदि ३ कृष्णशुक्ल ।

३ जिनपुराण की स्तुति चापुगीति हिन्दी

४ मैत्रिणी की लहरि बिरुपुरण "

५. नेमीश्वर राजुल की लहरि (बारहमासा) खेतसिंह साह		हिन्दी	
६. ज्ञानपञ्चमीवृहद् स्तवन	समयसुन्दर	"	
७. आदीश्वरगीत	रंगविजय	"	
८. कुशलगुरुस्तवन	जिनरंगसूरि	"	
९. " "	समयसुन्दर	"	
१०. चौबीसीस्तवन	जयसागर	"	
११. जिनस्तवन	कनककीर्ति	"	
१२. भोगीदास की जन्म कुण्डली	×	"	जन्म सं० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३। पत्र सं० २१। आ० ५३×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १७३०

अपूर्णा। वे० सं० १५५४।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है। मलारना में प्रतिलिपि हुई थी।

६०८८. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ४-७६। आ० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल×। अपूर्णा

वे० सं० १५५५।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. श्वेताम्बर मत के ८४ बोल जगरूप हिन्दी २० काल सं० १८११ ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी ३।

२. व्रतविधानरासो दौलतराम पाटनी हिन्दी २० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९ गुटका सं० ४५। पत्र सं० ५-१०३। आ० ६३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८६६। अपूर्णा। वे० सं० १५५६।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. सुदामा की बारहखडी × हिन्दी ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिंहजी की × सस्कृत १०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रवौ ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिध योग जन्म नाम सदामुख।

६०९० गुटका सं० ४६। पत्र सं० ३०। आ० ६३×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल × पूर्णा। वे० सं० १५५७।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है।

६०६१ गुटका सं० ४७। पत्र स ३६। मा १×२२ इ। भाषा संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। के स १२५८।

विषय—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६०६२ गुटका सं० ४८। पत्र स २। मा १×३३ इ। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। ले० काल ×। अपूर्ण। के स १२५९।

विषय—प्रमुख विद्वान्कारण्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है।

६०६३ गुटका सं० ४९। पत्र सं १३। मा १×३ इ। भाषा—हिन्दी। ले काल सं १८६८। वाक्य कुटी १२। पूर्ण। के सं १२६२।

विषय—वेदार्थ कृत विनयी संग्रह तथा सीहट कृत अठारह गते का चौबामिया है।

६०६४ गुटका सं० ५०। पत्र सं ७४। मा १×४ इ। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२६४।

विषय—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६५ गुटका सं० ५१। पत्र सं १७। मा २×४ इ। भाषा—हिन्दी। ले काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२६३।

विषय—निम्न मुख्य पाठ है।

१ कवित्त	कन्यासास	हिन्दी	१ ३-१ ७
----------	----------	--------	---------

विषय—१ कवित्त है।

२ रागमाला के बीहे	वैतथी	"	११३-११८
-------------------	-------	---	---------

३ बाह्यभासा	असपात्र	" १२ बीहे हैं	११८-१२१
-------------	---------	---------------	---------

६०६६ गुटका सं० ५२। पत्र सं १७८। मा ११×१ इ। भाषा—हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। के सं १२६६।

विषय—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६७ गुटका सं० ५३। पत्र सं ३ ४। मा १२×३ इ। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल सं १७८३। माह कुटी ४। पूर्ण। के सं १२६७।

विषय—दुर्गे के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ मृदाग्निसामो	विमपरीति	हिन्दी	१२८
----------------	----------	--------	-----

२ रोहिणी विधिकथा

वंसीदास

हिन्दी

१५६-६०

२० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २ ।

विशेष—

सोरह सै पच्यानऊ ढई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई

फातिहाबाद नगर सुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ॥

मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्ति गोयम सममान ।

ता शिष बशीदास सुजान, मानै जिनवर की आन ॥८६॥

अक्षर पद तुक तनै जु हीन, पढौ बनाइ सदा परवीन ॥

धर्मो शारदा पडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मो सुभाइ ॥८७॥

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ॥

१. सोलहकारणरासो	सकलकीर्ति	हिन्दी	१७२
२. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावगी	ब्रह्मसेन	संस्कृत	१७५-१८६
५. विनती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	२५१

६०६८ गुटका सं० ५४ । पत्र सं० २२-३० । आ० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५६८ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

६०६९. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १०५ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । अपूर्ण । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१ अश्वलक्षण	पं० नकुल	संस्कृत	अपूर्ण	१०-२६
-------------	----------	---------	--------	-------

विशेष—श्लोको के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । अध्याय के अन्त में पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोव्याय ॥

२. फुटकर दोहे	कवीर	हिन्दी
---------------	------	--------

६१००. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १४ । आ० ७३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५७० ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६१०१ गुटका सं० ५७। पत्र सं ७५। मा १×४२ इ। भाषा—संस्कृत। ले० काल स १८४७

पृष्ठ सुरी ३। पूर्ण। के सं १३७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१ शृंगारसर्व	सूत्र	हिन्दी	७१२ दोहे हैं।
२ प्रजापति कवित	वेद संवत्सल	"	
३ कवित शुगलखोर का	धियमास	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं ८२। मा० २×४२ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

पूर्ण। के सं १३७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५९। पत्र सं ९९९। मा ७×४२ इ। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×

अपूर्ण। के सं १३७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका सं० ६०। पत्र सं १५। मा ७×४२ इ। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। के सं १३७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ लघुपञ्चार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२ धारापना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	२२ पद्य हैं

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं १७। मा १×४ इ। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं

१८१४ भाषा सुरी १। पूर्ण। सं १३७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ बारहसदी	×	हिन्दी	११
२ बिमली—गद्य विनोदर कविये के साहित्य मुद्रति तणु वात्सर २	मुद्रतविजय	"	४
३ पद-विद्ये धारापना तैरी हिये मान्य भ्यास है	नवसराम	"	"
४ पद-हैमी देखी रित जाय दी नैम रुकार	टीनाराम	"	"

शुटका-संग्रह]

५. पद-नेमकवार री वाटडी हो राणी
राजुल जोवै खडी हो खडी
६. पद-पल नही लगदी माय में पल नहि लगदी
पीया मो मन भावै नेम ।
७. पद-जिनजी को दरसण नित करां हो
सुमति सहेल्यो
८. पद-जुय नेम का भजन कर जिससे तेरा भला
९. विनती
१०. हमीररासो
११. पद-भोग दुखदाई तजभवि
१२. पद
१३. ,, (मङ्गल प्रभाती)
१४. रेखाचित्र आदिनाथ,
१५. वसंतपूजा

विशेष—अन्तिम पद्य

भावेरि स०-

अजेराज करि

६१०६ शुटका सं० ६२ ।

[सं० । दे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०७ शुटका सं० ६३ । पत्र सं० १

[सं० १५८१ ।

विशेष—देवाग्रह्य इत पद एवं भूधरदास :

६१०८ शुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४०

[सं० । दे० सं० १५८० ।

६१०१ गुटका सं० ५७। पत्र सं ७५। प्रा १५४३ ई०। माया—संस्कृत। से काल सं १८४७
बैठ सुदी ५। पूर्ण। से सं १३७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१	नृत्तसप्तसर्ग	नृत्त	हिन्दी	७१२	बोहे हैं।
२	प्रस्तावना कविता	बैद्य नंदनाम	"		
३	कविता गुणनखोर का	खिरसात	"		

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं ८२। प्रा० १५४३ ई०। माया—संस्कृत हिन्दी। से काल X।
पूर्णा। से सं १३७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५९। पत्र सं ९९। प्रा ७५४३ ई। माया—हिन्दी संस्कृत। से काल X
अपूर्णा। से सं १३७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका सं० ६०। पत्र सं १८। प्रा ७५४३ ई। माया—संस्कृत हिन्दी। से काल X।
अपूर्णा। से सं १३७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१	कबुतरनार्यसूत्र	X	संस्कृत		
२	पारायना प्रतिबोधसार	X	हिन्दी	५२	पद्य हैं

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं ९७। प्रा० १५४४ ई। माया—संस्कृत हिन्दी। से काल सं
१३१४ भाद्रमा सुदी ९। पूर्ण। सं १३७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१	बाणहस्ता	X	हिन्दी	१९	
२	विनयी—नन्द विनयन कविये के साहित्य मुद्रति वगू बतार के	कुचनविजय	"	४	
३	पद—कविये पारायना लेपी द्विये प्रान्त व्यारत है	नवलराम	"	"	
४	पद—हेमो देहपी तित जाय ती नम उ बार	टीनाराम	"	"	

- | | | | |
|--|----------|--------|----|
| ५. पद-नेमकवार री वाटडी हो राणी
राजुल जोवै खडी हो खडी | खुशालचंद | हिन्दी | ४१ |
| ६. पद-पल नही लगदी भाय में पल नहिं लगदी
पीया सो मन भावै नेम पिया | वखतराम | " | ४३ |
| ७. पद-जिनजी को दरसण नित करा हो
सुमति सहेल्यो | रूपचन्द | .. | -- |
| ८. पद-नुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला हो | वखतराम | | |
| ९. विनती | | | |

६१०१ गुटका सं० ५७। पत्र सं ७५। भा० १५४३ ई। भाषा—संस्कृत। ले. काल सं १५४७

पेठ सुवी ३। पूर्ण। ले. सं १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१	बृन्वसतसई	बृन्व	हिन्दी	७१२ रोहे हैं।
२	प्रमत्तादि कवित	वेद्य संवत्सल	"	
३	कवित्त शुभसखोर का	सिद्धसाल	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं ७२। भा १५४३ ई। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले. काल X।

पूर्ण। ले. सं १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५९। पत्र सं ९६१। भा ७५४३ ई। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले. काल X

अपूर्ण। ले. सं १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका सं० ६०। पत्र सं १८। भा ७५४३ ई। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले. काल X।

अपूर्ण। ले. सं १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१	लघुवर्णार्थसूत्र	X	संस्कृत	
२	भारतना प्रतिबोधसार	X	हिन्दी	५३ पत्र हैं

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं ९७। भा १५४४ ई। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले. काल सं

१५१४ भाषा सुवी ६। पूर्ण। सं १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१	वाक्यशुद्धी	X	हिन्दी	१९
२	विनयी—पार्ष्णि जितेस्वर कविये १ साहित्य मुक्यति तपु बस्तार १	कुशलविजय	"	४
३	पद—द्विजे भारतना वेदी द्विजे भारत भारत है	नवलराम	"	"
४	पद—हेली बेहली शिव काय से नेम क बार	टीनाराम	"	"

६१०१ गुटका सं० ५७। पत्र सं० ७५। प्रा १५४३ ई। भाषा—संस्कृत। ले
केठ सुदी ५। पूर्ण। के सं १५७१।

विशेष—मिम्म पाठ है—

१	कुम्भसतसई	बृत्त	हिन्दी	७
२	प्रस्तावलि कवित	बैद्य नंदनाल	"	
३	कवित कुपमखोर का	सिरनाल	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं ८२। प्रा १५४३ ई०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।
पूर्व। के सं १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५९। पत्र सं ९६९। प्रा ७५४३ ई। भाषा—हिन्दी संस्कृत।
अपूर्णा। के सं १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका सं० ६०। पत्र सं १८। प्रा ७५४३ ई। भाषा—संस्कृत हिन्दी। म
अपूर्णा। के सं १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ मिम्म प्रकार है।

१	मधुवर्णार्चसूत्र	×	संस्कृत	
२	भारापना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	१५ पद्य है

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं १७। प्रा० १५४४ ई। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल सं
१५१४ भाषा सुदी ६। पूर्ण। सं १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ मिम्म प्रकार है।

१	बाण्डवडी	×	हिन्दी	१९
२	विनती—पार्क विनैरपर कविये १ साहित्य मुद्रति तगू बस्तार १	कुम्भसिन्धु	"	४
३	पद—विद्ये भारापना तेरी हिंदी धामन भ्यारत है	नवलराम	"	"
४	पद—हैनी देहनी तिय जाय दी मेम क बार	टीनाराम	"	"

६११८ गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५९६ ।

विशेष—मनोहर एव पूनो कवि के पद हैं ।

६११९. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इ० भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५९८ ।

विशेष—पाशाकेवली भाषा एव वाईस परीपह वर्णन है ।

६१२० गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

जे० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९९ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१ गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२ गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४ गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । आ० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवात्रह्य, भूधरदास, जगराम एव बुधजन के पदो का संग्रह है ।

६१२५ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—विनती संग्रह ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×

अपूर्ण । वे० सं० १६०९ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है ।

६१०६ गुटका सं० ६५। पत्र सं १७३। मा ६३×४३ इ । मापा-हिन्दी । से कास × । पूर्ण सं १२८१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है ।

६११० गुटका सं० ६६। पत्र सं० १२। मा ६३×४३ इ । मापा-संस्कृत हिन्दी । से कास × ।

अपूर्णा । से सं १२८२।

विशेष—वंचमेव पूजा महाह्निका पूजा तथा सोसहकारण एवं ब्रह्मसमरण पूजाएँ हैं ।

६१११ गुटका सं० ६७। पत्र सं १८२। मा ८३×७ इ । मापा-संस्कृत हिन्दी । से कास

सं १७४३। पूर्ण। से सं १२८३।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६११२ गुटका सं० ६८। पत्र सं ११५। मा ६×३ इ । मापा हिन्दी । से कास × । पूर्ण।

से सं १२८८।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११३ गुटका सं० ६९। पत्र सं १२१। मा ४३×४ इ । मापा-संस्कृत । से कास × । अपूर्ण

से सं १२८८।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

६११४ गुटका सं० ७०। पत्र सं १७-२। मा ७३×३ इ । मापा-संस्कृत । से कास × ।

पूर्णा। से सं १२८९।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११५ गुटका सं० ७१। पत्र सं १८। मा २×२३ इ । मापा-संस्कृत हिन्दी । से कास × ।

पूर्णा। से सं १२९०।

विशेष—बीबीस ठाण्डा बर्षा है ।

६११६ गुटका सं० ७२। पत्र सं ३४। मा ४३×३३ इ । मापा हिन्दी संस्कृत । से कास ×

पूर्णा। से सं १२९१।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एक भीमान स्तुति प्रादि है ।

६११७ गुटका सं० ७३। पत्र सं ३-५। मा ६३×३ इ । मापा-संस्कृत हिन्दी । से कास

। अपूर्ण। से सं १२९२।

६११= गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५६६ ।

विशेष—मनोहर एव पुनो कवि के पद है ।

६११६. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इ० भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५६८ ।

विशेष—पाशाकेवली भाषा एव वाईस परीपह वर्णन है ।

६१२० गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय सिद्धान्त ।

जे० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२ गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४ गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । आ० ४×३३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवाब्रह्मा, भूधरदास, जगराम एव बुधजन के पदों का संग्रह है ।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-विनती संग्रह ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । आ० ६७×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×

अपूर्ण । वे० सं० १६०९ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६११८ गुटका सं० ८५ । पत्र सं १५ । मा ८३×९६ इ । भाषा हिन्दी । से काल X । प्रपूर्ण ।

के सं १९११ ।

विषय— देवावह्य कृत पत्रों का संग्रह है ।

६१२६ गुटका सं० ८६ । पत्र सं ४ । मा ९२×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । से काल १७२३ ।

पूर्ण । के सं १९५६ ।

विषय—उदयराम एवं बजराम के पत्र तथा मेन्नीराम कृत कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा है ।

६१३१ गुटका सं० ८७ । पत्र सं ७ -१२८ । मा ६×१३ इ । भाषा हिन्दी । से काल १२६४

प्रपूर्ण । के सं १९३७ ।

विषय—पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१ गुटका सं० ८८ । पत्र सं २८ । मा ९३×३३ इ । भाषा—संस्कृत । से काल X । प्रपूर्ण

के सं १९३८ ।

विषय—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है

६१३२ गुटका सं० ८९ । पत्र सं १६ । मा ७×४ इ । भाषा—हिन्दी । से काल X । पूर्ण ।

के सं १९३६ ।

विषय—ममबालदास कृत प्राचार्य शान्तिदासर की पूजा है ।

६१३३ गुटका सं० ९० । पत्र सं २६ । मा ९३×७ इ । भाषा—हिन्दी । से काल १९१८ ।

पूर्ण । के सं १९९ ।

विषय—स्वर्णचन्द्र कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४ गुटका सं० ९१ । पत्र सं ७२ । मा ९२×९ इ । भाषा—हिन्दी । से काल सं १९१४

पूर्ण । के सं १९९१ ।

विषय—प्राग्जन्म के १९ पत्रों पर १ से २ तक पहाड़े हैं जिनके ऊपर भीति तथा शृङ्गार रस के ४७

श्लोके हैं । गिरधर के कवित्त तथा धनिरुधर वेन की कथा प्रादि हैं ।

६१३५ गुटका सं० ९२ । पत्र सं २ । मा ५×४ इ । भाषा—हिन्दी । से काल X । प्रपूर्ण ।

के सं १९९२ ।

विषय—श्रीगुरु रत्नमञ्जूषा (मंत्र टीका) तथा श्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६ गुटका सं० ९३ । पत्र सं १७ । मा १×४ इ । भाषा—संस्कृत । से काल X । पूर्ण ।

के सं १९९३ ।

गुटका-संग्रह]

विशेष—सद्योजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था । स्तोत्रों का संग्रह है ।

६१३७. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ८-४१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-गुजराती । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० १६६४ ।

विशेष—वल्गुभक्त स्वमणि विवाह वर्णन है ।

६१३८. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० सं० १६६७ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पद (चारु रथ की वजत वधाई जी सब जनमन आनन्द दाई) है । चारो

रथों का मेला सं० १६१७ काग्रण बुदी १२ की जयपुर हुआ था ।

६१३९. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० सं० १६६८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१४०. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० सं० १६६९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१४१. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५८ । आ० ७×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्णा ।

वे० सं० १६७० ।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्ररदेव की कथा है ।

६१४२. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० २-१२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० १६७१ ।

विशेष—मन्त्र मन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालो के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनो की ७२ जातियाँ जिसमे से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है । गुमानोराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ मे लिखा गया ।

६१४३. गुटका सं० १०० । पत्र सं० ५४ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्णा । वे० सं० १६७२ ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है । ५४ से आगे पत्र खाली हैं ।

६१४४. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० ८-२५ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०

काल सं० १८५२ । अपूर्णा । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं ।

६१४५ गुटका सं० १०२। पत्र सं० ३३। मा ७×७ इ। माया-हिन्दी संसृत। स काल ।
अपूर्णा। के सं १९७४।

विशेष—बाह्यभाषी (मूरत) मरक दोहा (भूवर) तत्पार्षमून (उमात्वामि) तथा फुटकर तबेया हैं।

६१४६ गुटका सं० १०३। पत्र सं० १६। मा ३×४ इ। माया संसृत। स० काल ×। पूर्ण।
के सं १९७२।

विशेष—विपापहार, निर्वाणिकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीपह पराण हैं।

६१४७ गुटका सं० १०४। पत्र सं० ३८। मा ९×५ इ। माया हिन्दी। स काल ×। अपूर्ण।
के सं १९७९।

विशेष—पद्मपरमेष्ठीदुण बाह्यभाषना, बाईस परिपह, सोसहकारण भावना आदि हैं।

६१४८ गुटका सं० १०५। पत्र सं ११४७। मा ६×२ इ। माया-हिन्दी। से० काल ×।
अपूर्णा। के सं १९७७।

विशेष—स्वरोदय के पाठ हैं।

६१४९ गुटका सं० १०६। पत्र सं ३६। मा ७×३ इ। माया-संसृत। स० काल ×। पूर्ण।
के सं १९७८।

विशेष—बाह्य भाषना पञ्चमस तथा श्यामशय पुत्रा हैं।

६१५० गुटका सं० १०७। पत्र सं ८। मा ७×२। माया-हिन्दी। स काल ×। पूर्ण। के
सं १९७९।

विशेष—सन्धेवधिलकरमहात्म्य निर्वाणकांड (सेम) फुटकर पत्र एवं अभिताम के बस भन हैं।

६१५१ गुटका सं० १०८। पत्र सं २४। मा ७×२ इ। माया-हिन्दी। स काल ×।
अपूर्णा। के सं १९८०।

विशेष—देवात्रहा कृष्ण कश्चिपुत्र श्री बीमती हैं।

६१५२ गुटका सं० १०९। पत्र सं ६६। मा ३×६ इ। माया-हिन्दी। विषय-संग्रह। स
काल ×। अपूर्ण। के सं १९८१।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ३९ पत्र नहीं हैं। निम्न पाठ हैं—

१ हस्ती के दोहा × हिन्दी।

विशेष—७६ से २१४ ४४० से २२१ दोहे तक हैं भाये नहीं हैं।

हस्ती रचना ही नहीं, ऐसे रस न भोर।

विषय पु बीबत नहीं फिर पीहे किहि कीर ॥ १९३ ॥

गुटका-संग्रह]

हरजी हरजी जो कहै रसना वारवार ।

पिस तजि मन हू क्यो न ह्वै जमन नाहि तिहि वार ॥ १६४ ॥

२ पुस्तक-स्त्री सवाद

रामचन्द्र

हिन्दी १२ पद्य है ।

३ फुटकर कवित्त (शृ गार रस)

X

” ४ कवित्त है ।

४ दिल्ली राज्य का व्यौरा

X

”

विशेष-चौहान राज्य तक वर्णन दिया है ।

५ आधाशीशी के मत्र व यन्त्र हैं ।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष-निर्वाणकाण्ड, भक्तमिरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं ।

६१५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×४ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष-निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह-भूधरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद-महिन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनद है सेवो भवि प्रानो) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं ।

६१५५ गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । आ० ५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रो का संग्रह है । गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है ।

६१५६ गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष-२० का १०००० का, १५ का २० का यत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तमिरस्तोत्र, पद संग्रह तथा राजस्थानी में शृ गार के दोहे हैं ।

६१५७ गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । आ०-७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रव-मरीक्षा । ले० काल X । १८०४ अष्टाठ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष-पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह-गिलवाजी-वालों की है-सुशालचन्द्र ने-पाशटा-में-प्रतिलिपि की थी गुटका सजित है ।

६१५८ गुटका सं० ११५। पत्र स ३२। मा ६३×९६०। भाषा-हिन्दी। से कास ×।

मपूर्णा। वे० सं ११३।

विशेष—मायुर्वेदिक नुससे है।

६१५९ गुटका सं० ११६। पत्र सं ७७। मा ८×९६०। भाषा हिन्दी। से कास ×। पूर्ण।

वे सं १७२।

विशेष—गुटका सजिस्व है। अश्वेतवासों के ८४ गोत्र विभिन्न कवियों के पद तथा बीवाणु प्रथमपत्न्यकी

के पुत्र मालन्वीवास की स १६१६ की अगम पत्री तथा मायुर्वेदिक नुससे है।

६१६० गुटका सं० ११७। पत्र सं ९१। भाषा-हिन्दी। से कास ×। पूर्ण। वे सं १७०१।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

६१६१ गुटका सं० ११८। पत्र सं ७६। मा ८×९६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से कास ×।

मपूर्णा। वे सं १७३।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है।

६१६२ गुटका सं० ११९। पत्र सं २४०। मा ९×९६। भाषा-हिन्दी। से कास व १८४१

मपूर्णा। वे सं १७११।

विशेष—जागवत मीमांसा हिन्दी पद्य टीका तथा भाषिकेन्द्रोपास्यान हिन्दी पद्य में हैं दोनों ही मपूर्णा है।

६१६३ गुटका सं० १२०। पत्र स ३२-१२८। मा ४×९६। भाषा हिन्दी। से कास ×।

मपूर्णा। वे सं १७१२।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१	नवपदपूजा	देवचन्द्र	हिन्दी	मपूर्णा	३२-४३
२	महामन्त्रीपूजा	"	"		४४-६०

विशेष—पूजा का रूप शैवात्म्य पराम्यहानुसार निम्न प्रकार है—अतः अन्त ५७३ पुष शीप मघद

श्रीवत् कन इतस्त्री प्रत्येक की अलग अलग पूजा है।

१ उत्तरमेरी पूजा सायुधीति " २ सं ११७८ ३-९३

४ परचमह × " "

६१६४ गुटका सं० १२१। पत्र सं ९-१२२। मा ९×९६। भाषा-हिन्दी संस्कृत। से कास

×। मपूर्णा। वे सं १७१३।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं —

१. गुरुजयमाला	ग्रह्य जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	५२
४. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	६८
५. गणधरबलय पूजा	"	"	१०७-११२
६. आरती पंचपरमेष्ठी	प० चिमना	हिन्दी	११४

ग्रन्थ में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट में भट्टारक शातिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८-१२६। आ० ५३×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३। पत्र सं० ६-४६। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७। गुटका सं० १२४। पत्र सं० २५-७०। आ० ४×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १२५। पत्र सं० २-४५। भाषा—संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ३६-१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६-२४६। आ० ८×४ इ०। भाषा—गुजराती। लिपि—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १६०५। अपूर्ण। वे० सं० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र हैं।

६१७१ गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ११-१२ । मा २५४ इ० । भाषा हिन्दी सप्तम । से कास

X । मयूरी । वे सं १७२ ।

विशेष—पूजा पाठ संपन्न है ।

६१७२ गुटका सं० १२६ । पत्र सं० १२ । मा २५३ इ । भाषा—हिन्दी । से० कास X । मयूरी

वे० सं १७२१ ।

विशेष—महाभारत भाषा एवं बीबीसी स्तवत आदि है ।

६१७३ गुटका सं० १३० । पत्र सं २-१६ । मा० ६५४ इ । भाषा हिन्दी पत्र । से कास X ।

मयूरी । वे सं १७२२ ।

रसकोतुकराजसमारजन ३२ से १ तक पत्र है ।

विशेष—कला प्रेम समुद्र है माहक बतुर कुबान ।

राजसमा रंजन यहै, मन हित प्रीति निधान ॥१॥

इति म रसकोतुकराजसमारजन समस्त्या प्रबन्ध प्रथम भाग संदू ।

६१७४ गुटका सं० १३१ । पत्र सं ६-४१ । मा ६५२ इ । भाषा—सिन्धु । से कास सं १७११

मयूरी । वे सं १७२३ ।

विशेष—मदाली सहस्रनाम एवं कवच है ।

६१७५ गुटका सं० १३२ । पत्र सं १-१३० । मा १ ५६ इ । भाषा—माली-महली से कास सं०

१७२० । मयूरी । वे सं० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा (म रामायण) पद्यकरण मंत्र दितो बघावति (भगवान महावीर से लेकर

सं १७२२ सुरेन्द्रप्रति मद्राक तक) आदि पाठ है ।

६१७६ गुटका सं १३३ । पत्र सं २२ । मा ६५१ इ । भाषा—हिन्दी । से कास X । मयूरी,

वे सं १७२५ ।

विशेष—समयसार माहक एवं सिन्धु प्रकरण दोनों के ही मयूरी पाठ है ।

६१७७ गुटका सं० १३४ । पत्र सं १६ । मा ६५२ इ । भाषा—हिन्दी । से० कास X । मयूरी

वे सं १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ ६ मयूरी है ।

६१७८ गुटका सं० १३५ । पत्र सं ४६ । मा ७५२ इ । भाषा—सिन्धु हिन्दी । से कास सं०

१७२७ । मयूरी । वे सं १७२८ ।

१ पद- राखी हो वृजराज लाज भेरी	सूरदास	हिन्दी
२. ,, महिबो विसरि गई लोह कोउ काहत	मलूकदास	”
३ पद-राजा एक पडित पीली तुहारी	सूरदास	हिन्दी
४ पद-भेरो मुखनीको भक्त तेरो मुख थारी ०	चंद	”
५ पद-अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी ०	कबीर	”
६ पद-बादि गये दिन साहिब बिना सतगुरु चरण सनेह बिना	”	”
७ पद-जा दिन मन पछी उठि जाँ है	”	”

फुटकर मंत्र, औषधियों के नुसखे आदि हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल १७८४ । अपूर्ण । वे० सं० १७५५ ।

विशेष—बल्लराम, देवावह्न, चैनसुख आदि के पदों का संग्रह है । १० पत्र से आगे खाली हैं ।

६१८०. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० ८८ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७५६ ।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ एवं दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एवं किसनगुलाब के पदों का संग्रह है ।

६१८१. गुटका सं० १३८ । पत्र सं० १२१ । आ० ६३×५ इ० । वे० सं० २०४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी संस्कृत
२. नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३. क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	”
४. हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५. क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	”
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	”

६१८२ गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ३-४६ । आ० १०३×७ इ० । भाषा-हिन्दी प० । ले० काल सं० १९५५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४० ।

विशेष—जानकामरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार भी है । भैरंलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

६१८३ गुटका सं० १४०। पत्र सं ४-४३। मा १ २×७ इ। भाषा-संस्कृत। से० काल स

१६ इ वि भाष्या सुवी २। अपूर्ण। के सं २०४२।

विशेष—अमृतचन्द्र सूरि कृत समयसार कृति है।

६१८४ गुटका सं० १४१। पत्र सं ३-१९। मा १ २×९ इ। भाषा-हिन्दी। से० काल

सं १८५३ भाष्या सुवी ९। अपूर्ण। के सं २४९।

विशेष—अमृतचन्द्र कृत वैद्यमनोसक (२ सं० १६४६) तथा बनारसीविभास्य आदि के पाठ हैं।

६१८५ गुटका सं० १४२। पत्र सं ८-६३। भाषा-हिन्दी। से० काल ×। अपूर्ण। के सं

२४७।

विशेष—दानतराय कृत वर्षासतक हिन्दी टप्पा टीका सहित है।

६१८६ गुटका सं० १४३। पत्र सं १६-१७१। मा ७ २×९ इ। भाषा-संस्कृत। से० काल

सं १९१३। अपूर्ण। के सं २०४८।

विशेष—गूढा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

संवत् १९१५ वर्षे नवंबर सुवी ३ दिने श्री मुमर्षि सरस्वतीयन्त्रे बलात्कारणो श्रीभादिनात्मर्त्वासायेन
धामी शुभस्वामी न श्लोकक्रीति न सुबनक्रीति न ज्ञानशुभण न विजयक्रीति न शुभचन्द्र मा सुहृत्सेवात्
मा श्रीरत्नक्रीति मा यशःक्रीति सुखचन्द्र।

६१८७ गुटका सं० १४४। पत्र सं ४६। मा ८×९ इ। भाषा हिन्दी। विषय-कथा। से०
काल सं १९२। पूर्ण। के सं २४६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१ मुक्तावलिख्या	भारमन्त्र	हिन्दी	२ काल सं १७८८
२ टैल्लिखीयलक्षण	×	"	
३ पुष्पाञ्जलिप्रतय्या	नमितक्रीति	"	
४ वसन्तशुभप्रतय्या	न ज्ञानसागर	"	
५ अष्टाङ्गिकाव्या	विजयक्रीति	"	
६ लङ्केशीपत्रतय्या	वैश्वानुषण [न विजयसुषण के शिष्य]	"	
७ भाकावपञ्चमीकथा	पति हरिद्वन्द्व	"	२ काल सं १७९
८ निर्दोषसप्तमीकथा	"	"	" " १७७१

गुटका-समूह]

९. निशल्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी
१०. सुगन्धीदशमीवधा	हेमराज	"
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	"
१२. वारहसी चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"

६१८८. गुटका सं० १४५। पत्र सं० २१६। आ० ६×६ $\frac{१}{२}$ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०

२०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. विरुदावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३. दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	६०
५. मेरूपूजा	"	"	
६. चौरासी न्यातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं को एक चौरासी जातिमाला और है।

७. आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९. सप्तश्रृंगिपूजा	भ० देवेन्द्रकोटि	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११. ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२. पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१६१
१३. शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५. आदित्यवारकथा	प० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१६

६१८९. गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारसीविलास एव नाममाला आदि के पाठों का संग्रह है।

६१८३ गुटका सं० १४० । पत्र सं ४-४३ । मा १ ३×७ इ । भाषा-संस्कृत । से० काल सं० १६ इति भाषणा सुवी २ । अपूर्ण । वे सं २०४२ ।

विशेष—अमृतचन्द सूदि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४ गुटका सं० १४१ । पत्र सं ३-१०६ । मा १०३×१३ इ० । भाषा-हिन्दी । से काल सं १८३३ घण्टा सुवी ६ । अपूर्ण । वे सं २४९ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोस्त्वम (१० सं १६४६) तथा बनारसीविद्यास्य प्रादि के पाठ हैं ।

६१८५ गुटका सं० १४२ । पत्र सं ५-६३ । भाषा-हिन्दी । से काल × । अपूर्ण । वे सं २४७ ।

विशेष—मानवराय कृत चर्चासिद्धक हिन्दी टप्पा टीका सहित है ।

६१८६ गुटका सं० १४३ । पत्र सं १६-१७१ । मा ७६×६२ इ । भाषा-संस्कृत । से काल सं १९१२ । अपूर्ण । वे सं २४८ ।

विशेष—सूजा स्तोत्र प्रादि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १९१२ वर्षे चार सुवी २ दिने श्री सुमर्षे सरस्वतीपन्थे बनास्काराण्ये श्रीप्रादिनाचर्यासयेणु मामी शुभस्वाने म जोसकलकीर्ति म शुभमकीर्ति म ज्ञानसूत्रण म विभयकीर्ति म शुभचन्द्र या सुखवेद्याय या भीष्मकीर्ति या मञ्जकीर्ति पुण्यचन्द्र ।

६१८७ गुटका सं० १४४ । पत्र सं ८६ । मा ८×६ इ । भाषा हिन्दी । विषय-कथा । से काल सं १६२ । पूर्ण । वे सं २४६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ मुक्तावमिकथा	भारमञ्ज	हिन्दी	१ काल सं १७८४
२ ऐश्वर्योन्नतकथा	×	"	
३ पुण्याज्जनिपतकथा	समितकीर्ति	"	
४ ब्रह्मसंन्यासपतकथा	म ज्ञानसागर	"	
५ मष्टाङ्गिकाकथा	विभयकीर्ति	"	
६ सङ्कटवीरपतकथा	देवैश्वर्यपुत्र [म विभयपुत्र के द्विप्य]	"	
७ साक्षात्पद्ममीरथा	पाठे हरिहृष्य	"	१ काल सं १७ इ
८ निर्दोषततमीरथा	"	"	" " १७०१

गुटका-संग्रह]

६१६८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल X। अपूर्ण।

वे० सं० २१६६।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१६९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य में है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ले०

काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। आ० ७X५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल

सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रो एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण।

वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की वसापत तथा बादशाहत का व्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३ वारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४ गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६X४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६१६० गुटका सं० १५७। पत्र सं ३-६३। भा ४×४^१/_२ इ। भाषा-संस्कृत। ले काल X।

अपूर्ण। ले सं० २१५६।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६१६१ गुटका सं० १५८। पत्र सं ३३। भा ८×१ इ। ले काल स १८४३। पूर्ण। ले

सं २१५७।

१ पञ्चमस्यामक	हरिवंश	हिन्दी	१-२
		१ काल सं १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७	
२ वैतनक्रियापटोपात्म	वैतनकीर्ति	संस्कृत	

विशेष—नीमिका में चन्द्रमम चेत्यात्म्य में प्रतिस्तिपि हुई थी।

३ पट्टावलि	X	हिन्दी	३३
------------	---	--------	----

६१६२ गुटका सं० १५९। पत्र सं २१। भा ६×६ इ। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। सं०
काल सं १८२९ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। ले सं २१६१।

विशेष—विरवार भावा कड वर्णन है। चांदनबाग के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३ गुटका सं० १६०। पत्र सं ६४६। भा ८×६ इ। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले काल
१७१०। पूर्ण। ले सं २१६२।

विशेष—पूजा पाठ एव दिल्ली की बाबसाहब का स्मरण है।

६१६४ गुटका सं० १६१। पत्र सं ६२। भा २×६ इ। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले काल X।
अपूर्ण। ले सं २१६३।

विशेष—मार्मणा बीबीस ठाणा चर्चा तथा मत्तामरस्तोत्र प्रादि हैं।

६१६५ गुटका सं १६२। पत्र सं ४। भा ७^२/_२×३ इ। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल X
अपूर्ण। ले सं २१६४।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६६ गुटका सं० १६३। पत्र सं २७-२२१। भा ६^३/_२×६ इ। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले
काल X। अपूर्ण। ले सं २१६५।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६७ गुटका सं० १६४। पत्र सं २७-१४७। भा ८×७ इ। भाषा-हिन्दी। ले काल X।
अपूर्ण। ले सं २१६६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

गुटका-संग्रह]

६१६८ गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। ले० काल X। अपूर्ण।
वे० सं० २१६६।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१६९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। आ० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य मे है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। आ० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। ले०
काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। आ० ७X५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल
सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रो एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। आ० ७३X६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण।
वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओं की वशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक
वशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की वसापत तथा वादशाहत का व्यौरा है किस वादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा
घड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३ बारहमासा, प्राणीढा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४ गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६X४३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल X
अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६००५ गुटका सं० १६१। पत्र सं ३३। मा० ७×६ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० कास ×।

अपूर्ण। के सं २२६।

विशेष—भाषक प्रतिभमण हिन्दी अर्थ सहित है। हिन्दी पर कुबराजी का प्रभाव है।

१ से ३ तक की गिनती के यत्र हैं। इसके बीस यंत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के ३६ शालों का यत्र है। इसके १२ पत्र हैं।

६२०६ गुटका सं० १६२। पत्र सं १२-४६। मा० ६३×७३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद्य।

ले कास सं १२३३। अपूर्ण। के सं २२८।

विशेष—शेखर अमतराम नवल बलदेव माणिक, अमराम अमरसीदास कुसुमाकर कुशजम ग्यामत आदि कवियों के विभिन्न राग छान्तियों में पद्य हैं।

६२०७ गुटका सं० १६३। पत्र सं ११। मा ३३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० कास ×।

अपूर्ण। के सं २२७।

विशेष—नित्य नियम पूजा पठ है।

६२०८ गुटका सं० १६४। पत्र सं ७७। मा ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले कास ×।

अपूर्ण। के सं २२९।

विशेष—विभिन्न स्तौत्रों का संग्रह है।

६२०९ गुटका सं० १६५। पत्र सं ३२। मा ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद्य। ले

कास ×। अपूर्ण। के सं २२१।

विशेष—नवल अमतराम अमराम कुमुदपुरण वैभवियम रेखराम, अमराम अमरसुख अमरपाठ अमराम अमर अमरहराम अमरसीदास आदि कवियों के विभिन्न राग छान्तियों में पद्य हैं। पुस्तक अमरसीदासजी के प्रकृतिकरणकर्ता हैं।

६१० गुटका सं० १६६। पत्र सं २४। मा ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले कास ×।

अपूर्ण। के सं २२११।

१ अठारह गठों का बीदासिया लोहट हिन्दी १-७

२ सुहृत्सुखावसीभाषा अठारहटा " १-२६

६२११ गुटका सं० १६७। पत्र सं १४। मा ६×४३ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र।

ले कास ×। अपूर्ण। के सं २२१२।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध में जीत का यन्त्र, सींचा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्तभाविकस्तोत्र हैं ।

६२१२. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० १२-३६ । आ० ७१×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—गुन्द सतसई है ।

६२१३. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० ४० । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रो का संग्रह है ।

६२१४. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ६६ । आ० ८५×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोषा हैं ।

६२१५. गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ३-८१ । आ० ५३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१६ ।

विशेष—जगताराम के पदों का संग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६. गुटका सं० १७२ । पत्र सं० ५१ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ ।

विशेष—भ्रायुर्वेदिक मुसखे एवं रत्ति रहस्य है ।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीस्नात्रविधि ... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८. जन्माष्टमीपूजन ... । पत्र सं० ७ । आ० ११ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९. तुलसीविवाह ... । पत्र सं० ५ । आ० ६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधिविधान । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण) ... । पत्र सं० २ । आ० ६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-नापने तथा तोलने की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३७ । अ भण्डार ।

६२२१ प्रतिष्ठापाठविधि—। पत्र सं २ । मा ८२×६३ इ । माया—हिप्पी । विषय—पूजा

विधि । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै स० ७७२ । अ मन्डार ।

६२२२. प्रायश्चित्तबूषिकाटीका—नन्दिगुरु । पत्र सं २२ । मा ८×२ इ । माया—सस्तुत ।

विषय—भाषारक्षारत्र । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै स० २२८ । क मन्डार ।

विशेष—बाबा बुलीचन्द ने प्रतिमिपि की थी । इसी मन्डार में एक प्रति (वै स० २२८) धीर है ।

६२२३ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । से काल × । वै स ६२ । अ मन्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित्त विनिश्चयवृत्ति' दिया है ।

६२२४ मन्त्रिजाकर—वनमाली मठ । पत्र सं १६ । मा ११३×२ इ । माया—सस्तुत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । से काल × । अपूर्ण । पीर । वै स २२६१ । अ मन्डार ।

६२२५ मन्त्रवाहुसहिता—मन्त्रवाहु । पत्र सं १७ । मा ११३×४२ इ । माया—सस्तुत । विषय—ज्योतिष । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै स २१ । अ मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (वै स १२६) धीर है ।

६२२६ विधि विधान—। पत्र सं ७२-१२३ । मा १२×२१ इ । माया—सस्तुत । विषय—पूजा विधान । र काल × । से काल × । अपूर्ण । वै स १८३ । अ मन्डार ।

६२२७ प्रति सं २ । पत्र सं २२ । से काल × । वै स ६६१ । क मन्डार ।

६२२८. समवराण्यपूजा—पद्माखात वृन्दीबास्ते । पत्र सं ८२ । मा १२३×८ इ । माया—हिप्पी । विषय—पूजा । र काल सं १२२१ । से काल × । पूर्ण । वै स ७७२ । क मन्डार ।

६२२९ प्रति सं २ । पत्र सं ४३ । से काल सं १-२९ मासपर शुद्ध १२ । वै स ७७७ । क मन्डार ।

विशेष—इसी मन्डार में एक प्रति (वै स ७७६) धीर है ।

६२३० प्रति सं ३ । पत्र सं ७२ । से काल सं १२२८ मासवा मुदी ३ । वै स २ । क मन्डार ।

६२३१ प्रति सं ४ । पत्र सं १३६ । से काल × । वै स २७८ । अ मन्डार ।

६२३२. समुच्चयचौबीसवींमन्त्रपूजा—। पत्र सं २ । मा ११३×२३ इ । माया—हिप्पी । विषय पूजा । र काल × । से काल × । पूर्ण । वै स २२ । अ मन्डार ।



ग्रन्थानुक्रमिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अकबर वीरवल वार्ता	—	(हि०)	६८१	अक्षयदशमीकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
अकलङ्कचरित्र	—	(हि० ग०)	१६०	अक्षयदशमीविधान	—	(सं०)	५३८
अकलङ्कचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०	अक्षयनिधिपूजा	—	(स०)	४५४
अकलङ्कदेव कथा	—	(स०)	२१३			५०६, ५३६, ७६३	
अकलङ्कनाटक	मक्खनजाल	(हि०)	३१६	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	(स०)	५७५	अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा	—	(स०)	२१३
			६३७, ६४६, ७१२	अक्षयनिधिमडल [मडलचित्र]	—		५२५
अकलङ्काष्टक	—	(स०)	३७६	अक्षयनिधिविधान	—	(स०)	४५४
अकलङ्काष्टकभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	३७६	अक्षयनिधिविधानकथा	—	(स०)	२४४
अकलङ्काष्टक	—	(हि०)	७६०	अक्षयनिधिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
अकंपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६	अक्षयविधानकथा	—	(स०)	२४६
अक्लमदवार्ता	—	(हि०)	३२४	अक्षरबावनी	द्यानतराय	(हि०)	१५, ६७६
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	—	(प्रा०)	४५३	अजितपुराण	पंडिताचार्य अरुणमणि	(स०)	१४२
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	भगवतीदास	(हि०)	६६४	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	(अप०)	१४२
			७२०	अजितशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४, ७४६	अजितशान्तिस्तवन	नन्दिषेण	(प्रा०)	३७६
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४				६८१
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	—	(स०)	५१५	अजितशातिस्तवन	—	(प्रा० सं०)	३८१
अकृत्रिमचैत्यालय वर्णन	—	(हि०)	७६३	अजितशातिस्तवन	—	(सं०)	३७६
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	जिनदास	(स०)	४५३	अजितशातिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३	अजितशातिस्तवन	—	(हि०)	६१६
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३	अजितशातिस्तवन	—	(स०)	४२३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	पाडे जिनदास	(सं०)	४५३	अजीर्णमञ्जरी	काशीराज	(सं०)	२६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रवीणमञ्जरी	—	(सं)	२१६
प्रठाई का मंडल [चित्र]	—		२२२
प्रठाई का म्यीरा	—	(सं)	५४१
प्रठाईस मूलपुख बख्त	—	(सं)	४८
प्रठाई नाते की कथा	अपि आसचन्द्र	(हि)	२१३
प्रठाई नाते की कथा	सोहट	(हि)	६२३ ७७३
प्रठाई नाते का चौबस्ता	सोहट	(हि)	७२३ ७६८
प्रठाई नाते का चौबस्ता	—	(हि)	७४३
प्रठाई नाते का म्यीरा	—	(हि)	६२३
प्रठासीसद्रुमपुणरास	ब्र० जिनदास	(हि)	७ ७
प्रठोत्तरासनाप्रविधि	—	(हि)	१६८
प्रठाई [साठ'इय] हीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं)	४२२
प्रठाईद्वीप पूजा	अख्तराम	(हि)	४२२
प्रठाईद्वीप पूजा	—	(हि)	७३
प्रठाईद्वीपवणत	—	(सं)	११६
प्रणयमितिषोभि	हरिचन्द्र अमवास	(सं)	२४३ ६२८
प्रणत का मंडल [चित्र]			२२२
प्रतिपत्तमोक्षपूजा	—	(हि)	२२३
प्रभुपुत्राधर	—	(हि)	२६६
प्रथमपत्त पीत	—	(हि)	६८
प्रथमपत्तममार्गच	कवि राजमल्ल	(सं)	१२६
प्रथमपत्तर्षद्वि	सामदेव	(सं)	६६
प्रथमपत्तरोहा	रूपचन्द्र	(हि)	७४६
प्रथमपत्तव	सयचन्द्र दामदा	(हि)	६६
प्रथमपत्तसीसी	पनारसीदास	(हि)	६६
प्रथमपत्तवारहपदा	कवि सूरत	(हि)	६६
प्रथमपत्तवर्षा	प० आशाधर	(सं)	४८
प्रथमपत्तवर्षा न [ग्रन्थ सति]	—	(सं)	२०६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रन्तचतुर्विंशतीकथा	—	(सं)	२१४
प्रन्तचतुर्विंशतीकथा	मुनीन्द्रकीर्ति	(प्रा)	२१४
प्रन्तचतुर्विंशतीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि)	२१४
प्रन्तचतुर्विंशतीपूजा	म० मेरुचन्द्र	(सं)	६ ७
प्रन्तचतुर्विंशतीपूजा	शान्तिदास	(सं)	४५६
प्रन्तचतुर्विंशतीपूजा	—	(सं)	२२७ ७६३
प्रन्तचतुर्विंशतीपूजा	श्री भूपण	(हि)	४२६
प्रन्तचतुर्विंशतीपूजा	—	(सं हि)	४२६
प्रन्तचतुर्विंशतीप्रतकथा व पूजा	सुरासचन्द्र	(हि)	२१६
प्रन्तचतुर्विंशतीप्रतकथा	सकितकीर्ति	(सं)	६६३
प्रन्तचतुर्विंशतीप्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि)	७२३
प्रन्त के छन्दय	धसचन्द्र	(हि)	७२७
प्रन्तजिनपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं)	४२६
प्रन्तजिनपूजा	—	(हि)	७२६
प्रन्तनामपुराण	गुणमन्त्राचार्य	(सं)	१४२
प्रन्तनामपूजा	श्री भूपण	(सं)	४२६
प्रन्तनामपूजा	सेवरा	(हि)	४२६
प्रन्तनामपूजा	—	(सं)	४२६
प्रन्तनामपूजा	ब्र० शान्तिदास	(हि)	६६, ७६३
प्रन्तनामपूजा	—	(हि)	४२७
प्रन्तपूजा	—	(सं)	२१६
प्रन्तपूजाप्रतमहुरम्भ	—	(सं)	४२७
प्रन्तविधानकथा	—	(सं)	६३३
प्रन्तव्रतकथा	म पद्मनाभ	(सं)	२१४
प्रन्तव्रतकथा	सुरसागर	(सं)	२१६
प्रन्तव्रतकथा	सकितकीर्ति	(सं)	६५३
प्रन्तव्रतकथा	मदनकीर्ति	(सं)	२४७
प्रन्तव्रतकथा	—	(सं)	२१४
प्रन्तव्रतकथा	—	(सं)	२४३
प्रन्तव्रतकथा	सुरासचन्द्र	(हि)	२१४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनन्तव्रतपूजा	श्री भूपण	(स०)	५१५	अनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७१ ७६६
अनन्तव्रतपूजा	—	(स०)	४५७	अनेकार्थशत	भ० हर्षकीर्त्ति	(स०)	२७१
			५३६, ६६३, ७२८	अनेकार्थसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	२७१
अनन्तव्रतपूजा	भ० विजयकीर्त्ति	(हि०)	४५७	अनेकार्थसंग्रह [महीपकोश]	—	(स०)	२७१
अनन्तव्रतपूजा	साहू सेवगराम	(हि०)	४५७	अन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
अनन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८	अन्तरिक्षपार्वनाथाष्टक	—	(स०)	५६०
			५१६, ५८६, ७२८	अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	५७३
अनन्तव्रतपूजाविधि	—	(सं०)	४५७	अन्यस्फुट पाठ संग्रह	—	(हि०)	६२७
अनन्तव्रतविधान	मदनकीर्त्ति	(स०)	२१४	अपराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(स०)	६६२
अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०	अवजदकेवली	—	(स०)	२७६
अनन्तव्रतोद्यापनपूजा	श्रा० गुणचन्द्र	(स०)	४५७	अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	(स०)	३१६
			५१३, ५३६, ५४०	अभिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(स०)	२७१
अनागारभक्ति	—	(सं०)	६२७	अभिधानचिंतामणिनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	२७१
अनायी ऋषि स्वाध्याय	—	(हि० गुण०)	३७६	अभिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगण	(स०)	२७२
अनायानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५	अभिधानसार	पं० शिवजीलाल	(स०)	२७२
अनाथीसाध चौढालिया	विमलविनयगण	(हि०)	६८०	अभिषेक पाठ	—	(स०)	४५८
अनाथीमुनि सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				५६५, ७६१
अनाथीमुनि सज्जाय	—	(हि०)	४३५	अभिषेकविधि	लक्ष्मीसेन	(स०)	४५८
अनादिनिधनस्तोत्र	—	(स०)	३७६, ६०४	अभिषेकविधि	—	(स०)	३६८
अनिटकारिका	—	(स०)	२५७				४५८, ५७०
अनिटकारिकावचुरि	—	(स०)	२५७	अभिषेकविधि	—	(हि०)	४५८
अनित्यपञ्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	६८६	अमरकोश	अमरसिंह	(स०)	२७२
अनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५	अमरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(स०)	२७२
अनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८	अमरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
अनुभवविलास	—	(हि०)	५११	अमरूपातक	—	(स०)	१६०
अनुभवानन्द	—	(हि० ग०)	४८	अमृतवर्मरसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(स०)	४८
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	महीचरणकवि	(स०)	२७१	अमृतसागर	म० सवाई प्रतापसिंह	(हि०)	२६६
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	—	(स०)	२७१	अरहना सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अनेकार्थनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६	अरहन्तस्तवन	—	(स०)	३०८

ग्रन्थ नाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
परिष्टपर्वा	—	(सं) २७६	परिष्कारोपुषा	वेद्यचन्द्र	(हि) ७६०
परिष्टाम्याय	—	(प्रा) ४१६	परिष्करी [विवागम स्वात टीका] अकलङ्कवेष	(स)	१२६
परिहृत केवसीराधा	—	(सं) २७६	परिष्कहमी	आ० विद्यानन्दि	(सं) १२६
पर्वदीपिका	जिनभद्रगणि	(प्रा) १	परिष्कसम्यक्दर्शनकथा	सकलकीर्त्ति	(सं) २१५
पर्वप्रकाश	सङ्गानाथ	(सं) २६९	परिष्कपोपाख्यात	पं० मेधावी	(सं) २१५
पर्वप्रकाशिका	महासुन्द कासखीवाल	(हि ग) १	परिष्कपदसहस्रशीलमेव	—	(सं) १९१
पर्वसार टिप्पण्य	—	(सं) १७	परिष्किकाकथा	पराकीर्त्ति	(सं) १४२
पर्वत्रयचन	—	(सं) १	परिष्किकाकथा	शुभचन्द्र	(सं) २१५
पर्वहृत्त्रयचन व्याख्या	—	(सं) २	परिष्किकाकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि) ७४
पर्वनक्षत्रीयविद्योगित विमलविनय [विमलराग]	(हि)	४३३	परिष्किकाकथा	नयमञ्ज	(हि) २१५
पर्वश्रुतिविधान	—	(सं) १७४ ११८	परिष्किका कौमुदी	—	(सं) २१५
पसन्दारटीका	—	(सं) १ ८	परिष्किकापीठ	भ० शुभचन्द्र	(हि) १८९
पसन्दारस्मानर	इक्ष्वाकुराय पशीधर	(हि) १ ८	परिष्किका जयमाल	—	(सं) ४५६
पसन्दारवृत्ति	जिनभद्र न सूरि	(स) १ ८	परिष्किका जयमाल	—	(प्रा) ४५६
पसन्दारवाचन	—	(सं) १ ८	परिष्किकापूजा	—	(सं) ४५६
पर्वति पात्रलापजिमस्तवम	इर्षसूरि	(हि) १७६		१७ १६९ ११८ ७८४	
पम्पप्रकरण	—	(सं) २५७	परिष्किकापूजा	धानतराय	(हि) ४९ ७ ५
पम्पपार्य	—	(सं) २५७	परिष्किकापूजा	—	(हि) ४९१
पञ्चसमितिस्वका	—	(प्रा) ५७२	परिष्किकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं) ४९
पञ्चाकराद्विहीनपा	भक्तसागर	(सं) २१९	परिष्किकाभक्ति	—	(सं) १६४
पञ्चोन्नरोद्विहीनवतनपा	—	(हि म) २१९	परिष्किकापठकथा	विनयकीर्त्ति	(हि) ११४
पञ्चमसण	प० नङ्गल	(हि) ७८१		७८ ७६४	
पञ्चरीया	—	(सं) ७८६	परिष्किकापठकथा	—	(सं) २१५
पञ्चरत्नाङ्गामगम्य	—	(सं) १११	परिष्किकापठकथासंपद	शुभचन्द्रसूरि	(सं) २१९
पट्ट [पूजा]	नमिदत्त	(सं) १९	परिष्किकापठकथा	शास्त्रचन्द्र विनोदीसास	(हि) १२२
पट्ट [पूजा]	—	(हि) १९ ७ १	परिष्किकापठकथा	ब्र ज्ञानसागर	(हि) २१
पट्टमप्रशुक्तिवचन	—	(स) १	परिष्किकापठकथा	—	(हि) २१७ ७२७
पट्टमट्ट	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा) ६६	परिष्किकापठकथा	—	(सं) ११९
पट्टमप्रकाश	इक्ष्वाकुराय द्वावदा	(हि ग) ६६	परिष्किकापठकथा	भ० शुभचन्द्र	(हि) ४९१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अष्टाह्निकाप्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६	आतमशिक्षा	प्रसन्नचन्द्र	(हि०)	६१६
अष्टाह्निकाप्रतोद्यापन	—	(हि०)	४६१	आतमशिक्षा	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
अकुरारोपणविधि	प० आशावर	(सं०)	४५३	आतमशिक्षा	सालम	(हि०)	६१६
			५१७	आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	—	(प्रा०)	२
अकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	४५३	आत्मध्यान	वनारसीदास	(हि०)	१००
अकुरारोपणविधि	—	(सं०)	४५३	आत्मनिन्दास्तवन	रत्नाकर	(सं०)	३८०
अकुरारोपणमडलचित्र			५२५	आत्मप्रबोध	कुमार कवि	(सं०)	१००
अखनचौरकथा	—	(हि०)	२१५	आत्मसबोध जयमाल	—	(हि०)	७५५
अखना को रास	धर्मभूषण	(हि०)	५६३	आत्मसबोधन	द्यानतराय	(हि०)	७१४
अखनारास	शातिकुशल	(हि०)	३६०	आत्मसबोधनकाव्य	—	(सं०)	१००
	आ			आत्मसबोधनकाव्य	—	(अप०)	१००
आकाशपञ्चमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५	आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१००
आकाशपञ्चमीकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७	आत्मानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१०१
आकाशपञ्चमीकथा	—	(सं०)	२१६	आत्मानुशासनभाषा	पं० टोडरमल	(हि० ग०)	१०२
आकाशपञ्चमीकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४५	आत्मावलोकन	दीपचन्द्र कासलीवाल	(" ")	१००
आकाशपञ्चमीकथा	पाडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४	आत्रेयवैद्यक	आत्रेय ऋषि	(सं०)	२६६
आकाशपञ्चमीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६	आदिजिनवरस्तुति	वमलकीर्त्ति	(हि०)	४३६
आगमपरीक्षा	—	(सं०)	३५५	आदित्यवारकथा	—	(सं०)	६६६
आगमविलास	द्यानतराय	(हि०)	४६	आदित्यवारकथा	गगाराम	(हि०)	७६५
आगामी त्रैसठशलाका	पुरुष वर्णन	(हि०)	१४२	आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
आचारसार	वीरनन्दि	(सं०)	४६	आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०)	२४४
आचारसार	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६	६०१, ६८३, ६८५, ७२३, ७४०, ७४५, ७५६, ७६२			
आचारागसूत्र	—	(प्रा०)	२	आदित्यवारकथा	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१२
आचार्यभक्ति	—	(सं०)	६३३	आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	(हि०)	६०७
आचार्यभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०	आदित्यवारकथाभाषा टीका	मूलकर्ता- सकलकीर्त्ति		
आचार्यों का व्यौरा	—	(हि०)	३७०	भाषाकार- सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं० हि०)	७०७	
आठकोडिमुनिपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६१	आदित्यवारकथा	—	(हि०)	६२३
आतमशिक्षा	पद्मकुमार	(हि०)	६१६	६७६, ७१३, ७१४, ७१८, ७४१			
				आदित्यवारपूजा	—	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
प्रादित्यप्रतपुत्रा	—	(सं) ४११	प्राचीनभर का समबसरण	—	(हि) २९९
प्रादित्यवारप्रतोषापत्र	—	(सं) २४	प्राचीनभरस्तवन	त्रिवचन्द्र	(हि) ७
प्रादित्यप्रतपुत्रा	सुरशासन	(हि) ७११	प्राचीनभरविष्णुति	—	(हि) ४१७
प्रादित्यप्रतपुत्रा	केरापसेन	(प) ४९१	प्राङ्कुमारपमास	कनकसोम	(हि) ९१७
प्रादित्यप्रतोषापत्र	—	(सं) २४	प्राभ्यास्मिकगाथा	म० झरमीचन्द्र	(प्रप) १ १
प्रादिनायकस्यालुचका	प्र० ज्ञानसागर	(हि) ७ ७	प्रागन्वमहरीस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(घ) ९ ८
प्रादिनाय गीत	मुनि हेमचिद्ध	(हि) ४१९	प्रागन्वस्तवन	—	(सं) २१४
प्रादिनायपुत्रा	मनहरदेव	(हि) २११	प्रातपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं) ११६
प्रादिनायपुत्रा	रामचन्द्र	(हि) ४९१ ९२	प्रातमीमांसा	समन्तभद्राचार्य	(घ) ११
प्रादिनायपुत्रा	प्र० शातिदास	(हि) ७६२	प्रातमीमांसानावा	अयचन्द्र झावडा	(हि) ११
प्रादिनायपुत्रा	सेवगराम	(हि) ९७४	प्रातमीमांसालेखति	विद्यानन्दि	(सं) ११
प्रादिनायपुत्रा	—	(हि) ४९२	प्रातनीचू का भगडा	—	(हि) ९९१
प्रादिनाय श्री विनती	—	(हि) ७७४ ७५२	प्रातर के राजाधोका रात्म्यकाम विवरण	—	(हि) ७५६
प्रादिनाय विनती	कनककीर्ति	(हि) ७२२	प्रातर के राजाधोकी बंदावलि	—	(हि) ७५६
प्रादिनायमन्त्राय	—	(हि) ४१९	प्रासुबेरिक मन्त्र	—	(सं) २६७ ७९१
प्रादिनायस्तवन	कवि परह	(हि) ७१२	प्रासुबेरिक गुसले	—	(सं) २६७ २७९
प्रादिनायस्तात्र	समयसुन्दर	(हि) ९१९	प्रासुबेरिक गुसले	—	(हि) ९ १
प्रादिनायट्टक	—	(हि) २६४	१६७ १७७ १६ १६९ १६७ ७ १ ७ २ ७१४		
प्रादिपुराण	त्रिनसेनाचार्य	(सं) १४२ ९४६	७१८ ७१६, ७२१ ७१ ७२९ ७९ ७९१ ७९९		
प्रादिपुराण	मुत्तबन्ध	(प्रप) १४१ ९४२	७६७ ७६६		
प्रादिपुराण	दौलतराम	(हि प) १४४	प्रासुबेरि गुसलों का संग्रह	—	(हि) २६९
प्रादिपुराण टिप्पणा	प्रभाषन्	(सं) १४३	प्रासुबेरिमहोदधि	सुखदेव	(सं) २६७
प्रादिपुराण त्रिकली	गङ्गादास	(हि) ७ १	प्राचीनी	—	(सं) ९९५
प्राचीनभर भारती	—	(हि) २६४	प्राचीनी	पानतराय	(हि) ९२१ ९२२
प्राचीनभरगीत	रङ्गविजय	(हि) ७७६	प्राचीनी	हीपचन्द्र	(हि) ७७७
प्राचीनभर के १ मय	गुणचन्द्र	(हि) ७९२	प्राचीनी	मानसिंह	(हि) ७७७
प्राचीनभरनुमाटा	—	(हि) ४९२	प्राचीनी	कालचरण	(हि) ९२२
प्राचीनभरकाव्य	ज्ञानभूषण	(हि) ९९	प्राचीनी	विहारीदास	(हि) ७७७
प्राचीनभररेवता	मदग्रीति	(हि) ९८२	प्राचीनी	शुभचन्द्र	(हि) ७७९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
भारती पञ्चपरमेष्ठी	प० चिमना	(हि०)	७६१	आश्रव वर्णन	—	(हि०)	२
भारती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६	आपाढभूति चौढालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७
भारती संग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६	आहार के ४६ दोषवर्णन	भैया भगवतीदास	(हि०)	५०
भारती संग्रह	द्यानतराय	(हि०)	७७७	इ			
भारती सिद्धो की	खुशालचन्द	(हि०)	७७७	इक्कीसठाणाचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०)	२
भाराधना	—	(प्रा०)	४३२	इन्द्रजाल	—	(हि०)	३४७
भाराधना	—	(हि०)	३८०	इन्द्रध्वजपूजा	विश्वभूषण	(स०)	४६२
भाराधना कथा कोश	—	(स०)	२१६	इन्द्रध्वजमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६२
भाराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६५८	इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०)	६६१
भाराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्त्ति	(हि०)	६८५	इष्टछत्तीसी	—	(हि०)	७६० ७६३
भाराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०)	७८२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(स०)	३८०
भाराधना विधान	—	(स०)	४६२	इष्टोपदेशटीका	पं० आशाधर	(स०)	३८०
भाराधनासार	देवसेन	(प्रा०)	४६	इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०)	७५५
	५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४			इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य)	३८०
भाराधनासार	जिनदास	(हि०)	७५७	इ			
भाराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(स०)	२१६	ईश्वरवाद	—	(स०)	१३१
भाराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६	उ			
भाराधनासारभाषा	—	(हि०)	५०	उच्चग्रहफल	बलदत्त	(स०)	२७६
भाराधनासार वचनिका	बा० दुलीचन्द	(हि० ग०)	५०	उणादिसूत्रसंग्रह	उज्वलदत्त	(स०)	२५७
भाराधनासारवृत्ति	प० आशाधर	(स०)	५०	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४५ ४१५
भारामशोभाकथा	—	(स०)	२१७	उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(स०)	१४५
भालापपद्धति	देवसेन	(सं०)	१३०	उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य)	१४५
भालोचना	—	(प्रा०)	५७२	उत्तरपुराणभाषा	संघी पन्नालाल	(हि० गद्य)	१४६
भालोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०)	५६१	उत्तराध्ययन	—	(प्रा०)	२
भालोचनापाठ	—	(हि०)	४२६	उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०)	३
	६८५, ७६३, ७४६			उदयसत्ताबधप्रकृतिवर्णन	—	(स०)	३
आश्रवत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	२	उद्धवगोपीसवाद	रसिकरास	(हि०)	६६४
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(प्रा०)	७००	उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध	—	(स०)	१६०
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(हि०)	२	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०)	३२४
				उपदेशपञ्चोत्तीसी	—	(हि०)	६५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
उपदेशरत्नमाला	सकलमूषण	(सं) ५	श्रुतिष्यक्त	स्वल्पभन्द विसाला	(हि) ३२ ३११
उपदेशरत्नमाला	धर्मदासगण्डि	(प्रा) ७५८	श्रुतमन्त्रस्तुति	विनसेन	(सं) ३८१
उपदेशरत्नमालाभाषा	—	(प्रा) ३२	श्रुतमन्त्रस्तुति	पद्मनन्द	(प्रा) ३८१ ५०६
उपदेशरत्नमालामापा	देवीसिंह द्याबडा	(हि पद्य) ३२	श्रुतमनापचरित्र	म० सकलकीर्ति	(सं) १९०
उपदेशरत्नमालामापा	शा० दुसीचम्ब	(हि) ५१	श्रुतमस्तुति	—	(सं) ३८२
उपदेशरत्नक	दानवराय	(हि) ३२५ ७५७	श्रुतिमन्त्रसूत्र	शा० गुणनन्द	(सं) ४९३
उपदेशरत्नक	द्वेषादिश	(हि) ३८१			३३७ ३३६, ७९२
उपदेशरत्नक	रगविजय	(हि) ३८१	श्रुतिमन्त्रसूत्र	मुनि ज्ञानमूषण	(सं) ४९३ ९१९
उपदेशरत्नक	श्रुति रामचन्द	(हि) ३८	श्रुतिमन्त्रसूत्र	—	(सं) ४९४ ७९१
उपदेशरत्नक	भडारी नमिचन्द	(प्रा) ५१	श्रुतिमन्त्रसूत्र	शैलव आसेरी	(हि) ४९४
उपदेशरत्नक	भागचन्द	(हि) ३१	श्रुतिमन्त्रसूत्र	—	(हि) ७२७
उपदेशरत्नक	—	(प्रा) ४९३	श्रुतिमन्त्रसूत्र	सदासुक्त फासलीबाक	(हि) ७२९
उपदेशरत्नक	—	(सं) ३७३	श्रुतिमन्त्रसूत्र	—	(सं) ५९३
उपदेशरत्नक	—	(हि) ३७३	श्रुतिमन्त्रसूत्र	—	(सं) ९४५ ९८३
उपदेशरत्नक	—	(हि) ७ १	श्रुतिमन्त्रसूत्र	—	(सं) ९५८
उपदेशरत्नक	पूण्यचन्द्राचार्य	(सं) ३८१	श्रुतिमन्त्रसूत्र	गौतमस्वामी	(सं) ३८२
उपदेशरत्नक	—	(सं) ४२४			४२४ ४२८ ४३१, ९४७ ७३२
उपदेशरत्नक	पुपाचार्य	(सं) ३२	श्रुतिमन्त्रसूत्र	—	(सं) ३८२ ९६२
उपदेशरत्नक	—	(सं) २१७			
उपदेशरत्नक	—	(सं) २५७			
उपदेशरत्नक	—	(सं) ३२			
उपदेशरत्नक	शा० लक्ष्मीधर	(प्रा) ३२			
उपदेशरत्नक	—	(सं) ३२			
उपदेशरत्नक	—	(सं) ७११			
श्रु					
श्रुतिमन्त्र	धर्मपद्मगण्डि	(प्रा) २१८	एकसीपुनहत्तर श्रीवर्त्मन	—	(हि) ७४४
श्रुतिमन्त्र	फातिनास	(सं) १९१	एकाशरणीय	सुपयक	(सं) २७४
श्रुतिमन्त्र	—	(सं) ७२३	एकाशरत्नमाला	—	(सं) २७४
			एकाशरीणीय	वररुधि	(सं) २७४
			एकाशरीणीय	—	(सं) २७४
			एकाशरीणीय [दशाधर]	—	(सं) ३८२
			एकीभासरत्न	पादिराज	(सं) २२४
			३८२ ४२४ ४२५, ४२६ ४३१, ४३२ ४३३, ४७२,		
			४७५ ४७६ ५ ६, ६३३ ६३७ ६४४ ६४५, ६४६		
			६६६ ७२ ७३७ ७८६		

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४०१	कथासग्रह	—	(स० हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	(हि०)	३८३	कथासग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
	४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०			कथासग्रह	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८३	कथासग्रह	—	(हि०)	७३७
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५	कपडामाला का दूहा	सुन्दर	(राज०)	७७३
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३	कमलाष्टक	—	(स०)	६०७
एकश्लोकरामायण	—	(स०)	६४६	कवयन्नाचोपई	जिनचन्द्रसूरि	(हि० रा०)	२२१
एकीश्लोकभागवत	—	(स०)	६४६	करकण्डुचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६१
	श्री			करकुण्डचरित्र	मुनि कनकामर	(अप०)	१६१
श्रीषधियों के नुसखे	—	(हि०)	५७५	करणाकौतूहल	—	(स०)	२७६
	क			करलवखण	—	(प्रा०)	२७६
कवका	गुलाबचन्द	(हि०)	६४३	कदगाष्टक	पद्मानन्दि	(स०)	६३३
कवकावतीसी	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७६			६३७, ६६८	
कवकावतीसी	नन्दराम	(हि०)	७२२	कदगाष्टक	—	(हि०)	६४२
कवकावतीसी	मनराम	(हि०)	७२३	कर्णपिशाचिनीयन्त्र	—	(स०)	६१२
कवकावतीसी	—	(हि०)	६५१	कर्पूरचक्र	—	(स०)	२७६
	६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१			कर्पूरप्रकरण	—	(स०)	३२५
कवका विनती [वारहखडी]	धनराज	(हि०)	६२३	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	(स०)	३१६
कच्छावतार [चित्र]	—	(हि०)	६०३	कर्मग्रन्थसत्तरी	—	(प्रा०)	३
कछवाहा वशके राजाओंके नाम	—	(हि०)	६८०	कर्मचूर [मण्डलचित्र]	—		५२५
कछवाहा वश के राजाओंकी वधावलि	—	(हि०)	७६७	कर्मचूरप्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति	(हि०)	५६२
कठियार कानडरीचौपई	मानसागर	(हि०)	२१८	कर्मचूरप्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०)	४६४, ५१६
कथाकोश	हरिपेणाचार्य	(स०)	२१६	कर्मचूरप्रतोद्यापन	—	(स०)	५०६, ४६४, ५४०
कथाकोश [भारधनाकथाकोश]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२१६	कर्मछतीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२१६	कर्मछतीसी	—	(हि०)	६८६
कथाकोश	—	(स०)	२१६	कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(सं०)	५६०
कथाकोश	—	(हि०)	२१६	कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४६५
कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(स०)	२२०			५३७, ६४५	
कथासग्रह	—	(सं०)	२२०	कर्मदहनपूजा	—	(सं०)	४६५
						५१७, ५४०	१८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कर्मबह्वनपूजा	टेकचम्ब	(हि)	४६५	कर्मधारोपणनिधि	—	(सं)	४६६
कर्मबह्वन [मण्डल पत्र]	—	(हि)	५२५	कर्मिकुण्डपासर्बनापपूजा म० प्रमाचम्ब	—	(सं)	४६७
कर्मबह्वन वा मण्डल	—	(हि)	६३८	कर्मिकुण्डपासर्बनापपूजा थराविमय	—	(सं)	६५८
कर्मबह्वनप्रतमम	—	(सं)	१४७	कर्मिकुण्डपासर्बनापपूजा	—	(हि)	५६७
कर्म कावर्म कर्मन	—	(प्रा)	६२६	कर्मिकुण्डपासर्बनाप [मण्डलपत्र]	—	(सं)	५२५
कर्मपदीसी	भारमल	(हि)	७१६	कर्मिकुण्डपासर्बनापस्तवन	—	(सं)	६६
कर्मप्रवृत्ति	नेमिचन्द्राषाये	(प्रा)	३	कर्मिकुण्डपूजा	—	(सं)	४६७
कर्मप्रवृत्तिबर्षा	—	(हि)	५ ७२				४७२ ५१४ ५७४ ६ ६ ६४
कर्मप्रवृत्तिबर्षा	—	(हि)	९७	कर्मिकुण्डपूजा धीर जममाल	—	(प्रा)	७६१
कर्मप्रवृत्तिटीका	सुमतिश्रीति	(सं)	५	कर्मिकुण्डस्तवन	—	(सं)	९७
कर्मप्रवृत्ति वा ध्यौरा	—	(हि)	७१८	कर्मिकुण्डस्तवन	—	(प्रा)	६५६
कर्मप्रवृत्तिवर्णन	—	(हि)	७१	कर्मिकुण्डस्तोत्र	—	(सं)	४७५
कर्मप्रवृत्तिविधान	धनारसीदाम	(हि)	५	कर्मियुग की कथा	केशव	(हि)	६२२
			३६ ६७७ ७४९	कर्मियुग की कथा	द्वारकादास	(हि)	७७३
कर्मवतीमी	राजसमुद्र	(हि)	६१७	कर्मियुग की विनती	देवाप्रसाद	(हि)	९१५
कर्मयुद्ध की विनती	—	(हि)	६६४				६८५ ७८८
कर्मविवाह	—	(सं०)	२२१ ५६६	कर्मिप्रवृत्तार [विष]	—	(सं)	६३
कर्मविवाहटीका	मकलश्रीति	(सं)	५	कर्मरुद्रपूजा	—	(सं)	६६५
कर्मविवाहपत्र	—	(हि)	२८	कर्ममिडोत्सवह	—	(प्रा)	६
कर्मरतिनाम [कर्मविवाह]	—	(सं)	२८	कर्मगूढ	भद्रबाहु	(प्रा)	६
कर्मगणपगूढ	दुष्यन्तमूरि	(प्रा)	५	कर्मगूढ	मिक्कलू अउमयुल्ल	(प्रा)	६
कर्मदृष्टोपना	—	(हि)	६२२	कर्मगूढटीका	—	(हि)	३८३
कर्मों की १४८ प्रवृत्तियाँ	—	(हि)	७६	कर्मगूढटीका	समयमुद्रापाष्याय	(सं)	७
कर्मविधान	माहन	(सं)	४६६	कर्मगूढवृत्ति	—	(प्रा)	७
कर्मविधान	—	(सं)	४६६	कर्मगूढ [कर्मगूढटीका]	—	(सं)	२६७
कर्मविधि	—	(सं)	४२८ ६१९	कर्मगूढ	समस्तभद्र	(प्रा)	३८३
कर्मविधि	विश्वमूषण	(हि)	४६६	कर्मगूढ [कर्मगूढ]	—	(सं)	३७६
कर्मविधि	१० आशाधर	(सं)	४६७	कर्मगूढकर्मि	विनयसागर	(सं)	३८४
कर्मविधि	१० आशाधर	(सं)	४६६	कर्मगूढकी दर	दुष्यन्तमूरि	(सं)	४६६

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(स०)	३८४	कवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५				कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
५६५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०				कवित्त	वृन्दावनदास	(हि०)	६८२
६८१, ६६३, ७०१, ७३१, ७६३				कवित्त	सन्तराम	(हि०)	६६२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	३८५	कवित्त	सुखलाल	(हि०)	६५६
कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(स०)	३८५	कवित्त	सुन्दरदास	(हि०)	६४३
कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(स० हि०)	६८१	कवित्त	संवरग	(हि०)	७७२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८५	कवित्त	— (राज० डिंगल)		७७०
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	३८५	कवित्त	—	(हि०)	६८१
४२६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८,							७१७, ७५८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१
६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५				कवित्त	चुगलखोर का शिवलाल	(हि०)	७८२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेलीराम	(हि०)	७८६	कवित्तसंग्रह	—	(हि०)	६५६, ७४३
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	३८५	कविप्रिया	केशवदेव	(हि०)	१६१
कल्याणमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८६	कविदत्तभ	हरिचरणदास	(हि०)	६८८
७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७६८				कक्षपुट	सिद्धनागार्जुन	(स०)	२६७
कल्याणमाला	पं० आशाधर	(स०)	५७५, ३८५	कातन्त्रटीका	—	(स०)	२५७
कल्याणविधि	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	६४१	कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(स०)	२५८
कल्याणाष्टकस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	५७८	कातन्त्ररूपमालावृत्ति	—	(स०)	२५८
कवलचन्द्रायणव्रतकथा	—	(स०)	२२१, २४६	कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि	चारित्रसिंह	(स०)	२५७
कविकर्पटी	—	(प०)	३०६	कातन्त्रव्याकरण	शिववर्मा	(स०)	२५६
कवित्त	अप्रदास	(हि०)	७६८	कादम्बरीटीका	—	(स०)	१६१
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०	कामन्दकीयनोतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कवित्त	केसवदास	(हि०)	६४३	कामशास्त्र	—	(हि०)	७३७
कवित्त	गिरधर	(हि०)	७७२, ७८६	कामसूत्र	कविद्वाल	(प्रा०)	३५३
कवित्त	म० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२	कारकप्रक्रिया	—	(स०)	२५६
कवित्त	झीहल	(हि०)	७७०	कारकविवेचन	—	(स०)	२५६
कवित्त	जयकिशन	(हि०)	६४३	कारकसमासप्रकरण	—	(सं०)	२५६
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५	कारखानो के नाम	—	(हि०)	७५६
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५६	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कालिकेयानुप्रेषाटीका	शुभचन्द्र	(सं)	१४	कृष्णरामणिवेसि	पृथ्वीराज राठौर (राज विद्यम)		७७
कालिकेयानुप्रेषाटीका	—	(सं)	१४	कृष्णरामणिवेसिटीका	—		७७
कालिकेयानुप्रेषामापा	अयचन्द्र छात्रका	(हि गद्य)	१४	कृष्णरामणिवेसि हिनदोटोका सहित	—	(हि)	६२६
कासचक्रवर्तिन	—	(हि)	७७	कृष्णरामणिमञ्जुस	पद्म भगवत	(हि)	२२१
काशीनागबननकथा	—	(हि)	७३८	कृष्णावतारचित्र	—		६३
काशीसहस्रनाम	—	(सं)	१८	केवलमहात्म्य का स्मृति	—	(हि)	५३
काभ विष्णुके उच्छ्रुतवारेका मत्र	—	(सं हि)	५७१	केवलमानीसम्हाय	विनयचन्द्र	(हि)	३८३
काभ्यप्रकाशटीका	—	(सं)	१६१	कोकमञ्जरी	—	(हि)	६२७
कासिम रसिकबिनास	—	(हि)	७७१	कोकघात्म्य	—	(सं)	३५३
किराठार्जुनीय	महाकवि भारवि	(सं)	१६१	कोकसार	आनन्द	(हि)	३५३
कुपुरसाधना	—	(हि)	२३	कोकसार	—	(हि)	३२३ ६२६
कुण्डसपिरिपुत्रा	म० विश्वमूपण	(सं)	४६७	कोकिलापञ्चमीकथा	म इर्षा	(हि०)	२२८
कुण्डमिया	अगरदास	(हि)	१६	कौतुकसमपूर्णा	—	(हि)	७८६
कुदेवस्वस्ववर्णन	—	(हि)	७२	कौतुकमीमांसती	—	(सं)	२८
कुमारसम्भव	कालिदास	(सं)	१६२	कौमुदीकथा	आ० घमकीर्ति	(सं)	२२२
कुमारसम्भवटीका	कनकसागर	(सं)	१६२	कज्जिवास्तवोद्यारनपूजा	सहितकीर्ति	(सं)	४६८
कुबजयानन्द	अपय दीक्षित	(सं)	३८	कज्जिवास्तवोद्यारन	—	(सं)	४६४
कुबजयानन्द	—	(सं)	३				६६८, ३१७
कुबजयानन्दकारिका	—	(सं)	३६	काशीवारस (मण्डस चित्र)	—		५२३
कुबजयानन्दकविता	—	(सं)	३६	काशीवतोद्यारनमण्डकपूजा	—	(सं)	३१३
कुबजयानन्दकविता	किनाङ्गसूरि	(हि)	७७६	क्रियाकसाय	—	(सं)	५७६
कुबजयानन्दकविता	समयसुन्दर	(हि)	७७६	क्रियाकसायटीका	प्रभाचन्द्र	(सं)	५३ ५३५
कुबजयानन्दकविता	—	(सं)	१४	क्रियाकसायटीका	—	(सं)	५३
कुमीमण्डन	अयसाह	(सं)	५२	क्रियाकसायकृति	—	(सं)	५३
कुन्तराठ	—	(सं)	२३६	क्रियायोगभाषा	किरातसिंह	(हि)	२३ ६१३
कुण्डल	ठकडूरमी	(हि)	६३८	क्रियायोगभाषा	—	(हि)	५३
कुण्डल	चन्द्रकीर्ति	(हि)	३८६	क्रियायोगभाषा	—	(हि)	६७१
कुण्डल	बिनादीलास	(हि)	७३३	क्रियायोगभाषा	—	(हि)	५७८
कुण्डल	—	(हि)	७३८	क्रियायोगभाषा	—	(हि)	५७८
कुण्डल	श्री किरानमाल	(हि)	४३७	दशबुधमणि	बाहीमसिंह	(सं)	१६२
कुण्डल	—	(हि)	७३८	दशगुणारटीका	—	(सं)	७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
क्षपणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(स०)	७	खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
क्षपणासारभाषा	प० टोडरमल	(हि०)	७	खण्डेलवालो की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७	खण्डेलवालोकी उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
क्षमावतीसी	जिनचन्द्रसूरि	(हि०)	५४	खण्डेला की चरचा	—	(हि०)	७०२
क्षमावणोपूजा	ब्रह्मसेन	(स०)	५६४	खण्डेला की वशावलि	—	(हि०)	७५६
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२	ख्याल गागोचन्दका	—	(हि०)	२२२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	—	(स०)	५१५	ग			
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द्र	(स०)	७६३	गजपथामण्डलपूजा	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४६८
क्षेत्रपाल की आरती	—	(हि०)	६०७	गजमोक्षकथा	—	(हि०)	६००
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	(हि०)	६२३	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूर	(स०)	१६३
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३	गडाराशातिकविधि	—	(स०)	६१२
क्षेत्रपाल नामावली	—	(स०)	३८६	गराधरचरणारविदपूजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(स०)	६८६	गराधरजयमाल	—	(प्रा०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	४६७	गराधरवलयपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	६६०
क्षेत्रपालपूजा	—	(स०)	४६८	गराधरवलयपूजा	आशाधर	(स०)	७६१
	५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३			गराधरवलयपूजा	—	(स०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	७१३	गराधरवलय [मडलचित्र]	—	५१४, ६३६, ६४५, ७६१	
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७	गराधरवलयमन्त्र	—	(स०)	६०७
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(स०)	३४७	गराधरवलययन्त्रमडल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
	५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७			गरापाठ	वादिगाज जगन्नाथ	(स०)	२५६
क्षेत्रपालापृक	—	(स०)	६५५	गरासार	—	(सं०)	५४
क्षेत्रपालव्यवहार	—	(स०)	२८०	गरातनाममाला	—	(स०)	३६८
क्षेत्रसमामटीषा	हरिभद्रसूरि	(स०)	५४	गरातशास्त्र	—	(स०)	३६८
क्षेत्रसमानप्रकरण	—	(प्रा०)	५४	गरातसार	हेमराज	(हि०)	३६८
ख				गराशेखर	—	(हि०)	७५३
खण्डप्रगतिव्याख्या	—	(स०)	१६३	गणेशद्वारादनाम	—	(स०)	६४६
खण्डसदानगोत्र	—	(हि०)	७५६	गर्गमनोरमा	—	(सं०)	२८०
खण्डेलवालो के ८४ गोत्र	—	(हि०)	७६०	गर्गमहिता	गर्गऋषि	(सं०)	२८०

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
मर्मवस्तुसंग्रहविमर्शमे मत्तियो	—	(हि) १७३	गुरुस्वानवर्णन	—	(हि) ९
गर्मवहारचक्र	देवनन्दि (स)	१११ ७१७	गुरुस्वानभ्याख्या	—	(स) १७१
गिरनारक्षेत्रपुष्पा	म० विश्वभूषण	(सं) ४६९	गुणाक्षरमासा	मनराम	(हि) ७२
गिरनारक्षेत्रपुष्पा	—	(हि) ४६९, ५१३	गुरावली	—	(सं) १२८, १८९
गिरनारक्षेत्रपुष्पा	—	(हि) ५१३	गुरुघटक	धानतराय	(हि) ७७७
गिरनारक्षेत्रपुष्पा	—	(हि) ७१९	गुरुक्षत्र	शुभचम्पू	(हि) १८९
गीत	कवि पण्ड	(हि) ७१८	गुरुत्रयमात	म० विनदास	(हि) १२८
गीत	धर्मकीर्ति	(हि) ७४३			१८२, ७९१
गीत	पांड नाथुराम	(हि) १२२	गुरुदेव की विनती	—	(हि) ७ २
गीत	विद्याभूषण	(हि) ९ ७	गुरुनामावलिखन्व	—	(हि) १८९
गीत	—	(हि) ७४३	गुरुशारदाचर एवं धर्मस्मरण	विनदत्तसूरि	(हि) ११९
गातगोविंद	जयदेव	(सं) ११३	गुरुपूजा	विनदास	(हि) २३७
गीतप्रबन्ध	—	(सं) १८९	गुरुपूजाघटक	—	(सं) १४९
गीतमहात्म्य	—	(सं) १७७	गुरुसहजनाम	—	(सं) १८७
गीतरीतराय	अभिनवपादकीर्ति	(सं) ३८९	गुरुस्तवन	शक्तिदास	(सं) १२७
गुरुदेवि [ब्रह्मवर्मा गीत]	—	(हि) १२३	गुरुस्तुति	—	(सं) १ ७
गुरुदेवि	—	(हि) १४३	गुरुस्तुति	भूमरदास	(हि) १२
गुरुमञ्जरी	—	(हि) ७१९			४१७ ४४७ ११४ १४२, १९३, ७७९
गुरुम्बरन	—	(सं) १२७	गुरुओं की विनती	—	(हि) ७ ४
गुरुम्बानवीत	भीषण न	(हि) ७९३	गुरुमा को स्तुति	—	(सं०) १२३
गुरुम्बानवीतकारोहपुष्प	रसरागर	(सं) ८	गुरुघटक	बादिराज	(सं) १२७
गुरुम्बानवीत	—	(मा) ८ १२८	गुरुकीर्ति	—	(सं) १२२, १३३
गुरुम्बानवीत	पद्मकीर्ति	(हि) ८	गुरुकीर्तियुवा	—	(सं) २१९
गुरुम्बानवीत	—	(हि) ७५१	गुरुकीर्तिसंगीत	—	(हि) १७१
गुरुम्बानवीत	—	(सं) ८	गोबुधबोवकीलीला	—	(हि) ३९८
गुरुम्बानवीत	—	(सं) ८	गाम्भटमार [बर्मकांड] नेमिचन्द्राचार्य	(मा)	१२
गुरुम्बानवीत	—	(सं) ८	गाम्भटमार [बर्मकांड] टीका कनकनन्दि	(सं)	१९
गुरुम्बानवीत	—	(हि) ८	गाम्भटमार [बर्मकांड] टीका शानभूषण	(सं)	१३
गुरुम्बानवीत	—	(सं) ८	गाम्भटमार [बर्मकांड] टीका	—	(सं) १३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा पं० टोडरमल (हि०)			१३	ग्यारह अंग एव चौदह पूर्व का वर्णन	—	(हि०)	६२६
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा हेमराज (हि०)			१३	ग्रहप्रवेश विचार	—	(स०)	५७१
गोम्मटसार [जीवकांड] नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०)			६	ग्रहविवलक्षण	—	(सं०)	५७६
गोम्मटसार [जीवकांड] (तत्त्वप्रदीपिका)		(स०)	१२	ग्रहशावर्णन	—	(सं०)	२८०
गोम्मटसार [जीवकांड] भाषा टोडरमल (हि०)			१०	ग्रहफल	—	(हि०)	६६४
गोम्मटसारटीका धर्मचन्द्र (स०)			६	ग्रहफल	—	(स०)	२८०
गोम्मटसारटीका सकलभूषण (स०)			१०	ग्रहो की ऊचाई एव आयुवर्णन	—	(हि०)	३१६
गोम्मटसारभाषा टोडरमल (हि०)			१०	घ			
गोम्मटसारपीठिकाभाषा टोडरमल (हि०)			११	घटकर्परकाव्य	घटकर्पर	(सं०)	१६४
गोम्मटसारवृत्ति केशववर्णी (स०)			१०	घण्डनिसाराणी	जिनहर्ष	(स०)	३८७, ७३४
गोम्मटसारवृत्ति — (स०)			१०	घण्टाकर्णकल्प	—	(सं०)	३४७
गोम्मटसार संहृष्टि प० टोडरमल (हि०)			१२	घण्टाकर्णमन्त्र	—	(सं०)	३४७
गोम्मटसारस्तोत्र — (स०)			३८७	घण्टाकर्णमन्त्र	—	(हि०)	६५०, ७६२
गोरखपदावली गोरखनाथ (हि०)			७६७	घण्टाकर्णवृद्धिकल्प	—	(हि०)	३४८
गोरखसवाद — (हि०)			७६४	च			
गोविंदाष्टक शङ्कराचार्य (स०)			७३३	चउबीसीठाणाचर्चा	—	(हि०)	७००
गोडोपाश्वर्चनाथस्तवन जोधराज (राज०)			६१७	चउसरप्रकरण	—	(प्रा०)	५४
गोडोपाश्वर्चनाथस्तवन समयसुन्दरगणि (राज०)			६१७ ६१६	चक्रवर्ति की चारहभावना	—	(हि०)	१०५
गौतमकुलक गौतमस्वामी (प्रा०)			१४	चक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
गौतमकुलक — (प्रा०)			१४				३८७, ४३२, ४२८, ६४७
गौतमपृच्छा — (प्रा०)			६४३	चतुर्गति की पद्धती	—	(प्रप०)	६४२
गौतमपृच्छा समयसुन्दर (हि०)			६१६	चतुर्दशगुणसगानचर्चा	—	(हि०)	६८४
गौतमरासा — (हि०)			७५४	चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	६७२
गौतमस्वामीचरित्र धर्मचन्द्र (स०)			१६३	चतुर्दशमार्गशावर्चा	—	(हि०)	६७१
गौतमस्वामीचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (स०)			१६३	चतुर्दशसूत्र	विनयचन्द्र	(सं०)	१४
गौतमस्वामीरास — (हि०)			६१७	चतुर्दशसूत्र	—	(प्रा०)	१४
गौतमस्वामीसम्भाष समयसुन्दर (हि०)			६१८	चतुर्दशागबाह्यविवरण	—	(स०)	१४
गौतमस्वामी सम्भाष — (हि०)			६१८	चतुर्दशीकथा	टीकम	(हि०)	७५४, ७७३
गघकुटीपूजा — (स०)			५१७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
चतुर्वेदीकथा	डालूराम	(हि) ७४२	चतुर्विधतितीर्थचक्राष्टक	चन्द्रकीर्ति	(सं०) २१४
चतुर्वेदीविधानकथा	—	(स) २२२	चतुर्विधतिपूजा	—	(हि) ४०१
चतुर्वेदीप्रत्युपा	—	(सं) ४१६	चतुर्विधतिपद्मविधान	—	(हि) १४८
चतुर्विधध्यान	—	(सं) १२	चतुर्विधतिविनयी	चन्द्रकवि	(हि) १८२
चतुर्विधति	गुणकीर्ति	(हि) ११	चतुर्विधतिप्रवोचान	—	(स) २१६
चतुर्विधतिगुणुत्पत्तिसीटिका	—	(सं) १८	चतुर्विधतिस्वप्नक	नमिधन्नाचाय	(प्रा) १८
चतुर्विधतिजयमाल	यति माधनदि	(स) ४१६	चतुर्विधतिसमुच्चयपूजा	—	(सं) २०६
चतुर्विधतित्रिकपूजा	रामचन्द्र	(हि) ७२६	चतुर्विधतिस्तवन	—	(स) ३८७ ४२१
चतुर्विधतित्रिभारस्तुति	त्रिभूमिहसुरि	(हि) ७	चतुर्विधतिसुति	—	(प्रा) ७७८
चतुर्विधतित्रिनस्तवन	जयसागर	(हि) ११६	चतुर्विधतिसुति	विनोदीकान्त	(हि) ७७६
चतुर्विधतित्रिनस्तुति	त्रिनैकामसुरि	(स) ३८७	चतुर्विधतिस्तोत्र	मूखरदास	(हि) ४२६
चतुर्विधतित्रिनाष्टक	शुभचन्द्र	(सं) २७८	चतुर्वेदीकीर्ति	—	(सं) १७६
चतुर्विधतितोषचक्र	जयसाम	(प्रा) १८७	चतुर्वेदीस्तोत्र	—	(सं) १६२
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	—	(सं) ४७	चतुर्वेदीस्तोत्र	—	(सं) ३८८
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	न तीर्थचक्र पाटनी	(हि) ४७२	चन्द्रकथा	सहमण्ड	(हि) ७४८
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	बस्ताबरलाक्ष	(हि) ४७३	चन्द्रकुंवर श्री वार्ता	—	(हि) ७३४
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	मनोज्ञलाक्ष	(हि) ४७३	चन्दनवासारात	—	(हि) ३११
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	रामचन्द्र	(हि) ४७२	चन्दनमलयामिरीकथा	भद्रसेन	(हि) २२३
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	चन्द्रावन	(हि) ४७१	चन्दनमलयामिरीकथा	चतर	(हि) २२३
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	मुगनचन्द्र	(हि) ४७३	चन्दनमलयामिरीकथा	—	(हि) ७४८
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	सुधाराम माह	(हि) ४७	चन्दनपठिपथा	प्रा० मुत्तसागर	(सं) २२४ २१४
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	—	(हि) ४७३	चन्दनपठिकथा	—	(सं) २२४
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	हमविमलमूरि	(हि) ४३७	चन्दनपठिपथा	प० इरिचन्द्र	(पप) २४३
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	हमलक्षविद्यमण्ड	(सं) ३८८	चन्दनपठिपूजा	सुरासचन्द्र	(हि) २१६
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	चन्द्र	(हि) ७२	चन्दनपठिपूजा	—	(पप) २४६
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	समस्तभद्र	(सं) १४७	चन्दनपठिपूजा	प्रा० छत्रसेन	(सं) १३१
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	—	(सं) ३८८ १२८	चन्दनपठिपूजा	मुत्तसागर	(सं) २१
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	माधनदि	(सं) ३८८ २७६	चन्दनपठिपूजा	सुरासचन्द्र	(हि) २२४
चतुर्विधतितीर्थचक्रपूजा	—	(सं) ३८८			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द	(स०)	४७३	चन्द्रहसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४७३	चन्द्रावलोक	—	(स०)	३०६
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	(स०)	५०६	चन्द्रोन्मीलन	—	(स०)	२५६
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४७३	चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४७४
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	—	(स०)	४७४	चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४				६६३, ७५६
चन्दनाचरित्र	मोहनविजय	(ग्र०)	७६१	चम्पाशतक	चम्पावाह	(हि०)	४३७
चन्द्रकीर्त्तिछन्द	—	(हि०)	३८६	चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५
चन्द्रकु वर की वार्त्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३	चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५
चन्द्रकु वरकी वार्त्ता	—	(हि०)	७११	चरचावर्णन	—	(हि०)	१५
चन्द्रग्रुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८	चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४
			७२३, ७३८				६६४, ७६४
चन्द्रग्रुप्तके सोलह स्वप्नोका फल	—	(हि०)	६२१	चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५
चन्द्रप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	३१६				६०६, ६४६, ७३३
चन्द्रप्रभवचरित्र	वीरनन्दि	(स०)	१६४	चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(स०)	१६५	चर्चासागर	—	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४	चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवचरित्र	दामोदर	(अप०)	१६५	चर्चासार	—	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवचरित्र	यश कीर्त्ति	(अप०)	१६५	चर्चासंग्रह	—	(स० हि०)	१५
चन्द्रप्रभवचरित्र	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	१६६	चर्चारुग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०
चन्द्रप्रभवचरित्रपञ्जिका	—	(स०)	१६५	चहुगति चौपई	—	(हि०)	७६२
चन्द्रप्रभवजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४७४	चाराक्यनीति	चाराक्य	(स०)	३२६
चन्द्रप्रभवजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४				७२३, ७६८
चन्द्रप्रभवपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६	चाराक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७
चन्द्रप्रभवपूजा	—	(स०)	५०६	चाराक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(स०)	३२७
चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१	चादनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५४८
चन्द्रवरदाई की वार्त्ता	—	(हि०)	६७६	चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३८८
चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३	चामुण्डोपनिषद्	—	(स०)	६०८
चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	(हि०)	२२४, ६३६	चारभावना	—	(स०)	५५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
भारमाहृषी पञ्चमी [महासचित्र] —		१२५	बिन्तामणियात्सर्वनामपूजा एक स्तोत्र काश्मीसेन (सं)		४११
भारमिर्षो की कथा अक्षयराज	(हि)	२२३	बिन्तामणियात्सर्वनामपूजास्तोत्र —	(सं)	४१०
भारिमपूजा —	(सं)	१३८	बिन्तामणियात्सर्वनामस्तवन —	(सं)	१४५
भारिममक्ति —	(स)	१२०, १३१	बिन्तामणियात्सर्वनामस्तवन कास्यचन्द्र	(रात्र)	११७
भारिममक्ति पन्नासाक चौधरी	(हि)	४३	बिन्तामणियात्सर्वनामस्तवन —	(हि)	४३१
भारिममुद्रिविधान श्रीमूपण्ड	(स)	४०४	बिन्तामणियात्सर्वनामस्तोत्र —	(सं)	३६३
भारिममुद्रिविधान शुभचन्द्र	(सं)	४०३			११४, १३
भारिममुद्रिविधान सुमतिब्रह्म	(सं)	४०३	बिन्तामणियात्सर्वनामस्तोत्र [मत्र सहित]	(सं)	३८८
भारिमसार श्रीमद्यामुण्डराय	(सं)	३३	बिन्तामणियूजा [बुद्ध] बिन्तामूण्डर	(सं)	४०३
भारिमसार —	(स)	३९	बिन्तामणियूजा —	(स)	३४०
भारिमसारभाषा ममासाक	(हि)	३९	बिन्तामणियन्त्र —	(सं)	३४८
भास्वतचरित्र कल्याणकीर्ति	(हि)	१६७	बिन्तामणिसम्भ —	(स)	३६३
भास्वतचरित्र उदयसाक	(हि)	१६३	बिन्तामणिस्तवन काश्मीसेन	(सं)	७६१
भास्वतचरित्र भारामल्ल	(हि)	१६८	बिन्तामणिस्तोत्र —	(स)	३४८
भारों मठियोंकी ग्रामु आदिका वर्णन	(हि)	७६३			४०३ १४३
बिबिस्सासार —	(हि)	२३८	बिद्विबिबाल दीपचन्द्र कामकीबाक	(हि)	१०३
बिबित्साक्रम उपाध्याय विद्यापति	(स)	२३८	बुनडी विमयचन्द्र	(सप)	१४१
बिबि तीर्थदूर —		३६४	बुनडीराठ विमयचन्द्र	(सप)	१२८
बिबिबस्तोत्र —	(सं)	३८३ ४२९	बुण्डीधिकार —	(स)	२३७
बिबितेनकथा —	(सं)	२२५	बेतनकर्मचरित्र भगवतीदाम	(हि)	९३ १८३
बिबिपूजास —	(हि)	७ ७	बेतनगीत अिनदास	(हि)	७९२
बिन्तामणियजमाम ठकपुरसी	(हि)	७३८	बेतनगीत मुनि सिंहमन्दि	(हि)	७३८
बिन्तामणियजमाम प्र० रायमल्ल	(हि)	१३४	बेतनचरित्र भगवतीदाम	(हि)	११९
बिन्तामणियजमाम मनाथ	(हि)	१४४			१४८ ७४
बिन्तामणियात्सर्वनाम [महत्सचित्र]		१२४	बेतनदाम फनेहमल	(हि)	४३२
बिन्ताम एतत्सर्वनामजयमान साम	(सप)	७६२	बेतननारीसम्भाय —	(हि)	११३
बिन्तामणियात्सर्वनामजयमानस्तवन —	(सं)	३८८	बेताबनीबीत नाथू	(हि)	७३७
बिन्तामणियात्सर्वनामपूजा शुभचन्द्र	(सं)	४०३	बेतामसम्भाय समयसुन्दर	(हि)	४३७
		१ १ १४३ ७४३	बैरवपरिपटी —	(हि)	४३७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्राम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
चैत्यवदना	सकलचन्द्र	(स०)	६६८	चीर्थङ्कररास	—	(हि०)	७२२
चैत्यवदना	—	(स०)	३८६	चीर्थङ्करवर्णन	—	(हि०)	४३८
			३६२, ६५०, ७१८	चीर्थङ्करस्तवन	देवनन्दि	(स०)	६०६
चैत्यवदना	—	(हि०)	४२६, ४३७	चीर्थङ्करस्तवन	लूणकरणकामलीबाल	(हि०)	४३८
चौधाराधनाउद्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५	चीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौतोस प्रतिशयभक्ति	—	(स०)	६२७	चीर्थङ्करस्तुति	—	(अ०)	६२५
चौदश की जयमाल	—	(हि०)	७४२	चीर्थङ्करस्तुति	ब्रह्मदेव	(हि०)	४३८
चौदहगुणस्थानचर्चा	अख्यराज	(हि०)	१६	चीर्थङ्करस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६६
चौदहपूजा	—	(स०)	४७६	चीर्थङ्करों के चिह्न	—	(स०)	६२३
चौदहमार्गणा	—	(हि०)	१६	चीर्थङ्करोंके पञ्चकल्याणक की तिथिया—	(हि०)	५३८	
चौदहविद्या तथा कारखानेजातके नाम	—	(हि०)	७५६	चीर्थङ्करों की वदना	—	(हि०)	७७५
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६८६	दण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्दसूरि	(हि०)	६१६		४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६०		
चौबीसजिनदजयमाल	—	(अ०)	६३७	दण्डकविचार	—	(हि०)	७३२
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द्र	(हि०)	४३७	स्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(स०)	१८, ७६५	रोमहाराज [मङ्गलचित्र]	—		५२४
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१६	श्री विनती	भ० रत्नचन्द्र	(हि०)	६४६
			७२०, ६६६	शोस्तवन	जयसागर	(हि०)	७७६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८	शोस्तुति	—	(हि०)	४३७, ७७३
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८४	शोसादना	—	(हि०)	५७
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(स०)	१८	शोित	—	(हि०)	६८०
चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७	शोितोत्तिवर्णन	—	(हि०)	७८६
चौबीसतीर्थङ्करपरिचय	—	(हि०)	५६४	शोितिकी जयमाल	विनोदीलाल	(हि०)	३७०
			६२१, ७००, ७५१	शोितिक्यन्द	—	(हि०)	३७०
चौबीसतीर्थङ्करपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५	शोितिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६	शोितिकी भेद	—	(हि०)	७४८
			७१२, ७२७, ७७२	शोितिकीवर्णन	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७	शोिन्यात की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थङ्करभक्ति	—	(स०)	६०४	शोिन्यातमाला	ब० जिनदाम	(हि०)	७६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बीरसीबीज	कबरपाल	(हि)	७ १
बीरसीमाखण्डसारसुख	—	(हि)	२७
बीसठश्रुतिपुष्पा	स्वरूपचन्द्र	(हि)	४७६
बीसठम्हा	—	(हि)	१ १
बीसठ्योपिनीकन्द	—	(स)	१ १
बीसठ्योपिनीस्ताव	—	(स)	१४८
बीसठ्योपिनीस्ताव की पुष्पा सम्बद्धकीर्ति (स)	—	(स)	११४

छ

छा मारा च विस्तार	—	(हि)	७
छत्तीस नारकानिकि नाम	—	(हि)	८
छद्मनाम	किशान	(हि)	७४
छद्मनाम	धानतराय	(हि)	२२
			२७३ १७४ १७७
छद्मनाम	दासतराय	(हि)	२७
			७ ७ ४१
छद्मनाम	कुपजन	(हि)	२७
छत्तीसुद्धकी श्रीपथि का मुक्ता	—	(हि)	७३
छिन्ने क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थक [मंडलचित्र]	—	(हि)	२५
छिन्नीसुद्ध	—	(हि)	४
छिन्नीसुद्धम्हा	शं० रावमङ्ग	(स)	१२
छिन्नीसुद्धम्हाचर्चा	—	(स)	१६
छिन्नीसुद्ध	इन्द्रलम्पि	(स)	७७
छोटाचर्चन	कुपजन	(हि)	४८
छोटीनिवारणविधि	—	(हि)	७१
छोटीचर्चन	म सुरेन्द्रकीर्ति	(स)	१
छोटीचर्च	—	(स)	१
छोटीचर्च	रत्नोत्तरसूरि	(स)	१
छोटीचर्च	शुम्भावनदास	(हि)	१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
छोटीचर्च	सोमनाथ	(हि०)	१२२
छोटीचर्च	—	(हि०)	१८६
छोटीचर्च	हमचन्द्राचार्य	(स)	१ ६
छोटीचर्च	हपकीर्ति	(स)	१ ६

ज

जकी	द्विगड	(हि)	७२२ १११
जकी	धानतराय	(हि)	१४३
			१२ ७१६
जकी	देवेन्द्रकीर्ति	(हि)	१२१
जकी	नेमिचन्द्र	(हि)	११२
जकी	रामकृष्ण	(हि)	४१८
जकी	रूपचन्द्र	(हि)	१२
			१११ ७२२ ७२२
जकी	—	(हि)	७११
जकी	—	(हि)	१ १
जकी	शङ्कराचार्य	(स)	१८६
जकी	—	(स)	७७६
जकी	—	(हि)	१ १
जकी	—	(हि)	७६
जकी	—	(हि)	४१५
जकी	पंडे विमदास	(स)	४७७
			२ ६, ११७
जकी	नेमिचन्द्राचार्य	(स)	११६
जकी	—	(स)	१६
जकी	—	(हि)	७१६
जकी	शं० विमदास	(स)	११५
जकी	शं० रावमङ्ग	(स)	११६
जकी	विजयकीर्ति	(हि)	११६
जकी	पद्माक्षर चौधरी	(हि)	११६

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६	जिनगुणसपत्तिपूजा	केशवसेन	(स०)	५३७
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६३६	जिनगुणसपत्तिपूजा	रत्नचन्द्र	(स०)	४७७, ५११
जम्बूस्वामीचौपई	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१०	जिनगुणसपत्तिपूजा	—	(स०)	५३६
जम्बूस्वामीपूजा	—	(हि०)	४७७	जिनगुणस्तवन	—	(स०)	५७५
जयकुमार सुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	(स०)	५५७
जयतिहुवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(स०)	४३३
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०	जिनचरित्र	ललितकीर्त्ति	(स०)	६४५
जयपुरके मदिरोकी वदना स्वरूपचन्द्र	हि०) ४३८, ५३८			जिनचरित्रकथा	—	(स०)	१६६
जयमाल [मालारोहण]	—	(अप०)	५७३	जिनचैत्यवदना	—	(स०)	३६०
जयमाल	रायचन्द्र	(हि०)	४७७	जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५६४
जलगलणारास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२	जिनचौधोसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	५७८
जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(स०)	४७७	जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(स०)	१६६
जलयात्रा	ब्र० जिनदास	(स०)	६८३	जिनदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७०
जलयात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्त चौपई	रत्न कवि	(हि०)	६८२
जलयात्राविधान	प० आशाधर	(स०)	४७७	जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जलहरतेलाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जलालगाहारी की वार्ता	—	(हि०)	४७७	जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४	जिनदर्शनस्तुति	—	(स०)	४२४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७६३	जिनदर्शनाष्टक	—	(स०)	३६०
जातकवर्णन	—	(स०)	५७४	जिनपञ्चोसी	नवलराम	(हि०)	६५१
जाप्य इष्ट अनिष्ट [माला फेरनेकी विधि]	—	(स०)	५५५				६६३, ७०४, ७२५, ७५५
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७७८	जिनपञ्चोसी व अन्य संग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८	जिनर्षिगलच्छदकोश	—	(हि०)	७०६
जिनगुणउद्यापन	—	(हि०)	६३८	जिनपुरन्दरव्रतपूजा	—	(स०)	४७८
जिनगुणपञ्चोसी	सेवगराम	(हि०)	४४७	जिनपूजापुरन्दरकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३६०	जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्त्ति	(अप०)	२४६
जिनगुणसपत्ति [महलचित्र]	—		५२४	जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(स०)	४७८
जिनगुणसपत्तिकथा	—	(स०)	२२५, २४६	जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनगुणसपत्तिकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८	जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(स०)	३६०, ४३२

प्रथमनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	प्रथमनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनपञ्जरस्तोत्र	—	(स)	३६ ४२४ ४३१ ४३३, १४७ १४८ १६३	१३ १८३ १८६ १६२ ७१२, ७१३ ७२ ७२२ ७४ ।	जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं) ३६३ ४२५ ४३३ ७ ७ ७४७
जिनपञ्जरस्तोत्रभाषा	स्वरूपचन्द्र	(हि)	२११	जिनसहस्रनाम	सिद्धसेन दिवाकर	(सं)	३६३
जिनभक्तिमठ	हृदयकीर्ति	(हि)	४३८ १२१	जिनसहस्रनाम [मधु]	—	(सं)	३६३
जिनमुखा/लोकनकमा	—	(स)	२४६	जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	(हि)	८६ ७४६
जिनयज्ञकल्प [प्रतिष्ठासार]	प० आशाधर	(सं)	४७८ १ ८ १३६ १६७ ७६१	जिनसहस्रनामभाषा	माधुराम	(हि)	३६३
जिनयज्ञविधान	—	(सं)	४७६ १४५	जिनसहस्रनामटीका	अमरकीर्ति	(सं)	३६३
जिनयज्ञमञ्जुल	सेवगराम	(हि)	४४७	जिनसहस्रनामटीका	अतसागर	(स)	३६३
जिनराजमहिमास्तोत्र	—	(हि)	३७६	जिनसहस्रनामटीका	—	(सं)	३६३
जिनराजविधानकथा	—	(स)	२४२	जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं)	४८
जिनराजविधानकथा	नरसेन	(प्रप)	१२८	जिनसहस्रनामपूजा	—	(सं)	३१
जिनराजविधानकथा	—	(प्रप)	२४६ १३१	जिनसहस्रनामपूजा	चैनमुख शुद्धादिमा	(हि)	४८
जिनराजविधानकथा	प्र० ज्ञानसागर	(हि)	२२	जिनसहस्रनामपूजा	स्वरूपचन्द्र विद्यासा	(हि)	४८
जिनमाह	प्र० राघमज्ञ	(हि)	७३८	जिनस्तपन [अभिवैक्याठ]	—	(सं)	४७६ ३७४
जिनवरकी भिनती	देवापांडे	(हि)	१८५	जिनसहस्रनामपूजा	—	(हि)	४५१
जिनवर वर्धन	पद्मनन्दि	(प्र)	३६	जिनस्तपन	कनककीर्ति	(हि)	७७६
जिनवरप्रतयममास	प्र० गुकास	(हि)	३६	जिनस्तपन	दौलतराम	(हि)	७ ७
जिनवरस्तुति	—	(हि)	७६७	जिनस्तपनशांतिचिका	—	(सं)	३६१
जिनवरस्तोत्र	—	(सं)	३६ ३७८	जिनस्तुति	शामनमुनि	(स)	३६१
जिनवासीस्तपन	अगताराम	(हि)	३६	जिनस्तुति	आपराज गोदीका	(हि)	४७६
जिनघातकटीका	नरसिंह	(स)	३६१	जिनस्तुति	रूपचन्द्र	(हि)	७ २
जिनघातकटीका	शंभुसाधु	(स)	३६	जिनसंहिता	सुमतिकीर्ति	(हि)	७६३
जिनघातनामध्या	ममन्तभद्र	(स)	३६१	जिनस्तुति	—	(हि)	६१८
जिनशासनचिकि	—	(प्र)	६३८	जिनलम्पार	बीरचन्द्र	(हि)	६२७
जिनसतसई	—	(हि)	७ ६	जिनाभिवैकनिराम	—	(हि)	४८१
जिनलहयनाम	प० आशाधर	(सं)	३६१	जिनेन्द्रपुराण	भ० जिनेन्द्रभूषण	(स)	१४६
२४ ३६६ ६ २ ६ ७ ६३६ ६३६ ६४७ ६३३				जिनेन्द्रमत्तिस्तोत्र	—	(हि)	४२८

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
जिनेन्द्रस्तोत्र	—	(स०)	६०६	४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६९८, ७०६, ७१०, ७१३, ७१६, ७३२, ७५४	जैनसदाचार मार्तण्डनामक पत्रका प्रत्युत्तर	बा० दुलीचन्द्र	(हि०) २०
जिनोपदेशोपकारस्मरस्तोत्र	—	(स०)	४१३	जैनागारप्रक्रिया	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	५७
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	—	(स०)	४२६	जैनेन्द्रमहावृत्ति	अभयनन्दि	(स०)	२६०
जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३६३	जैनेन्द्रव्याकरण	देवनन्दि	(स०)	२५६
जीवकायासञ्ज्ञाय	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१६	जोगीरासो	पाडे जिनदास	(हि०)	१०५
जीवकायासञ्ज्ञाय	राजसमुद्र	(हि०)	६१६	६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०३, ७२३, ७४५, ७६१	जोधराजपञ्चीसी	—	(हि०) ७६०
जीवजीतसहार	जैतराम	(हि०)	२२५	ज्येष्ठजिनवर [मडलचित्र]	—	—	५२५
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(स०)	१७०	ज्येष्ठजिनवर उद्यापनपूजा	—	(स०)	५०६
जीवन्धरचरित्र	नथमल बिलाला	(हि०)	१७०	ज्येष्ठजिनवरकथा	—	(स०)	२२५
जीवन्धरचरित्र	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७१	ज्येष्ठजिनवरकथा	जसकीर्त्ति	(हि०)	२२५
जीवन्धरचरित्र	—	(हि०)	१७१	ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतसागर	(स०)	७६५
जीवविचार	मानदेवसूरि	(प्रा०)	६१६	ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५१६
जीवविचार	—	(प्रा०)	७३२	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(स०)	४८१
जीव वेलढी	देवीदास	(हि०)	७५७	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(हि०)	६०७
जीवसमास	—	(प्रा०)	७६५	ज्येष्ठजिनवरलाहान	ब्र० जिनदास	(स०)	७६५
जीवसमासटिप्पण	—	(प्रा०)	१६	ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४, ७३१
जीवसमासभाषा	—	(प्रा० हि०)	१६	ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा	—	(सं०)	४८१
जीवस्वरूपवर्णन	—	(स०)	१६	ज्येष्ठपूर्णिमाकथा	—	(हि०)	६८२
जीवाजीवविचार	—	(स०)	१६	ज्योतिषचर्चा	—	(स०)	५६७
जीवाजीवविचार	—	(प्रा०)	१६	ज्योतिष	—	(स०)	७१४
जैनगायत्रीमन्त्रविधान	—	(स०)	३४८	ज्योतिषपटलमाला	श्रीपति	(स०)	६७२
जैनपञ्चीसी	नवलराम	(हि०)	६७०	ज्योतिषशास्त्र	—	(स०)	६६५
			६७५, ६६४	ज्योतिषसार	कृपाराम	(हि०)	५६८
जैनवद्री मूडवद्रीकी यात्रा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	३७०	ज्वरचिकित्सा	—	(स०)	२६८
जैनवद्री देशकी पत्रिका	मजलसराय	(हि०)	७०३, ७१८	ज्वरतिमिरभास्कर	चामुण्डराय	(स०)	२६८
जैनमत्तका सकल्प	—	(हि०)	५६२	ज्वरलक्षण	—	(हि०)	२६८
जैनरक्षास्तोत्र	—	(स०)	६४७				
जैनविवाहपद्धति	—	(स०)	४८१				
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	३२७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
आभामाभिगीस्तोत्र	—	(सं)	४२४	आर्णकुल	—	(सं)	६१५
४२८ ४३३ ४६१ ६८ ६४६ ६४७ ६४८				आर्णकुलपाठ	भद्रबाहु	(सं)	४२
ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	(हि)	१८	आर्णकुलस्थाव	—	(सं)	४२६
			७१४ ७१९	आर्णवीर	शुभचन्द्राचार्य	(सं)	१६
ज्ञानदर्पण	साह दीपचन्द्र	(हि)	१७	आर्णवीरिका [गद्य]	भतमागर	(सं)	१७
ज्ञानदीपक	—	(हि)	१३ ६६	आर्णवीरटीका	नयाबिज्ञान	(सं)	१८
ज्ञानदीपकवृत्ति	—	(हि)	१३१	आत्मपत्रभाषा	अक्षय्य श्यामका	(हि)	१८
ज्ञानपञ्चीसी	बभारसीदास	(हि)	११४	आर्णवीरभाषाटीका	सरिष विमलरायण	(हि)	१८
	६१४ ६३, ६८३ ६८८ ७४३ ७७३			आर्णवेद्य के पद्य	—	(हि)	१८२
ज्ञानपञ्चीसीस्तव	समयसुन्दर	(हि)	४३८	आर्णवेद्यभाषाटीका	—	(हि)	१८२
ज्ञानपत्र	मनाहरदास	(हि)	७१८		म्ह		
ज्ञानपत्रबिषयिका बतोर्यापन	सुरेश्वरकीर्ति	(सं)	४८१	अक्षय्य दी मन्दिरी की	—	(हि)	४३८
			२३६	अक्षय्य देवेका मन्त्र	—	(हि)	२७१
ज्ञानपत्रमोक्षहस्तबन	समयसुन्दर	(हि)	७७६	अक्षय्यियातु शोकात्म्या	—	(हि)	४३८
ज्ञानविषयके विविधपद्धतिका	—	(सं)	६३३	अमना	रंगाराम	(हि)	७३७
ज्ञानपूजा	—	(सं)	६३८				
ज्ञानपैद्य	मनोहरदास	(हि)	७३७	ट-ठ-ड-ढ-ण			
ज्ञानशास्त्री	मतिशंकर	(हि)	७७२	टंडमपासीत	पूषराय	(हि)	७५
ज्ञानमणि	—	(सं)	६	गंगांग सूत्र	—	(सं०)	२
ज्ञानपूर्वोपपाठक	बादिकण्डसूरि	(सं)	३	गं पर रावा भोवराय की कर्ता	—	(हि)	६६३
ज्ञानपूर्वोपपाठकभाषा	वारमदाम नि			गाथा	—		६२८
ज्ञानपूर्वोपपाठकभाषा	बलदाशरमस				डाडसी मुनि		७
ज्ञानपूर्वोपपाठकभाषा	भगवतीदास						२७
ज्ञानपूर्वोपपाठकभाषा	भागवत						
ज्ञान	परशदास				बान	(हि)	
ज्ञान	—						
ज्ञान	रायमल्ल				कुशल काम	(हि)	२३
ज्ञान	—						
ज्ञान	—						
ज्ञानभाष्य	विह	(सं)					

[Handwritten signature or mark]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	
एमोकारछंद	ब्र० लालसागर	(हि०)	६८३	तत्त्वार्थबोध	—	(हि०)	२१	
एमोकारपञ्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हि०)	४३६	तत्त्वार्थबोध	बुधजन	(हि०)	२१	
एमोकारपाथडीजयमाल	—	(अप०)	६३७	तत्त्वार्थबोधिनीटीका	—	(स०)	२१	
एमोकारपैतीसी	कनककीर्ति	(सं०)	५१७, ४८२, ६७६	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	(सं०)	२१	
एमोकारपैतीसी	—	(प्रा०)	३४८	तत्त्वार्थराजवार्तिक	भट्टाकलकदेव	(स०)	२२	
एमोकारपैतीसीपूजा	अक्षयराम	(सं०)	४८२, ५१७, ५३६	तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा	—	(हि०)	२२	
मोकारपंचासिकापूजा	—	(स०)	५४०	तत्त्वार्थवृत्ति	पं० योगदेव	(सं०)	२२	
एमोकारमत्र कथा	—	(हि०)	२२६	तत्त्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	२२	
एमोकारस्नवन	—	(हि०)	३६४	तत्त्वार्थसारदीपक	भ० सकलकीर्ति	(स०)	२३	
एमोकारादि पाठ	—	(प्रा०)	३६४	तत्त्वार्थसारदीपकभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३	
एमाणपिण्ड	—	(अप०)	६४२	तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(सं०)		
एमिणाहचारिड	लक्ष्मणदेव	(अप०)	१७१	४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६४, ५६५, ५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६, ६४७, ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१, ६८६, ६९४, ६९६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७, ७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९,				
एमिणाहचारिड	दामोदर	(अप०)	१७१	तत्त्वार्थसूत्रटीका	श्रुतसागर	(स०)	२८	
त				तत्त्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हि०)	३०, ७२६	
तकराक्षरीस्तोत्र	—	(स०)	३६४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जैसवाल	(हि०)	३०	
तत्वकौस्तुभ	पन्नालाल सघी	(हि०)	१०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पं० राजमल्ल	(हि०)	३०	
तत्वज्ञानतरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	(स०)	५८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	जयचंद छाबडा	(हि०)	२६	
तत्वदीपिका	—	(हि०)	२०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पाडे जयवत	(हि०)	२६	
तत्वधर्मामृत	—	(स०)	३२८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	—	(हि०)	६८६	
तत्वबोध	—	(स०)	१०८	तत्त्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचंद	(स०)	४८२	
तत्ववर्णन	शुभचन्द्र	(स०)	२०२	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द्र	(हि०)	३०	
तत्वसार	देवसेन	(प्रा०)	२०, ५७५ ६३७, ७३७, ७४४, ७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	२८	
तत्वसारभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३०	
तत्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि० प०)	३१	
तत्त्वार्थदर्पण	—	(स०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गणि	(सं०)	२८	
तत्त्वार्थबोध	—	(सं०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(सं०)	२८	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद्मसामाजिकीस्तोत्र	—	(सं)	४२४	शार्ङ्गकुण्ड	—	(सं)	११२
४२८ ४३३ ४३१ ६८ १४९ १४७ १४९				शार्ङ्गकुण्डपाठ	मद्रबाहु	(सं)	४२
ज्ञानविद्यामणि	मनोहरदास	(हि)	५८	शार्ङ्गकुण्डस्तोत्र	—	(सं)	४२९
			७१४ ७३९	शार्ङ्गार्णव	शुभचन्द्राचार्य	(सं)	१९
ज्ञानदर्पण	साह वीरचम्पू	(हि)	१२	ज्ञानसर्वटीका [गद्य]	भूतसागर	(सं)	१७
ज्ञानदीपक	—	(हि)	११ १६	ज्ञानसर्वटीका	नयाबिज्ञान	(सं)	१८
ज्ञानदीपवभूति	—	(हि)	१३१	ज्ञानसर्वभाषा	अथर्व छान्दोग्य	(हि)	१८
ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	(हि)	११४	ज्ञानसर्वभाषाटीका	सर्वत्र विमलरायण	(हि)	१८
			१३४ १२, १८२, १८२ ७४३ ७७२	ज्ञानोपदेश के पद्य	—	(हि)	१६२
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	समयसुन्दर	(हि)	४१८	ज्ञानोपदेशबलीसी	—	(हि)	१६२
ज्ञानपञ्ची	मनाहरदास	(हि)	७१८		म्ह		
ज्ञानसर्वविद्यारिका प्रतीघोषण	सुरेश्वरजीति	(सं)	४८१				
			२३६	मन्त्रादी की मन्दिरकी की	—	(हि)	४३८
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	समयसुन्दर	(हि)	७७६	मन्त्रादी देविका मन्त्र	—	(हि)	२७१
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	—	(गद्य)	१३५	मन्त्रसूरियानु शोभाख्या	—	(हि)	४३८
ज्ञानसूत्र	—	(सं)	१२८	मूलना	गंगाराम	(हि)	७२७
ज्ञानसर्वस्व	मनाहरदास	(हि)	७२७				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	प्रतिगम्बर	(हि०)	७७२				
ज्ञानसर्वस्व	—	(सं)	१२७				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	बाकिचम्पूसूरि	(सं)	११९				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	पारमहंस निगलत्या	(हि)	११७				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	पद्मताबरमल	(हि)	३१०				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	भगवतीदास	(हि)	११७				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	मामचद	(हि)	११७				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	चरणराम	(हि)	७२६				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	—	(हि)	७२६				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	रायमल	(हि)	२८				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	बनारसीदास	(हि)	१२				
ज्ञानसर्वस्वस्वप्न	मुनि पद्यमिद	(ग्रा०)	१२				

ट-ठ-ड-ढ-ण

ट-ठ-ड-ढ-ण	बृचराज	(हि)	७५
ठाणग मूत्र	—	(सं०)	२
ठीकरी घर राधा भीरराज की चार्ता	—	(हि)	११५
ठाडसी गाथा	—	(ग्रा)	१२८
ठाडसी गाथा	ठाडसी मुनि	(ग्रा)	७७
ठाडसी गाथा	—	(हि)	१२७
ठाडसी गाथा	—	(हि)	१२५
ठाडसी गाथा	—	(हि)	२२९ ९
ठाडसी गाथा	—	(हि)	७११
ठाडसी गाथा	—	(हि)	२२२
ठाडसी गाथा	—	(सं)	११०
ठाडसी गाथा	—	(सं)	१४८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शमोकारछंद	ब्र० लालसागर	(हि०)	६८३	तत्त्वार्थबोध	—	(हि०)	२१
शमोकारपञ्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हि०)	४३६	तत्त्वार्थबोध	बुधजन	(हि०)	२१
शमोकारपाथडीजयमाल	—	(अप०)	६३७	तत्त्वार्थबोधिनीटीका	—	(सं०)	२१
शमोकारपैतीसी	कनककीर्ति	(सं०)	५१७, ४८२, ६७६	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	(सं०)	२१
शमोकारपैतीसी	—	(प्रा०)	३४८	तत्त्वार्थराजवार्तिक	भट्टाकलकदेव	(सं०)	२२
शमोकारपैतीसीपूजा	अक्षयराम	(सं०)	४८२, ५१७, ५३६	तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा	—	(हि०)	२२
शमोकारपचासिकापूजा	—	(सं०)	५४०	तत्त्वार्थवृत्ति	पं० योगदेव	(सं०)	२२
शमोकारमत्र कथा	—	(हि०)	२२६	तत्त्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	२२
शमोकारस्तवन	—	(हि०)	३६४	तत्त्वार्थसारदीपक	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	२३
शमोकारादि पाठ	—	(प्रा०)	३६४	तत्त्वार्थसारदीपकभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३
शाण्णपिण्ड	—	(अप०)	६४२	तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(सं०)	
शोमिणाहचारिड	लक्ष्मणदेव	(अप०)	१७१	४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६४, ५६५,			
शोमिणाहचरिड	दामोदर	(अप०)	१७१	५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६,			
				६४७, ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१,			
				६८६, ६९४, ६९६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७,			
				७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९,			
				तत्त्वार्थसूत्रटीका	श्रुतसागर	(सं०)	२८
तकराक्षरीस्तोत्र	—	(सं०)	३६४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हि०)	३०, ७२६
तत्त्वकौस्तुभ	पन्नालाल सघी	(हि०)	१०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जैसवाल	(हि०)	३०
तत्त्वज्ञानतर गिरणी	भ० ज्ञानभूषण	(सं०)	५८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	प० राजमल्ल	(हि०)	३०
तत्त्वदीपिका	—	(हि०)	२०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	जयचंद झाबडा	(हि०)	२६
तत्त्वधर्माभूषण	—	(सं०)	३२८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पाडे जयवत	(हि०)	२६
तत्त्वबोध	—	(सं०)	१०८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	—	(हि०)	६८६
तत्त्ववर्णन	शुभचन्द्र	(सं०)	२०२	तत्त्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचंद	(सं०)	४८२
तत्त्वसार	देवसेन	(प्रा०)	२०, ५७५ ६३७, ७३७, ७४४, ७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द्र	(हि०)	३०
तत्त्वसारभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	२८
तत्त्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३०
तत्त्वार्थदर्पण	—	(सं०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०प०)	३१
तत्त्वार्थबोध	—	(सं०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गण्ड	(सं०)	२८
				तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(सं०)	२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
तद्विषय प्रक्रिया	—	(सं०)	२१०		तीर्थमातास्तवण	समयसुन्दर	(राज)		११७
उपसक्षण कथा	सुरासचद	(हि)	२११		तीर्थबनीस्तोत्र	—	(सं)		४३२
उमासु की जयमास	भार्याबमुनि	(हि)	४३८		तीर्थबकविधान	—	(सं)		१३३
तर्कबीषिका	—	(सं)	१३१		तीर्थकरजकवी	हृषीकेशि	(हि)	१२२	१४४
तर्कप्रकरण	—	(सं०)	१३१		तीर्थकरपरिचय	—	(हि)		३७
तर्कप्रमास	—	(सं)	१३२					६५	१३२
तर्कभाषा	केशल मिश्र	(सं)	१३२		तीर्थकरस्तोत्र	—	(सं)		४३
तर्कभाषा प्रकाशिका	बाबूचन्द्र	(सं)	१३२		तीर्थकरों का अंतरास	—	(हि)		३७
तर्करहस्य बीषिका	गुणारत्न सूरि	(सं)	१३२		तीर्थकरों के १२ स्थान	—	(हि)		७२
तर्कसंग्रह	अम्नमट्ट	(सं)	१३२		तीर्थबीबीसी	—	(हि)	१३१	७३८
तर्कसंग्रहटीका	—	(सं)	१३३		तीर्थबीबीसीबीपई	श्याम	(हि)		७३८
तारतम्योप कथा	—	(हि)	७४२		तीर्थबीबीसीनाम	—	(हि)		४८३
तार्किकशिरोमणि	रघुनाथ	(सं)	१३३		तीर्थबीबीसीपूजा	शुभचन्द्र	(सं)		२३७
तीर्थबीबीसी	—	(हि)	१३३		तीर्थबीबीसीपूजा	धृन्दायन	(हि)		४८३
तीर्थबीबीसीनाम	—	(हि)	१३३		तीर्थबीबीसीसमुच्चयपूजा	—	(हि)		४८३
			१७	१३३	७	३	७३८		
तीर्थबीबीसीपूजा	—	(सं)	४८२		तीर्थबीबीसीस्तवण	—	(सं)		३३४
तीर्थबीबीसीपूजा	नेमीचन्द्र	(हि)	४८२		तेईतबोलबिबरख	—	(हि)		७३२
तीर्थबीबीसीपूजा	—	(हि)	४८२		तेरहकाठिया	बनारसीदास	(हि)		४२६
तीर्थबीबीसीपूजा	—	(हि)	१३१					१४	७२
तीर्थबीबीसी समुच्चय पूजा	—	(सं)	४८२		तेरहडीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं)		४८३
तीर्थ भियां की अन्वी	धनराज	(हि)	१३३		तेरहडीपपूजा	म० विश्वभूषण	(सं)		४८४
तीर्थसोकवचन	—	(हि)	१३६		तेरहडीपपूजा	—	(सं)		४८४
तीर्थसोक वार्ड	—	(हि)	१३६		तेरहडीपपूजा	साखबीस	(हि)		४८४
तीर्थसोकपूजा [विमोह मार पूजा विमोह पूजा]	—	(हि)	१३६		तेरहडीपपूजाविधान	—	(सं)		४८४
	नेमीचन्द्र	(हि)	४८३		तेरहरंभपञ्जीसी	माथिकचन्द्र	(हि)		४४८
तीर्थसोकपूजा	टेकचन्द्र	(हि)	४८३		तेरहरन्वबीसपञ्चभेद	—	(हि)		७३३
तीर्थसोकवर्णन	—	(हि)	१३६		तजसार	—	(हि)		७३४
तीर्थमहास्तवण	तजसार	(हि)	१३७		तबोविषयविषय	—	(सं)		१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
त्रिकाण्डशेषसूची [अमरकोश]	अमरसिंह	(स०)	२७४	त्रिनोकवर्णन	—	(हि०)	६६०
त्रिकाण्डशेषाभिधान	पुरुषोत्तमदेव	(स०)	२७५			७००	७०२
त्रिकालचतुर्दशीपूजा	—	(स०)	६६६	त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२०
त्रिकालचौबीसी	—	(हि०)	६५१	त्रिलोकसारकथा	—	(हि०)	२२७
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	अभ्रदेव	(स०)	२२६, २४२	त्रिलोकसारचौपई	स्वरूपचट	(हि०)	५११
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	गुणानन्दि	(स०)	२२६	त्रिलोकसारपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८५
त्रिकालचौबीसीनाम	—	(स०)	४२४	त्रिलोकसारपूजा	— (सं०)	४८५, ५१३	
त्रिकालचौबीसीपूजा	त्रिभुवनचन्द्र	(स०)	४८४,	त्रिलोकसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	३२१
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(स०)	४८४, ५१७	त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(प्रा०)	५०६	त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिकालदेववंदना	—	(हि०)	६२७	त्रिलोकसारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	(सं०)	३२२
त्रिकालपूजा	—	(स०)	४८५	त्रिलोकसारवृत्ति	—	(स०)	३२२
त्रिचतुर्विंशतिविधान	—	(स०)	२४६	त्रिलोकसारसदृष्टि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२२
त्रिपचाशतक्रिया	—	(हि०)	५१७	त्रिलोकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(हि०)	६८१
त्रिपचाशतप्रतोद्यापन	—	(स०)	५१३	त्रिलोकस्थजिनालयपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिभुवन की विनती	गगादास	(हि०)	७७२	त्रिलोकस्वरूप व्याख्या	उदयलाल गगवाल	(हि०)	३२२
त्रिभुवन की विनती	—	(हि०)	७७४	त्रिवर्णाचार	भ० सोमसेन	(स०)	५८
त्रिभगीसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१	त्रिशती	शार्ङ्गधर	(स०)	२६८
त्रिभगीसारटीका	विवेकानन्दि	(स०)	३२	त्रिपष्ठिशलाकाछन्द	श्रीपाल	(स०)	६७०
त्रिलोकक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४८५	त्रिपष्ठशलाका पुरुषवर्णन	—	(स०)	१४६
त्रिलोकचित्र	—	(हि०)	३२०	त्रिषष्ठिस्मृति	आशाधर	(सं०)	१४६
त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(स०)	७१२	त्रिशतजिणचऊबीसी	महर्णसिंह	(अप०)	६८६
त्रिलोकदीपक	वासदेव	(स०)	३२०	त्रेपनक्रिया	—	(स०)	५६, ७६२
त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	(हि०)	६८६, ६६०, ३२१	त्रेपनक्रिया	ब्र० गुलाल	(हि०)	७४०
त्रिलोकवर्णन	—	(स०)	३२२	त्रेपनक्रियाकोश	दौलतराम	(हि०)	५६
त्रिलोकवर्णन	—	(प्रा०)	३२२	त्रेपनक्रियापूजा	—	(स०)	४८५
त्रिलोकवर्णन [चित्र]	—	—	३२३	त्रेपनक्रिया [मण्डल चित्र]	—	—	५२४
त्रिलोकवर्णन	—	(स०)	३२३	त्रेपनक्रियान्नतोद्यापन	—	(स०)	४८५
				त्रेपनक्रियान्नतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	६३८, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रैलोक्यविद्याप्रदोद्योग	—	(सं)	१४	दर्शनसार	इबसेन	(प्रा)	१३३
त्रैलोक्यविद्याप्रदोद्योग	—	(प्रा)	१७१	दर्शनसारभाषा	नथमह	(हि)	१३३
त्रैलोक्यसाक्षात्पुरुषवर्णन	—	(हि)	७२	दर्शनसारभाषा	शिष्यजीसाह	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य टीका कथा प्र० ज्ञानसागर	—	(हि)	२२	दर्शनसारभाषा	—	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य मोहनकवच	रायमङ्ग	(सं)	११	दर्शनस्तुति	—	(सं)	१३८, १७
त्रैलोक्यसारटीका	सहस्रकीर्ति	(प्रा)	१२३	दर्शनस्तुति	—	(हि)	१३२
त्रैलोक्यसारपूजा	सुमनिसागर	(सं)	४८३	दर्शनस्तोत्र	सहस्रचम्पू	(सं)	१७४
त्रैलोक्यसारमहापूजा	—	(सं)	४८६	दर्शनस्तोत्र	—	(सं)	१८१
थ				दर्शनस्तोत्र	पद्मनभि	(प्रा)	३१
पुनःप्रतीकारामो	—	(हि)	७२५	दर्शनस्तोत्र	—	(प्रा)	१७४
पञ्चगोत्रात्मनाथस्तवन	मुनि अमरवैद्य	(हि)	११६	दर्शनगृह	—	(हि)	१४४
पञ्चगोत्रात्मनाथस्तवन	—	(राज)	११६	दत्तात्रीनीलकण्ठ	—	(हि)	११४
द				दश प्रकारके ब्राह्मण	—	(सं०)	१७१
दत्तात्रेयस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं)	११०	दश प्रकार विप्र	—	(सं)	१७६
दण्डकपाठ	—	(सं)	३१	दशबोल	—	(हि)	१२६
दत्तात्रेय	—	(सं)	२२७	दशबोलपञ्चीसी	धानतराय	(हि)	४४६
दर्शनकथा	सारामङ्ग	(हि)	२२७	दशभक्ति	—	(हि)	३६
दर्शनकथामोस	—	(सं)	२२७	दशमूर्खोंकी कथा	—	(हि)	२२७
दशमपञ्चीसी	—	(हि)	७११	दशमसंस्कृतभाषा	—	(सं०)	१३७
दर्शनपाठ	—	(सं)	३१६	दशमसंस्कृतभाषा	आकसेन	(सं)	२२७
१, १४, १५	१११ १७७ १११ ७ ३ ७६३			दशमसंस्कृतभाषा	मुनि गुणभद्र	(सं)	१११
दर्शनपाठ	बुधबल	(हि)	४३१	दशमसंस्कृतभाषा	सुरास्यचम्पू	(हि)	२४४
दर्शनपाठ	—	(हि)	१	दशमसंस्कृतभाषा	सामसेन	(सं)	७१५
			११२ ११३ ७ ३	दशमसंस्कृतभाषा	प० साधरामा	(प्रा)	४२६, ३१७
दर्शनपाठस्तुति	—	(हि)	४३१	दशमसंस्कृतभाषा	—	(प्रा)	४८७
दर्शनपाठकथा	—	(हि)	११	दशमसंस्कृतभाषा	—	(प्रा सं)	४८७
दर्शनप्रतिमास्तवन	—	(हि)	३१	दशमसंस्कृतभाषा	प० रङ्गू	(सं)	२४३
दर्शनभक्ति	—	(सं)	१२७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षराजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५	दशलक्षरागीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षराजयमाल	—	(हि०)	४८८	दशलक्षरागीरास	—	(अप०)	६४२
दशलक्षराधर्मवर्णन पं०	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	५६	दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००
दशलक्षराधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०	दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशलक्षरापूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८८	दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(स०)	३२
दशलक्षरापूजा	—	(स०)	४८८	दशश्लोकीशम्भुस्तोत्र	—	(सं०)	६६०
५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०,				दशसूत्राष्टक	—	(सं०)	६७०
६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६,				दशारास	ब्र० चन्द्र	(सं०)	६८३
			७६३, ७८४	दादूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दशलक्षरापूजा	—	(अप० स०)	७०५	दानकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दशलक्षरापूजा	अभ्रदेव	(स०)	४८८	दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२८
दशलक्षरापूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दशलक्षरापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८	दानतपशीलसवाद	समयमुन्दर	(राज०)	६१७
			५१६, ७०५	दानपञ्चाशत	पद्मनन्दि	(सं०)	६०
दशलक्षरापूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१	दानवावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दशलक्षरापूजा	—	(हि०)	४८६	दानलीला	—	(हि०)	६००
			७२०, ७८८	दानवर्णन	—	(हि०)	६८६
दशलक्षरापूजाजयमाल	—	(सं०)	५६६	दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दशलक्षरा [मंडलचित्र]	—		५२५	दानशीलतपभावना	—	(स०)	६०
दशलक्षरामण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६	दानशीलतपभावना	धर्मसी	(हि०)	६०
दशलक्षराविधानकथा	लोकसेन	(स०)	२४२, २४६	दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दशलक्षराविधानपूजा	—	(हि०)	४६०	दानशीलतपभावना का चौढाल्या	समयमुन्दरगणि		
दशलक्षराव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)	२२७			(हि०)	२२८
दशलक्षराव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	दिल्ली की बादशाहतका व्यौरा	—	(हि०)	७६६
दशलक्षराव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७६४	दिल्लीके बादशाहो पर कवित्त	—	(हि०)	७५६
दशलक्षराव्रतकथा	—	(हि०)	२४७	दिल्ली नगरकी वसापत तथा बादशाहत का व्यौरा	—		
दशलक्षराव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	४८६			(हि०)	७८४
दशलक्षराव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिनागर	(स०)	४८६	दिल्ली राजका व्यौरा	—	(हि०)	७८६
			५४०, ६३८	दीक्षापटल	—	(स०)	५७५
दशलक्षराव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१३	दीपमालिका निर्णय	—	(हि०)	६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शीषान्वारमन्त्र	—	(स)	१७१ १७१	देवाममस्तात्रभाषा	—	(हि पद्य)	१६९
कुमारसविधानक्या	मुनि विनयधम्म	(धप)	२४४	देवाग्रमस्तात्रभृति	आरुणभा	[निष्प विजययोगमूर्ति]	
दुर्बटकाम्य	—	(सं)	१७१			(तं)	३६९
दुर्ममामुपेक्षा	—	(मा)	६३७	देवीमूढ	—	(सं)	९०
देवकीकाल	रसनचन्द्र	(हि)	४४	देवी [भारत] के नाम	—	(हि)	१०१
देवकीकाल	सूर्यकरय्य कासलीबास	(हि)	४१६	देहलीके बाग्याहोत्री भाषावली एव परिचय	—		
देवदास्तुति	पद्मनन्दि	(हि)	३६४			(हि)	७४३
देवपूजा	इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(सं)	४६	देहलीके बाग्याहोत्री परगाने नाम	—	(हि०)	९०
देवपूजा	—	(स)	४१४	देहलीके बाग्याहोत्री का धीरा	—	(हि)	३७२
			२६४, १२, ७२२ ७३१	देहलीके राजाधोत्री बटावलि	—	(हि)	९०
देवपूजा	—	(हि सं)	२९६, ७४	दीक्षा	कबीर	(हि)	७१६
देवपूजा	धानतराय	(हि)	२१६	दीक्षागृह	रामसिंह	(धप)	९
देवपूजा	—	(हि)	६४६	दीक्षापत्रक	रूपचन्द्र	(हि)	१०३ ७४
			१७, ७, ७१२, ७२०	दीक्षाग्रह	नानिगराम	(हि)	१२३
देवपूजास्टीका	—	(सं)	४६	दीक्षाग्रह	—	(हि)	७४३
देवपूजाभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि)	४६	घान्तविभाष	धानतराय	(हि)	३२०
देवपूजाष्टक	—	(स)	६३७	इन्द्रसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	(मा)	३९
देवराज इन्द्रराज चौधरी	मामदेवसूरी	(हि)	२२०				२०२, ६२०, ७४४ ७११
देवलोकात्मन्वा	—	(सं)	२२०	इन्द्रसंग्रहटीका	—	(सं)	३२ १६४
देवसास्त्रगुण्युवा	आशाधर	(सं)	६३६ ७६१	इन्द्रसंग्रहभाषा भाषा सहित	(मा हि)	७६२, ९०६	
देवसास्त्रगुण्युवा	—	(स)	१७	इन्द्रसंग्रहभाषाबोध टीका	बशीषर	(हि)	७९१
देवसास्त्रगुण्युवा	—	(हि)	२९२	इन्द्रसंग्रहभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि पद्य)	३९
देवसिद्धपूजा	—	(स)	४२०	इन्द्रसंग्रहभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि पद्य)	३९
			४६, १४, १४४, ७३	इन्द्रसंग्रहभाषा	भा० तुलीचन्द्र	(हि पद्य)	३७
देवसिद्धपूजा	—	(हि)	७२	इन्द्रसंग्रहभाषा	धानतराय	(हि)	७१२
देवायमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	(स)	१६४	इन्द्रसंग्रहभाषा	पद्माकास चौधरी	(हि)	३९
			१६२ ४२२, २७२, ९४ ७२	इन्द्रसंग्रहभाषा	हैमराज	(हि)	७६३
देवायमस्तोत्रभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि)	१६२	इन्द्रसंग्रहभाषा	—	(हि)	३२
				इन्द्रसंग्रहभाषा	पर्वत धर्मार्थी	(द्रुम)	३९

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	ब्रह्मादेव	(स०)	३४	द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हि०)	१०६
द्रव्यमग्नवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(स०)	३४			६५२, ७४८, ७६५	
द्रव्यन्वयवर्णन	—	(स०)	३७	द्वादशागपूजा	—	(स०)	४६१
दृष्टातशतक	—	(स०)	३२८	द्वादशागपूजा	डालूगाम	(हि०)	४६१
द्वादशभावनाटीका	—	(हि०)	१०६	द्वादशागपूजा	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	१७१
द्वादशभावनादृष्टात	—	(गुज०)	१०६	द्विजवचनचपेटा	—	(स०)	१३३
द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	(हि०)	७४३	द्वितीयसमोनरणा	ब्र० गुलाल	(हि०)	५६६
द्वादशमासा [बारहमासा]	कवि राजसुन्दर	(हि०)	७७१	द्विपचकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५१७
द्वादशमासातत्रतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६	द्विसधानकाव्य	धनञ्जय	(स०)	१७१
द्वादशराशिफल	—	(स०)	६६०	द्विसधानकाव्यटीका [पदकीमुर्दा]	नेमिचन्द्र	(स०)	१७२
द्वादशशतकथा	प० अभ्रदेव	(स०)	२२८	द्विसधानकाव्यटीका	विनयचन्द्र	(स०)	१७२
			२४६, ४६०	द्विसधानकाव्यटीका	—	(स०)	१७२
द्वादशशतकथा	चन्द्रसागर	(हि०)	२२८	द्वीपसमुद्रो के नाम	—	(हि०)	६७१
द्वादशशतकथा	—	(स०)	२२८	द्वीपायनदाल	गुणसागरसूरि	(हि०)	४४०
द्वादशशतपूजाजयमाला	—	(स०)	६७६				
द्वादशशतमण्डलोद्यापन	—	(स०)	५४०				
द्वादशशततोद्यापन	—	(स०)	४६१, ६६६	धनदत्त सेठ की कथा	—	(हि०)	२२६
द्वादशशततोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(स०)	४६१	धन्नाकथानक	—	(स०)	२२६
द्वादशशततोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४६१	धन्नाचौपई	—	(हि०)	७७२
द्वादशशततोद्यापनपूजा	पद्मनन्दि	(स०)	४६१	धन्नाशलिभद्रचौपई	—	(हि०)	२२६
द्वादशशानुप्रेक्षा	—	(स०)	१०६, ६७२	धन्नाशलिभद्ररास	जिनराजसूरि	(हि०)	३६२
द्वादशशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(स०)	७४४	धन्यकुमारचरित्र	श्रा० गुणभद्र	(स०)	१७२
द्वादशशानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	१७३
द्वादशशानुप्रेक्षा	जल्हण	(अप०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	१७२
द्वादशशानुप्रेक्षा	—	(अप०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	—	(स०)	१७४
द्वादशशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हि०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	खुशालचन्द्र	(हि०)	१७३, ७२६
द्वादशशानुप्रेक्षा	कवि छत्त	(हि० पद्य)	१०६	धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
द्वादशशानुप्रेक्षा	लोहट	(हि०)	७६६	धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	(स०)	४६१, ५६५
द्वादशशानुप्रेक्षा	सूरत	(हि०)	७६४	धर्मचक्रपूजा	साधु रणमल्ल	(स०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
धर्मचक्रमुखा	—	(सं)	४६२	धर्मराधा	—	(हि०)	१६२
			३१	५३७	धर्मरत्नी	—	(हि) ६२३, १७७
धर्मचक्रप्रबंध	धर्मचन्द्र	(प्रा)	३६६	धर्मसदस्य	—	(सं)	६२
धर्मचाह	—	(हि)	७२७	धर्मविमल	धानधराय	(हि)	१२८ ७१
धर्मचाहना	—	(हि)	११	धर्मधर्माभ्युदय	महाकवि हरिरचन्द्र	(सं)	१७४
धर्मतन्मीत	त्रिनदास	(हि)	७६२	धर्मधर्माभ्युदयटीका	ध्याकीर्ति	(सं)	१७४
धर्मबसावतार भाटक	—	(सं)	३१७	धर्मशास्त्रप्रदीप	—	(सं)	६३
धर्म बुद्धेला बीनी का [त्रेपल क्रिया]		(हि)	६३८	धर्मसरोवर	जोधराज गादीकर	(हि)	६३
धर्मपम्बीसी	धानधराय	(हि)	७४७	धर्मसार [चौपई]	प० शिरोमणिदास	(हि)	६३ ६६६
धर्मपरीक्षा	अभितिमति	(सं)	३३३	धर्मसंग्रहभावकाचार	प० मेधाधो	(सं)	६२
धर्मपरीक्षा	बिरासकीर्ति	(हि)	७३३	धर्मसंग्रहभावकाचार	—	(सं)	६३
धर्मपरीक्षाभाषा	मनोहरदास सोनी	३३७	७१६	धर्मसंग्रहभावकाचार	—	(हि)	६३
धर्मपरीक्षामाया	दशरथ निगोस्वा	(हि)	३३६	धर्माधर्मस्वरूप	—	(हि)	७ ७
धर्मपरीक्षामाया	—	(हि)	३३८ ७१	धर्माभ्युदयसूत्रिसंग्रह	आशाधर	(सं)	६४
धर्मपरीक्षारास	ज० त्रिनदास	(हि)	३३७	धर्मोपदेशपीपुषभावकाचार	सिद्धनम्बि	(सं)	६४
धर्मपंचविधविका	ज० त्रिनदास	(हि)	६१	धर्मोपदेशभावकाचार	अमाधधर्ष	(सं)	६४
धर्मप्रदीपमाया	पन्नालाल सधी	(हि)	६१	धर्मोपदेशभावकाचार	ज० नेमिदत्त	(सं)	६४
धर्मप्रस्नोत्तर	विमलकीर्ति	(सं)	६१	धर्मोपदेशभावकाचार	—	(सं)	६४
धर्मप्रस्नोत्तर	—	(हि)	६१	धर्मोपदेशसंग्रह	सेनारामसाह	(हि)	६४
धर्मप्रस्नोत्तर भावकाचार माया	—	(सं)	६	धर्म	—	(प्रा)	३७
धर्मप्रस्नोत्तर भावकाचार माया चम्पाराम		(हि)	६१	धनुषाठ	हेमचन्द्राचार्य	(सं)	२९
धर्मप्रस्नोत्तरी	—	(हि)	६१	धनुषाठ	—	(सं)	२९
धर्मबुद्धिचौरई	सासचन्द्र	(हि)	२२६	धनुषाठ	—	(सं)	२९१
धर्मबुद्धि पाप बुद्धि कथा	—	(सं)	२२६	धनुषाठ	—	(सं)	२९१
धर्मबुद्धि मंत्री कथा	बृन्दावन	(हि)	२२६	धनुषाठ	—	(हि)	६
धर्मरत्नाकर	प० मंगल	(सं)	६२	धीधुकरिज	—	(हि)	७४१
धर्मरत्नाकर	पद्मनदि	(प्रा)	६२	धनारोपणपुजा	—	(सं)	४१३
धर्मरत्नाकर	—	(सं)	६२	धनारोपणसुमंत्र	—	(सं)	४६२
धर्मरत्नाकर	—	(हि)	७७३	धनारोपणसुमंत्र	—	(सं)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	४६३, ७०५
ध्वजारोपणविधि	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(स० प्रा०)	४६३
ध्वजारोहणविधि	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(अप०)	४६३
न				नन्दीश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२	नन्दीश्वरपूजा जयमाल	—	(स०)	७५६
नखशिखवर्णन	—	(हि०)	७१४	नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि०)	४६४
नगर स्थापना का स्वरूप	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपक्तिपूजा	पद्मानन्द	(स०)	६३६
नगरो की बसापत का सवत्वार विवरण	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपक्तिपूजा	—	(स०)	४६३
	मुनि कनककीर्त्ति	(हि०)	५६१				५१४, ७६३
ननद भोजाई का भगडा	—	(हि०)	७४७	नन्दीश्वरपक्तिपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्दिताढ्यछन्द	—	(प्रा०)	३१०	नन्दीश्वरभक्ति	—	(स०)	६३३
नन्दिपेण महामुनि सज्जाय	—	(हि०)	६१६	नन्दीश्वरभक्ति	पन्नलाल	(हि०)	४६४, ४५०
नन्दीश्वरउद्यापन	—	(स०)	५३७	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(स०)	२२६	नन्दीश्वरविधानकथा	हरिपेण	(स०)	२२६, ५१४
नन्दीश्वरजयमाल	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरविधानकथा	—	(स०)	२२६, २४६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६	नन्दीश्वरव्रतविधान	टेकचन्द	(हि०)	५१८
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	(अप०)	५१६	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	अनन्तकीर्त्ति	(स०)	४६४
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अप०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिपेण	(स०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	रत्ननन्दि	(स०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(स०)	४६३	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(हि०)	४६४
			६०१, ६५२	नन्दीश्वरादिभक्ति	—	(प्रा०)	६२७
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(प्रा०)	६५५	नान्दीसूत्र	—	(प्रा०)	३७
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२	नन्दूसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(स०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३	नमस्कारमन्त्रकल्पविधिसहित	सिंहनन्दि	(स०)	३४६
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(स०)	५७६	नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(स० हि०)	६०१
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्त्ति	(स०)	७६१	नमस्कारस्तोत्र	—	(स०)	४२८
नन्दीश्वरपूजा	—	(स०)	४६३	नमिऊणस्तोत्र	—	(प्रा०)	६८१
			५१५, ६०७, ६४४, ६५८, ६६६, ७०४	नयचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३४
				नयचक्रटीका	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नवयज्ञभाषा	हेमरास	(हि)	१३४	नवग्रहपूजाविधान	मन्त्रवाहु	(स)	४६४
नवयज्ञभाषा	—	(हि)	१३४	नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	(स०)	१४१
नवकुम्भवर्गात् [बाहा]	भूषरदाम	(हि)	१३	नवग्रहस्तोत्र	—	(स)	४१
			७१, ७०८	नवग्रहस्थापनाविधि	—	(सं)	११२
नववर्णान	—	(हि)	१३	नवतल्पभाषा	—	(प्रा)	३७
नववस्त्रवैयर्थ्य पृष्ठी प्रादिका वर्णान	—	(हि)	१३२	नवतल्पप्रकरण	—	(प्रा)	७३२
नववर्तिनयवर्णा	नरपति	(स)	२३	नवतल्पप्रकरण	कवमीबल्लभ	(हि)	३७
नम दक्षपत्नी नाटक	—	(सं)	३१७	नवतल्पवर्णिका	पद्माशाल चौधरी	(हि)	३०
नमोदयकाव्य	काक्रीदास	(स)	१७३	नवतल्पवर्णान	—	(हि)	३५
नमोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं)	१७४	नवतल्पविचार	—	(हि)	११६
नवकारकण्ड	—	(स)	३४६	नवतल्पविचार	—	(हि)	३८
नवकारपैतृसी	—	(सं)	१६६	नवपरपूजा	देवचन्द्र	(हि)	७६
नवकारपैतृसीपूजा	—	(स)	२३७	नवमङ्गल	विनायीलास	(हि)	१८५ ७३४
नवकार बड़ा दिनवो	ब्रह्मद्वय	(हि)	१३१	नवउत्पत्तित	—	(स)	३२६
नवकारमहिमाउत्पन्न	अनन्तमसूरि	(हि)	११८	नवउत्पत्तित	बनारसीदास	(हि)	७४१
नवकारमन्त्र	—	(स)	४३१	नवउत्पत्तित	—	(हि)	७१७
नवकारमन्त्र	—	(प्रा)	१३६	नवउत्पत्तित	—	(सं)	१७५
नवकारमन्त्रवर्णा	—	(हि)	७१८	नटोदित	—	(सं)	१३
नवकारराम	अथर्वकीर्ति	(हि)	१४७	नहनवीरागाविधि	—	(हि)	२६८
नवकारराम	—	(हि)	३६२	नामकुमारचरित्र	धमधर	(सं)	१७६
नवकाररामा	—	(हि)	७४३	नागकुमारचरित्र	मन्निपणसूरि	(सं)	१७३
नवकारधोषवाधा	—	(प्रा)	६३	नागकुमारचरित्र	—	(सं)	१७६
नवकारमेगभाष	गुणप्रभसूरि	(हि)	११५	नागकुमारचरित्र	ब्रह्मभक्त	(हि)	१७६
नवकारमेगभाष	पद्मराजगण्डि	(हि)	११८	नागकुमारचरित्र	—	(हि)	१७६
नवउत् [मन्त्रविधान]	—		२२३	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	(सं)	१७६
नवउत्पत्तित [मन्त्रविधान]	—	(सं)	१९	नागवैता	—	(हि रात्र)	२२६
नवउत्पत्तित [मन्त्रविधान]	—	(प्रा)	७३२	नाग-नीमा	—	(हि)	१६५
नवउत्पत्तित	—	(स)	४६३	नागधीरथा	म० ममिदत्त	(सं)	२३१
नवपूजा	—	(हि)	३१८	नागधीरथा	द्विरानमिद	(हि)	२३१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागश्रीसज्जाय	विनयचन्द्र	(हि०)	४४१	नित्यनियमपूजा सदासुख कासलीवाल	(हि०)		४६६
नाटकसमयसार	बनारसीदास	(हि०)	६४०	नित्यनियमपूजासग्रह	—	(हि०)	७१२
	६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६			नित्यनैमित्तिकपूजापाठ सग्रह	—	(स०)	५६६
नाडीपरीक्षा	—	(स०)	२६८	नित्यपाठसग्रह	—	(स० हि०)	३६८
			६०२, ६६७	नित्यपूजा	—	(स०)	५६०
नादीमङ्गलपूजा	—	(स०)	५१८				६६४, ६६४, ६६७
नाममाला	धनञ्जय	(स०)	२७५	नित्यपूजा	—	(हि०)	४६८
	२७६, ५७४, ६८६, ६६६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६			नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४६८
नाममाला	बनारसीदास	(हि०)	२७६	नित्यपूजापाठ	—	(स० हि०)	६६३
			६०६, ७६५				७०२, ७१५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६६७ ' ७६६	नित्यपूजापाठसग्रह	—	(प्रा० स०)	६६४
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२	नित्यपूजापाठसग्रह	—	(स०)	६६३
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७	नित्यपूजापाठसग्रह	—	(स०)	७००
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(स०)	२८५				७७५, ७७६
नारायणकवच एव अष्टक	—	(स०)	६०८	नित्यपूजासग्रह	—	(प्रा० अप०)	४६७
नारीरासो	—	(हि०)	७५७	नित्यपूजासग्रह	—	(स०)	४६७, ७६३
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७६७	नित्यवदनासामायिक	—	(स० प्रा०)	६३३
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७६०	निमित्तज्ञान [भद्रबाहु सहिता] भद्रबाहु	(स०)		२८५
निघट्ट	—	(स०)	२६६	नियमसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३८
निजस्मृति	जयतिलक	(स०)	३८	नियमसारटीका	पद्मप्रभमलधारिदेव	(स०)	३८
निजामणि	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५	निरयावलीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
नित्य एवं भाद्रपदपूजा	—	(स०)	६४४	निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५, ४६५	निरञ्जनस्तोत्र	—	(स०)	४२४
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४६५	निर्भरपञ्चमीवधानकथा	विनयचन्द्र	(अप०)	२४५, ६२८
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८	निर्दोषसप्तमीकथा	—	(अप०)	२४५
नित्यनियमपूजा	—	(स०)	४६५	निर्दोषसप्तमीकथा	पाडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४
			५१०, ६७६	निर्दोषसप्तमीव्रतकथा	ब्र० रायमङ्गल	(स०)	६७६, ७३६
नित्यनियमपूजा	—	(स० हि०)	४०६	निर्माल्यदोषवर्णन	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	६५
			५६७, ६८६	निर्वाणकल्याणकपूजा	—	(स०)	४६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नयनचक्रभाषा	हेमराज	(हि)	११४	नवप्रदूमाविधान	धनुषादु	(स)	४६४
नयनचक्रभाषा	—	(हि०)	११४	नवप्रहृतान	चंद्रक्याम	(स०)	१४६
नरकपुराणवर्णन [बोहा]	मूपरदास	(हि)	१२	नवप्रहृतोत्र	—	(स)	४१
			७९, ७८८	नवप्रहृतपारनाविधि	—	(सं)	११२
नरकवर्णन	—	(हि)	१२	नवतन्त्रगाथा	—	(स०)	१७
नरकस्वर्गकेवल्य पूरणी धार्मिका वर्णन	—	(हि)	१२२	नवतन्त्रप्रवर्णन	—	(स०)	७१२
नरपतित्रयवर्णन	नरपति	(स)	२२३	नवतन्त्रप्रवर्णन	श्रद्धामीलम	(हि)	१७
नस दमयन्तो नाटक	—	(सं)	११७	नवतन्त्रवर्णन	पद्मनाभ शौधरी	(हि)	१८
नसोदयकाव्य	कालिदास	(स)	१७५	नवतन्त्रवर्णन	—	(हि)	१८
नसोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं)	१७४	नवतन्त्रविचार	—	(हि)	११६
नवकारकल्प	—	(स)	१४६	नवतन्त्रविचार	—	(हि)	१८
नवकारवैतीषी	—	(सं)	१२६	नवपदपूजा	देवचन्द्र	(हि)	७६
नवकारवैतीषीपूजा	—	(स)	२२७	नवमङ्गल	विनादीशाल (हि)	१८२	७१४
नवकार बड़ो बिनती	ब्रह्मदूब	(हि)	१५१	नवरत्नवित्त	—	(स)	१२६
नवकारमहिमास्तवम	बिजयलक्ष्मणसूरि	(हि)	११८	नवरत्नवित्त	बनारसीदास	(हि)	७४६
नवकारमन्त्र	—	(स)	४३१	नवरत्नवित्त	—	(हि)	७१७
नवकारमन्त्र	—	(स०)	१३६	नवरत्नकाम्य	—	(सं)	१७२
नवकारमन्त्रवर्णन	—	(हि)	७१८	नष्टोदित	—	(सं)	१५
नवकारदास	अचलकीर्ति	(हि)	१४७	नहनसीगाराविधि	—	(हि)	२६८
नवकारदास	—	(हि)	११२	नामकुमारचरित्र	धमधर	(सं)	१७६
नवकारदास	—	(हि)	७४५	नामकुमारचरित्र	मणिपणसूरि	(सं)	१७३
नवकारभावकाधार	—	(स०)	१५	नामकुमारचरित्र	—	(सं)	१७६
नवकारसंस्कृत	गुणप्रभसूरि	(हि)	११८	नामकुमारचरित्र	सदुपज्ञाल	(हि)	१७६
नवकारसंस्कृत	पद्मराजगण्डि	(हि)	११८	नामकुमारचरित्र	—	(हि)	१७६
नवग्रह [सप्तसप्तिक]	—		५२३	नामकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	(सं)	१७६
नवग्रहगणितपार्ष्णीनामस्तवन	—	(सं)	११	नाममंठा	— (हि)	राज)	२२६
नवग्रहगणितपार्ष्णीस्तोत्र	—	(स०)	७१२	नामाधीना	—	(हि)	१६३
नवग्रहपूजा	—	(स)	४६५	नामधीक्या	ब० नेमिचन्द्र	(स)	२११
नवग्रहपूजा	—	(हि)	५१८	नामधीक्या	किरानसिंह	(हि)	२११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(स०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१८
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(स०)	७६३	नेमिराजुलपञ्चीसी	विनेदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६६	नेमिराजुलसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	४१३
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६	नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिनाथपूजाष्टक	शभूराम	(सं०)	४६६	नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	४००
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८	नेमिस्तोत्र	—	(स०)	४३२
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५	नेमिसुरकवित्त [नेमिसुर राजमतिवेलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७२५	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	७५७	नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२	नेमीश्वरकी स्तुति	भूवरदास	(हि०)	६५०
नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	(हि०)	६३८	नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२	नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुच	(हि०)	७३८
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	३६६	नेमीश्वरकी रास	भाऊकावि	(हि०)	६६८
नेमिनाथाष्टक	भूवरदास	(हि०)	७७७	नेमीश्वरचौमासा	सिहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमिपुराण [हरिवशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	१४७	नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह सा०	(हि०)	७७६
नेमिनिर्वाणपञ्चिका	—	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमिव्याहलो	—	(हि०)	२३१	नेमीश्वररास	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमिराजमतीका चोमासिया	—	(हि०)	६१६	नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१
नेमिराजमती की घोडी	—	(हि०)	४४१	नेमित्तिक प्रयोग	—	(स०)	६३३
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१	नेपथचरित्र	हर्षकीर्त्ति	(स०)	१७७
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७	नौशेरवा बादगाहकी दम ताज	—	(हि०)	३३०
नेमिराजमतिरास	रत्नमुक्ति	(हि०)	६१७	न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(स०)	१३४
नेमिराजलव्याहलो	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टकलङ्कदेव	(स०)	१३८
नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	(हि०)	६१८				
न राजपिमञ्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				

ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	मापा पृष्ठ सं०
निर्वाणकाम्बगाथा	—	(मा) ३१८	नीतिवामनासुत	सामवेवधुरि	(स) ३३०
४२६ ४३१ ४२६ ६२१ ६२८ ६३३ ६३८ ६६२			नीतिविनीव	—	(हि) ३३
१७ १२४ ७१६ ७२३ ७७४ ७८८ ७८९			नीतिवृत्तक	मत्तुहरि	(स०) ३२६
निर्वाणकाम्बटीका	—	(मा १) ३१९	नीतिमाह्व	षायक्य	(सं०) ७१७
निर्वाणकाम्बपूजा	—	(स) ४६८	नीतिसार	शुद्धनन्दि	(सं०) ३२६
निर्वाणकाम्बभावा भैया भगवतीवास	(सं) ३२९		नीतिसार	षायक्य	(स) ६८४
४२३ ४२९ ४४१ ४६२ ४७ ४६१ ६ ६ ५			नीतिसार	—	(स) ३२६
६१८ ६१९ ६४३ ६५ ६२१ ६६२ ६७५ ७ ४			नीमकच्छत्रप्रबिक	नीलकण्ठ	(सं०) २८२
७२ ७२७			नीमसूक्त	—	(सं) ३३
निर्वाणकाम्बभावा	संभरा	(हि) ७८८	नेमिमीव	पासचव	(हि) ४४१
निर्वाणश्लोकपूजा	—	(हि) ४६९ ४१८	नेमिगोत	भूपरवास	(हि) ४३२
निर्वाणश्लोकमण्डलपूजा	—	(हि) ४६२	नेमिबिनबम्पाहली	खेठसी	(हि०) ३३५
निर्वाणपूजा	—	(सं) ४६९	नेमिबिनस्वयन	मुक्ति बोपराज	(हि) ३१५
निर्वाणभूषासप्त	मनरञ्जनाक	(हि) ४६९	नेमिबीका चरित	षायक्य	(हि) १७६
निर्वाणप्रकरण	—	(हि) ६३	नेमिबीकी लहुरी	विश्वभूषण	(हि) ७७६
निर्वाणलक्ति	—	(स) ३९९ ६२३	नेमिभूतकाम्य	महाकवि विक्रम	(सं) १७६
निर्वाणमक्ति	पद्माक्षक चौधरी	(हि) ४५	नेमिनरैग्रस्तोत्र	जगन्नाथ	(स) ३६६
निर्वाणमक्ति	—	(हि) ३६७	नेमिनाथएकाक्षरीस्तोत्र	प० शाक्ति	(सं०) ४२६
निर्वाणभूमिमङ्गल	विश्वभूषण	(हि) ६६५	नेमिनाथका बाण्डासा	बिनोदीकाक शाक्यक्य	—
निर्वाणमाहकनिर्घण	रमिदास	(हि) ६५		(हि) ७५३	
निर्वाणविधि	—	(सं) १ ८	नेमिनाथका बाण्डासा	—	(हि) ६६२
निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र	—	(सं) ३६९	नेमिनाथकी भावना	सेवकराम	(हि०) ६७४
निर्वाणस्तोत्र	—	(सं) ३६९	नेमिनाथ के वचन	—	(हि) १७७
निर्वाणसप्तमीकथा	—	(सं) २३१			१ ७ ४ ७८८
निर्वाणसप्तमीकथा	ब० ज्ञानसागर	(हि) २२	नेमिनाथ के लक्ष्मण	बिनोदीकाक	(हि) ४४
निर्वाणसप्तमीकथा	पोड हरिकृष्ण	(हि) ७६३	नेमिनाथ के बाण्डा भव	—	(हि) ७९
निर्वाणभवनकथा	ब० नेमिदत्त	(सं) २३१	नेमिनीकोमङ्गल	जगतभूषण	(हि) २६७
निर्वाणभवनकथा	—	(हि) २३	नेमिनाथचरित	हेमचन्द्राचार्य	(सं) १७७
निर्वाणप्राथम्यवृत्ति	—	(सं) २५५	नेमिनाथकथ	शुभचन्द्र	(हि) ३८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(स०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवन्कोर्त्ति	(हि०)	६१८
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(स०)	७६३	नेमिराजुलपच्चीसी	विन्नेदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६६	नेमिराजुलसज्जाय		(हि०)	४१३
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६	नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिनाथपूजाष्टक	शभूराम	(सं०)	४६६	नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	४००
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८	नेमिस्तोत्र	—	(स०)	४३२
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५	नेमिसुरकवित्त [नेमिसुर राजमतिवेलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७२५	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	७५७	नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२	नेमीश्वरकी स्तुति	भूवरदास	(हि०)	६५०
नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	(हि०)	६३८	नेमीश्वरका हिडोलना	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२	नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुच	(हि०)	७३८
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	३६६	नेमीश्वरको रास	भाऊकवि	(हि०)	६२८
नेमिनाथाष्टक	भूवरदास	(हि०)	७७७	नेमीश्वरचौमासा	सिहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	१४७	नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह सार	(हि०)	७७६
नेमिनिर्वाणपञ्चिका	—	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमिव्याहलो	—	(हि०)	२३१	नेमीश्वररास	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमिराजमतीका चोमासिया	—	(हि०)	६१६	नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१
नेमिराजमती की घोडी	—	(हि०)	४४१				६२१, ६३८
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१	नेमित्तिक प्रयोग	—	(स०)	६३३
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७	नेषधचरित्र	हर्षकीर्त्ति	(स०)	१७७
नेमिराजमतिरास	रत्नमुक्ति	(हि०)	६१७	नौशेरवा बादशाहकी दस ताज	—	(हि०)	३३०
नेमिराजलव्याहलो	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२	न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(स०)	१३४
नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	(हि०)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(स०)	१३४
म राजषिसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्याख्यरीतिका	बटि धर्मभूषण	(स)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	छोटेलाल मिश्र	(हि)	२
व्याख्यरीतिकाभाषा	सद्यो पद्माक्षाल	(हि)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	टेकचन्द	(हि)	२ १
व्याख्यरीतिकाभाषा	सदासुख कामक्रीवाक	(हि)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	पद्माक्षाल	(हि)	२ १
व्याख्यमाता	परमहंस परिब्राह्मणभार्य	(स)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	भैरवदास	(हि)	२ १
व्याख्यमाता	—	(स)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	रूपचन्द	(हि)	२
व्याख्यमाता	साधबदेव	(स)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	शिबजीलाल	(हि)	४२६
व्याख्यमाता	—	(स)	११२	पञ्चनस्याणकपूजा	—	(हि)	४२६
व्याख्यविद्यान्तमञ्जरी	म० बृहामणि	(स)	११६				२ १ ७१२
व्याख्यविद्यान्तमञ्जरी	ज्ञानकीदास	(स)	११२	पञ्चनस्याणकपूजाष्टक	—	(स)	१८१
व्याख्यसूत्र	—	(स)	११६	पञ्चनस्याणक [मन्थनविधि]	—		२२२
शुभिकपूजा	—	(हि)	१ ७	पञ्चनस्याणकस्तुति	—	(प्र)	११८
शुभिकपूजातारविधि	—		१ ३	पञ्चनस्याणकौघापनपूजा	ज्ञानभूषण	(स)	११
शुभिकपूजा	—		१ ३	पञ्चपुत्राष्टक	—	(हि)	२ २ ७२६
शुभिकपूजा	बिहूपाल	(हि)	७७७	पञ्चगोत्रपत्रपूजा	गङ्गादास	(स)	५ १
शुभिकपूजा	वनी	(हि)	७७७	पञ्चधेनुपत्रपूजा	सोमसोम	(स)	७६२
शुभिकपूजा	—	(स)	२१४ ६४	पञ्चव्याण	—	(प्र)	११६
प				पञ्चव्याण	—	(स)	२ २
पञ्चव्याण	सुश्रवाचार्य	(स)	२११	पञ्चव्याण	—	(हि)	७६३
पञ्चव्याण	हरचन्द	(हि)	४	पञ्चव्याण	—	(स)	१ ६
पञ्चव्याण	हरिचन्द	(हि)	७६६	पञ्चव्याण	—	(स)	३३
पञ्चव्याण	—	(स)	१६६	पञ्चव्याण	—	(हि)	३३
पञ्चव्याण	अरुणप्रणि	(स)	२	पञ्चव्याण	—	(स)	३४६
पञ्चव्याण	गुणदीपि	(स)	२	पञ्चव्याण [१२] कर्कटी विधि	—	(स)	३४६
पञ्चव्याण	बाहीमसिंह	(स)	२७	पञ्चव्याण	—	(स)	२७१ ७३६
पञ्चव्याण	गुणामागर	(स)	२	पञ्चव्याण	—	(स)	४ १
			२११ २३०	पञ्चव्याण	—	(स)	२ १
पञ्चव्याण	सुवर्णदीपि	(स)	२	पञ्चव्याण	—	(हि)	६६
पञ्चव्याण	सुवर्णदीपि	(स)	४६६				४२६, ७८८
पञ्चव्याण	—	(स)	२	पञ्चव्याण	—	(हि)	७४२
			२१६ २१८ २१९ २२० २२१	पञ्चव्याण	—	(हि)	१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	सं० पृष्ठ
पञ्चपरमेष्ठीगुणस्तवन	—	(हि०)	७०७	पंचमीव्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(स०)	५०४, ५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(स०)	५०२, ५१८	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(स०)	६३८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(स०)	५०२	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०४
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(स०)	५०३ ५१४, ५६६	पंचमीस्तुति	—	(सं०)	६१८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	(हि०)	५०३	पंचमेरुद्यापन	भ० रत्नचन्द्र	(स०)	५०५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०३, ५१८	पंचमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३ ५१८, ५१९, ६५२, ७१२	पंचमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलचित्र]	—		५२५	पंचमेरूपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	५१६
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(स०)	४२२	पंचमेरूपूजा	भ० महीचन्द्र	(स०)	६०७
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१	पंचमेरूपूजा	—	(स०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	४४३	पंचमेरूपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पञ्चपरमेष्ठीसनुच्चयपूजा	—	(स०)	५०२	पंचमेरूपूजा	—	(अप०)	६३६
पञ्चपरमेष्ठीसनुच्चयपूजा	—	(स०)	५०२	पंचमेरूपूजा	डालूराम	(हि०)	५०५
पञ्चपरमेष्ठीसनुच्चयपूजा	—	(स०)	३८	पंचमेरूपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०५
पञ्चपालपर्वतीसो	—	(हि०)	६८६	पंचमेरूपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५
पञ्चपररूपगा	—	(स०)	२६६	पंचमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पञ्चवधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१	पंचमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पञ्चवधावा	—	(राज०)	६८२	पंचमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पञ्चवालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४	पंचमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पञ्चमगतित्रैलि	हर्षकीर्ति	(हि०)	६२१ ६६१, ६६८, ७५०, ७६५	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०)	५४०	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०)	५०४	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमीउद्यापन	—	(स० हि०)	५१७	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमीव्रतपूजा	केशवसेन	(स०)	५१५	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	५०४	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पञ्चमीव्रतपूजा	—	(स० हि०)	५१७	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमंकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—	(हि०)	३६८, ४२८, ४०१, ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४, ६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०, ७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
				पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
				पञ्चरत्नपरोक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
				पञ्चलट्टिविचार	—	(प्रा०)	७०७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थसाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	
पंचसंग्रह	भा० नेमिचन्द्र	(प्रा)	३८	पक्षीसासन	—	(सं)	१७४	
पंचसंग्रहटीका	अमितरावि	(सं)	३९	पट्टीपहाडकी पुस्तक	—	(हि)	३९८	
पंचसंग्रहटीका	—	(सं)	४	पट्टीपति	विष्णुभट्ट	(स)	१३६	
पंचसंग्रहसूत्र	अभयचन्द्र	(स)	३९	पट्टावलि	—	(हि)	३७३ ७९६	
पंचसंधि	—	(स०)	२६१	पट्टिबन्धनसूत्र	—	(प्रा)	६१६	
पंचस्तोत्र	—	(स)	५७५	पराकरहाजयमान	—	(सप)	६३६	
पंचस्तोत्रटीका	—	(सं)	४१	पत्रपरीक्षा	पात्रकरारी	(स)	१३६	
पंचस्तोत्रसंग्रह	—	(स)	६१	पत्रपरोक्षा	विद्यानन्दि	(सं)	१३६	
पंचाक्षरान्त	विष्णुरामा	(स०)	२६२	पञ्चानाम्यविचार	—	(सं)	१३९	
पञ्चाङ्ग	चण्डू	—	२८३	पद्म	असुरैराम	(हि)	२८३	
पञ्चाङ्गप्रबोध	—	(सं)	२८३	पद्म	असुरैराम	(हि)	२८३	
पञ्चाङ्गमास	गणेश [विद्यापुत्र]	—	(सं)	२८३	पद्म	असुरैराम	(हि)	२८३
पञ्चाङ्गविचार	—	(सं)	३७३, ५१६	पद्म	—	६९७ ७२४ ५८		
पञ्चाङ्ग्यायी	—	(हि)	७२६	पद्म	अनन्तकीर्ति	(हि)	२८३	
पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि)	६७३	पद्म	असुरैराम	(हि)	२८३,	
पञ्चास्तिकाय	कुन्दकुम्हारचर्य	(प्रा)	६०	पद्म	असुरैराम	(हि)	७५६ ७९८	
पञ्चास्तिकायटीका	असुरैरामसुरि	(स)	४१	पद्म	अनन्तकीर्ति	(हि०)	६९१	
पञ्चास्तिकायभाषा	सुब्रह्मण्य	(हि)	४१	पद्म	—	६९४ ७ २, ७२४ ७७४		
पञ्चास्तिकायभाषा	प हीरानन्द	(हि)	४१	पद्म	ब्र० कपूरचन्द्र	(हि)	२७	
पञ्चास्तिकायभाषा	पांड हिराज	(हि)	४१	पद्म	—	६९५, ६२४		
पञ्चास्तिकायभाषा	—	(हि)	७१९ ७२	पद्म	कबीर	(हि)	७७७ ७९३	
पञ्चैन्द्रिकैसि	डीहल	(हि)	७९८	पद्म	कर्मचन्द्र	(हि)	२८७	
पञ्चैन्द्रिकैसि	ठककुरसी	(हि)	७ ३	पद्म	किरणगुलाब	(हि)	६९४, ७९३	
पञ्चानुपरात	—	(हि)	६९३	पद्म	किरणदास	(हि)	६९९	
पञ्चतमरण	—	(सं)	६४	पद्म	किरणसिंह	(हि)	२९ ७ ४	
पञ्चोत्त	डीहल	(हि)	७३५ ७६५	पद्म	कुमुदचन्द्र	(हि)	७२७ ९७	
पञ्चदशिका	—	(हि)	११	पद्म	कृष्णगुलाब	(हि०)	४२५	
पञ्चवी स्याही	—	(हि)	७४१	पद्म	सुरेशचन्द्र	(हि)	२८३	

ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	श्लोक	भाषा पृष्ठ सं०
पर	नयनमुग्ध	(हि०) १५३	पर	भाष	(हि०) १८३
पर	नेत्रपात्र	(हि) १५४	पर	भागवद्	(हि०) १७०
पर	नवल	(हि) १७१	पर	मानुकीर्ति	(हि०) १८१
१८२ १८१ १८० १११, १४८ १११ ११४ ११५					१८२, ११५
७ ६, ७८२ ७८१ ७८८			पर	भूपरदास	(हि०) १८
पर	म० नाथू	(हि०) १२२	१५६, १८६ १८०, ११४ १११, १४८, ११४ ११४		
पर	निमल	(हि) १८१	११४ ७८१, ७८१ ७८८		
पर	नेत्रियम्	(हि) १८०	पर	मङ्गलसप्तम	(हि) १८१
	१२२ १११		पर	मनराम	(हि०) १६०
पर	म्हामठ	(हि०) ७८८		७२४, ७४१ ७१४ ७१६ ७२६	
पर	पद्मतिष्ठक	(हि०) १८१	पर	मनसारास	(हि) १८०
पर	पद्मनिन्द	(हि०) १४१		१११, ११४	
पर	परमानन्द	(हि) ७७	पर	मनोहर	(हि) ७११
पर	पारसदास	(हि) ११४		७१४, ७८१	
पर	पुरुषावतम	(हि) १८१	पर	मस्तकचन्द	(हि०) ४४६
पर	पुनो	(हि) ७८१	पर	मल्लदास	(हि०) ७८१
पर	पूरणचैव	(हि) १११	पर	धर्मीचन्द	(हि) १७६
पर	फनेन्द्रचन्द	(हि) १७१	पर	महम्मदकीर्ति	(हि) १२० ७८६
	१८ ७८१ १८२		पर	माथिकचन्द	(हि०) ४४७
पर	वसन्तराम	(हि) १५१		४४८, ७८८	
	१८४, ११८ ७८२ ७८१ ७८१		पर	मुष्णदास	(हि) १६ २
पर	वसन्तकीवास	(हि) १८२	पर	मेला	(हि) ७७१
१५१ १८१, १५६ १८७, १८६ १२१, १२१, १८७ ७८८			पर	मैलीराम	(हि) ७७१
पर	वसन्तचैव	(हि) ७८८	पर	मोदीराम	(हि) १६१
पर	वाङ्मचन्द	(हि) १२१	पर	मोहन	(हि) ७१४
पर	बुधजन	(हि) १७०	पर	रासचन्द्र	(हि) १७७
	१७१, १११ ११४ ७ ६ ७८१ ७८८		पर	राजसिंह	(हि) १८७
पर	वसन्तराम	(हि) ७८८	पर	राजाराम	(हि) १६
पर	वसन्तकीवास	(हि) ७ ६	पर	राम	(हि) १११
पर	वसन्तसाह	(हि) १८१	पर	रामकिशान	(हि) ११८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	सकलकीर्ति	(हि०)	५८८
			६६८, ६९९	पद	सन्तदास	(हि०)	६५४, ७५६
पद	रामदास	(हि०)	५८३	पद	सत्रलसिंह	(हि०)	६२४
			५८८, ६९७	पद	समयसुन्दर	(हि०)	५७९
पद	रामभगत	(हि०)	५८२				५८८, ५८९, ७७७
पद	रूपचन्द्र	(हि०)	५८५	पद	श्यामदास	(हि०)	७६४
			५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४९	पद	सवाईराम	(हि०)	५९०
			७५५, ७६३, ७६५, ७८३	पद	साईदास	(हि०)	६२०
पद	रेखराज	(हि०)	७९८	पद	साहकीर्ति	(हि०)	७७७
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०)	६८२	पद	साहिवराम	(हि०)	७९८
पद	ऋषि लहरी	(हि०)	५८५	पद	सुखदेव	(हि०)	५८०
पद	लालचन्द	(हि०)	५८२	पद	सुन्दर	(हि०)	७२४
			५८३, ५८७, ६९९, ७९३	पद	सुन्दरभूषण	(हि०)	५८७
पद	विजयकीर्ति	(हि०)	५८०	पद	सूरजमल	(हि०)	५८१
			५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६९७	पद	सूरदास	(हि०)	७६९, ७९३
पद	बिनोदीलाल	(हि०)	५९०	पद	सुरेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६२२
			७२३, ७५७, ७८३, ७९८	पद	सेवग	(हि०)	७९३, ७९८
पद	विश्वभूषण	(हि०)	५६१, ६२१	पद	दृष्टमलदास	(हि०)	६२४
पद	विसनदास	(हि०)	५८७	पद	हरखचन्द	(हि०)	५८३
पद	विहारीदास	(हि०)	५८७				५८६, ५८५, ७९३
पद	वृन्दावन	(हि०)	६४३	पद	हर्षकीर्ति	(हि०)	५८६
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०)	४४३				५८५, ५८८, ५९०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०
पद	शिवसुन्दर	(हि०)	७५०				७६३, ७६४
पद	शुभचन्द्र	(हि०)	७०२, ७२४	पद	हरिश्चन्द्र	(हि०)	६४९
पद	शोभाचन्द	(हि०)	५८३	पद	हरिसिंह	(हि०)	५८२
पद	श्रीपाल	(हि०)	६७०				५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६९९, ७७२, ७७६
पद	श्रीभूषण	(हि०)	५८३				७९३, ७९९
पद	श्रीराम	(हि०)	५९०	पद	हरीदास	(हि०)	७७०
				पद	मुनि हीराचन्द	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
पद	इमण्डल	(हि) ३६			
पद	—	(हि) ४४६	पद्यावतीमण्डलपूजा	—	(सं०) ३ ६
३०० ३०६ ६०२ ११४३ १४४ ७३ १३३ ७ ३			पद्यावतीरानीधारापना	समयसुन्दर	(हि) १२७
७ ४ ७ ३ ७२४ ७३१ ७३६ ७३४ ७७ ७७७			पद्यावतीश्राविक	—	(स) ३ ६
पद्यवी	यशस्वीति	(सप) १४२	पद्यावतीसहस्रनाम	—	(सं) ४ २
पद्यवी	महद्यपाल	(सप) १४१			
पद्यकोप	गोवर्धन	(सं) १६६	३ ६ ३६६ ६३६ ७३१ ७४१		
पद्यवृत्तसार	—	(हि) १७७	पद्यावतीसहस्रनामपूजा	—	(सं) ३ ६
पद्यपुराण	म० धमकीति	(सं) १४६	पद्यावतीस्वयनमंत्रसहित	—	(स) ४२३
पद्यपुराण	रविपेयाशाय	(सं) १४८	पद्यावतीस्तोत्र	—	(सं) ४ २
पद्यपुराण (रामपुराण)	म० सोमसेन	(सं) १४८	४२३ ४३ ४३२ ४३३, ४ ६ ३३६ ३६६ ६४३		
पद्यपुराण (उत्तररत्न)	—	(स) १४६	६४६ ६४७ ६७६ ७३३ ७३७ ७७६		
पद्यपुराणभाषा	मुरालचन्द्र	(हि) १४६	पद्यावतीस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि) १८३
पद्यपुराणभाषा	श्रीधरराम	(हि) १४६	पद्यावतीस्तोत्रश्रीमद्भक्तिसाधनविधि	—	(सं) ७४१
पद्यनिरिपञ्चविधिका	पद्यनदि	(सं) ६६	पद्यनिरि	—	(हि) ७१३
पद्यनिरिपञ्चविधिकाटीका	—	(सं) ६७	पद्यसंग्रह	बिहारी	(हि) ७१
पद्यनिरिपञ्चविधिका	जगन्नाथ	(हि) ६७	पद्यसंग्रह	गण	(हि) ७१
पद्यनिरिपञ्चमीभाषा	मन्नासाह	(हि) ६८	पद्यसंग्रह	धामन्यधन	(हि) ७१ ७७७
पद्यनिरिपञ्चमीभाषा	—	(हि) ६८	पद्यसंग्रह	म० कपूरचन्द्र	(हि) ४४३
पद्यनिरिपञ्चकाचार	पद्यनदि	(सं) ६८	पद्यसंग्रह	शेखराज	(हि) ४४३
पद्यावत्याष्टकम्	पारशरव	(स) ४ २	पद्यसंग्रह	गगाराम वैद्य	(हि) ६१३
पद्यावती वी डाल	—	(हि) ४ २	पद्यसंग्रह	चैनविजय	(हि) ४४३
पद्यावतीवन्द	—	(सं) ३४६	पद्यसंग्रह	चैनसुख	(हि) ४४६
पद्यावतीरूप	—	(सं) ३ ६ ७४१	पद्यसंग्रह	जगन्नाथ	(हि) ४४३
पद्यावतीवन्दिवरीस्ताव	—	(सं) ४३२	पद्यसंग्रह	मिनदास	(हि) ७७१
पद्यावतीवन्द	महीचन्द्र	(सं) ६ ७	पद्यसंग्रह	जाया	(हि) ४४३
पद्यावती वन्दक	—	(स) ४ २ ७४१	पद्यसंग्रह	श्रीभूषण	(हि) ४४३
पद्यावतीवन्द	—	(सं) ३ ६ ७४१	पद्यसंग्रह	दलाराम	(हि) ६२
पद्यावतीपूजा	—	(स) ४ २	पद्यसंग्रह	देवाशय	(हि) ४४६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११
पदसग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	वनारसीदास	(हि०)	४०२
पदसग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७४	
पदसग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२६	परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(स०)	५१६
पदसग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द्र	(हि०)	१०६
पदसग्रह	बखतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०
पदसग्रह	वनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७	
पदसग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५ ४४६, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द्र	(स०)	११०
पदसग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(स०)	१११
पदसग्रह	भागचन्द्र	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(स०)	१११
पदसग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५ ६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशवालावबोधनीटीका	खानचद	(हि०)	१११
पदसग्रह	मगलचन्द्र	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
पदसग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
पदसग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
पदसग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान ओसवाल	(हि०)	११६
पदसग्रह	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
पदसग्रह	शुभचन्द्र	(हि०)	७७७	परमानन्दपचविंशति	—	(स०)	४०४
पदसग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मानदि	(स०)	४०२, ४३७
पदसग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	(स०)	४०३
पदसग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमानन्दस्तवन	—	(सं०)	४२४, ४२५
पदसग्रह	सेवक	(हि०)	४४७	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(स०)	७२४
पदसग्रह	हरखचद	(हि०)	६६३	परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(सं०)	५७४
पदसग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमानन्दस्तोत्र	—	(स०)	४०४
पदसग्रह	हीराचन्द्र	(हि०)	४४५, ४४७			४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७	
पदसग्रह	—	(हि०)	४४४	परमानन्दस्तोत्र	वनारसीदास	(हि०)	५६२
			४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०	परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६
			७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०	परमार्थगीत व दोहा	रूपचद	(हि०)	७०६, ७६४
			७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७८०	परमारथलुहरी	—	(हि०)	७२४
				परमार्थस्तोत्र	—	(सं०)	४०४

ग्रन्थनाम	लोकक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लोकक	भाषा	पृष्ठ सं०
परमार्थीहण्डोसना	रूपचंद्र	(हि)	७९३	पांचपरबीप्रवकीकथा	धेखीवास	(हि)	१२१
परमैष्टिधेविगुणव्यतिगम	—	(मा)	३७३	पांचबोल	—	(मुजराठी)	१३१
पयू पराकटर	—	(स०)	११७	पांचमाझकीचीरस (मण्डनचित्र)	—	—	३१३
पयू परास्तुति	—	(हि)	४२२	पांचबासोंकामेडनचित्र	—	—	३२३
परसरामकथा	—	(सं)	२३३	पाटलपुरसङ्ग्रह	रयामसुन्दर	(हि)	४४६
परिभाषामुत्र	—	(सं)	२६१	पाठसंग्रह	—	(सं)	४३, ३७६
परिभाषेन्दुभापर	नागोजीभट्ट	(सं)	२६१	पाठसंग्रह	—	(सं मा)	३७३
परिधिष्टयत्र	—	(सं)	१७८	पाठसंग्रह	—	(मा)	३७३
परीधामुस	मृषिकव्यसहि	(सं)	१३९	पाठसंग्रह	—	(सं हि)	४५
परीधामुसभाषा	अयचन्द्र छावडा	(हि)	१३७	पाठसंग्रह	समदकर्ण, जैहरामबाफना	—	—
परापहबर्गन	—	(हि)	१८	पाठसंग्रह	—	(हि)	४३
पस्यमंडसविधान	शुभचन्द्र	(सं)	२३८	पाठसंग्रह	—	(सं)	१३
पस्यविचार	—	(सं)	२८६	पाठसंग्रह	—	(सं)	१३
पस्यविचार	—	(हि)	२७९	पाठसंग्रह	—	(सं)	१३
पस्यविधानकथा	—	(सं)	२४३, २४९	पाठसंग्रह	—	(हि)	१३
पस्यविधानकथा	सुराकाचर	(हि)	२३३	पाठसंग्रह	—	(हि)	१३, ७४३
पस्यविधानपूजा	अनन्तकीर्ति	(सं)	२७	पाठसंग्रह	—	(हि)	१७८
पस्यविधानपूजा	रत्नमिद	(सं)	२९	पाठसंग्रह	—	(सं)	२६१
			३६, ३१९	पाठसंग्रह	—	(सं)	४३
पस्यविधानपूजा	समितकीर्ति	(सं)	३९	पाठसंग्रह	—	(सं)	४३
पस्यविधानपूजा	—	(सं)	३७	पाठसंग्रह	—	(सं)	४३
पस्यविधानरत्न	अ० शुभचन्द्र	(हि)	२६३	पाठसंग्रह	—	(हि)	२८६
पस्यविधानरत्नोरत्नप्यात्रकथा	अनन्तमागर	(सं)	२३३	पाठसंग्रह	—	(सं)	४३
पस्यविधि	—	(सं)	१७	पाठसंग्रह	—	(हि)	४४७
पस्यनोपारन	शुभचन्द्र	(सं)	२७	पाठसंग्रह	—	(हि)	३७
पस्यनोपारन	—	(सं)	२७	पाठसंग्रह	—	(हि)	७०
पस्यनूतनाय	बादिसंग्रमुनि	(ग)	१७	पाठसंग्रह	—	(सं)	४२९
पसेनिका	साह	(हि)	१२१	पाठसंग्रह	—	(सं)	४३
पस्यनोपारन	अच्युत	(हि)	१८२	पाठसंग्रह	—	(हि)	३६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथकीगुरामाल	लोहट	(हि०)	७७६	पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	(हि०)	६६७
पारसनाथकीनिसारणी	—	(हि०)	६५०	पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१७
पार्श्वनाथकीनिशानी	जिनहर्ष	(हि०)	४४८, ५७६	पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४४६, ६४५
पार्श्वनाथकीनिशानी	—	(हि०)	७०२	पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	७४५
पार्श्वनाथकेदर्शन	वृन्दावन	(हि०)	६२५	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	६१४
पार्श्वनाथचरित्र	रइधू	(अप०)	१७६				७०२, ७४५
पार्श्वनाथचरित्र	वादिराजसूरि	(स०)	१७६	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनदि	(स०)	५६६, ७४४
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	१७६	पार्श्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(स०)	४१३
पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	५६८	पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(स०)	५६६
पार्श्वजिनचैत्यालयचित्र	—		६०३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	४०५
पार्श्वनाथजयमाले	लोहट	(हि०)	६४२				४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८, ६४५,
पार्श्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६				६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३
पार्श्वनाथपद्मावतीस्तोत्र	—	(स०)	४०५	पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	४०६
पार्श्वनाथपुराण [पार्श्वपुराण]	भूधरदास	—					४०६, ५६६, ६१५
		(हि०)	१७६, ७४४, ७६१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	४०६
पार्श्वनाथपूजा	—	(स०)	४२३				४४६, ५६६, ७३३
			५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१	पार्श्वनाथस्तोत्रटीका	—	(स०)	४०६
पार्श्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(स०)	५१३	पार्श्वनाथाष्टक	—	(स०)	४०६, ६७६
पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६६३	पार्श्वनाथाष्टक	सकलकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७	पाराविधि	—	(हि०)	२६६
			५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८	पाराशरी	—	(स०)	२८६
पार्श्वनाथपूजामंथसहित	—	(स०)	५७५	पाराशरीसज्जनरजनीटीका	—	(स०)	२८६
पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	महामुनि रामसिंह	(स०)	४०६	पावागिरीपूजा	—	(हि०)	७३०
पार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	४०५	पाशाकेवली	गर्गमुनि	(स०)	२८६, ६४७
पार्श्वनाथस्तवन	देवचद्रसूरि	(स०)	६३३	पाशाकेवली	ज्ञानभास्कार	(स०)	२८६
पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७			(स०)	२८६, ७०१
पार्श्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१	पार्श्वनाथस्तवन	अचजद	(हि०)	७१३
पार्श्वनाथस्तवन [पार्श्वविनती]	म० नाथू	—				(हि०)	२८७
		(हि०)	६७०, ६८३				५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८५, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विजयसहस्रनाम	मानवन् कवि	(हि)	३१	पुरुषार्थसिद्धिपुष्पभाषा	टोडरमल	(हि)	१९
विजयसहस्रनाम (सं० रत्नावली) —				पुष्करमल पूजा	विश्वभूषण	(सं)	४१७
	हरिरामदास	(हि)	३११	पुष्पवन्तविजयपूजा	—	(सं०)	१९
विजयप्रदीप	भट्ट लक्ष्मीनाथ	(सं)	३११	पुष्पाञ्जलिपूजा	—	(सप)	१३३
विजयभाषा	रूपदीप	(हि)	७९	पुष्पाञ्जलिनयममाल]	—	(सप)	७४४
विजयभाष्य	नागराज	(सं)	३११	पुष्पाञ्जलिविधानकथा ५० हरिश्चन्द्र		(सप)	२४२
विजयसाहस्य	—	(सं)	३११	पुष्पाञ्जलिविधानकथा	—	(सं०)	२४३
वीठपूजा	—	(सं)	१८	पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	मिनदास	(सं)	२३४
वीठप्रधान	—	(सं)	१७२	पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	भूतकीर्ति	(स)	२३४
पुष्पीमेण	—	(मा)	१९	पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	कलितकीर्ति	(सं)	१९२ ७९४
पुष्पसतीमी	समयसुन्दर	(हि)	११९	पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	सुराजबन्धु	(हि)	२३४
पुष्पतत्वदर्शा	—	(सं)	४१				२४२, ७११
पुष्पायनकथाकोश	सुमुक्त रामधर	(स)	२३३	पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	[पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा]	गङ्गादास	
पुष्पायनकथाकोश	टंकचन्द्र	(हि)	२३४				(सं) १ ५ २१९
पुष्पायनकथाकोश	दौखतराम	(हि)	२३३	पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा	भ० रतनचन्द्र	(सं)	१८
पुष्पायनकथाकोश	—	(हि)	२३३	पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं)	१८
पुष्पायनकथाकोशसूची	—	(हि)	२३४	पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा	—	(सं)	१८ २१९
पुष्पाहाराचन	—	(स)	१७ १९९	पुष्पाञ्जलिप्रतविधानकथा	—	(स)	२३४
पुस्तकवीर्य	मालदेव	(हि)	७३८	पुष्पाञ्जलिप्रतविधान	—	(सं)	२४
पुस्तकपूजा	—	(स)	२१९	पूजा	पद्मनन्द	(सं)	२९
पुस्तकविधानकथा	—	(स)	२४३	पूजा एवं कथासंग्रह	सुराजबन्धु	(हि)	२१९
पुस्तकविधान	—	(स)	२८	पूजाविद्या	—	(हि)	१८
पुस्तकविधि	—	(स)	२७७	पूजानामकी की सूची	—	(हि)	११२
पुस्तकमार	भीमशुनि	(स)	१२१	पूजा व कथनाय	—	(स)	२११
पुस्तकमारकथ	भ० मन्मथकीर्ति	(सं)	१२१	पूजा कथनाय	—	(सं)	१२२
पुस्तकविधि	—	(हि)	७८९	पूजागाथ	—	(हि)	२१२
पुस्तकविधान	गोविन्दभट्ट	(स)	१९	पूजागाथसंग्रह	—	(स)	२८
पुस्तकविधानकथ	कमलचन्द्राचार्य	(स)	१८				१४९ १५२ १९७ १९९ ७१३, ७१५, ७१७ ७१९
पुस्तकविधानकथा	भूपरमि	(हि)	१९				७५ ७९९

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	५१०	प्रक्रियाकीमुदी	—	(स०)	२६१
		५११, ७४३, ७४४		पृच्छावली	—	(हि०)	६५७
पूजापाठस्तोत्र	—	(स० हि०)	७१०	प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०
			७८४	प्रतिक्रमण	—	(सं०)	६९
पूजाप्रकरण	उमास्वामी	(स०)	५१२				४२६, ५७१
पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह	—	(स०)	६९९	प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६९
पूजामहात्म्यविधि	—	(स०)	५१२	प्रतिक्रमण	—	(प्रा० स०)	४२५
पूजावर्णविधि	—	(स०)	५१२				५७३
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२	प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६९
पूजाष्टक	विश्वभूषण	(स०)	५१३	प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६९
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२	प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]	—	(प्रा०)	६९
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२	प्रतिमाठत्यापककूप उपदेश	जगरूप	(हि०)	७०
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२	प्रतिमासातचतुर्दशी [प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा]			
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि०)	७७७		अज्ञयराम	(स०)	५१६
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७४५	प्रतिमासातचतुर्दशीपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	७६१
पूजासंग्रह	—	(स०)	६०३	प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१४,
			६९४, ६९८, ७११, ७१२, ७२५				५२०, ५४०
पूजासंग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०	प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	रामचन्द्र	(स०)	५२०
पूजासंग्रह	लालचन्द्र	(हि०)	७७७	प्रतिष्ठाकु कु मपत्रिका	—	(स०)	३७३
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५६५	प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्त्ति	(स०)	५२०
			६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२९,	प्रतिष्ठादीपक	प० नरेन्द्रसेन	(स०)	५२१
			७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३९, ७४८ ।	प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(स०)	५२१
पूजासार	—	(स०)	५२०	प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनदि	(सं०)	५२१, ५२२
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(स० हि०)	६९६	प्रतिष्ठापाठ	—	(स०)	५२२
			७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३, ७१४, ७१६, ७२५,				६९९, ७५६
			७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८ ।	प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	५२२
पूर्वमीमासार्थप्रकरणसंग्रह	लोगान्निभास्कर	(स०)	१३७	प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६
पैसठबोल	—	(हि०)	३३१	प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३
पोसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२	प्रतिष्ठाविधि	—	(स०)	५२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीग्रन्थ	—	११५	प्रबचनसार	आ० कुन्दकुन्द	(भा) ११६
प्रतिष्ठासार	—	(स) ५२२	प्रबचनसारटीका	अमृतचन्द्र	(सं) ११७
प्रतिष्ठासार	पं० शिवजीशास्त्र	(हि) ५२२	प्रबचनसारटीका	—	(सं०) ११८
प्रतिष्ठासारोद्यार	—	(सं) ५२२	प्रबचनसारटीका	—	(हि) ११९
प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह	—	(स) ५२२	प्रबचनसारप्रामुख्यवृत्ति	—	(स) १२०
प्रद्युम्नकुमाररास	[प्रद्युम्नरास]	ब्र० राघवसङ्ग	प्रबचनसारभाषा	बोधराज गोदीका	(हि) १२५
	(हि) ५६३, ६६६ ७१२ ७३७		प्रबचनसारभाषा	धृम्बावनदास	(हि) १२५
प्रद्युम्नचरित	महासेनाचाय	(सं) १५	प्रबचनसारभाषा १	पण्डि हेमराज	(हि) १२३
प्रद्युम्नचरित	सोमकीर्ति	(सं) १५१	प्रबचनसारभाषा	—	(हि) १२५ ७१७
प्रद्युम्नचरित	—	(सं) १५२	प्रस्ताविकस्तोत्र	—	(स) १३२
प्रद्युम्नचरित	सिद्धकवि	(मप) १५२	प्रस्तकूटमण्डि	—	(स) २५७
प्रद्युम्नचरितभाषा	मन्नाशास्त्र	(हि) १५२	प्रसमननोरमा	गर्ग	(सं) २५७
प्रद्युम्नचरितभाषा	—	(हि) १५२	प्रसमास्ता	—	(सं) २५५
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि) ७२२	प्रसन्निधा	—	(सं) २५७
प्रद्युम्नरास	—	(हि) ७४६	प्रसन्नविनोद	—	(सं) २५७
प्रबोधचन्द्रिका	बैजयन्तमूर्ति	(सं) ११७	प्रसन्नसार	हयग्रीव	(सं) २५५
प्रबोधसार	धराकीर्ति	(सं) १३१	प्रसन्नसार	—	(सं) २५५
प्रभावटीक्यन	—	(हि) ६२	प्रसन्नमुक्तावलि	—	(सं) २५५
प्रमाणपत्रवास्तोकार्णवटीका	[प्लाकरावतारिका]		प्रसन्नावलि	—	(सं) २५५
	रत्नप्रसूति	(सं) १३७	प्रसन्नवलि कवित	बैद्य नङ्गाज	(हि) ७५२
प्रमाणनिर्णय	—	(स) १३७	प्रसन्नोत्तर मारुणियमाता	ब्र० ज्ञानसागर	(स) २५५
प्रमाखण्डीका	आ० विद्यानन्द	(स) १३७	प्रसन्नोत्तरमाता	—	(सं) २५५
प्रमाणपरिभाषाभाषा	भागवन्	(हि) १३७	प्रसन्नोत्तरवासिका	[प्रसन्नोत्तररत्नमाता]	अमोघवर्ष
प्रमाणप्रमेयवसिका	नरसूरी	(सं) १७२			सं० १३२, २७१
प्रमाणमीमांसा	विद्यानन्द	(सं) १३५	प्रसन्नोत्तररत्नमाता	तुलसीदास	(पुन) १३२
प्रमाणमीमांसा	—	(स) १३५	प्रसन्नोत्तरभावकान्धार	—	(स) ७
प्रमाणप्रमेयवसिक	मरेन्द्रसंन	(सं) १३७	प्रसन्नोत्तरभावकान्धारभाषा	मुक्ताकीदास	(हि) ७
प्रमेयकर्ममार्तण्ड	आ० प्रमाचन्द्र	(सं) १३५	प्रसन्नोत्तरभावकान्धारभाषा	पद्माकाश चौधरी	(हि) ७
प्रमेयरत्नमाता	अनन्तदीर्घ	(स) १३५	प्रसन्नोत्तरभावकान्धार	—	(हि) ७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रश्नोत्तरस्तोत्र	—	(स०)	४०६	प्रीत्यङ्करचौपई	नेमिचन्द्र	(हि०)	७७५
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	७१	प्रीत्यङ्करचरित्र	—	(हि०)	६८६
प्रश्नोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३	प्रोषघदोषवर्णन	—	(हि०)	७५
प्रशस्ति	प्र० दामोदर	(स०)	६०८	प्रोषघोषवासन्नतोद्यापन	—	(सं०)	६९९
प्रशस्ति	—	(स०)	१७७	फ			
प्रशस्तिकाशिका	बालकृष्ण	(स०)	७३	फलफादल [पञ्चमेरु]	मण्डलचित्र	—	५२५
प्रह्लाद चरित्र	—	हि०)	६००	फलवधीपार्वर्नावस्तवन	समयसुन्दरगणि	(स०)	६१६
प्राकृतछन्दकोश	—	(प्रा०)	३११	फुटकरकवित्त	—	(हि०)	७४८
प्राकृतछन्दकोश	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११				७६९, ७७३
प्राकृतछन्दकोश	अन्हु	(प्रा०)	३११	फुटकरज्योतिषपद्य	—	(सं०)	५७३
प्राकृतपिंगलशास्त्र	—	(स०)	३१२	फुटकर दोहे	—	(हि०)	६९५
प्राकृतव्याकरण	चण्डिका	(स०)	२६२				६६६, ७८१
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२	फुटकरपद्य	—	(हि०)	
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(स०)	२६२	फुटकरपद्य एव कवित्त	—	(हि०)	६४३
प्राणप्रतिष्ठा	—	(स०)	५२३	फुटकरपाठ	—	(स०)	५७३
प्राणायामशास्त्र	—	(स०)	११४	फुटकरवर्णन	—	(स०)	५७४
प्राणीढागीत	—	(हि०)	७६७	फुटकरसवेया	—	(हि०)	७७५
प्रात क्रिया	—	(स०)	७४	फूलभीतरणी का दूहा	—	(हि०)	६७५
प्रात.स्मरणमन्त्र	—	(स०)	४०६	ब			
प्राभृतसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	१३०	बकचूलरास	जयकीर्त्ति	(हि०)	३६३
प्रायश्चित्तग्रन्थ	—	(स०)	७४	बभरावाडीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१९
प्रायश्चित्तविधि	अकलङ्कचरित्र	(स०)	७४	बखतविलास	—	(हि०)	७२६
प्रायश्चित्तविधि	भ० एकसाध	(स०)	७४	बडोकक्का	गुलावराय	(हि०)	६८५
प्रायश्चित्तविधि	—	(स०)	७४	बडाकक्का	—	(हि०)	६९३, ७५२
प्रायश्चित्तशास्त्र	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४	बडादर्शन	—	(स०)	३९८, ४३२
प्रायश्चित्तशास्त्र	—	(गुज०)	७४	बडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	सोमदत्त	(स०)	६३६
प्रायश्चित्तसमुच्चटीका	नदिगुरु	(स०)	७५	वदरीनाथ के छद्म	—	(हि०)	६००
प्रीतिङ्करचरित्र	प्र० नेमिदत्त	(स०)	१८२	वघावा	—	(हि०)	७१०
प्रीतिङ्करचरित्र	जोधराज	(हि०)	१८३				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ब्रह्मसंहिता	—	(हि)	१८२	ब्राह्मसूत्र	पाश्वदास	(हि)	११२
ब्रह्मसंहिता	सुब्रह्मण्य	(हि)	४४६	ब्राह्मसूत्र	रामचन्द्र	(हि०)	७१२
ब्रह्मसंहिता	विहारीदास (हि०)	४४६, ७२७		ब्राह्मसूत्र	सूर्य	(हि)	१२२
ब्रह्मसंहिता	—	(मा)	११६			१७, ७१२	७८८
ब्रह्मसंहिता	—	(सं)	१८	ब्राह्मसूत्र	—	(हि)	११२
ब्रह्मसंहिता	श्रीकांत	(हि)	४१		४४६	१११	१६४ ७२
ब्रह्मसंहिता	—	(सं)	२७२	ब्राह्मसंहिता	रघु	(हि)	११४
ब्रह्मसंहिता	बनारसीदास	(हि)	१४	ब्राह्मसंहिता	आशु	(हि)	१११
१८६ १६८, ७ १ ७ ८, ७२१	७१४ ७२१ ७२२			ब्राह्मसंहिता	सप्तसोमगण्डि	(हि)	११७
७२७				ब्राह्मसंहिता	शिवचन्द्रसूरी	(हि)	७
ब्रह्मसंहिता के कुछ पाठ	—	(हि)	७२२ ७२९	ब्राह्मसंहिता	नवल	(हि)	१२
ब्रह्मसंहिता	—		११			११२, ४२६	
ब्रह्मसंहिता	समयसुन्दर	(हि)	११६	ब्राह्मसंहिता	भगवतदास	(हि)	७२
ब्रह्मसंहिता	—	(हि)	७२१	ब्राह्मसंहिता	भूषणदास	(हि०)	११५
ब्रह्मसंहिता	—	(सं)	१७४	ब्राह्मसंहिता	बौद्धराम (हि०)	२११ १७२	
			२७२, २७४	ब्राह्मसंहिता	—	(हि)	११२
ब्रह्मसंहिता	अमरचन्द्र	(हि)	७१६		१८३ १४४ १८२, १८६, ७८८		
ब्रह्मसंहिता	—	(सं हि)	७११	ब्राह्मसंहिता श्रीराम	[मङ्गलचित्र]	—	२१२
ब्रह्मसंहिता	अजैराज	(हि)	१८१	ब्राह्मसंहिता	गाविन्द	(हि)	१६६
ब्रह्मसंहिता	—	(हि)	११	ब्राह्मसंहिता	चूडरकवि	(हि)	१६६
ब्रह्मसंहिता	दा० तुलसीचन्द्र	(हि)	७२	ब्राह्मसंहिता	बसराज	(हि)	७८
ब्रह्मसंहिता	भूषणदास	(हि)	७२	ब्राह्मसंहिता	—	(हि०)	१११
	१२, १७		७२ ७८२ ७८८				७४७ ७६७
ब्रह्मसंहिता	—	(हि)	७२	ब्राह्मसंहिता पद्मिनी [मङ्गलचित्र]	—		२२४
			२६६ १४६	ब्राह्मसंहिता का स्मृति	—	(हि०)	२१६
ब्राह्मसंहिता	—	(सं)	७४७	ब्राह्मसंहिता श्रीतीर्थप्रथमया त्रिनम्रभूषण	(हि०)	१६२	
ब्राह्मसंहिता	—	(मा)	७१६	ब्राह्मसंहिता श्रीतीर्थप्रथमया श्रीभूषण	(सं)	२१७	
ब्राह्मसंहिता	अक्षय	(हि)	७२२	ब्राह्मसंहिता प० पद्माकांत पाण्डेबाबू	(हि)	१२६	
ब्राह्मसंहिता	—	(हि)	७७७	ब्रह्मसंहिता	—	(हि)	२२१
ब्राह्मसंहिता	इत्थनास	(हि)	७१२				

ग्रन्थानुक्रमिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बालाविबोध [एमांकार पाठका अर्थ]	—	(प्रा० हि०)	७५	बुधजनसतसई	बुधजन (हि०)		३३२, ३३३
बावनी	बनारसीदास	(हि०)	७५०	बुद्धावतारचित्र	—		६०३
बावनी	हेमराज	(हि०)	६५७	बुद्धिविलास	बखतरामसाह	(हि०)	७५
बासठकुमार [मण्डलचित्र]	—		५२५	बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	(हि०)	६१७
बाहुवलीसज्जभाय	विमलकीर्ति	(हि०)	४४६	बुलाखीदास खत्रीकी वरात	—	(हि०)	७५३
बाहुवलीसज्जभाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	बेलि	छीहल	(हि०)	७३८
बिम्बनिर्माणविधि	—	(स०)	३५४	वैतालपच्चीसी	—	(स०)	२३४
बिम्बनिर्माणविधि	—	(हि०)	३५४, ६६१	बोधप्राभृत	कुदकुदाचार्य	(प्रा०)	११५
बिहारीसतसई	बिहारीलाल	(हि०)	६७५	बोधसार	—	(हि०)	७५
बिहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हि०)	७२७	ब्रह्मचर्याष्टक	—	(स०)	३३३
बिहारीसतसईटीका	हरिचरनदास	(हि०)	६८७	ब्रह्मचर्यवर्णन	—	(हि०)	७५
बिहारीसतसईटीका	—	(हि०)	७०६	ब्रह्मविलास	भैया भगवतीदास	(हि०)	३३३, ७६०
बीजक [कोश]	—	(हि०)	२७६	भ			
बीजकोश [मातृका निर्घट]	—	(स०)	३४६	भक्तामरपञ्जिका	—	(स०)	४०६
बीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हि०)	५११	भक्तामरस्तोत्र	मानतुगाचार्य	(स०)	४०२
बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितसिंह	(हि०)	७००				
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५१४				
			५१६, ७३०				
बीसतीर्थङ्करपूजा	थानजी अजमेरा	(हि०)	५२३				
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५२३, ५३७				
बीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	४००				
बीसतीर्थङ्करोकी जयमाल [बीस विरह पूजा]	—						
	हर्षकीर्ति		६६५, ७२२				
बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५६५				
बीसविरहमानजकडी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७				
बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हि०)	५०५	भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]	—	(सं०)	६१२
बीसविरहमाणपूजा	—	(स०)	६३६				६३६, ६७०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१
बीसविरहमानपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	(स० हि०)	७६३	भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	—	(सं०)	४०६
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	३३०	भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्रकथा				भक्तिपाठ	कनककीर्ति	(हि)	१११
भक्तामरस्तोत्र ऋषिमन्त्रसहित नथमल्ल		(हि)	२१४ ७ १	भक्तिपाठ	पद्मलाल चौबरी	(हि)	४४६
भक्तामरस्तोत्रकथा	बिनोदीबाल	(हि)	२३४	भक्तिपाठ	—	(हि)	४२
भक्तामरस्तोत्रटीका	हृषीकेशिसूरि	(सं)	४ ६	भक्तिपाठसंग्रह	—	(सं)	४२९
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं)	४ १ ११२	भक्तिसंग्रह [बाबाय भक्ति ठक]	—	(सं)	१०३
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं हि)	४ ६	भगतवस्थामणि	—	(हि)	९
भक्तामरस्तोत्रपूजा	करावसेन	(सं)	५१५ २४	भगवतीभारतभना	शिवाचार्य	(सं)	७९
भक्तामरस्तोत्रपूजा				भगवतीभारतभनाटीका	अपरान्जितसूरि	(सं)	७९
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीज्ञानभूषण	(सं)	५२३	भगवतीभारतभनाभाषा	सदासुन्द कासलीबाल	(हि)	७९
भक्तामरस्तोत्रपूजा	विश्वकीर्ति	(सं)	५२३	भक्ततामूत्र	—	(सं)	४२
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीमूषण	(सं)	५४०	भगवतीस्तोत्र	—	(सं)	४२५
भक्तामरस्तोत्रपूजा	—	(सं)	५१९	भक्तव्रतीता [कृष्णार्जुन संवत्स]	—	(हि)	७१ ७६
			५२४ १६६	भगवद्पीठा के कुछ स्तव	—	(सं)	६७१
भक्तामरस्तोत्रभाषा	अक्षयराज	(हि)	७५५	भजन	—	(हि)	७०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	गगाराम	(सं)	४१	भजनसंग्रह	नयनकवि	(हि)	४५
भक्तामरस्तोत्रभाषा	अपचन्द्र झाबडा	(हि)	४१	भजनसंग्रह	—	(हि)	१६७ १४१
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	(हि)	४१	भट्टामिषेक	—	(सं)	१५०
			४२६ ४ १, १ ४ १४८ १९१ ७०	भट्टारकविजयकीर्तिमठक	—	(सं)	१८६
			७०४ ७६२	भट्टारकगद्गावलि	—	(हि)	१७४ १७२
भक्तामरस्तोत्रभाषा	नथमल्ल	(हि)	७२	भडली	—	(सं)	२८६
भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	(हि)	४११	भद्रबाहुपरिच	रत्ननिधि	(सं)	१८३
			११५ १४४ १६४ १६९ ७ १ ७५३ ७०४	भद्रबाहुपरिच	अपाराम	(हि)	१ १
			७६८ ७६६	भद्रबाहुपरिच	नयनकवि	(हि)	१८३
भक्तामरस्तोत्र [मण्डलविच]	—		५ ४	भद्रबाहुपरिच	—	(हि)	१८३
भक्तामरस्तोत्रकृति	अ रा मल्ल	(सं)	४ ८	भक्तव्रस्तोत्र	—	(सं)	१८१
भक्तामरस्तोत्रकीर्ति	—	(सं)	७ ९	भक्तव्रस्तोत्र व मन्त्र	—	(सं)	१७२
भक्तिनामधरान	—	(सं हि)	१७१	भक्तव्रस्तोत्र	—	(सं)	४९३
भक्तिपाठ	—	(सं)	१७१	भक्तव्रस्तोत्र	—	(सं हि)	१९१
			१६१, १८९ ७ ६				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	(स०)	६३४
भरतेशवैभव	—	(हि०)	१८३	भावनाद्वात्रिशिका	आ० अमितगति	(सं०)	५७३
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	(स०)	३३३, ७१५	भावनाद्वात्रिशिकाटीका	—	(स०)	११५
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७	भावनाद्वात्रिशिका	—	(सं०)	११५, ६३७
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८	भावपाहुड	कुडकुदाचार्य	(प्रा०)	११५
भवानीसहस्रनाम एव कवच	—	(स०)	७६२	भावनापञ्चीसीसतोद्यापन	—	(स०)	५२४
भविष्यदत्तकथा ^१	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६४	भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(सं०)	५७५
	५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७६३, ७७५			भावनावतीसी	—	(स०)	६२८, ६३३
भविष्यदत्तचरित्र	प० श्रीधर	(स०)	१८४	भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	(स०)	७७, ६१५
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१८४	भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४
भविष्यदत्ततिलकासुन्दरीनाटक	न्यामतमिह	(हि०)	३१७	भावप्रकाश	मानमिश्र	(सं०)	२६६
भव्यकुमुदचन्द्रिका	[सागारधर्मामृतस्त्रोपज्ञटीका]			भावप्रकाश	—	(स०)	२६६
	प० आशाधर	(स०)	६३	भावशतक	श्री नागराज	(स०)	३३४
भागवत	—	(स०)	६७५	भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७
भागवतद्वादशस्कंधटीका	—	(स०)	१५१	भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८
भागवतपुराण	—	(स०)	१५१	भावसंग्रह	वामदेव	(स०)	७८
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६	भावसंग्रह	—	(स०)	७८, २६६
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कंध]	—	(स०)	१५१	भाषा भूषण	जसवर्तसिंह	(हि०)	३१२
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५	भाषाभूषण	धीरजसिंह		
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४	भाष्यप्रदीप	कैश्यट	(स०)	२६२
भावनिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००	भाष्यती	पद्मनाभ	(स०)	२८६
भावदीपक	जोधराज गोदीका	(हि०)	७७	भुवनकोक्ति	बृधराज	(हि०)	२८६
भावदीपक	—	(हि०)	६६०	भुवनदीपक	पद्मपद्ममूरि	(स०)	२८६
भावदीपिका	कृष्णशर्मा	(स०)	१३६	भुवनदीपिका	—	(स०)	२८६
भावदीपिकाभाषा	—	(हि०)	४२	भुवनेश्वरीस्तोत्र	[सिद्धमहामत्र]		
भावनाउत्पत्तीसी	—	(स०)	६४२				
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(स०)	७३६				
नोट—रचना के यह नाम और हैं—				भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३
१ भविष्यदत्तचौपई भविष्यदत्तपञ्चमीकथा भविष्यदत्तपञ्चमीरास				भूतकालचौवीसी	बुधजन	(हि०)	३६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	
भूत विधिष्य वर्तमानविमलपूजा	पंडित विनोदास	(सं)	४७	मन्थविधिषि	—	(हि)	२२५	
भूतसचतुर्विधविस्तोत्र	भूपाळ	(सं)	४२	मन्थ	—	(सं)	२७३	
	४११ ४२३, ४०८ ४३२ २७२ २२४ १ ५			मन्थ व श्रीपयिका गुमला	—	(हि)	३०	
	१३३ १३७ ७३७			मन्थ महीशधि	पं० महीशर	(सं)	३२१ २७७	
भूपासचतुर्विधविस्तोत्रटीका	आशाधर	(सं)	४१ ४११	मन्थशास्त्र	—	(सं०)	३५	
भूपासचतुर्विधविस्तोत्रटीका	विजयचरण	(सं)	४१२	मन्थशास्त्र	—	(हि)	३२	
भूपासश्रीबीसीभाषा	पद्माशास	श्रीपरी	(हि)	४१२	मन्थसंग्रह	—	(सं)	३२१
भूपासश्रीबीसीभाषा	—	(हि)	७७४		१७५ १२१ ७ ३ ७३६ ७२७			
भूवस	—	(सं)	३०१	मन्थसंहिता	—	()	१८	
भैरवनामस्तोत्र	—	(सं)	२२१	मन्थविधिषंग्रह	—	(सं)	२७२	
भैरवपद्यावतीकल्प	महिषेयसूरी	(सं)	३४१	मसीपत्तर्भनावस्तवन	आधरा मुनि	(हि)	११८	
भैरवपद्यावतीकल्प	—	(सं)	३२	मन्थप्रकार [विधि]	—		१ ३	
भैरवाष्टक	—	(सं)	११२, १४१	मणिरत्नाकर जमनाल	—	(हि)	२२४	
श्रीबीरसुकी वस्त्रकुडमी	—	(हि)	७७१	मणुवसंधि	—	(सं)	१४२	
श्रीजप्रबन्ध	पं० ब्रह्मक्ष	(सं)	१८३	मदनपराजय	विनोदेवसूरी	(सं)	३१७	
श्रीजप्रबन्ध	—	(सं)	२३३	मदनपराजय	—	(सं)	३१७	
श्रीजराज्ञो	सत्यमान	(हि)	७१७	मदनपराजय	स्वरूपचन्द्र	(हि)	३१८	
श्रीमचरित	म० रत्नचन्द्र	(सं)	१८३	मदनमोहनरत्नश्रीभाषा	रत्नपति शैलनाथ	(हि)	३३४	
शुद्धसंहिता	—	(सं)	२५१	मदनविमोह	मदननाथ	(सं)	३	
श्रमरवीर	मानसिंह	(हि)	७३	मनुकैटवचन [महिषासुरवच]	—	(सं)	२३३	
श्रमरवीर	—	(हि)	१ ७४५	मनुमानवीरमा	चतुसु अदास	(हि)	१३६	
	म			मन्थनाकपूजा	—	(सं)	२२३	
मङ्गल	विनोदीनाथ	(हि)	७२	मनोरथमाता	मन्थकीर्ति	(हि)	७६४	
मङ्गलकथामहासुनिचतुष्पी				मनोरथमाता	—	(हि)	७७	
	रगविनयगणि (हि)	राज)	१८५	मनोहरपुराणी पीठिका	वर्तन	(हि)	७२१	
मङ्गलपाठ	—	(सं)	२२१	मनोहरमञ्जरी	मनोहर मिश्र	(हि)	७६६	
मङ्गलाष्टक	—	(सं)	११४	मरकतबिलास	पद्माशास	(हि)	७८	
मन्थविधिषि	—	(सं)	२२३	मरणकरिका	—	(सं हि)	४२	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मरुदेवोकी सज्जाय ऋषि लालचन्द्र		(हि०)	४५०	महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
मल्लिनाथपुराण	सकलकीर्त्ति	(स०)	१५२	महावीराष्टक	भागचन्द्र	(स०)	४१३
मल्लिनाथपुराणभाषा	सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२	महाशान्ति कविधान	प० धर्मदेव	(स०)	६२५
मल्हारचरित्र	—	(हि०)	७४१	महिम्नस्तवत	जयकीर्त्ति	(स०)	४२५
महर्षिस्तवन	—	(स०)	६५८	महिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३
			४१३, ४२६	महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(सं०)	१८६
महर्षिस्तवन	—	(हि०)	४१२	महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि	(स०)	१८६
महागरापतिकवच	—	(स०)	६६२	महीपालचरित्रभाषा	नथमल्ल	(हि०)	१८६
महादण्डक	—	(हि०)	७३५	मागीतु गीगिरिमडलपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५२६
महापुराण	जिनसेनाचार्य	(स०)	१५३	मारिक्यमालाग्रन्थप्रश्नोत्तरी	सग्रहकर्ता—		
महापुराण [सक्षित]	—	(स०)	१५२	त्र० ज्ञानसागर	(स० प्रा० हि०)		६०४
महापुराण महाकवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३	माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०)	४२४	
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(स०)	६७६	माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द्र	(स० हि०)	५६०
महाभिषेकपाठ	—	(स०)	६०७	माधवनिदान	माधव	(स०)	३००
महाभिषेकसामग्री	—	(हि०)	६६८	माधवानलकथा	आनन्द	(स०)	२३५
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(स०)	४१३	मानतु गमानवति चौपई	मोहनविजय	(स०)	२३५
महामहिम्नस्तोत्र	—	(स०)	४१३	मानकी वडी बावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(स०)	४१३	मानबावनी	मानकवि	(हि०)	३३४, ६०१
महाविद्या [मन्त्रोका सग्रह]	—	(स०)	३५१	मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०)	६५१
महाविद्याविडम्बन	—	(स०)	१३८	मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७६
महावीरजीका चौढाल्या ऋषि लालचन्द्र		(हि०)	४५०	मानलघुबावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महावीरछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६	मानविनोद	मानसिंह	(स०)	३००
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(स०)	५२६	मानुपोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	४६७
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(सं०)	५२६	मायाब्रह्मका विचार	—	(हि०)	७६७
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०)	३६८	मार्कण्डेयपुराण	—	(स०)	१५३, ६०७
महावीरपूजा	वृन्दावन	(हि०)	५२६	मार्गशा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०)	४३
महावीरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००	मार्गशावर्णन	—	(प्रा०)	७६६
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०)	७३५	मार्गशाविधान	—	(हि०)	७६०
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(स०)	७५७	मार्गशासमास	—	(प्रा०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	माया पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	माया पृष्ठ सं०
मासीरासो	जिनदास	(हि) ५७६	मुनिसुवतपुराण	ब्र० कृष्णदास	(स) १५३
मिन्दासुक्क	ब्र० जिनदास	(हि) १८६	मुनिसुवतपुराण	इन्द्रजीत	(हि) १५३
मिन्दासुक्क	चासी	(हि) १३४	मुनिसुवत विमती	देवाग्रज	(हि) ४२
मिन्दासुक्क	बस्तराम	(हि) ७८ ५१	मुनीश्वरोंकी जयमाला	—	(स) ४९८
मिन्दासुक्क	—	(हि) ७६		५७६, ५७८ १५६, ७५२	
मुकुटसप्तमीकथा	प० अन्नदेव	(स) २४४	मुनीश्वरोंकी जयमाला	—	(प्रप) १३०
मुकुटसप्तमीकथा	सुरालक्ष्मण	(हि) २४४ ७३१	मुनीश्वरोंकी जयमाला	ब्र० जिनदास	(हि) ५७१
मुकुटसप्तमीसतोपासना	—	(सं) १२७			१२२, ७३०
मुक्तावलीकथा	—	(स) १३१	मुनीश्वरोंकी जयमाला	—	(हि) १२१
मुक्तावलीकथा	भारामल	(हि) ७६४	मुष्टिज्ञान	ज्योतिषाचार्य देवचन्द्र	हि) १
मुक्तावलीपीठ	सकलकीर्ति	(हि) १८१	मुहूर्तविद्यामणि	—	(हि) २८६
मुक्तावली	[संस्कृतविभ]	—	मुहूर्तबोधक	महादेव	(सं) ९१
मुक्तावलीपूजा	बर्णी सुबसागर	(सं०) ५२७	मुहूर्त मुक्तावली	परमहंसपरिव्रजकाचार्य—	
मुक्तावलीपूजा	—	(सं) १३६ १६६	मुहूर्तमुक्तावली	राक्षसाचार्य	(हि) ७६८
मुक्तावलीविधानकथा	भुवसागर	(सं) २३१	मुहूर्तमुक्तावली	—	(स हि) २६
मुक्तावलीव्रतकथा	सोमप्रभ	(सं) २३१	मुहूर्तसंघ	—	(स) २६
मुक्तावलीविधानकथा	—	(प्रप) २३१	मुहूर्तज्ञानकुण्ड	—	(सं) ७१२
मुक्तावलीव्रतकथा	सुरालक्ष्मण	(हि) २४३	मुहूर्तज्ञान	—	(सं) १३८
मुक्तावलीव्रतकथा	—	(हि) १७१	मूससपकीपट्टमलि	—	(सं) ७३७
मुक्तावली जयकी विधि	—	(हि) २७१	मूलाचार्यकी	आ० बभ्रुनन्द	(प्र स) ७६
मुक्तावलीव्रतपूजा	—	(स) ३२७	मूलाचार्यदीप	सकलकीर्ति	(सं) ७६
मुक्तावलीव्रतविधान	—	(स) ३२७	मूलाचार्यनामा	अपभ्रंश	(हि) ८
मुक्तावलीव्रतविधानपूजा	—	(स) ५२७	मूलाचार्यमाया	—	(हि) ८
मुक्तावलीहरणीत	—	(हि) ७११	मृगमुक्तावली	—	(हि) २३५
मुक्तावलीव्रतकथा	—	(सं) २४१	मृगमुहूर्त	—	(स) ११५, २७१
मुक्तावली वारहमिशा	—	(हि) ७७७	मृगमुहूर्तकथा	सदासुक्क कामजीपाल—	
मुनिमुवतासुक्क	ब्र० प्रभाकर	(सं हि) ५२७			(हि) ११५
मुनिमुवतमापपूजा	—	(स) ५६	मृगमुहूर्तकथा	—	(हि) ४१२
मुनिमुवतमापपूजा	—	(प्रप) १३७			१११ ७२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूनी	(हि०)	७३८ ७४६, ७५०, ७६४	मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	(हि०)	७१४, ७६४
मेघकुमारचौढालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७	मौनएकादशीकथा	श्रुतसागर	(स०)	२२८
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४	मौनएकादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मेघकुमारवार्ता	—	(हि०)	६६४	मौनिव्रतकथा	गुणभद्र	(स०)	२३६
मेघकुमारसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	मौनिव्रतकथा	—	(स०)	२३७
घदूत	कालिदास	(स०)	१८७	मौनिव्रतविधान	रत्नकीर्त्ति	(स० ग०)	२४४
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजक'चार्य—			मौनिव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१७
मेघमाला	—	(स०)	२६०	य			
मेघमालाविधि	—	(स०)	५२७	यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिके वापस आनेका]			६०३
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)	५१४	यन्त्रमन्त्रविधिफल	—	(हि०)	३५१
मेघमालाव्रतकथा	—	(स०)	२३६, २४२	यन्त्रमन्त्रसग्रह	—	(स०)	७०१, ७६६
मेघमालाव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२३६, २४४	यन्त्रसग्रह	—	(स०)	३५२ ६६७, ७६८
मेघमालाव्रत	[मण्डलवित्र]—		५२५	यक्षिणीकल्प	—	(स०)	३५१
मेघमालाव्रतोद्यापनकथा	—	(स०)	५२७	यज्ञकीसामग्रीका व्यौरा	—	(हि०)	५६५
मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५२७	यज्ञमहिमा	—	(हि०)	५६५
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	(स० हि०)	५१७ ५३६	यतिदिनचर्या	देवसूरि	(प्रा०)	८०
मेदिनीकोश	—	(स०)	२७६	यतिभावनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	५७३
मेरूपूजा	सोमसेन	(स०)	७६५	यतिभावनाष्टक	—	(स०)	६३७
मेरुपक्ति तपकी कथा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६	यतिआहार के ४६ दोष	—	(हि०)	६२७
मोक्षपैडी	बनारसीदास	(हि०)	८० ६४३, ७४६	यथाचार	आ० वसुनन्दि	(स०)	८०
मोक्षमार्गप्रकाशक	प० टोडरमल	(राज०)	८०	यमक	—	(स०)	४२६
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(स०)	६६४	(यमकाष्टक)			
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त कपोत		(हि०)	६७३	यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(स०)	४१३, ४२६
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त धर्मदास		(हि०)	६७३	यमपालमातङ्गकी कथा	—	(स०)	२३७
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त विचित्रदेव		(हि०)	६७३	यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(स०)	१८७
मोहम्मदराजाकी कथा	—	(हि०)	६००	यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(स०)	१८७
				यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(स०)	१८८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मसोपरचरित्र	[मसोपरचरित्र] सुशासनम्	(हि)	१११	योगशास्त्र	वररुचि	(सं)	१२
			७११	योगशास्त्र	—	(सं)	१२
मसोपरचरित्र	ज्ञानकीर्ति	(सं)	११२	योगशास्त्र	—	(हि)	१२
मसोपरचरित्र	काव्यप्रधानम्	(सं)	११३	योगशास्त्रटीका	—	(सं)	१२
मसोपरचरित्र	पूरणदेश	(सं)	११४	योगशास्त्र	हमचन्द्रसूरि	(सं)	११५
मसोपरचरित्र	पादिराजसूरि	(सं)	११५	योगशास्त्र	—	(सं)	११५
मसोपरचरित्र	वामनसेन	(सं)	११६	योगशास्त्र	योगचन्द्र	(सं)	१७४
मसोपरचरित्र	भक्तसागर	(सं)	११७	योगशास्त्र	योगीन्द्रदेव (भर)	(सं)	११६, ७१४
मसापरचरित्र	सकलकीर्ति	(सं)	११८	योगशास्त्रभाषा	नन्दराम	(हि)	११६
मसोपरचरित्र	गुण्यद्वय	(सं)	११८	योगशास्त्रभाषा	सुचक्रन	(हि०)	११७
मसोपरचरित्र	गौरवदास	(हि)	११९	योगशास्त्रभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि)	११६
मसोपरचरित्र	पद्मलाल	(हि)	१२०	योगशास्त्रभाषा	—	(हि)	११७
मसोपरचरित्र	—	(हि)	१२१	योगशास्त्रभाषा	—	(सं)	११७
मसोपरचरित्र	प्रभाकर	(सं)	१२२	योगशास्त्रभाषा	—	(सं)	११८
मातावर्णन	—	(हि)	१७४	योगशास्त्रभाषा	—	(सं)	४३
मातृव्यवहारविधि	—	(हि)	१७५	योगशास्त्रभाषा	—	(सं)	४३
मुक्त्यनुष्ठानम्	भा० समस्तभद्र	(सं)	१३०	योगशास्त्रभाषा	मदारमा ज्ञानचन्द्र	(भर)	१२८
मुक्त्यनुष्ठानटीका	विद्यानन्दि	(सं)	१३०	योगशास्त्रभाषा	योगीन्द्रदेव	(सं)	१३
मुक्त्यनुष्ठानटीका	—	(सं)	४१३	योगशास्त्रभाषा	—	(सं)	७१२ ७४८
मूलाक्षी वृक्ष	—	(सं)	१११	योगशास्त्रभाषा	—	(सं)	१७५
योगशास्त्र	मनूनिह	(सं)	१११	योगशास्त्रभाषा	र		
योगशास्त्र	उपाध्याय इयकीर्ति	(सं)	३१	रङ्ग बताने की विधि	—	(हि)	१२१
योगशास्त्र	—	(सं)	३१	रक्षावैद्यक्या	—	(सं)	२१७
योगशास्त्र	—	(सं)	३१	रक्षावैद्यक्या	भा० ज्ञानसागर	(हि)	२२
योगशास्त्र	—	(सं)	२३	रक्षावैद्यक्या	नामूराम	(हि)	२४३
योगशास्त्र	भा० हरिमठसूरि	(सं)	११५	रक्षावैद्यक्या	—	(सं)	२४३ ७३१
योगशास्त्र	—	(सं)	११६, १२८	रक्षावैद्यक्या	रघुनाथ	(हि)	११२
योगशास्त्र	—	(भा)	११६	रक्षावैद्यक्या	सक्तिनाथसूरि	(सं)	११३
योगशास्त्र	पद्मलाल चौधरी	(हि)	४५	रक्षावैद्यक्या	सुधाबिनयगण्धि	(सं)	११४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रघुवशटीका	समयसुन्दर	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	प० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५६४
रघुवशटीका	सुमतिविजयगणि	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	—	(सं०)	५१६
रघुवशमहाकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६३				५२६, ५३७, ५५५, ५७४, ६०६, ६४०, ६४६, ६५२, ६६४, ७०४, ७०५, ७५६, ७६३
रतिरहस्य	—	(हि०)	७६६	रत्नत्रयपूजा	—	(सं० हि०)	५१८
रत्नकरडश्रावकाचार	समन्तभद्र	(सं०)	८१	रत्नत्रयपूजा	—	(प्रा०)	६३५, ६५५
			६६१, ७६५	रत्नत्रयपूजा	ऋषभदास	(हि०)	५३०
रत्नकरडश्रावकाचार पं० सदासुख कासलीवाल		(हि० गद्य)	८२	रत्नत्रयपूजाजयमाल	ऋषभदास	(अप०)	५३७
रत्नकरडश्रावकाचार	नथमल	(हि०)	८३	रत्नत्रयपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
रत्नकरडश्रावकाचार	सघी पन्नालाल	(हि०)	८३				५०३, ५२६
रत्नकरडश्रावकाचारटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	८२	रत्नत्रयपूजा	खुरालचन्द्र	(हि०)	५१६
रत्नकोप	—	(सं०)	३३४, ७६६	रत्नत्रयपूजा	—	(हि०)	५१६
रत्नकोप	—	(हि०)	३३५				५३०, ६४५, ७४५
रत्नत्रयउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७	रत्नत्रयपूजाविधान	—	(सं०)	६०७
रत्नत्रयकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०	रत्नत्रयमण्डल [चित्र]			५२५
रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी ब्रह्मसेन		(सं०)	७८१	रत्नत्रयमण्डलविधान	—	(हि०)	५३०
रत्नत्रयगुराकथा	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२३७	रत्नत्रयविधान	—	(सं०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	५२७	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्त्ति	(सं०)	२२०, २४२
रत्नत्रयजयमाल	—	(सं०)	५२८	रत्नत्रयविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३७
रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	(हि०)	५१६	रत्नत्रयविधानपूजा	रत्नकीर्त्ति	(सं०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(अप०)	५२८	रत्नत्रयविधान	टेकचन्द्र	(हि०)	५३१
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५२६	रत्नत्रयविधि	आशाधर	(सं०)	२४२
रत्नत्रयजयमालभाषा	नथमल	(हि०)	५२८	रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा]			
रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	—	(प्रा०)	६५८				ललितकीर्त्ति (सं०) ६४५, ६६५
रत्नत्रयपाठविधि	—	(सं०)	५६०	रत्नत्रयव्रत विधि एव कथा	—	(हि०)	७३३
रत्नत्रयपूजा	प० आशाधर	(सं०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	५३६
रत्नत्रयपूजा	केशवसेन	(सं०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
रत्नत्रयपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५२६				५३१, ५३६, ५४०
			५७५, ६३६	रत्नदीपक	गणपति	(सं०)	२६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
रत्नबीपक	—	(सं) २१	रसप्रकरण	—	(सं०) १ २
रत्नबीपक	रामकवि	(हि) ३१८	रसप्रकरण	—	(हि०) १०२
रत्नमासा	भा० शिवकोटि	(स) ५३	रसमञ्जरी	शास्त्रिनाथ	(स) १०२
रत्नसंयुता	—	(स) ११२	रससंबरी	रघुङ्ग धर	(सं) १०२
रत्नमञ्चिका	—	(स) ३१२	रसमञ्जरी	मानुदत्त मिश्र	(हि) १११
रत्नाभसिद्धतन्त्रा	गुणनन्दि	(हि) २४६	रसमञ्जरीटीका	गापासभट्ट	(सं) ३३१
रत्नाभसिद्धतन्त्रा	खोशी रामदास	(सं) २३७	रससामर	—	(हि) ६८१
रत्नाभसिद्धतन्त्रा	ब्र० कृष्णदास	(हि) १३१	रसात्मनिधि	—	(हि) १६
रत्नाभसिद्धतोषापत्र	—	(सं) १३१	रससङ्ग बरकी चौधरी	नरवरु कवि	(हि) १७७
रत्नाभसिद्धतोंकी तिथियों के नाम	—	हि) १११	रसिकप्रिया	इन्द्रजीत	(हि) १७१ ७४३
रत्नवाचावलि	—	(हि) ७१६	रसिकप्रिया	कराव	(हि) ७७१ ७११
रत्नसञ्चान	—	(हि प) २११	रागाधीतण्डिकाब्रह्मा	—	(हि) १७१
रत्नसञ्चय	प० चिंतामणि	(सं) २१	राममाता	—	(सं) ३१८
रत्नसञ्चय	—	(हि) २१	राममाता	रवाममिश्र	(हि) ७७१
रत्नसञ्चय	भा० कृष्णकुन्द	(मा) ८४	राममाता के दो	जैनभी	(हि) ७५
रत्निकारक्या	सुरासचम्पू	(हि) ७७१	राममाता के दोहे	—	(हि) ७७७
रत्निकारक्या	—	(सं) १३७	रामरागनियों के नाम	—	(हि) ३१८
रत्निकारक्या	[मिश्र]	१२३	रघु भाषाचरी	रूपचम्पू	(मप) १४१
रत्निकारक्या	मुत्तसागर	(हि) १३७	रगों के नाम	—	(हि) ७७१
रत्निकारक्या	जयकीर्ति	(हि) १११	राजनीति कवित	वैशीदास	(हि) ७१२
रत्निकारक्या [रत्निकारक्या]	वेवेन्द्रकीर्ति	(हि) २३७	राजनीतिशास्त्र	बाणक्य	(सं) १४ १४६
रत्निकारक्या	—	७ ७	राजनीतिशास्त्र	अष्टराम	(हि) ११६
रत्निकारक्या	भाद्रकवि	(हि प) २३७ ११३	राजनीतिशास्त्रमाता	वैशीदास	(हि) ३३६
रत्निकारक्या	मानुकी च	(हि) ७१	राजप्रवृत्ति	—	(सं) १७४
रत्निकारक्या	—	(हि) २४७	रामा चम्पूतकी चौधरी	ब्र० गुणाव	(हि) १२
रत्निकारक्या	—	१ ३ ७१३	राजप्रवृत्ति	—	(सं) २११
रत्निकारक्या	वेवेन्द्रकीर्ति	(सं) १३२	रामा प्रजापति वचन कर्त्तव्य का मन्त्र	—	(हि) १७१
रत्निकारक्या	गंगादास	(हि) १७१	रामाप्रवृत्ति	—	(हि) ४१
रत्निकारक्या	—	(हि) ७१२			

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
राजुलपच्चीसी	लालचद विनोदीलाल	(हि०)	६००	रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०ग०)	५६२
	६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२,			रामावतार	[चित्र]	—	६०३
	७५३			रायपसेणीसूत्र	—	(प्रा०)	४३
राजुलमङ्गल	—	(हि०)	७५३	राशिफल	—	(सं०)	७६३
राजुलकी सज्जाय	जिनदास	(हि०)	७५७	रासायनिकशास्त्र	—	(हि०)	३३०
राठीढरतन महेश	दशोत्तरी	(हि०)	२३८	राहुफल	—	(हि०)	२६१
राडपुरास्तवन	—	(हि०)	४५०	रक्तविभागप्रकरण	—	(स०)	८४
राडपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	रिट्टोगेमिचरित्र	स्वयभू	(अप०)	६४२
रात्रिभोजनकथा	—	(स०)	२३८	रुक्मणिकथा	मदनकीर्त्ति	(स०)	२४७
रात्रिभोजनकथा	किशानसिंह	(हि०)	२३८	रुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	(हि०)	७७०
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८	रुक्मणिविधानकथा	छत्रसेन (स०)	२४४, २४६	
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०)	२२८	रुक्मणिविवाह	वल्लभ	(हि०)	७८७
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०)	२३६	रुक्मणितिवाहवेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	३६४
रात्रिभोजनत्यागवर्णन	—	(हि०)	८४	रुक्मणिविनिश्चय	—	(स०)	७३३
राधाजन्मोत्सव	—	(हि०)	८४	रुक्मिणीगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०)	७३३
राधिकानाममाला	—	(हि०)	४१४	रुद्रज्ञान	—	(स०)	२६१
रामकवच	विश्वामित्र	(हि०)	६६७	रूपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(स०)	२७६
रामकृष्णकाव्य	द्वैबङ्ग प० सूर्य	(स०)	१६४	रूपमाला	—	(स०)	२६२
रामचन्द्रचरित्र	बधीचन्द्र	(हि०)	६६१	रूपसेनचरित्र	—	(स०)	२३६
रामचन्द्रस्तवन	—	(स०)	४१४	रुग्स्थध्यानवर्णन	—	(स०)	११७
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०)	१६४	रेखाचित्र [आदिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एव पार्वनाथ]	—		
रामचरित्र [कवित्तवध]	तुलसीदास	(हि०)	६६७				
रामवत्तीसी	जगनकवि	(हि०)	४१४	रेखाचित्र	—		७८३
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०)	३०२	रेवानदीपूजा [आहुडकोटिपूजा]	विश्वभूषण	(स०)	५३२
रामविनोद	रामविनोद	(हि०)	६४०	रैदव्रत	गगाराम	(स०)	५३२
रामविनोद	—	(हि०)	६०३	रैदव्रतकथा	द्वेवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	२३६
रामस्तवन	—	(स०)	४१४	रैदव्रतकथा	—	(स०)	२३६
रामस्तोत्र	—	(स०)	४१४	रैदव्रतकथा	त्र० जिनदास	(हि०)	२४६
रामस्तोत्रकवच	—	(स०)	६०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
रोहिणीचरित्र	देवनन्दि	(घष) २४३	सम्बन्धिकाभाषा	—	(सं०) २११
रोहिणीविधान	मुनि गुणमित्र	(घष) १२६	सम्बन्धात्मक	बसूमानसूरि	(स) २६१
रोहिणीविधानकथा	—	(सं) २४	समुपनन्तप्रवृत्तना	—	(सं०) २३३
रोहिणीविधानकथा	देवनन्दि	(घष०) २४३	समुपनिषेकविधान	—	(सं) २३३
रोहिणीविधानकथा	बंसीदास	हि) ७८१	समुपलयाण	—	(सं) २१४ २३३
रोहिणीव्रतकथा	भा० भानुकीर्षि	(सं) २३६	समुकस्याशपाठ	—	(हि०) ७४४
रोहिणीव्रतकथा	सखितकीर्षि	(सं) १४५	संभुवाणस्माराजनीति	चामिकव्य	(सं०) १३१ ७१२, ७२०
रोहिणीव्रतकथा	—	(घष) २४५	संभुवाणक	महात्म्य	(स) २६१
रोहिणीव्रतकथा	प्र० ज्ञानसागर	(हि) २९	संभुजिनसहस्रनाम	—	(सं) १९
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि) २३६	संभुतत्पार्थसूत्र	—	(सं) ७४०, ७८२
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि) ७६४	संभुनाममाला	इपकीर्षिसूरि	(सं) २७१
रोहिणीव्रतपूजा	केशवसेन कृष्णसेन	(स) २१२, २१६	संभुव्याहकृति	—	(सं०) २६२
रोहिणीव्रतपूजासङ्गम [चित्रसहित]	—	(स) २३२, ७२६	संभुप्रतिष्ठाण	—	(सा) ७१७
रोहिणीव्रतमन्त्रविधान	—	(हि) ६३८	संभुप्रतिष्ठाण	—	(सा० स) २७२
रोहिणीव्रतपूजा	—	२२५	संभुमङ्गल	रूपचन्द्र	(हि) १२४
रोहिणीव्रतमन्त्र [चित्र]	—	(सं) २१३	संभुमङ्गल	—	(हि) ७१६
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	२३२ २४	संभुवाचस्ती	—	(सं) १७२
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(हि) ५४	संभुवर्षितकथा	प्र० ज्ञानसागर	(हि) २४४
संज्ञनपद्मनिर्णय	ले	(सं) ३३	संभुवर्षितकृति	—	(सं) २६१
संज्ञनपुस्तक	श्रीकृष्णराय	(सं) ३३	संभुसातिकाविधान	—	(सं) २३२
संज्ञनीमहास्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं) १३७	संभुसातिकात्मक	—	(सं०) ४२४
संज्ञनीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं) ४१४	संभुसातिका [मन्त्रविधान]	—	२२२
४२३ ४२६ ४३२ ४६६ ४७२ ४७४ ४६९			संभुसातिस्तोत्र	—	(सं) ४१४, ४२३
१४४, १४८ १६३ १६२, १७			संभुभेषविधि [भेषोविधान]	समयनन्दि	(सं) २३३
७ १ ७१६			संभुसहस्रनाम	—	(सं) १६२
संज्ञनीस्तोत्र	—	(सं) ४१४			११७ १६
४२४ ६४ १४३ ६२			संभुसामयिक [पाठ]	—	(सं) ८४
संज्ञनीस्तोत्र	द्यानतराय	(हि) २६२			१६२, ४२, ४२६ ४२६
संज्ञनत्रिकाभाषा	त्यागीराम सोमानी	(हि) ७२१	संभुसामयिक	—	(सं हि) ८४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
लघुसामायिक	—	(हि०)	७१८	लहरियाजी की पूजा	—	(हि०)	७५२
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द्र	(हि०)	७१६	लहुरी	नाथू	(हि०)	६६३
लघुसारस्वत अनुभूति स्वरूपाचार्य		(स०)	२६३	लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०)	७२४
लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	(स०)	२६३	लाटीसहिता	राजमल	(स०)	८४
लघुसिद्धान्तकौस्तुभ	—	(स०)	२६३	लावणी मागीतु गीकी	हर्षकीर्ति	(हि०)	६६७
लघुस्तोत्र	—	(स०)	४१५	लिंगपाहुड	आ० कुदकुद	(प्रा०)	११७
लघुमनपन	—	(स०)	५३३	लिंगपुराण	—	(सं०)	१५३
लघुमनपनटीका	भात्रशर्मा	(स०)	५३३	लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(स०)	२७७
लघुमनपनविधि	—	(स०)	६५८	लिंगानुशासन	—	(स०)	२७६
लघुस्वयभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(स०)	५१५	लीलावती	भाष्कराचार्य	(स०)	३६६
लघुस्वयभूस्तोत्र	—	(स०)	५३७, ५६४	लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०)	३६६
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(स०)	२६३	लुहरी	नेमिचन्द्र	(हि०)	६२२
लब्धिविधानकथा	प० अश्रदेव	(स०)	२३६	लुहरी	सभाचन्द्र	(हि०)	७२४
लब्धिविधानकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४	लोकप्रत्याख्यान्धमिलकथा	—	(स०)	२४०
लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	(हि०)	७७८	लोकवर्णन	—	(हि०)	६२७, ७६३
लब्धिविधानपूजा	अश्रदेव	(स०)	५१७				
लब्धिविधानपूजा	हर्षकीर्ति	(स०)	३३३				
लब्धिविधानपूजा	—	(स०)	५१३				
			५३४, ५४०				
लब्धिविधानपूजा	ज्ञानचन्द्र	(हि०)	५३४	वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०)	३५६
लब्धिविधानपूजा	—	(हि०)	५३४	वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०)	३५६
लब्धिविधानमण्डल [चित्र]	—		५२५	वज्रदन्तचक्रवर्ति का बारहमासा	—	(हि०)	७२७
लब्धिविधानउद्यापनपूजा	—	(स०)	५३५	वज्रनाभिकचक्रवर्ति की भावना	भूधरदास	(हि०)	८५
लब्धिविधानोद्यापन	—	(स०)	५४०				४४६, ६०४, ७३६
लब्धिविधानकृतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५३४	वज्रपञ्जरस्तोत्र	—	(स०)	४१५, ४३२
लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४३, ७३६	वनस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०)	८५
लब्धिसारटीका	—	(स०)	४३	वन्देतानकीजयमाल	—	(स०)	५७२
लब्धिसारभाषा	प० टोडरमल	(हि०)	४३				५६५, ६५५
लब्धिसारक्षपणासारभाषा	प० टोडरमल	(हि० गद्य)	४३	वरागचरित्र	भर्तृहरि	(स०)	१६५
लब्धिसारक्षपणासारसदृष्टि	प० टोडरमल	(हि०)	४३	वरागचरित्र	प० वर्द्धमानदेव	(स०)	१६५
				वर्द्धमानकथा	जयमित्रहल	(अप०)	१६६
				वर्द्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मनन्दि	(स०)	१६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वर्द्धमानचरित	पं० केसरीसिंह (हि)		१२४ १२९	विजयपुरकी जयमाल	—	(हि)	११८
वद्य मानशास्त्रिका	सिद्धसंन विवाकर	(सं)	४१२	विक्रसिपत्र	हमराज	(हि)	१७५
वर्द्धमानपुराण	सकलक्षीति	(सं)	१२३	विदम्बमुसमंडन	धर्मदास	(सं)	१२९
वद्य मानविद्यालय	सिंहसिलक	(सं)	१२१	विदम्बमुसमंडनटीका	बिनयराज	(सं)	१२७
वर्द्धमानस्तोत्र	आ० गुणभद्र	(सं)	४१२	विद्वग्जनबोधक	—	(सं)	८९ ४८१
			४२४ ४२९	विद्वग्जनबोधकभाषा	संधी पन्नासाह	(हि)	८९
वर्द्धमानस्तोत्र	—	(सं)	११२, १११	विद्वग्जनबोधकटीका	—	(हि)	८९
वर्षबोध	—	(सं)	२२१	विद्यमानबौद्धीर्यकुरपूजा नरेन्द्रकीर्ति	(सं)	२१५, ११५	
वसुनन्दि धावनाचार	आ० वसुनन्दि	(मा)	८५	विद्यमानबौद्धीर्यकुरपूजा जौदरीसाह	विसासा	(हि)	२३५
वसुनन्दिभाषकाचार	पन्नासाह	(हि)	८५	विद्यमानबौद्धीर्यकुरपूजा	—	(हि)	२११
वसुभाराराठ	—	(सं)	४१५	विद्यमानबौद्धीर्यकुरस्तन	मुनि वीप	(हि)	४१५
वसुभारस्तोत्र	—	(सं)	४१५, ४२१	विद्यामुधास्त	—	(सं)	१२२
वाग्मट्टसङ्घार	वाग्मट्ट	(सं)	३१२	विगतिया	—	(हि)	१८५
वाग्मट्टसङ्घारटीका	बादिराज	(सं)	३१३	विगतौ	अजौराज	(हि)	७७९ ७८१
वाग्मट्टसङ्घारटीका	—	(सं)	३१३	विगतौ	कनककीर्ति	(हि)	१२१
वाग्मिदकी के मन्त्र	वाग्मिद	(हि)	३१३	विगतौ	कुराकविजय	(हि)	७८२
वाग्मी घट्टक व जयनाथ	धानतराय	(हि)	७७७	विगतौ	म० जिनदास	(हि)	१२४ ७४७
वाग्मिणमुनिकथा	जोहरास गोदीका	(हि)	२१	विगतौ	बनारसीदास	(हि)	११५
वातासंधप्रह	—	(हि)	८९				१४२ १६३ १६४
वास्तुपुर्यमुद्रण	—	(हि)	११५	विगतौ	रूपचन्द्र	(हि)	७६५
वास्तुद्वारा	—	(सं)	५३५	विगतौ	समयधुम्बर	(हि)	७१२
वास्तुपुर्याविधि	—	(सं)	५१५	विगतौ	—	(हि)	७४९
वास्तुनिष्पास	—	(सं)	११४	विगतौ गुस्सीकी	भूमरदास	(हि)	२११
विक्रमचरित	वाचनाचार्य अमयमाम	(हि)	१२९	विगतौ चौपड़की	मान	(हि)	० १
विक्रमचौबोसी चौबई	अमयचन्द्रसूरि	(हि)	२४	विगतौपाठस्तुति	जितचन्द्र	(हि)	७
विक्रमाक्षिपराजाकी कथा	—	(हि)	७१३	विगतौसंध	प्रसन्न	(हि)	४२१
विचारतापा	—	(मा)	७	विगतौसंध	इशानसाह	(हि)	१६२ ७५
विजयपुरमारसङ्क्राम	अपि साहचन्द्र	(हि)	४५	विगतौसंध	—	(हि)	४२
विजयसीतिसन्ध	शुभचन्द्र	(हि)	१८२				७१ ७४७
विजयकल्पविजय	—	(सं)	१३२	विजयसठसई	—	(हि)	९८

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विपाकसूत्र	—	(प्रा०)	४३	विष्णुकुमारमुनिकथाः	श्रुतसागर	(स०)	२४०
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(स०)	१५५	विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(स०)	२४०
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(स०)	५३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूनाल	(हि०)	५३६
विमानशुद्धिपूजा	—	(स०)	५३६	विष्णुपञ्जररक्षा	—	(स०)	७७०
विमानशुद्धिशाक्तिक [मण्डलचित्र]	—	—	५२५	विष्णुसहस्रनाम	—	(स०)	६७४
विरदावली	—	(स०)	६५८	विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
			७७२, ७६५	विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(सं०)	४३
विरहमानतीर्थङ्करजकडी	—	(हि०)	७५६	विश्वलोचन	धरसेन	(सं०)	२७७
विरहमानपूजा	—	(स०)	६०५	विश्वलोचनकोशकी शब्दानुक्रमणिका	—	(स०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०)	६५७	विहारकाव्य	कालिदास	(स०)	१६७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१	वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०	वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	४२४
विवाहप्रकरण	—	(स०)	५३६		४३१, ५७४, ६३४, ७३७		
विवाहपद्धति	—	(सं०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०)	१३६, ४१६
विवाहविधि	—	(स०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	—	(स०)	७५८
विवाहशोधन	—	(स०)	२६१	वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गू	(अप०)	६४२
विवेकजकडी	—	(सं०)	२६१	वीरछत्तीसी	—	(स०)	४१६
विवेकजकडी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०	वीरजिगादगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६
विवेकविलास	—	(हि०)	८६	वीरजिगादकी सघावलि	—		
विषहरनविधि	सतोषकवि	(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७५
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(स०)	४०२	वीरद्वान्त्रिशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	१३६
			४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२,	वीरनाथस्तवन	—	(स०)	४२६
			५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८	वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
विषापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४१६	वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	(हि०)	४१६	वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
			६०४, ६५०, ६७०	वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६	वृजलालकी वारहमावना	—	(हि०)	६८५
विषापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०	वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०)	३१४
			७१६, ७४७	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(स०)	३१४
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६	वृत्तरत्नाकर	—	(स०)	३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वर्द्धमानचरित्र	वं० केशरीमिह (हि)	११४	१६६	विष्णुबार्की जयमीम	—	(हि)	६१८
वध मालशक्तििका	सिद्धसेन दिबाकर (सं)	४१२		विक्रतिपत्र	हमराज	(हि)	१७२
वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति (सं)	१५१		विदग्धमुसमंडन	धर्मदास	(स)	१६६
वध मालविद्यालय	मिहसिंहक (स)	१११		विदग्धमुसमंडनटीका	विनयराज	(सं)	१६७
वर्द्धमानस्तोत्र	आ० गुणमह (सं)	४१२		विदग्धजनबोधक	—	(सं)	५६ ४८१
		४२४	४२६	विदग्धजनबोधकमाता	संधी पद्माक्षस	(हि)	५६
वर्द्धमानस्तोत्र	— (सं)	६१५	६११	विदग्धजनबोधकटीका	—	(हि)	८६
वर्षबोध	— (स)	२६१		विद्यमानबीसतीर्थकुरपूजा	नरेश्वरकीर्ति (स)	२१५	६२२
वसुन्धि व्यावकाचार	आ० वसुन्धि (प्रा)	८२		विद्यमानबीसतीर्थकुरपूजा	औदरीखाल बिलाखा	(हि)	२१२
वसुन्धिभाषकाचार	पद्माखस (हि)	८२		विद्यमानबीसतीर्थकुरोंकी पूजा	—	(हि)	५११
वसुभारामठ	— (स)	४१२		विद्यमानबीसतीर्थकुरस्तवन	मुनि दीप (हि)	४१२	
वसुभारामठ	— (सं)	४१२	४२३	विद्यमुघासन	—	(सं)	१५२
वाग्भट्टासङ्कार	वाग्भट्ट (सं)	११२		विगतियां	—	(हि)	६८५
वाग्भट्टमङ्कारटीका	वाहिराज (सं)	११२		विनती	अखैरास (हि)	७७६	७५१
वाग्भट्टासङ्कारटीका	— (सं)	१११		विनती	कनककीर्ति (हि)	६२१	
वाग्भट्टी के प्रसिद्ध	वाग्भट्ट (हि)	६१३		विनती	कुसुमबिंदव (हि)	७८२	
वाणी मष्टक व जयमाल	धानतराय (हि)	७७७		विनती	म० जिनदास (हि)	१२४	७२७
वारिपेणमुमिचन्ना	जोधराज गोधीका (हि)	२४		विनती	वनारमीदास (हि)	६१५	
वार्तासंग्रह	— (हि)	८६				६४२	६६१ ६६४
वायुसुम्पुराण	— (हि)	११२		विनती	रूपचन्द्र (हि)	७६२	
वस्तुतुला	— (स)	५१२		विनती	समयसुन्दर (हि)	७१२	
वस्तुतुलाविधि	— (स)	५१८		विनती	—	(हि)	७४६
वास्तुविद्यालय	— (सं)	११४		विनती	शुद्धमोक्षी	सूयरास (हि)	२११
विजयचरित्र	बाबनाथार्य अमयसाम (हि)	१६६		विनती	चौपङ्की	मान (हि)	७८१
विजयबीसोती चौपई	अमयचन्द्रसूरि (हि)	२४		विनतीपास्तुति	सिधचन्द्र (हि)	७	
विजयप्रियवराजाजी वषा	— (हि)	७११		विनतीसंग्रह	महादेव (हि)	४२१	
विचारगाथा	— (प्रा)	७		विनतीसंग्रह	वृथाप्रह (हि)	६६२	७५
विजयपुराणमंगलाय	श्यापि साजचन्द्र (हि)	४५		विनतीसंग्रह	—	(हि)	४२
विजयपीतिघण्ट	शुभचन्द्र (हि)	१८६				७१	७४७
विजयपञ्चविधाल	— (सं)	११२		विनोदसतमई	—	(हि)	६८

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विपाकसूत्र	—	(प्रा०)	४३	विष्णुकुमारमुनिकथा ^३	श्रुतसागर	(स०)	२४०
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(स०)	१५५	विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(स०)	२४०
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूनाल	(हि०)	५३६
विमानशुद्धिपूजा	—	(स०)	५३६	विष्णुपञ्जररक्षा	—	(सं०)	७७०
विमानशुद्धिशाक्तिक [मण्डलचित्र]	—		५२५	विष्णुसहस्रनाम	—	(स०)	६७४
विरदावली	—	(स०)	६५८	विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
			७७२, ७६५	विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(स०)	४३
विरहमानतीर्थङ्करजकडी	—	(हि०)	७५६	विश्वलोचन	धरसेन	(सं०)	२७७
विरहमानपूजा	—	(स०)	६०५	विश्वलोचनकोशकी	शब्दानुक्रमणिका	(स०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०)	६५७	विहारकाव्य	कालिदास	(स०)	१६७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१	वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०	वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	४२४
विवाहप्रकरण	—	(स०)	५३६				४३१, ५७४, ६३४, ७३७
विवाहपद्धति	—	(स०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०)	१३६, ४१६
विवाहविधि	—	(स०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	—	(स०)	७५८
विवाहशोधन	—	(स०)	२६१	वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गधू	(अप०)	६४२
विवेकजकडी	—	(स०)	२६१	वीरछत्तीसी	—	(स०)	४१६
विवेकजकडी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०	वीरजियादगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६
विवेकविलास	—	(हि०)	८६	वीरजियादको सधावलि			
विषहरनविधि	सतोषकवि	(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७५
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(स०)	४०२	वीरद्वान्त्रिशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	१३६
			४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२,	वीरनाथस्तवन	—	(स०)	४२६
			५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८	वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
विषापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४१६	वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्त्ति	(हि०)	४१६	वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
			६०४, ६५०, ६७०	वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६	वृजलालकी वारहमावना	—	(हि०)	६८५
विषापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०	वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०)	३१४
			७१६, ७४७	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(स०)	३१४
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६	वृत्तरत्नाकर	—	(स०)	३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बृहत्संहिताकरकण्वटीका	समयसुन्दरगणि	(स)	३१४	१ १३६ १८६ १६५ ७१८ ७६४			
बृहत्संहिताकरटीका	सुब्रह्मण्यकवि	(सं)	३१४	वैद्यबल्लभ	—	(स)	१ ४ ७३८
बृहत्संहिता	पुम्पकवि	(हि)	३३९	वैद्यविमोद	महाराष्ट्र	(सं)	३ ५
	१७३, ७४५ ७२१ ७८२ ७६६			वैद्यविमोद	—	(हि)	३ ५
बृहत्संहितासिद्धिपुत्रा	—	(सं)	१३९	वैद्यसार	—	(सं)	७३८
बृहत्संहिता	—	(हि)	५७१	वैद्यामृत	सायिक्यभट्ट	(सं)	३ ५
बृहत्संहितावसीर्षातिमन्त्रसूत्रा [वीसठहृदिसूत्रा]				वैद्याकरणभूषण	कौहनभट्ट	(सं)	२६३
	स्वरूपचन्द्र	(हि)	२४१	वैद्याकरणभूषण	—	(सं)	२६३
बृहत्संहितावर्णनस्य	कवि भागीशाल	(हि)	७२६	वैराग्यगीत [उदरपीठ]	श्रीहल	(हि)	१३७
बृहत्संहितावर्णनस्य	सिद्धराय	(हि)	३३६	वैराग्यगीत	महमत	(हि)	४१६
बृहत्संहितावर्णनस्य	व्याख्य	(सं)	७१२	वैराग्यसभाषी	मगवतीदास	(हि)	१८३
बृहत्संहितावर्णनस्य	भट्टोत्पल	(सं)	२६१	वैराग्यसतक	भट्ट हरि	(सं)	११७
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	४३१	व्याकरण	—	(सं)	२६४
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	८६ ८७	व्याकरणाटीका	—	(सं)	२६४
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	८६	व्याकरणभाषाटीका	—	(सं)	२६४
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	३ ६ ७३	वृत्तकलाकोश	पं० दामादर	(सं)	२४१
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	४२३	वृत्तकलाकोश	बैबन्धुकीर्ति	(सं)	२४२
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	१६८	वृत्तकलाकोश	भुवसागर	(सं०)	२४१
बृहत्संहितावर्णनस्य	समन्तभद्र	(सं)	३७२	वृत्तकलाकोश	सकलकीर्ति	(सं)	२४२
			१२८ १६१	वृत्तकलाकोश	—	(सं)	२४४
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	१६१	वृत्तकलाकोश	—	(सं)	२४२
बृहत्संहितावर्णनस्य	—	(सं)	५४	वृत्तकलाकोश	सुरासकचन्द्र	(हि)	२४४
बृहत्संहितावर्णनस्य [मध्यसहित]	—		५२४	वृत्तकलाकोश	—	(हि)	२४४
वैद्यकीय विद्या	पेमारस	(हि)	२४	वृत्तकलासंग्रह	—	(सं)	२४६
वैद्यकसार	—	(सं)	३ ४	वृत्तकलासंग्रह	—	(सं)	२४५
वैद्यकसारोद्धार	हृदयकीर्तिसूरि	(सं)	३ ५	वृत्तकलासंग्रह	म महतिसागर	(हि)	२४६
वैद्यकीयम	शोशिम्वराज	(सं)	३ ३ ७१३	वृत्तकलासंग्रह	—	(हि)	२४७
वैद्यकीयम	—	(सं)	३ ३	वृत्तकलासंग्रह	सुमतिसागर	(हि)	७६५
वैद्यकीयम	रुद्रभट्ट	(सं)	३ ४	वृत्तनाम	—	(हि)	३३९
वैद्यकीयम	नयनमुख	(हि)	३ ४	वृत्तनाम	—	(सं)	८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्रतनिरणय	मोहन	(स०)	५३६	पट्पाहुड [प्राभृत]	आ० कुन्दकुड	(प्रा०)	११७, ७४८
व्रतजूजासग्रह	—	(स०)	५३७	पट्पाहुडटीका	श्रुतसागर	(स०)	११६
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८	पट्पाहुडटीका	—	(स०)	११८
व्रतविधानरासो	दौलतराम सधी	(हि०)	६३८, ७७६	पट्मतचरत्रा	—	(स०)	७५७
व्रतविवरण	—	(स०)	५३८	पट्सकथा	—	(स०)	६८३
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८	पट्लेश्यावर्णन	—	(स०)	७४८
व्रतसार	आ० शिवकोटि	(स०)	५३८	पट्लेश्यावर्णन	—	(हि०)	४४
व्रतसार	—	(स०)	८७	पट्लेश्यावेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७७५
व्रतसख्या	—	(हि०)	८७	पट्लेश्यावेलि	साह लोहट	(हि०)	३६६
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(स०)	८७	पट्सहननवर्णन	मकरन्द	(हि०)	८८
व्रतोद्यापनसग्रह	—	(स०)	५३८	षड्दर्शनवार्त्ता	—	(स०)	१३६
व्रतोपवासवर्णन	—	(स०)	८७	षड्दर्शनविचार	—	(स०)	१३६
व्रतोपवासवर्णन	—	(हि०)	८७	षड्दर्शनसमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(स०)	१३६
व्रतो के चित्र	—		७२३	षड्दर्शनसमुच्चयटीका	—	(स०)	१४०
व्रतोकी तिथियोका व्यौरा	—	(हि०)	६५५	षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	गणरतनसूरि	(स०)	१३६
व्रतो के नाम	—	(हि०)	८७	पट्भक्तिपाठ	—	(स०)	७५२
व्रतोका व्यौरा	—	(हि०)	६०३	पट्भक्तिवर्णन	—	(स०)	८८
ष				परावतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	५१६, ५४१
षट्श्रावश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द्र	(हि०)	८७	षष्ठिशतकटिप्पण	भक्तिलाल	(स०)	३३६
षट्श्रावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	षष्ठ्याधिकशतकटीका	राजहसोपाध्याय	(स०)	४४
षट्श्रुतुवर्णनबारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६	षोडशकारणउद्यापन	—	(स०)	५४२
षट्कर्मकथन	—	(स०)	३५२	षोडशकारणकथा	ललितकीर्त्ति	(स०)	६४५
षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [छक्कमोवएसमाला]				षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१
	महाकवि अमरकीर्त्ति	(अप०)	८८	षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा० स०)	५४२
षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पाडे लालचन्द्र	(हि०)	८८	षोडशकारणजयमाल	रङ्गू	(अप०)	५१७, ५४२
षट्पचासिका	वराहमिह्र	(स०)	२६२	षोडशकारणजयमाल	—	(अप०)	५४२
षट्पञ्चासिका	—	(हि०)	६५६	षोडशकारणजयमाल	—	(हि० ग०)	५४२
षट्पञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(स०)	२६२	षोडशकारणपूजा [षोडशकारणव्रतोद्यापन]			
षट्पाठ	—	(स०)	४१७		केशवसेन	(स०)	५३६, ५४२, ६७६
षट्पाठ	बुधजन	(हि०)	४१६	षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
भुतारत्नाकररुद्रटोका	समयसुन्दरगणि	(सं) ३१४	१ ३ १३६ १८६ १६३ ७१८ ७६४		
भुतारत्नाकरटीका	सुरहृणकवि	(सं) ३१४	बैद्यकल्लभ	—	(सं) ३ ४ ७३८
भुवसतई	वृष्णकवि	(हि) ३३६	बैद्यविनोद	मट्टराट्टर	(सं) ३ ५
	१७५, ७४५ ७५१ ७८२ ७६६		बैद्यविनाद	—	(हि) ३ ३
भृहत्कलिकुम्भपूजा	—	(सं) १३१	बैद्यसार	—	(सं) ७३८
भृहत्कल्याण	—	(हि) ५७१	बैद्यामृत	माणिक्यभट्ट	(सं) ३ ३
भृहत्पुराणसीमाविमर्शकपूजा [शोषठश्रुतिपूजा]			बैद्याकरणभूषण	कौहनभट्ट	(सं) २११
	स्वरूपचम्पू	(हि) ३४१	बैद्याकरणभूषण	—	(सं) २११
भृहत्षटाक्षर्याकल्प	कवि भोगीलाल	(हि) ७२६	बैराम्यगीत [नवरगीत]	छीइल	(हि) ११७
भृहत्शाणिक्यमीतिशास्त्रभाषा	सिम्भरासराय	(हि) ३३६	बैराम्यगीत	महमत	(हि) ४१६
भृहत्शाणिक्यवराजनीति	श्यामक्य	(सं) ७१२	बैराम्यशाही	मगवसीवास	(हि) १८५
भृहत्जातक	भट्टोत्पल	(सं) २६१	बैराम्यसतक	भट्टहरि	(सं) ११७
भृहत्जनककार	—	(सं) ४३१	व्याकरण	—	(सं) २१४
भृहत्प्रतिकर्मण	—	(सं) ८६ ५७	व्याकरणटीका	—	(सं) २१४
भृहत्प्रतिकर्मण	—	(मा) ८६	व्याकरणभाषाटीका	—	(सं) २१४
भृहत्पोषणकारणपूजा	—	(सं) ३ ६ ७३	व्रतकथाकोश	पं० दामादर	(सं) २४१
भृहत्प्रातिस्तोत्र	—	(सं) ४२३	व्रतकथाकोश	वेवेन्द्रकीर्ति	(सं) २४२
भृहत्स्नपनविधि	—	(सं) १३८	व्रतकथाकोश	भ्रुवसागर	(सं०) २४१
भृहत्स्वयम्भुस्तोत्र	समन्तमद्र	(सं) ३७२	व्रतकथाकोश	सकलकीर्ति	(सं) २४२
		१२८ १६१	व्रतकथाकोश	—	(सं) २४४
भृहत्स्पतिविचार	—	(सं) १६१	व्रतकथाकोश	—	(सं प्र०) २४२
भृहत्स्पतिविधान	—	(सं) ५४	व्रतकथाकोश	सुरासचम्पू	(हि) २४४
भृहत्सिद्धचक्र [मन्त्रसिद्धि]	—	५२४	व्रतकथाकोश	—	(हि) २४४
बैदरमी विवाह	पेम्पराज	(हि) २४	व्रतकथासंग्रह	—	(सं) २४६
बैद्यकसार	—	(सं) ३ ४	व्रतकथासंग्रह	—	(प्र०) २४६
बैद्यकसारोच्चार	दृपकीर्तिसूरि	(सं) ३ ३	व्रतकथासंग्रह	प्र महत्तिसागर	(हि) २४६
बैद्यजीवन	श्रीसिम्भराज	(सं) ३ ३, ७१५	व्रतकथासंग्रह	—	(हि) २४७
बैद्यजीवनप्राप	—	(सं) ३ ३	व्रतजयमाला	सुमतिसागर	(हि) ७६३
बैद्यजीवनटीका	रुद्रभट्ट	(सं) ३ ४	व्रतनाम	—	(हि) ३३६
बैद्यमनोसूत्र	नबनमुक्त	(हि) ३ ४	व्रतनामाली	—	(सं) ५७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्रतनिरणय	मोहन	(स०)	५३६
व्रतजूजासग्रह	—	(स०)	५३७
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८
व्रतविधानरासो	दौलतराम सघी	(हि०)	६३८, ७७६
व्रतविवरण	—	(स०)	५३८
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८
व्रतमार	आ० शिवकोटि	(स०)	५३८
व्रतसार	—	(स०)	८७
व्रतसख्या	—	(हि०)	८७
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(स०)	८७
व्रतोद्यापनसग्रह	—	(स०)	५३८
व्रतोपवासवर्णन	—	(स०)	८७
व्रतोपवासवर्णन	—	(हि०)	८७
व्रतो के चित्र	—		७२३
व्रतोकी त्रिययोका व्यौरा	—	(हि०)	६५५
व्रतो के नाम	—	(हि०)	८७
व्रतोका व्यौरा	—	(हि०)	६०३

ष

षट्श्रावश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द्र	(हि०)	८७
षट्श्रावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७
षट्श्रद्धतुवर्णनबारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६
षट्कर्मकथन	—	(स०)	३५२
षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [छक्कमोवएसमाला]			
	महाकवि अमरकीर्त्ति	(अप०)	८८
षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पाडे लालचन्द्र	(हि०)	८८
षट्पचासिका	वराहमिहर	(स०)	२६२
षट्पञ्चासिका	—	(हि०)	६५६
षट्पञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(स०)	२६२
षट्पाठ	—	(स०)	४१७
षट्पाठ	बुधजन	(हि०)	४१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षट्पाहुड [प्राभृत]	आ० कुन्दकुद	(प्रा०)	११७, ७४८
षट्पाहुडटीका	श्रुतसागर	(स०)	११६
षट्पाहुडटीका	—	(स०)	११८
षट्मतचरचा	—	(स०)	७५७
षट्सकथा	—	(स०)	६८३
षट्लेश्यावर्णन	—	(स०)	७४८
षट्लेश्यावर्णन	—	(हि०)	४४
षट्लेश्यावेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७७५
षट्लेश्यावेलि	साह लोहट	(हि०)	३६६
षट्सहननवर्णन	मकरन्द	(हि०)	८८
षड्दर्शनवार्त्ता	—	(स०)	१३६
षड्दर्शनविचार	—	(स०)	१३६
षड्दर्शनसमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(स०)	१३६
षड्दर्शनसमुच्चयटीका	—	(स०)	१४०
षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	गणरतनसूरि	(स०)	१३६
षट्भक्तिपाठ	—	(स०)	७५२
षड्भक्तिवर्णन	—	(स०)	८८
षणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	५१६, ५४१
षष्ठिशतकटिप्पण	भक्तिलाल	(स०)	३३६
षष्ठ्याधिकशतकटीका	राजहसोपाध्याय	(स०)	४४
षोडशकारणउद्यापन	—	(स०)	५४२
षोडशकारणकथा	ललितकीर्त्ति	(स०)	६४५
षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१
षोडशकारणजयमाल	—	(प्रा० स०)	५४२
षोडशकारणजयमाल	रङ्गू	(अप०)	५१७, ५४२
षोडशकारणजयमाल	—	(अप०)	५४२
षोडशकारणजयमाल	—	(हि० ग०)	५४२
षोडशकारणपूजा [षोडशकारणव्रतोद्यापन]			
	केशवसेन	(स०)	५३६, ५४२, ६७६
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
पोड्यकारणपूजा [पोड्यकारणप्रतोषापनपूजा]		
सुमतिसागर (सं)	५१७ ५४३ ५४७	
पोड्यकारणपूजा	— (सं)	५१५
५१७ ५४२ ५४३ ५६६ ५७४ ५६४ ५२९		
१ ७ ६४६ ६२५ ७६३		
पोड्यकारणपूजा	सुरास्रचम्द (हि)	५१६
पोड्यकारणपूजा	द्यानतराय (हि)	७ ५
पोड्यकारणभावना	— (प्रा)	८६
पोड्यकारणभावना	प० सदासुख (हि ग)	८
पोड्यकारणभावना	— (हि)	८८
पोड्यकारणभावनात्रयमाल	नथमस्र (हि)	८८
पोड्यकारणभावनाव्यसनवृत्ति	प० शिवजीसास्र (हि)	८८
पोड्यकारणविधानकथा	प० काभ्रवेय (सं)	२२
	२६२ २४५ २३७	
पोड्यकारणविधानकथा	मदनकीर्ति (सं०)	५१४
पोड्यकारणप्रतकथा	सुरास्रचम्द (हि)	२४४
पोड्यकारणप्रतकथा	— (सुम)	२४७
पोड्यकारणप्रतोषापनपूजा	रास्रकीर्ति (सं)	५४३

ग

शत्रुप्रचुम्नप्रबन्ध	समयसुन्दरगाणि (सं)	१६७
शत्रुनिवार	— (सं)	२६२
शत्रुनाशक	— (हि)	१ ७
शत्रुनाशनी	गग (सं)	२६२
शत्रुनाशनी	— (स)	२६२ १ ३
शत्रुनाशनी	अबजद (हि)	१६२
शत्रुनाशनी	— (हि)	२६३ १४३
घनप्रदत्तरी	— (हि)	१८६
घतक	— (स)	२७७
शत्रुनिवारिणी	भ० विरहभूपण (सं)	२१३ २४३

ग्रन्थनाम	लेखक	मापा पृष्ठ सं०
शत्रुघ्नयतीपरास्र [शत्रुघ्नपरास्र]		
समयसुन्दर (सं)	११७ ७	
शत्रुघ्नयभास	राजसमुद्र (हि)	११६
शत्रुघ्नयस्तवन	राजसमुद्र (हि)	११६
शनिभरतेकौ कथा	सुरास्रचम्द (हि)	६०३
शनिभरतेकौकथा [शनिभरकथा]	— (हि)	६६२
	१६४ ७११ ७१३ ७१४ ७२३ ७४३ ७८६	
शनिभरहृष्टिबिचार	— (सं)	२६३
शनिस्तोत्र	— (स)	४२४
शम्भुप्रभेद व शत्रुप्रभेद	श्री महेश्वर (स)	२७७
शम्भुरत्न	— (सं)	२७७
शम्भुर्वाग्वि	— (स)	२६४
शम्भुर्वाग्विणी	भा० धररुचि (सं)	२६४
शम्भुशोभा	कवि नीलकठ (सं)	२६४
शम्भुसुखासन	हेमचन्द्राचार्य (स)	२६४
शम्भुसुखासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य (सं)	२६४
शरदुम्भवदीपिका [मण्डलविधानपूजा]		
	सिद्धनम्दि (स)	१४३
शहरमारोठ की पंथी 'मुनि महीचन्द	(हि)	५६२
शान्तायनव्याकरण	शाकटायन (स)	२६३
शान्तिवनाम	— (हि)	१६५
शान्तिकरस्तोत्र	विद्यामिदि (प्रा)	१८१
शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूय (प्रा)	४२३
शान्तिविधान	— (हि)	१४४
शान्तिविधान (बृहत्)	— (सं)	१४४
शान्तिविधि	अहर्देव (स०)	१४४
शान्तिकहोमविधि	— (सं)	१४६
शान्तिशोपणस्तुति	— (सं)	४१७
शान्तिचक्रपूजा	— (सं)	११७
शान्तिचक्रमण्डल (चित्र)		१२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	म०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	स०
शातिनाथचरित्र	अजितप्रभसूरि	(स०)	१६८	शारदाष्टक	बनारसीदास	(हि०)	७७६		
शातिनाथचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(स०)	१६८	शारदाष्टक	—	(हि०)	१७०		
शातिनाथपुराण	महाकवि अशग	(स०)	१५५	शारदीनाममाला	—	(स०)	२७७		
शातिनाथपुराण	खुशालचन्द्र	(हि०)	१५५	शाङ्गधरसहिना	शाङ्गधर	(स०)	३०५		
शातिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५४५	शाङ्गधरसहिताटीका	नाढमल्ल	(स०)	३०६		
शातिनाथपूजा	—	(स०)	५०६	शालिभद्रचौपई	जितसिंहसूरि	(हि०)	७००		
शातिनाथस्तवन	—	(स०)	४१७	शालिभद्रमहामुनिमञ्जाय	—	(हि०)	६१६		
शातिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०)	७०२	शालिभद्र चौपई	मतिसागर	(हि०)	१६८, ७२६		
शातिनाथस्तवन	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४१७	शालिभद्रयन्त्रानीचौपई	जितसिंहसूरि	(हि०)	२५३		
शातिनाथस्तोत्र	मुनि गुणभद्र	(स०)	६१४	शालिभद्रमहामुनिसञ्जाय	—	(हि०)	६१६		
शातिनाथस्तोत्र	गुणभद्र स्वामी	(स०)	७२२	शालिभद्रसञ्जाय	—	(हि०)	७३४		
शातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	(स०)	४१७, ७१५	शालिहोत्र	—	(स०)	७३०		
शातिनाथस्तोत्र	—	(स०)	३८३	शालिहोत्र [अश्वचिकित्सा]	—	(स०-हि०)	३०६		
			४०२, ४१८, ६४६, ६७३, ७४५				५० नकुल		
शातिपाठ	—	(स०)	४१८	शालिहोत्र [अश्वचिकित्सा]	—	(स०)	३०६		
४२८, ५४५, ५६६, ६४०, ६६१, ६६७, ७०४, ७०५				शास्त्रगुरुजयमाल	—	(प्रा०)	५४५		
७३३, ७५८				शास्त्रजयमाल	ज्ञानभूषण	(स०)	४५५		
शातिपाठ (वृहद्)	—	(सं०)	५४५	शास्त्रजयमाल	—	(प्रा०)	५६५		
शातिपाठ	द्यानतराय	(हि०)	५१६	शास्त्रपूजा	—	(स०)	५३६		
शातिपाठ	—	(हि०)	६४५				५६४, ५६५, ६५२		
शातिपाठ	—	(हि०)	५०६	शास्त्रपूजा	—	(हि०)	५१६		
शातिमण्डलपूजा	—	(प०)	५०६	शास्त्रप्रवचन प्रारंभ करने					
शातिरत्नसूची	—	(स०)	५४५	को विधि	—	(स०)	५४६		
शातिविधि	—	(स०)	५४०	शास्त्रजीकामडल [चित्र]	—				
शातिविधान	—	(स०)	४१८	शासनदेवतार्चनविधान	—	(स०)	५४६		
आचार्यशातिगागरपूजा	भगवानदास	(हि०)	४६१, ७८६	शिक्षाचतुष्क	नवलराम	(हि०)	६६८		
शातिस्तवन	देवसूरि	(स०)	४१६	शिखरविलास	रामचन्द्र	(हि०)	६६३		
शातिहोमविधान	आशाधर	(स०)	५४५	शिखरविलासपूजा	—	(हि०)	५४६		
शारदाष्टक	—	(स०)	४२४	शिखरविलासभाषा	धनराज	(हि०)	७६३		

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
द्विसामयसंपह	—	(स)	३७५	शृ गारकवित्त	—	(हि)	१६१
द्विसामयसंपह	कवि सारस्वत	(स)	२७७	शृ गारतिसक	काशिदाम	(सं)	३२६
द्विसामयसंपह	शंकरभट्ट	(सं)	२४७	शृ गारतिसक	रुद्रभट्ट	(सं)	३२६
द्विसामयसंपह	महाकवि माघ	(सं)	१८६	शृ गाररसकेवदित	—	(हि)	७७
द्विसामयसंपह	महिनाथसूरि	(सं)	१८६	शृ गाररस के कुंकरसंबंध	—	(हि)	५६३
द्विसामयसंपह	काशीनाथ	(स)	२१५	शृ गारसबैया	—	(हि)	७६७
	२६३ १ ३ ६७२, १७२			श्यामबत्तीसी	नन्ददास	(हि)	१८४
द्विसामयसंपह	धर्मभूषण	(सं)	५४१, ७६२	श्यामबत्तीसी	श्याम	(हि)	७१६
द्विसामयसंपह	श्रियज्ञानचंद	(हि)	४५१	श्रवणभूषण	नरहरिभट्ट	(सं)	१८६
द्विसामयसंपह	समयसुन्दरगणि	(राज)	१११	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(प्रा)	८६
द्विसामयसंपह	—	(सं)	६४७	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(हि)	३७५
द्विसामयसंपह	भारामह	(हि)	२४७	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(हि)	२६७
द्विसामयसंपह	—	(हि)	८६	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(हि)	७२७
द्विसामयसंपह	भक्तमह	(हि)	७२	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(सं)	८६
द्विसामयसंपह	—	(हि)	११६	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(सं)	८६ २७५
द्विसामयसंपह	श्र रायमह	(हि)	७४६	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(प्रा)	८६
द्विसामयसंपह	विजयवृषसूरि	(हि)	३१५ ६१७	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(स प्रा)	१७२
द्विसामयसंपह	—	(सं)	२४१	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(प्रा)	७६४
द्विसामयसंपह	—	(हि)	११५	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(प्रा हि)	७६८
द्विसामयसंपह	—	(हि)	१ ३	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(हि)	८६
द्विसामयसंपह	मेरुसुन्दरगणि	(दुब)	२४७	श्रावणविक्रमखसुभ	पद्माज्ञानचौधरी	(हि)	८६
द्विसामयसंपह	—	(स)	२४७	श्रावणविक्रमखसुभ	बीरसेन	(सं)	८६
द्विसामयसंपह	—	(सं)	२४	श्रावणविक्रमखसुभ	उमास्वामि	(स)	६
द्विसामयसंपह	—	(स)	२४१	श्रावणविक्रमखसुभ	अमिठगति	(स)	६
द्विसामयसंपह	—	(स)	२४१	श्रावणविक्रमखसुभ	आराधन	(सं)	६१५
द्विसामयसंपह	—	(स)	२४१	श्रावणविक्रमखसुभ	गुणभूषण	(स)	६
द्विसामयसंपह	वैद्यमूर्त्तिकृति	(सं)	२१८	श्रावणविक्रमखसुभ	पद्मनंदि	(सं)	६
द्विसामयसंपह	भाष्य	(सं)	२७४	श्रावणविक्रमखसुभ	पुष्पपाद	(सं)	६
द्विसामयसंपह	—	(हि)	५६६	श्रावणविक्रमखसुभ	सकलकृति	(सं)	६१
द्विसामयसंपह	—	(हि म)	३११, ७१८	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(सं)	६१
द्विसामयसंपह	—	(न)	२२३	श्रावणविक्रमखसुभ	—	(प्रा)	६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भुवत्कर्मविधानकथा	प० अन्नदेव (सं)		२४२
भुवत्कर्मवृत्तकथा	प्र० ज्ञानसागर (हि)		२२८
भुतावतार	पं० श्रीधर (सं)	१७६	१७२
भुताष्टक	—	(सं)	११७
शैलिकवचिन्	म० शुभचन्द्र (सं)		२०३
शैलिकवचिन्	म० सफ़लकीर्ति (सं)		२ ३
शैलिकवचिन्	—	(प्रा)	२ ३
शैलिकवचिन्	विजयकीर्ति (हि)		२ ४
शैलिकवचिन्	हू गा वैद (हि)		२४८
शैलिकवचिन्	समयसुन्दर (हि)		११६
शैलिकवचिन्	विजयमानसूरी (हि)		४२१
शोकनातिक	आ० विद्यानन्दि (सं)		४४
शैतान्तरमतकेषीपवीबोस	शगरूप (हि)		७७६
शैतान्तरमतकेषीपवीबोस	—	(हि)	१८२
शैतान्तरों के ८४ बार	—	(हि)	१२६

स

सङ्कटचौपयकथा	हेनन्द्रमूपय (हि)		७६४
सङ्कटचौपयकथा	—	(हि)	७४१
सङ्कटिफम	— (सं)	२६३	२६४
संदिग्धवैद्यतयासत्रप्रक्रिया	—	(सं)	१४
संकीर्तनपरमभक्तिस्तुति	—	(हि)	११८
संप्रहृष्टीयालाबाध शिवमिथानगधि (प्रा हि)			४२
संप्रहृष्टीयूत	—	(प्रा)	४३
संप्रहृष्टीयूत	—	(सं)	१७२
संप्रहृष्टीयूत	—	(प्रा)	१२३
संभारतिथयन	—	(हि)	१२६
संभारचौमा	शानतराय (हि)		१७६
संभारचौमा	—	(सं)	२६३, २६७
संभारचौमा	—	(हि)	१ ६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सकाराविधि	—	(सं)	१४८
सहृष्टि	—	(सं)	१७१
सकम्पनिषया	—	(सं)	२६३
संबोधमकरबावनी	शानतराय (हि)		११६
संबोधपचासिका	गौतमस्वामी (प्रा)	११६	१२८
संबोधपचासिका	—	(प्रा०)	१७२
संबोधपचासिका	—	१२८ ७ ६ ७२३	
संबोधपचासिका	रघू (मप)		१२८
संबोधपचासिका	—	(मप)	१७३
संबोधपचासिका	शानतराय (हि)		६ ३
संबोधपचासिका	१४८ १८३ १६३ ७१३		७१६ ७२३
संबोधपचासिका	—	(हि)	४३
संबोधसतक	शानतराय (हि)		१२८
संबोधसतरी	—	(प्रा)	१२८
संबोधसत्ताणु	वीरचन्द्र (हि)		११६
संभक्तिस्तोत्र	मुनिगुणनन्दि (सं०)		४१६
संभक्तिशुद्धिचरित	तेजपाल (मप)		२ ४
संभवनपपदकी	—	(मप०)	१७६
संयोगपंचमीकथा	धर्मचन्द्र (हि)		२३६
संयोगपत्नीसी	मानकवि (हि)		११६
संयत्तरयन	—	(हि)	१७६
संयत्तरीविचार	—	(हि ग)	२६४
संसारघटनी	—	(हि)	७६२
संसारस्वरूपवर्णन	—	(हि)	६३
संस्कृतमंजरी	—	(सं)	२६३
संस्कृतनाम	—	(हि)	११६
सकमीकरण	—	(सं)	१४८
सकमीकरणविधि	—	(सं)	११४ १७८
सकमीकरणविधि	—	(सं)	११३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिपेण	(स०)	३३७, ५७३	सप्तपदार्यी	शिवादित्य	(सं०)	१४०
सज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द्र	(स०)	३३७	सप्तपदार्यी	—	(स०)	१४०
सज्जनचित्तवल्लभ	—	(स०)	३३७	सप्तपदी	—	(सं०)	५४८
सज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द्र	(हि०)	३३७	सप्तपरमस्थान	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१
सज्जनचित्तवल्लभ	दुर्गूलाल	(हि०)	३३७	सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्त्ति	(स०)	२४६
सज्ज्माय [चौदह बोल]	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	४५१	सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(स०)	५१७, ५४८
सज्ज्माय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
सतंसई	विहारीलाल	(हि०)	५७६, ७६८	सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सतियो की सज्ज्माय	ऋषिछजमलजी	(हि०)	४५१	सप्तभगीवाणी	भगवतीदास	(हि०)	६८८
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७३५, ७६०	सप्तविधि	—	(हि०)	३०७
सत्तात्रिभगी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४५	सप्तव्यसनसनकथा	आ० सोमकीर्त्ति	(सं०)	२५०
सत्ताद्वार	—	(स०)	४५	सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०
सद्भापितावली	सकलकीर्त्ति	(स०)	३३८	सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०
सद्भापितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३३८	सप्तव्यसनकवित्त	वनारसीदास	(हि०)	७२३
सद्भापितावली	—	(हि०)	३३८	सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(स०)	७१५
सन्निपातकलिका	—	(स०)	३०७	सप्तश्लोकीगीता	—	(स०)	६२ ३६८ ६६२
सन्निपातनिदान	—	(स०)	३०६	सप्तसूत्रभेद	—	(स०)	७६१
सन्निपातनिदानचिकित्सा	बाहडदास	(स०)	३०६	सभातरंग	—	(सं०)	३३८
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशसूरि	(स०)	३३८	सभाश्रृ गार	—	(स०)	३३६
सन्मतिर्तक	सिद्धसेनदिवाकर	(सं०)	१४०	सभाश्रृ गार	—	(स० हि०)	३३८
सप्तर्षिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६	सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३३८
सप्तर्षिपूजा	जिणदास	(स०)	५४८	समकित्तदाल	आसकरण	(हि०)	६२
सप्तर्षिपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	७६६	समकित्तविणवोधर्म	जिनदास	(हि०)	७०१
सप्तर्षिपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०)	५४८	समंतभद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८
सप्तर्षिपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५४८	समंतभद्रस्तुति	संमंतभद्र	(सं०)	७७८
सप्तर्षिपूजा	—	(स०)	५४६	समयसार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६
सप्तर्षिमण्डल [चित्र]	—	(सं०)	५२४				५७४, ७०३, ७६२
सप्तनपविचारस्तवन	—	(सं०)	४१८	समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	१२०
सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	(स०)	१४०	समयसारकलशाटीका	—	(हि०)	१२५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
समयसारकमयाभाषा	—	(हि)	१२५	समाधिभरण	—	(मग)	१२८
समयसारटीका	—	(स)	१२२ १२५	समाधिभरणभाषा पन्नासाक्षचौधरी	—	(हि)	१२७
समयसारनाटक	यनारसीनाम	(हि)	१२३	समाधिभरणभाषा	सूरचन्द्र	(हि)	१२७
	१ ४ ६३६ १८ १८३ १८८			समाधिभरण	—	(हि)	१३, १२०
	१८६, १८८, ७ २ ७१९, ७२						७१ ७४८
	७३१ ७५३ ७५३			समाधिभरणपाठ	द्यानतराय	(हि)	१२६, १२४
	७७८, ७८७ ७६२			समाधिभरण स्वल्पभाषा	—	(हि)	१२७
समयसारभाषा	जयचन्द्रदाबहा	(हि ग)	१२४	समाधिसतक	पूष्यपाद	(सं)	१२७
समयसारबचनिवा	—	(हि)	१२३	समाधिसतकटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं)	१२७
समयसारमुक्ति	अमृतचन्द्रसूरि	(सं)	५७३ ७६४	समाधिसतकटीका	—	(सं)	१२८
समयसारवृत्ति	—	(मग)	१२२	समुदायस्तोत्र	दिवसेन	(सं)	४१६
समयसार	रामबाभ्रपय	(सं)	२१४	समुद्रपस्तमेव	—	(सं)	६२
समयसारगुणा	अक्षितकोषि	(सं)	१४६	सम्मेदधिरिपूजा	—	(हि)	७३९ ७४
समयसारगुणा	रत्नशेखर	(सं)	१३७	सम्मेदधिरिपूजा	गंगादास	(सं)	१४६ ७२
समयसारगुणा [वृहत्]	रूपचन्द्र	(सं)	१७६	सम्मेदधिरिपूजा	प० अनाहरसाक्ष	(हि)	१५
समयसारगुणा	—	(सं)	१४६, ७६७	सम्मेदधिरिपूजा	भागचन्द्र	(हि)	१५
समयसारगुणास्तोत्र	विष्णुसेन मुनि	(सं)	४१६	सम्मेदधिरिपूजा	रामचन्द्र	(हि)	१५
समयसारगुणास्तोत्र	दिवसेन	(सं)	४१३	सम्मेदधिरिपूजा	—	(हि)	१११
समयसारगुणास्तोत्र	—	(सं)	४१६				११८ १७८
समयसारगुणास्तोत्र	चन्द्रकोर्णि	(हि)	१६४	सम्मेदधिरिपूजा	—	(हि)	१६९
समाधि	—	(मग)	१४२	सम्मेदधिरिपूजा	श्रीचित्त देवदत्त	(सं)	६२
समाधिसतक	पूष्यपाद	(सं)	१२५	सम्मेदधिरिपूजा	मनमुक्तसाक्ष	(हि)	६२
समाधिसतक	—	(सं)	१२५	सम्मेदधिरिपूजा	साक्षचन्द्र	(हि प)	६२ २५१
समाधिसतकभाषा	नाथूरामशामी	(हि)	१२६	सम्मेदधिरिपूजा	—	(हि)	७८८
समाधिसतकभाषा	पद्मचर्मार्थी	(हि)	१२६	सम्मेदधिरिपूजा	फेरतीसिद्ध	(हि)	६२
समाधिसतकभाषा	साण्ड्यचन्द्र	(हि)	१२५	सम्मेदधिरिपूजा	देषाप्रज्ञ	(हि प)	६३
समाधिसतकभाषा	—	(हि ग)	१२६	सम्मेदधिरिपूजा	रता	(सं)	१११
समाधिभरण	—	(सं)	११२	सम्मेदधिरिपूजा	गुणाकरमूर्ति	(सं)	१११
समाधिभरण	—	(मग)	१२६	सम्मेदधिरिपूजा	सहणसाक्ष	(मग)	१४२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सगन्धदशमीव्रतोद्योपन	—	(सं०)	५५५	सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२३
सुगुरुशतक	जिनदासगोधा (हि०प०)		३४०, ४४७	सुभाषितपाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६६८
सुगुरुस्तोत्र	—	(स०)	४२२	सुभाषितमुक्तावली	—	(सं०)	३४१
सदयवच्छसावलिगाकी चौपई	मुनिकेशव	(हि०)	२५४	सुभाषितरत्नसंदोह	अमितिगति	(सं०)	३४१
दयवच्छसालिगारीवार्ता	—	(हि०)	७३४	सुभाषितरत्नसंदोहभाषा	पन्नालालचौधरी (हि०)		३४१
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	— (सं०)	३४१, ५७५	
सुदर्शनचरित्र	मुमुक्षुविद्यानदि	(सं०)	२०६	सुभाषितरुग्रह	— (सं०प्रा०)		३४२
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	— (स०हि०)		३४२
सुदर्शनचरित्र	—	(स०)	२०६	सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(स०)	३४१
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०६	सुभाषितावली	सकलकीर्त्ति	(स०)	३४३
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६	सुभाषितावली	— (सं०)	३४३, ७०६	
			६३६, ७१२, ७४६	सुभाषितावलीभाषा	ब्र० दुलीचन्द्र	(हि०)	३४४
सुदर्शनसेठकीढाल [कथा]	—	(हि०)	२५४	सुभाषितावलीभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४४
सुदामाकीबारहखडो	—	(हि०)	७७६	सुभाषितावलीभाषा	— (हि०प०)		३४४
सुदृष्टितरगिराणीभाषा	टेकचन्द्र	(हि०)	६७	सुभीमचरित्र	भ० रतनचन्द्र	(सं०)	२०६
सुदृष्टितरगिराणीभाषा	—	(हि०)	६७	सुभीमचक्रवर्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
सुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४५	सूक्तावली	— (सं०)	३४५, ६७२	
सुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३	सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य (सं०)	३४४, ६३५	
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८	सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	— (सं०)		६०६
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५	सूतकनिर्णय	— (सं०)		५५५
सुपाश्वर्चनायपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५५५	सूतकवर्णन [यशस्तिलक से]	सोमदेव	(सं०)	५७१
सुप्पय दोहा	—	(अप०)	६२८	सूतकवर्णन	— (सं०)		५५५
सुप्पय दोहा	—	(अप०)	६३७	सूतकविधि	— (सं०)		५७६
सुप्पय दोहा	—	(हिं०)	७६५	सूत्रकृताग	— (प्रा०)		४७
सुप्रभातस्तवन	—	(स०)	५७४	सूर्यकवच	— (स०)		६४०
सुप्रभाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(सं०)	६३३	सूर्यकेदशनाम	— (सं०)		६०८
सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	(स०)	६३३	सूर्यगमनविधि	— (सं०)		२६५
सुभाषित	—	(सं०)	५७५	सूर्यव्रतोद्योपनपूजा	ब्र० जयसागर	(स०)	५५७
सुभाषित	—	(हि०)	७०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सूर्यस्तोत्र	—	(स)	१४१ ११२	सोमहृत्सतिषोक्तिनाम	राजसमुद्र	(हि०)	१११
सोनागिरिपञ्चीसी	भागीरथ	(हि०)	१८	सोमहृत्सवीसङ्काम	—	(हि)	४४२
सोनागिरिपञ्चीसी	—	(हि)	११२	सौर्व्यसहरी स्तोत्र	—	(स)	४२२
सोनागिरिपूजा	आशा	(सं)	१११	सौर्व्यसहरीस्तोत्र	मट्टारक जगद्भूषण	(सं)	४२२
सोनागिरिपूजा	—	(हि)	१११	सौर्व्यप्रतोषापन	आश्वमेराम	(स)	५११ १११
			१७४ ७३	सौर्व्यप्रतोषापन	—	(सं)	१११
सोमउत्पत्ति	—	(सं)	१११	सोमाम्बर्षचमीक्या	सुन्दरविजयगशि	(सं)	१११
सोसप्तर्षाचारिवैखण्ड्या	—	(प्रा०)	१११	सम्बपुराण	—	(स)	१७
सोमहृत्कारणक्या	रत्नपाल	(सं)	१११	स्तवन	—	(प्रप)	११
सोमहृत्कारणक्या	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४	स्तवनप्रहित	—	(हि)	१४८
सोमहृत्कारण	ब्रह्मसाह	(प्रप)	१७१	स्तवन	आशापर	(स)	१११
सोमहृत्कारणपूजा	ब्र० विनवास	(सं०)	७११	स्तुति	—	(सं)	४४२
सोमहृत्कारणपूजा	—	(सं०)	१ १	स्तुति	कनककीर्ति	(हि)	१ १ ११
			१४४ ११२, ११४ ७ ४	स्तुति	वीरकमचन्द्र	(हि)	१११
			७११, ७८४	स्तुति	नमस	(हि)	१११
सोमहृत्कारणपूजा	—	(प्रप)	७ १	स्तुति	जुषजन	(हि)	७ ४
सोमहृत्कारणपूजा	द्यानतराय	(हि)	१११	स्तुति	हरीसिंह	(हि)	७७१
			१११, १११	स्तुति	—	(हि)	१११
सोमहृत्कारणपूजा	—	(हि)	१११ १७				१७१ ७१८
सोमहृत्कारणभाष्यवर्णन	सदासुम्न	(हि)	१८	स्तोत्र	पद्ममहि	(सं)	१७१
सोमहृत्कारणभाष्यमा	—	(हि)	७८८	स्तोत्र	अश्वमीचन्द्रदेव	(प्रा)	१७१
सोमहृत्कारणभाष्यमा एवं वचनप्रण				स्तोत्रसग्रह	—	(सं हि)	१२८ १११
वधान—सदासुम्नकासखीवास		(हि)	१८				११८ ७ १ ७१४ ७११
सोमहृत्कारणमंडलविधान	टेकचव्	(हि)	१११				७११ ७४१ ७१२ ७११ ७१७
सोमहृत्कारणमंडल [विष]	—		१२४	स्तोत्रसग्रह	—	(स हि)	७११
सोमहृत्कारणप्रतोषाम्ना	केरावसेन	(सं)	११७				७१८, ७११ ७४८, ७७४
सोमहृत्कारणरास	म० सकलकीर्ति	(हि)	११४	स्तोत्रपूजावाळसग्रह	—	(सं हि)	११८
			१११, ७८१				७७१
सोमहृत्तिविधर्मान	—	(हि)	११४				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीमुक्तिखडत	—	(हि०)	६४०	स्वयम्भूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	४३४
स्त्रीलक्षणा	—	(स०)	३५६	स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(सं०)	७१५
स्त्रीशृ गारवर्णन	—	(सं०)	५७६	स्वरविचार	—	(सं०)	५७२
स्थापनानिर्णय	—	(स०)	६८	स्वरोदय	—	(स०)	१२८
स्थूलभद्रकाचौमासावर्णन	—	(हि०)	३७७	स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास)	—	(हि०)	३४५
स्थूलभद्रगीत	—	(हि०)	६१८	स्वरोदय	—	(हि०)	६४०, ७५६
स्थूलभद्रशीलरासो	—	(हि०)	५६६	स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्थूलभद्रसज्ज्भाय	—	(हि०)	४५२, ६१६	स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६३७
स्नपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,				७०१, ७६३
स्नपनविधि [वृहद्]	—	(स०)	५५६	स्वर्गसुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३	स्वर्गाकर्षणविधान	महीधर	(सं०)	४२८
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८	स्वस्त्ययनविधान	—	(सं०)	५७४
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१				६५८, ६४६
स्फुटकवित्तएवपद्यसग्रह	—	(सं०हि०)	६७२	स्वाध्याय	—	(सं०)	५७१
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३	स्वाध्यायपाठ	—	(सं०प्रा०)	५६४
स्फुटपद्यएवं मंत्रमादि	—	(हि०)	६७०	स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा०सु०)	६८ ६३३
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६	स्वाध्यायपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
स्फुटवार्ता	—	(हि०)	७४१	स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्फुटरलोकसग्रह	—	(स०)	३४५	स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि०प०)	१२८
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५	स्वार्थवीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५				
स्वप्नाध्याय	—	(स०)	२६५				
स्वप्नावली	देवनन्दि	(स०)	२६५, ६३३	हसकीढालतथाविनतीढाल	—	(हि०)	६८५
स्वप्नावली	—	(स०)	२६५	हसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
स्याद्वादचूलिका	—	(हि०ग०)	१४१	हठयोगदीपिका	—	(स०)	१२८
स्याद्वादमजरी	मङ्गिषेणसूरि	(स०)	१४१	हरणवतकुमारजयमाल	—	(अप०)	६३८
स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	(स०)	४२३	हनुमच्चरित्र	ब्र० अजित	(स०)	२१०
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,	हनुमच्चरित्र	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	२११
			६३३ ६६५, ६८६,				
			७२०, ७३१	(हनुमन्तकथा)		५६५, ५६६, ७१७,	
				(हनुमतकथा)		७३४, ७३६,	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
(हनुमत्वास)		७४०, ७४४	हरिवंशपुराणभाषा	— (हि)	१३८ १३९
(हनुमत् चौपई)		७३२, ७३२	हरिवंशचरित	— (हि०)	२३३
हनुमान स्तोत्र	—	(हि) ४३२	हरिहरनामावलिबर्णन	— (स)	१९
हनुमतागुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	(प्रप) १३३	हवनविधि	— (सं)	७३१
हनीरचौपई	—	(हि) ३७८	हारप्रति	महामहोपाध्याय पुरुत्तयोमदेव	(सं) २११
हनीरदासो	महेराकवि	(हि) ३६७, ७८३			
हयग्रीवावतारविषय	—	१ ३	हिम्बीसना	शिबचन्द्रमुनि	(सं) १८३
हृत्गोपीसदाव	—	(स) १०८	द्वितीयदेश	देवीचन्द्र	(स) ७४४
हरजीने बोहे	हरजी	(हि) ७८८	द्वितीयदेश	विष्णुरामा	(सं) ३४३
हरवेदस्य	—	(हि) ३ ७	द्वितीयदेशभाषा	— (हि)	३४६, ७९३
हरिचन्द्रसतक	—	(हि) ७४१	दृम्बाजसपिखीकासबोध	मायाकचन्द्र	(हि) ९८ ४४८
हरिनाममासा	शंकराचार्य	(सं) ३९८	हेमकारी	विरवभूपय	(हि०) ७९३
हरिबोलाप्रतिभाबली	—	(हि) १ १	हेमनीमृहृदप्रति	—	(सं) २७
हरिरस	—	(हि) १ १	हेमाध्याकरण [हेमध्याकरणाप्रति]		
हरिवंशपुराण	प्र० जिनदास	(स) १३६	हेमचन्द्राचार्य	(सं)	२७०
हरिवंशपुराण	जिनसेनाचार्य	(स) १३३	होवाचक्र	—	(सं) १९९
हरिवंशपुराण	श्री भूपय	(सं) १३७	होरामान	—	(सं) २३३
हरिवंशपुराण	सकलकीर्ति	(स) १३७	होतीकथा	जिनचन्द्रसूरि	(सं) २३६
हरिवंशपुराण	शबल	(प्रप) १३७	होमिककथा	—	(सं) २३३
हरिवंशपुराण	यशः कीर्ति	(प्रप) १३७	होमिकाचौपई	डू गर कवि	(हि प) २३३
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	(प्रप) १३७	होमीकथा	छीतर ठोसिया	(हि) २४६, २५३, १८३
हरिवंशपुराणभाषा	सुरासपन्द्र	(हि प) १३८			
हरिवंशपुराणभाषा	बोलावराम	(हि प) १३७	होमीकथाचरित्र	प्र० जिनदास	(सं) २११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	—	(सं०)	२५१		सरस्वतीस्तोत्रमाला [शारदास्तवन]				
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२					(सं०)	४२०
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६		सरस्वतीस्तोत्रभाषा	बनारसीदास		(हि०)	५४७
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	विनोदीलाल	(हि० ग०)	२५२		सर्वतोभद्रपूजा	—		(सं०)	५५१
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३		सर्वतोभद्रमंत्र	—		(सं०)	४१६
सम्यक्त्वजयमाल	—	(अप०)	७६४		सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—		(स०)	३०७
सम्यक्त्वपच्चीसी	—	(हि०)	७६०		सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि		(प०)	२७८
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	प० टोडरमल	(हि०)	७		सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद		(सं०)	४५
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५६६		सर्वार्थसिद्धिभाषा	जयचदद्यावडा		(हि०)	४६
सम्यग्दर्शनपूजा	—	(स०)	६५८		सर्वार्थसिद्धिसञ्ज्ञाय	—		(हि०)	४५२
सम्यग्दृष्टिकोभावनावर्णन	—	(हि०)	७८५		सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि		(हि०)	६१६
सरस्वतीश्रष्टक	—	(हि०)	४५२		सवैयाएवपद	सुन्दरदास		(हि०)	६८१
सरस्वतीकल्प	—	(स०)	३५२		सहस्रकूटजिनालयपूजा	—		(स०)	५५१
सरस्वतीचूर्णकानुसखा	—	(हि०)	७५७		सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्त्ति		(स०)	५५२
सरस्वती जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८		सहस्रगुणितपूजा	—		(स०)	५५२
सरस्वतीपूजा	आशावर	(स०)	६५८		सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(स०)	५५२, ७४७	
सरस्वतीपूजा [जयमाल]	ज्ञानभूषण	(स०)	५१५, ५६५		सहस्रनामपूजा	—		(सं०)	५५२
सरस्वतीपूजा	पद्मनंदि	(स०)	५५१, ७१६		सहस्रनामपूजा	चैनसुख		(हि०)	५५२
सरस्वतीपूजा	—	(स०)	५५१		सहस्रनामपूजा	—		(हि०)	५५२
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्द्रबखशी	(हि०)	५५१		सहस्रनामस्तोत्र	प० आशधर		(स०)	५६६
सरस्वतीपूजा	मघी पन्नलाल	(हि०)	५५१						६३६, ७०५
सरस्वतीपूजा	प० बुधजन	(हि०)	५५१		सहस्रनामस्तोत्र	—		(सं०)	६६४
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२						७५३, ७६३
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(स०)	४१६		सहस्रनाम [वडा]	—		(सं०)	४३१
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(स०)	६५७		सहस्रनाम [लघु]	आ० समतभद्र		(स०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(स०)	६४७, ७६१		सहस्रनाम [लघु]	—		(सं०)	४३१
सरस्वतीस्तोत्र	वृहस्पति	(स०)	४२०		सहेलीगीत	सुन्दर		(हि०)	७६४
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(स०)	४२०		साखी	कवीर		(हि०)	७२३
सरस्वतीस्तोत्र	—	(स०)	४२०, ५७५		सागरदत्तचरित्र	हीरकवि		(हि०)	२०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सामारथप्रमित	आशाधर	(स)	२१	सामुद्रिकगण	—	(हि)	७२६
सत्यस्यसमस्वाध्याय	—	(हि)	२४	सामुद्रिकमथण	—	(सं)	२६८
सामुकीधारती	हेमराज	(हि०)	७७७	सामुद्रिकविचार	—	(हि)	२६४
सामुद्रिकवर्ग	—	(मा)	२४	सामुद्रिकशास्त्र	श्री निधिसमुद्र	(स)	२२४
सामुद्रिकता	भानन्दसूरि	(हि)	६१७	सामुद्रिकशास्त्र	—	(स)	२६४ २६२
सामुद्रिकता	पुरयसागर (पुरभीहि)		४२२	सामुद्रिकशास्त्र	—	(मा)	२२४
सामुद्रिकता	वनारसीदास	(हि)	६४४	सामुद्रिकशास्त्र	—	(हि)	२६४
			६२२, ७१६ ७४६				६ १ ६२७ ७ २
सामुद्रिकता	सायिकचन्द्र	(हि)	४२२	सार्यसध्यायाठ	—	(स)	४२
सामुद्रिकता	—	(हि)	६२४	सार्यवृत्तिस त	—	(सं)	४२
सामायिकपाठ	अक्षितगति	(स)	६४ ७२७	सार्यवीवीसीमाया पारसदासनिगोत्या		(हि)	४२१
सामायिकपाठ	—	(सं)	२४	सार्यी	—	(मप)	२६४
			४२४ ४२६ ४२६ ४१	सार्यी	—	(हि)	६७२
			४६४, ४६७ १ १ ११७	सार्यग्रह	वरवराज	(सं)	१४
			६४६ ६८६ ७१६	सार्यग्रह	—	(सं०)	१ ७
सामायिकपाठ	यहमुनि	(मा)	२४	सार्यसमुच्चय	कुसुमद्व	(स०)	६७ २७६
सामायिकपाठ	—	(मा)	२४ २७८	सार्यसुतमनमंडल [चिप]	—		४२२
सामायिकपाठ	—	(म मा)	२७८	सार्यसुत वशाध्यायी	—	(सं)	२६६
सामायिकपाठ	महाचन्द्र	(हि)	४२६	सार्यसुतवीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि		२६६
सामायिकपाठ	—	(हि)	१७१	सार्यसुतव्यंशसभि	—	(सं)	२६४
			७४६ ७२४ ७४२	सार्यसुतप्रक्रिया अनुभूतिस्वरूपाचार		(स)	२६४ ७८
सामायिकपाठभाषा	अथचन्द्राचन्द्रा	(हि)	८६ २६७	सार्यसुतप्रक्रियाटीका	महीमद्व	(सं)	२६७
सामायिकपाठभाषा	विलोकचन्द्र	(हि)	६६	सार्यसुतव्यंशपूजा	—	(सं)	२१
सामायिकपाठभाषा	सुप्रमहाचन्द्र	(हि)	६२	सार्यसुतव्यंशपूजा	—	(सं)	४२२ ६६६
सामायिकपाठभाषा	—	हि ग)	६६	सार्यसुती बालुपाठ	—	(सं)	२६२
सामायिकपाठ	—	(सं)	४११ ६ ४	सार्यसुती	—	(सं)	२६४
सामायिकपाठ	—	(सं)	४११	सार्यसुततरास	—	(हि)	१७७
			२६६ ६ २ ६ ७	सार्यसुतधम्म दीहा मुनि रामसिंह		(मप)	६७
सामायिकपाठ	—	(सं)	७ १	सार्यसुतमी के मन्दिर की			
				रथयात्रा का वर्णन	—	(हि)	७१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
सासूबहूकाभगडा	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१,	६४८	सिद्धवदना	—	(स०)	४२०	
सिद्धहृत्पूजा	विश्वभूषण	(स०)	५१६		सिद्धभक्ति	—	(स०)	६२७	
सिद्धकूटमडल [चित्र)	—		५२४		सिद्धभक्ति	—	(प्रा०)	५७८	
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	४६७	५५३	सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)		
सिद्धक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३		सिद्धस्तवन	—	(सं०)	४२०	
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५		सिद्धस्तुति	—	(स०)	५७४	
सिद्धगेत्रमहात्म्यपूजा	—	(स०)	५५३		सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभसूरि	(स०)	२६७	
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३		सिद्धान्त अर्थसार	प० रडधू	(अप०)	४६	
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	(स०)	५१०	५१४, ५५३	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	(स०)	२६७	
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतमागर	(स०)	५५३		सिद्धान्तकौमुदी	—	(स०)	२६७	
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	भानुकीर्त्ति	(स०)	५५३		सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(स०)	२६८	
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	शुभचन्द्र	(स०)	५५३		सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(स०)	२६८	
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	—	(स०)	५५४		सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोकेशकर	(स०)	२६६	
सिद्धचक्रपूजा	—	(स०)	५१४		सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(स०)	२६६	
			५५४, ६३८, ६५८, ७३५		सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगणि	(स०)	२६६	
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	सतलाल	(हि०)	५५३		सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	वामदेव	(स०)	३०३	
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३		सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(प्रा०)	६८	
सिद्धपूजा	आशाधर	(स०)	५५४	७१६	सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुसूदन सरस्वती	(स०)	२७०	
सिद्धपूजा	पद्मनदि	(स०)	५३७		सिद्धान्तमंजरी	—	(स०)	१३८	
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(स०)	५५४		सिद्धान्तमजूषिका	नागेशभट्ट	(स०)	२७०	
सिद्धपूजा	—	(स०)	४१५		सिद्धान्तमुक्तावली	पचानन भट्टाचार्य	(स०)	२७०	
			५५४, ५७४, ५६४, ६०५		सिद्धान्तमुक्तावली	—	(स०)	२७०	
			६०७, ६४६, ६५१, ६७०		सिद्धान्तमुक्तावलीटीका	महादेवभट्ट	(स०)	१४०	
			६७६, ६७८, ७०४, ७३१		सिद्धान्तलेश सग्रह	—	(हि०)	४६	
			७४५, ७६३		सिद्धान्तसारदीपक	मङ्गलकीर्त्ति	(स०)	४६	
सिद्धपूजा	—	(स० हि०)	५६६		सिद्धान्तसारदीपक	—	(स०)	१७	
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६		सिद्धान्तसारभाषा	नथमलधिलाला	(हि०)	४७	
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५५५		सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४६	
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७७		सिद्धान्तसार सग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(स०)	४७	

ग्रन्थनाम	रङ्गक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	रङ्गक	भाषा	पृष्ठ	सं०
सिद्धिप्रियस्ताव	दशनाद	(१)	४	१	सामन्थरवाधीपूजा	—	(सं०)	१११	१११
	४२१	४२२	४	२	४२१	४२२	४	२	४२१
	४२२	४७२	४७४	४७	४२१	४७२	४७४	४७	४२१
	४२७	६	५	१५	६१३				
				३७	७	१			
सिद्धिप्रियस्तौत्रभाषा	—	(सं०)	४२१		सुगुमासपरिच	म० मकलकीर्ति	(सं०)	२	९
सिद्धिप्रियस्तौत्रभाषा	नरमल	(हि०)	४२१		सुगुमासपरिच	भीधर	(सं०)	२	९
सिद्धिप्रियस्तौत्रभाषा	पद्माज्ञानचौधरी	(हि०)	४२१		सुगुमासपरिच	नाथूलादासी	(हि०)	२	७
सिद्धियाग	—	(सं०)	३	७	सुगुमासपरिच	हरचंद्र गंगवाल	(हि०)	२	७
सिद्धिवास्तवरूप	—	(हि०)	१७		सुगुमासपरिच	—	(हि०)	२	७
सिद्धूर करण	सामप्रभाचार्य	(सं०)	३४		सुगुमासमुनिता	—	(हि०)	२	७
सिद्धूरप्रकरणभाषा	वनारसीदाम	(हि०)	२२४		सुगुमासस्वामीरा	म० जिनदास	(हि०-गुज०)	२	६
	३४	२६१, २६५, ७१	७१२		मुक्तपदी	धनराज	(हि०)	१	२३
		७४६	७५५, ७६२		मुक्तपदी	हृदकीर्ति	(हि०)	७	४९
					मुक्तनियान	कवि जगन्नाथ	(सं०)	२	७
सिद्धूरप्रकरणभाषा	दुन्दरदास	(हि०)	३४		मुक्तसपतिपूजा	—	(सं०)	४	१७
सिद्धिरामपरिच	पं० नरसेन	(सं०)	२	५	मुक्तसपतिविधानकथा	—	(सं०)	२	४६
सिद्धिसमग्रविधान	केसकरमुनि	(सं०)	२२३		मुक्तसपतिविधानकथा	विमलकीर्ति	(सं०)	२	४३
सिद्धिसमग्रविधान	—	(सं०)	२२३		मुक्तसपतिप्रठपूजा	अक्षयराम	(सं०)	३	३३
सिद्धिसनचौडी	—	(सं०)	२२३		मुक्तसपतिप्रठोपासनपूजा	—	(सं०)	३	१५
सीतासती	—	(हि०)	६८		सुगन्धरसमीकथा	लक्ष्मिकीर्ति	(सं०)	१	४३
सीतापरिच	कविरामचन्द्र (वाञ्छक)	(हि०)	२	६	सुगन्धरसमीकथा	भूतसागर	(सं०)	३	१४
			७२२	७२३	सुगन्धरसमीकथा	—	(सं०)	२	३४
					सुगन्धरसमीकथा	—	(सं०)	१	३२
सीतापरिच	—	(हि०)	२११		सुगन्धरसमीकथा [सुगन्धरसमीकथा]				
सीताकाव्य	—	(हि०)	४२२			हेमराज	(हि०)	२	३४, ७६६
सीतालीला काव्यभाषा	—	(हि०)	७२७		सुगन्धरसमीकथा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	३	११
सीतालीलीकवितर्का	—	(हि०)	१४८	१८३	सुगन्धरसमीकथा [विचित्र]	—			३२३
सीतालीलीसंस्कृत	—	(हि०)	११८		सुगन्धरसमीकथा	—	(सं०)	२	४२
सीतापरिच	—	(हि०)	६४४		सुगन्धरसमीकथा	—	(सं०)	१	६
सीतापरिच	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८		सुगन्धरसमीकथा	सुरालचन्द्र	(हि०)	३	१६

← ग्रंथ एवं ग्रंथकार →

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	ऋणसवधकथा	२१८	देवसेन—	आराधनासार	४९
अभयदेवसूरि—	जयतिहुवरास्तोत्र	७५४		५७२, ५७३, ६२८, ६३५, ७०९, ७३७, ७४४	
अल्लू—	प्राकृतछंदकोष	३११		तत्त्वसार	२०, ५७५
इन्द्रनदि—	छेदपिण्ड	५७		६३७, ७३७, ७४४, ७४७	
	प्रायश्चित्तविधि	७४		दर्शनसार	१३३
कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३		नयचक्र	१३४
कु दकुदाचार्य—	अष्टपाहुड	६६		भावसंग्रह	७७
	पचास्तिकाय	४०	देवेन्द्रसूरे—	कर्मस्तवसूत्र	५
	प्रवचनसार	११२	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रवच	३६६
	नियमसार	३८	धर्मदासगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
	बोधप्रामृत	११५	नन्दिषेण—	अजितशास्तिस्तवन	३७६
	यतिभावनाष्टक	५७३	भडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	
	रयणसार	८४		रत्नमाला	५१
	लिंगपाहुड	११७	नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिभगी	२
	षट्पाहुड	११७, ७४८		कर्मप्रकृति	३
	समयसार	११६, ५७४, ७३७, ७६२		गोम्मटसारकर्मकाण्ड	५२
				गोम्मटसारजीवकाण्ड	६, १६, ७२०
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	१४		चतुरविंशतिस्थानक	१८
	सबोधपचासिका	११६, १२८		जीवत्रिचार	७३२
जिनभद्रगणि	अर्थदिपिका	१		त्रिभगीसार	३१
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७		द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५, ६२८, ७४४
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१			
	जीवत्रिचार	६१६			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	मिस्तोबशाह	३०		अपभ्रंश भाषा	
	त्रिप्राणभारमदृष्टि	३२२	शमरकीर्ति—	पटवर्मापरेषरत्नमाला	८८
	पञ्चदश	३८	शुभभदास—	एनत्रपञ्चमाला	१३७
	भाषाविभगा	४२	कनककीर्ति—	मन्मोहकवचमाला	११६
	मन्त्रिभार	४३	मुनिफनकामर—	कवचकुचरत्न	१६१
	विमोदगताभिनयी	४३	मुनिगुणभद्र—	बदमदारुणकथा	१३१
	सत्ताविषयी	४५		राहित्यीविधान	१२६
पद्मनदि—	द्वयमन्त्रकमुनि	३८१	अयमिन्द्रक—	कवचमानकथा	१६१
	विनवरत्नक	३६	कन्दक—	हादिसामुद्रका	१२८
	पञ्चुडीकप्रज्ञाति	३१६	ज्ञानपद्—	योगचर्चा	१२८
मुनि—सिद्ध—	दातमार	१५	तजपाल—	शमभक्तिगणहृषिकि	२४
मन्पाद्—	काम्युक्त	१७	द्वयनदि—	रोहित्यीकरि	२४३
मावशर्मा—	दत्तदासकवचमाला	४८१	धवल—	रोहित्यीविधानकथा	२४३
मुनिपद्मसूरि—	पनभक्तिमत्तरी	८५	नरमन—	हृषिकेशपुराण	१५७
मुनी—कीर्ति—	पनभक्तिगुणीयता	२१४		विनरतिविधानकथा	१२८
रत्नशररसूरि—	प्रभुगणेशयोग	३११	गुरुरसूक्त—	मत्स्यामकरि	२५
सरमाचन्द्र—	राज	२७६		वर्षिपुत्र	१४३ १४२
सरमीसन—	राजमन्त्र	७८६	मन्मन्दि—	महापुराण	१५३
बसुमन्दि—	बसुमन्त्रधारदाधार	८२	वर्णमन्दि—	योगपरपरि	१८८
विद्यामन्दि—	वर्णहरण	१८१	वर्णकीर्ति—	विनरत्रिगुणकर्मिणी	१८६
विद्याप—	वन्दनीयदासना	७६		कवचमन्त्रि	१६६
वीर्य—	प्रहृष्टकमाणा	२१२	वन्दरी	१४३	
पुत्रमुनि—	भारतक	७८	पाञ्चपुराण	१५०	
मन्मन्त्र—	कवचक	३८३	हृषिकेशपुराण	१५७	
विद्वान्मन्त्र—	दत्तकवचक	२	परमात्मवशात	१११	
गुरुरसूरि—	कवचक	१२३		१७५ ११३ ७७ ७४३	
वर्षिग—	कवचक	१२३		दातमार ११६ ७८६ ७१६	
शर १८८३—	कवचक	१२३	वर्णमन्त्र—	१४३ १४३ १४३	
		१२३			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्व्वनाथचरित्र	१७९			
	वीरचरित्र	६४२			
	षोडशकारण जयमाल	५१७, ५४२			
	खबोधपचासिका	१२८			
	सिद्धान्तार्थसार	४६			
' रामसिंह—	सावयधम्म दोहा (श्रावकाचार)	६७ ६४१, ७४८			
	दोहापाहुड	६०			
रूपचन्द्र—	रागआसावरी	६४१			
लक्ष्मण—	रोमिणाहचरिउ	१७१			
लक्ष्मीचन्द्र—	आध्यात्मिकगाथा	१०३			
	उपासकाचार दोहा	५२			
	चूनडी	६२८, ६४१			
	कल्याणकविधि	६४१			
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२४५, ६२८			
	निर्भर चमोविधानकथा	२४५, ६२८			
विजयसिंह—	अजितनाथपुराण	१४२			
विमलकीर्त्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२			
सह्यापाल—	पदडी (कौमुदीमध्यात्)	६४१			
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२			
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२			
महाकविस्वचभू—	रिट्टरोमिचरिउ	१५७, ६४२			
	श्रुतपचमीकथा	६४२			
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५			
श्रीधर—	सुकुमालचरिउ	२०६			
हरिश्चन्द्र—	अणस्तमितिसाधि	२४३, ६२८, ६४३			
			संस्कृत भाषा		
			अकलकदेव—	अकलकाष्टक	५७५ ६३७ ६४९, ७१२
				तत्त्वार्थराजवार्त्तिक	३२
				न्यायकुमुदचन्द्रोदय	१३४
				प्रायश्चित्तसग्रह	७४
			अक्षयराम—	रागोकारपैतीसी पूजा	८८२, ५१७
				प्रतिमासान्त चतुर्दशी	
				व्रतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
				सुखसपत्तिव्रत पूजा	५५५
				सौख्यकाल्य व्रतोद्यापन	५१६, ५५६
			ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
			अजितप्रभसूरि—	शान्तिनाथचरित्र	१९८
			अनन्तकीर्त्ति—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापन पूजा	४९४
				पत्नविधान पूजा	५०७
			अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाला	१३८
			अन्नभट्ट—	तर्कसग्रह	१३२
			अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	६२५ २६६, ७८०
				नयुसारस्वत	२६३
			अपराजितसूरि	भगवतीआराधनाटिका	७६
			अप्यदीक्षित—	कुवलयानन्द	३०८
			अभयचन्द्रगणि—	पचनप्रवृत्ति	३९
			अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७९३
			अभयनदि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२९०
			अभयनन्दि—	त्रिनोदना पूजा	८८५

प्रथमकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयसाम— प० अग्रदेव—	दशसंक्षेप पूजा	४८६	अमालिकचन्द्र— अमृतचन्द्र— अरुणभरिणी— अर्हदेव— अराग— आग्नेयशक्ति— आनन्द— आशा— आशापर—	रघुनाथप्रभाव	१७४
	सप्तश्लोकविधि	५३३		तरुणसारा	२२
	विष्णुचरित	११६		पंचास्तिवापटीका	४१
	निकासबोधासीकथा	२२६		परमार्थप्रकाश टीका	११
	(रोटीयकथा)	२४२		प्रबन्धसारा टीका	११२
	ब्रह्मसंक्षेप पूजा	४८८		पुरुषार्थचिन्तापुपाय	१८
	ज्ञानसंग्रहकथा	२२८ २४६		समयसारकथा	१२
	ज्ञानसंग्रह पूजा	४९		समयसार टीका	१२१
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४			७३३, ७९४
	सन्धिबिधानकथा	२३९		अक्षयपुराण	१४२
	सन्धिबिधान पूजा	२१७		पंचकन्यास्तोत्र पूजा	५
	शबरावधौकथा	२४३		शास्त्रिकविधि	२४४
सुतस्पर्धविधानकथा	२४५	शास्त्रिकपुराण	१३३		
सोडसकारणकथा	२४२	शास्त्रिकवैतक	२९६		
	२४३ २४७	शास्त्रिककथा	२३५		
अमरकीर्ति—	विजयसहस्रनामटीका	१९३	शोभागिरि पूजा	२३३	
	महावीरस्तोत्र	७५२	प्रकृतारोपणविधि	४३३	
	समवाहकस्तोत्र	४१३ ४२६		५१७	
अमरसिंह—	अमरकोश	२७२	धनधारणमामृत	४८	
	निकाससेपसुत्री	२७४	भारतभामिशास्त्रविधि	५४	
अमरिणरति—	अमररीसा	१३६	इष्टोपदेशटीका	३८	
	पंचसंग्रह टीका	१९	कन्याणमविरस्तोत्रटीका	३८३	
	मानसशास्त्रिका	२७३	कन्याणमाला	२७३	
	(सामायिक पाठ)	३७	कन्याशक्तिवैक	४६७	
	भावनाचार	९	कन्याशोपकविधि	४६६	
	सुभाषितरत्नसम्बोध	३४१	गणभरणसम्पूजा	७९१	
			कन्याशास्त्रिका	४७७	
अमोघवर्ष—	अमोघवर्षभाष्यकाचार	१४	विजयसहस्र		
	प्रयोगरत्नमाला	२७३	(प्रतिष्ठापाठ)	५२१	
				४७८ १ ८ ६१६	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६१,		६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०,	
		५४०, ५६६, ५६६, ६०५,		६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०४,	
		६०७, ६३६, ६४६, ६५५,		७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८	
		६८३, ६८६, ६९२, ७१२,		पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
		७१५, ७२०, ७४०, ७५२		पूजाप्रकरण	५१२
	धर्माभृतसूक्तिसंग्रह	६३		श्रावकाचार	६०
	ध्वजारोपणविधि	४६२	भ० एकसंधि—	प्रायश्चित्तविधि	७४
	त्रिषष्टिस्मृति	१४६	कनककीर्त्ति—	णमोकारपैत्तीसीव्रत	
	देवशास्त्रगुरुपूजा	७६१	कनककुशल—	विधान	४८२, ५१७
	भूपालचतुर्विंशतिका		कनकनदि—	देवागमस्तोत्रवृत्ति	३६६
	टीका	४११	कनकसागर—	गोम्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
	रत्नत्रयपूजा	५२६	कमलप्रभाचार्य—	कुमारसंभवटीका	१६२
	श्रावकाचार		कमलविजयगणि—	जिनपंजरस्तोत्र	३६०,
	(सागारधर्माभृत)	६३५		४३०, ६४६	
	शांतिहोमविधान	५४५		चतुर्विंशति तीर्थंकर	
	सरस्वतीस्तुति	६४७,		स्तोत्र	३८८
		६५८, ७६१	कालिदास—	कुमारसंभव	१६२
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६		ऋतुसंहार	१६१
	स्तवन	६६१		मेघदूत	१८७
इन्द्रनंदि—	अंकुरारोपणविधि	४५३		रघुवश	१६३
	देवपूजा	४६०		वृतरत्नाकर	३१४
	नीतसार	३२६		श्रुतबोध	६४४
			कालिदास—	शाकुन्तल	३१६
उज्जवलदन्त (सग्रहकर्त्ता)—	उणादिसूत्रसंग्रह	२५७		नलोदयकाव्य	१७५
	तत्त्वार्थसूत्र	२३, ४२५		शृ गारतिलक	३५६
उमास्वामि—			काशीनाथ—	ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका	२८३
				शीघ्रबोध	२६२, ६०३
	४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६६,		काशीराज—	अजीर्णमजरी	२६६
	५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१,		कुमुदचन्द्र—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	३८४
	६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६			४२५, ४२७, ४३०, ४३१,	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	१११	१७२	१७१	१११	१७
				७२४	७१७
कुञ्जभद्र—	सारसमुच्चय	१७	१७४		
महेश्वर—	कुत्तरत्नकर		११४		
केशव—	वातकण्ठदति		२७१		
	ज्योतिषमण्डिता		२५२		
केशवमिश्र—	तकनाया		१३२		
केशवधर—	योन्मटसारवृत्ति		१	गुरुकीर्ति—	
	प्राक्सिद्धप्रत्यूजा		४११	गुरुचन्द्र—	
केशवसेन—	रत्नचन्द्रिका		१२९		
	रोहिणीप्रत्यूजा		११३		
			१३२		
	पाञ्चिकाखण्डप्रत्यूजा		१४२	गुरुचन्द्रदेव—	
			१७१	गुरुनंदि—	
कैयट—	नाम्नप्रदीप		२१२		
कौशिकमह—	बैष्णवकण्ठसूत्रण		२१३		
म० इत्यादास	मुनिमुद्रतपुराण		१२३		
	विमलनाभपुराण		१४४		
कृष्णरामा—	मानवीयिक		११५	गुरुसद्व—	
कपराज—	एकाक्षरकोश		२७४		
केशवकरमुनि—	सिद्धासनइतिशिक्षा		२१३	गुरुभद्राशास—	
केशवमुनि—	चक्रवर्तिकावलिप्रत्यूजा		४१५		
केशव—	सम्पत्कवीमुनीकथा		२३१		
गंगादास—	पंचसौख्यप्रत्यूजा		१		
	पुष्पाञ्जलिबटीघापत्र		१		
			१११		
	बसंत		१३२		
	सम्प्रेषितसारप्रत्यूजा		१४९	गुरुभूषणार्य—	
			७२७		
				गणपति—	रत्नबीजक
				गणितरत्नसूरि—	पद्मवर्धनसमुच्चयवृत्ति
				गणेश—	ब्रह्मनाम
					पंचामसाधन
					गर्गसंहिता
					पाश्चात्यकाली
					प्रणमनीयता
					शकुनावली
					पञ्चकल्याणकप्रत्यूजा
					घनस्तवटीघापत्र
					११३
					१३९
					महात्तिकान्तकथा
					घण्ट
					२११
					धर्मसर्वरसकाव्य
					श्यामकलपुत्राविधान
					४१३
					१३९
					चंद्रप्रमदकाम्यपंचिका
					११५
					त्रिकालनीवीवीकथा
					१२२
					सम्पत्कवीस्तोत्र
					४१९
					श्रीविनायकस्तोत्र
					११४
					७२२
					घनस्तनामपुराण
					१४२
					घरनामुद्राघन
					१
					ज्वालपुराण
					१४४
					विमलतारिका
					११९
					बन्धुमाराविका
					१७१
					नीतिप्रत्यूजा
					२३१
					वर्द्धनामस्तोत्र
					४१३
					मानकाचार
					९

ग्रन्थ एवं ग्रंथकार]

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूरि—	तर्करहस्यदीपिका	१३२	चिंतामणि—	रमलशास्त्र	२६०
गुणविनयगणि—	रघुवशटीका	१६४	चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमजरी	१३६
गुणाकरसूरि—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा		चोखचन्द्र—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
गोपालदास—	रूपमजरीनाममाला	२७६	छत्रसेन—	चदनषष्ठीव्रतकथा	६३१
गोपालभट्ट—	रसमजरीटीका	३५६	जगतकीर्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
गोबर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण—	सौंदर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थानुशासन	६६	जगन्नाथ—	गरुडपाठ	२५६
गौतमस्वामी—	ऋषिमण्डलपूजा	६०७		नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३६६
	ऋषिमण्डलस्तोत्र	३८२		सुखनिधान	२०७
	४२४, ६४६, ७३२		जतीदास—	दानकीवीनती	६४३
घटकपर्षर—	घटकपर्षरकाव्य	१६४	जयतिलक—	निजस्मृत	३८
चड कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२	जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
चन्द्राकीर्ति—	चतुर्विंशतितोत्राकाराष्टक	५६४	ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
	विमानशुद्धि	५३५	जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमजरी	१३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४६	भ० जिणचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
चन्द्रकीर्तिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६६	जिनचन्द्रसूरि—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
चाणक्य—	चाणक्यराजनीति	३२६, ६४०, ६४६, ६८३, ७१२, ७१७, ७२३, ७८७	ब्र० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७
	लघुचाणक्यराजनीति	३३६		५०१, ५३७	
		७१२, ७२०		जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
चामुण्डराय—		५५		ज्येष्ठजिनवरलाहान	७६५
	ज्वरतिमिरभास्कर	२६८		नेमिनाथपुराण	१४७
	भावनासारसग्रह	५५, ७७, ६१५		पुष्पाजलीव्रतकथा	२३४
चास्कीर्ति—	गीतवीतराग	३८६		सप्तर्षिपूजा	५४८
चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	१८६		हरिवंशपुराण	१५६
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविभ्रमसूत्राव-			सोलहकारणपूजा	७६५
	चूरि	२५७	प० जिनदास—	जलयात्राविधि	६८३
				होलीरेणुकाचरित्र	२११
				भक्तिसमजिनचैत्यालय	
				पूजा	४५३

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
चिनपमसूरि—	सिद्धहेमतवृत्ति	२१७	दामोदर—	ब्रह्मप्रमथरिज	१६५
चिनवेषसूरि—	मदननरायण	३१०		प्रसक्ति	६०५
चिनखामसूरि—	चतुर्विधतिजितस्तुति	३८७		ब्रह्मक्याजीना	२४१
चिनबद्ध नसूरि—	प्रकफालवृत्ति	३०८	देवधामसूरि—	वामननाथस्तवन	६११
चिनसेनाचार्य—	भाविपुराण	१४१ ६४६	दीक्षितदेववृत्त—	सम्प्रेरशिखरहात्म्य	६२
	प्रपमवैभस्तुति	३५१	देवनदि—	गर्भपठारण	१११ ७१७
	जिनसङ्गनामस्तोत्र	३६२		अनेकप्रव्याकरण	२३६
		४२५, ५७१ ६४७		श्रीवासुतीर्थकरस्तवन	६६
		७०७ ७४७		सिद्धिप्रियस्तोत्र	४२१
चिनसेनाचार्य—	हरिकथपुराण	१३३		४२३, ४२७ ४२६ ४३१,	
चिनसुम्भरसूरि—	हामीक्या	२३६		५७२ ५६५ ५७५, ५६७,	
म० चिनेन्द्रमूषण—	चिनेन्द्रपुराण	१४६		६५ ६६ ६११	
म० क्षामकीर्ति—	सद्योपरचरिज	१६२		(११७ ६४४	
ज्ञानभास्कर—	पाथाकेवली	२८१	देवसूरि—	धातिस्तवन	६१६
ज्ञानभूषण—	पद्मवर्द्धबोधनकाम्य	१	देवसेन—	मत्स्यपद्धति	११
	पद्मिर्मेढकपूजा	४६३ ६२६	देवदेवकीर्ति—	बाल्यपठोपनिषत्पूजा	४७१
	बौम्भटसारकर्मकण्ठटीका	१२		ब्रह्मप्रमथिनपूजा	४७४
	तत्त्वज्ञानतर्पिकली	३५		विष्णुविभोक्त्याम्	६१८ ७६६
	पञ्चस्वाणकीर्णपत्रपूजा	६६		द्वारसप्ततोषापत्रपूजा	४६१
	भक्तमङ्गलपूजा	३२		पञ्चमीव्रतपूजा	३४
	भुवपूजा	३३७		पञ्चमेरुपूजा	३१६
	सरस्वतीपूजा	३१५		प्रथिमासांतचतुर्विंशोपूजा	७६१
		३४५, ३३१		रविव्रतकथा	२३७ ३३३
	सरस्वती स्तुति	६३७		रेवतकथा	२३६
देवदहू द्विराज—	ब्रह्मकामरुण	२८२		ब्रह्मक्याजीना	२४२
त्रिसुवनचन्द्र—	विक्रमचौबीसी	४८४		सप्तशतपूजा	७६३
द्वयाचन्द्र—	तत्त्वार्थसूत्रव्याख्यापूजा		दीर्घसिंह—	कल्याणकर्ममालाटीका	२३५
		४८२	धनंजय—	द्विसंथानकाम्य	१७१
दक्षिणराय बंशीधर—	मत्स्यकारणव्याकरण	१ ५		नाममाता	२७३ ३७४

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	परमकुमार चरित्र	१७३		तिरुपूजा	१३७
	बर्मोपदेशभारतकाचार	६४		स्तोत्र	१७३
	विद्याभोजनकथा	२३१	पद्यनाम—	भाष्पती	२६
	पातकानकथा	२११	पद्यनामिकाग्रथ—	मन्त्रीभरतचरित्र	१८६
	श्रीविष्णुचरित्र	१८२	प्रद्यमभवेव—	पारवताभस्तोत्र	४३
	श्रीपामचरित्र	२०७			६१४ ७०२ ७४२
	सुबर्षतचरित्र	२०८		मरुर्मस्तोत्र	४१४ ४२१
पद्यनाम महाकाव्य—	सिद्धान्तमुक्तावली	७७		४२६ ४३२ २६६ २७२,	
पद्यनामिका—	पद्यनामिकाविद्युत्तिका	११		२७४ २६६ ६४४ ६४७	
	पद्यनामिकाभारत	६८ ६		६६३ ६६२ ७ १ ७१६	
पद्यनामिका—	पद्यनामिका	२१४	पद्यनामिका—	मुष्मन्वीपक	२७६
	कल्याणक	२७८	परमईसपरिप्रायकाव्य—	मुष्मन्मुक्तावली	२८६
	१३६ १३७ १८८			मेघदूतटीका	१८७
	इतिहासतोषागतपूजा	४६१	पाणिनी—	पाणिनीभाष्यकरल	२६१
	बलिपवास्तव	६	पौत्रकेशरी—	पत्रपरीक्षा	१३६
	भारतकाव्य	६१	पारवदेव—	पद्यनामिकाकृष्णसूक्ति	६२
	पारवताभस्तोत्र	२१६	पुरुषाचमदेव—	भक्तिपातकोष	२७१
		७४४		निकाशसौभाग्यमिमान	२७३
	पूजा	६६		हारमणि	२११
	नदीस्वरपरिपिपूजा	६३६	पूरुषपाद—	दृष्टापदेश (स्वभासस्तोत्र)	
	भारतवाचीपीपी				६३२ ६३७
	(भावनास्युक्ति) २७२	११४		परमनामस्तोत्र	२७४
	रत्नचक्रपूजा	२२२		भारतकाचार	६
		२७२ ६३६		समाधिपत्र	१२३
	नदीमौस्तोत्र	६३७		समाधिचक्र	१२७
	नीतरामस्तोत्र	४२४		सर्वापसिद्धि	४२
	४३१ २७४ ६३४ ७३१		पूरुषदेव—	स्तोत्र चरित्र	१६
	वस्त्रवतीपूजा	२२२ ७११	पूरुषाचम—	अपसर्गदृष्टोत्र	१८१

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिलाभ—	षष्ठिशतकटिप्पण	३३६
	भुवनेश्वरीस्तोत्र		भट्टशंकर—	वैद्यविनोद	३०५
	(सिद्धमहामन्त्र)	३४६	भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१	भट्टोत्पल—	लघुजातक	२६१
	आराधनासारप्रबन्ध	२१६		बृहज्जातक	२६१
	आदिपुराणटिप्पण	१४३		षट्पचासिकावृत्ति	२६२
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५	भद्रबाहु—	नवग्रहपूजाविधान	४६४
	क्रियाकलापटीका	५३		भद्रबाहुसहिता	२८५
	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		(निमित्तज्ञान)	४८०, ८००
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६		वरागचरित्र	१६५
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५		वैराग्यशतक	११७
	प्रमेयकमलमार्तण्ड	१३८		भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार- टीका	८२	भागचन्द्र—	महावीराष्टक	४१३, ४२६
	यद्योधरचरित्रटिप्पण	१६२	भानुकीर्ति—	रोहिणीव्रतकथा	२३६
	समाधिशतकटीका	१२७		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	स्वयम्भूस्तोत्रटीका	४३४	भानुजीदीक्षित—	अमरकोषटीका	२७४
भ० प्रभाचन्द्र—	कलिकुण्डपाश्चर्वाण्यपूजा	४६७	भानुदत्तमिश्र—	रसमजरी	३५६
	मुनिसुव्रतछन्द	५५७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
	सिद्धचक्रपूजा	५५३	परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारती—		
बृहमुनि—	सामायिकपाठ	६४	तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
बालचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२	भारवी—	किराताकुर्नीय	१६१
ब्रह्मदेव—	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भावशर्मा—	लघुस्तपनटीका	५३३
	परमात्मप्रकाशटीका	१११	भास्कराचार्य—	लीलावती	३६८
ब्रह्मसेन—	क्षमावराण्यपूजा	५६४	भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११
	रत्नत्रयकामहार्घ व क्षमावराण्य	७८१			४२५, ५७२, ५६५, ६०५, ६३३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पं० मंगल (समग्र कर्ता)	वर्मरत्नाकर	१२
मण्डिमद्र—	क्षेत्रपालपूजा	१८६
मदनकीर्ति—	मर्नतपठविधान	२१४
	दोडसकारणविधान	२१४
मदनपाख—	मदनविनीत	३
मानमिश्र—	भाष्यप्रकाश	२४६
मधुसूदनसरस्वती—	सिद्धास्तबिन्दु	२७
मनूसिंह—	योगचिन्तामणि	१ १
मनोहररयाम—	श्रुतबोधटीका	३१५
मस्किनारासूरि—	रघुबंधटीका	१६३
	सिमृपाम्भषटीका	१६६
मस्किमूषण—	ब्रह्मसूत्रप्रबोधोपापन	४५६
मस्किपेणसूरि—	नागकुमारचरित्र	१७५
	शैलपद्मावतीवन्द्य	३४६
	सम्बन्धितवस्त्र	३३७
		५७३
	स्यद्धर्ममंथरी	१४१
महादेव—	मुहूर्तरीपक	२६
	सिद्धन्तमुक्तावलि	१८
महासेनानाथ—	प्रद्युम्नचरित्र	१८
महीचरणकवि—	धनेकर्मपञ्चमिजरी	२७१
भ० महीचन्द्र—	त्रिलोकप्रतिभकरोच	१८२ ७१२
		१ ७
	पद्मावतीसूत्र	५६ १ ७
महीधर—	मंत्रमहोदधि	३५१, ५७७
	स्वर्गावयवविधान	४२८
महीमठ्ठी—	सारस्वतप्रक्रियाटाका	२६७
महेश्वर—	दिव्यप्रकाश	२७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
माध—	शब्द व बालुसेवप्रमेद	२७७
माधनंदि—	शिमृपालवध	१८६
	चतुर्विंशतितीर्थकर	
	अयमान	३८८ ४६६
		५७६
माधिक्यनंदि—	परीक्षासुख	१६६
माधिक्यभट्ट—	वैद्यासुव	१ ५
माधिक्यसूरि—	नलोदयकाम्य	१७४
माधबचन्द्रत्रैविद्यादेव—	त्रिलोकस्वात्कृति	३२२
	अपण्ठाधारकृति	७
माधबदेव—	स्यामसार	१३२
मातसु गाथास—	मत्तामरस्तोत्र	४ ७
	४२५, ४३६, ४३१	२६६,
	३६६, १ ३, ६ २, ६१६	
	६२८ ६३४, ६३७, ६३६	
	६४४ ६४८ ६२१, ६२२,	
	६६४ ६६६, ६७ ६८१,	
	६८२ ६६१, ७ ३ ७ ५,	
	७ ६ ७ ७ ७४१	
मुनिमद्र—	वीरिनामस्तोत्र	४१७ ७१५
प० मेधावी—	घट्टामोपस्थान	२१५
	धर्मसंग्रहभाष्यकार	६२
भ मेरूचन्द—	धनन्तबालुवतीपूजा	६ ७
मोहन—	कमण्डविधान	४६६
भरा कीर्ति—	घट्टाङ्गकाव्या	६४५
	धमधर्माम्बुदयटीका	१७४
	प्रबोधसार	३३१
यशानन्दि—	वर्मचक्रपूजा	४६१ ५१५
	पंचपरपेठ्ठीपूजाविधि	५ २
		५ ६ २१५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
यशोविजय—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	६५८	राजमल्ल—	अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड	१२६
योगदेव—	तत्त्वार्थवृत्ति	२२		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
रघुनाथ—	तार्किकशिरमणि	१३३		लाटीसहिता	८४
	रघुनाथविलास	३१२	राजशेखर—	कपूररमंजरी	३१६
साधुरणमल्ल—	धर्मचक्रपूजा	४६२	राजसिंह—	पार्वर्ममहिम्नस्तोत्र	४०६
रत्नशेखरसूरि—	छन्दकोश	३०६	राजसेन—	पार्वनाथस्तोत्र	५६६, ७३७
रत्नकीर्त्ति—	रत्नत्रयविधानकथा	२४२	राजहंसोपाध्याय—	पठ्याधिकशतकटीका	४४
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३०	मुमुक्षुरामचन्द्र—	पुण्याश्रवकथाकोष	२३३
रत्नचन्द्र—	जिनगुणसप्तपत्तिपूजा	४७७, ५१०	रामचन्द्राश्रम—	सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
	पंचमेरुपूजा	५०५	रामवाजपेय—	समरसार	२६४
	पुष्पाजलिभ्रतपूजा	५०८	रायमल्ल—	त्रैलोक्यमोहनकवच	६६०
	सुभौमचरित्र		रुद्रभट्ट—	वैद्यजीवनटीका	३०४
	(भौमचरित्र) १८५, २०६			शृङ्गारतिलक	३५६
रत्ननदि—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६२	रोमकाचार्य—	जन्मप्रदीप	२८१
	पल्यविधानपूजा	५०६, ५०६, ५१६	लकानाथ—	अर्थप्रकाश	२६६
	भद्रबाहुचरित्र	१८३	लक्ष्मण (अमरसिंहात्सज)—		
	महीपालचरित्र	१८६		लक्ष्मणोत्सव	३०३
रत्नपाल—	सोलहकारणकथा	६६५	लक्ष्मीनाथ—	पिगलप्रदीप	३११
रत्नभूषण—	सिद्धपूजा	५५४	लक्ष्मीसेन—	अभिषेकविधि	४५८
रत्नशेखर—	गुणस्थान क्रमारोहसूत्र	८		कर्मचूरद्वतोद्यापनपूजा	४६४, ५१७
	समवसरणपूजा	५३७		चिन्तामणि पार्वनाथ	
रत्नप्रभसूरि—	प्रमाणनयतध्वावल्लोका—			पूजा एव स्तोत्र	४२३
	लकार टीका	१३७		चिन्तामणिस्तवन	७६१
रत्नाकर—	आत्मनिदास्तवन	३८०		सप्तपिपूजा	५४८
रविपेणाचार्य—	पद्मपुराण	१४८	लघुकवि—	सरस्वतीस्तवन	४१६
राजकीर्त्ति—	प्रतिष्ठादर्श	५२०	ललितकीर्त्ति—	अक्षयदशमीकथा	६६५
	षोडशकारणप्रतीद्यापन			अनंतव्रतकथा	६४५, ६६५
	पूजा	५४३			

ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	प्राकाशसर्पचामीक्या	१४२	पराहमिहर—	पट्टपाशिका	२१२
	कञ्जिकण्ठोद्यापनपूजा	४१८	भ० बद्धमानक्ष—	करांगचरित्र	११४
	चौसठशिवकुमारका		बद्धमानसूरि—	सम्पदास्त्र	२११
	काबी की पूजा	२१४	बन्साक्ष—	भोजप्रबन्ध	१८२
	भिनचरित्रक्या	१४२	बसुनम्बि—	देवाममस्तोत्रटीका	३१२
	बसमसाखीक्या	११२		प्रतिष्ठापाठ	२२१
	पत्न्यविद्यापनपूजा	२ १		प्रविष्टास्त्रार्थग्रह	२२२
	पुण्याभिनयठक्या	११२		भुसाबास्टीका	७१
		७१४	वाग्महृ—	मैमिगिर्वाण	१७७
	रत्नप्रमत्तक्या १४२	११२		वाग्महृसंवार	३१२
	रोहिणीव्रतक्या	१४२	वादिचन्द्रसूरि—	कर्मबहुलपूजा	२१
	चोडशाकारणक्या	१४२		शामसूर्योदयमाटक	३११
	समकसरयूपुजा	२४१		पवनदूतकल्प	१७५
	सुसंभरसमीक्या	१४२	बादिराज—	एकीभावस्तोत्र	३८२
श्रीकसेन—	बसलसंस्कृत्या	२२७		४२३ ४२७ ४७२ २७४	
श्रीकेराकर—	सिद्धाष्टचक्रिकाटीका	२११		२१२ १ २ १३३ १३७	
श्रीकिम्बराज—	बैद्यजीवन	७१२		१४४ १४१, १४२ १४७,	
श्रीगोविन्दास्त्र—	पूर्वमीमांसाधर्मप्रकरण			७२१	
	सप्रह	१३७		गुणष्टिक	१२७
श्रीकिम्बराज—	बैद्यजीवन	१ १		पार्श्वनाथचरित्र	१७८
बनमाखीमह—	बक्तिरत्नाकर	८		यद्योदरचरित्र	११
बरबराज—	लघुसिद्धाष्टधोपुरी	२११	बादीभसिंह—	क्षेत्रपूजामणि	११२
	सारसप्रह	१४		पंचकस्याणकपूजा	२
बरहृषि—	एकासरीकोष	२७	बासदेव—	भिमोक्षीपक	३२
	बोमघठ	१ २		भानसंघ	७८
	बन्धकपिण्डी	२१४		सिद्धाष्टविभोक्षीपक	३२३
	भुतबोध	३१५	बासबसेन—	यद्योदरचरित्र	११
	सर्वाभिसाधनी	२७८	बाह्यवास—	सधियाठनिदान	१ १

ग्रन्थ एव ग्रंथकार]

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्ति—	चन्दनषष्ठिकृतपूजा	५०६		तेरहद्वीपपूजा	४८४
श्री० विद्यानन्दि—	भ्रष्टसहस्री	१२६, १३०		पद	५६१
	ग्रासपरीक्षा	१२६		पूजाष्टक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१३६		मागीतु गीगिरिमडल	
	पचनमस्कारस्तोत्र	४०१		पूजा	५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाणमीमासा	१३८		शत्रुञ्जयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६		सर्वाधिपूजा	५४८
	श्लोकवार्तिक	४४		सिद्धकूटपूजा	५१६
मुमुक्षुविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
उपाध्यायविद्यापति—	चिकित्साजनम्	२६८		षण्णवतिक्षेत्रपालपूजा	५१६
विद्याभूषणसूरि—	चितामणिपूजा (बृहद्)	४७५		षण्णवतिक्षेत्रपूजा	५४१
विनयचन्द्रसूरी—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरणस्तोत्र	४१६
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्विंशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
विनयचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१७२	विष्णुशर्मा—	पचतन्त्र	३३०
	भूपालचतुर्विंशतिका			पचाख्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४५
विनयरत्न—	विदग्धमुखमडनटीका	१६७	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
विमलकीर्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	ग्राचारसार	४८
	सुखसंपत्तिविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभचरित्र	१६४
विवेकनदि—	त्रिमगीसारटीका	३२	वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित्त	८६
विश्वकीर्ति—	भक्तामरद्वैतोद्यापनपूजा	५२३	तुपाचार्य—	उससर्गार्थविवरण	५२
विश्वभूषण—	भ्रष्टाईद्वीपपूजा	४४५	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	भ्राठकोटयुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति—	प्रबोधचन्द्रिका	३१७
	इन्द्रवज्रपूजा	४६२	वृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	फलशविधि	४६६	शंकरभगति—	बालवीधिनो	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शंकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन	
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६		विविधया	२४७

प्रश्नकार का नाम	प्रश्न नाम	प्रश्न सूची की पत्र सं०	प्रश्नकार का नाम	प्रश्न नाम	प्रश्न सूची की पत्र सं०
	आकाशपंचमीकथा	१४५	वराहमिहिर—	पटपचासिका	२१२
	कविकामलोद्यापनपूजा	४१८	म० बदरमानदेव—	बरायचरित्र	११४
	शौचविधिबकुमारिका		बदरमानसूरि—	संगरात्म	२११
	कनोकी की पूजा	५१४	बस्त्राक्ष—	भोजप्रबन्ध	१८५
	विमचरित्रकथा	१४३	बसुनसिंह—	देवाममस्तोत्रकीका	११५
	बरायसखीकथा	११३		प्रतिष्ठापाठ	३२१
	पत्यविद्यानपूजा	५ १		प्रतिष्ठासारसंग्रह	५२२
	पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	११५		शुभाचारटीका	७१
		७१४	बागमह—	मेमिनिर्वाण	१७७
	रत्नपत्रकथा	१४२		बागमहार्त्तकार	३१२
	रोहणीव्रतकथा	१४३	पादिचन्द्रसूरि—	कर्मब्रह्मपूजा	५१
	वोडसकारणकथा	१४३		ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१६
	समवसरणपूजा	५४१		पंचमसूत्रकल्प	१७८
	सुर्गभरसमीकथा	१४३	बादिराज—	एकीभावस्तोत्र	१८२
आकसेन—	बरायदणकथा	२२७		४२५, ४२७ ५७२ ३७४	
शोकेराज—	सिद्धास्तचन्द्रिकाटीका	२११		५१५ १ ५ ११३ ११७	
शोक्तिम्बराज—	बैद्यजीवन	७१५		१४४ १५१, १५२ १२७,	
शोभाप्रभास्कर—	पूर्वमीमांसार्थप्रकरण				७२१
	सप्तह	११७		प्रुर्वाष्टक	१५७
शोक्तिम्बराज—	बैद्यजीवन	३ ३		पार्श्वनाथचरित्र	१७८
शनमास्तीमह—	मन्दिरस्नाकर	८		यसोपरचरित्र	११
बरदराज—	सप्तसिद्धास्तकीमुनी	२१३	बादीभसिंह—	राजभूषणमण्डि	११२
	सारसप्तह	१४		पंचकस्यामणकपूजा	५
बरहुषि—	एनासरीकोश	२७	बामदेव—	त्रिलोकवीपक	३२
	भोगसप्त	३ २		भाबर्षसप्तह	७८
	शब्दकविटी	११४		सिद्धास्तचित्तोफनीपक	३२३
	भुतबीष	३१५	बासभसेन—	यसोपरचरित्र	११
	सर्वापगापनी	२७८	बाइबदास—	सविनातनिधान	३ १

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्ति—	चन्दनषष्ठिन्नतपूजा	५०६		तेरहद्वीपपूजा	४८४
आ० विद्वानन्दि—	भ्रष्टसहस्री	१२६, १३०		पद	५६१
	आप्तपरीक्षा	१२६		पूजाष्टक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१३६		मागीतु गीगिरिमडल	
	पचनमस्कारस्तोत्र	४०१		पूजा	५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाणमीमासा	१३८		शत्रुञ्जयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६		सप्तविपूजा	५४८
	श्लोकवार्तिक	४४		सिद्धकूटपूजा	५१६
मुमुक्षुविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
उपाध्यायविद्यापति—	चिकित्साजनम्	२६८		परावतिकक्षेत्रपालपूजा	५१६
विद्याभूषणसूरि—	चितामणिपूजा (बृहद्)	४७५		परावतिकक्षेत्रपूजा	५४१
विनयचन्द्रसूरी—	गर्जासिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरणस्तोत्र	४१६
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्दशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
विनयचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१७२	यिष्णुशर्मा—	पचतन्त्र	३३०
	भूपालचतुर्विंशतिका			पचाख्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४५
विनयरत्न—	विदग्धमुखमडनटीका	१६७	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
विमलकीर्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	आचारसार	४८
	सुखसपत्तिविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभचरित्र	१६४
विवेकनदि—	त्रिभंगीसारटीका	३२	वीरसेन—	ध्रावकप्रायश्चित्त	८६
विश्वकीर्ति—	भक्तामरन्नतोयापनपूजा	५२३	बुपाचार्य—	उससगार्यविवरण	५२
विश्वभूषण—	ग्रढाईद्वीपपूजा	४४५	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	प्राठकोठमुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति—	प्रबोधचन्द्रिका	३१७
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२	बृहस्पति—	सरम्बतीस्तोत्र	४००
	कलशविधि	४६६	शकरभगति—	चालबोधिनो	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शकरभट्ट—	दिवरात्रिद्विप्रापन	
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६		विधिवया	२८७

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पद्य सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पद्य सं०
शकराचार्य—	प्रागन्धसहरी	६८		मणुपरबनपूजा	१६
	धनरायसूदनरतोष	६९२		बन्धनपट्टिप्रतपूजा	४७१
	मोविन्दपट्टक	७११		बन्धनाचरित्र	१९४
	जगन्नाथपट्टक	३८९		पतुविद्यतिविमापट्टक	२७८
	बधायामूर्तिस्तोत्र	६९		पञ्चमभरित्र	१९२
	हरिनाममाला	३९७		चारित्र्यमुद्रिविधान	४७२
शशुसाधु—	विनयातटीक्य	३६		विद्यतामणिवार्षनाथ	
शमूराभ—	भैमिनापभूजापट्टक	४९६		पूजा	६४२
शाकट्यायन—	शाकट्यायनव्याकरण	२६२		श्रीकण्ठचरित्र	१७०
शक्तिदास—	धर्मतत्त्वतुर्बसीपूजा	४२६		तत्त्ववर्णन	२
	शुकस्तवन	६२७		तीसवींसीसीपूजा	२३७
शम्भु धर—	रघुसंज्ञरी	३२		तेरहवींपूजा	४८३
	शाङ्गभरमहिता	३२		पंचवन्ध्यापूजा	२२
प० शास्त्री—	भैमिनाचरित्र	३९९	७२७	पंचपरमेष्ठीपूजा	२२
शास्त्रिनाथ—	रसमञ्जरी	३२		पञ्चमतोषासन	५७ २३८
श्या० शिवकाटि—	रत्नमाला	८३		पांडवपुराण	१३
शिवजीवालय—	अभिधानसार	२७२		पुण्यांजलिप्रतपूजा	२८
	पञ्चकस्याणकपूजा	४८९		श्रेणिकचरित्र	२३
	रत्नचन्द्रशुभाशुभा	२३७		सज्जनचित्तवस्त्रमम	३३७
	पौंडरीकारणमावनाशुति	८८		साष्टद्वयवीपपूजा	
शिवबर्मा—	काव्यव्याकरण	२२९		(मठाईंसीपूजा)	४२५
शिवदित्य—	अतपवार्त्ता	१४		सुभाचिंतार्त्ता	३६१
शुभचन्द्राचार्य—	ज्ञानार्त्ता	१६		चिद्यचक्रपूजा	२२३
शुभचन्द्र—॥	महाह्विकाकथा	२१५	शामनमुनि—	चित्तस्तुति	३९१
	करकण्ठचरित्र	१९१	श्रीचन्द्रमुनि—	पुराणसार	१२१
	कर्मचक्रपूजा	४६३, २३७	श्रीधर—	अविष्णुवत्तचरित्र	१८४
		६४२		सुममालिका	२७४
	कालिकेयालुमेसाटीका	१४		शुवाचचार	३७२

ग्रंथ एव ग्रन्थकार]

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४		व्रतकथाकोष	२४१
श्रीनिधिसमुद्र—				षट्पाहुडटीका	११६
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१		श्रुतस्कंधपूजा	५४७
	ज्योतिषयटलमाला	६७२		षोडशकारणपूजा	५१०
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५		सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	चारित्रशुद्धिविधान	४७४		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	पाण्डवपुराण	१५०		सुगन्धदशमीकथ	५१४
	भक्तामरउद्यापनपूजा	५२३, ५४०	सकलकीर्ति—	अष्टागसम्यग्दर्शन	२१५
	हरीवंशपुराण	१५७		ऋषभनाथचरित्र	१६०
श्रुतकीर्ति—	पुष्पाजलीव्रतकथा	२३४		कर्मविपाकटीका	५
श्रुतसागर—	अनन्तव्रतकथा	२१४		तत्त्वार्थसारदीपक	२३
	अशोकरोहिणीकथा	२१६		द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	आकाशपचमीव्रतकथा	२१६		धन्यकुमारचरित्र	१७२
	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	२२४		परमात्मराजस्तोत्र	४०३
		५१४, ५१७		पुराणसारसंग्रह	१५१
	जिनसहस्रनामटीका	३६३		प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७			६१
	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२८		पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७		मल्लिनाथपुराण	१५२
	पत्यविधानव्रतोपाख्यान			मूलाचारप्रदीप	७६
	कथा	२३३		यशोधरचरित्र	१२८
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६		वर्द्धमानपुराण	१५३
	मेघमालाव्रतकथा	५१४		व्रतकथाकोश	२४२
	यशस्तिलकचम्यूटीका	१८७		शातिनाथचरित्र	१६८
	यशोधरचरित्र	१६२		श्रीपालचरित्र	२०१
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७		सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	रविव्रतकथा	२३७		सिद्धान्तसारदीपक	४६
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०		युदर्शनचरित्र	२०८

मंथकार एव नाम	मंथ नाम	मंथ सूची की पत्र सं०	मंथकार एव नाम	मंथ नाम	मंथ सूची की पत्र सं०
मुनिसकलकीर्ति—	गरीश्वरपूजा	७११		गमरवारमंगलहनुमिधि	
सकलपद्म—	भैरवब्रह्मा	११८		सरित	१४६
	दर्शनरघोब	१७४	सिद्धनागाजु—	बहापुत्र	२१७
राकलगुण—	उपदेशछामासा	२	सिद्धसेनविद्याकर—	त्रिमराहगनामरतोम	११२
	गोम्मटसारटीका	१		पञ्चमानशक्तिविना	४१३
रादांशगधि—	पिञ्जाम्बुमित्रकावुति	२१६	सुरवेप—	गण्यतित्त	१४
धापाथसर्मतभद्र—	मातमीमासा	१४७	यर्णीसुरसागर—	घानुपेदमहोरधि	२६७
	बिगघउकारांकार	१११	सुधारागर—	मुरतावभीपूजा	४२७
	देवागमरतोम	११४		पंचवामाणवपूजा	२०
	४२५ ३७२ ७२०			३१९ ३१७	
	मुरम्भनुद्यागम	११ ११६	सुश्रयिञ्जयगणि—	परमसतरपानकपूजा	४१९
		१४७	सुमतिफीधि—	सोत्राम्प्यवमीवधा	२३३
	रत्नकरम्भभायकावार		सुमतिप्रज्ञ—	कर्मप्रवृत्तिटीका	१
	८१, १११ ७१२		सुमतिप्रज्ञ—	कारिणयुद्धिधिमान	४७३
	गृहतरपमंभूस्तोम	१७२, १२८	सुमतिपिञ्जयगणि—	रघुवतीका	१६४
	सर्मतभद्ररतुधि	१७८	सुमतिसागर—	धैसोपमारापूजा	४८३
	रादतगामसपु	४२		बतमक्षणवपूजा	४८६
	परमवृत्त(ताम	४२३, ४११		३४०	
	३७४ ३१३ १११			बोद्धामारणपूजा	२७७
		७२०	सुरेन्द्रकीर्ति—	३३७	
जामयसुन्दरगणि—	रघुवंशटीका	११४		ममन्तबिनपूजा	४३९
	बुताप्रगाकरत्तटीका	३१४		मष्टाद्विकपूजाकथा	४९
	चंसुप्रधुम्मप्रबंध	११७		ईशरीयकविरा	३३३
रामयसुन्दरोपाध्याय—	बहायुवटीका	७		आत्मपंचबिद्यविना	
सदसकीर्ति—	नेसोमस्तारटीका	१२१		प्रतोषापन	४८१
कविसारस्यव—	धिमोन्नाफोय	२७		(घुतरवधपूजा)	३४७
सिद्धिसक—	बर्जमानविद्याकल्प	३३१		प्यंशुभिनयवपूजा	३१९
सिद्धनिर्दि—	धर्मोपदेशपीठकभाषका			पंचवस्त्रपणपूजा	४६६
				पंचमासचतुर्बतीपूजा	३४
		वार १४			३४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६		छंदोगतक	३०६
	सुखसपत्तिव्रतोद्यापन	५५५		पंचमीव्रतोद्यापन	५०४
सुरेश्वराचार्य—	पंचिकरणवाक्तिक	२६१		भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
सुयशकीर्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००		योगचिंतामणि	३०१
सुल्हण कवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४		लघुनाममाला	२७६
द्वैवज्ञ पं० सूर्य—	रामवृष्णकाव्य	१६४		लट्ठिविधानपूजा	५३३
आ० सोमकीर्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१	महाकविहरिचन्द्र—	श्रुतबोधवृत्ति	३१५
	सप्तव्यसनकथा	२५०	हरिभद्रसूरि—	धर्मशर्माभ्युदय	१७४
	समवशरणपूजा	५४६		क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त—	बडोसिद्धपूजा			योगविदुप्रकरण	११६
	(कर्मदहनपूजा)	६३६		पट्टदर्शनसमुच्चय	१३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६	हरिरामदास—	पिंगलछंदशास्त्र	३११
	नीतिवाक्यमृत	३३०	हरिपेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६
	यशस्तिलकचम्यु	१८७		कथाकोश	२१६
सोमदेव—	सूतक वर्णन		हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि	
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६		नाममाला	२७१
	सिन्दूरप्रकरण	३४०		अनेकार्थसंग्रह	२७१
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५		अन्ययोगव्यवच्छेदकट्टात्रि-	
सोमसेन—	श्रिवर्णाचार	५८		शिक्षा	५७३
	दशलक्षणजयमाल	७६५		छदानुशासनवृत्ति	३०६
	पद्मपुराण	१४८		द्विप्रयकाव्य	१७१
	मेरूपूजा	७६५		घातुपाठ	२६०
	विवाहपद्धति	५३६		नेमिनाथचरित्र	१७७
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२		योगशास्त्र	११६
हयग्रीव—	प्रश्नसार	२८८		लिंगानुशासन	२७७
हर्ष—	नैषधचरित्र	१७७		चीतरागस्तोत्र	१३६, ४१६
हर्षकल्याण—	पंचमीव्रतोद्यापन	५३६		वीरद्विंशतिका	१३८
हर्षकीर्ति—	अनेकार्थशतक	२७१		शब्दानुशासन	२६४

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	शास्त्रमुखासतकृति	२१४	भार्याद—	चतुर्विंशतितीर्थैकरस्तवन	
	हेमीम्बाकरण	२७			४३७
	हेमीम्बाकरणकृति	२७		तमाकुकीनयमाल	४३६
				पद	७७७
				कीकसार	१५१
				पद	७१
				श्रीशिवविनायकपिता	
				स्तवन	११६
				शेभिराधुनवारहमासा	६१८
				साकुर्वचना	६१७
				शास्त्रमुद्रणा	१ ६ ६६१
				पूजाष्टक	२१२
				समकित्तकाल	६२
				रसिकप्रिया	६७६ ७४१
				मुनिसुवतपुराण	१५१
				पद	४४३
				मोक्षराशि	७६७
				पद	७८६ ७६५
				शास्त्रतत्परिच	१६५
				त्रिभोजस्वरूपव्याख्या	१२२
				पाणकुमारचरित्र	१७६
				मुनाचारनावार	२१६ २३
				लक्ष्मपूजा	७६
				पद	२५३
				भाष्यमहरी—	
				कनककीर्ति—	
					७२५
				विनास्तवन	७७६
				दत्तार्चसूत्रटीका	१ ७२६
				पार्श्वनाथकीघाटटी	५६१

हिन्दी भाषा

अक्षमज्ञ—	शीलवर्तासी	७५
अक्षमराज—	श्रीरङ्गप्रस्थानवर्षा	१६
	मक्तानरभाषा	७३३
	पद	२८३, २८६
	कवित्त	७४८, ७६८
	कु रसिया	१६
	मनोरथमासा	७६४
	विपापहारस्तोत्रभाषा	४१६
	१३, १७ ७७४	६६४
	संभवनकाररास	१४७
	चारमिर्चोकीकथा	२२३
	पद	२५१ ६६७
		७२४ ३५, २५१
	विनती	७०१ ७५१
	संसत्पूजा	७५१
	हंसदिलकरास	७ ७
	पद	२८३
	सकुनापनी	२६२
	पूजाष्टक	२१२
	विजयश्रीश्रीश्रीश्री	२४
	बसणनार्वर्णनास्तवन	६११
	पद	२८६
	वारहमुद्रणा	७२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१		रात्रिभोजनकथा	२३८
	पद	६६४, ७०२	कुवलयचन्द—	नेमिनाथपूजा	७६३
		७२४, ७७४	कुशललाभगणि—	ढोलाभास्वरणीचौपई	२२५
	विनती	६२१	कुशल विजय—	विनती	७८२
	स्तुति	६०१, ६५०/	केशरगुलाव—	पद	४४५
कनकसोम—	श्राद्रकुमारधमाल	६१७	केशरीसिंह—	सम्भेदशिखरविलास	६२
	श्रापाढभूतिचौढालिया	६१७		वर्द्धमानपुराण	१५४
	मेघकुमारचौढालिया	६१७			१६६
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०	केशव—	कलियुगकीकथा	६२२
कपांत—	मीरपिच्छधारीकृष्ण			सदयवच्छसावलिगा	
	के कवित्त	६७३		की चौपई	२५४
ब्र कपूरचन्द—	पद	४४५	केशवदास—I	वैद्यमनोत्सव	६४६
		५७०, ६२४	केशवदास—II	कवित्त	६४३, ७७०
कबीर—	दोहा	७६०, ७८१		कविप्रिया	१६१
	पद	७७७, ७६३		नखसिखरणेन	७७२
	साखी	७२३		रसिकप्रिया	७७१, ७६६
कमलकलश—	वभणवाडीस्तवन	६१६	केशवसेन—	रामचन्द्रिका	१६४
कमलकीर्त्ति—	श्रादिजिनवरस्तुति		कौरपाल—	पञ्चमीव्रततोद्यापन	६३८
	(गुजराती)	४३६	कूपाराम—	चौरासीबोल	७०१
कर्मचन्द—	पद	५८७		ज्योतिषसारभाषा	२८१
कल्याणकीर्त्ति—	चारदत्तचरित्र	१६७	कृष्णदास—		५६८
किशन—	छहढाला	६७४,	कृष्णदास—	रत्नावलीव्रतविधान	५३१
किशनगुलाब—	पद	५८४, ६१४, ६६६	कृष्णराय—	सतसईटीका	७२७
किशनदास—	पद	६४६	खजमल—	प्रद्युम्नरास	७२२
किशनलाल—	कृष्णबालविलास	४३७	खड्गसेन—	सतियो की सज्भाप	४५१
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५३		त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१
	पद	५६०, ७०४	खानचन्द—		६८६, ६६०,
				परमात्मप्रकाशबालाव	
				बोधटीका	१११

प्रथम नाम	प्रथम मूषी की पत्र सं०	प्रथम नाम	प्रथम मूषी की पत्र सं०
सुरासकन्द—	मनसुप्रताप २१४	पद	२८७ ६२४
	मारागारंजीकथा २४२		१६१ १६८ ७०१
	मादिस्वरापना		७८१ ७९८
	(रविनाथपद) ७७२	रामसिंह—	मेमांजर का धारणमाता
	भारतीसिद्धापी ७७७		७६२
	उत्तरपुराणमाया १४२		मेमींवरराजुमकीमदुरि
	बहिनपच्छीकथा २२४		७७९
	२४४ २४६		मेमिजिनदम्पत्यो ११८
	जिनपुत्रागुरुभक्त्या २४४	रामचन्द्र—	बीबीसजिनस्तुति ४१७
	ज्येष्ठजिनभक्त्या २४४		९ २८ २८३
	धनपुत्राकरिष १७३ ७२६		२९१ १४९
	दशमसप्तकथा २४४ ७३१	गङ्ग—	पदसंग्रह ७१
	नन्दपुराणमाया १४९	गंगादास—	रसनीपुत्र
	पद्माधिपानकथा २३३		रामसमारजम २७६
	पुण्यासिद्धकथा २३४		मादिपुराणविनयो ७ १
	२४४ ७३१		मादिस्वरापना ७९२
	पुत्रार्थकथामाह २१९		भूमना ७२७
	मुकुटसप्तमीकथा २४४		दिभुवनरीबीनती ७७२
	७३१	गगारास—	पद ६१२
	मुक्ताबसी कथकथा २४२		भक्तामरस्तीकथाया ४१
	मैत्रमाताप्रतकथा २३९	गारुडास—	वसापरचरिष १९१
	२४४	गिरधर—	कविता ७७२ ७८६
	मसोपरचरिष १९१, ७११	गुणकीर्ति—	बहुविधविषय १ १
	सम्पिषिषामकथा २४४		बीबीसमणुवरस्तनन १ ६
	शातिनाथपुरास १२२	गुणचन्द्र—	डीनरास १ २
	बोडशकरणप्रतकथा २४४		प्रादीपरनेरसमन ७६२
	सप्तपरमस्वात्मप्रतकथा २४४		पद २८१ २८२ २८७
	हरिष सपुरास १२८	गुणनदि—	१८८
			रत्नासिद्धा २४६

ग्रन्थ एवं ग्रंथकार ।

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७६८	चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
गुणप्रभसूरि—	नवकारसज्जाय	६१८	चतर—	चन्दनमलयगिरिकथा	२२३
गुणसागर—	द्वोपायनदाल	४४०	चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	शातिनाथस्तवन	७०२		मधुमालतीकथा	२३५
गुमानीराम—	पद	६६६	चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	७५६
गुलाबचन्द—	कक्का	६४३	चिमना—	आरतीपत्रपरमेष्ठी	७६१
गुलाबराय—	बढाकक्का	६८५	चैनविजय—	पद	५८८, ७६८
ब्रह्म गुलाल—	कक्कावत्तीसी	६७६	चैनसुखलुहाडिया—	श्रद्धाभिर्मानचैत्यालयपूजा	४५२
	कवित्त	६७०, ६८२		जिनसहस्रनामपूजा	४८०
	गुलालपञ्चोसी	७१४			५५२
	त्रैपनक्रिया	७४०		पद	४४६, ७६८
	द्वितीयसमोसरण	५६६		श्रीपतिस्तोत्र	४१८
गोपीकृष्ण—	नेभिराजुलब्याहलो	२३२	छत्रपतिजैसवाल—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७		मनमोदनपचशतीभाषा	३३४
गोविन्द—	बारहमासा	६६६	छाजू—	पार्श्वजिनगीत	४ ८
घनश्याम—	पद	६२३	छीतरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५,
घासी—	मित्रविलास	३३४			६८५
चन्द—	चतुर्विंशतितीर्थकरस्तुति	६८५	छीहल—	पञ्चेन्द्रियबेलि	६३८
		७२०		पथीगीत	७६५
	पद	५८७, ७६३		पद	७२३
	गुणस्थानचर्चा	८		वैराग्यगीत (उदरगीत)	६३७
चद्रकीर्ति—	समस्तप्रतकीजयमाल	५६४	छोटीलालजैसवाल—	तत्त्वार्थसारभाषा	३०
चन्द्रभान—	पद	५६१	छोटीलालभित्तल—	पञ्चकल्याणकपूजा	५००
चन्द्रसागर—	द्वादशप्रतकथासंग्रह	२२८	जगजीवन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	६०५
चम्पाबाई—	चम्पाशतक	४३७	जगतरामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२
चम्पाराम—	धर्मप्रश्नोत्तरभावका				५८४, ६१५, ६६७,
		चार			६६६, ७२४, ७५७,
	भद्रवाहुचरित्र	१८३			७८३, ७६८, ७६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अक्षतराय—	जिनबाणीस्तवन	३६	अपलास—	इष्यतीप्रह्लादा	३५
	वचनद्विरुचीसीभाषा	३७		परीक्षामुराभाषा	३३५
	सम्पन्नकीमुनीकथा	२६२		भक्त्याभरस्तोत्रभाषा	४१०
अगनकवि—	रामवतीसी	४१४	अमयसारभाषा	१२४	
अगराम—	पद	४ ५, ११८ ७५३	अर्वापिसिद्धिभाषा	४५	
अगरूप—	प्रतिमा स्थापनश्रु		सामाधिकनाठभाषा	६१	
	उद्देश	७	कुशीनखंडन	३२	
	परम्पनाकथितवन	१८१	गन्धर्वसूचीका	२६	
अनमस	श्वेतावरमठके २४ बीम	७७६	अयसागर—	अनुविपतिजिनस्तवन (बीबीसीस्तवन)	११६ ७ ६
	पद	३५३	अयमासगणि—	जिनकुसुमसूरिबीपई	११५
	स्नेहसीमा	७७१	अबाहरलास—	बाह्यभाषना	११७
अनराज—	पदशतसौमबारहभाषा	१५१	असकीष्टि—	सम्बद्धिभारपूजा	३३
अयकिरान—	कविता	१४३	असराज—	अष्टजिनभारकथा	१२३
	पद	३५३ ३८८	असवधसिद्धराठौड—	बाह्यभाषा	७८
	अकभूतारस	३६३	असुराम—	भाषामूलख	३१२
अयकीष्टि—	महिम्नस्तवन	४९५	आदूराम—	राजनीतिसारभाषा	३३३
	रविज्ञतकथा	११६	अदूराम—	पद	४४३
	अयचन्द्रावली—	अय्यारमन्त्र	६६	अदूराम—	भाषीस्वरस्तवन
	अष्टपानुभाषा	६६	अदूराम—	पार्श्वजिनस्तवन	७
	भाष्यमीमासाभाषा	१३	अदूराम—	बाह्यभाषना	७
	कालिकेपाणुप्रेजाभाषा	१ ४	अदूराम—	महावीरस्तवन	७
	अहमभारिभाषा	११९	अदूराम—	जिनपीपाठस्तुति	७
	अलाएभिभाषा	१ ८	अदूराम—	नेमिस्तवन	४
	दत्तात्रेयसूत्रभाषा	२६	अदूराम—	अनुविपतिजिनस्तवन	
	वेदपूजाभाषा	४६			
	वेदाममस्तोत्रभाषा	३३३			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जिनचंद्रसूरि—	ब्रीसतीर्थकरस्तुति	७००	जिनरगसूरि—	धर्मपंचविशतिका	६१
	शालिभद्रनाचौपई	७००		निजामणि	६५
	कयवन्नाचौपई	२२१		मिच्छादुष्कड	६८६
	क्षमावतीसी	१४		रेदन्नतकथा	२४६
जिनदत्तसूरि—	गुरुपारतंत्र्यएवसप्तस्मरण	६१६	समकितविणबोधर्म	७०१	
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६	सुकुमालस्वामीरास	३६६	
प० जिनदास—	चेतनगीत	७६२	सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७	
	धर्मतरुगीत	७६२	कुशलगुरुस्तवन	७७६	
	पद	५८१, ५८८, ६६८ ७६४, ७७२, ७७४	जिनराजसूरि—	धन्नाशालिभद्ररास	३६२
	आराधनासार	७५७	जिनवल्लभसूरि—	नवकारमहिमास्तवन	६१८
	मुनीश्वरोकीजयमाल	५७१	जिनसिंहसूरि—	शालिभद्रधन्नाचौपई	२५३
		५७६, ६२२, ६५८	जिनहर्ष—	धग्धरनिसाणी	३८७, ७३४
		६८३, ७५०, ७६१		उपदेशछत्तीसी	३२४
	राजुलसङ्गमाय	७५०		पद	५६०
	विनती	७७५	जिनहर्षगणि—	नेमिराजुलगीत	६१८
	विवेकजकडी	७२२, ७५०	जिनेन्द्रभूषण—	पार्ष्वनाथकीनिशानी	४४८
सरस्वतीजयमाल	६५८	जिनेश्वरदास—	श्रीपालरास	३६५	
	७७८,	जीवणदास—	बारहसौचौतीसन्नतकथा	७६५	
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा	१०५, ६०१	जीवणराम—	पद	४४५
		६०३, ६२२, ६३६	जीवणराम—	पद	५८०
		६५२, ७०३, ७१२	जीवणराम—	पद	५६०, ७६१
		७२३	जैतराम—	जीवजीतसंहार	२२५
जिनदासगोधा—	मालीरासो	५७६	जैतश्री—	रागमालाके दोहे	७८०
ब्र० जिनदास—	सुगुरुशतक	३४० ४४७	जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
	अठवीसमूलगुणरास	७०७	जोधराजगोदीका—	चौआराधनाउद्योतकथा	२२५
	अनन्तभ्रतरास—	५६०		गौडीपार्ष्वनाथस्तवन	६१७
	चौरासीन्यातिमाला	७६५		जिनस्तुति	७७५
				धर्मसरोवर	६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पृष्ठ सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पृष्ठ सं०
	मैमिजिनस्तकन	११८		सोमह्वारराजभाषा	७४०
	प्रबचनसार	११४	संज्ञामूराम—	पर	४४१
	श्रीतिथरचरित्र	१८३	टीकमचद—	नगुरसीतिया	७२१ ७७३
	भाषवीरक	७७		बंदासभाषा	११६
	नारियेणमुनिभाषा	२४		भोरामजीकीश्रुति	११६
	साम्प्रदायकीपुत्रीभाषा	२१२		श्रुति	११६
		१८६	टीलाराम—	पर	७८२
	समस्तभद्रभाषा	७१६	टैकचंद—	वर्मेश्वरनूजा	४१४ ११६
	पर	४४४ १६६			७१२
		७८६ ७१८		सीमनोकनूजा	४८१
जीहरीशाकपिसात्रा—	विद्यमानबीसवीर्यकर			मंवीरवरप्रतविधान	४१४
	पूजा	१११			११८
	मालोचनागाठ	१११		पंचकन्याणकनूजा	१ १
ज्ञानचद—	साम्प्रदायिकनूजा	११८		पंचपरमष्टीपूजा	१ ३ ११८
ज्ञानमूपा—	धनयनिकिपूजा	४२४		पंचमेरुपूजा	१ ३
	श्यादीश्वरफाय	३९		पुण्याधनकपाकोठ	२१४
	बलनालणुरास	३६२		रामधयविधानपूजा	१११
	पोसहरास	७६२		मुहृष्टिदरंगिणीभाषा	१७
३ ज्ञानसागर—	मनस्तचतुर्वीतीनभा	२ ४		सोनह्वाररठमडनविधान	
	मष्टाङ्गिकाभाषा	७४	डोडर—		११६
	प्रादिनाथकन्याणकन्या	७ ७		पर	१८२ ११४ १२३
	कन्यासंघद	२२			७६७ ७७६ ७७७
	वसुधैवकुवतकन्या	७६४	प० डोडरमझ—	महामानुषासनभाषा	१ २
	मैत्रीस्वरराकुसविभाष	११३		क्षपणसारभाषा	७
	मार्णिकयनासाग्र न			गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा	४३
	प्रसूतोत्तरी	१ ४		गोम्मटसारबीकान्धभाषा	१
	रत्नमन्त्रभाषा	७४		गोम्मटसारवैपीठिका	११
	नगुरविद्यतभाषा	२४४		गोम्मटसारसंघट्टि	१२
				त्रिसोफ्यारभाषा	३२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा	६६	थानजीअजमेरा—	वीसतीर्थकरपूजा	५२३
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०	यिरूमल—	ह्वरणभारती	७७८
	लब्धिसारभाषा	४३	दत्तचाल—	वारहखडी	७४५
	लब्धिसारक्षपणासार	४३	ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
	लब्धिसारसंहृष्टि	४३	दयालराम—	जकडी	७४६
ठक्कुरसी—	कृपणछंद	६३८	दरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	नेमीश्वरकीबेलि (नेमीश्वरकवित्त)	७२२		पद	७४६
	पचेन्द्रियबेलि	७०३	दकजी—	वारहभावत्रा	५७१
	७२२, ७६५		दलाराम—	पद	६२०
कविठाकुर—	रामोकारपञ्चवीसी	४३६	दशरथनिगोस्या—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४	दास—	पद	७४६
डालूराम—	अठईद्वीपपूजा	४५५	मुनिदीप—	विद्यमानवीसतीर्थकर पूजा	४१५
	चतुर्दशीकथा	७४२	दीपचन्द—	अभुभवप्रकाश	४८
	द्वादशागपूजा	४६१		आत्मावलोकन	१००
	पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन	६६		चिद्विलास	१०५
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३		भारती	७७७
	पंचमेरूपूजा	५०५		ज्ञानदर्पण	१०५
डू गरकवि—	होलिकाचौपई	२५५		परमात्मपुराण	११०
डूंगावैद—	श्रेणिकचौपई	२४८		पद	५८३
तिपरदास—	श्री स्वमणिकृष्णजी को रासो	७७०	दुलीचद—	आराधनासारवचनिका	५०
तिलोकचद—	सामायिकपाठभाषा	६६		उपदेशरत्नमाला	५१
तुलसीदास—	कवित्तबधरामचरित्र	६६७		जैनसदाचारमार्तपण्ड	
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२		नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
तेजराम—	तीर्थमालास्तवन	६१७		जैनागारप्रक्रियाभाषा	५५७
		६७३		द्रव्यसग्रहभाषा	३७
त्रिभुवनचंद—	अनित्यपचासिका	७५५		निर्माल्यदोषवर्णन	६५
	पद	७१५		पद	६६३

प्रथम प्रकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम गृही की पत्र सं०	प्रथम प्रकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम गृही की पत्र सं०
	प्रतिष्ठाताभाषा	२२२		संस्कृतशोधसंस्थान	७६४
	बाँससमवायान	७५	श्रीसतराम—	संस्कृतभाषा	२७ ७६६
	मुखापितावनी	१४४			७०७
देवपद—	मुद्रितान	१०		शिवसंस्कृत	७०७
देवपद—	पट्टनारायण	७६		पद	४२६, १२४
	नवायुगा	७६०		बाबूबाबू	२६१ १७२
दशसिद्ध—	पद	६९४	श्रीसतरामपाटनी—	बाबिधानराजो	७७६
देवसेन—	पद	२८९	श्रीसतराम—	साहित्यशास्त्र	१४४
देवादिज—	उपदेशसंग्रह	१८१		श्रीश्रीसतरामभाषा	२६,
देवापायडे—	शिवसंस्कृतशोधसंस्थान	१८२			४२६ ४४८
देवाश्रम—	शिवसंस्कृतशोधसंस्थान	११२,			२११ १७२
		६८२		शिवसंस्कृतशोधसंस्थान	२६
	श्रीश्रीसतीर्थसंस्कृत	४१८		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१४६
	पद ४४६ ७८१	७८२		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१११
	शिवसंस्कृत	४२१, १६२		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	२३१
	नवायुगा	१२१		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	७७७
	मुनिमुद्रतशिवसंस्कृत	४२		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१२७
	संस्कृतशास्त्रशास्त्र	२१	श्रीसतरामपाटनी—	संस्कृतशास्त्रशास्त्र	४६४
	सासबहुकाभंग	१४८	श्रीसतराम—	संस्कृतशास्त्रशास्त्र	७ २, ४९
देवीचन्द्र—	द्वितीयसंस्कृतशास्त्र	७४४		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१७९
देवीदास—	शिवसंस्कृत	१७२		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	४६
	शिवसंस्कृत	७२७		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१२१ १२२
	पद	६४६			७७७
	राजनीतिशास्त्र	११६ ७२२		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१२२, ७४७
देवीसिद्धबाबू—	उपदेशसंग्रह	२२		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१४ १२४
देवेन्द्रशिव—	शिवसंस्कृत	१२१			७६४
देवेन्द्रशिव—	पद	२८७		श्रीश्रीसतीर्थसंस्कृत	७ ४
	संस्कृतशास्त्रशास्त्र	७ ७		संस्कृतशास्त्रशास्त्र	१२२, १७२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नेमीचंदपाटनी—	नेमीश्वरगीत	६२१	नेमीचंदबख्शी—	जीवधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकौस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्त्वार्थसारभाषा	२३
	चतुर्विंशतितीर्थंकर			तत्त्वसारभाषा	२१
	पूजा	४७२	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६	
	तीनचौबीसीपूजा	४८२	धर्मप्रदीपभाषा	६१	
नेमीचंदबख्शी—	सरस्वतीपूजा	५५१	नंदीश्वरभक्तिभाषा	४६४	
नेमीदास—	निर्वाणामोदकनिर्णय	६५	नवतत्त्ववचनिका	३८	
न्यामतसिंह—	पद	७६५	न्यायदीपिकाभाषा	१३५	
	भविष्यदत्तदत्तिलका—		पांडवपुराण	१५०	
	सुन्दरीनाटक	३१७	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार		
	पद	७६५	भाषा	७०	
पदमभगत—	कृष्णरुक्मिणीमंगल	२२१	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३५	
पद्मकुमार—	आतमशिक्षासज्जाय	६१६	भक्तिपाठ	४४६	
पद्मतिलक—	पद	५८३	भविष्यदत्तचरित्र	१८४	
पद्मनदि—	देवतास्तुति	३६४	भूपालचौबीसीभाषा	४१२	
	पद	६४३	भरकतविलास	७८	
	परमात्मराजस्तवन	४०२	योगसारभाषा	११६	
पद्मराजगणि—	नवकारसज्जाय	६१८	यशोधरचरित्र	१६२	
पद्माकर—	कवित्त	७५६	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३	
चौधरीपद्मालालसंधी—	आचारसारभाषा	४६	वसुन्दिश्रावकाचारभाषा	८५	
	आराधनासारभाषा	४६	विद्यापहारस्तोत्रभाषा	४१६	
	उत्तरपुराणभाषा	१४६	पट्श्रावश्यकविधान	८७	
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३	श्रावकप्रतिक्रमणभाषा	८६	
	कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	३८५	सद्भाषितावलीभाषा	३३८	
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३	समाधिमरणभाषा	१२७	
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६	सरस्वतीपूजा	५४१	
	जिनदत्तचरित्र	१७०	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पृष्ठ सं०	प्रकाशक का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पृष्ठ सं०
नयनत्रयविद्याला—	घटाङ्गिवाचपा	२१५	माधुरामदोसी—	१२१ १२४ १२५ ७८२	१२१ १२४ १२५ ७८२
	जीर्णपरचरित	१७०			७८३ ७८५
	दर्शनसारवाचा	१११		बाह्यवाचना	११५
	परमारमंत्राणामाया	१११			४२६ ३७१
	महीपामचरित	१८९		महावाटुचरित	१७१
	मन्थानररठोचरणा			विद्याचतुष्टय	१९८
	भाषा ११४, ७२०			समाधिर्वाचवाचा	१२६
	रत्नकररुक्मभावावाचार			शैतानभीगीत	७५७
	भाषा ८३			पद	१२२
	रत्नत्रयत्रयमालमाया	३२८		पार्ष्णाण्यस्तवम	१२२
बोड्याकारणमापना		माधुराम—	मनसंनचरितगीत	१९	
वयमास ८५			गीत	१२२	
द्विदशस्यसारमाया	४७		मन्मुरवाभीचरित	११६	
सिद्धिप्रियस्तोत्रवाचा	४२१		पाठनमार	१८१	
नयनत्रय—	पद	३८१		त्रिनमहयनामस्तोत्र	३६१
	बैद्यमनोसख १ ४ १ १			रक्षाबंधनवाचा	२१७
नयनसुख—I		१२५, ७९५, ७९४		स्वाधुनवर्षण	१२५
नयनसुख—II	पद	४४५, ३८३	नाथूलासदोसी—	मुमुक्षुचरित	२ ७
	मनससंग्रह	४५	नानिगराम—	बोहासंग्रह	१९१
नरपाल—	पद	३५५	निमल—	पद	३७१
	नरेश्वरकीर्ति—	बालमंगलकी	निहासचंद्रमवाला—	नयनत्रयवाचप्रकाशितनी	
	रत्नामसीद्वर्तों की विधियों			टीका	११४
	क नाम १५५		नेमीचन्द्र—	पदकी	१९२
नेमिचन्द्रराम—	पुस्तकोंकीबीनकी	७ ४		तीमनोकपुत्रा	४७१
	विनयपञ्चीसी	१११ १७		बीबोसतीर्षकरोंकी	
		१७३ १११ ७२५		बंधना	७७१
	पद	४४५, ३८२		पद	३८ १२२
	३८६, ३६ ११५, १४८			प्रीत्यकरबीपई	७७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नेमीचंद्रपाटनी—	नेमीश्वरगीत	६२१	नेमीचंद्रबख्शी—	जोबंधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकीस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्त्वार्थसारभाषा	२३
	चतुर्विंशतितीर्थकर			तत्त्वसारभाषा	२१
	पूजा	४७२	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६	
	तीनचौबीसीपूजा	४८२	धर्मप्रदीपभाषा	६१	
नेमीचंद्रबख्शी—	सरस्वतीपूजा	५५१	नंदीश्वरभक्तिभाषा	४६४	
नेमीदास—	निर्वणमोदकनिर्णय	६५	नवतत्त्ववचनिका	३८	
न्यामतसिंह—	पद	७६५	न्यायदीपिकाभाषा	१३५	
	भविष्यदत्ततिलका—		पांडवपुराण	१५०	
	सुन्दरीनाटक	३१७	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार		
	पद	७६५	भाषा	७०	
पदमभगत—	कृष्णरूक्मिणीमंगल	२२१	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३५	
पद्मकुमार—	आत्मशिक्षासङ्ग्राह्य	६१६	भक्तिपाठ	४४६	
पद्मतिलक—	पद	५८३	भविष्यदत्तचरित्र	१८४	
पद्मनदि—	देवतास्तुति	३६४	भूपालचौबीसीभाषा	४१२	
	पद	६४३	भरकतविलास	७८	
	परमात्मराजस्तवन	४०२	योगसारभाषा	११६	
पद्मराजगणि—	नवकारसङ्ग्राह्य	६१८	यशोधरचरित्र	१६२	
पद्माकर—	कवित्त	७५६	रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३	
चौधरीपद्मलालसंधी—	श्राचारसारभाषा	४६	चसुनदिश्रावकाचारभाषा	८५	
	श्राधनासारभाषा	४६	विपापहारस्तोत्रभाषा	४१६	
	उत्तरपुराणभाषा	१४६	पट्श्रावश्यकविधान	८७	
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३	श्रावकप्रतिक्रमणभाषा	८६	
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५	सद्भाषितावलीभाषा	३३८	
	गीतमस्वामीचरित्र	१६३	समाधिमरणभाषा	१२७	
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६	सरस्वतीपूजा	५५१	
	जिनदत्तचरित्र	१७०	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१	

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
पन्नासासदूनीबासे—	सुमापितावकीभावा	१४४	प्रमुदास—	परमारभद्रभावाभावा	७१३
	पंचकस्याणक्यूभा	५ १	प्रसन्नचंद्र—	प्राप्तमदिकासगन्धाय	११६
	विह्वलबनबोधकावा	८१	फतेहचंद्र—	पद १०६ १८, १८१	
	समवसरणपूजा	८		१८२ १८३	
पन्नासासदवाक्यीबासे—	बालपपपुराण	१३१	वंशी—	शुद्धणर्ममस	७७७
	पद	१८४ ७७	बशीवास—	रोहिणीविपिक्या	७८१
परमानंद—	श्रीपासचरित्र	२ १ ७७३	वंशीभर—	इभ्यसग्रहवासावबोधपीठा	
परिमच्छ—	इभ्यसग्रहमाया	३६			७६१
पर्वतधर्माधी—	समाधितंजनाया	१२६	बलतराम—	पद १८३ १८६ १६८	
पारसदासनिगोत्या—	बालसूर्योदयनाटकभावा	११७		७८३ ७८६	
	सारणीबीसी	४२२		मिप्यास्वर्जडम	७८
	पद	१२४	बस्तावरसास—	बुद्धिदिमास	७९
पारसदास—	बारहसबी	१३२		चतुर्विधतिरीयंकरपूजा	४७३
पारसदास—	शैमिनामपत्र	७४८	बपीचन्द्र—	बालसूर्योदयनाटकभावा	११७
पुष्परत्न—	साधुवंदना	४२२	बनारसीदास—	रामचन्द्रचरित्र	१२१
पुष्पसागर—	बीड़े	१८७		प्रथममहतीसी	६६
पुरुषोत्तमदास—	पद	७८३		पारमध्याम	१
	पद	७८३		कर्मप्रकृतिविचाल	३
	मैत्रजुमारणीत	१११ ७२२		११ १७७ ७४६	
	७४६ ७५ ७६४	७७३		कर्मसारमंभिरस्तीभमाया	
पूरखदेव—	बीरखंडमंजरीसबावली	७७३		१८३ ४९६ ३६६	
	पद	११३		३६६ १ ३ १४३	
	पद	११३		१४८ १३ १११	
पेसरास—	बैबरसीविचाल	२४		११२ ११३, १७	
पृथ्वीराजघठीड—	कृष्णकविमस्त्रिमेति	११४		७ ३ ७ ३	
		११५ ७		कवित्त	७ १ ७७३
महाराजासबाईपठापसिंह—				विमलसुभमानकावा	११
	मपूठसगर	१६१			७४६
	बबपुंवरकीवार्ता	२२३		बालपन्नीसी	११४ १२४
				१३ ७४६ ७७३	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	ज्ञानवावनी	१०५, ७५०	वल्लदेव—	पद	७६८
	तेरहकाठिया	४२६, ७५०	बाबूलाल—	विष्णुकुमारमुनिपूजा	५३६
	नवरत्नकवित्त	७४३,	बालचन्द्र—	पद	६२५
	नाममाला	२७६, ७०६	बिहारीदास—	आरती	७७७
	पद	५८२, ५८३		कवित्त	७७०
		५८५, ५८६, ५८६,		पद	५८७
		५६०, ६१५, ६२१		पद्यसंग्रह	७१०
		६२२, ६२३ ६६७		वंदनाजकडी	४४६, ७२७
	पार्वनाथस्तुति	७२३	बिहारीलाल—	सतसई	५७६, ६७५
	परमज्योतिस्तोत्रभाषा	४०२			६८८, ७२७, ७६८
		५६०	बुधनन—	इष्टछत्तीसी	६६१
	परमानन्दस्तोत्रभाषा	५६२		छहढाला	५७
	वनारसीविलास	६४०		तत्त्वार्थबोध	२१
		६८६, ७०६		दर्शनपाठ	४३६
	मोहविवेकयुद्ध	७१४, ७६४		पञ्चास्तिकायभाषा	४१
	मौक्षपैडी	८०, ७१६		पद	४४५, ४४६, ५७१
		७४६			६४८, ६५३, ६५४
	शारदाष्टक	७ ७७६			७८५, ७६८
	समयसारनाटक	१२३, ६०४		वदनाजकडी	४४६
		६३६, ६४०, ६५७		बुधजनविलास	३३२
		६०, ६८३, ६८८		बुधजनसतसई	३३२, ३३३
		६८६, ६६४ ६६८		योगसारभाषा	११७
		७०२, ७१६, ७२०		षटपाठ	४१६
		७२१, ७३१, ७५६		सबोधपंचसिकाभाषा	५७०
		७७८, ७८७		सरस्वतीपूजा	५५१
	साधुवदना	६४०, ६५२	बुधमहाचन्द्र—	स्तुति	७०४
		७१६	बुलाकीदास—	सामायिकपाठभाषा	६५
	सिन्धुप्रकरण	३४०, ७१०		पाण्डवपुराण	१५०, ७४५
		७१२, ७४६	बूचराज—	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	७०
				टङ्गाणागीत	७२२, ७५०

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	भुवमकीर्तिगीत	११६
भगत राम—	पत्र	७६८
शैवाभगती, दास—	आहारके ४६ बाग	
	बर्णन	५
	प्रकृतिमन्त्रेस्वात्मय	
	जयममम	१६४ ७२
	चतनकर्मचरित्र	७४
		१११ १ ३ ६८६
	प्रतिरयदकीसी	१८६
	निर्वाणकाम्यमाया	३६६
		४२६ ५१२ ५१५
		५७ १५ ५६१
		१ , १ ३ ६१४
		११ , १४१ ६२१
		६६२ ७ ४ ७२
	ब्रह्मबिसास	१३१
	बाराहभारता	७२
	नारायणकीसी	१८५
	श्रीपालकीस्तुति	१४३
	सप्तसंयीबासी	१८८
भगतीदास—	बीरजिरपकीत	५६६
भक्त्यानदास—	या सातिसागरपूजा	४६१
		७८६
भगासह—	पत्र	५८१
भद्रसेन—	चन्द्रमलकामिरी	२९३
भाऊ—	धाबिल्यवारक्या	
	(रविप्रतक्या)	२१७ २४४
		१ १ ६८५, ७४
		७४५ ८२१ ७६२

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	पत्र	५८७
	मैमोश्चरबीरास	११८
भागचंद—	उपदेशसिद्धान्तरत्न	
	माला	११
	सत्तसुयोर्वनाटक	११७
	मैमिनापपुराण	१४१
	प्रमाणपरीकामाया	१३७
	पत्र	४४५ ४४६ ५७
	भानकीशारभाया	६१
	सन्मोदसिद्धरपूजा	१५
भागीरथ—	मोमापिरपकीसी	६८
भानुकीर्ति—	वीरकाम्यसङ्काम	११६
	पत्र	५८३ ५८५, ११५
	रविप्रतक्या	७५
भारामल्ल—	कर्मपकीसी	७६६
	चारुवतचरित्र	१६८
	बर्णनक्या	२७
	दानक्या	९२८
	मुक्ताबसिक्या	७६४
	रात्रिजीवनक्या	२१८
	श्रीलक्या	२४७
	सप्तम्यसनक्या	२५
	लम्बिकिमानकीपरि	७७२
भोपन्नकधि—	मैमिनापपुराण	११८
भुवनकीर्ति—	प्रभातिकस्तुति	१३३
भुवनभूषण—	एकीमाबस्तोममाया	३८३
		४२६ ४४८, ६२२
		६६२ ७१६ ७२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	
सूवरदाम—	कवित्त	७७०	सूवरमिश्र—	वारहभायना	११४	
	गुरुग्रोवीवीनता	४४७		वज्रनाभिचक्रवृत्तिकी		
	५११, ६१४, ६४२, ६६३			भावना	८५	
	चर्चासमाधान	१५, ६०६		४४८, ७३६		
		६४६		विनती	६४२, ६६३	
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६			६६४	
	जकडी	६५०, ७१६		स्तुति	७१०	
	जिनदर्शन	६०५		गुरुपार्थसिद्धचुपाय		
	जैनघातक	३२७, ४२६		वचनिका	६६	
		६५२, ६७०, ६८६				
		६६८, ७०६, ७१०		भेलीराम—	पद	७७६
		७१३, ७१६, ७३२		भैरवदास—	पचकल्याणपूजा	५०१
	दशलक्षणपूजा	५६२		भोगीलाल—	बृहद्घटाकाराकलन	७२६
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८		मगलचट—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०			पदसग्रह	४४७
		७७७		मकरदपद्मावतिपुरवाल—	पट्सहननवर्णन	८८
	पचमैरूपूजा	५०५, ५६६		मकखनलाल—	अकलकनाटक	३१६
		७०४, ७५६		मजलसराय—	जैनबद्रीदेशकीपत्री	५८१
पार्श्वपुराण	१७६, ७४४	मतिकुसल—	चन्द्रलेहारास	३६१		
	७६१	मतिशेखर—	ज्ञानवावनी	७७२		
गुरुगार्थसिद्धचुपाय		मतिसागर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६		
भाषा	६६	मथुरादासव्यास—	लीलावतीभाषा	३६८		
पद	४४५, ५८०, ५८६	मनरंगलाल—	अक्रुत्रिमचैत्यालयपूजा	४५४		
	५६०, ६१५, ६२०		चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	४७३		
	६४८, ६६४, ६५४		निर्वाणपूजापाठ	४६६		
	६६४, ७७६, ७७७	मनरथ—	चित्तामणिजीकीजयमाल			
	७८५, ७८६, ७६८			६४४		
वईसपरीपहवर्णन	७५, ६०५	मनराम—	अक्षरगुणमाला	७४६		
			गुणाक्षरमाला	७५०		

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	मध्य सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	मध्य सूची की पत्र सं०
	पद	११० ७२१ ७२४ ७१४ ७१६ ७३१		पद	४४३, ४४८ ७६८
मनसाराज—	पद	१११, ११४		ममागिनत्रमाता	१२२
मनसुखतास—	सम्प्रेषितारमहस्य	६२		शापुरबना	४४२
मनहरदेव—	पारिजातपूजा	४११		दृष्टान्तनिर्णीतान	
मन्महाकालविग्रह—	चारित्र्यसारभाषा	४६	मानकवि—	दो बर्तन	६५
	पद्यनिर्दिशरबीसीभाषा	१५		मानपापनी	११४, १११
	प्रद्युम्नचारित्र्यभाषा	१८२		बिन्दुकीचौरदकी	७८१
मनासाह—	मानकीबहीबाबनी	११८	मानसागर—	संयोगबलीभी	६११
	मानकीनपुजाबनी	१३८	मानसिंह—	कठियारकानकरीचौरद	२१८
मनोहर—	पद	४४२, ७११ ७१४ ७५१ ७८६		मारती	७३३
	ज्ञानविधामण्डि	१८, ७१४ ७१६		पद	७७७
मनोहरदास—	ज्ञानपदकी	७१५	मारु—	प्रमरगीत	७२
	ज्ञानपदकी	७२०		मानबिनोद	१
	बर्मपटोखा	११७ ७१६	मारु—	पदेसियां	१४१
	पद	४४१	मिहरबंद—	संयनचित्तबन्तम	११७
मन्कृष्ण—	पद	७६१	मुकुन्ददास—	पद	१६
मन्कृष्णदास—	पद	४११	मेरुनन्दन—	प्रवितपांतिरुचन	६१६
महामत—	बीराम्यभीत	४११	मेरुसुन्दरगणि—	धीसोपदेवमाना	२४७
महाबन्ध—	नपुस्वयसूत्रोच	७१६	मेला—	पद	७७६
	पद्मामरमक	८७	मेलीराम—	बस्यमणनिदिरस्तोत्र	७८६
	सामायिकपाठ	४२६	महेशकवि—	हमीररातो	१६७
महीबन्धपुरि—	पद	१७६	मोठीराम—	पद	३६१
महेन्द्रकीर्ति—	बकरी	१२	मोहन—	कवित्त	७७२
	पद	७८६	मोहनमिश्र—	सीसाबलीभाषा	१६७
माकनकवि—	पियलबंरासक	११	मोहनविजय—	बन्धनाचरित्र	७६१
मायकबंद—	तेरहपंचपञ्चीतो	४४८	रंगविजय—	मानतु ममानकतिचोवर्द	२११
			रगविजय—	भावीबचरमीत	७७६
			रगविजयगणि—	उपदेवसंयमाम	
				संगलकलममहाभुजि	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रङ्गधु—	वारह्णभावना	११४		चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	
रघुराम—	सभासारनाटक	३३८		४७२, ६६६, ७२७,	
रणजीतदास—	स्वरोदय	३४५		७२६, ७७२	
रत्नकीर्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना	७२२		पद ५८१, ६६८, ६८६	
	नेमीश्वररास	६३८		पूजासग्रह	५२०
		७२२		प्रतिमासान्तचतुर्दशी	
रतनचन्द्र—	चीवीसीविनती	६४६		व्रतोद्यापन	५२०
	देवकीकीढाल	४४०		पुरुषस्त्रीसवाद	७८६
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीरास	६१७		वारह्णखडी	७१५
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजयमाल	५६४		शातिनाथपूजा	५४५
रहृकवि—	जिनदत्तचौपई	६८२		शिखरविलास	६६३
रसिकराय—	स्नेहलीला	६६४		सम्मेदशिखरपूजा	५५०
राजमल—	तत्त्वार्थसूत्रटीका	३०		सीताचरित्र	२०६, ७२५
राजसमुद्र—	कर्मवत्तीसी	६१७			७५६
	जीवकायासञ्ज्ञाय	६१६		सुपार्श्वनाथपूजा	५५५
	शत्रुञ्जयभास	६१६	ऋषिरामचन्द्र—	उपदेशसञ्ज्ञाय	३८०
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१६		कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	
	सोलहसतियोकेनाम	६१६			३८५
राजसिंह—	पद	५८७	रामचन्द्र—	नेमिनाथरास	३६२
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	७४३, ७७१	रामदास—	रामविनोद	३०२
	सुन्दरशृंगार	६८३, ७२६		पद	५८३, ५८८
राजाराम—	पद	५६०		६६३, ६६७, ७७२	
राम—	पद	६५३	रामभगत—	पद	५८२
	रत्नपरीक्षा	३५८	मिश्ररामराय—	बृहद्वाणिक्यनीति	
रामकृष्ण—	जकडी	४३८		शास्त्रभाषा	३३६
	पद	६६८	रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
रामचन्द्र—	श्रादिनाथपूजा	६५१	ब्र० रायमल्ल—	श्रादित्यवारकथा	७१२
	चंद्रप्रमजिनपूजा	४७४		चिंतामणिजयमाल	६५५
				द्वियालीसठाणा	७६५

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	बन्धुस्वामीचरित	७१		पद्ममंथन	४०१ ४२८ ४७७
	निर्दोषसप्तमीकथा	१७६			४१८ ४११ २७
	मिमीस्वरफाम	१६३ १ १			६२४ ६४२ ६२
		६२१ ६३८ ७२२			६५८ ६६१ ६६४
	पंचगुणस्त्रीजयमास	७६३			६७१ ७ ४, ७ ५
	प्रद्युम्नरास	१६५ १३६			७१५, ७२
		७१२ ७१७ ७४६		र्वचक्रस्मरणकमुना	५
	मत्कामरस्तोत्रबुक्ति	४ ८		बीहासतक	७४ ७४३
	मन्त्रिव्यवहारास	३६४ २६४		पद	२८६ २८७ २८८
		६४८ ७४ ७२१			६२४ ६११ ७२४
		७५२ ७७३ ७७५			७४६ ७५२ ७६३
	राजाचक्रगुप्तबीबीपद	६२			७६५ ७८३
	वीतरास	७४६		परमार्थमोक्ष	७६४
	बीवत्तरास	६३८		परमार्थबीहा	७ ६
		६८४ ७१२		परमार्थबीहडोलना	७६४
		७१७ ७४६		समुद्रमंथन	६२४ ७१६
	सुवर्णमरास	३१६ ६३६		विनयी	७६५
		७१२ ७४६		समवसरणपुत्रा	२४६
	हनुमन्चरित	२१६ ५६५	पाठे रूपचर्द—	तत्त्वार्थसूत्रभाषाटीका	६४
		५६६ ७१७ ७२४	रूपदीप—	पियसत्राया	७ ६
		७४ ७२२	रेखराज—	पद	७६८
		७४४ ७६२	सहमय—	चन्द्रकथा	७४८
साधुमीभाईरायमसह—	ज्ञानानन्दभाषाका		सहमीचक्रम—	मन्वतत्वप्रकरण	३७
	चार	५८	सहमीसागर—	पद	६८२
रूपचर्द—	प्रध्यायबीहा	७४६	कम्पिबिमसराय—	ज्ञानार्थबिटीकाभाषा	१ ८
	जयडी	१२ ७२२	र्व० काशा—	पद्मर्वनाथबीपद	४४५
		६६१ ७२५	लाक—	पद	४४५ ६८६
	जिनस्तुति	७ २	साखचर्द—	भारती	६२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ			पार्श्वजिनपूजा	५०७
	स्तवन	६१७		पूजाष्टक	५१२
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६		षट्श्लेष्यावेलि	३६६
	नेमिनाथमगल	६०५, ७२२	वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
	नेमीश्वरका व्याहला	६५१	वाजिद—	वाजिदकेअडिल्ल	६७३
	पद	५८२, ५८३, ५८७	वादिचन्द्र—	आदित्यवारकथा	६०७
	पूजासंग्रह	७७७	विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके कवित्त	६७३
पांडे लालचंद—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८	विजयकीर्त्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	सम्मोदशिखरमहात्म्य	६२		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
ऋषि लालचंद—	अठारहनातेकीकथा	२१३		पद	५८०, ५८२
	मरुदेवीसज्भाप	४५०			५८३, ५८४, ५८५
	महावीरजीचौढाल्या	४५०			५८६, ५८७, ५८६
	विजयकुमारसज्भाय	४५०	विजयदेवसूरि—	श्रेणिकचरित्र	२०४
	शान्तिनाथस्तवन	४१७		नेमिनाथरास	३६२
	शीतलनाथस्तवन	४५१	विजयमानसूरि—	शीलरास	३६५, ६१७
लालजीत—	तेरहद्वीपपूजा	४८४	विद्याभूषण—	श्रेयासस्तवन	४५१
ब्रह्मलाल—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५	विनयकीर्त्ति—	गीत	६०७
लालवर्द्धन—	पाण्डवचरित्र	१७८		अष्टाह्निकाव्रतकथा	६१४
ब्रह्मलालसागर—	रामोकारछंद	६८३			७८०, ७६४
लूणकरणकासलीवाल—	चौबीसलीथंकरस्तवन	४३८	विनयचंद—	केवलज्ञानसज्भाय	३८५
	देवकीकीढाल	४३६	विनोदीलाललालचंद—	कृपणपच्चीसी	७७३
साहलोदट—	अठारहनातेकीकथा			चौबीसीस्तुति	७७३, ७७६
	(चौढाल्या)	६२३		चौरासीजातिका	
		७२३, ७७५, ७८०, ७६८		जयमाल	३६६
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६६		नेमिनाथकेनवमगल	४४०
	पार्श्वनाथकीगुरामाला	७७६			६८१, ७२०, ७३४
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२		नेमिनाथकावारहमासा	७५३
		७८१			

प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथमकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	पुनःपुनः	७७७	शुद्धलाल—	बारहमासना	६८३
	पत्र	३३, ३२३	धुम्कवि—	कुम्हसतसई	३३३
		७३७ ७८३ ७९८		६७५ ७३१, ७८३	
	महाभारतस्योपनिषद्	२३४	धुम्बाबन—	कविता	६८२
	सम्प्रदायकीसुवीकना	२३२		कतुविषयिणीर्षभ रूप्या	४७१
	राजसुमपञ्चीसी	६०		छंदसक	३२७
		३२३ ३२२ ३४३		तीसवींवीसीपूजा	४७३
		३३३ ३८३		पत्र	६२३, ६४३
		७४७ ७५३		प्रथमनारायण	३१४
विमलकीर्ति—	बहुवलीसम्प्रदाय	४४३	राजराजार्थ—	सुहृत्सुमनाभिमयापा	७६५
विमलकीर्ति—	भारतनाप्रतिबोधसार	३३५	शांतिपुराण—	मन्मथनारायण	३६
	विनयीवीसीप्रवाह	३३५	७० शांतिदास—	मन्मथनामपूजा	६१ ७६५
		३३५		मन्मथनामपूजा	७६५
विमलविनयागण—	मनावीसायवीकविता	६५	शांतिमह—	सुखिराज	६१७
	महर्षिकृष्णामियापीठ	४३३	शिवरथ ६—	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	३
विराजकीर्ति—	वर्मपरीक्षाभाषा	७३३	शिरोमणिसास—	वर्मसार	६३, ६६३
विराजमुख्य—	मष्टकपूजा	७ १	श्रियशिव—	शैमिस्तवन	४
	शैमिजीकीसंगम	३६७	शिवजीकाव—	वर्षासार	१६
	शैमिजीकीसंगम	७४६, ७७५		वर्षासारभाषा	१३३
	पत्र	४४३, ६६५		प्रतिष्ठासार	५२२
	पार्श्वनाथचरित्र	३६५	शिवनिधानगण—	संग्रहलीलासायवीक	४३
	विमती	६२१	शिवकाव—	कवितासुमनावीक	७८२
	हैमकाठी	७६३	शिवसुन्दर—	पत्र	७५
	रामकाव	६६७	सुमचन्द्र—	घण्टा'कागीत	६७६
विरामित्र—	पत्र	३५७		घण्टी	७७६
विसनदास—	जितलहर	६२७		वेदपालपीठ	६२३
वीरपद—	सबोधसतारा	३३३		पत्र	७ २ ७२४
वशीदास [ब० वेणु]—	पौनपरीवतकीकना	६२१			७७७
		६७३			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शिवदेवीमाताकोआठवो	७२४		अकलंकाष्टकभाषा	३७६
शोभाचन्द—	क्षेत्रपालभैरवगीत	७७७		ऋषिमण्डलपूजा	७२६
	पद	५८३, ७७७		तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२६
श्यामदास—	तीसचौबीसी	७५८		दशलशार्धर्मवर्णन	५६
	पद	७६४		नित्यनियमपूजा	४६६
	श्यामवत्तीसी	७६६		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१		भगवतीआराधनाभाषा	७६
श्रीपाल—	त्रिषष्टिशलाकाछन्द	६७०		मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
	पद	६७०		रत्नकरण्डश्रावकाचार	८२
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६		षोडशकारणभावना	८८, ९८
	पद	५८३	सबलसिंह—	पद	६२४
श्रीराम—	पद	५६०	सभाचन्द—	लुहरि	७२४
श्रीवर्द्धन—	गुणस्थानगीत	७६३	सवाईराम—	पद	५६०
मुनिश्रीसार—	स्वार्थबीसी	६१६	समयराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
संतदास—	पद	६५४	समयसुन्दर—	अनाथीमुनिसञ्ज्ञाय	६१८
संतराम—	कवित्त	६६२		अरहनासञ्ज्ञाय	६१८
संतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४		आदिनाथस्तवन	६१६
संतीदास—	पद	७५६		कर्मछत्तीसी	६१६
संतोषकवि—	विषहरणविधि	३०३		कुशलगुस्तवन	७७६
मुनिसकलकीर्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६८५		क्षमाछत्तीसी	६१७
	कर्मचूरद्वतवेलि	५६२		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पद	५८८			६१६
	पार्श्वनाथाष्टक	७७७		गौतमपृच्छा	६१६
	मुक्तावलिगीत	६८६		गौतमस्वामीसञ्ज्ञाय	६१८
	सोलहकारणारास	५६४		ज्ञानपंचमीवृहद्स्तवन	७७६
		६३६, ७८१		तीर्थमालास्तवन	६१७
सदासागर—	पद	५८०		दानतपशीलसंवाद	६१७
सदामुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१		नमिराजपिसञ्ज्ञाय	६१८
				पंचयतिस्तवन	६१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पर	४७१ ३८८	सुमानन्द—	पद्ममेखुजा	४ ३
		३८१ ७७७	सुगनचंद्र—	चतुर्विधतिथीर्यंकर	
	पद्मावतीरानीपारायना	११७		पूजा	४७३
	पद्मावतीस्तोत्र	१८३	सुन्दर—	कनकामाना का दूहा	७७३
	पद्मनाभस्तवन	११७		मार्गिणामण्डल	७४२
	पुण्यसूचीसी	१११		पर	७२४
	कंसवधोपार्श्वनाभस्तवन	११६		सहेलीगीठ	७६४
	बाहुभिसिद्धमन्त्र	१११	सुन्दरगणि—	जिनवत्तसूरिपीठ	११८
	श्रीसचिहरमालावली	११७	सुन्दरदास—।	कवित्त	१४३
	महावीरस्तवन	७३३		पर	७१
	मैत्रभूमारसम्भाम	११८	सुन्दरदास—II	सुन्दरविद्या	७४५
	मीनएकवधोस्तवन	१२		सुन्दरपू मार	७६८
	राणपुरस्तवन	११६	सुन्दरदास—II	सिन्धुधरकरणभाषा	१४
	बसवैवमहामुनिसम्भाम	१११	सुन्दरभूषण—	पर	३८७
	विमती	७३२	सुमतिकीर्ति—	शेषपासपूजा	७१३
	सङ्कुञ्जस्तीर्त्तरास	११७ ७ ०		जिनस्तुति	७६३
	योगिकरत्नासम्भाम	१११	सुमतिसागर—	बघतसालुप्रतोद्यात्म	१३८
	सम्भाम	११८		पर	७१५
सहस्रकीर्ति—	मावीस्वररेखता	१८२	सुरेन्द्रकीर्ति—	पठनयमाला	७१६
साईपास—	पर	१२		प्राविष्णवात्मभाषाया	७ ७
साधुकीर्ति—	घत्तरमेखपूजा	७३५ ७१		बैनवतीसुन्दरकीर्त्याया	१६६
	जिनकुसुमकीर्तुति	७७८		पर	१२२
साधस—	मात्मविद्यासम्भाम	१११		सम्प्रेषितसालपूजा	३३
साहकीरत—	पर	७७७	सूरचन्द—	धमाधिमरकामाया	१२७
साहिवरम—	पर	४४५ ७१८	सूरदास—	पर	१८४
सुसदेव—	पर	३५			७६१ ७१३
सुखराम—	कवित्त	७७	सूरभानभासवाङ्—	परमेशमप्रकाशभाषा	११२
सुकलास—	कवित्त	१३६	सूरजमल—	पर	३८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसुरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४		निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा	४६८
	चारहखंडी	६६, ३३२, ७१५		पंचकुमारपूजा	७५६
		७८८		पूजापाठसंग्रह	५११
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६		मदनपराजय	३१८
	आदिनाथपूजा	६७४		महावीरस्तोत्र	५११
	कवित्त	७७२		बृहद्गुरावलीशातिमडल	
	जिनगुराणपञ्चीसी	४४७		(चौंसठकृद्धिपूजा)	४७६, ५११
	जिनयशमगल	४४७		सिद्धक्षेत्रकीपूजा	५५३, ७८६
	पद	४४७, ७८६, ७६८		सुगन्धदशमीपूजा	५११
	निर्वाणकाण्ड	७८८	हंसराज—	विज्ञप्तिपत्र	३७४
	नेमिनाथकोभावना	६७४	हठमलदास—	पद	६२४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२	हरखचंद—	पद	५८३, ५८४
सेवारामसाह—	अनन्तव्रतपूजा	४५७			५८५
	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	४७०	हरचंदअग्रवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४		पचकल्याणकपाठ	४००
सोम—	चिंतामणिगुणार्धनाथ				७६६
	जयमाल	७६२	हर्गूलाल—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८	हर्षकवि—	चंद्रहसकथा	७१४
सोमसेन—	पचक्षेत्रपालपूजा	७६५		पद	५७६
स्यौजीरामसौगाणी—	लग्नचंद्रिका	७५१	हर्षकीर्ति—	जिणभक्ति	४३८
स्वरूपचंद—	कृद्धिसिद्धिशतक	५२, ५११		तीर्थकरजकडी	६२२
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११		पद	५८६, ५८७
		६६३			५८८, ५९०, ६२१
	जयपुरनगरसंबंधी				६२४, ६६३, ७०१
	चैत्यालयकीवदना	४३८			७५०, ७६३, ७६४
		५११		पंचमगतिवैलि	६२१
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०			६६१, ६६८, ७५०
	त्रिलोकसारचौपई	५११			७६५

मन्त्रकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	मन्त्रकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	पार्वनाथपूजा	६९३		बिजली	६९३
	श्रीसतीर्थकर्तों की मन्त्री			रतुति	७७६
	(जयमास) १४४	७२२	हीरकवि—	सागररत्नावलि	२०४
	श्रीस विष्णुमानपूजा	४९३	हीराचद—	पद	४४७ ३८१
	मातृककीकरण	३३७		पूजासंपद	३१८
	पट्टसिरवादेति	७७३	हीरानन्द—	दंपास्तिकापत्रा	४१
	कृष्ण	७४६	हीरासाल—	अष्टमपुराण	१४६
हर्षचन्द—	पद	३८३, ६२	हेमराज—	गणितसार	३६७
हृदयसूरि—	प्रभतिपास्तर्षिभक्तवत	३७८		गोमटसारवर्मकाण्ड	१३
पण्डितहरिकृष्ण—	प्रभक्तचतुर्दशोपठ			इष्यसंप्रहृभाषा	७३३
	कथा	७३६		दंपास्तिकापत्रा	४१
	साक्षात्संप्रभमीकथा	७३४		पद	३८
	मिर्बोपससमीकथा	७३४		प्रवचनसारभाषा	११३
	निष्ठस्थाष्टमीकथा	७३३		नयनकथा	१३४
हरिचरणदास—	कविब्रह्म	६८८		बाबली	६३७
	बिहारीसप्तसिटीका	६८७		भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१
हरीदास—	ज्ञानोपदेशवतीसी	७१३			३३३ ६४८ ६९१
	पद	७७			७ ७ ७७४
हरिचन्द्र—	पद	६४३		साधुकीभाष्य	७७७
हरिसिंह—	पद	३८२, ३८३, ६२		सुगन्धबधमीकथा	२५४
		६४६ ६४४ ६३३			७३३
		७७२ ७७६ ७३३	मुनिहेमसिंह—	प्रादिकल्पगीत	४३६



★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

अंजनगीई	७२६	मागरा	१२३, २०१, २५५, ५६१ ७४६, ७५३, ७७१
अंबावतीगढ (आमेर)	४, ३४, ४०, ७१, १२० १६३, १८७, १६६, ४५५	माभानेरी	७४८
अकबरानगर	४७६	आमेर	३१, ७१, ६३, ११६, १२० १३२, १३३, १७२, १८४, १८८, १६०, २३३, २६४ ३३७, ३६४, ३६५, ४२२ ४६२, ६८३, ७५६
अकबराबाद	६, ३६१	आम्रगढ	१५१
अकब्वरपुर	२५०	आलमगज	२०१
अकीर	३६७	आवर (आमेर)	१८१
अजमेर	२१६, ३२१, ३४७, ३७३ ४६६, ५०५, ५६२, ७२६	आश्रम नगर	३५
अटोशिनगर	१२	इन्दौर (तुकोगंज)	५४७
अराहिलपत्तन (अराहिल्लपाट)	१७५, ३५१	इन्द्रपुरी	३५८, ३६३
अमरसर	६१७	इंवावतिपुर (मालवदेश मे)	३४०
अमरावती	४८७	इदोखली	३७१
अवती	६६, २७६, ३६७	ईडर	३७७
अर्धपुरदुर्ग (आगरा)	२०६, ३४६	ईसरदा	२७, ३०, ५०३
अराह्वयपुर	१७	उग्रियावास	३१६
अलकापुरी	४३५	उज्जैन	१२१, ६८३
अलवर	२४, ५६७	उज्जैणी (उज्जैन)	५६१
अलाउपुर (अलवर)	१४४	उदयपुर	३६, १७६, १६६, २४२ २६३, ५६१
अलीगढ (उ प्र)	३०, ४३७	एकोहमा नगर	४५४
अवन्तिकापुरी	६६०	एलिचपुर	१८१
अहमदाबाद	२३३, ३०५, ५६१ ५६२, ७५३	औरगाबाद	७०, ५६२, ६१७
अहिपुर (नागौर)	८६, २५१	ककणलाट	३६७
आधी	३७२	कछोविदा	५६२
अबावती	३७२		
आवा महानगर	१६४		
आवैर (आमेर)	१०७		

बाबर	१६३	रामस्मन	२२६
बीक	५२१	रामचर	४४
बुधसिंह	२ २०	राममल्ल	१५१
बमर्षतसिंह	३४	रामसिंह	२४६, १२
जाटीजीसे	१५१ १८५	नामाह	५२२
भारतमल	५६१	निहमणस्येय	२२६
मानसिंह	७१	नमुदेव	४३६
भार्गसिंह (हाका)	३६	बिक्रमसाहि	५६७
भीम	५६१	बिक्रमादित्य	२५१ २५३ ६१२
भीमदेव	३५	बिजयसिंह	२८३
भकरबुध	४३६	बिमलमभीषण	५६२
भवन		बिहानसिंह	२८३
महमदबी	१	बीरे	५६१
महमदसाह	१५६	बीरनारायण (राजाभीमकापुत्र)	५६१
महमूदसाहि	१८८	बीरमदे	५६२
महादोरबांन	५३	बीरबल	६८१
माधोसिंह	१ ४ १६२ ५५१ ६३६	सर्धिसिंह	३७
माणसिंह	६३८	शाहजहाँ	६०२ ६६८
मानसिंह	३४ १५५ १८४ १८६ १६२, १६६ ३१३	श्रीपास	३५
	४७६ ४८	श्रीमानदे	१६
मानदे	५६१ ५६२	श्रीराज	५६५
मूसराज	१३२	श्रीशिक	३६३
मोहम्मदराज	१	सलेमसाह	७७ २ ६ २१२
रणबीरसिंह	३८६	संजयदास	१८४
राजसिंह	१३१, २७१ ३१३	सिकन्दर	१४५
राजामल	७२६	सूर्यसिंह	४, १६४
रामचन्द्र	७७ २४	सूर्यमल्ल	२६६
रामसिंह	२७ १४६, २७५ २७५	सधामसिंह	२६३
	६१ ६११	धोलबादे	५६१
		हमीर	१७८ ५६१ ६ ६

खालियर	१७२, ४५३	५३, ६१, ६६, ७१, ७२
घडसोला	४७५	७४, ७७, ७९, ८५, ८६, ८२
घाटडे	३७१	९३, ९६, ९८, १०३, १०४
घाटमपुर	४१२	११०, १२१, १२८, १३०
घाटसल	२३४	१३४, १४०, १४२, १४५
चऊड	३६०	१५२, १५३, १५४, १५५
चन्द्रपुरी	४१, १८८, ५३१	१५८, १६२, १६६, १७२
चन्द्रापुरी	१७, ३०३	१७३, १८०, १८२, १८३
चन्देरीदेश	५३, १७१	१८६, १९५, १९६, १९७
चंपनेरी	५६३	१९८, २००, २०१, २०२
चम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८	२०५, २०७, २२०, २२५
चम्पापुर	१६४	२३०, २३१, २३४, २३५
चमत्कार क्षेत्र	६६३	२३६, २३९, २५०, २५३
चाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७ ४६८, ५६३, ७८०	२५५, २६२, २७४, २७५
चान्दनपुर	५४८	२८०, ३०२, ३०४, ३०८
चावडन्य	३७२	३०९, ३४१, ३५०, ३५७
चावली (आगरा)	५४७	३६२, ३६४, ३७५, ३८६
चित्रीड	२१३, ५६२	३९४, ४१०, ४११, ४२१
चिथकूट	३६, १३६, २०६	४४५, ४५०, ४५६, ४६०
चीतीडा	१८५, १८६	४६१, ४६६, ४७२, ४८१
चूरु	५०२	४८७, ४९४, ४९६, ५०४
चोसू	४४०	५०५, ५११, ५२०, ५२१
जम्बूद्वीप	२१८	५२७, ५३३, ५४६, ५७७
जयदुर्ग	२७३	५६१, ६००, ६१५, ६६९
जयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४ १६८, ३०१, ३१६	६८३, ७१५, ७२९, ७४४
(सवाई) जयनगर (जयपुर)	१६६, १७०, २६८ ३१८, ३३०	७६८, ७७५, ७७६
जयपुर (सवाई) जयपुर	७, १६, २५, २७, ३१ ३४, ३६, ४२, ४४, ५२	७० ४१, ७०, ९१, १४२ ५५२, ६६८ ३८०
		जलपय (पानीपत)
		जहानाबाद
		जागरू

कटक	२३४	केरम	३१७
कफोवपुर	१११	केरवापाम	२३
कभ्याड	३१७	कैसाड	६०२
कडीग्राम	११३	कोटपुवली	७३७
कनारा (बिमा)	२२	कोटा	१४ २२७ ४३
कण्ठाटक	३०६	कोरटा	३२३
कटाडम	३१७	कीसंबी	३६२
करीली	१ ४	कुम्भमड	१०३ २२१ २६८, ३१६
कसकला	१३१	कुम्हारह (कासाबेहरा)	२१
कसबस्तीपुर	३६३	कप्यार	४८०
कसिय	३१७	काजीली	३३७
काडीग्राम	२४१	किराबदेस	७१
काणीता	३७२	कोटक	२३१
कलपुर्केट	१३४	गंवार	१३३
कामलपुर	१२	मऊड	३१७
कारवा	२ ४	मडकोटा	१३८
कसब	०२	माडीकावाला	७१४
कासाबेहरा (कासाबेहरा)	४३ २१	मिरनार	६७
	१ १ ३७२	मिरपौर	३६२
	३१७	मीनापुर	४ ८
किरल	४४ २३३ ३१२	मुजराड	२२४
किराममड	२१८	मुजरा (मुजराड)	३१७
किरुोर	३२२	मुम्बरेदेस (मुजराड)	३६३
कु कुणवेस	४४१	मुस्वबनगर	४३३
कुबामल	२२	मूनर	३७१
कु कनगर	२३१	नीपानसगर (बवासियर)	१३३, १७२, २६३, ४३३
कु मतमैस्वुर्ग	३१७	पोलागिरि	३७२
कु कसवेस	३१७	गोवटीपुरी	१०१
कुरंगल	१४३	मोबिन्दमड	४१
कुम्भामलदेस	२	गौन्वेर (गौन्वेर)	३७२
केवडी			

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

ग्वालियर	१७२, ४५३	५३, ६१, ६६, ७१, ७२
घहसोला	४७५	७४, ७७, ७९, ८५, ८९, ९२
घाटई	३७१	९३, ९६, ९८, १०३, १०४
घाटमपुर	४१२	११०, १२१, १२८, १३०
घाटसल	२३४	१३४, १४०, १४२, १४५
बऊढ	३९०	१५२, १५३, १५४, १५५
बन्द्रपुरी	४१, १८८, ५३१	१५८, १६२, १६९, १७२
बन्द्रापुरी	१७, ३०३	१७३, १८०, १८२, १८३
बन्देरीदेश	५३, १७१	१८९, १९५, १९६, १९७
बंपनेरी	५६३	१९८, २००, २०१, २०२
बम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८	२०५, २०७, २२०, २२५
बम्पापुर	१६४	२३०, २३१, २३४, २३५
बमत्कार क्षेत्र	६९३	२३६, २३९, २५०, २५३
बाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७ ४९८, ५६३, ७८०	२५५, २६२, २७४, २७५
बाबदनपुर	५४८	२८०, ३०२, ३०४, ३०८
बाबडल्य	३७२	३०९, ३४१, ३५०, ३५७
बाबली (भागरा)	५४७	३६२, ३६४, ३७५, ३८६
बितीद	३१३, ५९२	३९४, ४१०, ४११, ४२१
बिश्नकूट	३९, १३९, २०९	४४५, ४५०, ४५६, ४६०
बीतीडा	१८५, १८६	४६१, ४६६, ४७२, ४८१
बूरु	४०२	४८७, ४९४, ४९६, ५०४
बोसू	४४०	५०५, ५११, ५२०, ५२१
बम्बूदीप	२१८	५२७, ५३३, ५४९, ५७७
बयदुर्ग	२७३	५९१, ६००, ६१५, ६६९
बयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४ १९८, ३०१, ३१६	६८३, ७१५, ७२९, ७४४
(सवाई) बयनगर (जयपुर)	१६६, १७०, २९८ ३१८, ३३०	७६८, ७७५, ७७६
बयपुर (सवाई) बयपुर	७, १६, २५, २७, ३१ ३४, ३६, ४२, ४४, ५२	७८५, ७८६
बालपथ (पानीपत)		७०
बहानाबाद		४१, ७०, ९१, १४२
बागरू		५५२, ६९८
		३८०

बान्धेर	१ ६ ९ ३ ५६२	विनात	३६७
बैसमपुर	१३२	तुष्क	३६७
बैसममेर	५६१ १२	तुष्कक	३६७
बैसिहपुरा	२५ ३१ ६१ ४४६	ठोका (ठोका)	१ ६
	५ २, १ १	बकसण	१ ६७
बाधपुर	२ ५ ३५१ ५६१	बकिण	१६७
बाधमेर	२१ ३४ ७४ २३१	बाक	३६३
	२६३ १ २ ३३३	बिल्ली-देहली	३७ मम १२म १४
	४५३ ४६१ ४६६		१३१ १७५, १६७ ४५५
	४८७ ४६१ ६४४		४४६ ५६१ ७३६ ७६७
भातरापाटन	१६३	बिजसामगर (बीसा)	३५३
भामाणा	३७२	डूढ़	१७१
भिमती	३१४	डूनी	३५
भित्ताम	१७ ३२६ ४७७	देवणाग्राम	२६१
भोटबाबा	३७२	देवगिरि (बीसा)	१७३ २५६ ३६४
बहुडा	१ २	देवपत्नी	१३१
ढोक	३२ १८६ २ ३	देसुनी	३३
ढोडाग्राम	१४५ ३१३	देवत	३७१
ढोडीग्राम	२६३	दीसा-बीसा	१७३ ३२५ ३७२ ३७३
दिगी	४१	दम्पपुर (नामपुरा)	२६२ ४ ६
दिडवागा	३११ ३७१	डारिकन	३६७
दू डारैण	३१६, ३२८	दरसकपुर	३३८
गागाबवास (नामरबाग)	३६७	पाणागर	१५
वडाबागदुर्म (टोडाराममिह)	७७	पारानगरी	३३ १३१, १४३ १७६
	१३८ १७३, १८३ २	नंदतटग्राम	६२
	२ ५, २३६ ३१३, ४६८	नंदपुर	७७४
तमान	३६७	नगर	२२७ ३६२
तारमपुर	२ १	नपरा	४३३
तिशाघ	१४४ १३७	नयनपुर	११८
तिमन	३६७	नरवारनगर	३२

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

[६३५]

नरवल	२२७	पाली	३६३
नरायणा	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७८६
नरायणा (बडा)	२८४	पावागिरि	७३०
नलकच्छपुरा	१४५	पिपलाइ	३६३
नलवर दुर्ग	५२४	पिपलीन	३७३
नवलक्षपुर	२१२	पुन्यां	४४१
नागल	३७२	पूर्णासानगर	२००
नागरचालदेश	४४८	पूरवदेश	३६७
नागपुरनगर	३३, ३५, ८८, २८०, २८२ ३८४, ४७३, ५४३	पेरोजकीट	२७८
नागपुर (नागीर)	७३५, ७६१	पेरोजापत्तन	६२
नागीर	३७३, ४६६, ४८८	पीदनानगर	५६८
नासादेश	३७	फतेहपुर	३७१
निमखपुर	४०७	फलोधी	५६२
निराणी (नरायणा)	३७०	फागपुर	३४
निवासपुरी (सागानेर)	२८६	फागी	३१, ६८, १७०
नीमैडा	७६६	फौफली	३७१
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	बंग	३६७
नेणवा	१७, ३४१	बंगाल	४७६
पइठतपुर	४३६	बंधगोपालपुर	३६३
पचेवरनगर	४२, ४८०	बंगरू	६६
पहन	३८७	बगरू-नगर	७४, २७०
पनवाहनगर	७१	बराहटा	३४२, ४४८
पलाडा	५६२	बटेरपुर	१५३
पाचोलास	७३	बनारस	४८३
पाटणा	२३०, ३०४, ३६६, ५६२	बरब्वर	३६७
पाटनपुर	४४६	बराड	३६७
पानीपत	७०	बसई (बस्सी)	१८६, २६६, ४१५
पालव	६८२	बसवानगर	१६५, १७०, ३२०, ४४६
		बहादुरपुर	४८४, ७२१ १६७, १६८

बागडदेवा	१७ १५४, २१४	महुवा	४७५
बाणपुर	११६	महुवा	३३६
बासनगर	२७६	महोदरपुरा	७५६
बाराहदेवी	१७२	महापुरा	७७६
बालदेवी	२५५	महात्मल	३६०
बासी	६ ६	महाविक्रमपुर	४
बीकानीर	२६१ २६२ ६८४	महायज्ञेश	२६४
बुम्बी	८४ ४ ६	महादाम	२६३
बैराठ	१७ ५६४	महुवा	२५ २६४ ४६५, ४७३
बैराठ (बैराठ)	२०४	महुवा	५६१
बाँसीनगर	४८ १३६ १८३	माधोपुर	२६५
बहलपुरी	६६८	माधोराजपुरा	३३३ ४६६
महीन	३७१	मादवाड	४४
भदावरदेवा	२५४, ६४	मारोठ	१६३ ३१२, ३७२
भरतनगर	१५२		३८४ ५६२ ५६३
भरतपुर	३५६	मामाकोट	५६१
भानगड	३७२	मालपुरा	४ २८ ३४ ६६, १२२, १३
भाबुमतीन	३ ६		२३१ २४५ २४६ २५२ ३ ६
भाननगर	११७		३४२, ३४३ ३४४ ४६, ५६२
भिरड	१५४		६३६, ७५८
भिरड	२६७	मालनदेवा	३५, २ ३४ ३६७
भिरड	१६५	मालपुर	३४
भैरानाना	३ ३	मिथिलपुरी	२५३
भोमान	३७३	मुकामपुर	७७
भुवनेश्वरपुरी	२१	मुनतल	१११ २६२
भंडीवर	२६१	मुनतल (मुनतल)	१७७
भडनगर	७ ६	मेरता	१८४ ३०२, ५६६
भंडोडी	३७१	मेहुरधाम	१०
भंडीनगर	५३	मेरगा	२ ५, ३५६
भुवाडी	७४	मेवाड	३०६
भरतपुरापुर	२५६	मेवाडा	३०२

ग्राम एवं नगरों की नामावलि ।

॥ ६३७

मोहनवाडी	४६०	रैणवाल	४१०
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४५, ६६५
मोहाणा	१२८	रैवासा	३००
मैनपुरी	४६	लखनऊ	१२५
मौजमाबाद	५६, ७१, १०५, १७४	ललितपुर	१७८
	१६२, २०८, २५५, ४११	लशकर	२३६, ३८६, ७००
	४१२, ४१६, ४१७, ५४३	लाखेरी	६६५
यत्रनपुर	३४३	लाडरणा	१८६
योगिनीपुर (दिल्ली)	२६४	लावा	४२
यीवनपुर	३०७	लागसोट	३०
रणतभवर (रणथंभौर)	३७१	लाहौर	६६८, ७७१
रणथंभौरगढ	७१२, ७४३	लूणाकर्णसर	७
रणस्तभदुर्ग (रणथंभौर)	२१२	वनपुर	२११
रतीय	३७१	वाम	२०१
रूहितगपुर (रोहतक)	१०१	विक्रमपुर	३६४, २२३
राजपुर नगर		विदाघ	३७१
राजगढ	१७६	विमल	५६२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
राडपुरा	४५०	वृन्दावती नगरी	५, ३६, १०१, १७८, २००
राणपुर	६१६		४२२
रामगढ नगर	१४६, ३७०	वृन्दावन	४, ११०, २७६
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वेसरे ग्राम	५३
रामपुरा	५६, ४५१	वैरागर ग्राम	४६, २१०
रामसर (नगर)	१८१	वैराट (वैराठ)	१०६
रामसरि	६६	वीराब (वीराज) नगर	५६४
रायदेश	१६७	षेमलासा नगर	१५४
रावतफलोधी	५६१	शाकमडगपुर	४५८
राहेरी	३७२	शाकवाटपुर	१५०
रेवाडी	६२, २५१	शाहजहानाबाद	४७, १०८, ५०२
रैणपुरा	५६२		६०१

शिवपुरी		७३५	सागवसन नगर (सामबादा)	१५४
सुबान्नसपुर		८	सायबाळपुर	५०८
शेरगढ		६८२ ७७१	सागबाडा	१० १४१
शेरपुर	X	२१२ ७६६	साबडी	३१३
शेरपुरा		१३६	सामाव	८३
श्रीपत्तन		१३८	सारकग्राम	७
श्रीपथ		८३, ३६५	सारंभपुर	८३ १२१
संग्रामगढ		२१४	सालकोट	५६६
संग्रामपुर		३४१ ५५४	साहीबाळ	४६
संजीव		१६	सिगदपुर	४४
संजानागर (संजानेर)		६७८	सिगदराबाळ	७७ १४२, १२४ ३६७
संजानेर		३४ ६३ ७३ ६३ १३६	सिमरिमा	५६३
		१४४ १४८ १४६ १३३	सिरोही	५६२
		१५६ १६४ १८१ २ २	सीकर	४६६
		२ ७ २२६ ३ १ ३७१	सिरोज	८४ ६१३
		३८४ ३६३ ४ ८ ४२	सीसपुर	२५६
		४९ ४८३ ४८८ ७७३	सीसारनगर	३४ १२६
संजानती (संजानेर)		१६३	सुपोट	१६७
संजान		३७१	सुफैट	३६७
समाशा नगर		२६	सुभोट	३६७
सनामव		३४२	सुम्होरवासी धांधी	३७२
समरपुर		४८७	सुरंगपत्तन	३८६
समीरपुर		१२७	सुभानगर	३८१
सम्भविहार		३७३ ३७८	सूरज	६७
सम्भविहारपुर		२४३	सूर्यपुर	३३६
सबाई माजीपुर		६३ ७ १३२ १५४	सेवाको	३६१
		३७ ६६३	सोनापिदि	३३६ ६७४ ७३
सहारनपुर		३३७	सोभना (सोजठ)	१६१
सहिबासपुर		२७६	सोठरेड	३६७
सलेख नगरी		३	डांसी	---

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

६ ६३६

हिण्डौन	२५०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	१४३
हथिकंतपुर	५६७	हिरणौड	२०२
हरसौर	१८४	हिमाचल	३६७
(गढ) हरसौर	६३६	हिरणोदा	६४४
हरिदुर्ग	२००, २६६	हिमार	६२, २७८
हरिपुर	१६७	हीरापुर	२३०
हलसूरि	७३४	हुडवतीदेश	१७
हाडौती	६०४	होलीपुर	१८८

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं पंक्ति

१५४
 ६५८
 ७५२६
 १६५६
 १७५१६
 ११५११
 १८५१०
 १४५१
 १४५१२४
 १८५०२
 १०५१२
 १३५१
 १४५२६
 १६५१४
 १३५६
 १६५१०
 १६५१३
 ७४५१८
 ७४५०१
 ७६५१३
 १८५१
 १६५६
 १०४५००
 १०१५१

अशुद्ध पाठ

अर्थ प्रकाशिका
 चिह्न
 गोमट्टसार
 ३०४
 १८१४
 तत्त्वार्थ सूत्र भाषा
 वे सं २३१
 ४४४
 वप
 —
 नयनचन्द्र
 काल
 सह
 र काल
 न्योपाजि
 मूषरदास
 १८०१
 बालाविषेय
 आचार
 श्रीनविगण
 सोनगिर पष्पीमी
 १४ वीं शताब्दी
 १४४१
 अर्थ एवं आचारसारात्र

शुद्ध पाठ

अर्थ प्रकाशिका
 चिह्न
 गोमट्टसार
 ३१४
 १८४४
 तत्त्वार्थ सूत्र भाषा-जयपत
 वे सं १६३१
 ४४६
 वप
 ४६६
 नयनचन्द्र
 काल
 सह
 से० काल
 न्यायोपाजित
 मूषरमिश्र
 १८०१
 बालाविषेय
 आचार
 —
 सोनगिरपष्पीमी
 १६ वीं शताब्दी
 १३४१
 अण्वात्म अर्थ योग शास्त्र

शुद्धाशुद्धि पत्र]

पत्र एवं पंक्ति

१३१×१

१४०×२८

१४६×७

१४६×७

१६४×१०

१६५×१

१७१से१७६ |

१७६×२८

१८१×१७

१९२×६

१९२×१४

२०८×६

२१६×११

२१६×६

२४२×२५

२६४×१६

३११ |

३१६×११

३२०×१

३३६×१३

३६६×-

३८५×१

३८६×५

३९६×४

४०१×२१

४५६×२५

४६४×१२

५०२×८

५५७×२

अशुद्ध पाठ

त्र

१७२८

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★



पत्र एवं संकि

अशुद्ध पाठ

शुद्ध पाठ

१५४

अथ प्रकाशिका

अथ प्रकाशिका

१५८

किञ्च

किञ्च

७५२६

गोमट्टसार

गोमट्टसार

१६५६

३०४

३१४

१७५१६

१८१४

१८४४

३१५११

तत्त्वार्थ सूत्र भाषा

तत्त्वार्थ सूत्र भाषा-जय

३८५१०

वे सं २३१

वे सं १६६०

४४५५

४४५

४४६

४४५२४

वप

वर्षे

४८५२२

—

५६६

५०५१२

नयनचन्द्र

नयनचन्द्र

५३५१

काव

काव

५४५२६

साव

साव

५५५१५

र काव

से० काव

६३५६

म्योपाखि

म्योपाखि

६६५१०

मूषरवास

मूषरमिस

६६५१३

१८०१

१८०१

७४५१८

बासावबोध

बासावबोध

७४५२१

आचार

आचार

७६५१३

भीनदिगण

—

६८५१

सोनगिर पञ्चीसी

सोनागिरपञ्चीसी

६६५६

१४ वी शताब्दी

१६ वी शताब्दी

१०४५२०

१४४१

१३४१

१२१५१

धर्म एवं आचारशास्त्र

अध्यात्म एवं योग शास्त्र

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र वर्ष पंक्ति

१×४

१×८

७४२६

१६×६

१७४१६

३१×११

३८×१०

४४×४

४४×२४

४८×२२

४०×१०

४३×११

४४×२६

४६×१४

६३×६

६६×१०

६६×१३

७४×१८

७४×२१

७६×१३

४८×१

४६×६

१०४×००

१०१×१

अशुद्ध पाठ

अथ प्रकाशिका

चिह्न

गोमट्टसार

३०४

१८१४

तत्त्वार्थ सूत्र भाषा

वे सं २३१

४४५

अथ

—

नयनचन्द्र

अथ

साह

र अल

म्योपाजि

मूषरदास

१८०१

बालाबिन्दव

आपार

श्रीनदिग्या

सोनागिरपचीसी

१४ बी शताब्दी

१४४१

वर्ष वर्ष आपारशास्त्र

शुद्ध पाठ

अथ प्रकाशिका

चिह्न

गोमट्टसार

३१४

१८४४

तत्त्वार्थ सूत्र भाषा-अथवत

वे सं १६६२

४४६

अथ

४६६

नयनचन्द्र

अथ

साह

से० अल

म्योपाजित

मूषरमिभ

१८०१

बालाबिन्दव

आचार

—

सोनागिरपचीसी

१६ बी शताब्दी

१३४१

अध्यात्म वर्ष योग शास्त्र

पत्र एवं पंक्ति

१३१×१

१४०×२८

१४६×७

अशुद्ध पाठ

त्र

१७२८

शुद्ध पाठ

ब

१८२८

र० कालसं० १६६६

पत्र एवं पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
५७३×१६	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१२	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१३	—	संस्कृत
५७४×१०	संस्कृत	अपभ्रंश
५७६ २०	रसकौतुकप्रामसमा रञ्जन	रसकौतुकप्रामसमा रञ्जन
५८८×१७	ज्ञानतरण	ज्ञानतरण
५९१×१०	”	—
५९४×१८	सोमकाण्डप्रस	सोमकाण्डप्रस
६०७×२०	पद्मवतीसम्ब	पद्मवतीसम्ब
६१६×२	पञ्चकम्मणसूत्र	पञ्चकम्मणसूत्र
६१६×१७	५४५१	५४५१
६२३×२३	नानिगरास	नानिगरास
६२३×२४	वरा	वरा
६२८×१४	प्राकृत	अपभ्रंश
६२८×२१	योगवर्षा	योगवर्षा
६३६×१०	अपभ्रंश	प्राकृत
” ×१६	आ० सोमत्रैव	सोमप्रम
६३६×१४	अपभ्रंश	संस्कृत
६३७×१०	स्वयम्भूस्तोत्रोपदेश	इष्टोपदेश
६३९×१०	पञ्चकन्याखण्ड	पञ्चकन्याखण्ड
” ×२६	त	कृत
६४२×६	रामसेन	रामसिंह
६४५×४	”	संस्कृत
६४८×६	राक्षसत्त	श्रेष्ठ राक्षसत्त
६४९×१७	कर्मजमसूरि	कर्मजमसूरि
६६१×२	पद्मावा	वपावा
६६०×१५	पञ्चमीसी	चैत पञ्चमीसी
६६१×१०	अयोधियपट्टमास्ता	अयोधियपट्टमास्ता
६८०×२४	कन्यासम्बन्धि स्तोत्र	कन्यासम्बन्धि स्तोत्र
६९१×६	नन्दरास	नन्दरास